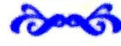
।।श्रीः।।

गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

127



चौखम्भा

संस्कृतदर्पण

(यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ., टी.जी.टी., पी.जी.टी., बी.एड., स्लेट/राज्यस्तरीय लोक सेवा एवम् अन्य प्रतियोगिता परीक्षा हेतु, आदि)

(द्वितीय, तृतीय एवम् वैकल्पिक प्रश्न पत्र सहित-कोड-25)



लेखक

शेषनाथ मिश्र



चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या, आयुर्वेद तथा दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक

दिल्ली-110007

प्राक्कथन

संस्कृत-वाङ्मय के क्षेत्र में अनेक ग्रन्थों की रचना हो रही है। प्रतियोगी छात्र-छात्राओं के लिए सम्पूर्ण सारगर्भित सामग्री के अभाव को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत ग्रन्थ "**संस्कृतदर्पण**" का निर्माण किया गया है। मैंने प्रस्तुत पुस्तक का आद्योपान्त निरीक्षण एवं परीक्षण किया है। यथोचित स्थान पर प्रमुख गूढ़ तत्त्वों एवं तथ्यों को सम्मिलित किया गया है। सामग्री की संदिग्धता के निवारणार्थ पुस्तक के अन्त में संदर्भ-ग्रन्थ सूची दी गयी है। लेखक श्री शेषनाथ मिश्र ने गहन अध्ययनोपरान्त संदर्भ के साथ पुस्तक में सामग्री एवं तथ्यों इत्यादि को निबद्ध किया है। प्रमुख सूक्तियों को संदर्भ के साथ रखा गया है। पुस्तक में विषय को विभिन्न शीर्षकों, यथा— वैदिक साहित्य, पुराण, रामायण, महाभारत, व्याकरण, दर्शन, संस्कृत साहित्य एवं साहित्यशास्त्र आदि के अन्तर्गत संकलन किया गया है। पुस्तक की उपादेयता का अवलोकन प्रतियोगी छात्र-छात्राएँ स्वयं नीरक्षीरवत् करेंगे। आशा है, कि प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की परीक्षा (नेट/जे. आर.एफ.) के साथ ही अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं टीजीटी, पीजीटी, संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग और राज्य स्तरीय अध्यापक पात्रता परीक्षा इत्यादि के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. दयाशंकर तिवारी
संपादक

विजयदशमी
वि.सं. 2071
दिल्ली

भूमिका

'संस्कृत' का नाम सुनते ही हमारा हृदय अद्भुत आनन्द से भाव-विभोर हो जाता है। उस अनिर्वचनीय भावभङ्गिमा को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना असंभव प्रतीत होता है अपितु इसे अनुभूत ही किया जा सकता है। संस्कृत-वाङ्मय बहुत व्यापक, समृद्ध और गौरवशाली है। संस्कृत की जो परम्परा हमारे ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रारम्भ हुई थी, वह आज भी अनवरत चल रही है। संस्कृत, जीवन का एक ऐसा आधार है, जिस आधार के माध्यम से हम अपने समाज, देश, विश्व और स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण करके अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बना सकते हैं। संस्कृत और संस्कृति- ये दोनों परस्पर अवलम्बित होते हुए आज भी भारत की प्रतिष्ठा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आज भी संस्कृत की उपयोगिता हमारे लिए रमावश्यक है। संस्कृत ही वह आधार स्तम्भ है, जिसमें हमारी संस्कृति, भ्यता, परम्परा, सामाजिक मूल्य एवं मानवीय गुण सन्निहित हैं। संस्कृत तनी सरल, सहज एवं सुग्राह्य है, उतनी ही वैज्ञानिकता से भी परिपूर्ण है।

वर्तमान समय प्रतियोगिताओं का समय है। इसमें बिना प्रतियोगी ाओं को उत्तीर्ण किये कोई व्यक्ति योग्यता प्राप्त नहीं कर सकता। त के क्षेत्र में भी योग्यता एवं किसी सुयोग्य पद प्राप्ति के निमित्त न प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।

संस्कृत के प्रतियोगी परीक्षार्थियों की समस्याओं को ध्यान में रखकर तक का निर्माण किया गया है। परीक्षा के बदलते प्रारूप के कारण र्थियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह समस्या अधिक गंभीर तब हो जाती है, जब कोई ऐसी उपयोगी पाठ्य सामग्री न उपलब्ध हो, जिसकी सहायता से वह अपना कार्य सुगमता से पूर्ण कर सके।

इसी प्रकार की समस्याओं का सामना मैंने भी यू.जी.सी.नेट/जे.आर. एफ. और टी.जी.टी. (T.G.T.) और प्रवक्ता (P.G.T.) आदि संस्कृत की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के समय किया। उस समय मैंने यह अनुभूत किया कि संस्कृत भाषा एवं साहित्य के समस्त ज्ञान के लिए एक सुव्यवस्थित पाठ्य सामग्री की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु मैंने प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत भाषा और साहित्य की समग्र सामग्री को प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र किया है। वस्तुतः यह मेरा प्रथम और लघु प्रयास है। इसलिए इसमें न्यूनता का होना संभव है, क्योंकि संस्कृत साहित्य अनन्त है और मेरी बुद्धि सीमित है। अतः यथा-सामार्थ्य मैंने अपनी बौद्धिक सामर्थ्यता के अनुरूप सामग्री का संग्रह करने का प्रयास इस ग्रन्थ में किया है। मैंने संस्कृत में जे.आर.एफ. होने के पश्चात् इस पुस्तक की रचना संस्कृत के प्रतियोगी परीक्षार्थियों के निमित्त की है। यथा-सामर्थ्य सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का व्यवस्थित और सारगर्भित अध्ययन करने के पश्चात् ही इस पुस्तक की रचना करने का साहस मैंने किया। क्योंकि मैं एक प्रतियोगी परीक्षार्थी स्वयं रह चुका हूँ, इसलिए परीक्षा में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों की आवश्यकताओं से भली-भाँति परिचित हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC NET / JRF), दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड की प्रशिक्षित स्नातक परीक्षा (TGT), प्रवक्ता परीक्षा (PGT) तथा अन्य राज्यों द्वारा भी आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं यथा-उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, गुजरात, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक आदि की परीक्षाओं के बदलते प्रारूप को भी ध्यान में रखकर निर्माण किया गया है। इन सभी परीक्षाओं की दृष्टि से संस्कृत-वाङ्मय के विभिन्न ग्रन्थों

को सारभूत सामग्रियों को समन्वित रूप में इसमें एकत्र किया गया है, जो आज छात्र-छात्राओं की माँग के अनुरूप ही नहीं अपितु मैं समझता हूँ कि उसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में यू.जी.सी. नेट के द्वितीय एवं तृतीय प्रश्नपत्र तथा वैकल्पिक/ऐच्छिक (Optional) विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री को एक साथ रखा गया है। इससे छात्र-छात्राओं को सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री एक ही जगह आसानी से उपलब्ध हो जाएगी।

प्रस्तुत पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग नौ (9) खण्डों में विभक्त है, जो अनिवार्य विषय हैं और द्वितीय भाग में वैकल्पिक विषयों को रखा गया है।

प्रस्तुत पुस्तक यू.जी.सी.नेट (UGC NET), प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (TGT), प्रवक्ता (PGT) राज्य स्तरीय अध्यापक पात्रता परीक्षा (SET) बी.एड. (B.ed) संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोग आदि अन्य सभी संस्कृत की परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण आदरणीय श्री डॉ. दयाशंकर तिवारी (एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-07) के मार्गदर्शन में मेरे द्वारा किया गया है। इस पुस्तक को अत्यन्त उपयोगी बनाने के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। इस पुस्तक का सम्पादन करके उन्होंने इसकी उपयोगिता को विशिष्ट बना दिया। व्यक्तिगत रूप से पुस्तक निर्माण के दौरान मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ, जो पुस्तक को स्थापित करने के लिए अत्यन्त लाभदायक रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक में किसी भी प्रकार की न्यूनता का विशेष ध्यान रखा गया है तथा मेरे द्वारा इस पुस्तक में कुछ न्यूनताएँ प्रमादवश हो सकती हैं, जिसका होना स्वाभाविक है।

अतः सुधी पाठक वर्ग से सविनम्र भाव से अनुग्रहीत होऊँगा। यदि किमपि न्यूनता हेतु मुझे सूचित किया जाएगा, जिससे मैं भविष्य में उसका परिमार्जन भी कर सकूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने प्रभु श्रीरामभक्त श्री हनुमानजी के श्री चरणों में इस पुस्तक को अर्पित करता हूँ, जिनकी परम अनुकम्पा से आज मैं यहाँ तक पहुँच सका हूँ।

मैं अपने परमपूज्य दादा जी स्व. श्री गिरिजाशंकर मिश्र एवं दादी श्रीमती ईशराजी देवी मिश्रा के चरणों में सादर प्रणाम करता हूँ, जिनके वात्सल्य एवं अद्भुत अनुराग की छाँव में मैंने अपना बचपन व्यतीत किया है। उन्हीं की अंगुली पकड़कर जीवन के रास्ते पर चलने की शिक्षा प्राप्त की। उनके संस्कारों द्वारा ही आज मैं यहाँ तक पहुँच पाया हूँ।

जिनके स्नेहासिक्त वरदहस्त हमें सदैव इस संघर्षपूर्ण संसार में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे हैं तथा मुझे इस संसार में लाने वाले हमारी प्रत्येक श्वांस के साथ सम्बद्ध एवं हमारी शक्ति के अक्षय प्रेरणा स्रोत ऐसे अपने परमपूज्य आदरणीय पिता स्व. श्री अमरनाथ मिश्र एवं माता श्रीमती शकुन्तला मिश्रा के चरणों में कोटि-2 प्रणाम करता हूँ।

परम श्रद्धेय आदरणीय श्री श्री 1008 बाबा श्री रामचरित दास जी का मैं चरण-वन्दन करता हूँ, जिनका आशीर्वाद मुझे सदैव प्राप्त होता रहा है।

मैं अपने गुरुजी आदरणीय डॉ. गिरीशचन्द्र पन्त जी (ए.सो.प्रो. देशबन्धु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद हमेशा मुझे मिलता रहा है।

अपने नाम के ही अनुरूप दिव्य व्यक्तित्व-विभूषित आदरणीय श्री डॉ. दयाशंकर तिवारी जी एवं श्रीमती इन्दु तिवारी, जो प्रत्येक निराशा के क्षणों में आशा की किरण बनकर मेरे अन्तस्तल को सदैव आलोकित करते रहे हैं तथा जिनके सहयोग मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से ही यह कार्य सफल हो सका। अतः उनके इस अद्भुत उपकार के लिए मैं सदा आभारी रहूँगा।

अपने अग्रज तुल्य श्री डॉ. राजमङ्गल यादव (असिस्टेंट प्रो., रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) को हार्दिक धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ, जिनके प्रेरणा विश्वास एवं सहयोग से ही यह पुस्तक निर्विघ्न रूप से पूर्णता को प्राप्त कर सकी है।

मैं अग्रज तुल्य श्री अजीत पुरी (असिस्टेंट प्रोफेसर, पी.जी.डी.ए.वी. कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनका प्रोत्साहन मुझे सदैव प्राप्त होता रहा है।

मैं अपने मित्रों में श्री शैलेन्द्र शुक्ल, श्री अमरचन्द्र वर्मा, श्री वेदवर्धन, श्रीराम जी, श्री निरंजन पाण्डेय, कुसुम मौर्या, श्री ब्रह्मप्रताप सिंह (प्राध्यापक प्रतापगढ उ.प्र.) प्रियंका राय, वैशाली, चन्दन, फोटो मिश्रा आदि इन सभी के असीम सहयोग एवं विश्वास के प्रति धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

अपने अनुज शिवनाथ मिश्र, कमलनाथ मिश्र, वेदनाथ मिश्र एवं बहन आराधना, अर्चना, कीर्ति के अधिक आत्मीयतापूर्ण संबल देने के लिए मैं इनको साधुवाद एवं आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सत्प्रेरणा प्रदान करने वाले शुभचिन्तकों में श्री अवधेश तिवारी, श्री जगन्नाथ पाण्डेय, श्री विशम्भर नाथ मिश्र, हरिश्चन्द्र वर्मा, फूलचन्द्र वर्मा, प्रकाश झा (प्राध्यापक समस्तीपुर बिहार), आशीष त्रिपाठी, श्री कुलदीप शुक्ल, श्री रमाकान्त मिश्र, श्री शिशिर मिश्र, श्री मृत्युंजय कुमार, प्रत्यय अमृत, प्रियंवदा, शालू वर्मा, चन्दे एवं अपने नाना-नानी, मामा-मामी के प्रति धन्यवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

शेषनाथ मिश्र

विजयदशमी
वि.सं.-2071
दिल्ली

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
NET BUREAU

Code No. : 25

Subject : SANSKRIT

1. वैदिक साहित्य

देवता :

अग्नि ; सवितृ ; विष्णु ; इन्द्र ; रुद्र ; बृहस्पति ; अश्विनौ ; वरुण ; उषस् ; सोम

विषय-वस्तु :

संहिताएँ ; ब्राह्मण एवं आरण्यक ; उपनिषद्

सम्बाद सूक्त :

पुरुरवा—उर्वशी ; यम—यमी ; सर्मा—पणि ; विश्वामित्र—नदी

वैदिक साहित्य का इतिहास :

वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त—मैक्समूलर ; ए० वेबर ; जैकोबी ; बालगंगाधर तिलक ; एम० विन्टरनिट्ज ; भारतीय परम्परागत विचार

ऋग्वेद का क्रम

संहिताओं के पाठ-भेद

वेदांग :

शिक्षा ; कल्प ; व्याकरण ; निरुक्त ; छन्द ; ज्योतिष

2. दर्शन

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका :

सत्कार्यवाद ; पुरुष-स्वरूप ; प्रकृति-स्वरूप ; सृष्टिक्रम ; प्रत्ययसर्ग ; कैवल्य

सदानन्द का वेदान्तसार :

अनुबन्ध-चतुष्टय ; अज्ञान ; अध्यारोप-अपवाद ; लिंगशरीरोत्पत्ति ; पंजीकरण ; विवर्त ; जीवनमुक्ति

केशवमिश्र की तर्कभाषा/अन्नंभट्ट का तर्कसंग्रह :

पदार्थ ; कारण ; प्रमाण—प्रत्यक्ष ; अनुमान ; उपमान ; शब्द

3. व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

व्याकरण :

परिभाषाएँ—संहिता ; गुण ; वृद्धि ; प्रातिपदिक ; नदी ; घि ; उपधा ; अपृक्त ; गति ; पद ; विभाषा ; सवर्ण ; टि ; प्रगृह्य ; सर्वनाम-स्थान ; निष्ठा

कारक : सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

समास : लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

भाषाविज्ञान :

भाषा की परिभाषा एवं प्रकार (परिवारमूलक एवं आकृतिमूलक)

भाषाओं का वर्गीकरण

भाषा प्रक्रिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर एवं स्वर

ध्वनि सम्बन्धी नियम

भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएँ

4. संस्कृत साहित्य एवं काव्यशास्त्र

निम्नलिखित ग्रन्थों का सामान्य अध्ययन :

पद्य : रघुवंश ; मेघदूत ; किरातार्जुनीय ; शिशुपालवध ; नैषधीयचरित ; बुद्धचरित

गद्य : दशकुमारचरित ; हर्षचरित ; कादम्बरी

नाटक : स्वप्नवासवदत्ता ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; मृच्छकटिक ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली ; वेणीसंहार

काव्यशास्त्र :

साहित्यदर्पण :

काव्य की परिभाषा

काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन

शब्दशक्ति—संकेतग्रह ; अभिधा ; लक्षणा ; व्यञ्जना

रस (रस-भेद स्थायी भावों सहित)

रूपक के प्रकार

नाटक के लक्षण

महाकाव्य के लक्षण

प्रश्न-पत्र—III (A)

(अनिवार्य वर्ग)

इकाई—I

संहिताएँ :

निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :

ऋग्वेद—अग्नि [1.1] ; इन्द्र [2.12] ; पुरुष [10.90] ; हिरण्यगर्भ [10.121] ; नासदीय [10.129] ; वाक् [10.125]

अथर्ववेद—पृथिवी [12.1]

ब्राह्मण एवं आरण्यक :

सामान्य लक्षण ; विशेषताएँ ; दर्शपौर्णमास यज्ञ ; आख्यान—शुनःशेप तथा वाङ्मनस् ; पञ्चमहायज्ञ

व्याकरण एवं वैदिक व्याख्या-पद्धति :

पदपाठ

स्वर—उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित

वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर

वैदिक व्याख्या-पद्धति—प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई—II

विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन। विशेषतः निम्नलिखित उपनिषदों के सन्दर्भ में :

ईश ; कठ ; केन ; बृहदारण्यक ; तैत्तिरीय

इकाई—III

वेदाङ्गों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय

निरुक्त (अध्याय 1 और 2)

चार पद—नाम का विचार ; आख्यात का विचार ; उपसर्गों का अर्थ ; निपातों की कोटियाँ

क्रिया के छः रूप (षड्भावविकार)

निरुक्त के अध्ययन के उद्देश्य

निर्वचन के सिद्धान्त

निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्तियाँ :

आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु

इकाई—IV

महाभाष्य (पस्पशाह्निक) :

शब्द की परिभाषा
शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध
व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य
व्याकरण की परिभाषा
साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम
व्याकरण की पद्धति

सिद्धान्तकौमुदी :

तिङन्त (भू एवं एध् मात्र)
कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया मात्र)
सन्धि ([illegible])
कारक प्रकरण
स्त्री प्रत्यय

भाषाविज्ञान :

भाषा की परिभाषा
भाषाओं का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)
संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय ध्वनि-यंत्र
ध्वनि-परिवर्तन के कारण
ध्वनि-नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर)
अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण
वाक्य का लक्षण तथा भेद
भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय
भाषा तथा वाक् में अन्तर
भाषा और बोली में अन्तर

इकाई—V

[illegible]

इकाई—VI

रामायण

रामायण का क्रम
रामायण में आख्यान
रामायणकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए रामायण एक प्रेरणा-स्रोत
रामायण का साहित्यिक महत्त्व

महाभारत

महाभारत का क्रम
महाभारत में आख्यान
महाभारतकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत एक प्रेरणा-स्रोत
महाभारत का साहित्यिक महत्त्व

पुराण

पुराण की परिभाषा
महापुराण एवं उपपुराण
पौराणिक सृष्टिविज्ञान
पुराण एवं लौकिक कलाएँ
पौराणिक आख्यान

इकाई—VII

कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)
मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय मात्र)

इकाई—VIII

पद्य

रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग)
किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग)
शिशुपालवध (प्रथम सर्ग)
नैषधीयचरित (प्रथम सर्ग)

गद्य :

दशकुमारचरितम् (अष्टमोच्छ्वासः)
हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वासः)
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)

काव्यशास्त्र :

काव्यप्रकाश—काव्यलक्षण ; काव्यप्रयोजन ; काव्यहेतु ; काव्यभेद ; शब्दशक्ति ; अभिहितान्वयवाद ; अन्विताभिधानवाद ; रसस्वरूप एवं रससूत्रविमर्श ; रसदोष ; काव्यगुण

अलंकार—अनुप्रास ; श्लेष ; वक्रोक्ति ; उपमा ; रूपक ; उत्प्रेक्षा ; समासोक्ति ; अपह्नुति ; निदर्शना ; अर्थान्तरन्यास ; दृष्टान्त ; विभावना ; विशेषोक्ति ; संकर ; संसृष्टि

ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)

इकाई—IX

नाट्य—कर्णभार ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली

नाट्यशास्त्र—भरत-नाट्यशास्त्र (प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय) ; दशरूपक (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

इकाई—X

तर्कसंग्रह (दीपिका व्याख्या सहित)

तर्कभाषा—केशवमिश्र

प्रमातृ, प्रमेय, प्रमाण और प्रमिति की अवधारणाओं का अध्ययन

प्रश्न-पत्र—III (B)

[ऐच्छिक/वैकल्पिक]

ऐच्छिक—I

संहिताएँ :

निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :

ऋग्वेद

वरुण [1.25]

सूर्य [1.125]

उषस् [3.61]

पर्जन्य [5.83]

शुक्ल यजुर्वेद

शिवसङ्कल्प [1.6]

प्रजापति [1.5]

अथर्ववेद

राष्ट्राभिवर्द्धनम् [1.29]

काल [10.53]

ब्राह्मण :

प्रतिपाद्य-विषय

विधि एवं उसके प्रकार

अग्निहोत्र एवं अग्निष्टोम यज्ञ

विभिन्न संहिताओं से ब्राह्मण-ग्रन्थों की सम्बद्धता

ऋक्-प्रातिशाख्य :

निम्नलिखित परिभाषाएँ :

समानाक्षर ; सन्ध्यक्षर ; अघोष ; सोष्म ; स्वरभक्ति ; यम ; रक्त ; संयोग ; प्रगृह्य ; रिफित

निरुक्त (VII-अध्याय—दैवत काण्ड)

मन्त्रों के प्रकार

देवताओं का स्वरूप

देवताओं की संख्या

ऐच्छिक—II

वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्ड)

स्फोट का स्वरूप ; शब्द-ब्रह्म का स्वरूप ; शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ ; स्फोट एवं ध्वनि के बीच सम्बन्ध ; शब्द-अर्थ सम्बन्ध ; ध्वनि के प्रकार ; भाषा के स्तर

सिद्धान्तकौमुदी

समास ; परस्मैपदविधान ; आत्मनेपदविधान

पाणिनीयशिक्षा

ऐच्छिक—III

योगसूत्र—व्यासभाष्य

चित्तभूमि ; चित्तवृत्तियाँ ; ईश्वर का स्वरूप ; योगाङ्ग ; समाधि ; कैवल्य

वेदान्त : ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्य [1.1]

न्याय-वैशेषिक : न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)

सर्वदर्शन संग्रह—जैनमत ; बौद्धमत

ऐच्छिक—IV

काव्यप्रकाश (द्वितीय तथा पञ्चम उल्लास)
वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)
काव्यमीमांसा (1 से 5 अध्याय)
रसगङ्गाधर—प्रथम आनन (रसनिरूपणान्त)

ऐच्छिक—V

पुरालिपि :

ब्राह्मीलिपि को पढ़ने का इतिहास
भारत में लेखन कला की प्राचीनता
ब्राह्मीलिपि की उत्पत्ति के सिद्धान्त
शिलालेख सम्बन्धी सामग्री के प्रकार
गुप्त एवं अशोक काल की ब्राह्मीलिपि

अशोक के अभिलेख :

प्रमुख शिलालेख
प्रमुख स्तम्भलेख
गुजर्रा लघु-शिलालेख
मास्कि शिलालेख
रुम्मिनदेई स्तम्भलेख
कान्धार का द्विभाषी शिलालेख

मौर्योत्तर काल के अभिलेख :

कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख
कनिष्क के शासन वर्ष 18 का मनकियाला अभिलेख
नहपान के काल (वर्ष 41, 42, 45) का नासिक गुहा अभिलेख
रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख
खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख :

समुद्रगुप्त का अलाहाबाद स्तम्भ लेख
चन्द्रगुप्त द्वितीय का वर्ष 61 का मथुरा शिलालेख
चन्द्र का महरौली लौह स्तम्भ लेख
कुमारगुप्त प्रथम के काल का बिलसद स्तम्भ लेख
कुमारगुप्त प्रथम का वर्ष 128 का दामोदरपुर ताम्र पट्ट अभिलेख
स्कन्दगुप्त का गिरनार शिलालेख
स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्र पट्ट अभिलेख
स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भ अभिलेख
तन्तुवाय श्रेणी का मन्दसौर शिलालेख
प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्र पट्ट अभिलेख
तोरमाण का एरण अभिलेख
मिहिरकुल का ग्वालियार अभिलेख
यशोधर्मन का मन्दसौर स्तम्भ लेख
यशोधर्मन-विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख
महानामन का बोधगया अभिलेख
यशोवर्मदेव के काल का नालन्दा शिलालेख
आदित्यसेन का अफसद शिलालेख
जीवितगुप्त द्वितीय का देवबर्णारक अभिलेख
धरसेन द्वितीय का मालिया ताम्र पट्ट अभिलेख
ईशानवर्मन का हड़हा अभिलेख
हर्ष का बांसखेड़ा ताम्र पट्ट अभिलेख
पुलकेशी द्वितीय का एहोले शिलालेख
प्रतिहार नृप मिहिरभोज का ग्वालियार अभिलेख

उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड,

पाठ्यक्रम
प्रशिक्षित स्नातक

विषयः–संस्कृत (02)

गद्य, पद्य एवं नाटक–अधोलिखित, ग्रन्थों के निर्धारित अंकों के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियाँ, शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी, चरित्र चित्रण तथा ग्रन्थकर्ता का परिचयः–
कादम्बरी–(शुकनासोपदेश मात्र), शिवराज विजयम्, (प्रथम निःश्वास), किरातर्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) मेघदूतम् (सम्पूर्ण) नीतिशतकाम् (सम्पूर्ण) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक) और उत्तर राम चरितम् (तृतीय अंक)।
व्याकरण–डा0 राम बाबू सक्सेना कृत "संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका" के आधार पर सन्धि, समास, कारक एवं प्रत्याहार का परिचय, अकारान्त, इकारान्त उकारान्त, ऋकारान्त, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसक लिंग शब्दों का रूप, सर्व, यत्, किम्, युष्मद इदम्, अस्मद, अयम् सर्वनामों के रूप एक से सौ तक की संख्याओं के संस्कृत शब्दों का ज्ञान, भू, गम्, पठ्, पा, लभ्, हन्, दुह, दा, भी, दिव, जनि, तुद, रथ, प्रच्छ, बू तथा चूर धातुओं के लट्, लोट्, लृट, लड़ और विधिलिंड़ में रूप।
संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का परिज्ञान, वाक्य परिवर्तन और अशुद्दि परिमार्जन।
प्रशिक्षणात्मक संस्कृत प्रशिक्षण की दृष्टि से व्याकरण, अनुवाद, पद्य आदि की पाठन विधियों का सामान्य परिचय।

उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

पाठ्यक्रम–प्रवक्ता
संस्कृत (05)

खण्ड क – साहित्य परिचय (गद्य, पद्य एवं नाटक)

निम्न ग्रन्थों के निर्धारित अंको के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियों के भावार्थ, शब्द का व्याकरणात्मक टिप्पणी, चरित्र चित्रण, तथा ग्रन्थकर्ता के परिचय।

कादम्बरी, (कथामुखम), नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास), शिशुपाल बधम् (प्रथम सर्ग), अभिज्ञान शाकुन्तलम और मृच्छकटिकम, गद्यकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य एवं नाट्यकाव्य के उदभव और विकास का सामान्यस परिचय।

खण्ड ख – संस्कृत वाङमय में प्रतिविम्बित भारतीय दर्शन

इस खण्ड में श्रीमद्भागवद्गीता, तर्कभाषा, साख्यकारिका तथा वेदान्तसार के अनुसार प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।

खाण्ड ग – काव्यशास्त्र

(साहित्य दर्पण एवं काव्य प्रकाश के अनुसार), काव्य लक्षण, प्रयोजन, शब्दवृत्तियां, ध्वनि, रस एवं निम्नलिखित अलंकारों का परिज्ञान–अनुप्रास, यमक श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अतिशयोक्ति, स्वभोक्ति विरोभास तथा पारिसंख्या।

खण्ड घ – भाषा विज्ञान एवं व्याकरण

भाषा का उदभव एवं विकास, ध्वनि परिवर्तन तथा अर्थपरिवर्तन, सभी गुणों की प्रतिनिधि धातुओं का दसों लकारों में रूप (लघु सिद्धान्त कौमुदी के आधार पर) सिद्धान्त कौमुदी के आधार पर सभी कारकों, विभक्तियों एवं समास का प्रक्रियात्मक ज्ञान। निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान–कृत–तव्यत, अनीयर, यत् धंश तृच......... क्त, क्तवतु, कत्वा, ल्ययू, शत् शान्च, तुमुन तद्धित–अक् क्तुप, मतुप, ढक, ढकी, फक, ख, यत् एवं छःस्त्री प्रत्यय–टाप डप्र, डीप् डीन। विशेष – उक्त प्रत्यय लघुसिद्धान्त कौमुदी के आधार पर प्रेष्टव्य है।

खण्ड ङ – रचना एवं पारिभाषिक पद

(क) संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का परिज्ञान, अशुद्धि परिमार्जन और वाक्य परिवर्तन।
(ख) नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।

[04] : SANSKRIT

Syllabus And Sample Questions

NOTE : STRUCTURE OF PAPER II AND REVISED STRUCTURE OF PAPER III PLEASE SEE PAGE NUMBER ONE.

PAPER-II

1. VEDIC LITERATURE

Deities :

Agni; Savitr; Visnu; Indra; Rudra; Bṛhaspati; Asvinā; Varuṇa; Usas; Soma

Subject matter of :

Samhitas; Brahmanas and Araṇyakas; Upaniṣads

Dialoge Hymns :

Pururavā-Urvaśī; Yama-Yamī, Sarmā-Paṇi, Visvāmitra-Nadi

History of Vedic Literature :

Main theories regarding the age of the Ṛgveda-Maxmuller, A.Weber

Jacobi, Bal Gangadhar Tilak, M. Winternitz, Indian traditional views

Arrangement of the Ṛgveda

Recensions of the Samhitās

Vedāṅgas :

Sikṣā, Kalpa, Vyākaraṇa, Nirukta, Chandas, Jyotis

2. DARSANA

Sāṁkhyakārikā of Isvarakṛṣṇa :

Satkāryavāda, Puruṣa-svarūpa, Prakṛti-svarūpa, Sṛṣṭikrama, Pratyayasarga, Kaivalya

Vedāntasāra of Sadānanda :

Anubandha-catuṣṭaya, Ajñāna, Adhyāropa-Apavāda, Lingasarīrotpatti, Pañcikaraṇa, Vivarta, Jivanmukti

Tarkabhāṣā of Kesavamisra/Tarkasamgraha of Annambhatta :

Padārth, Kāraṇa, Pramāṇa, Pratyakṣa, Anumāna, Upamāna, Sabda

3. GRAMMAR AND LINGUISTICS

Grammar :

Definitions-Samhitā, Guṇa, Vṛddhi, Pratipadika, Nadī, Ghi, Upadha, Apṛkta, Gati, Pada, Vibhaṣa, Savarṇa, Ti, Pragṛhya, Sarvanāmasthāna, Niṣṭha

Kāraka : As per Siddhāntakaumudi

Samāsa : As per Laghusiddhāntakaumudi

Linguistics :

Definition and types of languages-geneological and morphological

Classification of Languages

Speech-mechanism and classification of sounds : stops, fricatives, semi-vowels and vowels

Phonetic Laws

Characteristics of the three types of Indo-Aryan

4. SANSKRIT LITERATURE AND POETICS

General study of the following works :

Poetry : Raghuvamsa, Meghaduta, Kirātārjunīya, Śisupālavadha, Naiṣadhiyacarita, Buddhacarita

Prose : Daśakumāracarita, Harṣacarita, Kādambarī

Drama : Svapnavāsavadattā, Abhijñānśākuntala, Mṛcchakaṭika, Uttararāmacarita, Mudrarakṣasa, Ratnāvalī, Veṇnīsaṃhāra

Poetics :

Sāhityadarpaṇa :

Definition of Kāvya

Refutation of other definitions of kāvya

Śabdaśakti-

Saṅketagraha, Abhidhā, Lakṣaṇā, Vyanjanā

Rasa-Types of Rasas with their sthāyi bhāvas

Types of Rūpaka

Characteristics of Nāṭaka

Characteristics of Mahākāvya

PAPER-III(A)
[CORE GROUP]

Unit-I

Samhitas :

Study of the following hymns :

rgveda-Agni[1.1], Indra[2.12], Purusa[10.90], Hiranyagarbha[10.121], Nasadiya[10.129], Vak[10.125]

Atharvaveda-Prthivi [12.1]

Brahmanas and Aranyakas :

General characteristics, Peculiarities, Darsapaurnamāsa sacrifice

Legends-Sunaḥsepa and Vāṅmanas, Pañcamahāyajñas

Grammar and Schools of Vedic Interpretation :

Padapatha

Accent-Udātta, Anudātta and Svarita

Points of difference between Vedic and Classical Sanskrit

Schools of Vedic Interpretation-Traditional and Modern

Unit-II

Study of the contents and main concepts with special reference to the following Upanisads :

Isa, Katha, Kena, Bṛhadāraṇyaka, Taittiriya

Unit-III

General and brief introduction of Vedāngas

Nirukta (Chapters I and II)

Four-fold division of Padas-Concept of Nama, Concept of Akhyāta

Meaning of Upasargas, Categories of Nipātas

Six states of Action (Saḍbhāvavikāra)

Purposes of the study of Nirukta

Principles of Etymology

Etymology of the following words :

Acārya, Vira, Hrada, Go, Samudra, Vṛtra, Aditya, Uṣas, Megha, Vāk, Udak, Nadi, Asva, Agni, Jatavedas, Vaisvānara, Nighaṇṭu

[04] : SANSKRIT

Syllabus And Sample Questions

NOTE : STRUCTURE OF PAPER II AND REVISED STRUCTURE OF PAPER III PLEASE SEE PAGE NUMBER ONE.

PAPER-II

1. VEDIC LITERATURE

Deities :

Agni; Savitṛ; Viṣṇu; Indra; Rudra; Bṛhaspati; Asvinā; Varuṇa; Usas; Soma

Subject matter of :

Saṁhitās; Brahmaṇas and Araṇyakas; Upaniṣads

Dialoge Hymns :

Purūravā-Urvasī; Yama-Yamī, Sarmā-Paṇi, Visvāmitra-Nadi

History of Vedic Literature :

Main theories regarding the age of the Ṛgveda-Maxmuller, A.Weber Jacobi, Bal Gangadhar Tilak, M. Winternitz, Indian traditional views

Arrangement of the Ṛgveda

Recensions of the Saṁhitās

Vedāṅgas :

Sikṣā, Kalpa, Vyākaraṇa, Nirukta, Chandas, Jyotis

2. DARSANA

Sāṅkhyakārikā of Isvarakṛṣṇa :

Satkāryavāda, Puruṣa-svarūpa, Prakṛti-svarūpa, Sṛṣṭikrama, Pratyayasarga, Kaivalya

Vedāntasāra of Sadānanda :

Anubandha-catuṣṭaya, Ajñāna, Adhyāropa-Apavada, Lingasarīrotpatti, Pañcikaraṇa, Vivarta, Jivanmukti

Tarkabhāṣa of Kesavamisra/Tarkasaṁgraha of Annambhatta :

Padarth, Kāraṇa, Pramāṇa, Pratyakṣa, Anumāna, Upamāna, Sabda

GRAMMAR AND LINGUISTICS

Grammar :

Definitions-Saṁhitā, Guṇa, Vṛddhi, Prātipadika, Nadī, Ghi, Upadha, Apṛkta, Gati, Pada, Vibhāṣa, avarṇa, Ti, Pragṛhya, Sarvanāmasthāna, Niṣṭha

araka : As per Siddhāntakaumudī

māsa : As per Laghusiddhāntakaumudī

nguistics :

finition and types of languages-geneological and morphological

ssification of Languages

ech-mechanism and classification of sounds : stops, fricatives, semi-vowels and vowels

etic Laws

acteristics of the three types of Indo-Aryan

4. SANSKRIT LITERATURE AND POETICS

General study of the following works :

Poetry : Raghuvamsa, Meghaduta, Kirātarjunīya, Śiśupālavadha, Naiṣadhiyacarita, Buddhacarita

Prose : Daśakumāracarita, Harṣacarita, Kādambarī

Drama : Svapnavāsavadatta, Abhijñānśākuntala, Mṛcchakaṭika, Uttararāmacarita, Mudrarakṣasa, Ratnāvalī, Veṇīsaṃhāra

Poetics :

Sāhityadarpaṇa :

Definition of Kāvya

Refutation of other definitions of kāvya

Śabdaśakti-

Saṅketagraha, Abhidhā, Lakṣaṇā, Vyanjanā

Rasa-Types of Rasas with their sthāyi bhāvas

Types of Rūpaka

Characteristics of Nāṭaka

Characteristics of Mahākāvya

PAPER-III(A)
[CORE GROUP]

Unit-I

Samhitas :

Study of the following hymns :

rgveda-Agni[1.1], Indra[2.12], Purusa[10.90], Hiranyagarbha[10.121], Nasadiya[10.129], Vak[10.125]

Atharvaveda-Prthivi [12.1]

Brahmanas and Aranyakas :

General characteristics, Peculiarities, Darsapaurnamāsa sacrifice

Legends-Sunahsepa and Vāṅmanas, Pañcamahāyajñas

Grammar and Schools of Vedic Interpretation :

Padapatha

Accent-Udātta, Anudātta and Svarita

Points of difference between Vedic and Classical Sanskrit

Schools of Vedic Interpretation-Traditional and Modern

Unit-II

Study of the contents and main concepts with special reference to the following Upanisads :

Isa, Katha, Kena, Bṛhadāraṇyaka, Taittiriya

Unit-III

General and brief introduction of Vedāngas

Nirukta (Chapters I and II)

Four-fold division of Padas-Concept of Nama, Concept of Akhyāta

Meaning of Upasargas, Categories of Nipātas

Six states of Action (Saḍbhāvavikāra)

Purposes of the study of Nirukta

Principles of Etymology

Unit-IV

Mahābhāsya (Paspasāhnika) :
Definition of Sabda
Relation between Sabda and Artha
Purposes of the study of grammar
Definition of Vyākaraṇa
Result of the proper use of word
Method of grammar
Siddhāntakaumudī :
Tiṅanta (Bhū and Edh only)
Kṛdanta (Kṛtya Prakriya only)
Taddita (Matvarthīya)
Kāraka
Strī pratyaya

Linguistics :
Definition of language
Classification of languages (geneological and morphological)
Speech-mechanism with special reference to Sanskrit sounds
causes of phonetic-change
Phonetic laws (Grimm, Grassmann and Verner)
Directions of samantic change and reasons of change
Definition of Vākya and its types
General and brief introduction of Indo-European family of languages
Difference between Bhāṣā and Vāk
Difference between language and dialect

Unit-V

Expalanation and critical questions
Sāṃkhyakārikā of Isvarakriṣṇa
Vedāntasāra of Sadānand
Arthasaṃgraha of Laugākṣi Bhāskara

Unit-VI

Rāmāyana
Arrangement of the Rāmāyaṇa
Legends in the Rāmāyaṇa
Society in the Rāmāyana
Rāmāyaṇa as a source of later Sanskrit works
Literary value of the Rāmāyaṇa

Mahabharata
Arrangement of the Mahābhārata
Legends in the Mahābhārata
Society in the Mahābhārata
Mahābhārata as a source of later Sanskrit works
Literary value of the Mahābhārata

Purāṇas
Definition of Purāṇa
Mahāpurāṇas and Upapurāṇas
Purāṇic cosmology
Purāṇas and Secular Arts
Purāṇic legends

Unit-VII

Kauṭilīya Arthasāstra (First ten Adhikāra)
Manusmṛti (I, II and VII Adhyāyas)
Yājñavalkyasmṛti (Vyavahārādhyaya only)

Unit-VIII

Poetry :
Raghuvamsa (I and XIV Cantos)
Kirātārjunīya (I Canto)
Sisupālavadha (I Canto)
Naiṣadhiyacarita (I Canto)

Prose :
Dasakumāracaritam (VIII Ucchvāsa)
Harṣacaritam (V Ucchvāsa)
Kādambarī (Mahasveta Vṛttānta)

Kavyasastra :
Kāvyaprakāsa-Kāvyalakṣaṇa, Kāvyaprayojana, Kāvyahetu, Kāvyabheda, Sabdasakti, Abhihitānvayavāda, Anvitābhidhānavāda, Concept of Rasa and discussion of Rasasutra, Rasadoṣa, Kāvyaguṇa
Alamkāras-Anuprāsa, Sleṣa, Vakrokti, Upamā, Rupaka, Utprekṣā, Samāsokti, Apahnuti, Nidarsanā, Arthāntaranyāsa, Dṛṣṭānta, Vibhāvanā, Viseṣokti, Sankara, Sansṛṣti
Dhvānyaloka (I Udyota)

Unit-IX

Nāṭya-Karnabhāra, Abhijnānasākuntala, Uttararāmacarita, Mudrārākṣasa, Ratnāvali
Nāṭyasāstra-Naṭyasastra of Bharata (I, II and VI Adhyāya), Dasarupaka (I and III Prakāsa)

Unit-X

Tarkasaṁgraha (with Dīpikā)
Tarkabhāṣā of Kesavamisra
A study of the concept of Pramātṛ, Prameya, Pramāṇa and Pramiti

PAPER-III (B)
[ELECTIVE / OPTIONAL]

Elective-I

Samhitas :
Study of the following hymns :
Rgveda
Varuna [1.25]
Surya [1.125]

Usas [3.61]
Parjanya [5.83]
Śukla Yajurveda
Śivasaṅkalpa [1.6]
Prajāpati [1.5]
Atharvaveda
Rastrābhivardhanam [1.29]
Kala [10.53]
Brāhmana :
Subject-matter
Vidhi and its types
Agnihotra and Agniṣtoma Sacrifices
Affiliation of the Brāhmana texts with different Samhitās
Ṛkprātisākhya :
Definitions of the following :
Samānākṣara, Sandhyakṣara, Aghoṣa, Soṣman, Svarabhakti, Yama, Rakta, Samyoga, Pragṛhya, Riphita
Nirukta (VII Adhyaya-Daivata Kanda)
Types of Mantras
Characteristics of Deities
Number of Deities

Elective-II

Vakyapadiya (Brahmakānda)
Nature of Sphota, Natue of Śabda-Brahma, Powers of Śabda Brahma, Relation between Sphota and Dhvani, Relation between Śabda and Artha, Types of Dhvani, Levels of language
Siddhāntakaumudī
Samāsa, Parasmaipadavidhāna, Ātmanepādavidhāna
Pāṇinīyaśikṣa

Elective-III

Yogasūtra-Vyāsabhāṣya
Cittabhūmi, Cittavṛttis, Concept of Isvara, Yogāngas, Samādhi Kaivalya
Vedānta : Brahmasutra-Śānkarabhāṣya (1.1)
Nyāya-Vaiśeṣika : Nyāyasiddhānta-Muktābali (Anumāna Khaṇḍa)
Sarvadarśana-sangraha : Jainism, Buddhism

Elective-IV

Kavya-prakāsa (II and V Ullāsa)
Vakroktijivitam (I Unmesa)
Kāvyamimānsā (I to V Adhyāyas)
Rasagangādhara (I Anana up to Rasanirupaṇa)

Elective-V

palaeography :
History of the decipherment of the Brāhmi Script
Antiquity of the art of writing in India
Theories of the origin of the Brāhmī Script
Types of Epigraphic/a records
Brāhmi Script of the Mauryan and Gupta periods

Inscriptions of Asoka :
Major Rock Edicts
Major Pillar Edicts
Gujarra Minor Rock Edict
Maski Rock Edict
Rummindei Pillar Edict
Bilingual Inscription from Kāndhāra

Post-Mauryan Inscriptions :
Sāranātha Buddhist Image Inscription of Kaniska's regal-year 3
Mankiāla Inscription of Kaniska's regal–year 18
Nasik Cave Inscription of Nahapānas time (years 41,42,45)
Girnār Rock Inscription of Rudradāman
Hāthigumpha Inscription of Khāravela

Gupta and post-Gupta Inscriptions :
Allahabad Pillar Inscription of Samudragupta
Mathura Stone Inscription of Chandragupta II's reign-year 61
Mehrauli Iron Pillar Inscription of Chandra
Bilsad Pillar Inscription of the time of Kumāragupta I
Damodarpur Copper Plate Inscription of Kumāragupta I- year 128
Girnār Rock Inscription of Skandagupta
Indore Copper Plate Inscription of Skandagupta
Bhitari Pillar Inscription of Skandagupta
Mandasor Stone Inscription of the Guild of silk weavers
Poona Copper Plate Inscription of Prabhāvati Guptā
Eran Inscription of Toramāna
Gwalior Inscription of Mihirakula
Mandasor Pillar Inscription of Yasodharman
Mandasor Stone Inscription of Yasodharman-Visnuvardhana
Bodhagaya Inscription of Mahānāman
Nālandā Stone Inscription of the time of Yaśovarmadeva
Aphsad Stone Inscription of Adityasena

Deobamārka Inscription of Jivitagupta II
Māliyā Copper Plate Inscription of Dharasena II
Harāhā Inscription of Iśānavarman
Banāskherā Copper Plate Inscription of Harsa
Aihole Stone Inscription of Pulakeśin II
Gwalior Inscription of Pratihāra King Mihirbhoja

उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद

संस्कृत

इकाई–1
वैदिक साहित्य

देवता :
अग्नि, सविह, विष्णु, इन्द्र, रूद्र, वृहस्पति, अश्विनौ, वरूण, उपस्, सोम।

संहिताएं :
निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन–
ऋग्वेद– अग्नि (1.1), इन्द्र (2.12), पुरूष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), नासदीय (10.129), वाक् (10.125)।
अथर्ववेद– पृथिवी (12.1)।
ब्राह्मण एवं आरण्यक– सामान्य लक्षण, विशेषताएं, दर्शपौर्णमास यज्ञ, पञ्चमहायज्ञ।
आख्यान–शुनः शेप आख्यान तथा वाङ्मनस आख्यान।
सम्वाद सूक्त– पुरूरवा–उर्वशी, यम–यमी, सर्मा–पणि, विश्वामित्र–नदी।

वैदिक साहित्य का इतिहास :
वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त–मैक्समूलर, ए0बेवर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम0 विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार।
पदपाठ
वैदिक स्वर– उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित
वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में भेद
वैदिक व्याख्या पद्धति–प्राचीन एवं अर्वाचीन
ऋग्वेद का कम
संहिताओं का पाठ भेद

प्रमुख उपनिषद :
ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय (विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन)

इकाई–2

वेदाङ्ग–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छनद, ज्योतिष (सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय)
निरूक्त (अध्याय–1 और 2)– चार पद–नाम का विचार, आख्यात का विचार, उपसर्गो का अर्थ, निपातों की कोटियां, किया के छः रूप (षड्भाव विकार), निरूक्त के अध्ययन के उद्देश्य, निर्वाचन के सिद्धान्त।
निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्तियां– आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।

इकाई–3

दर्शन :
ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका–सत्कार्यवाद, पुरूष–स्वरूप, प्रकृति–स्वरूप सृष्टिकम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य

सदानन्द का वेदान्तसार–अनुबन्ध–चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप–अपवाद, लिंग शरीरोत्पत्ति, पचीकरण, विवर्त, जीवनमुक्ति
केशवमिर की तर्कभाषा/अन्नंमट्ट का तर्कसंग्रह–पदार्थ, कारण, प्रमाण–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान शब्द लौगाक्षी भास्कर का अर्थसंग्रह

इकाई–4

व्याकरण :
परिभाषाएं– संहिता, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्म, सर्वनामस्थान, निष्ठा, लोप, संयोग।
कारकः सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार।
समासः लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार।
सन्धिः लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार।
सिद्धानत कौमुदीः तिङन्त (भू एवं एध् मात्र), कृदन्त (कृत्य प्रकिया मात्र) तद्धित (मत्वर्थीय), स्त्री प्रत्यय।
महामाष्य (पस्पशाहिनक) : शब्द की परिभाषा, शब्द एवं अर्थ एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, व्याकरण की पद्धति, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम।

इकाई–5

भाषा विज्ञान :
भाषा की परिभाषा एवं प्रकार (परिवारमूलक एवं आकृतिमूलक)
भाषाओं का वर्गीकरण
भाषा प्रकिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण–स्पर्श, संघर्षी अर्धस्वर एवं स्वर
संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में मानवीय ध्वनि–यंत्र ध्वनि–परिवर्तन के कारण
ध्वनिसम्बन्धी नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर)
अर्थ परिवर्तन की दिशाएं तथा कारण
भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएं
वाक्य का लक्षण तथा भेद
भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य परिचय
भाषा तथा वाक् में अन्तर
भाषा और बोली में अन्तर।

इकाई–6

संस्कृत साहित्य :
निम्नलिखित ग्रन्थों का सामान्य अध्ययन–
पद्य–रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग), मेघदूत (सम्पूर्ण),
किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग), शिशुपाल वध (प्रथम सर्ग),
नैषधीय चरित (प्रथम सर्ग), बुद्धचरित (प्रथम सर्ग)
गद्य–दशकुमारचरित (अष्टम उच्छ्वास), हर्षचरित (पञ्चम उच्छ्वास)
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)
नाटक–अभिज्ञानशाकुन्तल, उत्तररामचरित, स्वप्नवासबदत्ता, मृच्छकटिक, मुद्राराक्षस, रत्नावली, कर्णभार, वेणीसंहार
चम्पूकाव्य–नलचम्पू (वर्षा वर्णन पर्यन्त)।

इकाई–7

काव्यशास्त्र :
काव्यप्रकाश–काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्रविमर्श, रसदोष, काव्यगुण, गुण और अलंकार में भेद।
अलंकार–अनुप्रास, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दुष्यन्त, विभावना, विशेषोक्ति, संकर, संसृष्टि।

साहित्य दर्पण :
काव्य की परिभाषा
काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन
शब्दशक्ति–संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना
रस (रस भेद स्थायी भावों सहित)
रूपक के प्रकार
नाटक के लक्षण
महाकाव्य के लक्षण
ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)
नाट्यशास्त्र– भरतनाट्यशास्त्र (प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय)
दशरूपक (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

इकाई–8

रामायण : रामायण का कम, रामायण में आख्यान, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिये रामायण एक प्रेरणास्रोत, रामायण का साहित्यिक महत्व, रामायण की आदिकाव्यता।
महाभारत : महाभारत का कम, महाभारत में आख्यान, महाभारत–कालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिये महाभारत एक प्रेरणास्रोत, महाभारत का साहित्यिक महत्व
पुराण : पुराण की परिभाषा, महापुराण एवं उपपुराण, पौराणिक सृष्टि–विज्ञान, पुराण एवं लौकिक कलाएं, पौराणिक आख्यान।

इकाई–9

कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)
मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय मात्र)

इकाई–10

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता–
प्राचीन संस्कृति की विशेषताएं
प्राचीन भारत में स्त्रियों की दशा
प्राचीन भारत में शिक्षा
शिक्षा के प्रमुख केन्द्र (नालान्दा, तक्षशिला)
राज्य के सप्तांड सिद्धान्त
प्राचीन भारत में कला।

विषयानुक्रमणिका

काव्यशास्त्र

खण्ड-9

द्वितीय भाग

एच्छिक/ वैकल्पिक

ऐच्छिक-1

ऐच्छिक-2

ऐच्छिक-3

ऐच्छिक-4

ऐच्छिक-5

प्रथम भाग

खण्ड-1

वैदिक साहित्य

- वेद शब्द निष्पन्न होता है— विद् धातु, घञ् प्रत्यय करने पर
- वेद शब्द का अर्थ है— ज्ञान
- मन्त्र और ब्राह्मण दोनों का सामूहिक नाम है— वेद[1]
- विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय है— वेद
- वैदिक मन्त्रों का संग्रह कहलाता है— संहिता
- मन्त्र शब्द निष्पन्न होता है— मन् धातु से
- ऋग्वेद में 'मन्' का अर्थ है— कहना
- मन्त्रकाल तथा संहिताकाल दोनों में वेद का स्वरूप था— त्रिविध-मन्त्रात्मक
- वेद शब्द के पर्याय के रूप में अनेक शब्दों का प्रयोग है, वे हैं— श्रुति, आम्नाय, छन्दस्, आगम, त्रयी
- मन्त्र तीन प्रकार के हैं— ऋक्, साम, यजुष्[2]
- वेद हैं— अपौरुषेय (अपौरुषेयं वाक्यं वेदः)
- मन्त्रकाल की रचना का परिवेश है— याज्ञिक
- वैदिक ऋषियों की दृष्टि में ज्ञान के तीन धरातल हैं— आत्मिक, दैविक तथा भौतिक
- ब्रह्माण्डीय तत्त्व हैं— देव
- प्रत्यक्ष दृश्यमान रूप है— भौतिक
- द्वापर युग में वेदों को संकलित किया गया— चार भागों में[3]
- वेदों के संकलनकर्त्ता थे— व्यास[4]

---

1. सं.सा.स. इति.— कपिलदेव द्विवेदी
2. सं.वा.बृ.इति.— बलदेव उपाध्याय, वेदखण्ड
3. महाभारत शान्ति 238.104
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास— बलदेव उपाध्याय वेदखण्ड पृ. 44

- व्यास ने वेदों का विभाजन किया— चार भागों में
- व्यास ने एक-एक भाग को पढ़ाया— अपने शिष्यों को
- व्यास के चारों शिष्यों का क्रम से नाम है— पैल, वैशम्पायन, जैमिनि और सुमन्तु
- व्यास ने पैल को अध्ययन कराया था— ऋग्वेद का
- व्यास ने वैशम्पायन को अध्ययन कराया था— यजुर्वेद का
- व्यास ने जैमिनि को अध्ययन कराया था— सामवेद का
- व्यास ने सुमन्तु को अध्ययन कराया था— अथर्ववेद का
- ऋक् का विषय है— शस्त्र
- यजुष् का विषय है— यज्ञकर्म
- साम का विषय है— स्तुतिस्तोम
- अथर्ववेद का विषय है— प्रायश्चित्त
- यज्ञकर्म का अन्य नाम है— इज्या
- मन्त्रों द्वारा उच्चरित परन्तु अगेय कहलाता है— शस्त्र
- यज्ञ को पूर्णरूप से सम्पादित करने के लिए होते थे— चार ऋत्विक्
- चार ऋत्विक् क्रमशः हैं— होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा
- ऋग्वेद का ऋत्विक् है— होता
- होता के तीन सहायक थे— मैत्रावरुण (प्रशास्ता) अच्छावाक् तथा ग्रावस्तुत
- यही कहलाते थे— होतृवर्ग या होतृगण
- अध्वर्यु के तीन सहायक थे— प्रतिप्रस्थाता, नेष्टा, उन्नेता
- उद्गाता के तीन सहायक थे— प्रस्तोता, प्रतिहर्ता, सुब्रह्मण्य
- ब्रह्मा के तीन सहायक थे— ब्राह्मणांच्छंसी, आग्नीध्र, पोता
- वेदत्रयी है— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद
- यज्ञों में देवताओं का आह्वान करने का कार्य था— होता का
- यज्ञ के अनुष्ठान का पूरा भार संभालता था— अध्वर्यु
- सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ऋत्विक् था— अध्वर्यु

- यज्ञों में संगीतात्मक ऋचाओं का विशेष पद्धति से गान करके देवताओं को प्रसन्न करता था— उद्गाता
- यज्ञ का निरीक्षण करता था— ब्रह्मा
- तीनों वेदों में निपुण कहा गया है— ब्रह्मा को
- वेद में स्वर हैं— तीन 1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
- वेद में विकृतियाँ हैं— आठ, 1. जटा, 2. माला, 3. शिखा, 4. रेखा, 5. ध्वज, 6. दण्ड, 7. रथ, 8. घन
- ऋग्वेद का उपवेद है— आयुर्वेद (अग्नि ऋषि)
- यजुर्वेद का उपवेद है— धनुर्वेद (वायु ऋषि)
- सामवेद का उपवेद है— गान्धर्ववेद (आदित्य ऋषि)
- अथर्ववेद का उपवेद है— अर्थवेद (अङ्गिरा ऋषि)
- प्रस्थानत्रयी हैं— 1. उपनिषद् 2. गीता 3. ब्रह्मसूत्र
- ऋग्वेद प्रतीक है— शरीर का
- यजुर्वेद प्रतीक है— मन का
- सामवेद प्रतीक है— बुद्धि का
- अथर्ववेद प्रतीक है— आत्मा का
- वैदिक छन्द के भेद होते हैं— दो
  1. केवल अक्षर गणनानुसारी 2. पादाक्षर गणनानुसारी
- वेदों में छन्द पाए जाते हैं— 21
- छन्दों को विभक्त किया जाता है— तीन सप्तक में
- इनमें भी प्रमुख छन्द हैं— 7
- गायत्री छन्द है— त्रिपदा
- गायत्री में वर्ण हैं— 24
- उष्णिक् में वर्ण हैं— 28
- अनुष्टुप् में वर्ण हैं— 32
- बृहती में वर्ण हैं— 36

(ऊपर के पाँच बिन्दु: ऋग्वेद)

- पङ्क्ति में वर्ण हैं—40
- त्रिष्टुप् में वर्ण हैं—44
- जगती में वर्ण हैं—48
- अति जगती में वर्ण हैं—52
- शक्वरी में वर्ण हैं—56
- अति शक्वरी में वर्ण हैं—60
- अष्टि में वर्ण हैं—64
- अति अष्टि में वर्ण हैं—68
- धृति में वर्ण हैं—72

(ऋग्वेद)

- अति धृति में वर्ण हैं—76
- कृति में वर्ण हैं—80
- प्रकृति में वर्ण हैं—84
- आकृति में वर्ण हैं—88
- विकृति में वर्ण हैं—92
- संस्कृति में वर्ण हैं—96
- अभिकृति में वर्ण हैं—100
- उत्कृति में वर्ण हैं—104

(यजुर्वेद)

- वेदों में बसन्त सम्पात माना गया है— मृगशिरा नक्षत्र से
- वर्तमान में बसन्त सम्पात होता है— पूर्व भाद्रपद के चतुर्थ चरण से[1]
- वेदों में प्रयुक्त सबसे प्रमुख छन्द है— गायत्री
- ऋचाओं द्वारा आह्वान किया जाता है— देवों का

✦✦✦

5. वैदिक साहित्य और संस्कृति— बलदेव उपाध्याय पृ.सं.95

ऋग्वेद संहिता

- ऋग्वेद संहिता के प्रवचनकर्त्ताओं में सर्वप्रथम नाम आता है— पैल का
- ऋक् का अर्थ है— स्तुतिपरक मन्त्र
- ऋक् की परिभाषा है—'ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्'
- ऋग्वेद का देवता है— अग्नि
- ऋग्वेद का ऋत्विक् है— होता
- ऋग्वेद का आचार्य है— पैल
- महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाएँ हैं— 21
- चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की शाखाएँ हैं— पाँच

  1. शाकल 2. वाष्कल 3. आश्वलायन 4. शाङ्खायन 5. माण्डूकायन
- ऋग्वेद की पूर्ण उपलब्ध शाखा है— शाकल
- ऋग्वेद में ब्राह्मण हैं— दो

  1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शाङ्खायन/कौषीतकि
- ऋग्वेद के आरण्यक हैं— दो

  1. ऐतरेय आरण्यक 2. शाङ्खायन आरण्यक
- ऋग्वेद के उपनिषद् हैं— तीन

  1. ऐतरेयोपनिषद् 2. कौषीतकि उपनिषद् 3. वाष्कलोपनिषद्
- ऋग्वेद में एकमात्र शिक्षा है— पाणिनीय शिक्षा
- ऋग्वेद में एकमात्र प्रातिशाख्य है— ऋक्प्रातिशाख्य
- ऋक् प्रातिशाख्य रचना है— शौनक की
- ऋग्वेद में श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं— दो—

  1. आश्वलायन 2. कौषीतकि / शाङ्खायन
- ऋग्वेद में गृह्यसूत्र हैं— तीन

  1. आश्वलायन 2. कौषीतकि / शाङ्खायन 3. शाम्भ्य

ऋग्वेद में धर्मसूत्र है—एक 1. वशिष्ठ धर्मसूत्र

➢ ऋग्वेद में नहीं है—शुल्बसूत्र
➢ ऋग्वेद का विभाजन किया गया है—दो क्रमों में
➢ 1. मण्डल क्रम 2. अष्टक क्रम[1]
➢ मण्डल क्रम में किया गया विभाजन है—शाकल शाखा का
➢ मण्डल क्रम में मण्डल हैं—10
➢ मण्डलों को विभाजित किया गया है—अनुवाक में
➢ अनुवाकों को विभक्त किया गया है—सूक्त में
➢ सूक्तों में हैं—ऋचाएँ या मन्त्र
➢ मण्डल क्रम का विभाजन है—ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक
➢ अष्टक क्रम में किया गया विभाजन है—वाष्कलशाखा
➢ प्रत्येक अष्टक में हैं—आठ अध्याय
➢ अष्टक के प्रत्येक अध्याय विभक्त हैं—वर्गों में
➢ एक-एक वर्ग में है—मन्त्र समूह
➢ सम्पूर्ण ऋग्वेद में अध्याय हैं—64
➢ सम्पूर्ण ऋग्वेद में वर्ग संख्या है—2024 (18 बालखिल्य सूक्तों सहित)
➢ सम्पूर्ण ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर वर्ग संख्या है—2006
➢ सम्पूर्ण ऋग्वेद में अनुवाक हैं—85
➢ सम्पूर्ण ऋग्वेद में सूक्त हैं—1028
➢ बालखिल्य सूक्तों को छोड़कर ऋग्वेद की कुल सूक्त संख्या है—1017
➢ बालखिल्य सूक्त मिलते हैं—अष्टम मण्डल में
➢ ऋग्वेद का प्राचीनतम मण्डल है—द्वितीय से सप्तम मण्डल
➢ ऋग्वेद का वंश मण्डल कहलाता है—द्वितीय से सप्तम
➢ मण्डल का अर्थ है—परिवार

---

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन—कपिलदेव द्विवेदी

➢ ऋग्वेद का द्वितीय से सप्तम मण्डल सम्बन्धित है—ऋषि के वंशज से
➢ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ऋषि हैं—शतार्चिन
➢ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के ऋषि हैं—गृत्समद
➢ ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के ऋषि हैं—विश्वामित्र
➢ ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ऋषि हैं—वामदेव
➢ ऋग्वेद के पञ्चम मण्डल के ऋषि हैं—अत्रि
➢ ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल के ऋषि हैं—भारद्वाज एवं उनके वंशज
➢ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ऋषि हैं—वशिष्ठ
➢ ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के ऋषि हैं—कण्व
➢ ऋग्वेद के नवम मण्डल के ऋषि हैं—मधुछन्दा
➢ ऋग्वेद के दशम मण्डल के ऋषि हैं—भृगु आदि
➢ नवम मण्डल कहलाता है—पवमान मण्डल
➢ नवम मण्डल का देवता है—सोम
➢ वंश मण्डलों में प्रत्येक सूक्तों का प्रथम वर्ग संबोधित किया गया है—अग्नि को
➢ वंश मण्डलों में प्रत्येक सूक्तों का द्वितीय वर्ग संबोधित किया गया है—इन्द्र को
➢ ऋग्वेदीय देवियों में अग्रगण्य स्थान है—उषा का
➢ सबसे अर्वाचीन मण्डल है—दशम मण्डल
➢ ऋग्वेद के समस्त सूक्तों की ऋचाओं की संख्या है—10580¼
➢ द्वितीय से नवम मण्डल तक मिलता है—रेफ
➢ प्रथम मण्डल और दशम मण्डल में रेफ के स्थान पर मिलता है—लकार
➢ दो पाद वाली ऋचाएँ अध्ययन काल में मानी जाती हैं—चतुष्पदा
➢ दो पाद वाली ऋचाएँ यज्ञ काल में मानी जाती हैं—द्विपदा
➢ प्रबन्ध काव्य तथा नाटकों से सम्बन्ध जोड़ने वाले सूक्त हैं—20

ये सूक्त कहलाते हैं— संवाद सूक्त
- स्वस्तिवाचन है— ऋग्वेद के भद्र सूक्त में
- ऋग्वेद में कुल देवता हैं— 33
- ऋग्वेद के काल निर्धारण में सर्वमान्य मत है— मैक्समूलर का (1200B.C.)
- ऋग्वेद के 'कितव सूक्त' में वर्णन है— जुए का
- ऋग्वेद की पूर्णरूपेण उपलब्ध शाखा है— शाकल शाखा
- ऋग्वेद के प्रथम पदपाठकर्ता हैं— शाकल
- शाकलशाखा के अनुसार ऋग्वेद का अन्तिम मन्त्र है— 'समानी व आकूतिः'
- ऋग्वेद का प्रारम्भिक सूक्त है— अग्नि सूक्त
- ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त है— संज्ञान सूक्त
- वर्तमान में आश्वलायनशाखा का उपलब्ध है— श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र
- शाङ्खायनशाखा के उपलब्ध हैं— ब्राह्मण और आरण्यक
- माण्डूकायनशाखा के उपलब्ध नहीं हैं— कोई भी ग्रन्थ
- ऋग्वेद को विभाजित किया गया है— तीन वर्गों में
  1. धार्मिक सूक्त 2. लौकिक सूक्त 3. दार्शनिक सूक्त
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल की सूक्त संख्या है— 191
- ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल की सूक्त संख्या है— 43
- ऋग्वेद के तृतीय मण्डल की सूक्त संख्या है— 62
- ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल की सूक्त संख्या है— 58
- ऋग्वेद के पञ्चम मण्डल की सूक्त संख्या है— 87
- ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल की सूक्त संख्या है— 75
- ऋग्वेद के सप्तम मण्डल की सूक्त संख्या है— 104
- ऋग्वेद के अष्टम मण्डल की सूक्त संख्या है— 103
- ऋग्वेद के नवम मण्डल की सूक्त संख्या है— 114

- ऋग्वेद के दशम मण्डल की सूक्त संख्या है— 191
- ऋग्वेद में संवाद सूक्तों का वर्णन है— दशम मण्डल में
- पद्यात्मक वेद है— ऋग्वेद
- विश्व के आदिग्रन्थ ऋग्वेद का आद्यक्षर है— 'अ'
- खिल भाग का तात्पर्य है— परिशिष्ट से
- वेद के द्रष्टा हैं— ऋषि
- 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' उद्धृत है— ऋग्वेद में (1/164/46)
- ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के देवता हैं— अग्नि
- ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों की संख्या है— 11 (मण्डल क्रम)
- देवता शब्द का लिङ्ग है— स्त्रीलिङ्ग
- ऋग्वेदीय धर्म सूत्र है— वशिष्ठ धर्मसूत्र
- ऋग्वेद में ऋषिकाओं की संख्या है— 21[2]
- ऋग्वेद में संवाद सूक्तों की संख्या है— 20
- ऋग्वेदीय देवताओं को यास्क ने विभक्त किया है— 3 भागों में[3]
- प्रथम भाग है— पृथ्वी स्थानीय (देवता-अग्नि)
- द्वितीय भाग है— अन्तरिक्ष स्थानीय (देवता-इन्द्र या वायु)
- तृतीय भाग है— द्युस्थानीय (देवता-सूर्य)
- ऋग्वेद में सर्वत्र संचार है— आशावाद का
- ऋग्वेद में क्षात्र-गुणयुक्त देव है— मरुत् और रुद्र
- ऋग्वेद में सबसे कठोर न्यायाधीश है— वरुण
- ऋग्वेद में भयंकर रुद्र के रूप में हैं— शिव
- यज्ञ साक्षात् रूप है— विष्णु का
- विष्णु नाम है— सूर्य का[4]
- पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त है— ऋ. 10-95
- यम-यमी संवाद सूक्त है— ऋ.10-10

---

2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास— कपिलदेव द्विवेदी— पृ.सं. 32
3. निरुक्त (7-12)
4. सं.सा. स.इति.— कपिलदेव द्विवेदी- पृ.सं. 45

- सोम-सूर्या संवाद सूक्त है— ऋ.10-85
- सरमा-पणि संवाद सूक्त है— ऋ.10-108
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त है— ऋ.3-33
- इन्द्र-मरुत संवाद सूक्त है— ऋ.1-165, 1-170 तक
- इन्द्र-इन्द्राणी, वृषा-कपि संवाद सूक्त है— ऋ.10-86
- अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद सूक्त है— ऋ.10-86
- सूर्य की पुत्री है— सूर्या
- सूर्या का विवाह हुआ था— चन्द्रमा से
- ऋग्वेद में कुल शब्द हैं— 153826[5]
- ऋग्वेद में कुल अक्षर हैं— 432000
- ऋग्वेद में अधिक महत्त्पूर्ण है— मण्डल क्रम
- ऋग्वेद के मण्डल क्रम का विभाग किया था— शाकल ऋषि ने
- ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्त हैं— प्रथम एवं दशम मण्डल में
- ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्त हैं— 'अस्य वामस्य सूक्त' (1/164)
- ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्त हैं— पुरुष सूक्त (10/90)
- ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्त हैं— हिरण्यगर्भ सूक्त (10/121)
- ऋग्वेद में दार्शनिक सूक्त हैं— नासदीय सूक्त (10/129)
- ऋग्वेद का आध्यात्मिक सूक्त है— वाक्सूक्त
- 'शुनः शेप' आख्यान मिलता है— ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में
- तिलक के मत में इन्द्र प्रतीक है— सूर्य का
- 'ऋक्लक्षण' है— ऋग्वेद में
- 'ऋक्लक्षण' के रचनाकार हैं— शौनक
- ऋक् प्रातिशाख्य को कहा जाता है— परिषद् /पार्षद
- 'सं गच्छध्वं संवदध्वं' इस मन्त्र से सम्बद्ध वेद है— ऋग्वेद



5. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास— बलदेव उपाध्याय

यजुर्वेद संहिता

- यजुर्वेद का विषय है— कर्मकाण्ड
- कर्मकाण्ड का वेद है— यजुर्वेद
- यजुर्वेद का ऋत्विक् है— अध्वर्यु
- यजुर्वेद का मुख्य देवता है— वायु
- यजुर्वेद के आचार्य हैं— वैशम्पायन
- यज्ञादि कर्मों के प्रतिपादक गद्यात्मक मन्त्रों को कहा जाता है— यजुष्[1]
- यजुष् का अर्थ है— अनियताक्षरावसानो यजुः (जिसमें अक्षरों की संख्या नियत न हो)
- यास्क के अनुसार यज् धातु से बना शब्द है— यजुष्
- यजुर्वेद को कहते हैं— अध्वर्यु वेद
- यजुर्वेद विभाजित है— दो सम्प्रदायों में
- यजुर्वेद के सम्प्रदाय हैं— दो
  1. ब्रह्म सम्प्रदाय (कृष्ण यजुर्वेद)
  2. आदित्य सम्प्रदाय (शुक्ल यजुर्वेद)
- ब्रह्म सम्प्रदाय का वेद है— कृष्ण यजुर्वेद
- आदित्य सम्प्रदाय का वेद है— शुक्ल यजुर्वेद
- जिसमें शुद्ध मन्त्र हैं, वह कहलाता है— शुक्ल यजुर्वेद (विनियोगा-मिश्रितत्वं शुक्लत्वम्)
- जिसमें व्याख्या, विवरण एवं विनियोग मिश्रित है, वह है— कृष्ण यजुर्वेद (विनियोगमिश्रित्वं कृष्णत्वम्)
- शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएँ हैं— दो
  1. माध्यन्दिन या वाजसनेयि-संहिता 2. काण्व संहिता
- शुक्ल यजुर्वेद को कहते हैं— वाजसनेयि-संहिता

1. सं.वा.बृ.इति.— बलदेव उपाध्याय— पृ.सं. 212

- सम्पूर्ण वाजसनेयि-संहिता में कुल अध्याय हैं— 40
- सम्पूर्ण वाजसनेयि-संहिता में कुल अनुवाक हैं— 303
- सम्पूर्ण वाजसनेयि-संहिता में मन्त्रों (कण्डिकाएँ) की संख्या है— 1975
- वाजसनेयि-संहिता का 34वाँ अध्याय है— शिवसंकल्प सूक्त
- वाजसनेयि-संहिता का 40वाँ अध्याय है— ईशावास्योपनिषद्
- वाजसनेयि-संहिता के प्रथम और द्वितीय अध्याय में हैं— दर्श तथा पौर्णमास हवियों से सम्बद्ध मन्त्र
- वाजसनेयि-संहिता के तृतीय अध्याय में हैं— अग्निहोत्र (दैनिक अग्नि पूजा एवं हवन), चातुर्मास्य के लिए उपयोगी मन्त्र
- वाजसनेयि-संहिता के चतुर्थ से अष्टम अध्याय में है— सोमयागों का वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के नवम एवं दशम अध्याय में है— राजसूय एवं वाजपेय याग वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के 11 से 18 अध्याय तक है— अग्निचयन[2]
- वेदी के निर्माण में ईंटें प्रयोग होती हैं— 10800
- वाजसनेयि-संहिता के 16वें अध्याय में है— शतरूद्रीय होम का प्रसंग
- वाजसनेयि-संहिता के 19 से 21 अध्याय तक है— सौत्रामणि याग वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के 22 से 25 अध्याय तक है— अश्वमेध यज्ञ विधान वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के 26 से 29 अध्याय में है— खिलमन्त्रों का वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के 30वें अध्याय में है— पुरुषमेध यज्ञ
- वाजसनेयि-संहिता के 31वें अध्याय में है— पुरुष सूक्त का वर्णन
- वाजसनेयि-संहिता के 34वें अध्याय में है— शिवसंकल्प सूक्त
- वाजसनेयि-संहिता के 35वें अध्याय में है— पितृमेध यज्ञ
- सम्पूर्ण काण्व संहिता में कुल अध्याय हैं— 40

2. वैदिक साहित्य और संस्कृति— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 128

- सम्पूर्ण काण्व संहिता में कुल मन्त्र हैं— 2086
- सम्पूर्ण काण्व संहिता में कुल अनुवाक हैं— 328
- वाजसनेयि-संहिता का अधिक प्रचार है— उत्तर भारत में
- काण्व संहिता का अधिक प्रचार है— महाराष्ट्र में
- महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की शाखाएँ हैं— 100
- शुक्ल यजुर्वेद की कुल शाखाएँ हैं— 15[3]
- शुक्ल यजुर्वेद की उपलब्ध शाखाओं की संख्या है— दो
- कृष्णयजुर्वेद की शाखाएँ मानी जाती हैं— 86[4]
- कृष्णयजुर्वेद की उपलब्ध शाखाएँ हैं— 4
- शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण है— शतपथ ब्राह्मण
- शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद की किन शाखाओं में है?— दोनों
  1. माध्यन्दिन 2. काण्व
- शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं में उपलब्ध आरण्यक है— बृहदारण्यक
- कृष्णयजुर्वेद की शाखाएँ हैं— चार
  1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कठ 4. कपिष्ठल
- कृष्णयजुर्वेद के ब्राह्मण हैं— चार
  1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कठ 4. कपिष्ठल
- कृष्णयजुर्वेद के आरण्यक हैं— दो
  1. तैत्तिरीय आरण्यक 2. मैत्रायणी आरण्यक
- शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद् हैं— दो
  1. ईशावस्योपनिषद् 2. बृहदारण्यकोपनिषद्
- शुक्ल यजुर्वेद की शिक्षा है— याज्ञवल्क्य शिक्षा
- शुक्ल यजुर्वेद की शिक्षा है— माध्यन्दिन शिक्षा
- कृष्ण यजुर्वेद की शिक्षा है— वाशिष्ठी शिक्षा

3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 219
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 219

- कृष्ण यजुर्वेद की शिक्षा है— माण्डव्य शिक्षा
- कृष्ण यजुर्वेद की शिक्षा है— भारद्वाज शिक्षा
- शुक्ल यजुर्वेद का प्रातिशाख्य है— वाजसनेयि प्रातिशाख्य (कात्यायन कृत)
- कृष्ण यजुर्वेद का प्रातिशाख्य है— तैत्तिरीय प्रातिशाख्य
- शुक्ल यजुर्वेद का श्रौतसूत्र है— कात्यायन या पारस्कर
- कृष्ण यजुर्वेद के श्रौतसूत्र हैं— बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाण, वैखानस, भारद्वाज, कठ, वाधूल, वाराह, मानव, मैत्री
- शुक्ल यजुर्वेद का गृह्यसूत्र है— कात्यायन या पारस्कर
- कृष्ण यजुर्वेद के गृह्यसूत्र हैं— कठ, आपस्तम्ब, बौधायन, वैखानस, भारद्वाज, वाधूल
- शुक्ल यजुर्वेद के धर्मसूत्र हैं— दो 1. हारीत 2. शङ्ख
- कृष्ण यजुर्वेद के धर्मसूत्र हैं— विष्णु, वशिष्ठ, आपस्तम्ब, बौधायन, हिरण्यकेशी, वैखानस
- शुक्ल यजुर्वेद का शुल्बसूत्र है— कात्यायन
- कृष्ण यजुर्वेद के शुल्बसूत्र हैं— मानव, बौधायन, आपस्तम्ब, मैत्रायणी, वाराह, वाधूल
- तैत्तिरीय शाखा में काण्ड हैं— 7
- तैत्तिरीय शाखा में प्रपाठक हैं— 44
- तैत्तिरीय शाखा में अनुवाक हैं— 631
- तैत्तिरीय शाखा में मन्त्र हैं— 2198
- सायणाचार्य ने सर्वप्रथम भाष्य लिखा था— तैत्तिरीय संहिता पर
- मैत्रायणी संहिता में काण्ड हैं— 4
- मैत्रायणी संहिता में प्रपाठक हैं— 54
- मैत्रायणी संहिता में मन्त्र हैं— 2144
- इस (मैत्रायणी) शाखा को कहते हैं— कलाप या कालापक
- कठ संहिता में स्थानक हैं— 40

- कठ संहिता में अनुवाक हैं— 843
- कठ संहिता में मन्त्र हैं— 3091
- कपिष्ठल शाखा में हैं— 6 अष्टक
- 6 अष्टक विभक्त हैं— 48 अध्यायों में
- यजुर्वेद के भाष्यकर्त्ता हैं— दयानन्द सरस्वती
- मनस्तत्त्व की विवेचना के लिए प्रसिद्ध यजुर्वेदीय सूक्त है— शिवसंकल्प सूक्त
- 'शतपथ' का शाब्दिक अर्थ है— 'शतं पन्थानो यस्य तच्छतपथम्'
- शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार पिनाक धनुष है— रुद्र का
- कृष्ण यजुर्वेद का उपनिषद् है— कठोपनिषद्, मैत्राण्युपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वेतरोपनिषद्
- याज्ञवल्क्य की पत्नियाँ थीं— दो
  1. मैत्रेयी 2. कात्यायनी
- वन में जाते समय याज्ञवल्क्य ने ब्रह्म विद्या की शिक्षा दी थी— मैत्रेयी को
- वेदत्रयी हैं— पारलौकिक फलों के दाता



सामवेद संहिता

- ➢ साम का विषय है— स्तुतिस्तोम
- ➢ सामवेद का ऋत्विक् है— उद्गाता
- ➢ सामवेद को कहा जाता है— औद्गात्र वेद
- ➢ सामवेद के आचार्य हैं— जैमिनि
- ➢ सामवेद का देवता है— सूर्य
- ➢ 'सा' का अर्थ है— ऋचा
- ➢ 'अम' का अर्थ है— गान (गान्धार आदि स्वर)
- ➢ गीता में कृष्ण ने जिस वेद को अपना स्वरूप बताया है, उसका नाम है— सामवेद[1]
- ➢ ओङ्कार का दूसरा नाम है— उद्गीथ
- ➢ 'वेदानां सामवेदोऽस्मि' यह उक्ति है— श्रीमद्भगवतगीता[2] में (गी.10/42)
- ➢ महाभाष्यकार पतञ्जलि के अनुसार सामवेद की शाखाएँ हैं— 1000 (सहस्र)
- ➢ 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' यह सम्बद्ध है— महाभाष्य से
- ➢ सामवेद की उपलब्ध शाखाएँ हैं— तीन

  1. कौथुमीय 2. राणायनीय 3. जैमिनीय या तलवकार
- ➢ सामवेद की सर्वाधिक लोकप्रिय शाखा है— कौथुमीय शाखा
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या है— 9
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— पञ्चविंश
- ➢ पञ्चविंश ब्राह्मण को कहते हैं— प्रौढब्राह्मण, महाब्राह्मण, ताण्ड्यब्राह्मण
- ➢ प्रौढब्राह्मण से सम्बन्धित वेद है— सामवेद

1. भगवद्गीता-10/42 2. भगवद्गीता-10/42

- ➢ सामवेद का ब्राह्मण है— षड्विंश ब्राह्मण
- ➢ षड्विंश ब्राह्मण को कहा जाता है— अद्भुत ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— सामविधान ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— आर्षेय ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— दैवत ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— उपनिषद् ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— संहितोपनिषद् ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— वंश ब्राह्मण
- ➢ सामवेदीय ब्राह्मण है— जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण
- ➢ सामवेद में उपनिषद् हैं— दो

  1. छान्दोग्योपनिषद् 2. केनोपनिषद्
- ➢ सामवेद में आरण्यक हैं— दो

  1. जैमिनीय / तलवकार 2. छान्दोग्य आरण्यक
- ➢ सामवेदीय शिक्षा का नाम है— नारदीय शिक्षा
- ➢ ऋक्तन्त्र के रचनाकार— शाकटायन
- ➢ सामवेद का प्रातिशाख्य है— पुष्यसूत्र प्रातिशाख्य
- ➢ पुष्यसूत्र प्रातिशाख्य के रचनाकार हैं— पुष्य ऋषि
- ➢ सामवेद में छन्द हैं— दो 1. गाथा 2. प्रगाथा
- ➢ सामवेद के श्रौतसूत्र हैं— लाट्यायन, द्राह्यायण, मशकसूत्र / आर्षेय, खादिर, जैमिनीय
- ➢ सामवेद के गृह्यसूत्र हैं— खादिर, गोभिल, गौतम, जैमिनीय
- ➢ सामवेद का एकमात्र धर्मसूत्र है— गौतम धर्मसूत्र
- ➢ गौतम धर्मसूत्र से सम्बन्धित वेद है— सामवेद
- ➢ सबसे प्राचीन धर्मसूत्र है— गौतम धर्मसूत्र
- ➢ सामवेद में नहीं है— शुल्बसूत्र
- ➢ सामवेद की कुल शाखाएँ हैं— 13

- सामवेद विभक्त है— दो भागों में 1. पूर्वार्चिक 2. उत्तरार्चिक
- सामवेद के पूर्वार्चिक में काण्ड हैं— चार
  1. आग्नेय 2. ऐन्द्र 3. पवमान 4. आरण्यकाण्ड महानाम्नी
- सामवेद के पूर्वार्चिक में प्रपाठक (अध्याय) हैं— 6
- सामवेद के पूर्वार्चिक में कुल मन्त्रों की संख्या है— 650
- सामवेद के उत्तरार्चिक में प्रपाठक हैं— 9 या 21 अध्याय
- उत्तरार्चिक में कुल मन्त्रों की संख्या है— 1225
- सामवेद में कुल मन्त्रों की संख्या है— 1875
- सामवेद में ऋग्वेदस्थ मन्त्रों की संख्या— 1771 [3]
- सामवेद के मन्त्र हैं— 104
- उत्तरार्चिक में सूक्त हैं— 400
- सामवेद के अधिकांश मन्त्र हैं— 'ऋ.' के 8वें एवं 9वें मण्डल से
- गान कितने प्रकार के होते हैं?— चार
  1. ग्राम या वेय गान 2. अरण्यगान 3. ऊहगान 4. उह्यगान
- सामगान हैं— पाँच
  1. प्रस्ताव 2. उद्गीथ 3. प्रतिहार 4. उपद्रव 5. निधन
- 'हुँ' से प्रारम्भ होने वाला सामगान है— प्रस्ताव
- ऋचाओं का संग्रह है— आर्चिक
- 'ऊँ' से प्रारम्भ होने वाला सामगान है— उद्गीथ
- सामवेद का प्रधान ऋत्विक् है— उद्गाता
- 'प्रतिहार' का अर्थ है— दो को जोड़ने वाला
- 'प्रतिहार' को गाने वाला ऋत्विक् है— प्रतिहर्ता
- 'उपद्रव' को गाने वाला ऋत्विक् है— उद्गाता
- मन्त्र का दो पद्यांश होता है— निधन में
- निधन का गायन करते हैं— प्रस्तोता, उद्गाता और प्रतिहर्त्ता

3. सं.सा.समी.इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 60

- सामविकार हैं— 6 [4]
- सामविकार के क्रमशः नाम हैं— 1. विकार 2. विश्लेषण
- 3. विकर्षण 4. अभ्यास 5. विराम 6. स्तोभ
- 'शब्द' को आवश्यकतानुसार परिवर्तित करने वाला सामविकार है— विकार
- शब्द या पद को तोड़ने वाला सामविकार है— विश्लेषण
- एक स्वर को देर तक खींचने वाला सामविकार है— विकर्षण
- किसी पद को बार-बार बोलने वाला सामविकार है— अभ्यास
- गान की सुविधा के लिए शब्द को तोड़कर रुक जाने वाला सामविकार है— विराम
- आलाप के योग्य पदों को ऊपर से जोड़ने वाला सामविकार है— स्तोभ
- पूर्वार्चिक का प्रथम प्रपाठक कहलाता है— अग्निपर्व या आग्नेय काण्ड
- पूर्वार्चिक का द्वितीय से चतुर्थ तक का प्रपाठक कहलाता है— ऐन्द्रपर्व
- पूर्वार्चिक का पञ्चम प्रपाठक कहलाता है— पवमानपर्व
- पूर्वार्चिक का षष्ठ प्रपाठक कहलाता है— अरण्यपर्व
- उद्गाता प्रथमतः संगीत शिक्षा से शिक्षित होता है— पूर्वार्चिक भाग में
- ऋग्वेद के 1771 मन्त्रों में 267 पुनरुक्त मन्त्रों को निकालने पर मन्त्र बचते हैं— 1504
- सामवेद में ऋग्वेद के मन्त्र हैं— 1504
- संगीत के आधार पर सामवेद के प्रमुख स्वर हैं— सात
- कौथुम शाखा के उच्चारण की पद्धति है— दो
  1. नागर पद्धति 2. मद्र पद्धति
- नारदीय शिक्षा के अनुसार सामगान सम्बन्धी स्वरों की संख्या है— 7



4. सं.सा.समी.इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 62

अथर्ववेद संहिता

- अथर्ववेद का ऋत्विक् है— ब्रह्मा
- अथर्ववेद का देवता है— सोम
- अथर्ववेद का आचार्य है— सुमन्तु
- यज्ञ का अध्यक्ष होता है— ब्रह्मा
- अथर्ववेद का प्रतिपाद्य विषय है— प्रायश्चित्त
- अथर्ववेद फल देने वाला है— ऐहिक
- अथर्वा ऋषि का वंश है— अंगिरा
- वेदत्रयी हैं— पारलौकिक फलों के दाता
- अथर्ववेद संहिता के नामकरण के कारण ऋषि हैं— अथर्वा
- अथर्ववेद के अन्य नाम हैं— आंगिरस वेद, अथर्वाङ्गिरो-वेद, ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, भृग्वङ्गिरोवेद, भैषज्यवेद, छन्दोवेद, महीवेद [1]
- अथर्ववेद का प्राचीन नाम है— अथर्वाङ्गिरस
- पतञ्जलि के अनुसार अथर्ववेद की शाखाएँ हैं— 9 (नवधाऽऽथर्वणो वेदः) [2]
- अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा है— दो 1. शौनक 2. पैप्पलाद
- अथर्ववेद की सर्वाधिक लोकप्रिय शाखा है— शौनक शाखा
- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण है— गोपथ ब्राह्मण
- अथर्ववेद में नहीं है— आरण्यक
- अथर्ववेद में उपनिषद् हैं— तीन
  1. प्रश्नोपनिषद् 2. मुण्डकोपनिषद् 3. माण्डूक्योपनिषद्
- अथर्ववेद की एकमात्र शिक्षा है— माण्डुकी शिक्षा

---

1. सं. सा. समी. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 65
2. सं. सा. समी. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 66

- अथर्ववेद में प्रातिशाख्य हैं— दो
  1. शौनकीय प्रातिशाख्य 2. अथर्ववेद प्रातिशाख्य
- अथर्ववेद का श्रौतसूत्र है— वैतान
- अथर्ववेद का गृह्यसूत्र है— कौशिक
- अथर्ववेद में नहीं है— धर्मसूत्र
- अथर्ववेद में नहीं है— शुल्ब सूत्र
- शौनकीय शाखा में काण्ड हैं— 20
- शौनकीय शाखा में सूक्त हैं— 730 [3]
- अथर्ववेद का सबसे बड़ा काण्ड है— 20वाँ काण्ड
- अथर्ववेद का सबसे छोटा काण्ड है— 17वाँ काण्ड
- अथर्ववेद में मन्त्रों की संख्या है— 5987 [4]
- अथर्ववेद के उपवेद हैं— पाँच
  1. सर्पवेद 2. पिशाचवेद 3. असुरवेद 4. इतिहासवेद 5. पुराणवेद[5]
- इनमें से प्राप्य उपवेद हैं— दो 1. इतिहासवेद 2. पुराणवेद
- अथर्ववेद की शाखाओं के नाम हैं— नौ
  1. पैप्पलाद 2. स्तोद (तौद) 3. मोद 4. शौनकीय 5. जाजल 6. जलद 7. ब्रह्मवेद 8. देवदर्श 9. चारणवैद्य
- चारणवैद्य शाखा है— अथर्ववेद की
- अथर्ववेद के सूक्तों में प्रतिपादित विषयों को तीन वर्गों में रखा जाता है— 1. अध्यात्मप्रकरण 2. अधिभूतप्रकरण 3. अधिदैवतप्रकरण
- अथर्ववेद का 15वाँ काण्ड कहलाता है— व्रात्यकाण्ड
- अथर्ववेद की विषय सामग्री को विभाजित किया जाता है— 8 वर्गों में
  1. भैषज्य सूक्त 2. आयुष्य सूक्त 3. पौष्टिक सूक्त 4. स्त्रीकर्मसूक्त 5. प्रायश्चित्त सूक्त 6. ब्रह्मण्यसूक्त 7. राजकर्म सूक्त 8. अभिचारसूक्त

---

3. सं. सा. समी. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 66
4. सं. सा. समी. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ.सं. 66
5. गोपथ ब्राह्मण - 1/10

वैदिक-साहित्य
(एक संक्षिप्त परिचय)

वेद (संहिता)	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा/प्रातिशाख्य	कल्पसूत्र				अन्य
					श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र	
ऋग्वेद शाखा 1. शाकलशाखा 2. वाष्कलशाखा 3. आश्वलायनशाखा 4. शांखायनशाखा 5. माण्डूकायनशाखा	1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. शांखायन या कौषीतकि ब्राह्मण	1. ऐतरेय 2. शांखायन	1. ऐतरेयोपनिषद् 2. कौषीतकि-उपनिषद् 3. वाष्कलोप-निषद्	1. पाणिनीयशिक्षा 2. ऋक्प्रातिशाख्य/ परिषद् (पार्षद्) ऋक्लक्षण (शौनक की रचना)	1.आश्व-लायन 2.कौषी-तकि या शांखायन	1.आश्व-लायन 2.शांखा-यन 3.शाम्बव्य	वशिष्ठ धर्मसूत्र (एकमात्र)	कोई नहीं	ऋत्विक्— होता मन्त्र— 10580 1/4 सूक्त— 1017 अनुवाक - 85 मण्डल— 10, मुख्य देवता— अग्नि अष्टक— 8 अध्याय— 64, आचार्य— पैल वर्ग — 2024 **काल निर्धारण** 1. मैक्समूलर— 1000-1200 B.C. 2. वेबर— लगभग-1200-1500 B.C 3. तिलक— 2500-4000 B.C 4. योकोबी— 2500-4500 B.C 5. विन्टरनित्ज— 4500-6000 B.C

वेद (संहिता)	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा/प्रातिशाख्य	कल्पसूत्र				अन्य
					श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र	
यजुर्वेद शाखा 1. शुक्लयजुर्वेद-शाखा i. माध्यन्दिन या वाजसनेयिशाखा ii काण्वशाखा	1. शुक्ल. i. शतपथ (माध्यन्दिन शाखा) ii शतपथ (काण्वशाखा)	1. शुक्ल. i. बृहदारण्यक (दोनों शाखाओं में)	1. शुक्ल. i. ईशावास्योपनिषद् ii. बृहदारण्यकोपनिषद्	1. वाजसनेयि-प्रातिशाख्य (कात्यायन) 2. तैत्तिरीय प्रा. 3. याज्ञवल्क्य शिक्षा	शुक्ल. 1.कात्या-यन या पारस्कर	शुक्ल. 1.कात्या-यन या पारस्कर	शुक्ल. 1.हारीत 2.शंख	शुक्ल. 1.कात्या-यन	ऋत्विक्— अध्वर्यु शाखाएँ— 85 मुख्य देवता— वायु मुख्य आचार्य— वैशम्पायन विषय— विविधयागादि
2. कृष्ण यजुर्वेद-शाखा 1. तैत्तिरीयशाखा 2. मैत्रायणीशाखा 3. कठशाखा 4. कपिष्ठलशाखा	2. कृष्ण. 1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कठ 4. कपिष्ठल	2. कृष्ण. i. तैत्तिरीय ii. मैत्रायणी	2. कृष्ण. i. कठोपनिषद् ii. मैत्राण्यु-पनिषद् iii. तैत्तिरीयोप-निषद् iv. श्वेताश्वेतरो-पनिषद्	4. वाशिष्ठी शिक्षा 5. माण्डव्य शिक्षा 6. भारद्वाज शिक्षा 7. माध्यन्दिन शिक्षा 8. अवसाननिर्णय शिक्षा	2.कृष्ण. 1.कठ 2.आप-स्तम्ब 3.बौधा-यन 4.सत्या-षण 5.वैखानस 6.भारद्वाज 7.वाधूल	2.कृष्ण. 1. कठ 2. आप-स्तम्ब 3. बौधा-यन 4. सत्या-षण 5.वैखानस 6.भारद्वाज 7.वाधूल	2.कृष्ण. 1.विष्णु 2.वशिष्ठ 3.आप-स्तम्ब 4.बौधायन 5.हिरण्य-केशी 6.वैखानस	2.कृष्ण. 1. मानव 2. बौधा-यन 3. आप-स्तम्ब 4. मैत्रा-यणी 5. वाराह 6. वाधूल	1. वाजसनेयिशाखा- अध्याय— 40 अनुवाक— 303 मन्त्र/कण्डिकाएँ— 1975 2. काण्व शाखा— अध्याय— 40 अनुवाक— 328 मन्त्र— 2086

वेद (संहिता)	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा/प्रातिशाख्य	कल्पसूत्र				अन्य
					श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र	
सामवेद शाखा 1. कौथुमीयशाखा 2. राणायनीयशाखा 3. जैमिनीयशाखा	1. प्रौढ/ पञ्चविंश/ महाब्राह्मण 2. षड्विंश 3. सामविधान 4. आर्षेय 5. देवताध्याय 6. उपनिषद्/ मन्त्र या छान्दोग्य 7. संहितोपनिषद् 8. वंशब्राह्मण 9. जैमिनीय या तलवकार	1. तलवकार या जैमिनीयोपनिषद् 2. छान्दोग्य-आरण्यक	1. छान्दोग्योपनिषद् 2. केनोपनिषद्	1. नारदीय शिक्षा 2. ऋक्तन्त्र 3. पुष्पसूत्र प्रातिशाख्य (पुष्प ऋषि प्रणीत)	1. लाट्यायन 2. द्राह्यायण 3. मशक-सूत्र या आर्षेय 4. खादिर 5. जैमिनीय	1. खादिर 2. गोभिल 3. गौतम 4. जैमिनीय	1. गौतम धर्मसूत्र (एकमात्र)	(कोई नहीं)	शाखाएँ— 1000 (सहस्रवर्त्मा सामवेद:) कौथुमीयशाखा पूर्वार्चिक— 650 मन्त्र उत्तरार्चिक— 1225 मन्त्र कुल— 1875 मन्त्र सामविकार— 6 सामगान— 5 ऋत्विक्— उद्गाता मुख्य आचार्य— जैमिनि मुख्य देवता— सूर्य विषय— स्तुतिस्तोम

वेद (संहिता)	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा/प्रातिशाख्य	कल्पसूत्र				अन्य
					श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र	
अथर्ववेद शाखा 1. पिप्पलादशाखा 2. शौनकशाखा 3. मोदशाखा 4. स्तौदशाखा 5. जाजलशाखा 6. जलदशाखा 7. ब्रह्मवेदशाखा 8. देवदर्शशाखा 9. चारणवैद्यशाखा	1. गोपथ (एकमात्र)	कोई नहीं	1. प्रश्नोपनिषद् 2. मुण्डकोपनिषद् 3. माण्डूक्योपनिषद्	1. माण्डूकी शिक्षा 2. शौनकीय प्रातिशाख्य 3. अथर्ववेद प्रातिशाख्य	1. वैतान (एकमात्र)	1. कौशिक (एकमात्र)	कोई नहीं	कोई नहीं	ऋत्विक्— ब्रह्मा आचार्य— सुमन्तु देवता— सोम काण्ड— 20 सूक्त— 731 मन्त्र— 6000

- रोग तथा उसके निदान का उल्लेख स्थल है— भैषज्य सूक्त
- स्वास्थ्य परक बातों का उल्लेख स्थल है— आयुष्य सूक्त
- कृषिकार्य, गृह निर्माणादि का उल्लेख स्थल है— पौष्टिक सूक्त
- विवाह, प्रेम, सन्तानोत्पत्ति इत्यादि का उल्लेख स्थल है— स्त्रीकर्म सूक्त
- प्रायश्चित्त करने के मन्त्र हैं— प्रायश्चित्त सूक्त में
- सृष्टि के परमतत्त्व परब्रह्म का विवेचन स्थल है— ब्रह्मण्य सूक्त
- राजाओं तथा उनके कार्य एवं जादू-टोने के मन्त्र स्थल हैं— राजकर्म सूक्त
- दैत्य, राक्षस, शत्रु आदि के क्रिया-कलाप का स्थल है— अभिचार सूक्त
- यज्ञ के पूर्ण संस्कार के लिए आवश्यक वेद है— अथर्ववेद
- 'शं नो देवीरभीष्टये' उक्ति है— अथर्ववेद की
- अथर्ववेद का विवाह से सम्बन्धित काण्ड है— 14वाँ काण्ड
- अथर्ववेद के 20वें काण्ड का अधिकतम सूक्त सम्बन्धित है— इन्द्र से
- गोपथब्राह्मण विभाजित है— दो भागों में 1. पूर्वगोपथ 2. उत्तरगोपथ
- पूर्वगोपथ में प्रपाठक हैं— 5
- उत्तरगोपथ में प्रपाठक हैं— 6
- गोपथब्राह्मण में कुल प्रपाठक हैं— 11
- भूमिसूक्त से सम्बन्धित वेद है— अथर्ववेद
- पृथ्वी सूक्त सम्बन्धित वेद है— अथर्ववेद
- सबसे अर्वाचीन ब्राह्मण है — गोपथ



वेद का काल निर्धारण

- वैदिक काल के सम्बन्ध में प्रथम प्रयत्नकर्त्ता थे— मैक्समूलर महोदय
- मैक्समूलर का सम्बन्ध था— जर्मनी देश से
- बुद्ध को आधार मानकर वैदिक साहित्य का प्रारम्भ माना है— मैक्समूलर ने[1] (1200B.C.)
- बुद्ध का आविर्भाव काल है— 500 ई.पू.
- मैक्समूलर ने समग्र वैदिक युग को बाँटा है— चार विभागों में [2]
  1. छन्द काल 2. मन्त्र काल 3. ब्राह्मण काल 4. सूत्र काल
- छन्द काल है— 1200 ई.पू. से 1000 ई.पू.
- मन्त्र काल है— 1000 ई.पू. से 800 ई.पू.
- ब्राह्मण काल है— 800 ई.पू. से 600 ई.पू.
- सूत्र काल है— 600 ई.पू. से 200 ई.पू.
- मैक्समूलर के मत में ऋग्वेद का काल है— 1200 ई.पू.
- वेदों का समय अनिश्चित मानते हैं— प्रो.ए.वेबर
- प्रो. ए. वेबर थे— जर्मन विद्वान्
- वेबर के मत में ऋग्वैदिक काल इसके बाद का कभी भी स्वीकार नहीं किया जा सकता— 1200 ई.पू. या 1500 ई.पू.
- पाश्चात्य विद्वान्, जिसने ज्योतिष को आधार बनाकर वेदकाल निर्धारण किया है— याकोबी
- याकोबी का पूरा नाम है— हरमन याकोबी (जर्मन)
- कृत्तिका और वसन्त-सम्पात के आधार पर ऋग्वेद का काल निर्धारण किया था— याकोबी ने
- याकोबी ऋग्वेद का काल मानते हैं— 4500 ई.पू.

---

1. सं.सा. समी. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ. सं. 53
2. पृ. सं. 51

- ➢ ज्योतिष के आधार पर वेदों का काल निर्धारण करने वाले भारतीय विद्वान हैं— बालगङ्गाधर तिलक
- ➢ तिलक ने वैदिक काल को विभक्त किया है— चार भागों में[1],
  1. अदिति काल 2. मृगशिरा काल
  3. कृत्तिका काल 4. अन्तिम काल
- ➢ अदिति काल है— 6000 ई.पू. से 4000 ई.पू.
- ➢ मृगशिरा काल है— 4000 ई.पू. से 2500 ई.पू.
- ➢ कृत्तिका काल है— 2500 ई.पू. से 1400 ई.पू.
- ➢ अन्तिम काल है— 1400 ई.पू. से 500 ई.पू.
- ➢ तिलक के अनुसार आर्य सभ्यता के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काल था— मृगशिरा काल [2]
- ➢ कृत्तिका काल में रचना हुई— वेदाङ्ग ज्योतिष की
- ➢ तिलक के मत में षड्दर्शन सूत्रों की रचना हुई— अन्तिम काल में
- ➢ बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ— अन्तिम काल में
- ➢ विन्टरनित्स ऋग्वेद का समय मानते हैं— 2500 ई.पू.
- ➢ पुरातात्त्विक आधार पर भारतीय मत में ऋग्वेद का काल है— 4000 ई. पू.
- ➢ पुरातात्त्विक आधार पर पाश्चात्य में ऋग्वेद का काल है— 2000 ई.पू.
- ➢ ऋग्वैदिक मन्त्रों की अधिक रचना हुई है— मृगशिरा काल में



---

1. संस्कृत सा. इति.— उमा शङ्कर शर्मा ऋषि पृ. सं.102
2. सं. सा. स. इति.— कपिल देव द्विवेदी पृ. सं. 53

अग्नि सूक्त (ऋग्वेद 1.1)

- ➢ अग्नि सूक्त से सम्बद्ध वेद है— ऋग्वेद
- ➢ अग्नि सूक्त के ऋषि हैं— विश्वामित्र
- ➢ अग्नि सूक्त का देवता है— अग्नि
- ➢ अग्नि सूक्त में छन्द है— गायत्री
- ➢ गायत्री छन्द में वर्ण हैं— 24
- ➢ अग्नि देवता है— पृथ्वी स्थानीय
- ➢ ऋग्वेद में अग्नि वर्णित सूक्त हैं— 200
- ➢ वैदिक आर्यों का सर्वाधिक पवित्र देवता है— अग्नि
- ➢ सभी मण्डलों के प्रारम्भिक सूक्त में वर्णन है— अग्नि का
- ➢ सूक्तों के आधार पर इन्द्र के बाद स्थान है— अग्नि का
- ➢ अग्नि शब्द संस्कृत में बना है— 'अग्' धातु से
- ➢ यास्क द्वारा निरुक्त में अग्नि का निर्वचन किया गया— 7/14 में
- ➢ यास्क के अनुसार अग्नि का निर्वचन है— 1. अग्रणीः भवति 2. अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते 3. अङ्गं नयति सन्नमानः
- ➢ स्थौलाष्ठीवि के अनुसार अग्नि का निर्वचन है— 'अक्नोपनः भवति'
- ➢ सात जिह्वाओं वाला कहा गया है— अग्नि
- ➢ अग्नि का नेत्र है— घृत (घृतं मे चक्षुः)
- ➢ अग्नि का रूप है— घृत
- ➢ अग्नि को कहा जाता है— ऋत्विक्
- ➢ अग्नि को कहा जाता है— होता
- ➢ अग्नि को कहा जाता है— पुरोहित
- ➢ अग्नि को कहा जाता है— रत्नधातम्
- ➢ अग्नि को कहा जाता है— गृहपति

अग्नि के दाँत हैं— स्वर्णिम

- ऋग्वेद में अग्नि के कितने जन्मों का उल्लेख है— तीन जन्मों का
- ऋग्वेद में अग्नि का प्रथम जन्म मान्य है— यज्ञ में दो अरणियों से
- अग्नि का द्वितीय जन्म मान्य है— अन्तरिक्ष जल से
- अग्नि का तृतीय जन्म मान्य है— द्युलोक में
- द्युस्थानीय अग्नि का रूप माना जाता है— सूर्य को
- द्विजन्मा कहे जाते हैं— अग्निदेव
- 'दूतं वृणीमहे' यहाँ 'दूत' कहा गया है— अग्निदेव को
- अग्नि देव के लिए प्रयुक्त असुर शब्द का अभिप्राय है— असु या प्राण शक्ति प्रदान करने वाला
- अग्नि का मुख्य गुण है— प्रकाश
- अग्नि का प्रकाश होता है— भास्वर ज्वाला युक्त
- अन्तरिक्ष में अग्नि का तात्पर्य है— विद्युत से
- ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के अनुसार अग्नि की उत्पत्ति हुई है— विराट् पुरुष के मुख से
- अग्नि का उद्भावक कहा गया है— इन्द्र को
- अग्नि का प्रिय पेय है— घृत
- अग्नि दिन में भोजन करता है— तीन बार
- अग्नि का पथ है— कृष्ण-वर्ण
- अग्नि का घनिष्ठ सम्बन्ध है— इन्द्र के साथ
- अग्नि का यमल भाई है— इन्द्र
- अग्नि का भाई है— वरुण
- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है— अग्नि
- अग्नि सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 9
- अग्नि के पिता हैं— द्यौः
- अरणियों को भी कहा गया है— अग्नि का माता-पिता

1. ऋ. 10/10 पुरुष सूक्त— 'मुखादिन्द्रश्च'

- इसमें ऊर्ध्वारणि है— पुरुष
- इनमें अधोऽरणि है— स्त्री
- अग्नि को सन्तान कहा गया है— 10 युवतियों का
- 10 युवतियाँ हैं— हाथ की दस अंगुलियाँ
- अग्नि कहा गया है— 'सहसः पुत्रः'
- 'सहस' का अर्थ है— शक्ति
- अग्निदेव यज्ञ की हवि को ग्रहण करते हैं— स्वयं
- इसके साथ ही हवि को पहुँचाते हैं— देवताओं के पास
- देवताओं को यज्ञस्थल पर लाते हैं— अग्निदेव
- अग्नि प्रतिदिन के तथा प्रत्येक घर के हैं— अतिथि
- प्राचीन और अर्वाचीन ऋषियों द्वारा स्तुत्य हैं— अग्नि
- ऋग्वेद का प्रारम्भिक सूक्त है— अग्नि सूक्त
- ऋग्वैदिक क्रमांक-1.1.1 सूक्त का देवता है— अग्नि

- **अग्नि का विशेषण—**

ऋत्विक्, होता, पुरोहित, रत्नधातम्, कविक्रतु, चित्रश्रवस्तम, कवि, धूमकेतु, गृहपति, दमूनस, अङ्गिरस, विश्ववेदाः, सहस्राक्ष, त्रिमूर्धा, सप्तरश्मि, घृतपृष्ठ, घृतलोम, घृतप्रतीक, जातवेदश, वैश्वानर, शोचिष्केश, मद्रजिह्व, उर्जोनपात, अपानपात्, ज्वाललोम, विश्वपति ।



इन्द्र सूक्त (ऋ.-2.12)

- ➢ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वाँ सूक्त है— इन्द्र सूक्त
- ➢ इन्द्र सूक्त का ऋषि है— गृत्समद
- ➢ इन्द्र सूक्त का देवता है— इन्द्र
- ➢ इन्द्र सूक्त का छन्द है— त्रिष्टुप्
- ➢ त्रिष्टुप् छन्द में वर्ण होते हैं— 44
- ➢ इन्द्र देवता हैं— अन्तरिक्ष स्थानीय
- ➢ इन्द्र की स्तुति की गयी है— 250 सूक्तों में
- ➢ ऋग्वेद का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देवता है— इन्द्र
- ➢ इन्द्र का प्रिय पेय है— सोमरस
- ➢ इन्द्र को कहा जाता है— सोमपा
- ➢ सूक्तों के आधार पर इन्द्र का स्थान है— प्रथम
- ➢ इन्द्र की अन्य देवताओं के साथ की गयी स्तुति में सूक्तों की संख्या है— 50
- ➢ यास्कानुसार इन्द्र की व्युत्पत्तियाँ हैं— इरां ददाति, इरां दृणति, इरां धारयते इत्यादि
- ➢ इन्द्र के पिता हैं— द्यौः
- ➢ इन्द्र की माता हैं— अदिति
- ➢ इन्द्र की पत्नी हैं— इन्द्राणी (शची)
- ➢ इन्द्र का अस्त्र है— वज्र
- ➢ इन्द्र के वज्र को बनाया है— त्वष्टा ने
- ➢ पुरुष सूक्त के अनुसार इन्द्र की उत्पत्ति हुई है— विराट पुरुष के मुख से
- ➢ इन्द्र मित्र है— मरुत् का
- ➢ इन्द्र को कहा जाता है— मरुत्सखा, मरुत्वान
- ➢ इन्द्र का रथ खींचा जाता है— दो भूरे रंग के अश्वों द्वारा
- ➢ इन्द्र के रथ का निर्माण किया गया है— देव शिल्पी ऋभुओं द्वारा

- ➢ इन्द्र को कहा गया है— सप्तरश्मियों वाला
- ➢ 'वृत्र' का नाम है— अहि
- ➢ मैक्समूलर इन्द्र को मानते हैं-- सूर्य का प्रतिरूप
- ➢ इन्द्र का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है— वृत्रवध
- ➢ ग्रासमान इन्द्र को मानता है— प्रकाशमान
- ➢ तिलक के अनुसार इन्द्र प्रतीक है— सूर्य का
- ➢ इन्द्र को कहा जाता है— अपांनेता
- ➢ इन्द्र सूक्त में मन्त्र हैं— 15
- ➢ 'अहि' को मारकर इन्द्र ने प्रवाहित किया— सात नदियों को
- ➢ इन्द्र ने बलि नामक असुर की गुफा से बाहर निकाला था— गायों को
- ➢ दनु के पुत्र का वध करने वाला है— इन्द्र
- ➢ ऋग्वेद का सर्वश्रेष्ठ देवता है— इन्द्र
- ➢ 40 वर्षों में ढूंढकर जिसे इन्द्र ने मार डाला, वह था— शम्बर
- ➢ शौनक के अनुसार इन्द्र के प्रधान कार्य हैं— चार
- ➢ इन्द्र का जुड़वा भाई है— अग्नि
- ➢ इन्द्र के किस नाम का उल्लेख ऋग्वेद में सर्वाधिक है?— वृत्रहन्
- ➢ अवेस्ता में इन्द्र को कहा गया है— असुर
- ➢ 'वृत्रहन्' शब्द अवेस्ता में जाना जाता है— वेरेथ्रध्न
- ➢ वेरेथ्रध्न देव है— विजय का
- ➢ देवताओं में भूयिष्ठ सूक्त के द्वारा स्तुत्यदेव हैं— इन्द्र
- ➢ इन्द्र का स्थायी सहायक है— मरुद्गण
- ➢ इन्द्र देव किसका प्रतिनिधि है?— वायु का

इन्द्र का विशेषण—

वृत्रहा, सुशिप्र, सोमपा, शक्र, पुरन्दर, वज्री, मघवन, वज्र, वज्रबाहु, हरिकेश, हरिश्मश्रु, हिरण्यबाहु, चित्रभानु, पुरुहूत, वृषा, शचीपति, आखण्डल, सोमी, धनञ्जय, गोत्रभिद्, मनस्वान्, संवृक्समत्सु, सप्तरश्मि, अपांनेता, मरुत्सखा आदि।

नोट— (इन्द्र सूक्त में ही इन्द्र देवता का वर्णन किया गया है)



पुरुष सूक्त (ऋ.10.90)

- ऋग्वेद 10/90 क्रमांक का सूक्त है— पुरुष सूक्त
- पुरुष सूक्त का ऋषि है— नारायण
- पुरुष सूक्त का देवता है— पुरुष
- पुरुष सूक्त में 1-15 तक के मन्त्र में छन्द है— अनुष्टुप्
- पुरुष सूक्त के अन्तिम मन्त्र में छन्द है— त्रिष्टुप्
- अनुष्टुप् छन्द में वर्ण होते हैं— 32
- त्रिष्टुप् छन्द में वर्ण होते हैं— 44
- एकेश्वरवाद का मूल स्रोत है— पुरुष सूक्त
- सहस्रशीर्षा कौन है?— पुरुष
- समस्त मरणशील प्राणी पुरुष का है— चतुर्थांश मात्र
- पुरुष को अवकल्पित किया गया है— हवि के रूप में
- वसन्त ऋतु का प्रयोग किया गया है— घृत के रूप में
- ग्रीष्म ऋतु का प्रयोग किया गया है— ईंधन के रूप में
- शरद ऋतु का प्रयोग किया गया है— हवि के रूप में
- आदिपुरुष से उत्पन्न हुआ— विराट् पुरुष
- विराट् पुरुष से अधिष्ठाता के रूप में उत्पन्न हुआ— जीवात्मा
- पुरुष के शीर्ष से उत्पन्न हुआ— द्युलोक
- पुरुष के नाभि से उत्पन्न हुआ— अन्तरिक्ष लोक
- पुरुष के पैरों से उत्पन्न हुआ— भू-लोक (भूमि)
- पुरुष स्वामी है— अमरता का
- हजारों नेत्रों वाला है— पुरुष
- तीन पादों से युक्त पुरुष उठ गया है— ऊपर
- पुरुष का मुख था— ब्राह्मण
- दोनों भुजाओं से उत्पन्न हुआ— क्षत्रिय
- पुरुष की जंघा से उत्पन्न हुआ— वैश्य

- पुरुष के दोनों पैरों से उत्पन्न हुआ— शूद्र
- मन से उत्पन्न हुआ— चन्द्रमा
- नेत्र से उत्पन्न हुआ— सूर्य
- मुख से उत्पन्न हुआ— इन्द्र और अग्नि
- प्राण से उत्पन्न हुआ— वायु
- कानों से उत्पन्न हुईं— दिशाएँ
- पुरुष रूपी पशु को बाँधने के लिए थी— सात परिधियाँ और समिधाएँ
- देवताओं ने यज्ञ के द्वारा यजन किया— यज्ञस्वरूप प्रजापति का

पुरुष सूक्त में कुल मंत्र हैं— 16

✦✦✦

हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ.10.121)

- हिरण्यगर्भ सूक्त है— एक दार्शनिक सूक्त
- ऋग्वेद के दशम मण्डल का 121वाँ सूक्त है— हिरण्यगर्भ सूक्त
- इस सूक्त का ऋषि है— हिरण्यगर्भ
- हिरण्यगर्भ को कहा गया है— प्रजापतिपुत्र
- हिरण्यगर्भ सूक्त का देवता है— 'क' संज्ञक प्रजापति
- हिरण्यगर्भ सूक्त का छन्द है— त्रिष्टुप्
- हिरण्यगर्भ सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 10
- अन्तिम मन्त्र को छोड़कर शेष सभी मन्त्रों के अन्त में है— 'कस्मै देवाय हविषा विधेम'
- हिरण्यगर्भ सूक्त में सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ— प्रजापति
- प्रजापति का नामोल्लेख करता है— दसवाँ मन्त्र
- सायण के अनुसार प्रजापति को कहा जाता है— हिरण्यगर्भ

✦✦✦

नासदीय सूक्त (ऋ.10.129)

- ➢ नासदीय सूक्त की प्रकृति है— दार्शनिक
- ➢ नासदीय सूक्त का ऋषि है— परमेष्ठी प्रजापति
- ➢ नासदीय सूक्त का देवता है— भाववृत्त अर्थात् परमात्मा
- ➢ नासदीय सूक्त में मन्त्र हैं— 7
- ➢ ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 129वाँ सूक्त है—नासदीय सूक्त
- ➢ सम्पूर्ण नासदीय सूक्त निबद्ध है— त्रिष्टुप् छन्द में
- ➢ इस सूक्त के अनुसार सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ— काम
- ➢ अलौकिक दार्शनिक चिन्तनधारा का मौलिक परिचायक है— नासदीय सूक्त
- ➢ नासदीय सूक्त में आराधना की गयी है— केवल दार्शनिक तत्त्व की

✦✦✦

वाक्सूक्त (ऋ.10.125)

- ➢ वाक् सूक्त की ऋषिका हैं—अम्भृण ऋषि की पुत्री वाक्
- ➢ वाक् सूक्त के देवता हैं—वाक् अथवा परमात्मा
- ➢ वाक्सूक्त है—आध्यात्मिक
- ➢ वाक्सूक्त में कुल मन्त्र हैं—8
- ➢ वाक्सूक्त के दूसरे मन्त्र का छन्द है—जगती
- ➢ जगती छन्द में वर्ण होते हैं— 48
- ➢ शेष सात मन्त्रों का छन्द है—त्रिष्टुप्
- ➢ परमेश्वरी शक्ति है—वाक्
- ➢ ब्रह्मज्ञानवती है—वाक्
- ➢ रुद्र के धनुष को तान देती है—वाक्

- ➢ सायणाचार्य ने वाक् को कहा है—माया
- ➢ यजमान के लिए धन धारण करती है—वाक्
- ➢ रुद्रों तथा वसुओं के साथ चलती है—वागाम्भृणी
- ➢ आदित्यों और विश्वदेवों के साथ चलती है—वागाम्भृणी

✦✦✦

पृथ्वीसूक्त (अथर्व.12/1)

- ➢ पृथ्वी सूक्त का ऋषि है—अथर्वा
- ➢ पृथ्वी सूक्त का देवता है—पृथ्वी (भूमि)
- ➢ पृथ्वी सूक्त में कुल मन्त्र हैं—63
- ➢ अतीत (भूत) और अनागत (भविष्य) की पत्नी कहा जाता है—पृथ्वी को
- ➢ यज्ञ विधान के मार्ग हैं—दो 1. वाक् 2. मन
- ➢ पृथ्वी सूक्त का क्रमांक है—अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त
- ➢ **माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः** से सम्बन्धि सूक्त है—पृथ्वी

✦✦✦

वैदिक देवता

सवितृ

- ➢ सवितृ देवता है— द्युस्थानीय
- ➢ ऋग्वेद के कितने सूक्तों में इनकी पूर्णतः स्तुति है?— 11
- ➢ गायत्री मन्त्र प्रत्यक्षतः सम्बन्धित है— सवितृ देव से
- ➢ 'ॐ भूर्भुवः स्वः' मन्त्र का नाम है— गायत्री मन्त्र
- ➢ सवितृ देव का लक्षण अधिक मिलता है— सूर्यदेव से
- ➢ किस युग में सविता तथा सूर्य अभिन्न कहे गए हैं?— पौराणिक युग में
- ➢ वैदिककाल में सविता किस रूप में मान्य हैं?— अमूर्त, भावात्मक प्रेरक
- ➢ वैदिक काल में सूर्य मान्य हुए— मूर्त्त रूप में
- ➢ 'सविता सर्वस्य प्रसविता' इस निर्वचन का उल्लेख स्थल है— निरुक्त (10/31)
- ➢ ऋग्वेद में गायत्री मन्त्र उल्लिखित है— 3/62/10
- ➢ सवितृदेव हैं— स्वर्णिम
- ➢ सवितृदेव का केश है— पीला तथा सुनहला
- ➢ सविता का प्रत्येक कार्य सम्बन्धित है— प्रसव से
- ➢ सविता शब्द निष्पन्न होता है— 'सू' धातु से तृच् प्रत्यय लगाने पर
- ➢ सविता का सम्बन्ध है— सूर्य से
- ➢ प्रातः तथा सायंकाल से सम्बद्ध है— सविता
- ➢ 'आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो' यह सम्बद्ध है— सविता से

सवितृदेव का विशेषण—

हिरण्यपाणि, सुपर्ण, सुनीथ, हिरण्याक्ष, हिरण्यस्तूप, विचर्षणि, सुमृळीक दमूना, स्वर्णनेत्र, स्वर्णहस्त, स्वर्णपाद, स्वर्णजिह्व।



विष्णु

- ➢ विष्णु देव हैं— द्युस्थानीय
- ➢ विष्णु सूक्त का देवता है— विष्णु
- ➢ विष्णु देव ऋग्वेद के कितने सूक्तों में स्तुत्य हैं?— 5
- ➢ विष्णु का मित्र है— इन्द्र
- ➢ गर्भ का रक्षक है— विष्णु
- ➢ सूर्य के तीनों लोक विष्णु के हैं— तीन पाद
- ➢ विष्णु शब्द की व्युत्पत्ति में धातु है— 'विष्'
- ➢ 'विष्' धातु का अभिप्राय है— व्यापनशील
- ➢ विष्णु 'पद' पृथ्वी पर है— अग्नि
- ➢ वायु मण्डल में विष्णु 'पद' है— विद्युत
- ➢ स्वर्ग में विष्णु 'पद' है— सूर्य प्रकाश
- ➢ विष्णु का वैदिक रूप पुराणों में जिस अवतार में प्राप्त होता है, वह है— वामनावतार
- ➢ इन्द्र के अनुज रूप में जाना जाता है— विष्णु
- ➢ विष्णु जिस देव की कल्पना है, वह है— सूर्यदेव
- ➢ विष्णु का वाहन है— गरुड़
- ➢ विष्णु का रूपान्तर देव है— नारायण

विष्णु का विशेषण—

उरुक्रम, उरुगाय, कुरच, गिरिष्ठा, वृष्ण, गिरिक्षित, विक्रम, त्रिविक्रम, भीम।



रुद्र

- ➢ रुद्र का वर्णन है— ऋग्वेद में
- ➢ रुद्र देव हैं— अन्तरिक्ष स्थानीय
- ➢ रुद्र वर्णित सूक्त हैं— तीन (1/114, 2/33, 7/46)
- ➢ रुद्र सूक्त का देवता है— रुद्र (2/33)
- ➢ अन्य देवताओं के साथ रुद्र का नाम आया है— 50 बार
- ➢ रुद्र का वर्ण है— भूरा
- ➢ वाजसनेयिसंहिता में रुद्र को कहा गया है— रक्तवर्णी
- ➢ रुद्र का शस्त्र है— धनुष तथा बाण
- ➢ रुद्र को कहा गया है— मरुतों का पिता
- ➢ देवताओं का कुशल वैद्य है— रुद्र
- ➢ रुद्र का सम्बन्ध किस स्थान से है— अन्तरिक्ष
- ➢ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 114वें सूक्त के ऋषि हैं— कुत्स आंगिरस
- ➢ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 114वें सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 11
- ➢ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 114वें सूक्त के 1 से 9 मन्त्र में छन्द है— जगती
- ➢ ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 114वें सूक्त के 10-11 मन्त्र में छन्द है— त्रिष्टुप्
- ➢ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 33वें सूक्त के ऋषि हैं— गृत्समद भार्गवशौनक
- ➢ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 33वें सूक्त में छन्द है— त्रिष्टुप्
- ➢ ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के 33वें सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 15
- ➢ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 46वें सूक्त के ऋषि हैं— वशिष्ठ मैत्रावरुणि
- ➢ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 46वें सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 4
- ➢ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 46वें सूक्त के अन्त में छन्द है— जगती

- ➢ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के 46वें सूक्त के 4 मन्त्र में छन्द है— त्रिष्टुप्
- ➢ रुद्र के लिए प्रयुक्त असुर का अर्थ है— प्राणशक्तियुक्त

रुद्र का विशेषण—

त्र्यम्बक, कृत्तिवास, नीललोहित, भव, सर्व, पशुपति, मरुत्पिता, असुर, मरुत्वान, मीढ्वान, तव्यान, वङ्कु, भिषक्त, जलाषभेषज, वभ्रु, रक्तवर्णी, शिव, मृणयाकु ।

+++

बृहस्पति

- ➢ बृहस्पति देव से सम्बद्ध लोक है— पृथ्वीलोक
- ➢ बृहस्पति देव हैं— पृथ्वी स्थानीय
- ➢ बृहस्पति सूक्त का देवता है— बृहस्पति
- ➢ ऋग्वेद में पूर्णरूप से बृहस्पति देव से सम्बद्ध सूक्तों की संख्या है— 11 (एकादश)
- ➢ बृहस्पति द्रेव कहलाते हैं— ब्रह्मणस्पति
- ➢ सदस्पति हैं— बृहस्पति देव
- ➢ ब्रह्मणस्पति का अर्थ है— मन्त्र के पति
- ➢ बृहस्पति को कहा जाता है— शक्ति का पुत्र या आङ्गिरस
- ➢ बृहस्पति की समानता है— अग्नि के साथ

बृहस्पति का विशेषण—

गणपति, सप्तरश्मि, सप्तमुख, सप्तजिह्व, ब्रह्मणस्पति, पथिकृत, मद्रजिह्व, सदस्पति



+++

अश्विनौ

- अश्विनौ देवता हैं— द्युस्थानीय
- ऋग्वेद में सम्पूर्णतः यह स्तुत्य हैं— 50 सूक्तों में
- सूक्तों का देवता है— अश्विनौ
- अश्विनौ पति कहलाता है— सूर्या का
- सूर्या का पति है— अश्विनौ
- काल पुष्पों की माला धारण करता है— अश्विनौ
- दस्रा उपाधि वाला है— अश्विनौ
- युगल देवता हैं— अश्विनौ
- सोम की अपेक्षा मधु से अधिक प्रेम करने वाला है— अश्विनौ
- 'दिव्य-भिषक्' उपाधिवाला है— अश्विनौ
- भुज्य का उद्धार करने वाला देवता है— अश्विनौ
- ऋजास्व को आंखे प्रदान करने वाला देवता है— अश्विनौ
- 'नासत्या' विशेषण वाला देवता है— अश्विनौ
- च्यवन ऋषि को वृद्ध से युवा बनाने वाला देवता है— अश्विनौ
- 'विश्पला' को पैर प्रदान करने वाले देवता हैं— अश्विनौ
- गुफा में बद्ध 'अत्रि' का उद्धार करने वाला देवता है— अश्विनौ
- 'शयु' के लिए बन्ध्या गाय को दूध वाली बनाने वाला देवत है— अश्विनौ
- 'रेभ' को दश रात्रि के बाद जल से बाहर निकालने वाला देवत है— अश्विनौ
- अर्द्धरात्रि से सूर्योदयपर्यन्त किस देवता का समय है?— अश्विनौ क
- 'सद्यो जंघामायसीं विश्वपलायै' इस मन्त्र से सम्बद्ध देवता हैं— अश्विनं
- 'पेदु' को सफेद शीघ्रगामी अश्व दिया था— अश्विनौ ने

अश्विनौ का विशेषण—

- नासत्या, दस्रा, मधुयुवा, हिरण्यवर्तनि, दिवो, नपाताः मध्वी,
- नराः तुविष्मा, अध्रिगू।

+++

वरुण

- वरुण देवता हैं— द्युस्थानीय
- ऋग्वेद के सूक्तों में सम्पूर्णतः वरुण देव स्तुत्य हैं— 12 सूक्तों में
- वरुण के नेत्र कहे गए हैं— सूर्य
- इसकी व्युत्पत्ति है— वरुणो वृणोतीति सतः

वरुण देव के विशेषण—

क्षत्रिय, धृतव्रत, दूतदक्षः, स्वराट्, मायावी, उरुशंशः इत्यादि।

(नोट— विस्तृत जानकारी के लिए एच्छिक वर्ग के वेद भाग का वरुण सूक्त देखें।)

+++

उषस्

- उषा से सम्बद्ध लोक है— द्युलोक
- ऋग्वेद में उषा विषयक सूक्त संख्या है— 20
- सूर्य की भार्या और माता है— उषस्
- उषा को बड़ी बहन कहा गया है— रात्रि की
- उषा पुत्री कही गयी है— द्यौस् की

(नोट— विस्तृत जानकारी के लिए एच्छिक वर्ग के वेद भाग का उषस् सूक्त देखें।)

+++

सोम

- सोम देवता हैं—पृथ्वी स्थानीय
- सोम सूक्त का देवता है—सोम
- ऋग्वेद के कितने सूक्तों में सोम की स्तुति की गयी है?—150 सूक्तों में
- ऋग्वेद के किस मण्डल में सोम देवता का वर्णन किया गया है?—नवम मण्डल
- स्वर्ग का पुत्र अथवा दुग्ध कहलाता है—सोम
- सोम की उत्पत्ति कही गयी है—मुञ्जवत् पर्वत पर
- 'मुञ्जवत् पर्वत' पर उत्पत्ति के कारण सोम कहलाता है—मौञ्जवत्
- सोम को उत्पन्न करती हैं—दश युवतियाँ
- सोम के साथ स्तुत्य देवता हैं—इन्द्र, अग्नि, रुद्र अथवा पूषन्
- सोम को कहा गया है—वनस्पतियों का राजा
- सोम मित्र है—इन्द्र का
- 'पवमान' उपाधि वाला है—सोम
- रोग निवारक औषधिरूप में वर्णित देव हैं—सोम
- ऋग्वेद के नवम मण्डल का देवता है—सोम

सोम देवता की विशेषता—

मौञ्जवत्, वनस्पति, वाचस्पति, विश्वचर्षणि, रक्षोहा, महिष्ठ, अमर्त्य, सहस्रधार, इन्द्रपीत, पवमान, मधुमान, औषधिपति इत्यादि।



संवाद-सूक्त

पुरुरवा-उर्वशी (ऋ.10/95)

- पुरुरवा-उर्वशी संवादक्रम है—ऋ.10/95
- ऋग्वेद का 10/95 सूक्त सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त के ऋषि हैं—पुरुरवा
- पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त की ऋषिका है—उर्वशी
- पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त का देवता है—पुरुरवा और उर्वशी
- पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में कुल मन्त्र है—18
- संवाद सूक्तों का सम्बन्ध है—ऋग्वेद से
- 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'प्रजा ते देवान् हविषा यजाति' यह मन्त्र सम्बद्ध है—पुरुरवा-उर्वशी संवाद से
- 'पुरुरवा-उर्वशी संवाद सूक्त में उर्वशी है—अप्सरा
- संवाद सूक्तों में सच्चा प्रेमी है—पुरुरवा
- उर्वशी स्त्रियों का हृदय किसके हृदय के समान बताती है?—सालावृक
- ब्रह्मोत्पन्न मूल सक्रिय तत्त्व 'अप' से उत्पत्ति मानी गयी है—उर्वशी की

- पुरुरवा का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है— विपुल शब्दागार
- 'प्राण एव हि पुरुरवा' यह है— निरुक्त 10/4/47 में
- उर्वशी का शब्दार्थ है— हृदय को वश में रखने वाली
- 'हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वंचासि मिश्रा कृणवावहै नु' किसके लिए उद्दिष्ट है?— उर्वशी
- 'हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वंचासि मिश्रा कृणवावहै नु' इस मन्त्र के ऋषि हैं— पुरूरवा
- 'इति त्वा देवा इम आहुरैळ' इसमें 'ऐळ' है— पुरूरवा
- 'घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्ना तादेवेदं तातृपाणा चरामि' यह उक्ति है— उर्वशी की
- 'श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त' यह उक्ति है— उर्वशी की



यम-यमी (ऋ.10/10)

- यम-यमी संवाद सूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है?— 10
- यम-यमी संवाद सूक्त का क्रम है— ऋ.10/10
- ऋग्वेद के 10/10 सूक्त से सम्बद्ध है— यम-यमी संवाद
- यम-यमी संवाद सूक्त में छन्द हैं— त्रिष्टुप्
- यम-यमी संवाद सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 14
- यमी का सहोदर भाई है— यम
- यम-यमी सूक्त के अनुसार यम-यमी किससे उत्पन्न है?— विवस्वान् से
- संवाद सूक्तों में कामातुर नारी के रूप में वर्णित है— यमी
- यम-यमी संवाद सूक्त के ऋषि का नाम है— यम वैवस्वती
- यम-यमी संवाद सूक्त की ऋषिका का नाम है— यमी वैवस्वती
- यम-यमी संवाद सूक्त के देवता हैं— यम वैवस्वत/यमी वैवस्वती
- पौराणिक सन्दर्भ में यम-यमी हैं— जुड़वा भाई-बहन
- विवस्वान् का अर्थ है— तेजस् सम्पन्न इत्यादि
- 'बृहन् मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आह्नो वीच्या नृन्' यह उक्ति है— यमी की
- 'गर्भे नु नै जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः' यह उक्ति है— यमी की
- 'पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्' यह उक्ति है— यम की
- 'रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्यचक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्' यह उक्ति है— यम की
- 'आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि' यह सम्बद्ध है— यम-यमी संवाद सूक्त से
- 'गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा' यह सम्बद्ध है— यम-यमी संवाद सूक्त से



सरमा-पणि (ऋ.10/108)

- सरमा-पणि संवाद का उल्लेख है— ऋग्वेद में
- सरमा-पणि संवाद क्रम है— ऋ. 10/108
- ऋग्वेद का 10/108 सूक्त सम्बद्ध है— सरमा-पणि संवाद से
- सरमा-पणि संवाद सूक्त में 'पणि' है— असुर
- पणि किस असुर के अनुचर थे?— बल के
- सरमा-पणि संवाद सूक्त के ऋषि हैं— पणि
- सरमा-पणि संवाद सूक्त की ऋषिका है— सरमा
- सरमा-पणि संवाद सूक्त के देवता हैं— सरमा-पणि
- सरमा-पणि संवाद सूक्त में छन्द हैं— त्रिष्टुप्
- सरमा-पणि संवाद सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 11
- बृहस्पति की गायों को चुराने वाला था— पणि
- गायों को चुराने की घटना को देख लिया था— बृहस्पति ने
- गायों को चुराने से सम्बन्धित संवाद सूक्त हैं— सरमा-पणि
- सरमा थी— इन्द्र की दूती
- देवशुनी थी— सरमा
- 'आ च गच्छान्मित्रमेना दधा' यह उक्ति है— पणि की
- माथा गवां गोपतिर्नो भवाति' यह उक्ति है— पणि की
- 'गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्ट' यह उक्ति है— पणि की
- 'अस्यास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः' यह उक्ति है— सरमा की
- 'सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः' यह उक्ति है— सरमा की
- 'नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स' यह उक्ति है— सरमा की



विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त (ऋ.3/33)

- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त का उल्लेख है— ऋग्वेद में
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त का क्रम है— ऋ. 3/33
- ऋग्वेद का 3/33 संवाद सूक्त सम्बद्ध है— विश्वामित्र-नदी संवाद से
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 13
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त में छन्द हैं— त्रिष्टुप्, अनुष्टुप्
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त के ऋषि हैं— विश्वामित्र
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त की ऋषिका हैं— नदियाँ
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त के प्रथम तीन मन्त्रों में किन दो नदियों की स्तुति विश्वामित्र ने की है?— विपाट्-शुतुद्री
- विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त में विश्वामित्र ने अपने पिता का नाम बताया है— कुशिक
- ऋग्वेद के 3/33/9 में विश्वामित्र ने नदियों को सम्बोधित किस पद से किया है?— स्वसारः
- विपाट् का अन्य नाम है— व्यास
- शुतुद्री का अन्य नाम है— सतलुज
- एना वयं पयसा पिन्वमाना, अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः' यह उक्ति है— नदी की
- 'रमध्वं मे वचसे सोम्याय, ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः' यह उक्ति है— विश्वामित्र की
- 'यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुर्गव्यन्ग्राम इषित इन्द्रजूतः' इसमें 'त्वा' से उद्दिष्ट है— नदी
- 'उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत' यह उक्ति है— विश्वामित्र की
- 'समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने' यह उक्ति है— विश्वामित्र की
- 'वत्समिव मातरा संरिहाणे' यह उक्ति है— विश्वामित्र की
- 'आ ते कारो शृणवामा वचांसि' यह उक्ति है— नदी की
- 'आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्' यह उक्ति है— विश्वामित्र की



ब्राह्मण साहित्य

- मन्त्र-भाग के अतिरिक्त शेष वेदभाग है— ब्राह्मण
- जैमिनि का कथन है—'शेषे ब्राह्मण शब्दः'[1]
- ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य विषय है— विधि
- ब्राह्मण शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है— नपुंसक लिङ्ग में[2]
- यह अपवाद स्वरूप पुलिंग में भी प्राप्त है— महाभारत में[3]
- व्युत्पत्ति की दृष्टि से ब्राह्मण निष्पन्न हुआ है— अण् प्रत्यय लगकर
- ब्रह्म शब्द के अर्थ हैं— दो 1. मन्त्र तथा 2. यज्ञ[4]
- ब्राह्मण ग्रन्थ विशेष हैं— जिनमें मन्त्रों की विनियोगात्मिका व्याख्या है[5]
- शतपथ ब्राह्मण में मन्त्रों को कहा गया है— ब्रह्म (ब्रह्म वै मन्त्रः)
- ब्राह्मणों के द्रष्टा को कहा जाता है— आचार्य
- 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदानामधेयम्' यह उक्ति है— आपस्तम्ब की
- ब्राह्मण ग्रन्थों का वर्तमान स्वरूप है— प्रवचनात्मक और व्याख्यात्मक
- विधियों एवं उनके प्रकृति का निरूपण है— प्रवचनात्मक अंशों में
- विनियुक्त मन्त्रों के औचित्य का प्रदर्शन है— व्याख्यात्मक ढंग से
- ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद न मानकर वेदव्याख्यानग्रन्थ माना है— दयानन्द सरस्वती ने
- 'याग' मीमांसा के दो प्रमुख भाग हैं— विधि तथा अर्थवाद
- यज्ञ के कर्मकाण्ड की व्याख्या प्रस्तुत करता है— ब्राह्मण ग्रन्थ
- भट्टभास्कर की उक्ति है—'ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यान ग्रन्थः'

---

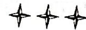
1. जै. मी. सू. 2.1.33
2. मेदिनीकोश
3. महाभारत, उद्योगपर्व, भण्डारकर-संस्करण
4. भट्ट भास्कर, तै. सं. 1.5.1 पर भाष्य
5. सं. सा. बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ. सं. 376

- शबरस्वामी के अनुसार ब्राह्मणों के विषय हैं— 10
- शबरस्वामी के द्वारा चर्चित दस विषय उल्लिखित हैं— शाबरभाष्य ग्रन्थ में
- शबरस्वामी के अनुसार ब्राह्मण के दस विषय हैं— हेतु, निर्वचन, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परक्रिया, पुराकल्प, व्यवधारण कल्पना, उपमान
- कर्मकाण्ड के लिए विशेष विधियों का निर्दिष्ट कारण कहलाता है— हेतु
- शब्दों में निहित क्रिया के आधार पर अर्थ प्रकाशन कहलाता है— निर्वचन
- निन्दा और प्रशंसा का समावेश हो जाता है— अर्थवाद में
- स्तुति और निन्दा के वचन कहलाते हैं— अर्थवाद
- कर्म की प्रेरणा देने वाला वाक्य है— विधि
- 'परक्रिया' को कहा जाता है— एक व्यक्ति की कथा
- 'पुराकल्प' में होती है— प्राचीन कथाएँ (एक से अधिक व्यक्ति की कथा)
- संदेह की स्थिति में समुचित निर्णय लेना कहलाता है— व्यवधारण
- समान दृष्टान्त द्वारा विषय को स्पष्ट करना है— उपमान
- यज्ञीयविधियों एवं अनुष्ठानों का उल्लेख है— विधि-भाग में
- वेद मन्त्रों की अर्थ-मीमांसा हुई है— विधि-भाग में
- निरुक्त में शब्दों की व्युत्पत्तियों का मूल माना गया है— ब्राह्मण ग्रन्थ
- आख्यान के कितने भेद हैं— दो 1. स्वल्पकाय 2. दीर्घकाय
- परक्रिया और पुराकल्प किसके अन्तर्गत आते हैं?— आख्यानान्तर्गत
- परक्रिया में नायक होते हैं— एक
- पुराकल्प में नायक होते हैं— अनेक
- मीमांसाकार जैमिनि के अनुसार अर्थवाद के प्रकार हैं— तीन 1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद

- ➢ वैदिक मन्त्रों का यज्ञ में उपयोग ही है— विनियोग
- ➢ किस मन्त्र का प्रयोग किस उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जाता है, इसका पता चलता है?— विनियोग से
- ➢ मित्रावरुण का सम्बन्ध है—प्राण और अपान से
- ➢ दिन का देवता है—मित्र
- ➢ 'मित्र' प्रतिनिधि हैं—प्राण के
- ➢ रात्रि का देवता है—वरुण
- ➢ वरुण प्रतीक हैं—अपान के

ब्राह्मण साहित्य की विशेषताएँ—

- ➢ अतीत युग की संरक्षित निधि है—ब्राह्मण
- ➢ ब्राह्मणों में यज्ञीय विषयों के मीमांसक विद्वानों को कहा जाता था—ब्रह्मवादी
- ➢ एक वैज्ञानिक संस्था के रूप में निदर्शन है— यज्ञों का
- ➢ वैदिक व्याकरण एवं पाणिनीय व्याकरण के बीच की कड़ी हैं—ब्राह्मण



ऋग्वेदीय ब्राह्मण

1. ऐतरेय ब्राह्मण

- ➢ ऋग्वेद के ब्राह्मण हैं—दो 1. ऐतरेय ब्राह्मण 2. कौषीतकि ब्राह्मण या शाङ्खायन ब्राह्मण
- ➢ ऋग्वेद की शाकल शाखा का ब्राह्मण है—ऐतरेय ब्राह्मण
- ➢ ऐतरेय ब्राह्मण के प्रवचनकर्ता ऋषि हैं—महीदास ऐतरेय
- ➢ सम्पूर्ण ऐतरेय ब्राह्मण में अध्याय हैं—40
- ➢ प्रत्येक पाँच अध्याय को मिलाकर निष्पन्न होती है—एक पञ्चिका
- ➢ पञ्चिका की कुल संख्या है—आठ
- ➢ अध्याय का अवान्तर विभाजन है—खण्डों में
- ➢ समस्त चालीस अध्यायों में कुल खण्ड हैं—285
- ➢ ऐतरेय ब्राह्मण का वर्ण्य विषय है—सोमयाग
- ➢ समस्त सोमयागों का प्रकृतिभूत है—अग्निष्टोम
- ➢ सप्तम पञ्चिका में विवरण है—राजसूय का
- ➢ सप्तम पञ्चिका के 31 से 33 अध्याय में है—शुनः शेप आख्यान
- ➢ 'चरैवेति-चरैवेति' के कारण प्रसिद्ध है—शुनः शेप आख्यान
- ➢ हरिश्चन्द्रोपाख्यान है—ऐतरेय ब्राह्मण में
- ➢ ऐतरेय ब्राह्मण में प्रथम देवता हैं—अग्नि
- ➢ ऐतरेय ब्राह्मण में परम देवता हैं—विष्णु
- ➢ 'विशुद्धीदं वृष्टिमन्नाद्यं सम्प्रयच्छति' यह सम्बद्ध है—ऐतरेय ब्राह्मण से
- ➢ 'आग्नावैष्णवं पुरोडाशं निर्वपन्ति दीक्षणरेयम' यह सम्बद्ध है—ऐतरेय ब्राह्मण से
- ➢ 'शुनः शेप' आख्यान का नाम है—हरिश्चन्द्रोपाख्यान [1]

---

1. सं. सा. बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 393

- राज्याभिषेक के समय सुनाया जाता था— हरिश्चन्द्रोपाख्यान
- ऐन्द्रमहाभिषेक तथा चक्रवर्ती राजाओं के अभिषेक का चित्रण है— 38वें अध्याय में

2. कौषीतकि या शाङ्खायन ब्राह्मण

- शाङ्खायन ब्राह्मण का सम्बद्ध है— बाष्कल शाखा से
- सम्पूर्ण शाङ्खायन ब्राह्मण विभक्त है— 30 अध्यायों में
- प्रत्येक अध्यायों का विभाजन है— खण्डों में
- कुल खण्ड हैं— 227[1]
- शाङ्खायन ब्राह्मण में यज्ञ को माना गया है— विष्णु या ब्रह्म का स्वरूप

+++

1. सं.वा.बृ.इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 395

यजुर्वेदीय ब्राह्मण

1. शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण

(i) शतपथ ब्राह्मण

- शुक्ल यजुर्वेद का उपलब्ध ब्राह्मण है— शतपथ ब्राह्मण
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में है— शतपथ ब्राह्मण
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में काण्ड हैं— 14
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय हैं— 100
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में काण्डिकाएँ हैं— 7624
- माध्यन्दिन शाखा के शतपथ ब्राह्मण में ब्राह्मणों की संख्या हैं— 438
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में काण्ड हैं— 17
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में अध्याय हैं— 104
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में काण्डिकाएँ हैं— 6806
- काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण में ब्राह्मणों की संख्या हैं— 435
- शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय है— बृहदारण्यकोपनिषद्
- पुरुरवा-उर्वशी आख्यान है— शतपथ ब्राह्मण में
- 'अग्निर्वैधूमो जायते' यह है— शतपथ ब्राह्मण में
- विधिविधानों का भण्डार है— शतपथ ब्राह्मण में
- 'अमेध्यो वै पुरूषो यदनृतं वदति तेन पूतिरतरतः' यह सम्बद्ध है— शतपथ ब्राह्मण में
- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतं कर्म' यह है— शतपथ ब्राह्मण में
- 'एष वै प्रत्यक्षं यज्ञो यो प्रजापति' यह है— शतपथ ब्राह्मण में
- 100 अध्यायों के कारण नाम पड़ा— शतपथ ('शतं पन्थानो-यस्य तच्छतपथम्')
- 'पथ' वाचक है— अध्याय का
- शतपथ के अनुसार यज्ञ का स्वरूप है— द्विविध 1. प्राकृत 2. कृत्रिम

1. सं.वा.बृ.इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 403

- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सोम है— अन्न[1]
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अग्नि है— अन्नाद[2]
- शतपथ ब्राह्मण ने यज्ञ को कहा है— देवों की आत्मा[3]
- शतपथ ब्राह्मण ने मीमांसा का प्रारम्भ किया है— हविर्यागों से
- हविर्यागों का आधार है— अग्निहोत्र
- पञ्चमहायज्ञों का विशेष विवेचन है— शतपथ ब्राह्मण के 11वें काण्ड में
- शतपथ ब्राह्मण के षष्ठ से 10 काण्ड को कहते हैं— शाण्डिल्य काण्ड
- शतपथ ब्राह्मण में देवता हैं— 33 (8वसु, 11रुद्र, 12 आदित्य, इन्द्र, प्रजापति)
- शतपथ ब्राह्मण में आख्यान हैं— पुरुरवा-उर्वशी, इन्द्र-वृत्र युद्ध, च्यवन-भार्गव तथा शर्यात-मानव, मनु एवं श्रद्धा, जल प्लावन आदि
- इस ब्राह्मण के अनुसार ब्रह्म के दो रूप थे— 1. मूर्त (सत्) 2. अमूर्त (असत्)
- यह ब्राह्मण भी है— स्वराङ्किक
- परम्परा से शतपथ ब्राह्मण के रचयिता माने जाते हैं— वाजसनेयि-याज्ञवल्क्य
- स्कन्दपुराण के नागरखण्ड के अनुसार याज्ञवल्क्य की माता का नाम था— सुनन्दा
- बहन का नाम था— कंसारिका[4]
- याज्ञवल्क्य के शिष्य थे— 100[5]
- शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को कहते हैं— बृहदारण्यकोपनिषद्

2. कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मण

(1) मैत्रायणी ब्राह्मण

- मैत्रायणी संहिता का चतुर्थ अध्याय है— मैत्रायणी ब्राह्मण
- यह विभक्त है— तीन अध्यायों में
- इसका महत्त्वपूर्ण आख्यान है— पर्वतोपाख्यान
- प्रजापति पुत्र थे— पर्वत के



2. सं.वां.बृ.इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 403 3. शतपथ ब्राह्मण— 9.3.2.7
4. स्क.पु.नागखण्ड 6.174.6 5. महाभारत शान्तिपर्व, 323.17

सामवेदीय ब्राह्मण

सबसे अधिक ब्राह्मण हैं— सामवेद में

(1) पञ्चविंश ब्राह्मण

- पञ्चविंश ब्राह्मण के अन्य नाम हैं— प्रौढ ब्रा., महा ब्रा., ता. ब्रा.
- पञ्चविंश ब्राह्मण है— ताण्ड्य शाखा का [1]
- पञ्चविंश ब्राह्मण में अध्याय हैं— 25
- पञ्चविंश ब्राह्मण को कहा जाता है— महाब्राह्मण
- सामवेद के ब्राह्मण में सबसे प्रधान है— पञ्चविंश ब्राह्मण
- इसका मुख्य विषय है— सोमयाग
- इसके 17वें अध्याय में वर्णन है— व्रात्य यज्ञ का

(2) षड्विंश ब्राह्मण

- इस ब्राह्मण को कहा जाता है— अद्भुत ब्राह्मण
- सामवेद के कौथुमीय शाखा का ब्राह्मण है— षड्विंश ब्राह्मण
- इसमें प्रपाठक हैं— 3
- भूकम्प, अकाल पुष्प आदि उत्पातों के शान्ति के उपाय वर्णित हैं— षड्विंश ब्रा. में
- वस्तुतः यह परिशिष्ट है— पञ्चविंश ब्राह्मण का [2]
- षड्विंश ब्राह्मण का पञ्चम प्रपाठक कहलाता है— अद्भुत ब्राह्मण

(3) सामविधान ब्राह्मण

- यह विभक्त है— तीन प्रकरणों में
- व्रतों, काम्य प्रयोगों और प्रायश्चित्त का वर्णन है— प्रथम प्रकरण में
- पुत्र प्राप्ति के विभिन्न प्रयोगों का वर्णन है— द्वितीय प्रकरण में

1. सं. सा. स. इति.— कपिलदेव द्विवेदी पृ.सं. 76
2. सं. सा. स. इति.— कपिलदेव द्विवेदी पृ.सं. 76

- ऐश्वर्य, नवगृह प्रवेश एवं आयुष्य प्राप्ति के लिए अनुष्ठान वर्णित हैं— तृतीय प्रकरण में

(4) आर्षेय ब्राह्मण

- यह विभक्त है—तीन प्रपाठकों में
- तीनों प्रपाठक विभक्त हैं—82 खण्डों में
- सामवेद के ऋषियों की सूची है—आर्षेय ब्राह्मण में
- ऋषियों की सूची के कारण इसे कहते हैं—आर्षेय
- इसका सम्बन्ध दो प्रकार के गानों से है—1. ग्रामगेय 2. अरण्यगेय

(5) दैवत (देवताध्याय) ब्राह्मण

- सामवेद का सबसे छोटा ब्राह्मण है—दैवत ब्राह्मण
- यह विभक्त है—तीन खण्डों में
- सामवेद के देवताओं का वर्णन है—दैवत ब्राह्मण में
- सामवेद के वैदिक छन्दों का विवेचन है—दैवत ब्राह्मण में
- इसमें छन्दों का किया गया है—निर्वचन

(6) उपनिषद् ब्राह्मण

- यह ब्राह्मण विभक्त है—दो भागों में
- इस ब्राह्मण में कुल प्रपाठक हैं— 10
- प्रथम भाग में प्रपाठक हैं—2
- प्रथम भाग को कहते हैं— मन्त्र ब्राह्मण या छान्दोग्य ब्राह्मण
- द्वितीय भाग में प्रपाठक हैं—8
- द्वितीय भाग को कहते हैं—छान्दोग्योपनिषद्

(7) संहितोपनिषद् ब्राह्मण

- सामगान की पद्धति का विवेचन है— संहितोपनिषद् ब्राह्मण में
- यह ब्राह्मण विभक्त है— 5 खण्डों में
- प्रत्येक खण्ड विभक्त हैं— सूत्रों में

- 'विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम' इत्यादि मन्त्रों को उद्धृत किया गया है—तृतीय खण्ड में

(8) वंश— ब्राह्मण

- वंश ब्राह्मण विभक्त है—तीन खण्डों में
- सामवेद के गुरुओं की वंश परम्परा वर्णित है—वंश ब्राह्मण में
- सामवेद के ऋषियों की सूची तथा वंशावली का वर्णन है—वंश ब्राह्मण में

(9) जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण

- सामवेद की जैमिनीयशाखा का ब्राह्मण है—जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण
- यह विभक्त है—5 अध्यायों में
- प्रथम तीन अध्याय सम्बद्ध हैं—यज्ञ-विधियों से
- इसका चतुर्थ अध्याय समाविष्ट करता है—उपनिषद् ब्राह्मण को[1]
- इसका पञ्चम अध्याय समाविष्ट करता है—आर्षेय ब्राह्मण को[2]



---

1. सं. सा. इति. डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि पृ. सं. 71
2. सं. सा. इति. डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि पृ. सं. 71

अथर्ववेदीय ब्राह्मण

- अथर्ववेद में ब्राह्मण मिलता है— गोपथ ब्राह्मण (एकमात्र)
- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण है— गोपथ ब्राह्मण
- गोपथ ब्राह्मण के प्रणेता थे— गोपथ ऋषि
- इसे विभक्त किया गया है— दो भागों में 1. पूर्वगोपथ 2. उत्तरगोपथ
- गोपथ ब्राह्मण सम्बद्ध है— पैप्पलाद शाखा से
- पूर्व गोपथ में प्रपाठक हैं— 5
- उत्तर गोपथ में प्रपाठक हैं— 6
- प्रत्येक प्रपाठक विभक्त है— काण्डिकाओं में
- काण्डिकाओं की कुल संख्या है— 258
- पूर्व गोपथ में काण्डिकाएँ हैं— 135
- उत्तर गोपथ में काण्डिकाएँ हैं— 123
- ओंम तथा गायत्री की एवं ब्रह्मचारी के नियमों का वर्णन है— पूर्वगोपथ में
- ऋत्विजों के कार्य एवं उनकी दीक्षा, पुरुषमेध, अश्वमेध यज्ञ आदि हैं— पूर्वगोपथ में
- विविध यज्ञों और उनसे सम्बद्ध आख्यायिकाओं का वर्णन है— उत्तरगोपथ में
- अथर्ववेद का आदि मन्त्र है— पैप्पलाद शाखा का प्रथम मन्त्र
- सबसे अर्वाचीन ब्राह्मण है— गोपथ



आरण्यक

- जो अरण्य में पढ़ा जाय वह है— आरण्यक [1]
- ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट रूप हैं— आरण्यक
- दार्शनिक सिद्धान्त का निरूपण है— आरण्यक
- आरण्यक किसके लिए है?— वानप्रस्थी के लिए
- वानप्रस्थी रहते हैं— अरण्य में
- ब्राह्मणग्रन्थों एवं उपनिषदों के मध्य की कड़ी है— आरण्यक
- उपनिषदों के तत्त्वज्ञान को समझने के लिए आवश्यक है— आरण्यक
- अरण्य में 'वुञ्' (भांवार्थक) प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है— आरण्यक शब्द
- आरण्यकों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है— प्राणविद्या तथा प्रतीकोपासना
- आयु का कारण है— प्राण [2]
- प्राण को कहा गया है— गोपा
- यज्ञ के दार्शनिक रूप का वर्णन है— आरण्यक में
- आत्म विवेचन है— आरण्यक में
- वर्णाश्रम— धर्म, निष्काम कर्मयोग का वर्णन है— आरण्यक में
- आरण्यकों की चर्चा है— आदिपर्व (महाभारत) में
- अभी आरण्यक प्राप्त है— पाँच-छः
- ब्राह्मणों के अन्तिम भाग कहे जाते हैं— आरण्यक



---

1. तैत्तिरीय आ.भा. श्लोक - 6
2. कौ. ऐ. आ. 2.1.6

(1) ऋग्वेदीय आरण्यक

ऋग्वेद के आरण्यक हैं— दो

1. ऐतरेय आरण्यक 2. कौषीतकि / शांखायन आरण्यक

(i) ऐतरेय आरण्यक

- यह आरण्यक सम्बद्ध है— ऋग्वेद से
- ऋग्वेद की शाकल शाखा का आरण्यक है— ऐतरेय आरण्यक
- ऐतरेय आरण्यक सम्बन्धित है— शाकल शाखा से
- ऐतरेय ब्राह्मण का परिशिष्ट है— ऐतरेय आरण्यक
- ऐतरेय आरण्यक में अध्याय हैं— 18
- 18 अध्याय विभक्त हैं— 5 भागों में
- इन भागों को कहते हैं— आरण्यक
- प्रथम आरण्यक में वर्णन है— 'महाव्रत' का
- ऐतरेय ब्राह्मण के गवामयन कर्म का एक अंश है— महाव्रत
- द्वितीय आरण्यक के प्रथम तीन अध्यायों में वर्णन है—प्राणविद्या एवं पुरुष का
- द्वितीय आरण्यक के चतुर्थ से षष्ठ अध्याय में है—ऐतरेयोपनिषद्
- तृतीय आरण्यक को कहते हैं— संहितोपनिषद्
- संहिता, पद, क्रम एवं स्वर—व्यंजन आदि विषयों का विवेचन है— तृतीय आरण्यक में
- व्याकरण तथा भाषाशास्त्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है—तृतीय आरण्यक
- महानाम्नी ऋचाएँ संकलित हैं—चतुर्थ आरण्यक में
- महाव्रत के पाँचवें दिन पढ़ी जाने वाली ऋचाएँ हैं—महानाम्नी
- निष्केवल्य शस्त्र का वर्णन है—अन्तिम आरण्यक में
- ऐतरेय आरण्यक के रचनाकार माने जाते हैं—ऐतरेय महीदास

(ii) कौषीतकि / शाङ्खायन आरण्यक

- ऋग्वेद का दूसरा आरण्यक है— शाङ्खायन/कौषीतकि आरण्यक
- इस आरण्यक में अध्याय हैं— 15
- शाङ्खायन आरण्यक का तीन से षष्ठ अध्याय है—कौषीतकि उपनिषद्

- उशीनर, मत्स्य, काशी, विदेह एवं कुरु पाञ्चाल का निर्देश है— षष्ठाध्याय में
- इसके नवम अध्याय में वर्णन है— प्राण की श्रेष्ठता का
- आध्यात्मिक अग्निहोत्र का विशद निरूपण है— दशम अध्याय में
- आशीर्वाद की प्रार्थना तथा फल का कथन है— 12वें अध्याय में
- आचार्यों की वंश परम्परा है— 15वें अध्याय में

2. यजुर्वेदीय आरण्यक

(i) शुक्ल यजुर्वेद

बृहदारण्यक

- शुक्लयजुर्वेद का एकमात्र आरण्यक है— बृहदारण्यक
- शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं माध्यन्दिन / वाजसनेयि और काण्व में एक मात्र आरण्यक है— बृहदारण्यक
- शतपथ ब्राह्मण का अन्तिम काण्ड है— बृहदारण्यक
- बृहदारण्यक में अध्याय हैं— 6
- यज्ञों के रहस्य का वर्णन होने के कारण कहा जाता है—आरण्यक
- उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय है—बृहदारण्यक में

(ii) कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक

कृष्ण यजुर्वेद के आरण्यक हैं— दो

1. तैत्तिरीय आरण्यक 2. मैत्रायणी आरण्यक

1. तैत्तिरीय आरण्यक

- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक है—तैत्तिरीय आरण्यक
- तैत्तिरीय आरण्यक विभक्त है— 10 परिच्छेदों (प्रपाठकों) में
- तैत्तिरीय आरण्यक के सप्तम से नवम परिच्छेद को कहते हैं— तैत्तिरीयोपनिषद्
- इस आरण्यक के प्रपाठकों के नाम दिये गये हैं—प्रथम पदों के आधार पर
- इसके दशम प्रपाठक (परिच्छेद) को कहा जाता है— महानारायणीयोपनिषद्
- अग्नि की उपासना का वर्णन है— तैत्तिरीय आरण्यक में

- इष्ट का चयन, पञ्चमहायज्ञ का वर्णन है— तैत्तिरीय आरण्यक में
- कुरुक्षेत्र, पाञ्चाल आदि का वर्णन है— तैत्तिरीय आरण्यक में
- प्रपाठकों का अवान्तर विभाजन किया गया है— अनुवाकों में
- अनुवाकों की कुल संख्या है— 139
- द्वितीय प्रपाठक में सर्वप्रथम विधान है— यज्ञोपवीत का
- सर्वप्रथम यज्ञोपवीत का वर्णन है— तैत्तिरीय आरण्यक में

2. मैत्रायणी आरण्यक

- कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा का आरण्यक है—मैत्रायणी आरण्यक
- मैत्रायणी आरण्यक प्रसिद्ध है— मैत्रायणी उपनिषद् के रूप में
- यह विभक्त है— प्रपाठकों में
- कुल प्रपाठक हैं — 7

3. सामवेदीय आरण्यक

इसमें आरण्यक हैं—दो[1]

1. तलवकार आरण्यक 2. छान्दोग्य आरण्यक

1. तलवकार आरण्यक

- तलवकार आरण्यक है— जैमिनीय शाखा का
- जैमिनीय शाखा का आरण्यक है— तलवकार
- 'तलव' का अर्थ है— संगीतज्ञ
- इसे कहा जाता है— जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण
- तलवकार आरण्यक में अध्याय हैं— चार
- अध्याय विभक्त हैं— अनुवाकों में
- चतुर्थ अध्याय के दशम अनुवाक को कहते हैं— केनोपनिषद्

2. छान्दोग्य आरण्यक

- सामवेद के ताण्ड्य ब्राह्मण से सम्बद्ध आरण्यक है— छान्दोग्य

4- अथर्ववेदीय आरण्यक

- वह कौन सा वेद है, जिसमें आरण्यक नहीं हैं?— अथर्ववेद



1. सं. सा. स. इति.—कपिलदेव द्विवेदी पृ.सं. 78

दर्श-पौर्णमास यज्ञ

- वैदिक यज्ञों के 7 प्रमुख हविर्यज्ञों में से तीसरा यज्ञ है— दर्शपौर्णमास यज्ञ
- दर्शयाग होता है— अमावस्या को
- पौर्णमास यज्ञ होता है— पूर्णिमा को
- दर्शपौर्णमास कितने यागों का समुच्चय है?— 6
- 'दर्श यागों' का समूह है— 3
- 'पूर्णमास' यागों का समूह है— 3
- यज्ञों में अग्नि का आधान क्रमशः होता है—अमावस्या एवं पूर्णिमा को
- यागविधि सम्पन्न होती है— प्रतिपदा के दिन
- छः कर्म देते हैं— एक ही फल
- अमावस्या के याग हैं— तीन

  1. अग्नि प्रीत्यर्थ पुरोडाशयाग 2. इन्द्र प्रीत्यर्थ पुरोडाशयाग
  3. इन्द्रप्रीत्यर्थ पयोद्रव्यकयाग
- पूर्णिमा के याग हैं—तीन

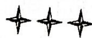
  1. अष्टकपाल पुरोडाशयाग
  2. उपांशुयाग 3. एकादशकपाल पुरोडाशयाग
- दर्शपौर्णमासयाग कितने वर्ष तक प्रचलित है?— 30 वर्ष तक
- 30 वर्षों में कुल पूर्णमासियाँ होती हैं— 360
- 30 वर्षों में कुल अमावस्याएँ होती हैं— 360
- दाक्षायण— यज्ञ किया जाता है— 15 वर्ष तक
- यज्ञ के दिन को कहा जाता है— उपवसथ
- यज्ञ के द्वितीय दिन को कहा जाता है— यजनीय
- इसमें यजमान नियुक्त करता है— चार पुरोहितों को
- 'दर्श' की दृष्टि में पुरोडाश के देवता हैं—इन्द्र एवं इन्द्राणी

आख्यान

➢ आख्यान दो होते हैं— 1. स्वल्पकाय 2. दीर्घकाय

शुनः शेप आख्यान

➢ 'शुनः शेप' आख्यान है— ऐतरेय ब्राह्मण में
➢ 'शुनः शेप' आख्यान कहा जाता है— हरिश्चन्द्रोपाख्यान
➢ पुत्र प्राप्ति हेतु वरुण देव की उपासना की थी— हरिश्चन्द्र ने
➢ हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम था— रोहित
➢ हरिश्चन्द्र ने वरुण देव को क्या समर्पित करने को कहा था?— अपने पुत्र रोहित को
➢ वरुण देवता के कोप से हरिश्चन्द्र को रोग हुआ था— जलोदर
➢ हरिश्चन्द्र ने रोहित की जगह बलि देने के लिए किस बालक को खरीदा था?— शुनःशेप को
➢ 'शुनःशेप' के पिता का नाम था— अजीगर्त ऋषि
➢ हरिश्चन्द्र द्वारा किये जा रहे यज्ञ के ऋत्विक् थे— विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि [1]
➢ 'शुनःशेप' को देवताओं की शरण में जाने की सलाह मिली थी— विश्वामित्र से
➢ अग्नि, सविता, वरुण आदि देवताओं की स्तुति की थी—'शुनःशेप' ने
➢ विश्वामित्र ने पुत्र रूप में स्वीकार किया था— 'शुनःशेप' को
➢ विश्वामित्र ने शुनःशेप का नामकरण किया था— देवरात विश्वामित्र
➢ विश्वामित्र का दत्तक पुत्र था— देवरात
➢ विश्वामित्र का मूल नाम था— विश्वरथ



1. स. वा. बृ. इति. —बलदेव उपाध्याय

वाङ्मनस् आख्यान

➢ वाङ्मनस् आख्यान मिलता है— शतपथ ब्राह्मण[1] में
➢ मन और वाणी के बीच विवाद हुआ था— श्रेष्ठता को लेकर
➢ मन और वाणी विवाद शान्त करने के लिए किसके पास गये थे?— प्रजापति के पास
➢ प्रजापति ने किसके पक्ष में निर्णय दिया था?— मन के
➢ निर्णय सुनकर क्रोधित हुई थी— वाणी
➢ 'मनोऽनुगामी' किसे कहा गया?— वाणी को
➢ 'मनोऽनुगामी' किसने कहा था— प्रजापति ने
➢ किसका गर्भ गिर गया था?— वाणी का
➢ प्रजापति के लिए हवि न ले जाने का निर्णय किया था— वाणी ने
➢ प्रजापति को हवि दिया जाता है— मानसिक रूप से (निम्नस्वर से)
➢ इस आख्यान में मन्त्र हैं— 6
➢ वाणी के गर्भ को रचा था— देवताओं ने
➢ उसी गर्भ से पैदा हुए— अत्रि
➢ गलितगर्भा रजस्वला स्त्री को कहते हैं— आत्रेयी



1. शतपथ ब्राह्मण (1/4/5/8-13)

पञ्चमहायज्ञ

- पञ्च महायज्ञों का सम्पादन हो रहा है— वैदिक काल से
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार पञ्चमहायज्ञ हैं— पाँच
  1. ब्रह्मयज्ञ 2. पितृयज्ञ 3. देवयज्ञ 4. भूतयज्ञ 5. नृयज्ञ
- वैदिक मन्त्र का अध्ययनाध्यापन है— ब्रह्मयज्ञ
- ब्रह्मयज्ञ का वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है— तैत्तिरीयारण्यक में
- प्राचीन ऋषियों के प्रति श्रद्धा एवं आदर मनुष्य प्रकट करता है— यज्ञ द्वारा
- ब्रह्मयज्ञ में अध्ययन किया जाता है— वेदाङ्ग, पुराण इत्यादि का
- मनुष्य पितरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है— पितृयज्ञ द्वारा
- पितृयज्ञ कितने प्रकार से संपादित होता है?— तीन
  1. तर्पण द्वारा 2. बलिहरण द्वारा 3. प्रतिदिन श्राद्ध द्वारा
- बलि का शेषांश पितरों को दिया जाता है— बलिहरण में
- प्रतिदिन के श्राद्ध में खिलाया जाता है— कम से कम एक ब्राह्मण को
- प्रतिदिन के श्राद्ध में नहीं होता है— पिण्डदान
- पार्वण श्राद्ध की विधि और नियमों का पालन नहीं होता है— प्रतिदिन के श्राद्ध में
- विद्वानों ने पितरों के मासिक श्राद्ध को कहा है— अन्वाहार्य
- पितरों के श्राद्ध-तर्पण के समय हुआ जाता है— अपसव्य
- पितरों के श्राद्ध-तर्पण के समय मन्त्रोच्चारण होना चाहिए— 'ॐ पितृभ्यः स्वधा'
- देवनिमित्त किया गया हवनादिक कार्य है— देवयज्ञ
- अग्नि में समिधा डालने से संपादन होता है— देवयज्ञ का
- सूर्य से उपलब्ध होती है— वृष्टि
- वृष्टि से उत्पन्न होता है— अन्न

- अन्न से उत्पन्न होती हैं— प्रजाएँ
- भूतयज्ञ को कहते हैं— बलिवैश्व देवयज्ञ
- असमर्थ प्राणियों की भोजन आदि से सहायता करने का भाव है— भूतयज्ञ में
- नृयज्ञ को कहा जाता है— अतिथियज्ञ
- जो ब्राह्मण एक रात्रि के लिए रुकता है, वह है— अतिथि [1]
- अतिथि सत्कार किसके उपरान्त किया जाता है?— बलिहरण के
- 'पञ्चमहायज्ञ' की विशेषताएँ हैं— दो
- पुरोहितों की आवश्यकता नहीं होती है— 'पञ्चमहायज्ञ' में
- 'पञ्चमहायज्ञ' कौन करता है?— गृहस्थ



1. मनुस्मृति - 3/102

व्याकरण एवं वैदिक व्याख्या–पद्धति

पदपाठ के नियम

- वैदिक मन्त्रों के पाठ उपलब्ध होते हैं— दो 1. संहितापाठ 2. पदपाठ
- मन्त्रों का प्रकृत उपलब्ध पाठ है— संहितापाठ
- संहितापाठ के प्रत्येक पद का विच्छेद होने पर कहा जाता है— पदपाठ
- स्वरों में पर्याप्त अन्तर आ जाता है— पदपाठ के
- संहितापाठ की सुरक्षा हेतु ऋषियों ने अपनाया है— पदपाठ पद्धति
- संहितापाठ में विद्यमान संधियों का विच्छेद करके रखना चाहिए— अलग-अलग
- प्रत्येक पद के बाद लगाना चाहिए— पूर्णविराम(।) का चिह्न
- संहितापाठ के अनुस्वार को पदपाठ में परिवर्तित किया जाता है— 'म्' के रूप में यथा— 'अग्निं' को 'अग्निम्'
- संहितापाठ में जाने वाले छान्दस् दीर्घ को पदपाठ में कर दिया जाता है— ह्रस्व, यथा— रक्षा॒ च नो॒ (ऋ.1/35/11) रक्ष॒ च नः॒
- भ्याम् भिस्, भ्यस्, सु, त्व, तरप्, तमप्, वडप्, मतुप, क्वसु इत्यादि प्रत्ययों के पूर्व लगता है— अवग्रह (ऽ)
- द्वन्द्वसमास तथा नञ्समास को छोड़कर समासयुक्त पदों के बीच लगता है— अवग्रह (ऽ) यथा— 'विश्वऽवेदसे भूरिऽशृङ्गऽव'
- उपर्सग के बाद कृदन्त या संज्ञा शब्द हो, तो उनके बीच लगता है— अवग्रह (ऽ), यथा— प्रऽजा। सुऽशिप्रः।
- यदि किसी शब्द के साथ 'इव' लगा हो, तो 'इव' के पूर्व लग जाता है— अवग्रह (ऽ), यथा— प्रवर्धिनीऽइव।
- यदि उपसर्ग और प्रत्यय दोनों एक साथ हों, तो प्रत्यय के पूर्व लगता है— अवग्रह (ऽ), यथा— आतस्थिऽवासौ।
- प्रकृति में कोई विकार न हुआ हो, तो प्रत्यय तथा विभक्ति के पूर्व लगता है— अवग्रह (ऽ), यथा— हरिऽभ्याम्

- प्रगृह्यसंज्ञक ई, ऊ, ए के साथ लगता है— 'इति', यथा— क्रन्दसी इति। इत्यादि
- सप्तम्यन्त पद में प्रयुक्त ई, ऊ के बाद लगता है— इति, यथा— सरसी इति।
- ओकारान्त निपात के बाद लगता है— इति, यथा— इन्द्रो इति।
- अस्मे, युष्मे, त्वे आदि के बाद लगता है— इति, यथा— अस्मे इति।
- रिफित विसर्जनीयान्त पद का रेफ यदि संहितापाठ में स्पष्ट दिखाई न पड़ता हो, तो उसको स्पष्ट करने के लिए पदपाठ के आगे होता है— इतिकरण। यथा— अन्तः= अन्तरिति। सवितः= सवितरिति।
- सम्बोधन के अन्त में 'ओ' आवे तो उसके बाद आता है— इति, यथा— विष्णोइति
- जब कोई पद इतिकरण से युक्त होता है, तो उसकी होती है— उपस्थित संज्ञा
- स्वः के बाद लगाकर दुहराया जाता है— 'इति', यथा— स्वरिति स्व।
- प्लुत होने के कारण जहाँ दीर्घ हुआ हो, तो वहाँ कर दिया जाता है— ह्रस्व, यथा— अच्छावद = अंच्छवद
- ऋग्वेदसंहिता में पदपाठ में अवग्रह दिखाने के लिए आवृति नहीं की जाती है— शब्दों की
- यजुर्वेद में अवग्रह दिखाने के लिए आवृत्ति की जाती है— शब्दों की, यथा— श्रेष्ठतमायेति श्रेष्ठऽतमाय।
- अथर्ववेद में पदपाठ होता है— ऋग्वेद के समान
- अथर्ववेद में अवग्रह के स्थान पर लगता है— बिन्दु, यथा— त्रि. सप्त
- सामवेद में शब्दों के साथ पदांशों का भी होता है— पदच्छेद, यथा— हव्य दातये हव्यदातये



स्वर

- वैदिक मंत्रों के उच्चारण एवं अर्थबोध के लिए आवश्यक हैं—स्वर
- वैदिक वाङ्मय में स्वर हैं—तीन
  1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित

1. **उच्चैरुदात्तः — उदात्त**

- कोई चिह्न नहीं होता है— उदात्त में
- कण्ठ, तालु आदि खण्ड स्थानों के ऊपर के भाग से जिन स्वरों का उच्चारण होता है, वह है—उदात्त

2. **नीचैरनुदात्तः — अनुदात्त**

- कण्ठ, तालु आदि स्थानों के नीचे के भाग से उच्चरित स्वर हैं—अनुदात्त
- ऋग्वेद पद्धति में अनुदात्त को अंकित किया जाता है—पड़ी रेखा (—) से

3. **समाहारः स्वरितः— स्वरित**

- उदात्त, अनुदात्त दोनों धर्मों का मेल जिस वर्ण में होता है, वह है— स्वरित
- स्वरित होता है—दो 1. स्वतन्त्र स्वरित, 2. आश्रित स्वरित
- स्वतन्त्र स्वरित होता है—दो 1. संधिज, 2. असंधिज
- संधिज स्वरित होता है—तीन प्रकार का
  1. क्षैप्र 2. प्रश्लिष्ट 3. अभिनिहित
- असंधिज स्वरित होता है—एक प्रकार का, 1. जात्य स्वरित या नित्य स्वरित
- आश्रित स्वरित है—पाँच
  1. पादवृत्त 2. प्रातिहत 3. तैरोव्यञ्जन 4. तैरोविराम 5. तायाभाव्य
- प्रातिशाख्य ग्रन्थों में स्वरित हैं— 9
- स्वरित को चिन्हित किया जाता है—स्वर के ऊपर खड़ी पाई (।) से यथा— अ॑ग्निः



वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर

- भारतीय भाषाओं के विकास को विभक्त किया गया है—तीन युगों में
  1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषा युग— वैदिक युग से 500 ई.पू. तक
  2. मध्यकालीन आर्यभाषा युग— 500 ई. से 1000 ई.
  3. आधुनिक आर्यभाषा युग— 1000 ई. से अब तक
- वैदिक संस्कृत को कहा जाता है— वैदिकी, छन्दस्, छान्दस्
- लौकिक संस्कृत को प्रायः कहा जाता है— संस्कृत
- वैदिक संस्कृत में प्रयोग किया जाता है— उदात्तादि स्वरों का
- लौकिक संस्कृत में अभाव है—उदात्तादि स्वरों का
- वैदिक संस्कृत में स्वर हैं—तीन 1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
- लौकिक संस्कृत में स्वर हैं— दो 1. ह्रस्व 2. दीर्घ
- वैदिक संस्कृत में प्रयोग है— ऌ स्वर का
- लौकिक संस्कृत में प्रयोग नहीं है— ऌ स्वर का
- वैदिक संस्कृत में प्रचुरता है— शब्द रूपों की
- लौकिक संस्कृत में प्रचुरता नहीं है— शब्द रूपों की
- वैदिक संस्कृत में धातुओं के परस्मैपद तथा आत्मनेपद होने के सन्दर्भ में नहीं हैं— कोई कठोर नियम
- लौकिक संस्कृत में इनके सन्दर्भ में हैं— कठोर नियम
- वैदिक संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग हो सकता है—किसी भी काल में
- लौकिक संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है— भूतकाल में
- वैदिक संस्कृत में अधिक लकार है— लेट् लकार
- लौकिक संस्कृत में लकार हैं—10
- लेट् लकार का प्रायः प्रयोग हुआ है— भूतकाल में



वैदिक व्याख्या-पद्धति

- वेद की व्याख्या पद्धति को विभाजित किया जाता है— दो भागों में,
  1. भारतीय व्याख्या पद्धति 2. पाश्चात्य व्याख्या पद्धति
- भारतीय व्याख्या पद्धति है— दो 1. प्राचीन 2. अर्वाचीन
- प्राचीन व्याख्या पद्धति के भाग हैं— दो 1. वैज्ञानिक 2. याज्ञिक
- अर्वाचीन के भेद हैं— चार
  1. वैज्ञानिक 2. परम्परावादी 3. आध्यात्मिक
  4. पाश्चात्य मत समर्थक
- पाश्चात्य व्याख्या पद्धति है— तीन
  1. परम्परावादी 2. भाषाशास्त्रीय 3. समन्वयवादी

प्राचीन भारतीय पद्धति

- यास्क व्याख्यकार हैं— वैज्ञानिक
- यास्क का समय है— 800 ई.पू. [1]
- यास्क के ग्रन्थ का नाम है— निरुक्त
- निरुक्त में कुल अध्याय हैं— 14
- वेदों के प्रथम वैज्ञानिक व्याख्याकार हैं— यास्क

सायण

- सायण भाष्यकार हैं— याज्ञिक
- सायण का समय है— 1315 ई. से 1387 ई. तक [2]
- वेद भाष्यकारों में सर्वोपरि स्थान है— सायण का
- वैदिक साहित्य में उपलब्ध प्रायः सभी ग्रन्थों पर भाष्य लिखा है— सायण ने

---

1. सं. सा. इति.— उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं. 110
2. सं. वा. बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ. सं. 639

- सायण ने सबसे पहले भाष्य लिखा था— कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर
- सायण निवासी थे— विजयनगर राज्य के
- विजयनगर राज्य स्थित था— तुङ्गभद्रा नदी के दक्षिण तट पर
- सायण के पिता का नाम था— मायण[1]
- सायण की माता का नाम था— श्रीमती या श्रीमायी[2]
- सायण के पुत्र थे— तीन[3]
- सायण के गुरु थे— तीन[4] 1. विद्यातीर्थ 2. भारतीतीर्थ 3. श्रीकण्ठ
- सायण का गोत्र था— भारद्वाज
- सायण गुरु को मानते थे— परमात्मस्वरूप
- सायण मन्त्री थे— राजा हरिहर के
- सायणाचार्य के ऋग्वेदभाष्य का नाम है— 'वेदार्थप्रकाश'
- 'वेदार्थप्रकाश' को समर्पित किया था— अपने गुरु विद्यातीर्थ को
- सायण के अग्रज थे— माधवाचार्य

ऋग्वेद भाष्यकार

1. स्कन्द स्वामी

- ऋग्वेद के उपलब्ध भाष्यकारों में सबसे प्राचीनतम भाष्यकार हैं— स्कन्द स्वामी
- स्कन्द स्वामी निवासी थे— गुजरात के वलभी नगर के
- स्कन्द स्वामी के पिता का नाम था— भर्तृध्रुव
- स्कन्दस्वामी गुरु थे— हरिस्वामी के
- स्कन्द स्वामी ने भाष्य लिखा था— निरूक्त पर

---

(1) सं.वां.बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 639
(2) सं.वां.बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 639
(3) सं.वां.बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 639
(4) सं.वां.बृ. इति.— बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 631

- हरिस्वामी ने भाष्य लिखा था—शतपथ ब्राह्मण पर
- हरिस्वामी के भाष्य का रचनाकाल है—638ई.[1]
- स्कन्द स्वामी का भाष्यरचनाकाल माना जा सकता है—7वीं शताब्दी ई. का प्रथम चरण
- स्कन्दस्वामी का भाष्य ऋग्वेद पर मिलता है—अर्धभाग तक (चतुर्थ अष्टक)
- शेषभाग की पूर्ति की है— नारायण तथा उद्गीथ ने
- स्कन्दस्वामी का भाष्य है—अध्यायक्रम के अनुसार
- स्कन्दस्वामी ने मंत्रों को माना है—5 प्रकार का[2]
- नारायण का भाष्य था—ऋ. के षष्ठ एवं सप्तम अष्टक पर
- ऋग्वेद के षष्ठ एवं सप्तम अष्टक पर भाष्य था—नारायण का
- ऋग्वेद के अष्टम अष्टक पर भाष्य था—उद्गीथ का

2. माधवभट्ट

- ऋग्वेद पर संक्षिप्त भाष्य लिखा था—माधवभट्ट ने
- माधवभट्ट पुत्र थे—वेङ्कट के[3]
- माधवभट्ट का भाष्य है—सायण से पहले का
- माधवभट्ट के भाष्य का नाम है—वेङ्कटमाधवीय

यजुर्वेदीय भाष्यकार

- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य लिखा है— भट्टभाष्कर ने
- भट्टभाष्कर के भाष्य का नाम है— ज्ञानयज्ञ[4]
- भट्टभाष्कर का समय है— 11वीं शताब्दी ई.
- उव्वट का समय है— 11वीं शताब्दी का मध्य
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा पर भाष्य लिखा है—उव्वट ने
- उव्वट निवासी थे—अवन्ती के

(1) सं.सा.बृ. इति. —उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं 111
(2) सं.सा.बृ. इति. —उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं 632
(3) सं.सा.बृ. इति. —उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं 111
(4) सं.सा.बृ. इति. —उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं 112

- उव्वट ने अपने भाष्य का निर्माण किया था— भोज के शासन काल में
- उव्वट ने भाष्य लिखा था— ऋक्प्रातिशाख्य पर
- उव्वट ने भाष्य लिखा था—यजुर्वेद प्रातिशाख्य पर
- उव्वट ने भाष्य लिखा था—ईशावस्योपनिषद् पर
- उव्वट ने भाष्य लिखा था—ऋक् सर्वानुक्रमणी पर
- महीधर का समय है—16वीं शताब्दी ई.
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर भाष्य लिखा था—महीधर ने
- महीधर के भाष्य का नाम है—'वेददीप'
- महीधर निवासी थे—काशी के
- महीधर ब्राह्मण थे—नागर
- हिन्दू नरेश लक्ष्मण सेन के सभासद थे— हलायुध
- शुक्ल यजुर्वेद की काण्व संहिता पर भाष्य लिखा था—हलायुध ने
- हलायुध के भाष्य का नाम है— 'ब्राह्मणसर्वस्व'
- लक्ष्मणसेन के धर्माधिकारी थे— हलायुध
- हलायुध का समय है— 12वीं शताब्दी का पूर्वार्ध[1]
- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर भाष्य लिखा था—सायण ने

सामवेदीय भाष्यकार

- सामवेद पर प्रथम भाष्य मिलता है— माधव का
- माधव के सामवेदीय भाष्य का नाम है—'विवरण'
- सामवेद की कौथुमीय शाखा पर भाष्य लिखा था— गुणविष्णु ने
- गुणविष्णु के भाष्य का नाम था— छान्दोग्य मन्त्र
- सामवेद पर भाष्य मिलता है— सायण का

अथर्ववेदीय भाष्यकार

- अथर्ववेद की शौनक शाखा पर एक मात्र भाष्य मिलता है—सायण क

(1) वैदिक साहित्य और संस्कृति — बलदेव उपाध्याय पृ.सं. 57

भारतीय अर्वाचीन पद्धति

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती—(वैज्ञानिक व्याख्या विधि)

- आर्य समाज के संस्थापक थे—दयानन्द सरस्वती
- दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम भाष्य लिखा था—शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर
- ऋग्वेद पर दयानन्द सरस्वती ने भाष्य लिखा था—ऋ. के 7वें मण्डल के दूसरे सूक्त के दूसरे मन्त्र तक
- वेदों की व्याख्या में दयानन्द सरस्वती ने सबसे प्रमाणित माना है—यास्क को
- एकेश्वरवाद का समर्थन किया है— दयानन्द सरस्वती ने
- वेदों को ईश्वर कृत माना है— दयानन्द सरस्वती ने
- मन्त्र भाग को ही वेद कहा है— दयानन्द सरस्वती ने
- दयानन्द ने वेद में मुख्य विषय माने हैं—चार
  1. ज्ञान 2. विज्ञान 3. कर्म 4. उपासना
- 'वेदार्थ प्रकाश' के रचनाकार हैं— दयानन्द सरस्वती
- दयानन्द का समय है— 1824-83 ई.

2. अरविन्द (आध्यात्मिक विधि)

- अरविन्द का समय है—1872-1950 ई.
- अरविन्द द्वारा वेदों पर रचित पुस्तक है—'वेद रहस्य' (on the vedas)
- वर्तमान के मान्य तत्त्वचिन्तकों में मूर्धन्य हैं—अरविन्द
- अरविन्द का विश्वविख्यात आश्रम है—पाण्डिचेरी में
- अरविन्द की व्याख्या विधि है—आध्यात्मिक
- अरविन्द वेद मन्त्रों के अर्थ को मानते हैं—दो
  1. यज्ञभाग में स्थूल अर्थ 2. अध्यात्म प्रवण में सूक्ष्म अर्थ
- हवन कुण्ड में प्रदीप्त अग्नि है—स्थूल अर्थ
- हृदय में प्रदीप्त इच्छा शक्ति है—सूक्ष्म अर्थ



पाश्चात्य व्याख्या पद्धति

1. परम्परावादी व्याख्या

विल्सन का समय है—1784-1860 ई. तक

- परम्परावादी यूरोपीय विद्वानों में अग्रणी हैं— होरेस विल्सन
- होरेस विल्सन की व्याख्या पद्धति है— परम्परावादी
- ऋग्वेद के प्रथम आंग्ल गद्य अनुवादक हैं— होरेस विल्सन
- सायण के प्रबल समर्थक थे— होरेस विल्सन
- ऋग्वेद का यह अनुवाद आश्रित है—सायण भाष्य पर
- मैक्समूलर का समय है—1823-1900 ई. तक
- मैक्समूलर था— जर्मनी का
- यूनीज बर्नूफ का शिष्य था— मैक्समूलर
- मैक्समूलर का सहपाठी था— रॉथ
- सायण भाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद का प्रकाशन किया—मैक्समूलर ने
- मैक्समूलर की रचना है— 'भारत से हम क्या सीखें'
- हितोपदेश का जर्मन अनुवाद किया था— मैक्समूलर ने
- 'प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास' के रचनाकार हैं— मैक्समूलर

2. भाषा शास्त्रीय व्याख्या

- रॉथ शिष्य थे— यूनीज बर्नूफ के
- रॉथ की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति है— संस्कृत महाकोश
- संस्कृत महाकोश को कहा जाता है— 'पीट्र्सवर्ग कोश'
- पाश्चात्य देशों में नया निरुक्त समझा जाता है— पीट्र्सवर्ग कोश को
- एडाल्फ रॉथ का समय है— 1821-95 ई. तक
- ग्रासमान का समय है—1809-77 ई. तक
- रॉथ का शिष्य था—ग्रासमान

- 'ध्वनि परिवर्तन' का विश्व प्रसिद्ध नियम है— ग्रासमान का
- 'वैदिक कोश' का प्रणयन किया था— ग्रासमान ने
- ऋग्वेद का जर्मन भाषा में पद्यानुभाव किया था— ग्रासमान ने

3. समन्वयवादी व्याख्या

- चेक ज़ाति के प्राच्य विद्याविद थे— लुडविग
- पाश्चात्य समन्वयवादी व्याख्याकार थे— लुडविग
- 6 खण्डों में ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया था— लुडविग ने
- चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया था— ग्रिफिथ ने
- वाल्मीकि रामायण का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया था— ग्रिफिथ ने
- काशी के संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य थे— ग्रिफिथ
- बौद्ध साहित्य, वेद तथा सूत्रग्रन्थों में कार्य किया था— ओल्डनवर्ग ने
- मैक्समूलर द्वारा रचित ग्रन्थों का टिप्पणी सहित अनुवाद किया था— ओल्डनवर्ग ने
- 'ऋग्वेद का पाठालोचन तथा टिप्पणी' नामक ग्रन्थ जर्मन में लिखा था— ओल्डनवर्ग ने
- 'वेद का धर्म', के रचनाकार हैं— ओल्डनवर्ग
- ओल्डनवर्ग का समय है— 1854-1920 ई. तक
- कात्यायनकृत सर्वानुक्रमणी पर शोध कार्य किया था— मैक्डॉनल ने
- मैक्डॉनल का समय है— 1854 ई.



खण्ड-2

उपनिषद्

- वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है— उपनिषद्
- उपनिषद् मुख्यतया द्योतक है— ब्रह्मविद्या का
- उपनिषद् किसके लिए है?— संन्यासी के लिए
- ज्ञान तथा उपासना का विस्तार पूर्वक व्याख्यान है— उपनिषदों में
- वेद का अन्तिम भाग होने के कारण उपनिषद् को कहा जाता है— वेदान्त
- 'उप+नि' इन दो उपसर्गों के साथ 'सद्' धातु से क्विप् प्रत्यय करके बना है— उपनिषद् शब्द
- मुक्तिकोपनिषद् के अनुसार उपनिषदों की संख्या है— 108 [1]
- उपनिषदों की संख्या शङ्कराचार्य ने मानी है— 10 [2]
- गूढ़ आत्मविद्या का निरूपण है— उपनिषद् में

10 उपनिषद्—

ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् ।



---

1. सं. सा. इति.— उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं.
2. सं. सा. इति.— उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं.

ऋग्वेदीय उपनिषद्

1. ऐतरेय उपनिषद्

- ➢ 'ऐतरेय आरण्यक' में द्वितीय आरण्यक के 4 से 6 अध्यायों का नाम है— ऐतरेयोपनिषद्
- ➢ ऐतरेय उपनिषद् में कुल अध्याय हैं— तीन
- ➢ प्रथम अध्याय में खण्ड हैं— तीन
- ➢ द्वितीय अध्याय में खण्ड है— एक
- ➢ तृतीय अध्याय में खण्ड है— एक
- ➢ विश्व की उत्पत्ति का विवेचन है— ऐतरेय-उपनिषद् में
- ➢ पुरुष के तीनों जन्मों का निर्देश किया गया है— ऐतरेय-उपनिषद् में
- ➢ जन्म, जीवन, मरण का वर्णन है— द्वितीय अध्याय में
- ➢ आत्मा के स्वरूप का वर्णन है— तृतीय अध्याय में
- ➢ 'प्रज्ञानं ब्रह्म' महावाक्य है— ऐतरेय-उपनिषद् का
- ➢ 'सा भावयित्री भावयितव्या' यह पङ्क्ति सम्बद्ध है— ऐतरेयो. से
- ➢ परोक्षप्रिय होते हैं— देवगण
- ➢ 'इन्द्र' शब्द की व्युत्पत्ति दी गयी है— ऐतरयो. में
- ➢ पुरुष जन्म का वर्णन है— ऐतरेयो. (द्वितीय अध्याय) में

2. कौषीतकि उपनिषद्

- ➢ कौषीतकि आरण्यक के तीन से 6 अध्याय तक का भाग है— कौषीतकि उपनिषद्
- ➢ कौषीतकि उपनिषद् को कहा गया है— ब्राह्मणोपनिषद्
- ➢ इस उपनिषद् में कुल अध्याय हैं— चार
- ➢ अध्याय विभक्त हैं— खण्डों में

- ➢ प्रथम अध्याय में खण्ड हैं— 7
- ➢ द्वितीय अध्याय में खण्ड हैं— 15
- ➢ तृतीय अध्याय में खण्ड हैं— 9
- ➢ चतुर्थ अध्याय में खण्ड हैं— 20
- ➢ सम्पूर्ण उपनिषद् है— गद्यात्मक
- ➢ प्रथम अध्याय में वर्णन है— देवयान और पितृयान
- ➢ द्वितीय अध्याय में वर्णन है— आत्मा के प्रतीक का
- ➢ प्रतर्दन से ब्रह्म-विद्या इन्द्र सीखते हैं— तृतीय अध्याय में
- ➢ अजातशत्रु एवं बालाकि के आख्यान के प्रसंग में परब्रह्म का विवेचन है—चतुर्थ-अध्याय में



यजुर्वेदीय उपनिषद्

शुक्ल यजुर्वेद

1. ईशावास्योपनिषद्

- सबसे प्राचीन उपनिषद् है— ईशावास्योपनिषद्
- शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिनशाखा का 40वाँ अध्याय है— ईशावास्योपनि
- ईशावास्योपनिषद् में कुल मन्त्र हैं— 18
- इसके ऋषि हैं— दध्यङ्ग आथर्वण
- विद्या और अविद्या के तात्त्विक विवेचन की प्रमुखावधारणा है— ईशावास्योपनिषद् की
- त्यागपूर्वक भोग, कर्म की निष्कामता, आत्मा का स्वरूप इत्यादि का वर्णन है— ईशावास्योपनिषद् में
- सम्भूति और असम्भूति का वर्णन है— ईशावास्योपनिषद् में
- ईशा. का चरमोद्देश्य है— आत्मतत्त्व का प्रतिपादन
- 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' यह मन्त्रांश है— ईशावास्योपनिषद् का
- जगत् में जो कुछ स्थावर-जङ्गम है वह आच्छादनीय है— ईश्वर द्वा
- लोक में कर्म करते हुए कितने वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए?— सौ वर्ष तक
- 'तास्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः' यह मन्त्रांश है— ईशावास्योपनिषद् में (3)
- देवताओं का सम्पति स्वरूप लोक है— असुर्य
- 'अनेजदेकं मनसो जवीयो' यह मन्त्रांश है— ईशावास्योपनिषद् में (4)
- इन्द्रियाँ प्राप्त नहीं कर पाती हैं— आत्मतत्त्व को
- जो चलने वाला न हो, उसे कहते हैं— अनेजत्

- 'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः' यह मन्त्रांश है— ईशावास्योपनिषद् में (5)
- जो साधक सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में और समस्त भूतों में भी आत्मा को देखता है, ऐसी स्थिति है— अभेदर्शी की
- 'भूतान्यात्मैवा भूद्विजानतः' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (7)
- सर्वगत, शुद्ध, अशरीरी, अक्षत, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, स्वयम्भू आदि कहा गया है— आत्मा को
- 'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (8)
- 'कविर्मनीषी परिभूः' कहा गया है— आत्मा को (8)
- 'स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (8)
- ज्ञानमार्ग और कर्ममार्ग का वर्णन है— ईशावास्योपनिषद् में
- 'ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः' यह मन्त्रांश है— ईशा. में(9)
- अविद्या के उपासकों से भी अधिक अन्धकार में पड़ते हैं— मात्र विद्या में रत लोग
- मात्र अविद्या की उपासना करने वाले प्रवेश करते हैं— घोर अन्धकार में
- अविद्या का अर्थ है— कर्म
- अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं— मात्र अविद्या के उपासक
- 'अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (10)
- 'शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे' यह मन्त्रांश है— ईशा. में
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (11)
- 'यस्तद्वेदोभयं सह' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (11)
- विद्या से प्राप्त करता है— अमरत्व को
- 'सम्भवन' का अर्थ है— उत्पन्न होने

- 'सम्भवन' का नाम है— सम्भूति
- जिस कार्य की उत्पत्ति होती है, वह है— सम्भूति
- सम्भूति से भिन्न है— असम्भूति
- कार्य ब्रह्म की उपासना से प्राप्त करता है—मृत्यु को
- 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्' यह मन्त्रांश है—ईशा. में (15)
- आदित्यमण्डलस्थ ब्रह्म का मुख ढका हुआ है— ज्योतिर्मय पात्र से
- 'तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये' यह मन्त्रांश है—ईशा. में (15)
- 'एकर्षि' कहा गया है— सूर्य को
- जगत् का पोषण करने के कारण सूर्य है— पूषा
- 'वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्' यह मन्त्रांश है—ईशा.में (17)
- 'ऊँ क्रतो स्मर' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (17)
- 'अग्ने नय सुपथा' यह मन्त्रांश है —ईशा. में
- 'विश्वानि देव वायुवानि विद्वान्' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (18)
- 'युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (18)
- 'ते नम उक्तिं विधेम' यह मन्त्रांश है— ईशा. में (18)

2. बृहदारण्यकोपनिषद्

- शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को कहा जाता है— बृहदारण्यकोपनिषद्
- इस उपनिषद् में कुल अध्याय हैं— 6
- सबसे विशालकाय गद्यात्मक उपनिषद् है— बृहदा.
- अश्वमेध यज्ञ, आत्मा से जगत् की उत्पत्ति का वर्णन है—प्रथम अध्याय में
- मृत्यु द्वारा सम्पूर्ण पदार्थों का ग्रास किये जाने का वर्णन है—प्रथम अध्याय में

- गार्ग्य (बालाकि), काशीराज और अजातशत्रु का संवाद है—द्वितीय अध्याय में
- याज्ञवल्क्य ने आत्मविद्या का उपदेश दिया था—मैत्रेयी को
- याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम है— मैत्रेयी
- गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का प्रश्नोत्तर है—बृहदा. में
- याज्ञवल्क्य तथा अन्य दार्शनिकों के बीच शास्त्रार्थ हुआ था—जनक की सभा में (तृतीय अध्याय में)
- याज्ञवल्क्य ने जनक को ब्रह्म विषयक उपदेश दिया था—चतुर्थ अध्याय में
- ब्रह्मा प्रजापति, गायत्री, परलोक आदि के विषय में विचार किया गया है— पञ्चम अध्याय में
- श्वेतकेतु, आरुणि तथा प्रवाहण जैबलि के मध्य संवाद हुआ था—षष्ठ अध्याय में
- श्वेतकेतु, आरुणि तथा प्रवाहण जैबलि के मध्य संवाद हुआ था—बृहदा. में
- इस उपनिषद् के प्रमुख ऋषि हैं— याज्ञवल्क्य
- 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः' यह मन्त्रांश है— बृहदा. का
- 'अहं ब्रह्मास्मि' यह मन्त्रांश है — बृहदा. का
- 'असतो मा सद्गमय' यह मन्त्रांश है — बृहदा. का
- 'पूर्णमदः पूर्णमिदं' यह मन्त्रांश है— बृहदा. का
- 'आमनस्तु कामाय सर्वं प्रिय' यह मन्त्रांश है— बृहदा. का



कृष्णयजुर्वेदीय उपनिषद्

1. कठोपनिषद्

- कृष्णयजुर्वेदीय कठ शाखा का उपनिषद् है— कठोपनिषद्
- गद्यात्मक एवं पद्यात्मक उपनिषद् है— कठोपनिषद्
- कठोपनिषद् में कुल अध्याय हैं— दो
- दोनों अध्याय विभक्त हैं— तीन-तीन वल्लियों में
- नचिकेता तथा यम संवाद का वर्णन है— कठोपनिषद् में
- अग्निविद्या का वर्णन है— कठोपनिषद् में
- ब्रह्मविद्या का वर्णन है—कठोपनिषद् में
- द्वितीय अध्याय में वक्ता हैं— यम
- आत्मा की व्यापकता एवं अन्त में योग का वर्णन है— द्वितीय अध्याय में
- नचिकेता के पिता ने यज्ञ किया था— विश्वजित यज्ञ
- नचिकेता के पिता का नाम था— वाजश्रवस
- वाजश्रवस के पिता का नाम था— वाजश्रवा
- प्रथमवल्ली में वर्णन है— वाजश्रवस के दान का
- नचिकेता की कथा का वर्णन है— प्रथम अध्याय में
- वाजश्रवस ने क्रोध में यमलोक जाने को कहा था— नचिकेता को
- नचिकेता को यम ने कितने वर दिये थे?— तीन
- प्रथम वर में नचिकेता ने मांगा था—पिता के शांत संकल्प, प्रसन्न एवं क्रोध रहित होने का
- नचिकेता यम के द्वार पर भूखे पड़ा रहा था— तीन रात्रि तक
- एक-एक रात्रि के लिए एक-एक करके तीन वर दिया गया था— नचिकेता को
- 'पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-3)

- 'अनन्दा नाम ते लोकास्तान्स' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-3)
- यम और नचिकेता का संवाद है— कठोपनिषद् में
- नचिकेता ने दूसरे वर में मांगा था— स्वर्गीय अग्नि का
- तीसरे वर में मांगा था— आत्मा के ज्ञान को
- गौतम वंशीय थे— वाजश्रवस
- स्वर्ग की अग्नि का नाम रखा गया था— नाचिकेताग्नि
- 'स होवाच पितरं तात......' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-4)
- 'बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः।' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-5)
- 'वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-7)
- 'आशाप्रतीक्षे संगतꣳ सुनृता....' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-8)
- 'तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मे...' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-9)
- 'शान्तसंकल्पः सुमना यथा' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-10)
- 'स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-12)
- 'शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-12)
- तीन बार नाचिकेत अग्नि का चयन करने वाला कहा जाता है— त्रिणाचिकेत
- 'शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व' यह मन्त्रांश है—कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-23)

- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-1 वल्ली-27)
- श्रेय को ग्रहण करने वाले का होता है— शुभ
- प्रेय का वरण करने वाला हो जाता है— पुरुषार्थ से पतित
- श्रेय और प्रेय मार्ग का वर्णन है— कठोपनिषद् में
- श्रेय— मार्ग को जाना जाता है— विद्या नाम से
- प्रेयमार्ग को जाना जाता है— अविद्या नाम से
- कठोपनिषद् की प्रथम वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 29
- विवेकी व्यक्ति वरण करता है— श्रेय का
- मन्द बुद्धि वरण करता है— प्रेय का
- 'अविद्या या च विद्येति ज्ञाता' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-4)
- 'प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढ़म्' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-6)
- 'शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-7)
- 'कामस्याप्तिं जगतः प्रतिष्ठां' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-11)
- 'एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-16)
- कठोपनिषद् में अक्षर है— ब्रह्म
- 'न जायते म्रियते वा' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-18)
- 'अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-18)
- 'न हन्यते हन्यमाने शरीरे' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-2 वल्ली-18)

- 'ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-1)
- प्राप्त और प्राप्तव्य भेद से है— दो आत्मा
- अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है— आत्मा
- कठोपनिषद् में आत्मा को कहा गया है— रथी
- कठोपनिषद् में शरीर को कहा गया है— रथ
- कठोपनिषद् में बुद्धि को कहा गया है— सारथि
- कठोपनिषद् में मन को कहा गया है— लगाम
- 'आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-3)
- विवेकी पुरुष ने इन्द्रियों को कहा है— घोड़ा
- शरीर, इन्द्रिय एवं मन से युक्त आत्मा को कहते हैं— भोक्ता
- इन्द्रियों से श्रेष्ठ है— विषय
- विषयों से श्रेष्ठ कहा गया है— मन को
- मन से उत्कृष्ट है— बुद्धि
- बुद्धि से उत्कृष्ट है— आत्मा
- 'महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-11)
- 'एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाश्यते' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-12)
- 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-14)
- 'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-14)
- 'अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-15)

- 'उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (प्रथम अध्याय-3 वल्ली-16)
- 'महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-1 वल्ली-4)
- 'ईशानं भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-1 वल्ली-5)
- दोनों अरणियों के बीच में स्थित है— अग्नि (जातवेदा)
- 'मृत्योः स मृत्युमाप्नोति' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-1 वल्ली-11)
- 'अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-1 वल्ली-13)
- पुरुष शरीर के मध्य में स्थित है— अंगुष्ठपरिमाण
- नित्यविज्ञान स्वरूप अजन्मा (आत्मा) का पुर है— 11 दरवाजों वाला
- अन्तरिक्ष में विचरने वाला सर्वव्यापक वायु है— आत्मा
- 'न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-2 वल्ली-1)
- 'एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-2 वल्ली-12)
- 'नित्योऽनित्यानां चेतनश्चेतनानामेको' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-2 वल्ली-13)
- 'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-2 वल्ली-15)
- 'ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-3 वल्ली-1)
- निर्मल बुद्धि में दर्शन होता है— आत्मा का
- पञ्च इन्द्रियाँ, मन सहित आत्मा में स्थित बुद्धि जब चेष्टाहीन होती है, तब की अवस्था है— परम गति की

- 'नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा' यह मन्त्रांश है— कठोपनिषद् का (द्वितीय अध्याय-3 वल्ली-12)
- यम द्वारा दी गयी विद्या एवं सम्पूर्ण योगविधि और ब्रह्मभाव प्राप्त कर नचिकेता हो गया— मृत्युहीन
- योगविधि का वर्णन है— कठोपनिषद् में
- प्रथम अध्याय की द्वितीय वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 25
- प्रथम अध्याय की तृतीय वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 17
- द्वितीय अध्याय की प्रथम वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 15
- द्वितीय अध्याय की द्वितीय वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 15
- द्वितीय अध्याय की तृतीय वल्ली में कुल मन्त्र हैं— 19

2. मैत्रायणी-उपनिषद्

- गद्य-पद्यात्मक उपनिषद् है— मैत्रायणी-उपनिषद्
- मैत्रायणी उपनिषद् में कुल प्रपाठक हैं— 7
- सांख्य योग के 6 अंगों का वर्णन है— मैत्रायणी-उपनिषद् में
- हठयोग के सिद्धान्त निर्दिष्ट हैं मैत्रायणी-उपनिषद् में
- राजा बृहद्रथ और ऋषि शाकटायन का संवाद वर्णित है— मैत्रायणी उपनिषद् में

3. तैत्तिरीयोपनिषद्

- तैतिरीय आरण्यक के सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठक को कहा जाता है— तैत्तिरीयोपनिषद्
- इन तीनों प्रपाठकों को क्रमशः कहा जाता है— शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली
- इन वल्लियों का विभाजन हुआ है— अनुवाकों में
- शिक्षावल्ली में अनुवाक हैं— 12
- ब्रह्मानन्दवल्ली में अनुवाक हैं— 9

- भृगुवल्ली में अनुवाक हैं— 10
- शिक्षा माहात्म्य का वर्णन है—शिक्षावल्ली में
- 'ओंकार' माहात्म्य का वर्णन है—प्रथम शिक्षावल्ली में
- वरुण द्वारा अपने पुत्र भृगु को उपदेश दिया गया है— तृतीय वल्ली में
- ब्रह्म तत्त्व का विवेचन किया गया है—द्वितीय वल्ली में
- 'अभयं प्रतिष्ठां विन्दते' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का
- 'यस्माज्जातं जगत्सर्वं यस्मिन्नेव प्रलीयते' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-1 अनुवाक)
- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, संतान है—शिक्षा की व्याख्या
- अकारादि हैं—वर्ण
- उदात्तादि हैं—स्वर
- ह्रस्वादि हैं— मात्रा
- शब्दोच्चारण में होने वाला प्रयत्न है—बल
- एक ही नियम से उच्चारण करना है—साम
- संहिता है— संतान
- संहिता सम्बन्धी उपनिषदों को बांटा गया है—पाँच अधिकरणों में, 1. अधिलोक 2. अधिज्यौतिष 3. अधिविद्य 4. अधिप्रज 5. अध्यात्म
- इन अधिकरणों को विद्वानों ने कहा है—महासंहिता
- संहिता का प्रथम वर्ण है—पृथ्वी
- संहिता का अंतिम वर्ण है—द्युलोक
- संहिता का मध्यभाग है—आकाश
- महासंहिता में पूर्व वर्ण हैं—अग्नि
- महासंहिता में उत्तरवर्ण हैं—आदित्य
- 'संधीयते प्रजया पशुभिः' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-3 अनुवाक)
- 'ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन सुवर्गेण लोकेन' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-3 अनुवाक)

- 'स मेन्द्रो मेधया' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'अमृतस्य देव धारणो भूयासम्' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'शरीरं मे विचर्षणम्' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'श्रुतं मे गोपाय' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'कुर्वाणाचीरमात्मनः' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-4 अनुवाक)
- 'भूर्भुवः सुवरिति वा' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-5 अनुवाक)
- 'भूरिति वा अयं लोकः' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-5 अनुवाक)
- 'आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-5 अनुवाक)
- 'भूरिति वै प्राणः' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का
- तीन व्याहतियाँ हैं—भू, भुवः और स्वः
- 'आकाश शरीरं ब्रह्म' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-5 अनुवाक)
- 'सत्यात्म प्राणारामं मन आनन्दम' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-5 अनुवाक)
- 'अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि' यह मन्त्रांश है—तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-7 अनुवाक)

- पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, दिशाएँ और अवान्तर दिशाएँ हैं— लोकपाङ्क्त
- अग्नि, वायु, आदित्य, चन्द्रमा और नक्षत्र हैं— देवतापाङ्क्त
- जल, ओषधि, वनस्पति, आकाश और आत्मा हैं— भूतपाङ्क्त
- 'सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-9 अनुवाक)
- 'कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-10 अनुवाक)
- 'सत्यं वद। धर्मं चर' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'मातृदेवो भव। पितृदेवो भव' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'आचार्य-देवो भव' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'अतिथिदेवो भव' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (शिक्षावल्ली-11 अनुवाक)
- 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-1 अनुवाक)
- 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-1 अनुवाक)
- सत्य, ज्ञान और अनन्त है— ब्रह्म
- आत्मा से उत्पन्न होता है— आकाश
- आकाश से उत्पन्न होता है— वायु
- वायु से उत्पन्न होती है— अग्नि

- अग्नि से उत्पन्न होता है— जल
- जल से उत्पन्न होती है— पृथ्वी
- पृथ्वी से उत्पन्न होती हैं— ओषधियाँ
- ओषधियों से उत्पन्न होता है— अन्न
- अन्न से उत्पन्न होता है— पुरुष
- 'अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-2 अनुवाक)
- पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविधः यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-2 अनुवाक)
- सर्वौषध कहा गया है— अन्न को
- विज्ञानमय को कहा गया है— पुरुषाकार
- श्रद्धा है— शिर
- दक्षिण हस्त है— ऋत
- उत्तर हस्त है— सत्य
- विज्ञानवान पुरुष विस्तार करता है— यज्ञ का
- 'स एको ब्रह्मण आनन्दः' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-4 अनुवाक)
- 'आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (ब्रह्मा.-4 अनुवाक)
- प्रश्नों का उत्तर एवं ब्रह्मोपदेश दिया था— भृगु को
- 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (भृगु.-1 अनुवाक)
- 'प्राणेन जातानि जीवन्ति' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (भृगु.-3 अनुवाक)
- 'आकाशे पृथवी प्रतिष्ठिता' यह मन्त्रांश है— तैत्तिरीयोपनिषद् का (भृगु.-9 अनुवाक)

4. श्वेताश्वेतरोपनिषद्

- शैव धर्म का प्रतिपादक उपनिषद् है— श्वेताश्वेतरोपनिषद्
- इसमें कुल अध्याय हैं—6
- कठोपनिषद् के मन्त्र यथावत् रूप से विद्यमान हैं—श्वेताश्वेतरोपनिषद् में
- ब्रह्म की व्यापकता और उनके साक्षात्कार के उपाय वर्णित हैं—प्रथम अध्याय में
- योग का वर्णन है—द्वितीय अध्याय में
- ईश्वर की स्तुति रुद्र रूप में की गई है— तृतीय अध्याय में
- ब्रह्म की माया का वर्णन है— चतुर्थ अध्याय में
- त्रिगुणात्मिका होती है— सृष्टि
- द्वैतवादी सांख्य सिद्धान्त का वर्णन है— श्वेताश्वेतरोपनिषद्
- परमात्मा के जीव रूप शरीर धारण का वर्णन है— श्वेताश्वेतरोपनिषद् में
- एकरूप ब्रह्म का देवरूप में वर्णन किया गया है—षष्ठ अध्याय में
- श्वेताश्वेतरोपनिषद् है— पद्यात्मक



सामवेदीय उपनिषद्

1. छान्दोग्य उपनिषद्

- तलवकार शाखा के छान्दोग्य ब्राह्मण का उपनिषद् है— छान्दोग्य[1]
- छान्दोग्य उपनिषद् में कुल अध्याय हैं—8
- आठ अध्याय विभक्त हैं—154 खण्डों में
- यह उपनिषद् है— गद्यात्मक
- 'साम' एवं 'उद्गीथ' की महत्ता का वर्णन है— प्रथम अध्याय में
- सामगान में कुशल आचार्यों की कथा का वर्णन है—प्रथम अध्याय में
- 'ॐ' की उत्पत्ति तथा 'साम' के भेद वर्णित हैं— द्वितीय अध्याय में
- 'साम' को कहा गया है— अहंकार
- ब्रह्म के व्यक्त रूप का वर्णन है— तृतीय अध्याय में
- सूर्य की उपासना का वर्णन है— तृतीय अध्याय में
- अण्डे से सूर्योत्पत्ति का वर्णन है— तृतीय अध्याय में
- सत्यकाम, जाबालि, रैवत आदि के आख्यान वर्णित हैं—चतुर्थ अध्याय में
- बृहदारण्यक की कथाएँ वर्णित हैं—पञ्चम अध्याय में
- इन्द्रियों की श्रेष्ठता की कथा वर्णित है—पञ्चम अध्याय में
- श्वेतकेतु, आरुणेय एवं प्रवहण जैबलि का संवाद है—पञ्चम अध्याय में
- 6 दार्शनिकों के आत्मविषयक चिन्तन का चित्रण है—पञ्चम अध्याय में
- आरुणि ब्रह्मविद्या का उपदेश देते हैं— षष्ठ अध्याय में
- 'तत्त्वमसि' महावाक्य वर्णित है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म.' यह वर्णित है—छान्दोग्य-उपनिषद् में

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

- 'विज्ञानमानन्दं' यह वर्णित है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- 'इतिहास पुराण पञ्चम् वेदानाम्' यह वर्णित है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- नारद और सनत्कुमार का वृत्तान्त वर्णित है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- 'दहर विद्या' का वर्णन है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- प्रजापति और उनके दो शिष्यों, इन्द्र और विरोचन का आख्यान है— छान्दोग्य-उपनिषद् में
- आत्मा की चार अवस्थाओं का वर्णन है— छान्दोग्य-उपनिषद् में

2. केनोपनिषद्

- सामवेद की जैमिनीयशाखा से सम्बद्ध है— केनोपनिषद्
- तलवकार या जैमिनीय-उपनिषद् कहा जाता है— केनोपनिषद् को
- 'केनेषितं पतति' से प्रारम्भ होने वाला उपनिषद् है— केनोपनिषद्
- जैमिनीयशाखा के ब्राह्मण का नवम अध्याय है— केनोपनिषद्
- केनोपनिषद् विभक्त है— चार खण्डों में
- प्रथम दो खण्ड में वर्णन है— ब्रह्म की अनिर्वचनीयता का
- तृतीय और चतुर्थ खण्ड में वर्णन है— उमा-हेमवती आख्यान का
- हिमालय पुत्री कही गयी हैं— उमा
- उमा-हेमवती आख्यान वर्णित है— केनोपनिषद् में
- उमा-हेमवती आख्यान का वर्णन है— तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड में
- 'श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-1/1)
- 'प्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड- 1/2)
- केनोपनिषद् में कुल मन्त्रों की संख्या है— 34
- 'यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड- 1/4)

- 'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-1/4)
- 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-1/5)
- 'यच्छ्रोत्रेण न शृणोति' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् में (खण्ड-1/7)
- 'यत्प्राणेन न प्राणिति ये प्राणः प्रणीयते' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-1/8)
- उपास्य ब्रह्म का निगुर्ण ब्रह्म से अन्तर कहा गया है— प्रथम खण्ड में
- 'यदि मन्यसे सुवेदेति' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/1)
- 'नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/2)
- 'यस्यामतं तस्य मतं......' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/3)
- 'अविज्ञातं विजानतां......' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/3)
- 'प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/4)
- 'आत्मना विन्दते वीर्यं' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/4)
- 'विद्यया विन्दतेऽमृतम्' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-2/4)
- 'ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-3/1)
- देवताओं के लिए विजय प्राप्त किया था— ब्रह्मा ने
- यक्ष रूप में प्रकट हुआ था— ब्रह्मा
- सर्वप्रथम यक्ष के पास भेजा गया था— अग्नि को
- 'तेऽग्निमब्रुवञ्जातवेद' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-3/3)
- अग्नि के बाद यक्ष के पास गया था— वायु
- वायु के बाद देवताओं ने यक्ष के पास भेजा था— इन्द्र को
- किसके सामने यक्ष अन्तर्धान हो गया?— इन्द्र के
- इन्द्र ने यक्ष के बारे में पूछा था— उमा से

- ➤ 'सा ब्रह्मेति होवाच' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/1)
- ➤ 'समीपस्थ ब्रह्म' का स्पर्श किया था— अग्नि, वायु और इन्द्र ने
- ➤ सबसे पहले ब्रह्म को जाना था— इन्द्र ने
- ➤ 'अथाध्यात्मं यदेतद्गच्छतीव' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/5)
- ➤ 'सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/6)
- ➤ 'तद्ध तद्वनं नाम' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/6)
- ➤ 'तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का(खण्ड-4/8)
- ➤ 'वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/8)
- ➤ 'पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति' यह मन्त्रांश है— केनोपनिषद् का (खण्ड-4/9)



अथर्ववेदीय उपनिषद्

1. मुण्डकोपनिषद्

- ➤ अथर्ववेद की शौनक शाखा का उपनिषद् है— मुण्डकोपनिषद्
- ➤ मुण्डित शिष्यों द्वारा अध्ययन किये जाने के कारण इसे कहा गया— मुण्डक
- ➤ यह उपनिषद् विभक्त है— तीन मुण्डकों में
- ➤ प्रत्येक मुण्डक विभक्त है—दो-दो अध्यायों में (खण्ड)
- ➤ ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को अध्यात्म शास्त्र का उपदेश दिया है— मुण्डकोपनिषद् में
- ➤ विद्या के भेद हैं—दो 1. परा 2. अपरा
- ➤ परा और अपरा विद्या का वर्णन है—मुण्डकोपनिषद् में
- ➤ अपरा विद्या है— वेदाङ्ग
- ➤ वेदाङ्ग का वर्णन है—मुण्डकोपनिषद् में
- ➤ पराविद्या है— ब्रह्मज्ञान
- ➤ ब्रह्म के व्यक्त रूपों का वर्णन है—द्वितीय मुण्डक में
- ➤ द्वैतवाद का निर्देश है—तृतीय मुण्डक में
- ➤ 'द्वा-सुपर्णा सयुजा सखाया' यह मन्त्र है—तृतीय मुण्डक में
- ➤ 'सत्यमेव जयते' यह वर्णित है—मुण्डकोपनिषद् में (तृतीय मुण्डक प्रथम खण्ड-6)
- ➤ 'ब्रह्मवेद ब्रह्मैव भवति' का उपदेश है—मुण्डकोपनिषद् का
- ➤ 'ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम' यह शान्ति पाठ है—मुण्डकोपनिषद् में

2. माण्डूक्योपनिषद्

- ➤ माण्डूक्योपनिषद् है—अथर्ववेद में
- ➤ यह विभक्त है— 12 खण्डों में
- ➤ 'ॐकार' की महत्ता का वर्णन है—माण्डूक्योपनिषद् में
- ➤ तीनों काल एवं त्रिकालातीत है— ॐ
- ➤ आत्मा है— ब्रह्म

- आत्मा के पाद हैं— चार 1. जाग्रत 2. स्वप्न 3. सुषुप्ति 4. तुरीय
- 'ॐ' के तीन अक्षर हैं— अ+उ+म्
- गौडपाद द्वारा रचित ग्रन्थ 'माण्डूक्यकारिका' आधारित है— माण्डूक्योपनिषद् पर
- अद्वैत वेदान्त का प्रतिष्ठापक ग्रन्थ है— माण्डूक्यकारिका
- 'माण्डूक्यकारिका' विभाजित है— 4 खण्डों में
- प्रथम खण्ड में व्याख्या की गई— माण्डूक्योपनिषद् की
- यह उपनिषद् है— गद्यात्मक

3. प्रश्नोपनिषद्

- 'पैप्पलाद शाखा' से सम्बद्ध उपनिषद् है—प्रश्नोपनिषद्
- यह उपनिषद् विभक्त है—6 खण्डों में
- पैप्पलाद से 6 ऋषि अध्यात्म विषयक प्रश्न पूछते हैं—प्रश्नोपनिषद् में
- प्रत्येक खण्ड में पूछा गया है— प्रश्न
- इन खण्डों को कहा गया है— प्रश्न
- प्रथम प्रश्न पूछा गया था— कबन्धी कात्यायन द्वारा
- 'सृष्टि कैसे हुई'? यह प्रश्न है— कबन्धी कात्यायन का
- द्वितीय प्रश्न पैप्पलाद से पूछा गया था— भागर्व द्वारा
- कितने देवता प्रजा (सृष्टि) को धारण करते हैं? यह प्रश्न था—भार्गव का
- कौन उन्हें प्रकाशित करता है? यह प्रश्न था— भार्गव का
- कौन उनमें श्रेष्ठ है? यह प्रश्न था— भार्गव का
- चतुर्थ प्रश्न था— गार्ग्य का
- आत्मा की तीनों अवस्थाओं का रहस्य क्या है? यह प्रश्न था—गार्ग्य का
- पञ्चम प्रश्न था—सत्यकाम का
- 'ॐकार' की उपासना से किस लोक की विजय होती है? यह प्रश्न था—सत्यकाम का
- षष्ठ प्रश्न था—पुकेशा भारद्वाज का
- षोडश कला सम्पन्न पुरुष का स्वरूप क्या है? यह प्रश्न था—भारद्वाज का
- यह उपनिषद् है—गद्यात्मक



खण्ड–3
वेदाङ्ग

- वेदाङ्ग का वर्णन किया गया है— मुण्डकोपनिषद् में
- अङ्ग का अर्थ है— उपकार करने वाला
- वेद का उपकारक है— वेदाङ्ग
- वेदाङ्गों का मुख्य उद्देश्य है— तीन
- वेदों का अर्थबोध होता है— व्याकरण तथा निरुक्त से
- वेदों का सही उच्चारण होता है— शिक्षा तथा छन्द से
- वेदों का याज्ञिक प्रयोग होता है— कल्प तथा ज्योतिष से
- वेदाङ्ग सामान्यतया लिखे गए हैं— सूत्र शैली में
- वेदाङ्गों को वेद-पुरुष के विविध अवयवों का रूपक दिया गया है—पाणिनीय शिक्षा में
- 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' यह सम्बद्ध है— पाणिनीय शिक्षा से
- 'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते' यह सम्बद्ध है— पाणिनीय शिक्षा से
- वेदाङ्ग हैं— 6
- वेदरूपी पुरुष का 'पैर' कहा गया है— छन्द को
- वेदरूपी पुरुष का 'हाथ' कहा गया है— कल्प को [1]
- वेदरूपी पुरुष की 'आँख' कहा गया है— ज्योतिष को
- वेदरूपी पुरुष का 'कान' कहा गया है— निरुक्त को
- वेदरूपी पुरुष की 'नाक' कहा गया है— शिक्षा को
- वेदरूपी पुरुष का 'मुख' कहा गया है— व्याकरण को
- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष हैं— वेदाङ्ग
- वेदाङ्गों के नाम तथा क्रम का उल्लेख सर्वप्रथम प्राप्त होता है— मुण्डकोपनिषद् में
- 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते' यह है— शिक्षा [2]

---

1. पाणिनीय शिक्षा 2. सायण

- जिसके द्वारा हमें वैदिक मन्त्रों के शुद्धातिशुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है, वह है— शिक्षा
- वर्तमान में उपलब्ध शिक्षा ग्रन्थ हैं—32[1]
- वेदाङ्ग विद्या है—अपरा
- वेदाङ्ग अपरा विद्या है, इसका उल्लेख कहाँ हुआ है?— मुण्डकोपनिषद् में
- शिक्षावल्ली में शिक्षा के अंग हैं—6
- शिक्षावल्ली है— तैत्तिरीयोपनिषद् में
- वर्णों की संख्या है—64 [2]
- स्वर हैं— तीन
- मात्रा के भेद हैं—तीन 1. ह्रस्व 2. दीर्घ 3. प्लुत
- स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को कहते हैं— मात्रा
- पाणिनीय शिक्षानुसार वर्णों के उच्चारण स्थान हैं— आठ
- स्पष्ट एवं सुस्वर वर्णोंच्चारण है— साम
- पदपाठ नियमों में प्रयुक्त शब्दों में सन्धि नियमों का लगाना है—संतान
- वेदाङ्ग का प्राचीनतम ग्रन्थ है— प्रातिशाख्य
- प्रातिशाख्य ग्रन्थ प्राचीन है— पाणिनीय शिक्षा से
- वेद विहित कर्मों की क्रमपूर्वक व्यवस्थित कल्पना करने वाला शास्त्र है— कल्प
- यज्ञ-यागादि विधानों का प्रतिपादन किया जाता है— कल्प में
- कल्पसूत्र के भेद हैं—चार

  1. श्रौतसूत्र 2. गृह्यसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्बसूत्र
- वैदिक यागों को कहते हैं— श्रौतयाग
- वैदिक ब्राह्मणों में वर्णित यज्ञ-यागादि विधानों का संक्षिप्त वर्णन है— श्रौतसूत्र में
- हविर्याग हैं— 7
- सोमयाग हैं— 7

---

1. सं. सा. इति.— उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'
2. पाणिनीय शिक्षा

- गार्हस्थ्य जीवन से सम्बद्ध कृत्यों का वर्णन है— गृह्यसूत्र में
- आचार शास्त्र के रूप में मान्य है— कल्प एवं ज्योतिष
- ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत रखे गए हैं— शिक्षा एवं छन्द
- अर्थ विज्ञान के अन्तर्गत रखे गए हैं— व्याकरण एवं निरुक्त
- गृह्यसूत्र में प्रतिपादित यज्ञ अनुष्ठित होते हैं— गृहाग्नि में
- 'पञ्चमहायज्ञों' का वर्णन है— गृह्यसूत्र में
- 'संस्कारों' का वर्णन है— गृह्यसूत्र में
- षोडष संस्कारों का वर्णन है—गृह्यसूत्र में
- सामाजिक जीवन के नियमों, विधि, आचार-विचार का वर्णन है— धर्मसूत्र में
- धर्मसूत्र को कहा जाता है—धर्मशास्त्र
- सबसे प्राचीनतम धर्मसूत्र माना गया है—गौतम धर्मसूत्र
- यज्ञ-वेदिका के निर्माण की विधि वर्णित है— शुल्बसूत्र में
- शुल्ब का अर्थ है— मापने की रस्सी
- वेदियों का निर्माण होता है—रस्सी से मापकर
- भारतीय ज्यामिति का आरम्भ होता है— शुल्बसूत्र से
- परम्परा से प्रथम व्याकरण कहा गया है— इन्द्र के व्याकरण को
- व्याकरण के सम्प्रदाय माने जाते हैं—8
- ब्रह्मा ने व्याकरण का कथन किया था— बृहस्पति से
- बृहस्पति ने व्याकरण का कथन किया था—इन्द्र से
- इन्द्र ने व्याकरण का कथन किया था—भारद्वाज से
- भारद्वाज ने व्याकरण का कथन किया था—ऋषियों से
- ऋषियों ने व्याकरण का कथन किया था—ब्राह्मणों से
- वर्तमान में व्याकरण वेदाङ्ग का प्रतिनिधि ग्रन्थ है—शब्दानुशासन
- निघण्टु के ऊपर लिखी गयी टीका है—निरुक्त
- वैदिक पदों में निरुक्ति बतलाने का कार्य है— निरुक्त का
- शब्दानुशासन में अध्याय हैं—8

- महाभारत के शान्तिपर्व के अनुसार निघण्टु के प्रणेता हैं— प्रजापति कश्यप
- निघण्टु में कुल अध्याय हैं— 5
- 5 अध्याय विभक्त हैं— तीन काण्डों में
- निरुक्त में कुल काण्ड हैं— तीन
- प्रारम्भिक तीन अध्यायों को कहते हैं— नैघण्टुक काण्ड
- चौथे अध्याय को कहते हैं— नैगमकाण्ड
- पाँचवें अध्याय को कहते हैं— दैवतकाण्ड
- निरुक्त के रचनाकार हैं— यास्क
- यास्क ने निरुक्त में कितने निरुक्तकारों का उल्लेख किया है?— 12
- निरुक्त में कुल अध्यायों की संख्या है— 14
- निरुक्त के परिशिष्ट के रूप में उपलब्ध हैं— दो अध्याय
- निरुक्त का प्रत्येक अध्याय विभक्त है— पादों में
- 13वें और 14वें अध्याय का विभाजन नहीं किया गया है— पादों में
- निरुक्त विभक्त है— काण्डों में
- प्रथम काण्ड का नाम है— नैघण्टुक काण्ड
- द्वितीय काण्ड का नाम है— नैगम काण्ड
- नैगम काण्ड का अन्य नाम है— ऐकपदिक काण्ड
- तृतीय काण्ड का नाम है— दैवत काण्ड
- निरुक्त में कुल पाद हैं— 58
- प्रथम अध्याय में पादों की संख्या है— 6
- द्वितीय अध्याय में पादों की संख्या है— 7
- तृतीय अध्याय में पादों की संख्या है— 5
- चतुर्थ अध्याय में पादों की संख्या है— 4
- पञ्चम अध्याय में पादों की संख्या है— 4
- षष्ठ अध्याय में पादों की संख्या है— 6
- सप्तम अध्याय में पादों की संख्या है— 7
- अष्टम अध्याय में पादों की संख्या है— 3

- नवम अध्याय में पादों की संख्या है— 4
- दशम अध्याय में पादों की संख्या है— 4
- एकादश अध्याय में पादों की संख्या है— 4
- द्वादश अध्याय में पादों की संख्या हैं— 4
- निरुक्त की भूमिका, पदों के चार भेद का वर्णन है— प्रथम पाद में
- षड्भावविकार, निरुक्त के प्रयोजन का वर्णन है— प्रथम पाद में
- निर्वचन का सिद्धान्त वर्णित है— प्रथम पाद में
- निरुक्त के प्रथम तीन अध्याय को कहते हैं— नैघण्टुक काण्ड
- निरुक्त के चतुर्थ से षष्ठ अध्याय को कहते हैं— नैगम काण्ड
- नैगम काण्ड विभक्त है— तीन खण्डों में
- सप्तम से द्वादश अध्याय को कहा जाता है— दैवत काण्ड
- दैवत काण्ड में खण्ड हैं— 6
- प्रत्येक नाम आख्यातज है, यह मत है— यास्क का
- निरुक्त के भाष्यकार हैं— दुर्गाचार्य
- दुर्गाचार्य कृत निरुक्त भाष्य का नाम है— ऋज्वर्था
- जिसमें अक्षरों की संख्या निर्धारित हो, वह है— छन्द
- 'यदक्षर-परिमाणकं तच्छन्दः' यह मत है— कात्यायन का
- सम्प्रति में छन्द का प्रतिनिधि ग्रन्थ है— छन्दसूत्र
- पिङ्गल ऋषि की रचना है— 'छन्दसूत्र'
- छन्द किस धातु से निष्पन्न है?— छद्
- छन्दसूत्र में कुल अध्याय हैं— 8
- छन्द का तात्पर्य है— आच्छादित करना
- प्रत्यक्ष शास्त्र कहा गया है— ज्योतिष को
- वेद पुरुष का चलनात्मक कार्य किया जाता है— छन्द वेदाङ्ग द्वारा
- काल विधायक शास्त्र है— ज्योतिष
- वैदिक कर्मकाण्ड के लिए आवश्यक शास्त्र है— ज्योतिष

- यज्ञ का विधान, काल, संवत्सर इत्यादि के लिए आवश्यक है— ज्योतिष
- ज्योतिष का प्रतिनिधि ग्रन्थ है— वेदाङ्ग ज्योतिष
- ज्योतिष-शास्त्र सर्वप्रथम विभाजित है— गणित एवं फलित में
- होरा का अन्य नाम है— जातक
- 'वेदाङ्ग ज्योतिष' रचित है— लगध द्वारा
- वेदाङ्ग ज्योतिष के भाग मिलते हैं—दो
  1. आर्च ज्योतिष 2. याजुष ज्योतिष
- आर्च ज्योतिष में श्लोक हैं— 36
- याजुष ज्योतिष में श्लोक हैं— 43
- मन्त्रों की लयात्मकता का निर्धारण किस वेदाङ्ग से सम्भव होता है?— छन्द से
- शब्दों की शुद्धताशुद्धता का निर्धारक वेदाङ्ग है— व्याकरण
- वर्ण के प्रमुख प्रकार हैं—दो 1. स्वर 2. व्यंजन
- स्वर का अभिप्राय है— स्वराघात
- आधुनिक ध्वनि विज्ञान का अध्ययन है— शिक्षाध्ययन
- शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं— प्रातिशाख्य
- वेदों की शाखाओं के उच्चारण विधि को बताने वाले ग्रन्थ हैं— प्रातिशाख्य



निरुक्त

- यास्क द्वारा पदों का विभाजन किया गया है— चतुर्विध
- पद के भेद हैं—चार
  1. नाम 2. आख्यात 3. उपसर्ग 4. निपात
- ये चारों पद होते हैं— निघण्टु संज्ञक
- शैव सम्प्रदाय के वैयाकरणों ने पद के भेद माने हैं—दो
  1. सुबन्त 2. तिङन्त
- 'सत्त्वप्रधानानि नामानि' यह लक्षण है— नाम का
- द्रव्य की प्रधानता वाले कहलाते हैं— नाम
- 'सत्त्व' का अर्थ है— द्रव्य
- नाम में क्रिया होती है— गौड़
- क्रिया की प्रधानता वाले कहे जाते हैं— आख्यात
- 'भावप्रधानं आख्यातम्' यह लक्षण है— आख्यात का
- 'भाव' का अर्थ है— होना
- भाव की अवस्थाएँ होती हैं—दो 1. साध्यावस्था 2. सिद्धावस्था
- साध्यावस्था में भाव की प्रधानता होने से वह कहलाता है— आख्यात
- सिद्धावस्था में सत्त्व की प्रधानता होने से वह कहलाता है— नाम
- भाव क्रिया की है— साध्यावस्था
- आख्यात होता है— क्रियावाचक
- 'पचति' है— आख्यात
- यास्क ने पहले सप्रयोजन लक्षण दिया है— आख्यात का
- वाक्य में प्रधानता होती है— आख्यात की
- जहाँ नाम आख्यात दोनों विद्यमान हों, वहाँ प्रधानता होती है—क्रिया की
- क्रिया पूर्ण होती है— सिद्धावस्था में
- पचति, व्रजति, पठति इत्यादि हैं— आख्यात पद
- 'देवदत्तः किम करोति' यहाँ आख्यात पद है—करोति

- अन्विति सादृश्यापरभाव है— उपसर्ग
- आख्यात में क्रिया सदैव रहती है— अमूर्त
- नाम में क्रिया होती है— मूर्त (जब कहीं-कहीं पर नाम से क्रिया का कथन होता है)
- जिस नाम से द्रव्यमात्र का बोध होता है, उसे कहते हैं— सर्वनाम या सामान्य नाम
- अदः, तत्, एतत् इत्यादि हैं— सर्वनाम
- गाय, घोड़ा, पुरुष, हाथी इत्यादि हैं— विशेष नाम
- 'इन्द्रियनित्यम्' यह वचन है— औदुम्बरायण का
- औदुम्बरायण के पिता का नाम है— उदुम्बर
- औदुम्बरायण पदों को मानते हैं— अनित्य
- यास्क ने शब्दों को माना है— नित्य
- 'न निर्बद्धा उपसर्गा अर्थान्निराहुरिति' यह कथन है— शाकटायन का
- शाकटायन हैं— वैयाकरण
- स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त नहीं होता है— उपसर्ग
- नाम एवं आख्यात के साथ ही प्रयुक्त होता है— उपसर्ग
- 'उच्चावचाः पदार्थाः भवन्तीति' यह मत है— गार्ग्य का
- किसके अनुसार उपसर्गों के अपने अनेक अर्थ होते हैं?— गार्ग्य के
- 'उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति' यह लक्षण है— निपात का
- अनेक प्रकार के अर्थों को प्रकट करते हैं— निपात
- यास्क निपात मानते हैं— तीन

  1. उपमार्थक निपात
  2. अर्थोपसंग्रहार्थक निपात या कर्मोपसंगहार्थक
  3. पादपूरक निपात
- किसी उपमान की उपमेय से उपमा देने के लिए प्रयोग होता है— उपमार्थक निपात

- उपमार्थक निपात है— इव, न, चित् और नु
- 'इव' निपात लौकिक संस्कृत एवं वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त होता है— उपमा अर्थ में
- 'इव' निपात का उदाहरण है— अग्निरिव (अग्नि के समान), इन्द्र इव (इन्द्र के समान)
- 'न' निपात लोक भाषा में होता है— निषेध अर्थ वाला
- वैदिक भाषा में 'न' निपात प्रयुक्त होता है— निषेध एवं उपमा दोनों अर्थ में
- 'नेन्द्रं देवममंसत' उदाहरण है— न निपात का (निषेधार्थक अर्थ में)
- जिसका निषेध किया जाता है, उसके पहले प्रयुक्त होता है— 'न' निपात
- उपमार्थक 'न' निपात का उदाहरण है— 'दुर्मदासो न सुरायाम्'
- उपमार्थक 'न' निपात प्रयुक्त होता है— जिससे उपमा दी जाती है उसके बाद
- यहाँ उपमान है— दुर्मदासः
- अनेक अर्थों वाला होता है— 'चित्' निपात
- 'चित्' निपात का प्रयोग किया जाता है— सम्मान अर्थ में
- सम्मान अर्थ में 'चित्' निपात का उदाहरण है— 'आचार्यश्चिदिदं ब्रूयात्'
- 'चित्' निपात प्रयुक्त होता है— उपमा अर्थ में
- उपमा के अर्थ में प्रयुक्त 'चित्' निपात का उदारहण है— दधिचित्
- निन्दा, घृणा, गर्हित और कुत्सित अर्थ में प्रयुक्त होता है— 'चित्' निपात
- निन्दा अर्थ में प्रयुक्त 'चित्' निपात का उदाहरण है— 'कुल्माषाः कुलेषु सीदन्ति'
- 'नु' निपात भी होता है— अनेकार्थक
- 'नु' निपात प्रयुक्त होता है— तीन अर्थों में

  1. हेत्वर्थ 2. अनुप्रश्नार्थक 3. उपमार्थक

- हेतु के अर्थ में प्रयुक्त 'नु' निपात का उदाहरण है—'इदं नु करिष्यति'
- अनुप्रश्नार्थक में प्रयुक्त 'नु' निपात का उदाहरण है—'कथं नु करिष्यति'
- उपमा में प्रयुक्त 'नु' निपात का उदाहरण है—'वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया:'[1]
- च, आ, वा, अह, ह, उ, हि, किल, मा, खलु, नूनम, शश्वत, सीम, त्व ये हैं— कर्मोपसंग्रहार्थक निपात
- समुच्चय अर्थ वाला निपात है— 'च'
- 'च' निपात है— समुच्चार्थक
- 'अहं च, त्वं च वृत्रहन्' यह उदाहरण है— 'च' निपात का
- 'आ' निपात का भी प्रयोग हुआ है— समुच्चय अर्थ में
- 'देवेभ्यश्च, पितृश्च आ इत्याकार:' यह उदाहरण है—'आ' निपात का
- 'वा' निपात प्रयुक्त होता है— विकल्प अर्थ में
- 'हन्ताहं पृथिवीमिमां निदधानीह वेह वा' यह उदाहरण है—'वा' निपात का
- समुच्चय अर्थ में प्रयुक्त होता है—'वा' निपात
- 'वायुर्वा त्वा, मनुर्वा त्वा' यह उदाहरण है—'वा' निपात का
- विलग होने, अर्थ वाले पूर्ववर्ती अर्थ से संयुक्त होते हैं—'अह' और 'ह' निपात
- 'उ' निपात प्रयुक्त होता है— विलग अर्थ में
- दो अर्थों में से उत्तरवर्ती अर्थ के साथ संयुक्त होता है—'उ' निपात
- दो अर्थों में से पूर्ववर्ती अर्थ के साथ संयुक्त होता है—'अह', 'ह' निपात
- 'मृषा इमे वदन्ति, सत्यमु ते वदन्ति' यह उदाहरण है—'उ' निपात का
- छन्दों के पादों की पूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है—'उ' निपात
- यास्क ने 'हि' निपात का प्रयोग बतलाया है—तीन अर्थों में, 1. हेतु कथन 2. अनुपृष्ट 3. ईर्ष्या

1. ऋ. 6-24.3

- ज्ञान की उत्कृष्टता (निश्चय) के अर्थ में प्रयुक्त होता है— 'किल' निपात
- 'किल' निपात अनुप्रश्न अर्थ में संयुक्त रहता है—'न तथा ननु' से
- यदि 'किल' से पहले 'न' अथवा ननु संयुक्त हो तो उसका अर्थ होता है— 'अनुप्रश्न'
- 'मा' निपात प्रयुक्त होता है— निषेध अर्थ में
- 'मा कार्षी:' एवं 'मा हार्षी:' यह उदाहरण है— 'मा' निपात का
- 'खलु' निपात प्रयुक्त होता है— प्रतिषेध अर्थ में
- 'खलु कृत्वा, खलु कृतम्' ये उदाहरण हैं— 'खलु' निपात के
- पादपूर्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है— 'खलु' निपात
- 'विचिकित्सार्थीयो भाषायाम्' यह उदाहरण है— 'शश्वत' निपात का
- 'शश्वत' निपात लोकभाषा में प्रयुक्त होता है—संशय अर्थ में
- 'शश्वत' निपात प्रयुक्त होता है— अनुप्रश्न अर्थ में
- पूछने के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है— 'शश्वत' निपात
- 'नूनम्' निपात लोकभाषा में है— सन्देह अर्थ वाला
- 'नूनम्' निपात वैदिक भाषा में प्रयुक्त होता है—सन्देह अर्थ में एवं पादपूरक अर्थ में
- 'सीम' निपात होता है—परिग्रह (परित:) अर्थवाला
- 'प्रास्तजदिति वा। प्रासृजत्सर्वत इति वा' उदाहरण है—सीम निपात का
- 'प्रसीमादित्यो असृजत्' यह उदाहरण है—'सीम' निपात का
- पृथक्करण अर्थ वाला सर्वनाम है—'त्व:' निपात
- यास्क ने 'त्व' को माना है— नाम
- वेद मन्त्रों में पादों की पूर्ति हेतु प्रयुक्त होते हैं— पादपूरक निपात
- कम, इम, उत् और उ निपात हैं— पादपूरक
- शाकटायन चार पदसमूहों में 'नाम' को मानते हैं— आख्यतज
- गार्ग्य के अनुसार नाम हैं—तीन
  1. प्रत्यक्षक्रिय 2. प्रकल्प्यक्रिय 3. अविधमक्रिय

- शाकटायनानुसार सभी प्रातिपदिक निष्पन्न होते हैं— धातुओं से
- यास्क ने सभी नाम पदों को माना है— धातुज
- वेदों के मन्त्रों का अर्थज्ञान करना प्रमुख उद्देश्य है— निरुक्त का
- देवता का ज्ञान कराना उद्देश्य है— निरुक्त का
- पदविभाग कराना उद्देश्य है— निरुक्त का
- शब्दों का अर्थबोध कराना उद्देश्य है— निरुक्त का
- व्याकरण का ज्ञान कराना उद्देश्य है— निरुक्त का
- मन्त्रों को अनर्थक मानते हैं— कौत्स
- निरुक्त में निर्वचन के सिद्धान्त हैं— 5
- नैघण्टुक-काण्ड में पृथिवी वाचक नाम हैं— 21
- क्रिया के विकार होते हैं— 6
- क्रिया के 6 विकारों को कहा जाता है— षड्भावविकार
- किसी भी वस्तु के 6 क्रिया विकार होते हैं, यह मत है— वार्ष्यायणि का
- जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्द्धते, अपक्षीयते, विनश्यति ये हैं— षड्भावविकार
- 'पूर्वभावस्यादिमाचष्टे, नापरभावमाचष्टे, न प्रतिषेधति' यह है— जायते
- पहली क्रिया के प्रारम्भमात्र को बतलाती है— जायते
- परवर्ती दूसरी क्रिया को नहीं बतलाती है— जायते
- 'अस्तीत्युत्पन्नस्य सत्त्वस्यावधारणम्' यह है— अस्ति
- उत्पन्न हुई वस्तु की निश्चयात्मक स्थिति को कहती है— अस्ति
- 'वस्तु के परिवर्तन का कथन करती है'— विपरिणमते
- 'प्रच्यवमानस्य तत्त्वाद्विकारम्' यह है— विपरिणमते
- वृद्धि को प्राप्त करता है— वर्द्धते
- अपने अंगों की वृद्धि को कहता है— वर्द्धते
- 'स्वाङ्गाभ्युच्चयं सांयोगिकानां वाऽर्थानाम्' यह है— वर्द्धते

- वृद्धि प्राप्त करने की क्रिया होती है— दो प्रकार की,
  1. स्वाङ्गाभ्युच्चय
  2. सांयोगिकार्थाभ्युच्चय
- वर्द्धते का ठीक विपरीत है— अपक्षीयते
- 'व्याख्यातः प्रतिलोमम्' यह है— अपक्षीयते
- अपक्षय की क्रिया होती है— दो प्रकार की
  1. स्वाङ्गापक्षय
  2. सांयोगिकापक्षय
- अपक्षीयते का अर्थ है— क्षीण होना
- 'परभावस्यादिमाचष्टे, न पूर्वभावमाचष्टे, न प्रतिषेधति' यह है— विनश्यति
- अन्तिम क्रिया के प्रारम्भमात्र को कहती है— विनश्यति
- यास्क मत में किसके बिना पद-विभाग नहीं होता है?— निरुक्त के
- निर्वचन सिद्धान्त है— वर्ण विपर्ययः
- निर्वचन सिद्धान्त है— वर्णागमः
- निर्वचन सिद्धान्त है— वर्णलोपः

✦✦✦

निर्वचन

1. आचार्यः—
- आचार्यः आचारं ग्राह्यति।
- आचिनोति बुद्धिमिति।
- आचिनोत्यर्थान।

2. वीरः—
- वीरो वीरयत्यमित्रान्
- वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणः।
- वीरयतेर्वा।

3. ह्रदः—
- ह्रदो ह्रादतेः शब्दकर्मणः।
- ह्रदतेर्वा स्यात् शीतिभावकर्मणः।

4. गौः—
- यद्दूरं गता भवति।
- यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति।
- गातेर्वोकारो नामकरणः।

5. समुद्रः
- समुद्रवन्त्यस्मादापः।
- समाभिद्रवन्त्येनमापः।
- सम्मोदन्तेऽस्मिन् भूतानि।
- समुद्रको भवति।
- समुन्नतीति वा।

6. वृत्रः—
- वृत्रो वृणोतेः वा।
- वर्ततेः वा।
- वर्धतेः वा।

7. आदित्यः—
- आदत्ते रसान्
- आदत्ते भासं ज्योतिषाम्।
- आदीप्तो भासेति वा।
- ☞ अदितेः पुत्रः इति वा।

8. उषस्—
- उच्छतीति।
- रात्रेरपरः कालः।

9. मेघः—
- मेहतीति सतः।

10. वाक्—
- वाक्तीति वाक्

11. उदक्—
- उन्नतीति सतः

12. नदी—
- नदना इमा भवन्ति शब्दवत्यः

13. अश्वः—
- अश्नुतेऽध्वानम्।
- महाशनो भवतीति वा।

14. अग्निः—
- अग्रणी भवति।
- अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते।
- अङ्गं नयति सन्नमानः।
- अक्नोपन भवति ।

15. जातवेदस्—
- जातानि वेदः।
- जातानि वैनं विदुः।
- जाते जाते विधते इति वा।
- जातवित्तो वा जातधनः।
- जातविद्यो वा जातप्रज्ञानः।

16. वैश्वानरः—
- विश्वान् नरान् नयति।
- विश्वे एनं नरा नयन्तीति वा।

अपि वा वैश्वानर एव स्यात्।

17. निघण्टु—
- ते निगन्तव एव सन्तो निगमनान्निघण्टवः उच्यन्ते इत्यौपमन्यवः।
- अपि वाऽऽहननादेव स्युः समाहृता भवन्ति।
- यद्वा समाहृता भवन्ति।



खण्ड-4

महाभाष्य (पस्पशाह्निक)

- व्याकरण महाभाष्य के प्रणेता हैं– महर्षि पतञ्जलि
- महाभाष्य में आह्निकों की संख्या है– 84
- जो एक दिन में पढ़ा जाए उसे कहते हैं– आह्निक
- 'अह्ना निर्वृत्तम' यह है– आह्निक
- अथेत्ययं में 'अथ' शब्द है– प्रारम्भार्थक
- महाभाष्य में प्रथम वाक्य क्या है?– अथ शब्दानुशासनम्
- 'अथ शब्दानुशासनम्' इसमें 'अथ' शब्द का अर्थ है– अधिकार
- 'पस्पशा' शब्द का अर्थ है– प्रस्तावना
- 'शब्दानुशासन का क्या नाम है? पदशास्त्र
- शब्दानुशासनम् में किस सूत्र से षष्ठी प्राप्त है?– 'कर्तृकर्मणोःकृति'
- व्याकरण से किस शब्द का अनुशासन किया जाता है?– लौकिक और वैदिक दोनों का
- भाष्यकार ने सर्वप्रथम किस शब्द का अनुशासन किया है?– लौकिक का
- 'येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः' भाष्यकार के अनुसार यह है– शब्द
- लोक व्यवहार में शब्द कहा जाता है– ध्वनि को (प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः)
- 'व्याकरणशास्त्र' का अपर नाम है– शब्दानुशासन
- शब्दानुशासन के प्रयोजन हैं– पाँच
  1. रक्षा 2. ऊह 3. आगम 4. लघु 5. असन्देह
- 'रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः' यह व्याकरणशास्त्र का है– प्रयोजन
- 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' यह है– प्रथम प्रयोजन (रक्षा)
- 'लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्' यह है– चतुर्थ प्रयोजन (लघु)
- 'असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्' यह है– पञ्चम प्रयोजन (असन्देह)
- भाष्यकारानुसार वैयाकरण किस प्रकार वेद की रक्षा करता है?– 'लोपागमवर्णविकार के ज्ञान से'
- लोपागमवर्णविकार का उदाहरण है– 'देवा अदुह्'
- शब्दानुशासन के कितने आनुषङ्गिग प्रयोजन हैं?– 13
- छः अंगों में प्रधान है– व्याकरण
- शब्दानुशासन में किसके कारण पहले शब्दोपदेश करना चाहिए?– लघुता के (लघुत्वाच्छब्दोपदेशः)
- 'शब्दोपदेश' है– लघु
- 'अपशब्दोपदेश' है– गरीयान् (विशाल) (गरीयानपशब्दोपदेशः)
- कितने प्रकार से विद्या उपयुक्त होती है?– चार
- शब्दों को प्रतिपादित करने का सामान्य और विशेष लक्षण है– उत्सर्ग और अपवाद (उत्सर्गापवादौ)
- उत्सर्ग का कथन होता है– सामान्य रूप से (सामान्योत्सर्गः)
- अपवाद का कथन होता है– विशेषरूप से (विशेषोपवादः)
- 'उत्सर्ग' का उदाहरण है– 'कर्मण्यण्'
- 'अपवाद' का उदाहरण है– 'आतोऽनुपसर्गे कः'
- व्याकरण महाभाष्य का प्रथम वार्तिक है– 'सिद्धे शब्दार्थ सम्बन्धे'
- भाष्यकार के अनुसार यजुर्वेद की शाखा है– 101 (एकशतमध्वर्युशाखाः)
- भाष्यकार के अनुसार सामवेद की शाखा है– 1000 (सहस्रवर्त्मा सामवेदः)
- भाष्यकार के अनुसार अथर्ववेद की शाखा है– 9 (नवधाऽऽथर्वणो वेदः)
- वाकोवाक्य कहते हैं– प्रश्नोत्तर ग्रन्थ को

- व्याकरण शास्त्र में म्लेच्छ नाम है— अपशब्द का
- व्याकरण शास्त्र के प्रथम प्रवक्ता हैं— ब्रह्मा
- 'लक्ष्य लक्षणे व्याकरणम्' यह है— व्याकरण
- भाष्यकार के अनुसार उपदेश किया गया है— वर्णों का
- वर्णों का उपदेश किया गया है— वृत्तिसमवायार्थ
- 'वृत्ति' का अर्थ है— शास्त्रप्रवृत्ति
- 'उपदेश' कौन है?— आद्य उच्चारण
- साधु शब्द प्रयोग के परिणामों में परिगणित होता है— अर्थज्ञान, अशुभफलनिवृति, म्लेच्छता निवारण, मूर्खतानिवारण, धर्मलाभ, नामकरण



व्याकरण

परिभाषा/सञ्ज्ञा

- 'वृद्धिरादैच्' यह है— वृद्धिसंज्ञा सूत्र
- 'अदेङ्गुणः' यह है— गुणसंज्ञा सूत्र
- 'परः सन्निकर्ष संहिता' यह है— संहितासंज्ञा सूत्र
- 'सुप्तिङन्तं पदम्' यह है— पदसंज्ञा सूत्र
- 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' यह है— उपधासंज्ञा सूत्र
- यू स्त्र्याख्यौ नदी' यह है— नदीसंज्ञा सूत्र
- 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' यह है— प्रातिपदिकसंज्ञा सूत्र
- 'शेषो ध्यसखि' यह है— घिसंज्ञा सूत्र
- 'हलोऽनन्तराः संयोगः' यह है— संयोगसंज्ञा सूत्र
- 'अपृक्तम् एकाल् प्रत्ययः' यह है— अपृक्तसंज्ञा सूत्र
- 'अचोऽन्त्यादि टि' यह है —टिसंज्ञा सूत्र
- 'सर्वादीनि सर्वनामानि' यह है— सर्वनामसंज्ञा सूत्र
- 'क्तक्तवतू निष्ठा' यह है— निष्ठासंज्ञा सूत्र
- 'तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्' यह है— सर्वणसंज्ञा सूत्र
- 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' यह है— प्रगृह्यसंज्ञा सूत्र
- 'न वेति विभाषा' यह है— विभाषासंज्ञा सूत्र
- 'ई ऊ नित्यस्त्रीलिङ्गम्' यह है— नदी संज्ञक
- 'वधू और नदी पद में संज्ञा' है— नदीसंज्ञा सूत्र



सिद्धान्तकौमुदी

तिङन्त (भू एवं एध् धातु मात्र)

भू धातु

- 'भू' धातु होती है— सत्ता अर्थ में (भू सत्तायाम्)
- परस्मैपद विधान करने वाला सूत्र है— 'शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्'
- 'सार्वधातुक संज्ञा विधान करता है— तिङ्शित् सार्वधातुकम्'
- 'तिङ्' और 'शित्' की संज्ञा होती है— सार्वधातुक
- 'शप्' प्रत्यय का विधान करता है— 'कर्त्तरि शप्'
- 'कर्ता' अर्थ में और सार्वधातुक में विधान किया जाता है— 'शप् प्रत्यय' का
- 'शप्' प्रत्यय में शेष बचता है— 'अ'
- 'भव+मि' इस अवस्था में दीर्घ होता है— 'अतो दीर्घो यञि' से
- परोक्षभूत अर्थ में होता है— लिट्लकार
- लिट् लकार में 'भू+अ' इस अवस्था में आगम होता है— 'वुक्' का
- 'वुगागम' होता है— लुङ् और लिट् लकार में
- 'वुक्' में शेष बचता है— 'व'
- 'भुवो वुग् लुङ् लिटोः' से आगम होता है— 'वुक्' का
- 'अभ्यास' संज्ञा विधायक सूत्र है— 'पूर्वोभ्यासः'
- लिट् लकार में आर्ध धातुक संज्ञा विधान करने वाला सूत्र है— 'लिट् च'
- आर्धधातुक संज्ञा विधायक सूत्र हैं— 'आर्धधातुक शेषः'
- विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अभीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना इन अर्थों में होता है— लोट् एवं लिङ् लकार
- 'आशिष्' अर्थ में होता है— लिङ्लकार
- 'लुङ्' लकार होता है— भूतकाल में

एध् धातु

- 'एध्' धातु होता है— वृद्ध्यर्थ में (एध् वृद्धौ)
- 'एध्' धातु है— आत्मनेपदी
- 'एध्' धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में रूप होता है— एधसे
- 'एध्' धातु लट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में रूप होता है— एधध्वे
- 'एध्' धातु लिट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में रूप होता है— एधाञ्चकृढ्वे
- 'एध्' धातु लुट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में रूप होता है— एधिताहे
- 'एध्' धातु लोट् लकार तीनों वचनों में क्रमशः रूप होता है— एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्
- 'एध्' धातु लोट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में रूप होता है— 'एधै'
- 'एध्' धातु लिङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप होता है— एधेरन्
- 'सीयुट्' का आगम होता है— लिङ् लकार में

कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया मात्र)

- कृत्प्रत्यय होती है— 'धातु' से
- 'वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्' यह किस तरह का सूत्र है?— परिभाषा
- कृत्यसंज्ञा सूत्र है— 'कृत्याः'
- कृत्य प्रत्यय होते हैं— सात
  1. तव्यत् 2. तव्य 3. अनीयर् 4. केलिमर्
  5. यत् 6. क्यप् 7. ण्यत्
- 'पोरदुपधात्' से होता है— 'यत्' प्रत्यय
- कृत्य प्रत्यय होते हैं— भाव एवं कर्म में

शब्द	धातु	प्रत्यय
एधितव्यम्	एध्	तव्यत्
एधनीयम्	एध्	अनीयर्
चेतव्यः	चि	तव्य
चयनीयः	चि	अनीयर्
पाच्	केलिमर्	
भिदेलिमाः	भिद्	केलिमर्
स्नानीयं चूर्णम्	स्ना	अनीयर्
दानीयः विप्रः	दा	अनीयर्
चेयम्	चि	यत्
देयम्	दा	यत्
ग्लेयम्	ग्लै	यत्
शप्यम्	शप्	यत्
लभ्यम्	लभ्	यत्
इत्यः	इण्	क्यप्
स्तुत्यः	स्तुञ्	क्यप्
शिष्यः	शास्	क्यप्
वृत्यः	वृ	क्यप्
आदृत्यः	आदृ	क्यप्
जुष्यः	जुष्	क्यप्
मृज्यः	मृज्	क्यप्
कार्यम्	कृ	ण्यत्
हार्यम्	हृ	ण्यत्
धार्यम्	धृ	ण्यत्
मार्ग्यः	मृज्	ण्यत्
तक्यम्	तक्	यत्

शस्यम्	शस्	यत्
जन्यः	जन्	यत्
घात्य	हन्	ण्यत्
अर्यः	ऋ	यत्
आर्यः	ऋ	ण्यत्
वाच्यम्	वच्	ण्यत्
लाव्यम्	लव्	ण्यत्
भव्यः	भू	यत्
गेयः	गै	यत्
वास्तव्यः	वस्	तव्यत्
प्रवचनीयः	प्रवच्	अनीयर्

✦✦✦

तद्धित प्रकरण (मत्वर्थीय)

- 'सङ्ख्याया गुणस्य निमाने मयट्' सूत्र से 'मयट्' प्रत्यय होता है—'षष्ठ्यर्थ' में
- 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' सूत्र से 'मट्' प्रत्यय होता है—पूरण अर्थ में
- 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' सूत्र का उदाहरण है—'पञ्चमः'
- 'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः' सूत्र से 'ड' प्रत्यय होता है—अधिक अर्थ में
- 'तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः' सूत्र का उदाहरण है—'एकादशम्'
- 'तस्य पूरणे डट्' सूत्र से 'डट्' प्रत्यय का विधान होता है—'पूरणअर्थ में'
- 'नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च' सूत्र में 'पूणरण' अर्थ में होता है—'तमट्' प्रत्यय
- 'नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च' सूत्र का उदाहरण है—'शततमः मासतम' आदि
- वैमुक्त, दैवासुरः में 'अण्' प्रत्यय हुआ है—'विमुक्तादिभ्योऽण्' सूत्र से
- 'गोषदादिभ्यो वुन्' सूत्र का उदाहरण है—'गोषदकः'
- 'आकर्षादिभ्यः कन्' सूत्र से 'कन्' प्रत्यय होता है—कुशल अर्थ में
- 'आकर्षादिभ्यः कन्' सूत्र का उदाहरण है—आकर्षकः
- 'धनहिरण्यात्कामे' सूत्र से 'कन्' प्रत्यय होता है—इच्छा अर्थ में
- उदराट्ठगाद्यूने' सूत्र से 'ठक्' प्रत्यय होता है—प्रसक्त अर्थ में
- 'स एषां ग्रामणी' सूत्र से षष्ठ्यर्थ में होता है—कन् प्रत्यय
- 'स एषां ग्रामणी' सूत्र का उदाहरण है—देवदत्तकाः
- 'सपूर्वाच्च' सूत्र से प्रत्यय होता है—'इनि'
- 'सपूर्वाच्च' सूत्र का. उदाहरण है—कृतपूर्वी

- 'इष्टादिभ्यश्च' सूत्र से विधान होता है—'इनि' प्रत्यय का
- 'इष्टादिभ्यश्च' सूत्र का उदाहरण है—इष्टी, अधीती
- 'साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम्' सूत्र से प्रत्यय होता है—'इनि'
- 'साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम्' सूत्र का उदाहरण है—साक्षी
- इन्द्रिय में 'घच्' प्रत्यय हुआ है—इन्द्र शब्द से
- इन्द्र का अर्थ है—आत्मा
- 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' सूत्र से तत् (अस्य अस्ति) इसका है, इसमें है, इन अर्थों में प्रत्यय होता है—मतुप्
- 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' सूत्र का उदाहरण है—गोमान्
- 'रसादिभ्यश्च' सूत्र से होता है—मतुप् प्रत्यय
- 'रसादिभ्यश्च' सूत्र का उदाहरण है—रसवान्, रूपवान्
- 'विदुष्मान्' में है—मतुप् प्रत्यय
- किंवान्, विद्यावान्, ज्ञानवान्, लक्ष्मीवान्, भूमिवान् में प्रत्यय हैं—मतुप्
- 'प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्यां' सूत्र से प्राणिवाची प्रातिपदिको में मत्वर्थ में विकल्प से होता है—लच् प्रत्यय
- 'प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्यां' सूत्र का उदाहरण है—चुडालः
- 'वत्सांसाभ्यां कामबले' सूत्र से मत्वर्थ में होता है—'लच्' प्रत्यय
- 'वत्सांसाभ्यां कामबले' सूत्र का उदाहरण है—वत्सलः
- 'लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः' सूत्र से 'शः' प्रत्यय होता है—(यथा—लोमशः)
- 'अङ्ग' शब्द से कल्याण अर्थ में होता है—'न' प्रत्यय (यथा—अङ्गना)
- लक्ष्मी शब्द से होता है—'न' प्रत्यय (यथा—लक्ष्मणः)
- प्राज्ञः, श्राद्धः, आर्चः इन उदाहरणों में है—'ण' प्रत्यय
- तपस्वी, सहस्री इन उदाहरणों में है—'विनि' और 'इनि' प्रत्यय
- 'सिकताशर्कराभ्यां च' सूत्र से होता है—'अण' प्रत्यय
- 'सिकताशर्कराभ्यां च' सूत्र का उदाहरण है—सैकतः, शार्करः

- 'दन्तुर' में है—'उरच्' प्रत्यय
- ऊषर: सुषिर:, मुष्कर:, मधुकर: इन उदाहरणों में है—'र' प्रत्यय
- 'द्युद्रुभ्यां म:' सूत्र से होता है—'म:' प्रत्यय
- 'द्युद्रुभ्यां म:' सूत्र का उदाहरण है—द्युम:, द्रुम:
- अर्णव:, गाण्डिव: में प्रत्यय होता है—'व:'
- 'काण्डीर:' में होता है—ईरन् प्रत्यय
- 'आण्डीर:' में होता है—ईरच् प्रत्यय
- रजस्वला, कृषीवल:, आसतीवल:, परिषद्वल: पर्षदवल: में प्रत्यय है—'वलच्
- 'दण्डी' में प्रत्यय है—'इनि'
- 'दण्डिक:' में प्रत्यय है—'ठन्'
- 'एकगोपूर्वाट्ठञ्नित्यम्' सूत्र से होता है—ठञ्
- यशस्वी, मायावी में प्रत्यय है—'विनि'
- 'आलजाटचौ बहुभाषिणि' से होता है—'आलच्' और 'आटच्' प्रत्यय
- 'स्वामिन्नैश्वर्ये' सूत्र से मत्वर्थ में प्रत्यय होता है—आमिनच् (उदाहरण-स्वामी)
- 'अर्शआदिभ्योऽच्' सूत्र से होता है—'अच्' प्रत्यय

+++

कारक

- 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' यह है—कारक
- जिसके साथ क्रिया अन्वित हो, वह है—कारक
- 'व्यापाराश्रय:कर्त्ता' यह है—कर्त्ता
- जो व्यापार का आश्रय होता है, वह है—कर्त्ता
- विभक्ति के भेद हैं—दो
  1. कारक विभक्ति 2. उपपद विभक्ति
- कारक विभक्ति के प्रकार हैं—सात
- 'कारके' सूत्र के अधिकार में की जाने वाली विभक्ति है—कारक विभक्ति
- किसी विशेष पद के आ जाने से जिस विभक्ति की उत्पत्ति होती है, वह है—उपपद विभक्ति
- 'गुरवे नम:' यह उदाहरण है—उपपद विभक्ति का
- कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति दोनों के एक स्थान पर उपस्थित होने पर कौन सी विभक्ति होती है?—कारक विभक्ति
- कारक के भेद हैं—6
- 'कर्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च।
  अपादानाधिकरणे इत्याहु: कारकाणि षट्।।' ये हैं—कारक के भेद
- क्रिया का संपादक है—कर्ता
- क्रिया का फल जिस पर पड़ता है, वह है—कर्म
- क्रिया का सम्पादन जिसकी सहायता से हो, वह है—करण
- क्रिया जिसके लिए हो, वह है—सम्प्रदान
- क्रिया जिससे दूर हो, वह है—अपादान
- क्रिया जिस स्थान पर हो, वह है—अधिकरण
- 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' यह सूत्र है—प्रथमा विभक्ति का
- प्रातिपदिकार्थ का अर्थ है—शब्द का मुख्य अर्थ

- 'प्रातिपदिकार्थः' कहते हैं—'नियतोपस्थिति' को
- जिस प्रातिपदिक (शब्द) के उच्चारण करने से जिस अर्थ की नियम से उपस्थिति हुआ करती है, वह है—प्रातिपदिकार्थ
- ('यस्मिन् प्रातिपदिके उच्चरिते यस्यार्थस्य नियमेनोपस्थितिः, सोऽत्र प्रातिपदिकार्थो विवक्षितः।')
- 'प्रातिपदिकार्थ' है—नियत उपस्थित होने वाला अर्थ (नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः)
- 'द्रोण' है—परिमाण
- कारक के अन्तर्गत गणना नहीं की गयी है—सम्बन्ध कारक की
- 'अलिङ्गा नियतनिङ्गाश्च' यह है—प्रातिपदिकार्थ का उदाहरण
- अलिङ्ग का तात्पर्य है—अव्यय से
- 'उच्चैः, नीचैः, श्रीः, कृष्णः, ज्ञानम्' यह उदाहरण है—प्रातिपदिकार्थ मात्र का
- 'तटः तटी तटम्' यह उदाहरण है—लिङ्गमात्र का
- 'प्रस्थो ब्रीहिः' यह उदाहरण है—परिमाणमात्र का
- 'एकः द्वौ बहवः' यह उदाहरण है—वचनमात्र का
- 'सम्बोधने च' इस सूत्र से किस विभक्ति का विधान होता है?—प्रथमाविभक्ति का
- व्याकरणशास्त्र में कितने प्रकार के सूत्र माने गए हैं?—6
  1. संज्ञा 2. परिभाषा 3. विधि 4. नियम,
  5. अतिदेश 6. अधिकार
- 'संज्ञासंज्ञि सम्बन्धबोधकं सूत्रम्' यह सूत्र है—संज्ञा सूत्र
- 'अनियमे नियमकारिणी' यह सूत्र है—परिभाषा सूत्र
- 'आगमादेशादि विधायकं' यह है—विधिसूत्र
- 'सिद्धे सत्यारम्भमाणोविधिः' यह है—नियमसूत्र
- 'अविद्यमानस्य धर्मस्य विद्यमानत्वकल्पनम्' यह है—अतिदेशसूत्र
- 'स्वदेशे फलशून्यत्वे सति उत्तरत्र फलजनकत्वम्' यह है—अधिकार सूत्र

- 'कारके' यह सूत्र है—अधिकार सूत्र
- कर्मकारक विधायक सूत्र हैं—कर्तुरीप्सिततमं कर्म
- कर्ता को जो सबसे ज्यादा इष्टतम हो, उसमें होता है—कर्मकारक
- 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र का उदाहरण है—'माषेष्वश्वं बध्नाति'
- 'पयसा ओदनं भुङ्क्ते' इसकी किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है? 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' से
- 'फलव्यधिकरणव्यापारवाचकत्वं सकर्मकत्वम्' यह है—सकर्मक धातु
- 'फलसमानाधिकरणव्यापारवाचकत्वम् अकर्मकत्वम्' यह है—अकर्मक धातु
- 'अनभिहिते' यह सूत्र है—अधिकारसूत्र
- अनुक्त कर्म में विभक्ति होती है—द्वितीया
- तिङ्, कृत्, तद्धित और समास के द्वारा जिसका अभिधान होता है, उसमें होती है—प्रथमा विभक्ति
- अनीप्सित कारक की होती है—कर्मसंज्ञा
- 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' इस सूत्र से विधान होता है—कर्मकारक का
- द्वितीया विभक्ति विधायक सूत्र है—कर्मणि द्वितीया
- कर्मवाच्य में कर्म होता है—उक्त
- कर्तृवाच्य में कर्म होता है—अनुक्त
- उक्त कर्म में विभक्ति होती है—प्रथमा (यथा—हरिः सेव्यते, लक्ष्म्या हरिः सेवितः)
- 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति' यह किस सूत्र का उदाहरण है—तथायुक्तं चानीप्सितम् का
- 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' यह उदाहरण है—'तथायुक्त चानीप्सितम्'
- अपादानादि से अविवक्षित कारक की होती है—कर्मसंज्ञा
- (अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्)
- अपादानादि से अविवक्षित कारक की कर्म संज्ञा होती है—'अकथितं च' सूत्र से

- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छि, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ् मुष्, नी, हृ, कृष् तथा वह् इन 16 धातुओं का जिसके साथ सम्बन्ध होता है, उनकी होती है—कर्मसंज्ञा
- समस्त अकथित धातुओं की होती है—कर्मसंज्ञा तथा द्वितीया विभक्ति
- 'बलिं याचते वसुधाम्' इस वाक्य में 'बलिं' पद की किस सूत्र से कर्मसंज्ञा होती है?—अकथितं च' से
- 'अकथितं च' किस तरह का सूत्र है?—संज्ञासूत्र
- 'गां दोग्धि पयः' इसमें 'गां' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'तण्डुलान् ओदनं पचति' इसमें 'तण्डुलान्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'गर्गान् शतं दण्डयति' इसमें 'गर्गान्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'वज्रं अवरुणद्धि गाम्' इसमें 'वज्रं' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'माणवकं पन्थानं पृच्छति' इसमें 'माणवकं' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'वृक्षमवचिनोति फलानि' इसमें 'वृक्षम्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'माणवकं धर्मं ब्रूते' इसमें 'माणवकं' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'शतं जयति देवदत्तम्' इसमें 'देवदत्तम्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति' इसमें 'सुधां' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'देवदत्तं शतं मुष्णाति' इसमें 'देवदत्तम्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से

- 'ग्रामम् अजां नयति' इसमें 'ग्रामम्' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'ग्रामम् अजां कर्षति' इसमें 'कर्षति' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'ग्रामम् अजां वहति' इसमें 'वहति' पद की किस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है?—'अकथितं च' से
- 'शीङ् स्था', तथा 'आस्' धातुओं के पूर्व यदि अधि उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं का आधार कहलाता है—कर्म
- 'अधि' उपसर्ग पूर्वक 'शीङ्,' स्था और आस् धातुओं की कर्मसंज्ञा किस सूत्र से होती है?—'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र से
- 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' सूत्र का उदाहरण है—अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वैकुण्ठं हरिः।
- 'अभिनिविशश्च' सूत्र से 'विश्' का आधार होता है—कर्मकारक
- 'सन्मार्गम् अभिनिविशते' यह उदाहरण है—'अभिनिविशश्च' सूत्र का
- यदि 'वस्' धातु के पूर्व 'उप', 'अनु', 'अधि' और 'आ' में से कोई उपसर्ग लगा हो, तो क्रिया का आधार होता है—कर्मकारक (उपान्वध्याङ्वसः)
- 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र का उदाहरण है—हरिः वैकुण्ठम् उपवसति
- 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र का उदाहरण है—हरिः वैकुण्ठम् अनुवसति
- 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र का उदाहरण है—हरिः वैकुण्ठम् अधिवसति
- 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र का उदाहरण है—हरिः वैकुण्ठम् आवसति
- उभयः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अध्यधि शब्दों का जिससे संयोग होता है, उसमें होती है—द्वितीया विभक्ति
- 'सर्वतः' इस पद के योग में विभक्ति होती है—द्वितीया (यथा—सर्वतः कृष्णं गोपाः)
- 'अभितः परितः समयानिकषाहाप्रति' इनके योग में होती है—द्वितीया विभक्ति (यथा—अभितः कृष्णं गोपाः)

➢ 'अन्तरा' और 'अन्तरेण' शब्दों के योग में होती है— द्वितीया विभक्ति (अन्तराऽन्तरेण युक्ते द्वितीया)
➢ 'अन्तराऽन्तरेणयुक्ते' सूत्र का उदाहरण है—'अन्तरा त्वां मां हरिः'
➢ 'अन्तराऽन्तरेणयुक्ते' सूत्र का उदाहरण है—अन्तरेण हरिं न सुखम्'
➢ 'कर्मप्रवचनीयाः' यह सूत्र है— अधिकार सूत्र वा संज्ञासूत्र
➢ कर्मप्रवचनीय संज्ञा में विभक्ति होती है— द्वितीया
➢ 'अनु' शब्द का लक्षण द्योतित हो रहा हो, तो वहाँ हो जाती है— कर्मप्रवचनीय संज्ञा एवं द्वितीयाविभक्ति (अनुर्लक्षणे)
➢ 'जपम् अनुप्रावर्षत्' यह उदाहरण है—'अनुर्लक्षणे' का
➢ जब 'अनु' से तृतीया का अर्थ द्योतित हो, तब उसकी होती है— कर्मप्रवचनीय संज्ञा एवं द्वितीया विभक्ति (तृतीयार्थे)
➢ 'नदीम् अनु अवसिता सेना' यह उदाहरण है—'तृतीयार्थे' का
➢ 'अनु' से जब 'हीन' अर्थ द्योतित हो, तब वहाँ होती है— कर्मप्रवचनीय संज्ञा और द्वितीया विभक्ति (हीन)
➢ 'अनु हरिं सुराः' यह उदाहरण है—'हीने' का
➢ 'प्रति', 'परि', 'अनु' इसकी 'लक्षण' इत्थम्भूता-ख्यान, भाग और वीप्सा' इन अर्थों के प्रतीत होने पर होती है— कर्मप्रवचनीय संज्ञा और द्वितीयाविभक्ति (लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः)
➢ 'वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्' यह उदाहरण है—'लक्षणे' का
➢ 'भक्तो विष्णुं प्रतिपर्यनु वा' यह उदाहरण है—'इत्थम्भूताख्यान' का
➢ 'लक्ष्मीः हरिं प्रति' यह उदाहरण है—'भाग' का
➢ वृक्षं प्रति सिञ्चति' यह उदाहरण है—'वीप्सा' का
➢ 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' इसमें होती है— द्वितीया विभक्ति
➢ 'मासं कल्याणी' और 'मासम् अधीते' यह उदाहरण है— 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' का
➢ 'कर्त्ता' और 'करण' में विभक्ति होती है— तृतीया (कर्तृकरणयोस्तृतीया)

➢ कर्त्ता-कारक विधायक सूत्र है— स्वतन्त्रः कर्त्ता
➢ करणकारक संज्ञा विधायक सूत्र है—'साधकतमं करणम्'
➢ करणकारक में विभक्ति होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ कर्तृसंज्ञासूत्र है— स्वतन्त्रःकर्त्ता
➢ अनभिहित कर्त्ता और करण में विभक्ति होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ 'रामेण बाणेन हतो बाली' इसमें करण कारक है— बाण
➢ 'रामेण बाणेन हतो बाली' में तृतीया विभक्ति का विधान करने वाला सूत्र है— कर्तृकरणयोस्तृतीया
➢ प्रकृति आदि (स्वाभावादि) शब्दों के योग में होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ 'प्रकृत्या चारुः' यह उदाहरण है—'प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्' का
➢ फलप्राप्ति का नाम है— अपवर्ग
➢ 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ 'येनाङ्गविकारः' का उदाहरण है—'अक्ष्णा काणः'
➢ 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ सह के योग से अप्रधान में होती है— तृतीयाविभक्ति
➢ 'पुत्रेण सहागतः पिता' यह उदाहरण है—'सहयुक्तेऽप्रधाने' का
➢ 'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र से होती है— तृतीया विभक्ति
➢ 'जटाभिस्तापसः' यह उदाहरण है—'इत्थम्भूतलक्षणे' सूत्र का
➢ 'हेतौ' से तृतीया विभक्ति होती है— हेतु के अर्थ में
➢ 'दण्डेन घटः' तथा 'पुण्येन दृष्टो हरिः' यह उदाहरण है—'हेतौ' सूत्र का
➢ सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र है—'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'
➢ सम्प्रदान में होती है— चतुर्थी विभक्ति
➢ सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है—'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से
➢ चतुर्थी विभक्ति विधायक सूत्र है—'चतुर्थी सम्प्रदाने'
➢ 'विप्राय गां ददाति' यहाँ चतुर्थी किस सूत्र से हुई है?—'चतुर्थी सम्प्रदाने' से

- 'क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्' का उदाहरण है—'पत्ये शेते'
- 'रुच्' धातु तथा इसके समान धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण कारक की होती है—सम्प्रदान संज्ञा
- 'हरये रोचते भक्तिः' यह उदाहरण है—'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः सूत्र' का
- णिजन्त 'धृ' धातु के प्रयोग होने पर उत्तमर्ण (कर्ज देने वाला) कारक होता है—सम्प्रदान संज्ञक (धारेरुत्तमर्णः)
- 'भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः' यह उदाहरण है—धारेरुत्तमर्णः सूत्र का
- 'स्पृह' धातु के प्रयोग में जिसे चाहा जाए, वह होता है—सम्प्रदान संज्ञक
- 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' यह उदाहरण है—'स्पृहेरीप्सितः' सूत्र का
- 'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः' सूत्र की होती है—सम्प्रदान संज्ञा
- 'क्रुध्' का उदाहरण है—'हरये क्रुध्यति'
- 'क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म' सूत्र का उदाहरण है—'क्रूरमभिक्रुध्यति'
- जब 'क्रुध' तथा 'द्रुह' धातुएँ उपसर्ग सहित होती है, तब जिसके प्रति क्रोध, द्रोह किया जाता है, उस कारक की होती है—कर्मसंज्ञा
- 'राध्' और 'ईक्ष्' धातुओं के प्रयोग में जिसके विषय में प्रश्न किया जाता है, उसकी होती है—सम्प्रदान संज्ञा (राधीक्ष्योर्यस्यविप्रश्नः)
- 'कृष्णाय राध्यति, ईक्षते वा' यह उदाहरण है—राधीक्ष्योर्यस्यविप्रश्नः
- 'नियतकालं भृत्या स्वीकरणम्' का नाम है—परिक्रयण
- 'शतेन शताय वा परिक्रीतः' यह उदाहरण है—परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्
- अशुभसूचक, आकस्मिक, भूतविकार का क्या नाम है?—उत्पात
- 'तुमर्थाच्चभाववचनात्' सूत्र से होती है—चतुर्थी विभक्ति
- 'यागाय यातु' में चतुर्थी विभक्ति विधान करने वाला सूत्र है—'तुमर्थाच्च भाववचनात्'
- 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलं वषड्योगाच्च' इस सूत्र के योग में विभक्ति होती है—चतुर्थी विभक्ति

- 'नमः' इस पद के योग में विभक्ति होती है—चतुर्थी विभक्ति
- 'नमः' का उदाहरण है—हरये नमः
- 'मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु' सूत्र का उदाहरण है—'न त्वां तृणं मन्ये तृणायवा'
- 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- अपादान में पञ्चमी विभक्ति का विधान करने वाला सूत्र है—'अपादाने पञ्चमी'
- 'अपाय' का नाम है—विश्लेष
- ग्रामात् आयाति' यहाँ पञ्चमी किस सूत्र से होती है?—'अपादाने पञ्चमी'
- अपादान संज्ञा विधायक सूत्र है—ध्रुवमपायेऽपादानम्
- 'अपाय' की दशा में 'ध्रुव' की संज्ञा होती है—अपादान
- 'भयार्थक' और 'त्राणार्थक' धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु में होता है—अपादान (भीत्रार्थानां भयहेतुः)
- 'चोराद् विभेति' यह उदाहरण है—'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र का
- 'चोरात् त्रायते' यह उदाहरण है—'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र का
- 'अध्ययनात् पराजयते' यह उदाहरण है—'पराजेरसोढः' सूत्र का
- 'पराजेरसोढः सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- 'वारणार्थानामीप्सितः' सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- 'यवेभ्यो गां वारयति' यह उदाहरण है—'वारणार्थानीमीप्सितः' सूत्र का
- 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' सूत्र का उदाहरण है—मातुर्निलीयते कृष्णः
- 'आख्यातोपयोगे' सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- 'आख्यातोपयोगे' का उदाहरण है—'उपाध्यायादधीते'
- 'जनिकर्त्ता' है—उत्पत्तिकर्त्ता
- उत्पन्न होने वाले का हेतु होता है—अपादान संज्ञक (जनिकर्तुः प्रकृतिः)

- 'ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते' यह उदाहरण है—'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र का
- 'प्रभव' का नाम है—प्रथमप्रकाशस्थान
- 'भुवः प्रभवः' सूत्र से होती है—अपादान संज्ञा
- उत्पन्न होने वाले का जो 'प्रभव' (उत्पत्ति स्थान) होता है, वह है—अपादान संज्ञक
- 'हिमवतो गङ्गा प्रभवति' यह उदाहरण है—'भुवः प्रभवः' सूत्र का
- 'पञ्चम्यपाङ्परिभिः' सूत्र से होती है—पञ्चमी विभक्ति
- 'अपहरेः संसारः' तथाः परिहरेः संसारः'' यह उदाहरण है—'पञ्चम्यपाङ्परिभिः' सूत्र का
- 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' सूत्र से होती है—तृतीया, पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति
- 'पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्' का उदाहरण है—पृथग् रामेण, रामाद् रामं वा'
- 'षष्ठी' विधायक सूत्र है— षष्ठी शेषे
- षष्ठी विभक्ति होती है—'शेष' में
- 'कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिसम्बन्धः' यह है—शेष
- 'षष्ठी शेषे' सूत्र का उदाहरण है—'राज्ञः पुरुषः'
- 'जगतः कर्त्ता कृष्णः' यहाँ षष्ठी किससे है—कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से
- 'हेतु' शब्द के प्रयोग में षष्ठी विधायक सूत्र है—'षष्ठी हेतुप्रयोगे'
- 'षष्ठी हेतुप्रयोगे' सूत्र का उदाहरण है—'अन्नस्य हेतोर्वसति'
- 'अधीगर्थदयेषां कर्मणि' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है—कर्म में
- 'मातुः स्मरणम्' यह उदाहरण है—'अधीगर्थदयेषां कर्मणि' सूत्र का
- 'रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः' सूत्र से होती है—षष्ठी विभक्ति
- 'रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः' सूत्र का उदाहरण है—'चोरस्य रोगस्य रुजा'
- 'आशिषिनाथः' सूत्र से आशीर्वचन अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है—कर्म में

- 'आशिषिनाथः' सूत्र का उदाहरण है—'सर्पिषोनाथनम्'
- 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होती है—कर्ता और कर्म में
- 'दिव्' धातु के कर्मकारक में होती है—षष्ठी विभक्ति (दिवस्तदर्थस्य)
- 'दिवस्तदर्थस्य' सूत्र का उदाहरण है—'शतस्य दीव्यति'
- जब 'क्त' प्रत्ययान्त वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है, तो वहाँ होती है—षष्ठी विभक्ति
- 'राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा' यह उदाहरण है—'क्तस्य च वर्तमाने'
- अधिकरण संज्ञा विधायक सूत्र है—'आधारोऽधिकरणम्'
- अधिकरण संज्ञा होती है—आधार की
- 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से होती है—अधिकरण संज्ञा
- आधार कारक को कहते हैं—अधिकरण
- जिस पर कोई वस्तु रखी जाती है, उसे कहते हैं—आधार
- आधार पर रखी जाने वाली वस्तु को कहते हैं—आधेय
- अधिकरण में होती है—सप्तमी विभक्ति
- अधिकरण में किस सूत्र से सप्तमी विभक्ति होती है?—'सप्तम्यधिकरणे च'
- आधार कितने प्रकार के होते हैं?—तीन
  1. औपश्लेषिक आधार 2. वैषयिक आधार 3. अभिव्यापक आधार
- जिसके साथ आधेय का भौतिक सम्बन्ध होता है, वह है—औपश्लेषिक आधार
- औपश्लेषिक आधार का उदाहरण है—'कटे आस्ते'
- 'विषयकृतो वैषयिकः' यह है—वैषयिक आधार
- विषय के साथ आधेय का बौद्धिक सम्बन्ध होता है, तब वह होता है—वैषयिक आधार
- 'मोक्षे इच्छास्ति' यह उदाहरण है—वैषयिक आधार का
- जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध होता है, वह है—अभिव्यापक आधार

- अभिव्यापक आधार का उदाहरण है—'सर्वस्मिन् आत्मास्ति'
- साधु-असाधु के प्रयोग में भी होती है—सप्तमी विभक्ति (साध्वसाधुप्रयोगे च)
- 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' सूत्र से होती है—सप्तमी विभक्ति
- 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' का उदाहरण है—'गोषु दुह्यमानासु गतः'
- जिसका अनादर या तिरस्कार करके कोई कार्य किया जाता है, उसमें होती है—सप्तमी और षष्ठी विभक्ति (षष्ठी चानादरे)
- 'रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्' यह उदाहरण है—'षष्ठी चानादरे' सूत्र का
- 'आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्' इस सूत्र के योग में भी होती है—सप्तमी तथा षष्ठी विभक्ति
- 'आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्' इस सूत्र का उदाहरण है—आयुक्तः हरिपूजने
- यदि किसी वस्तु की अपने समुदाय की अन्य वस्तुओं से किसी विशेषण द्वारा विशिष्टता दिखलायी जाती है, तो उस समुदाय वाचक शब्द में होती है—सप्तमी अथवा षष्ठी विभक्ति (यतश्चनिर्धारणम्)
- 'नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः' यह उदाहरण है—'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र का
- 'साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः' सूत्र से होती है—सप्तमी विभक्ति
- 'साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः' सूत्र का उदाहरण है—'मातरि साधुर्निपुणो वा'
- 'यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी' सूत्र से होती है—सप्तमी विभक्ति
- 'यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी' सूत्र का उदाहरण है—'उपपरार्धे हरेगुणाः'



स्त्रीप्रत्यय

- स्त्री प्रत्यय कितने हैं—टाप, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष, ङीन, ऊङ्, ति
- 'स्त्रियाम' यह है—अधिकारसूत्र
- 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से होता है—टाप् प्रत्यय
- 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र का उदाहरण है—अजा, एडका, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, मन्दा इत्यादि
- 'उगितश्च' सूत्र से होता है—ङीप् प्रत्यय
- 'उगितश्च' सूत्र का उदाहरण है—भवन्ती और पचन्ती
- 'वनोरच' सूत्र से विधान होता है—'ङीप् प्रत्यय' का
- अतिसुत्वरी और शर्वरी उदाहरण है—'वनोरच' सूत्र का
- 'टाबृचि' सूत्र से होता है—'टाप्' प्रत्यय
- 'टाबृचि' सूत्र का उदाहरण है—द्विपदा ऋक्
- 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से होता है—'ङीप्' प्रत्यय
- प्रकृत सूत्र का उदाहरण है—कुरुचरी, सौपर्णेयी, ऐन्द्री, ऊरुमात्री इत्यादि
- 'यञश्च' सूत्र का उदाहरण है—गार्गी
- 'गार्गी' में प्रत्यय है—ङीप्
- 'गार्ग्यायणी' में प्रत्यय है—ङीष्
- 'वयसि प्रथमे' सूत्र से होता है—ङीप् प्रत्यय
- 'वयसि प्रथमे' सूत्र का उदाहरण है—कुमारी
- द्विगोः सूत्र से विधान होने वाले ङीप् प्रत्यय का उदाहरण है—त्रिलोकी
- 'बहुव्रीहेरूधसोङीष्' से विधान होता है—ङीष् प्रत्यय का
- 'बहुव्रीहेरूधसोङीष्' सूत्र का उदाहरण है—कुण्डोध्नी
- 'द्विदाम्नी' और 'द्विहायनी' उदाहरण है—'दामहायनान्ताच्च' सूत्र का
- 'संख्याव्ययादेर्ङीप्' सूत्र का उदाहरण है—द्व्यूध्नी, अत्यूध्नी

➢ 'नित्यं संज्ञाछन्दसोः' सूत्र से होता है—'ङीप्' प्रत्यय
➢ 'नित्यं संज्ञाछन्दसोः' सूत्र का उदाहरण है—सुराज्ञीनाम नगरी
➢ 'मामकी, पापी, सुमङ्गली, 'भेषजी' इन उदाहरणों में प्रत्यय है—ङीप्
➢ 'पूतक्रतोरैच' सूत्र से विधान होता है—'ङीप्' प्रत्यय का
➢ 'पूतक्रतोरैच' सूत्र का उदाहरण है—पूतक्रतायी
➢ 'अन्यतोङीप्' सूत्र का उदाहरण है—कल्माषी, सारङ्गी
➢ 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र का उदाहरण है—नर्तकी, गौरी
➢ 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से विधान होता है—'ङीष्' प्रत्यय का
➢ 'जानपद कुण्डगोणस्थलभाजनागकाल.' सूत्र से होता है—'ङीष्' प्रत्यय का
➢ 'जानपद कुण्डगोणस्थलभाजनागकाल.' सूत्र का उदाहरण है—जनपदी, कुण्डी
➢ 'पुंयोगादाख्यायाम्' सूत्र से होता है—'ङीष्' प्रत्यय
➢ 'पुंयोगादाख्यायाम्' सूत्र का उदाहरण है—गोपी
➢ 'इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्यामानुक्' सूत्र से होता है—ङीष् प्रत्यय
➢ 'इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्यामानुक्' सूत्र का उदाहरण है—इन्द्राणी, यवानी, मातुलानी आदि
➢ 'क्रीतात्करणपूर्वात्' सूत्र से होता है—'ङीष्' प्रत्यय
➢ 'क्रीतात्करणपूर्वात्' का उदाहरण है—वस्त्रक्रीती
➢ 'चन्द्रमुखी' में प्रत्यय है—ङीष्
➢ 'दिक्पूर्वपदान्ङीप्' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय किसके स्थान पर होता है?—'ङीष्' के
➢ 'दिक्पूर्वपदान्ङीप्' सूत्र का उदाहरण है—प्राङ्मुखी
➢ 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्' सूत्र से होता है—ङीप् प्रत्यय
➢ 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्' सूत्र का उदाहरण है—तटी, वृषली
➢ 'पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च' सूत्र से विधान किया जाता है—'ङीष' प्रत्यय का

➢ 'इतोत्तमनुष्यजातेः' सूत्र से विधान होता है—'ङीष्' प्रत्यय का
➢ 'इतोत्तमनुष्यजातेः' सूत्र का उदाहरण है—दाक्षी
➢ ऊङ् प्रत्यय विधायक सूत्र है—'ऊङुतः'
➢ ङीन् प्रत्यय विधायक सूत्र है—शार्ङ्गरवाद्यञोङीन्
➢ चाप् प्रत्यय विधायक सूत्र है—यङश्चाप्
➢ 'ति' प्रत्यय विधायक सूत्र है—यूनस्तिः
➢ 'ऊङुतः' सूत्र का उदाहरण है—'कुरूः'
➢ 'बाह्वन्तात्संज्ञायाम्' सूत्र से होता है—'ऊङ्' प्रत्यय
➢ 'बाह्वन्तात्संज्ञायाम्' सूत्र का उदाहरण है—भद्रबाहूः का
➢ 'पङ्गोश्च' सूत्र का उदाहरण है—पङ्गूः
➢ 'उरूत्तरपदादौपम्ये' सूत्र का उदाहरण है—'करभोरूः'
➢ 'उरूत्तरपदादौपम्ये' सूत्र से होता है—ऊङ् प्रत्यय
➢ 'यूनस्तिः' सूत्र का उदाहरण है—'युवतिः'
➢ 'यङश्चाप्' सूत्र का उदाहरण है—आम्बष्ठ्या, कारीषगन्ध्या
➢ 'शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् सूत्र से होता है—'ङीन्' प्रत्यय
➢ 'शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् सूत्र का उदाहरण है—शार्ङ्गरवी
➢ 'संज्ञायाम्' सूत्र से विधान होता है—ऊङ् प्रत्यय का
➢ 'संज्ञायाम्' सूत्र का उदाहरण है—कमण्डलूः
➢ 'संहितशफलक्षणवामादेश्च' सूत्र से होता है—ऊङ् प्रत्यय
➢ 'संहितशफलक्षणवामादेश्च' का उदाहरण है—'लक्षणोरूः' वामोरूः
➢ 'कुमारी यहाँ ङीप् किस सूत्र से है?— 'वयसि प्रथमे' से

✦✦✦

भाषा-विज्ञान

- 'भाषा' शब्द की उत्पत्ति हुई है— भाष् धातु से
- भाषा विज्ञान मूलरूप से देन है— पाश्चात्य विद्वानों की
- सर्वप्रथम भाषा के तुलनात्मक अध्ययन को 'फिलोलॉजी' नाम दिया था— पाश्चात्य विद्वानों ने
- अंग्रेजी में 'साइंस आफ लैंग्वेज' कहा जाने लगा— फिलोलॉजी
- ऋग्वेद् के वाक्-सूक्त में प्रतिपादित है— भाषा
- जिसमें लिखित भाषा का अध्ययन किया जाता है, वह 'फिलोलॉजी' है, यह मत है— ब्लूमफील्ड का
- जिसमें बोलचाल की भाषा का अध्ययन किया जाता है, वह 'लिंग्विस्टिक' यह मत है— ब्लूमफील्ड का
- किस वेदाङ्ग में ध्वनि विज्ञान की विवेचना की गयी है— शिक्षा में
- 'व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्त वाचः' भाषा की यह परिभाषा है— महाभाष्य में
- भाषाविज्ञान को 'साइंस आफ लैंग्वेज' कहा है— डॉ.पी.डी. गुणे ने
- भाषाविज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट, उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है, यह परिभाषा है— डॉ. श्यामसुन्दर दास की
- 'भाषा तत्त्वों का अध्ययन भाषा विज्ञान का अध्यन है' यह कहा है— डॉ. बाबूराम सक्सेना ने
- भाषा के वर्गीकरण के प्रकार हैं— दो 1. आकृतिमूलक 2. परिवारमूलक
- शब्दों या पदों की रचना के आधार पर किया जाने वाला वर्गीकरण है— आकृतिमूलक
- रचना, रूप वाक्य अथवा पद पर्याय हैं— आकृतिमूलक के
- रूपात्मक, पदात्मक और वाक्यात्मक आदि कहा जाता है— आकृतिमूलक को

- आकृतिमूलक वर्गीकरण का प्रमुख विभाजनकर्त्ता माना जाता है— श्लेगल को
- श्लेगल ने आकृतिमूलक भाषाओं को विभक्त किया है— दो भागों में
- आकृतिमूलक के प्रमुख वर्ग हैं— दो 1. अयोगात्मक 2. योगात्मक
- अयोगात्मक में प्रधानता होती है— अर्थतत्त्व की
- प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्णय किया जाता है— अयोगात्मक भाषा में
- चीनी, तिब्बत, वर्मा, थाईलैण्ड आदि देशों की भाषाएँ हैं— अयोगात्मक भाषा में
- स्थान, निपात तथा सुर का विशिष्ट महत्त्व होता है— अयोगात्मक भाषा में
- चीनी भाषा में विशेष महत्त्व होता है— स्थान का
- सूडान भाषा में विशेष महत्त्व होता है— सुर का
- तिब्बत एवं बर्मा भाषा में विशेष महत्त्व होता है— निपात का
- जहाँ प्रकृति प्रत्यय योग से शब्दों की रचना होती है, वह है— योगात्मक भाषा
- योगात्मक भाषा को बाँटा गया है— तीन भागों में
  1. अश्लिष्ट योगात्मक 2. प्रश्लिष्ट योगात्मक 3. श्लिष्ट योगात्मक
- 'अश्लिष्ट योगात्मक' होती है— प्रत्यय प्रधान
- 'प्रश्लिष्ट योगात्मक' होती है— समास प्रधान
- श्लिष्ट योगात्मक होती है— विभक्ति प्रधान
- अश्लिष्ट योगात्मक भाषा को विभक्त किया गया है— चार भागों में
- बान्टू परिवार की काफिरी जुलू भाषाएँ आती हैं— पुरःप्रत्यय प्रधान में
- मुण्डा परिवार की संथाली भाषा आती है— मध्य प्रत्यय प्रधान में
- न्यूगिनी द्वीप की मपोर एवं मलय भाषा आती है— पूर्वान्त प्रत्यय प्रधान में
- पूरात, अल्ताई, तुर्की व द्रविड़ भाषाएँ आती हैं— अन्त प्रत्यय प्रधान में

➢ प्रश्लिष्ट के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ हैं— ग्रीनलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका
➢ प्रश्लिष्ट योगात्मक के भाग हैं— दो
➢ 1. पूर्ण प्रश्लिष्ट 2. आंशिक प्रश्लिष्ट
➢ उत्तरी अमेरिका की चैराकी भाषा है— पूर्ण प्रश्लिष्ट
➢ पिरेनीज पर्वतमाला की बास्क भाषा है— आंशिक प्रश्लिष्ट
➢ संस्कृत, ग्रीक, अरबी और लैटिन भाषाएँ आती हैं— श्लिष्ट योगात्मक में
➢ श्लिष्ट योगात्मक भाषा को बाँटा गया है— दो भागों में
1. बहिर्मुखी श्लिष्ट 2. अन्तर्मुखी श्लिष्ट
➢ बहिर्मुखी श्लिष्ट के प्रकार हैं— दो
1. संयोगात्मक 2. वियोगात्मक
➢ संयोगात्मक बहिर्मुखी श्लिष्ट भाषा है— संस्कृत
➢ वियोगात्मक बहिर्मुखी श्लिष्ट भाषा है— हिन्दी
➢ अन्तर्मुखी श्लिष्ट के प्रकार हैं— दो
1. संयोगात्मक 2. वियोगात्मक
➢ संयोगात्मक अन्तर्मुखी श्लिष्ट भाषा है— अरबी
➢ वियोगात्मक अन्तर्मुखी श्लिष्ट भाषा है— हिब्रू
➢ रचनातत्त्व और अर्थतत्त्व को आधार बनाकर किया गया वर्गीकरण कहलाता है— पारिवारिक वर्गीकरण
➢ सभी भाषाओं को एक भाषा परिवार में रखा जाता है— पारिवारिक वर्गीकरण द्वारा
➢ भाषाओं के बाह्य तथा आन्तरिक दोनों का संयुक्तरूप से अध्ययन किया जाता है— पारिवारिक वर्गीकरण द्वारा
➢ भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के आधार पर तत्त्व हैं— चार
➢ 1. स्थानिक समीपता 2. शब्दों की समीपता
3. व्याकरण की समीपता 4. ध्वनि की समीपता
➢ पारिवारिक एकता का सर्वाधिक प्रामाणिक आधार है— व्याकरण की समीपता

➢ पारिवारिक वर्गीकरण में डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा कितने भाषा परिवार स्वीकार करते हैं?— 18
➢ विश्व का महान भाषा परिवार है— भारोपीयभाषा परिवार
➢ वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वप्रमुख भाषा परिवार है— भारोपीयभाषा परिवार
➢ साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध भाषा परिवार है— भारोपीयभाषा परिवार
➢ भारोपीय परिवार की प्राचीन भाषाएँ हैं— संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, जर्मन, मराठी आदि
➢ भारोपीय परिवार की आधुनिक भाषाएँ हैं— आँग्ल, रूसी, स्पेनी, हिन्दी आदि
➢ सर्वाधिक भाषा किस परिवार में उपलब्ध है?— अमेरिकी परिवार में
➢ एकाक्षरी भाषा है— चीनी
➢ भारोपीय भाषा नहीं है— मलयालम, तमिल, तेलगू
➢ किस भाषा परिवार के सर्वाधिक प्रयोक्ता हैं— भारोपीय परिवार के
➢ ध्वनि विषय साम्य और वैषम्य के आधार पर भारोपीय परिवार को बाँटा जाता है— दो 1. शतम् (अवेस्ता) 2. केन्टुम
➢ दक्षिण भारत में नर्मदा गोदावरी से कन्याकुमारी तक फैला है— द्राविड़ परिवार
➢ तमिल परिवार भी कहा जाता है— द्राविड़ परिवार को
➢ द्राविड़ परिवार की भाषाएँ हैं— अश्लिष्ट अन्त-योगात्मक
➢ तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, झोण्डी, उराँव, उलू, कोंडंगु, माल्टो आदि भाषाएँ हैं— द्राविड़ परिवार की
➢ चीन, तिब्बत, वर्मा से व्याप्त परिवार है— बुरुशस्की परिवार
➢ तुर्की, उज्बैक, मंगोली और मंचुई आदि भाषाएँ आती हैं— यूराल अल्ताई परिवार में
➢ सर्कसी, चेन्चेन, लेगी, जार्जी, मिंगली तथा रचानी आदि भाषाएँ आती हैं— काकेशी परिवार में

- काकेशी परिवार है—अश्लिष्ट योगात्मक
- कारकों की अधिकता होती है—काकेशी परिवार में
- जापानी, कोरियाई परिवार की भाषाएँ हैं—अश्लिष्ट योगात्मक
- युंकगिर, कमचटका, चकुची तथा अइनू आदि भाषाएँ आती हैं—अत्युत्तरी परिवार में
- अरब देश में मुख्यरूप से बोली जाने वाली भाषा है—सामी
- लीबिया, सोमाली आदि देशों में व्यवहार में लायी जाने वाली भाषा है— हामी
- अन्तर्मुखी श्लिष्ट योगात्मक है—सामी-हामी परिवार
- सूडानी भाषा परिवार में कुल भाषाएँ हैं—425
- कनूरी, नीलोरिक, बन्तुइड, हौंसा आदि भाषाएँ आती हैं—सूडानी परिवार में
- जुलू, काफिरी, स्वाहिली, सेसुतो, कांगो आदि भाषाएँ हैं—बान्टू परिवार में
- बान्टू परिवार में कितनी भाषाएँ हैं—150
- पापुई भाषा परिवार में कुल भाषाएँ हैं—132
- मैम्बारी तथा कमिलरोई भाषाएँ आती हैं—आस्ट्रेलियाई परिवार में
- अमेरिकी परिवार को विभक्त किया गया है—तीन भागों में
- भारोपीय, द्राविड़, बुरुशस्की, यूराल, काकेशी, चीनी, जापानी, अत्युत्तरी, बास्क, सामी परिवार हैं—यूरेशिया खण्ड में
- बुरामेनी, मलय, पापुई, आस्ट्रेलियाई, दक्षिणपूर्व एशियाई परिवार आते हैं—प्रशान्त महासागरीय खण्ड में
- सूडानी, बस्तू, होन्तेन्तो-बुरामेनी परिवार आते हैं—अफ्रीका खण्ड में
- सहस्रभाषात्मक परिवार है—अमरीकी परिवार
- केन्टुम और शतम् वर्ग में विभक्त भाषा परिवार है—भारोपीय परिवार
- आवृत्ति उच्चारणकाल का मापक यन्त्र है—स्पेक्ट्रोग्राफ
- भाषा के आधार हैं—दो 1. मानसिक आधार 2. भौतिक आधार
- भाषा के आश्रय हैं—दो 1. वक्ता 2. श्रोता

- भाषा के पक्ष हैं—तीन
  1. वैयक्तिक पक्ष 2. सामाजिक पक्ष 3. सार्वभौम पक्ष
- भाषा परिवर्तन की दिशाएँ होती हैं—पाँच
  1. ध्वनि परिवर्तन 2. शब्द परिवर्तन 3. पदपरिवर्तन
  4. वाक्य परिवर्तन 5. अर्थपरिवर्तन
- फोनोलॉजी और फोनेटिक्स की उत्पत्ति हुई है—ग्रीक शब्द फोन (Phone) से
- 'लॉजी' और 'टिक्स' शब्द बोधक हैं—'विज्ञान' अर्थ के
- ध्वनिविज्ञान की शाखाएँ हैं—तीन
  1. उच्चारण या उत्पत्ति 2. संचरण या गमन 3. श्रवण
- वाग्यन्त्र का वर्गीकरण किया गया है—दो भागों में
  1. करण 2. स्थान
- वैदिक ध्वनियाँ हैं—52
- संस्कृत ध्वनियाँ हैं—48
- हिन्दी ध्वनियाँ हैं—54
- संयुक्त स्वर हैं—दो 1. आरोही 2. अवरोही
- स्वर और व्यंजन का विभाजन किया गया है—दो प्रकार से
- 1. श्रवणीयता के आधार पर 2. प्रयत्न के आधार पर
- ध्वनियों को बाँटा गया है—तीन भागों में
  1. स्वर 2. व्यंजन 3. अन्तस्थ
- स्थान के आधार पर व्यंजन को बाँटा जाता है—5 भागों में
- 1. ओष्ठ्य 2. जिह्वाणीय 3. जिह्वाग्रीय
  4. जिह्वापश्चीय 5. स्वतंत्रीय या कण्ठदेशीय
- ओष्ठ्य के भेद हैं—तीन
  1. बहिर्मुखी ओष्ठ्य 2. द्वयोष्ठ्य 3. दन्तोष्ठ्य
- जिह्वणीय के भेद हैं—तीन 1. दन्त्य 2. वर्त्स्य 3. मूर्धन्य
- जिह्वाग्रीय के भेद हैं—तीन
  1. तत्त्वाग्रीय 2. तालुमध्यीय 3. तालुपश्चीय

- जिह्वापश्चीय के भेद हैं— तीन
  1. कोमलताल्वग्रीय 2. कोमलतालु मध्यीय 3. कोमलतालुपश्चीय
- कण्ठदेशीय के भेद हैं— तीन
  1. गलविलीय 2. काकल्य 3. स्वरयंत्रीय
- प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों को बाँटा जाता है— 5 भागों में
- 1. स्पर्श 2. संघर्षीय ऊष्म 3. नासिक्य
  4. पार्श्विक 5. लुंहित या कम्पित
- नासिक्य के भेद हैं— दो 1. पूर्णनासिक्य 2. अपूर्णनासिक्य
- संयुक्त व्यंजन हो सकते हैं— दो 1. समध्वनि 2. विषमध्वनि
- एक कालिक प्रयत्न होते हैं— 6
- अक्षरों को बाँटा जाता है— दो भागों में,
  1. मुक्त अक्षर 2. बद्ध अक्षर
- संस्कृत में मात्रा के भेद हैं— तीन 1. ह्रस्व 2. दीर्घ 3. प्लुत
- एक मात्रिक होता है— ह्रस्व
- दो मात्रिक होता है— दीर्घ
- तीन मात्रिक होता है— प्लुत
- ह्रस्व हैं— 5, (अ, इ, उ, ऋ, लृ)
- अ, इ, उ, ऋ, लृ को कहा जाता है— ह्रस्व
- दीर्घ स्वर हैं— 6, (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ)
- प्लुत स्वर हैं— 2, (ऐ और औ)
- बलाघात के प्रकार हैं— दो 1. शब्द बलाघात 2. वाक्य बलाघात
- सुर के भेद हैं— दो
- स्वर के भेद हैं— तीन 1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
- अर्द्धमात्रिक होता है— व्यंजन
- ङ्, ञ्, ण, न्, म् ये हैं— अनुनासिक
- मुखनासिका से कहे जाते हैं— अनुनासिक वर्ण
- संस्कृत में मूल स्वरों की संख्या है— 11
- संस्कृत में संयुक्त स्वर हैं— दो

- वर्णों के उच्चारण स्थान हैं— 8
- कवर्ग का उच्चारण स्थान है— कण्ठ
- अकार, हकार और विसर्गों का उच्चारण स्थान है— कण्ठ
- इकार, चवर्ग, यकार तथा शकार वर्णों का उच्चारण स्थान है— तालु
- ऋकार, टवर्ग, रकार और षकार वर्णों का उच्चारण स्थान है— मूर्धा (मूर्धन्य)
- लृकार, तवर्ग, लकार और सकार का उच्चारण स्थान है— दन्त
- उकार, पवर्ग और उपध्मानीय का उच्चारण स्थान है— ओष्ठ
- 'प' और 'फ' के पहले अर्ध विसर्ग के रूप में प्रयोग किये जाने वाले को कहा गया है— उपध्मानीय (जैसे क ≍ फलति)
- ञ, म्, ङ्, ण्, न् का उच्चारण स्थान है— नासिका
- 'ए' और 'ऐ' का उच्चारण स्थान है— कण्ठतालु
- 'ओ' और 'औ' का उच्चारण स्थान है— कण्ठोष्ठ
- वकार का उच्चारण स्थान है— दन्तोष्ठ
- अनुस्वार का उच्चारण स्थान है— नासिका
- प्रयत्न या यत्न के प्रकार हैं— दो
  1. आभ्यन्तर प्रयत्न 2. बाह्य प्रयत्न
- आभ्यन्तर प्रयत्न के प्रकार हैं— पाँच
- 1. स्पृष्ट 2. ईषत्स्पृष्ट 3. ईषद्विवृत 4. विवृत 5. संवृत्त
- स्पर्श वर्णों का होता है— स्पृष्ट प्रयत्न
- 'क' से 'म' तक को कहा जाता है— स्पृष्ट प्रयत्न
- अन्तस्थ वर्ण होता है— ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न
- य्, व, र्, और ल् हैं— अन्तस्थ वर्ण (यण्)
- ऊष्मवर्ण होता है— ईषद्विवृत प्रयत्न
- श्, ष्, स्, ह् हैं— ऊष्म वर्ण (शल् ऊष्माण:)
- स्वर होते हैं— विवृत्त प्रयत्न
- 'अच्' है— स्वर

- ➢ ह्रस्व अवर्ण उच्चारण काल में होता है— संवृत्त प्रयत्न
- ➢ बाह्य प्रयत्न के भेद हैं— 11
- ➢ खर् वर्ण होते हैं— विवार, श्वास और अघोष
- ➢ हश् वर्ण होते हैं— संवार, नाद और घोष
- ➢ वर्णों के प्रथम, तृतीय, पंचम और यण् होते हैं— अल्पप्राण
- ➢ वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् होते हैं— महाप्राण
- ➢ संस्कृत भाषा में अन्तस्थ वर्णों की कुल संख्या है— 4(य्,व्, र्,ल्)
- ➢ उ, ऊ, ओ, औ, ये स्वर हैं— वर्तुल
- ➢ आकार स्वर है— अर्धवर्तुल
- ➢ अर्धविवृत स्वर हैं— ऐ, औ
- ➢ 'खकार' का बाह्य प्रयत्न है— विवार
- ➢ स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न है— विवृत
- ➢ शकार ध्वनि संवर्ग है— अघोष संघर्षी
- ➢ सकार वर्ण है— ऊष्म
- ➢ अर्धस्वर है— अन्तस्थ
- ➢ घोष-अघोष ध्वनि का मापक यन्त्र है— काइमोग्राफ
- ➢ श्वास ग्रहण के समय स्वरतन्त्रों की स्थिति होती है— पूर्णविवृत
- ➢ किसके उच्चारण में वायु निर्बाध गति से बाहर निकलती है?— स्वर के
- ➢ अघोष का अन्य नाम है— विवार
- ➢ घोष का अन्य नाम है— संवार
- ➢ ध्वनियों के उच्चारण में श्वास की प्रबलता का अल्प होना कहलाता है— अल्पप्राण
- ➢ ध्वनियों के उच्चारण में श्वास की प्रबलता का अधिक होना कहलाता है— महाप्राण
- ➢ ध्वनि नियमों में सबसे प्रसिद्ध नियम है— ग्रिम नियम
- ➢ 'जर्मन भाषा व्याकरण' नामक ग्रन्थ का लेखक हैं— ग्रिम (1785-1863)

- ➢ ग्रिम नियम का सम्बन्ध कितनी स्पर्श ध्वनियों से है?— 9
- ➢ ग्रिम नियम में वर्ण परिवर्तन हुआ है— दो बार
- ➢ 1. प्रथम वर्ण परिवर्तन, 2. द्वितीय वर्ण परिवर्तन
- ➢ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन से प्राचीन जर्मन (गाथिक) में होने वाले परिवर्तन का सम्बन्ध है— प्रथमवर्ण परिवर्तन से
- ➢ द्वितीय वर्ण परिवर्तन हुआ था— निम्न जर्मन से उच्च जर्मन में
- ➢ प्रथमवर्ण परिवर्तन में घोष महाप्राण का जर्मन भाषा में परिवर्तन हो जाता है— घोष अल्पप्राण में
- ➢ प्रथमवर्ण परिवर्तन में घोष अल्पप्राण का जर्मन भाषा में परिवर्तन हो जाता है— अघोष अल्पप्राण में
- ➢ प्रथमवर्ण परिवर्तन में अघोष अल्पप्राण का जर्मन भाषा में परिवर्तन हो जाता है— अघोष महाप्राण में
- ➢ मूल भारोपीय भाषा की नौ ध्वनियाँ है— घ्, ध्, भ्, ग्, द्, ब् एवं क्, त्, प्,
- ➢ द्वितीय वर्ण परिवर्तन में निम्नजर्मन के घोष अल्पप्राण का उच्च जर्मन में परिवर्तन हो जाता है— अघोष अल्पप्राण में
- ➢ द्वितीय वर्ण परिवर्तन में निम्नजर्मन के अघोष अल्पप्राण का उच्च जर्मन में परिवर्तन हो जाता है— अघोष महाप्राण में
- ➢ घोष अल्पप्राण है— ग्, द्, ब।
- ➢ क्, त्, प् यह है— अघोष अल्पप्राण
- ➢ ख्, थ्, फ् यह है— अघोष महाप्राण
- ➢ निम्न जर्मन में 'क' उच्च जर्मन में हो जाता है— 'ख' (जैसे बुक→बुख)
- ➢ 'महाप्राणद्वयीयुक्ताः द्व्यक्षरामूलधातवः।
- ➢ महाप्राणद्वनाशः ग्रासमन विधौ स्मृते'।। यह है— ग्रासमननियम
- ➢ दो सन्निकृष्ट महाप्राण ध्वनियाँ एक साथ नहीं रहती, उसमें प्रथम अल्पप्राण हो जाती हैं, यह है— ग्रासमननियम (यथा— धधामि→दधामि)

- 'पूर्वमुदात्तयोगे तु ग्रीमाख्यौ नियमो लगेत।
अन्यथा द्विपदावृत्तिः वर्नरे नियमे सति'।। यह है— वर्नरनियम
- 'मूल भारोपीय भाषा के क्, त्, प् के पूर्व उदात्त स्वर हो, तो परिवर्तन ग्रिम नियम के अनुसार होगा' यह है— वर्नर नियम
- यदि उदात्त स्वर क्, त्, प् के बाद होगा, तो परिवर्तन ग्रासमन के नियमानुसार होगा यह है— वर्नरनियम
- संस्कृत भाषा के 'युवशस्' का गाथिक भाषा में हो जाता है— युंग्स (Juggs) (यहाँ श का ग हुआ)
- संस्कृत भाषा के शतम् का गाथिक भाषा में हो जाता है— हुन्द (Hund) (त का द हुआ)
- संस्कृत भाषा के सप्तन् का गाथिक भाषा में हो जाता है— सिबुन (प का ब हुआ)
- ग्रिम नियम का सम्बन्ध किस भाषा से है?— जर्मन
- ग्रिम नियम का द्वितीय वर्ण परिवर्तन हुआ— 7वीं शती में
- ग्रासमन के अनुसार मूल भारोपीय का 'धधामि' ग्रीक भाषा में है— तिथेमि
- ग्रासमन के अनुसार मूल भारोपीय का भभार संस्कृत तथा ग्रीक में क्रमशः है— बभार, फेफुका
- किसका संकेत मूलतः पाणिनि अष्टाध्यायी में उपलब्ध होता है?— मूर्द्धन्य नियम का
- 'र' तथा 'ल' के बाद तवर्ग आने पर उसका टवर्ग हो जाता है, यह है— मूर्द्धन्य नियम
- मूर्द्धन्य ध्वनियों के विकास का क्रम ढूढ़ने का प्रयास किया था— प्रो. फोर्तनातोव (रूस)
- 'तालव्य नियम को प्रमुखतः किससे सम्बद्ध देखा जाता है?— कालित्ज से
- ध्वनि परिवर्तन के कारणों को विभक्त किया जाता है— दो भागों में, 1. आभ्यन्तरकारण 2. बाह्यकारण

- ध्वनि परिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है— प्रयत्नलाघव, लघुकरण की प्रवृत्ति
- ध्वनि परिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है— अनुकरण की अपूर्णता, अशिक्षा, शीघ्रभाषण
- ध्वनि परिवर्तन का आभ्यन्तर कारण है— भावावेश, काव्यात्मकता, भ्रामक व्युत्पत्ति आदि।
- 'सत्य' का 'सच' कहा जाना है— प्रयत्नलाघव
- 'देवस्त' का 'देव' 'उपाध्याय' का ओझा और 'ओझा' का झा होना है— लघुकरण की प्रवृत्ति
- 'ओं नमः सिद्धम्' का ओनामासीधम होना है— अनुकरण की अपूर्णता
- 'गार्ड' का 'गारड' कहा जाना है— अशिक्षा
- 'उन्होंने' का 'उन्हें' कहा जाना है— शीघ्र भाषण
- 'राम' का 'रमुआ' कहा जाना है— भावावेश
- 'वीर' का 'वीरा' कहा जाना है— काव्यात्मकता
- 'आभ्यन्तर' का भीतर, 'एकादश' का 'ग्यारह' कहा जाना है— बलाघात
- 'मैक्समूलर' का 'मोक्षमूलर' कहा जाना है— भ्रामक व्युत्पत्ति
- ध्वनि परिवर्तन के बाह्यकरण हैं— 5
- 'सिन्धु' का 'हिन्दु' और 'सप्ताह' का 'हफ्ता' कहा जाना है— भौगोलिक कारण
- 'स' का 'ह' हो जाता है— फारसी में
- 'पण्डित' को 'पण्डा', 'यजमान' को 'जजमान' कहा जाना है— सामाजिक कारण एवं राजनीतिक कारण
- 'वर्तते' का 'बाटे' हो जाना है— काल प्रभाव
- अंग्रेजी में 'राम' का 'रामा' 'आर्य' को 'आर्या' होना है— लिपि दोष
- ध्वनि परिवर्तन है— दो 1. अकारण 2. सकारण
- ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ हैं— 14

- आगम के भेद हैं— तीन
- लोप के भेद हैं—तीन
- अनुनासिकीकरण के भेद हैं—दो 1. सकारण 2. अकारण
- विशिष्ट ध्वनि परिवर्तन है—तीन
  1. अपनिहित 2. अभिश्रुति 3. अपश्रुति
- अपश्रुति के भेद हैं—दो 1. गुणीय 2. मात्रिक
- वाक्य के प्रकार हैं—पाँच
  1. आकृतिमूलक भेद 2. रचनामूलक भेद
  3. अर्थमूलक 4. क्रियामूलक 5. शैलीमूलक
- आकृतिमूलक भेद के प्रकार हैं—चार
- रचना मूलक भेद के प्रकार हैं—तीन
  1. सामान्य वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. संयुक्त वाक्य
- अर्थमूलक के भेद हैं—आठ
- क्रियामूलक भेद के प्रकार हैं—दो
  1. क्रियायुक्त वाक्य 2. क्रियाहीन वाक्य
- शैलीमूलक भेद के प्रकार हैं—तीन
  1. शिथिल वाक्य 2. समीकृत वाक्य 3. आवर्तक वाक्य
- अर्थ के लक्षण हैं—18
- अर्थज्ञान के साधन हैं—दो
  1. आत्मप्रत्यक्ष 2. परप्रत्यक्ष
- संकेतग्रह (अर्थज्ञान) के साधन हैं—आठ
- शब्द के प्रकार हैं—दो
  1. एकार्थक 2. नानार्थक
- एकार्थक शब्दों के अर्थनिर्णय के साधन बताए गए हैं—10
- नानार्थक शब्दों के अर्थनिर्णय के साधन बताए गए हैं—14

- अर्थ परिवर्तन के प्रकार हैं—तीन
- अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ हैं—पाँच
  1. अर्थविस्तार 2. अर्थसंकोच 3. अर्थादेश
  4. अर्थोत्कर्ष 5. अर्थापकर्ष
- अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार को प्राप्त कर लेना है—अर्थविस्तार (यथा—प्रवीण कुशल)
- अर्थ का संकुचित या सीमित हो जाना है—अर्थसंकोच (यथा—मृग, सर्प, मन्दिर, तर्पण आदि)
- एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना है—अर्थादेश (यथा—असुर, वर, मौन आदि)
- मुग्ध, साहस, गोष्ठी आदि उदाहरण है—अर्थोत्कर्ष का
- शौच, महाराज आदि उदाहरण है— अर्थापकर्ष का
- अर्थ परिवर्तन के कारण हैं— 24
- भारोपीय परिवार की शाखाएँ हैं— 10
- ईरान की प्राचीन भाषा है—अवेस्ता
- संस्कृत अवस्था का अपभ्रंश है—अवेस्ता
- 'अवेस्ता' का अर्थ है—व्यवस्थित
- भावातिरेक का उदाहरण है—बेटी-बिटिया
- विषमीकरण का उदाहरण है—काक-काग
- अर्थविस्तार में गिना जाता है—सभ्य, तैल, कुशल
- 'शतम्' वर्ग की भाषा है—अल्बानी, भारत-ईरानी आदि
- केन्टुम वर्ग की भाषा है—ग्रीक, केल्टिक हिट्टाइट आदि
- भर्तृहरि के अनुसार नाम स्फोट है—भाषा
- भारतीय आर्यभाषाओं का काल विभाजन किया गया है—तीन भागों में

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ (1500 ई.पू.से 500 ई.पू. तक)

2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ (500 ई.पू. से 1000 ई. तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (1000 ई. से वर्तमान तक)

➢ प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ विकासक्रम के अनुसार विभक्त है—दो भागों में
 1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत
➢ स्थायी और सूक्ष्म होती है— भाषा
➢ अस्थायी और स्थूलरूप होती है— वाक्
➢ साध्य है— भाषा
➢ साधन है— वाक्
➢ परारूप है— भाषा
➢ वैखरीरूप है— वाक्
➢ किसका क्षेत्र विस्तृत है?— भाषा का
➢ किसका क्षेत्र अति संकुचित है— बोली का
➢ अनादिनिधना है— भाषा
➢ भाषा से उत्पन्न होती है— विभाषा
➢ अभेद है— भाषा
➢ भेद युक्त है— बोली
➢ प्रकृति है— भाषा
➢ विकृति है— बोली

✦✦✦

खण्ड–5

दर्शन

दर्शन का सामान्य परिचय

चार्वाक दर्शन

➢ चार्वाक दर्शन के आचार्य माने जाते हैं— बृहस्पति
➢ चार्वाक दर्शन को कहा जाता है— लोकायत दर्शन
➢ एकमात्र प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है— चार्वाक दर्शन
➢ नास्तिक दर्शन है— चार्वाक दर्शन
➢ वेदों को प्रमाण नहीं मानता है— चार्वाक दर्शन
➢ चार्वाक दर्शन कितने पदार्थ मानता है?— चार
 1. पृथ्वी 2. जल 3. तेज 4. वायु
➢ 'मरण ही अपवर्ग' है, ऐसा मानता है— चार्वाक दर्शन (मरणमेवापवर्गः)
➢ नास्तिक, अनीश्वरवादी दर्शन कहा जाता है— चार्वाक दर्शन
➢ प्रत्यक्षवादी, सुखवादी और भौतिकवादी दर्शन कहा जाता है— चार्वाक दर्शन
➢ यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
➢ भस्मीभूतस्य जीवस्य पुनरागमनं कुतः।। यह सम्बद्ध है— चार्वाक दर्शन से
➢ भौतिकवादी या जड़वादी दर्शन कहा जाता है— चार्वाक दर्शन
➢ देहात्मवाद, इन्द्रियात्मवाद एवं मनसात्मवाद सिद्धान्त है— चार्वाक दर्शन का
➢ ईश्वर, आत्मा, परमात्मा और परलोकादि में विश्वास नहीं करता है— चार्वाक दर्शन

जैन दर्शन

- जैन दर्शन है— नास्तिक
- जैन दर्शन के आदि तीर्थंकर थे— ऋषभदेव
- जैन दर्शन के अन्तिम तीर्थंकर थे— महावीर
- जैन दर्शन कितने पदार्थ मानता है?— 7
- जैन दर्शन कितने प्रमाण मानता है?— दो
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
- जैन दर्शन में मोक्ष के साधन हैं— तीन
  1. सम्यक् दर्शन 2. सम्यक् ज्ञान 3. सम्यक् चरित्र
- तीनों साधनों को जैन दर्शन में कहा गया है— रत्नत्रय
- अनेकान्तवाद सिद्धान्त है— जैनदर्शन का
- जैनदर्शन है— अनीश्वरवादी दर्शन
- मोक्ष को मानता है— जैनदर्शन
- जैनदर्शन के कितने सम्प्रदाय हैं?— दो 1. श्वेताम्बर 2. दिगम्बर
- स्याद्वाद और सप्तभङ्गीनयवाद सिद्धान्त है— जैनदर्शन का

बौद्ध दर्शन

- बौद्ध दर्शन है— नास्तिक
- बौद्ध दर्शन के संस्थापक हैं— गौतम बुद्ध
- बौद्ध धर्म के मुख्य पिटक हैं— तीन
  1. सुत्तपिटक, 2. विनयपिटक, 3. अभिधम्मपिटक
- बुद्ध के उपदेश हैं— सुत्तपिटक में
- आचार सम्बन्धी ग्रन्थ हैं— विनयपिटक
- दार्शनिक विषयों का विवेचनात्मक ग्रन्थ है— अभिधम्मपिटक
- द्वादश निकाय को कहा जाता है— भवचक्र
- द्वादश निकायों (निदानों) का अन्य नाम है— प्रतीत्यसमुत्पाद
- बुद्ध का मौलिक सिद्धान्त माना जाता है— प्रतीत्यसमुत्पाद

- बौद्ध दर्शन के साधन हैं— तीन 1. शील 2. समाधि 3. प्रज्ञा
- बौद्ध दर्शन के आर्यसत्य हैं— चार
  1. दुःख 2. दुःख समुदय 3. दुःख निरोध 4. दुःखनिरोधगामिनी
- बौद्ध दर्शन का एकमात्र पदार्थ है— विज्ञान
- चतुर्थ आर्यसत्य को कहा जाता है— अष्टांगिक मार्ग
- बौद्ध दर्शन को कितने सम्प्रदायों में विभक्त किया गया है— चार
  1. वैभाषिक (बाह्यार्थवाद), 2. सौत्रान्तिक (बाह्यार्थनुमेयवाद), 3. योगाचार (विज्ञानवाद), 4. माध्यमिक (शून्यवाद)
- बौद्धदर्शन नहीं मानता है— ईश्वर तथा आत्मा को
- 'असत्ख्यातिवाद' है— माध्यमिक का
- 'आत्मख्यातिवाद' है— योगाचार का
- विज्ञानवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद और अनात्मवाद सिद्धान्त है— बौद्धदर्शन का

सांख्य दर्शन

- सांख्यदर्शन के प्रवर्तक हैं— कपिल मुनि
- द्वैतवादी विचारधारा है— सांख्यदर्शन में
- सांख्यदर्शन में कुल पदार्थ हैं— 25
- कपिलमुनि का शिष्य था— पञ्चशिख
- सत्यकार्यवाद और परिणामवाद सिद्धान्त है— सांख्यदर्शन का
- सांख्यदर्शन कितने प्रमाण मानता है— तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
- भारतीय दर्शनों में अत्यन्त प्राचीन दर्शन है— सांख्य
- द्वैतवादी दर्शन है— सांख्यदर्शन
- सांख्य कितने प्रकार का दुःख मानता है?— तीन
  1. आधिदैविक 2. आधिभौतिक 3. आध्यात्मिक
- सांख्य दर्शन कितने प्रकार का मोक्ष मानता है?— दो
  1. जीवन्मुक्ति 2. विदेहमुक्ति

- कार्यकारण के सिद्धान्त को कहते हैं—सत्कार्यवाद
- सांख्यदर्शन से सम्बद्ध उपनिषद् है—श्वेताश्वतरोपनिषद्
- विष्णु के पाँचवे अवतार माने जाते हैं—कपिलमुनि
- श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार कपिल मुनि की माँ का नाम था—देवहूति
- श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार कपिलमुनि के पिता का नाम था—कर्दम
- सांख्यदर्शन नहीं मानता है—ईश्वर को

योगदर्शन

- योगदर्शन के प्रणेता हैं—महर्षि पतञ्जलि
- योगसूत्र के प्रणेता हैं—महर्षि पतञ्जलि
- योगदर्शन का आधार है—योगसूत्र
- योगदर्शन में कितने पाद हैं?—चार
  1. समाधिपाद 2. साधनपाद 3. विभूतिपाद 4. कैवल्यपाद
- योगदर्शन पर लिखा गया सबसे प्राचीन भाष्य है—व्यासभाष्य (शारीरकभाष्य)
- योगदर्शन पर सर्वप्रथम भाष्य लिखा था—व्यास ने
- 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:' यह लक्षण है—योग का
- योगदर्शन कितने पदार्थ (तत्त्व) मानता है— 26
- योगदर्शन कितने प्रमाण मानता है?—तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
- याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार योग के वक्ता हैं—हिरण्यगर्भ
- योगदर्शन में सूत्रों की कुल संख्या है—195
- 'व्यासभाष्य' पर तत्त्ववैशारदी' नामक टीका लिखी थी—वाचस्पति मिश्र ने
- 'तत्त्ववैशारदी' पर 'पातञ्जलरहस्य' नामक टीका लिखी थी—राघवानन्द ने
- ईश्वर को मानता है—योगदर्शन

न्यायदर्शन

- न्यायदर्शन के प्रणेता हैं—महर्षि गौतम
- अक्षपाद दर्शन कहा जाता है—न्याय दर्शन
- तर्क प्रधान दर्शन है—न्याय दर्शन
- तर्कशास्त्र और प्रमाणशास्त्र कहा जाता है—न्यायदर्शन को
- न्यायदर्शन में कुल पदार्थ हैं— 16
- न्यायदर्शन में कितने प्रमाण हैं?—चार
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द
- 'आरम्भवाद' यह सिद्धान्त है—न्यायदर्शन का
- 'न्यायसूत्र' पर भाष्य लिखा था—वात्स्यायन ने
- न्यायसूत्र में कुल अध्याय हैं—पाँच
- न्यायशास्त्र को बाँटा जाता है—दो भागों में
  1. प्राचीन न्यायशास्त्र 2. नव्य न्यायशास्त्र
- नव्य न्याय के प्रणेता हैं—गंगेशोपाध्याय
- 'पद' शब्द का अर्थ कहा गया है—पदार्थ में
- जीवन्मुक्ति को स्वीकार नहीं करते हैं—नैयायिक
- ज्ञान की प्रत्यक्षता को नहीं स्वीकार करते हैं—नैयायिक

वैशेषिक दर्शन

- वैशेषिक दर्शन के प्रणेता हैं—कणाद
- 'विशेष' नामक एक विलक्षण पदार्थ को मानने के कारण कहा गया है—वैशेषिक
- औलूक्य दर्शन कहा जाता है—वैशेषिक दर्शन को
- वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की संख्या है—7
- वैशेषिक दर्शन में गुणों की संख्या है—24
- वैशेषिक दर्शन में कर्म की संख्या है—5
- वैशेषिक दर्शन में द्रव्य की संख्या है—9

➢ वैशेषिक दर्शन में अभाव की संख्या है—4
➢ वैशेषिक कितने प्रमाण मानता है?—दो
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान

पूर्वमीमांसा

➢ मीमांसा के प्रणेता हैं—आचार्य जैमिनि
➢ ईश्वर को नहीं मानता है—मीमांसा
➢ 'मीमांसा' का अर्थ है—विचार
➢ जैमिनिसूत्र में अध्यायों की संख्या है—16
➢ प्रथम 12 अध्याय को कहा गया है—द्वादशलक्षणी
➢ जैमिनिसूत्र में कुल सूत्रों की संख्या है—2644
➢ जैमिनिसूत्र में कुल अधिकरणों की संख्या है—909
➢ मीमांसासूत्र पर प्राप्त सर्वप्रथम व्याख्या का नाम है—शाबरभाष्
➢ 'शाबरभाष्य' के प्रणेता थे—शबरस्वामी
➢ कुमारिलभट्ट कितने प्रमाण मानते हैं?—6
➢ 'ख्यातिवाद यह सिद्धान्त है—कुमारिलभट्ट का
➢ 'विपरीतख्यातिवाद' या अन्यथाख्यातिवाद सिद्धान्त है—कुमारिल
का
➢ प्रभाकर कितने प्रमाण मानते हैं?—5
➢ मीमांसा कितने अवयव मानता है?—तीन
➢ भट्टमत कितने सन्निकर्ष मानते हैं?—दो
1. संयोग 2. संयुक्ततादात्म्य
➢ प्रभाकर कितने सन्निकर्ष मानते हैं?—तीन
1. संयोग 2. संयुक्तसमवाय 3. समवाय
➢ वेद को अपौरुषेय मानता है—मीमांसा
➢ 'अख्यातिवाद' यह सिद्धान्त है—प्रभाकर का
➢ प्रभाकर और नैयायिक स्वतन्त्र प्रमाण नहीं मानते हैं—अनुपलब्धि

➢ स्वतः प्रामाण्यवाद परतः अप्रामाण्यवाद को मानते हैं—मीमांसक
➢ कुमारिल का सिद्धान्त किस नाम से प्रसिद्ध है?—ज्ञाततावाद
➢ प्रभाकर का ज्ञान किस नाम से प्रसिद्ध है?—त्रिपुटीप्रत्यक्षवाद
➢ प्रभाकर पदार्थों की संख्या मानते है?—8
➢ कुमारिल पदार्थों की संख्या मानते हैं?—5
➢ मीमांसादर्शन जगत् को मानता है—सत्य
➢ आत्मा को आमर मानता है—मीमांसा
➢ मीमांसा दर्शन में आत्मा को माना गया है—एक द्रव्य
➢ कर्मकाण्डपरक है—मीमांसा
➢ मीमांसा दर्शन का प्रधान उद्देश्य है—धर्म की व्याख्या करना

उत्तरमीमांसा (वेदान्त दर्शन)

➢ उत्तरमीमांसा अर्थात् वेदान्त के आचार्य हैं—शङ्कराचार्य
➢ वेदान्त दर्शन का तात्पर्य है—अद्वैतवेदान्त से
➢ अद्वैतवेदान्त के प्रवर्तक हैं—शङ्कराचार्य
➢ वेदान्त का मूलग्रन्थ है—ब्रह्मसूत्र
➢ 'ब्रह्मसूत्र' कृति है—बादरायण की
➢ 'ब्रह्मसूत्र के भाष्यकार हैं—शङ्कराचार्य
➢ प्रस्थानत्रयी (गीता,उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र) के प्रथम भाष्यकार हैं—शङ्कराचार्य
➢ अद्वैत के प्रथम आचार्य हैं—गौड़पादाचार्य
➢ वेदान्त का प्रसिद्ध सिद्धान्त है—मायावाद
➢ 'अनिर्वचनीय' कहा गया है—माया को
➢ 'विवर्तवाद' सिद्धान्त है—अद्वैतवेदान्त का
➢ अद्वैतवेदान्त कितने प्रमाण मानता है?—6
➢ 'अनिर्वचनीयख्यातिवाद' सिद्धान्त है—शङ्कराचार्य का
➢ वैष्णव सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य हैं—रामानुज

➤ 'विशिष्टाद्वैत' सिद्धान्त है– रामानुज का
➤ 'द्वैताद्वैत' सिद्धान्त है– निम्बार्क आचार्य का
➤ 'द्वैतवाद' सिद्धान्त है– मध्वाचार्य का
➤ विष्णु को परमात्मा मानते हैं– मध्वाचार्य
➤ 'शुद्धाद्वैत' सिद्धान्त है– वल्लभाचार्य का
➤ 'ब्रह्म' को सत्य मानते हैं– शङ्कर
➤ जगत् को मिथ्या मानते हैं– शङ्कर
➤ 'श्रीभाष्य' के प्रणेता हैं– रामानुजाचार्य
➤ 'भास्करभाष्य' के प्रणेता हैं– भास्कराचार्य
➤ 'अणुभाष्य' के प्रणेता हैं– वल्लभाचार्य
➤ 'वेदान्तपारिजातभाष्य' के प्रणेता हैं– निम्बार्काचार्य
➤ 'पूर्णप्रज्ञभाष्य' के प्रणेता हैं– मध्वाचार्य
➤ 'शैव-विशिष्टाद्वैत' सिद्धान्त है– श्रीकण्ठ का
➤ 'शैवभाष्य' के प्रणेता है– श्रीकण्ठ
➤ 'वीरशैव विशिष्ट' सिद्धान्त है– श्रीपति का
➤ 'श्रीकरभाष्य' के प्रणेता हैं– श्रीपति
➤ 'अविभागाद्वैत' सिद्धान्त है– विज्ञानभिक्षु का
➤ 'सत्ख्याति' सिद्धान्त है– रामानुज का



सांख्यकारिका

➤ सांख्यदर्शन के प्रणेता हैं– कपिल मुनि
➤ सांख्यकारिका से सम्बन्धित दर्शन है– सांख्य
➤ 'सांख्यसप्तति' के नाम से जाना जाता है– सांख्यकारिका
➤ सांख्यकारिका के रचनाकार हैं– श्री ईश्वरकृष्ण
➤ सांख्यकारिका में कारिकाएँ हैं– 70
➤ सांख्यदर्शन का प्रमुख आधार है– सत्कार्यवाद
➤ सत्कार्यवाद के रूप हैं– दो 1. परिणामवाद 2. विवर्तवाद
➤ ईश्वर के अस्तित्त्व को स्वीकार नहीं करता है– सांख्यदर्शन
➤ 'षष्टितन्त्र' के रचयिता हैं– पञ्चशिख
➤ 'पञ्चशिख' शिष्य हैं– कपिल मुनि के
➤ सांख्यकारिका का सम्पूर्ण ग्रन्थ निबद्ध है– आर्या छन्द में
➤ पुरुष और प्रकृति दोनों हैं– नित्य तत्त्व [1]
➤ सृष्टि का आदि कारण है– प्रकृति
➤ सांख्यकारिका में पदार्थ (तत्त्व) हैं– 25
➤ सांख्यकारिका में प्रमाण हैं–तीन 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
➤ सांख्यकारिका का मुख्य सिद्धान्त है– सत्कार्यवाद
➤ सांख्यसप्तति, हिरण्यसप्तति या सुवर्णसप्तति के रूप में स्वीकार किया गया है– सांख्यकारिका
➤ दुःख के प्रकार हैं–तीन
1. आध्यात्मिक 2. आधिभौतिक 3. आधिदैविक
➤ आध्यात्मिक दुःख हैं–दो 1. शारीरिक 2. मानसिक
➤ वात, पित्त की विषमता के कारण होने वाला दुःख है– शारीरिक (जैसे–ज्वर)

1. सांख्यकारिका - राकेश शास्त्री

➢ शारीरिक दुःख के प्रकार हैं—दो
1. नैसर्गिक 2. त्रिदोषजन्य
➢ भूखादि दुःख हैं—नैसर्गिक
➢ ज्वरादि दुःख हैं—त्रिदोषजन्य
➢ काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्या तथा ईच्छित वस्तु की प्राप्ति न होने पर दुःख होता है—मानसिक
➢ पशु, पक्षी, सर्प, मनुष्य आदि से उत्पन्न दुःख है—आधिभौतिक
➢ जिन्हें हम देख सकते हैं, उनसे होने वाला दुःख है—आधिभौतिक
➢ प्रत्यक्ष न दिखाई देने वाले देवयोनियों से होने वाला दुःख है—आधिदैविक
➢ यक्ष, राक्षस, भूत-प्रेत, किन्नर, ग्रह, दैवी प्रकोप से होने वाला दुःख है—आधिदैविक
➢ दुःख का अनिवार्य रूप से नष्ट होना कहलाता है—ऐकान्तिक
➢ दुःख का हमेशा के लिए समाप्त होना कहलाता है—आत्यन्तिक
➢ आनुश्रविक उपाय हैं—वेद
➢ मूल प्रकृति है—कारण
➢ महत्, अहङ्कार एवं पञ्चतन्मात्राएँ हैं—कारण एवं कार्य
➢ विकार नहीं है—प्रकृति
➢ सोलह पदार्थों का समुदाय केवल है—विकार (कार्य)
➢ किसी का कारण और विकार नहीं होता है—पुरुष
➢ अविकृति है—प्रकृति
➢ प्रकृति से उत्पन्न होता है—महत् (बुद्धि)
➢ महत् से उत्पन्न होता है—अहङ्कार
➢ अहङ्कार से उत्पन्न होते हैं— 16 पदार्थ
➢ पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन तथा पञ्चतन्मात्राएँ हैं— 16 पदार्थ
➢ पञ्चतन्मात्रा से उत्पत्ति होती है— पञ्चमहाभूतों की
➢ 16 पदार्थों का कारण है— अहंकार
➢ अहंकार के कार्य हैं— 16 पदार्थ

➢ महत् का कार्य है— अहंकार
➢ अहंकार का कारण है— महत्
➢ सृष्टि का आदि कारण है— प्रकृति
➢ प्रकृति का अन्य नाम है— प्रधान
➢ नित्य, व्यापक, निष्क्रिय, एक, अनाश्रित, निरवय, स्वतन्त्र ये सभी विशेषण हैं— प्रकृति के
➢ महत्, अहंकार, मन और 16 पदार्थ हैं— व्यक्त
➢ मूल प्रकृति है— अव्यक्त
➢ न व्यक्त, न अव्यक्त है— पुरुष
➢ सांख्यकारिका के 25 तत्त्व हैं—प्रकृति, महत्, अहंकार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, मन, पञ्चतंमात्राएँ, पञ्चमहाभूत, पुरुष।
➢ **पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ**— श्रोत्र, नेत्र, घ्राण, त्वक्, रसना।
पञ्चकर्मेन्द्रियाँ— वाक्, पाणि, पाद, वायु, उपस्थ।
पञ्चतन्मात्राएँ— शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।
पञ्चमहाभूत— आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी।
➢ 'हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गं, सावयवं परतन्त्रम्' यह है—व्यक्त
➢ 23 व्यक्त पदार्थों की उत्पत्ति होती है—अव्यक्त से
➢ व्यक्त और अव्यक्त में होते हैं—त्रिगुण
➢ अविवेकी, विषय, सामान्य, अचेतन, प्रसवधर्मि है—व्यक्त और अव्यक्त[1]
➢ गुणरहित, विवेकी, अविषय, असामान्य, चेतन, अप्रसवधर्मि है—पुरुष
➢ प्रकृति की स्वतन्त्र सिद्धि के पञ्च हेतु तत्त्व हैं—
1. परिमाणात् 2. समन्वयात् 3. शक्तितः
4. कारणकार्यविभागात् 5. अविभागाद् वैश्वरूपस्य
➢ 'तद्विपरीतस्तथा च' इस कारिका से सम्बद्ध है— पुरुष

1. सांख्यकारिका—राकेश शास्त्री पृ.सं. 38-41

- प्रकृति है— त्रिगुणात्मिका
- 'त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यचेतनं प्रसवधर्मि व्यक्तं तथा प्रधानम्' यह परिभाषा है—प्रकृति का
- 'न प्रकृतिर्न विकृतिः' यह है—पुरुष
- 'अविकृतिः' कौन है?—प्रकृति
- प्रमेय की सिद्धि होती है—प्रमाण द्वारा
- सांख्याकारिका में प्रमाण हैं—तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
- 'प्रतिविषयाध्यवसायो' यह है— प्रत्यक्ष प्रमाण
- अनुमान के भेद हैं—तीन
  1. पूर्ववत् 2. सामान्यतोदृष्ट 3. शेषवत्
- 'लिङ्गलिङ्गिपूर्वकम्-अनुमानम्' यह लक्षण है— अनुमान का
- साधन और साध्य पर आधारित प्रमाण है— अनुमान
- श्रुतिवाक्य है— शब्द प्रमाण
- 'अतीन्द्रियाणां प्रतीतिः' यह है—सामान्यतोदृष्ट अनुमान
- किस कारण से प्रत्यक्ष नहीं होता है?—सूक्ष्मता, अत्यधिक दूरी आदि के कारण
- सत्कार्यवाद के साधन हेतु हैं— 5
- सत्कार्यवाद का कारण है— असदकरणात्
- सत्कार्यवाद का कारण है— उपादानग्रहणात्,
- सत्कार्यवाद का कारण है— सर्वसम्भवाभावात्
- सत्कार्यवाद का कारण है— शक्तस्य शक्यकरणात्
- सत्कार्यवाद का कारण है— कारणभावात्
- पुरुष की स्वतन्त्र सिद्धि निमित्त तत्त्व हैं—पाँच
  1. संघात, परार्थत्वात् 2. त्रिगुणादिविपर्ययात् 3. अधिष्ठानात् 4. भोक्तृभावात् 5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः
- सांख्य में 'अत्रिगुण, विवेकी, असामान्य, चेतन, साक्षी, द्रष्टा' कहा गया है— पुरुष को

- अप्रसवधर्मी कहा गया है— पुरुष को
- माध्यस्थ है—पुरुष
- 'भोक्तृभाव' किसकी सत्ता के लिए है?—पुरुष की
- पुरुष बहुत्व को स्वीकार करता है— सांख्यदर्शन
- 'जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च' यह सम्बद्ध है— 'पुरुषबहुत्वम्' से
- सांख्य में गुण हैं—तीन 1. सत्त्व 2. रजस् 3. तमस्
- प्रीत्यात्मक है— सत्त्वगुण
- अप्रीत्यात्मक है— रजोगुण
- विषादात्मक है— तमोगुण
- 'अन्योऽन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः' यह है—तीनों गुण
- रजोगुण है— गतिशील
- लघु एवं प्रकाशक होता है— सत्त्व गुण
- 'उपष्टम्भकम्' (प्रेरक) और 'चलम्' (चलाने वाला) होता है—रजोगुण
- गुरु आवरण वाला होता है— तमोगुण
- अविवेकित्व आदि धर्मों की सत्ता किसके कारण सिद्ध होती है?— त्रिगुण के
- 'माध्यस्थ्यं द्रष्टृत्वमकर्तृभावश्च' यह सम्बद्ध है—पुरुष से
- चेतन है—पुरुष
- जड़ है—प्रकृति
- सृष्टि का प्रयोजन किसको मोक्ष दिलाना है?— पुरुष को
- पुरुष और प्रकृति का संयोग किसके समान होता है?—अंधे और लंगड़े
- पुरुष है— लंगड़ा
- प्रकृति है— अंधी
- 'पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः' यह है— सर्ग
- प्रकृति की विकृति है— बुद्धि
- सत्त्व, रजस् और तमस् की साम्यावस्था का ही नाम है—मूलप्रकृति

- बुद्धि, मति, प्रत्यय, महान् एवं उपलब्धि ये नाम हैं—'महत्' के
- सत्त्वगुण प्रधान अहंकार से उत्पन्न होते हैं—5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ और मन
- तमोगुण प्रधान अहंकार से उत्पन्न होती हैं— पञ्चतन्मात्राएँ
- 'अध्यवसायो' यह है— बुद्धि
- अध्यवसाय का अर्थ है— निश्चय
- बुद्धि के भेद हैं— आठ
- धर्म, ज्ञान, विराग, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, राग और अनैश्वर्य ये हैं— बुद्धि के 8 धर्म
- धर्म, ज्ञान, विराग, ऐश्वर्य ये चार सात्त्विक गुण की प्रधानता के कारण है— सात्त्विक रूप
- अधर्म, अज्ञान, राग, अनैश्वर्य ये चार हैं— तामसिक रूप
- विराग हैं— 4
- 'यतमान, व्यतिरेक, एकेन्द्रिय, वशीकरण' ये चार भेद हैं— विराग के
- ऐश्वर्य हैं—आठ

  1. अणिमा 2. लघिमा 3. गरिमा 4. महिमा 5. प्राप्ति
  6. प्राकाम्य 7. वशित्व 8. ईशित्व
- बुद्धि के दो भेद हैं— सात्त्विक, तामसिक
- सृष्टि विकास क्रम के प्रकार हैं—दो 1. प्रत्यय सर्ग 2. तन्मात्र सर्ग
- तन्मात्र सर्ग को कहते हैं— भौतिक सर्ग या लिङ्ग सर्ग
- प्रत्यय सर्ग को कहते हैं— बुद्धि सर्ग या भावसर्ग
- प्रत्यय सर्ग हैं— 4
- विपर्यय हैं— 5
- विपर्यय का अर्थ है— मिथ्याज्ञान
- अशक्ति के प्रकार हैं— 28
- तुष्टि के भेद हैं— 9
- सिद्धि के प्रकार हैं— 8
- तमस्, मोह, महामोह, तामिस्र एवं अन्धतामिश्र भेद हैं— विपर्यय के

- तमस् के भेद हैं— 8
- मोह के भेद हैं— 8
- महामोह के भेद हैं— 10
- तामिस्र के भेद हैं— 18
- अन्धतामिश्र के भेद हैं— 18
- प्रत्ययसर्ग के भेदोपभेद हैं— 50
- 9 तुष्टियों को बांटा जाता है—दो भागों में

  1. आध्यात्मिक (आन्तरिक) 2. बाह्य
- 'प्रकृति, उपादान, काल, भाग' ये चारों हैं— आध्यात्मिक तुष्टि
- पार, सुपार, पारापार, अनुत्तमाम्भस्, उत्तमाम्भस् ये हैं—बाह्य तुष्टि
- 'पुरुषार्थ' की निष्पत्ति ही है— सिद्धि
- 'अध्ययन, शब्द, तर्क (ऊह), दान, सुहृत्प्राप्ति, त्रिविध दुःख' ये आठ हैं— सिद्धि
- सिद्धियाँ मुख्य रूप से कितने प्रकार की होती हैं?—दो

  1. मुख्य 2. गौण
- आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक तीन प्रकार के दुःखों का विनाश करने वाली तीन सिद्धियाँ हैं— मुख्य
- अध्ययन, शब्द, ऊह, सुहृत्प्राप्ति एवं दान ये सिद्धियाँ हैं— गौण
- भौतिक सृष्टि के भेद हैं— तीन 1. देव 2. तिर्यक 3. मनुष्य
- भौतिक सृष्टियाँ हैं— 14
- देवसृष्टि के प्रकार हैं—छः

  1. ब्राह्म 2. प्राजापत्य 3. ऐन्द्र 4. पैत्र 5. गान्धर्व 6. याक्ष
- तिर्यक् सृष्टि के प्रकार हैं—पाँच

  1. पशु 2. पक्षी 3. मृग 4. सरीसृप 5. स्थावर
- मनुष्य सृष्टि के प्रकार हैं— एक
- गुणों की दृष्टि से भौतिक सृष्टि हैं— तीन

  1. उत्तम 2. मध्यम 3. अधम
- ऊर्ध्व (उत्तमलोक) है— सत्त्वगुण प्रधान

- उत्तमलोक को कहा जाता है— देवसृष्टि
- मध्यम लोक (मानुषी सृष्टि) है— रजोगुण प्रधान
- अधम लोक (तिर्यक् सृष्टि) है— तमोगुण प्रधान
- सांख्य कितने प्रकार का शरीर मानता है?—दो
  1. सूक्ष्म शरीर (लिंग शरीर) 2. स्थूल शरीर
- महत्, अहंकार, मन, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, पञ्चतन्मात्रा ये 18 हैं—सूक्ष्म शरीर
- सूक्ष्म शरीर हैं—18
- सूक्ष्म शरीर के अवयव हैं—18
- अहंकार हैं—तीन
- करण कुल हैं—तेरह
- करण कितने हैं?—दो 1. अन्तःकरण 2. बाह्यकरण
- मुख्य करण है—अन्तःकरण
- अन्तःकरण के प्रकार हैं—तीन 1. बुद्धि 2. अहंकार 3. मन
- बाह्यकरण हैं— दस, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ
- अन्तःकरण होते हैं— त्रिकालिक
- धर्म से प्राप्ति होती है— ऊर्ध्वलोक की
- ऊर्ध्वलोक हैं—भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्
- अधोलोक हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल
- अधर्म से प्राप्ति होती है— अधोलोक की
- ज्ञान से माना गया है— मोक्ष की प्राप्ति
- सांसारिक बन्धनों की प्राप्ति होती है— अज्ञान से
- अज्ञान से होने वाला बन्धन कितने प्रकार का माना गया है?— तीन
  1. प्राकृतिक 2. वैकृतिक 3. दाक्षिणक
- सांख्य कितने प्रकार का मोक्ष मानता है?—दो
  1. जीवनमुक्ति 2. विदेहमुक्ति
- सांख्य दर्शन में सर्वाधिक सुकुमार है— प्रकृति



वेदान्तसार

- वेदान्तसार के रचनाकार हैं— आचार्य सदानन्द योगी
- वेदान्तसार है— प्रकरण ग्रन्थ
- आचार्य सदानन्द योगी का समय निर्धारित किया गया है—16वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध [1]
- आचार्य सदानन्द के गुरु का नाम था— अद्वयानन्द
- वेदान्तसार सम्बन्धित है—अद्वैतवेदांत से
- वेदान्तसार में कुल गद्य खण्ड हैं— 37
- वेदान्तसार पर लिखी गयी टीका 'सुबोधिनी' के रचनाकार हैं—नृसिंह सरस्वती
- वेदान्तसार पर लिखी गयी टीका 'बालबोधिनी' के रचनाकार हैं—आपदेव
- वेदान्तसार पर लिखी गयी टीका 'विद्वन्मनोरञ्जनी' के रचनाकार हैं—स्वामीरामतीर्थ
- वेदान्तसार के मङ्गलाचरण में किसका स्मरण किया गया है?—परमात्मा का
- वेदान्तसार के दूसरे श्लोक में आराधना की गयी है—अद्वयानन्द की
- 'वेदान्तो नाम-उपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरकसूत्रादीनि च' यह कथन सम्बंधित है—वेदान्त से
- 'अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि' इसे कहा गया है—अनुबन्धचतुष्टय
- अनुबन्धचतुष्टय हैं—चार
  1. अधिकारी 2. विषय 3. सम्बन्ध 4. प्रयोजन
- 'साधनचतुष्टय' कहा गया है— अधिकारी को
- 'प्रमाता' विशेषण है— अधिकारी का
- साधनचतुष्टय सम्पन्न कहा जाता है— अधिकारी को
- 'ज्योतिष्टोम' आदि कर्म हैं— काम्य कर्म

---
1. वेदान्तसार— डॉ. राकेश शास्त्री

- ब्राह्मणहननादि कर्म हैं— निषिद्ध कर्म
- 'स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टोमादीनि' यह है— काम्य कर्म
- 'नरकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहननादीनि' यह है— निषिद्ध कर्म
- कर्म के प्रकार हैं— चार
  1. नित्य 2. नैमित्तिक 3. प्रायश्चित्त 4. उपासना
- 'सन्ध्यावन्दन' है— नित्य कर्म
- 'नित्यान्यकरणे प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि' यह है— नित्यकर्म
- 'पुत्रजन्माद्यनुबन्धीन जातेष्ट्यादीनि' यह है— नैमित्तिक कर्म
- 'जातेष्टिआदि' है— नैमित्तिक कर्म
- 'चान्द्रायणव्रतादि' कर्म हैं— प्रायश्चित कर्म
- 'पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि' यह है— प्रायश्चित कर्म
- शाण्डिल्य विद्या किसके अन्तर्गत है?— उपासना के
- 'सगुणब्रह्मविषयमानसव्यापाररूपाणि शाण्डिल्यविद्यादीनि' ये हैं— उपासना कर्म
- 'जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात्' यह सम्बन्धित है— विषय से
- इस ग्रन्थ का मुख प्रतिपाद्यविषय है— जीव और ब्रह्म की एकता
- जीव और ब्रह्म की एकता है— विषय
- 'सम्बन्धस्तु तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोपनिषत्प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः' यह है— सम्बन्ध
- 'प्रयोजनं तु तदैक्यप्रमेयगताज्ञाननिवृत्तिः स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च' यह है— प्रयोजन
- 'बोध्यबोधकभावः' यह है— सम्बन्ध
- 'स्वस्वरूपानन्दावाप्तिश्च' यह है— प्रयोजन
- अज्ञान की निवृत्ति होने से आत्मदर्शन द्वारा चरम आनन्द की प्राप्ति है— प्रयोजन
- उपनिषद् को प्रमाण मानकर चलने वाला शास्त्र वस्तुतः कहा गया है— वेदान्त

- साधनचतुष्टय हैं— चार
  1. नित्य-अनित्य वस्तुविवेक 2. इह-अमुत्रार्थफलभोगविराग
  3. शमादिषट्कसम्पत्ति 4. मुमुक्षुत्व
- नित्य-अनित्य वस्तुविवेक है— साधनचतुष्टय
- इहामुत्रार्थफलभोगविराग है— साधनचतुष्टय
- शमादिषट्क सम्पत्ति है— साधनचतुष्टय
- मुमुक्षुत्व है— साधनचतुष्टय
- नित्य वस्तु है— ब्रह्म
- ब्रह्म ही एकमात्र है— नित्य वस्तु
- 'ततोऽन्यदखिलम्' यह है— अनित्य
- ब्रह्म के अतिरिक्त सब कुछ है— अनित्य
- सभी इहलौकिक पदार्थों के प्रति अनित्यता की भावना को धारण करके प्रमाता द्वारा वैराग्य ग्रहण करना ही कहलाता है— इहफलभोगविराग
- 'इह' का अभिप्राय है— पृथ्वीलोक
- 'तेभ्यो नितरां विरतिः' यह है— इहामुत्रार्थफलभोगविराग
- 'ऐहिकानां स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगानां कर्मजन्यतयाऽनित्यत्ववदामुष्मिकाणामप्यमृतादिविषयभोगानामनित्यतया तेभ्यो नितरां विरतिः' यह परिभाषा है— इहामुत्रार्थफलभोगविराग की
- विराग से अभिप्राय है— अरुचि, घृणा, उपेक्षा आदि वैराग्य भाव से
- साधनचतुष्टय का तृतीय साधन है— शमादि
- शमादि क्रमशः हैं— छः
  1. शम 2. दम 3. उपरति 4. तितिक्षा 5. समाधान 6. श्रद्धा
- 'शमस्तावच्छ्रवणादिव्यक्तिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः' यह परिभाषा है— शम की
- सांसारिक विषयों से अन्तरिन्द्रिय मन का निग्रह करके वेदों के श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि में लगाना ही है— शम
- 'दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषेभ्यो निवर्तनम्' यह परिभाषा है— दम की

- बाह्य ज्ञानेन्द्रियों को उनके विषयों से रोकते हुए ब्रह्मसाक्षात्कार के साधन श्रवण, मननादि में लगाना कहा जाता है– दम
- बाह्य इन्द्रियाँ होती हैं– दो 1. कर्मेन्द्रियाँ 2. ज्ञानेन्द्रियाँ
- 'निवर्तितानामेतेषां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्य उपरमणमुपरतिः' यह परिभाषा है– उपरति की
- 'विहितानां कर्मणां विधिना परित्यागः' यह है– उपरति
- इन्द्रियों को पुनः विषयों की ओर जाने से रोकना है– उपरति
- मन का कार्य-व्यापार है– उपरति
- संन्यास आश्रम को स्वीकार करके शास्त्रोक्तरीति से उनका परित्याग करना है– उपरति
- 'तितिक्षा शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता' यह परिभाषा है– तितिक्षा की
- शीत-उष्ण, मान, अपमान को शरीर का धर्म मानकर आत्म-ज्ञानपूर्वक इन सबको सहन करना है– तितिक्षा
- 'निगृहीतस्य मनसः श्रवणादौ तदनुगुणविषये च समाधिः समाधानम्' यह परिभाषा है– समाधान की
- 'गुरूपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः श्रद्धा' यह परिभाषा है– श्रद्धा की
- 'मुमुक्षत्वं मोमेच्छा' यह है– मुमुक्षुत्व
- मोक्ष की कामना ही है– मुमुक्षुत्व
- 'असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः' यह परिभाषा है– अध्यारोप की
- रज्जु में सर्प का मिथ्याभास है– अध्यारोप विवर्त
- शुक्ति में रजत का मिथ्याभास है– अध्यारोप विवर्त
- 'वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म' यह है– वस्तु
- 'अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु' यह है– अवस्तु
- अज्ञान आदि से लेकर सम्पूर्ण जड़ प्रपञ्च है– अवस्तु
- 'अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चित्' यह परिभाषा है– अज्ञान की
- सत् और असत् दोनों से विलक्षण है– अज्ञान

- अनिर्वचनीय कहा गया है– अज्ञान को
- त्रिगुणात्मक है– अज्ञान
- ज्ञानविरोधी है– अज्ञान
- भावरूप है– अज्ञान
- 'यत्किञ्चित्' यह विशेषण है– अज्ञान का
- त्रिविध गुण हैं– सत्त्व, रजस, तमस
- त्रिगुणात्मक अज्ञान को आचार्य शङ्कर कहते हैं– माया अथवा अविद्या
- अज्ञान के भेद हैं– दो 1. समष्टि 2. व्यष्टि
- समष्टि का अभिप्राय है– एक (जैसे– जलाशय, वन)
- व्यष्टि का अभिप्राय है– अनेक (जैसे– वृक्ष, जल)
- विशुद्ध सत्त्वप्रधान गुणयुक्त है– समष्टि
- अज्ञान की शक्ति हैं– दो 1. आवरण 2. विक्षेप
- व्यष्टि एक ही अज्ञान का प्रकाशक होने के कारण कहा जाता है– प्राज्ञ
- प्रमाता के सच्चिदानन्द स्वरूप को, जो शक्ति ढक दिया करती है, वह है– आवरण
- सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् को उत्पन्न करने वाली शक्ति है– विक्षेप
- तमोगुण प्रधान होती है– विक्षेप शक्ति
- लिङ्ग शरीर को ही कहा जाता है– सूक्ष्मशरीर
- सूक्ष्मशरीर के कितने अवयव हैं?– 17 (सत्रह) (सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि)
- सत्रह अवयवों से युक्त सूक्ष्मशरीर का ही नाम है– लिङ्गशरीर
- पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि, मन, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ तथा पञ्चवायु हैं– 17 अवयव
- लिङ्गशरीर के 17 अवयव हैं– **पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ** (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, बुद्धि, मन) **पञ्चकर्मेन्द्रियाँ** (वाक्, पाणि, पाद, वायु उपस्थ) **पञ्चवायु** (प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान)

- 'बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' यह परिभाषा है—'बुद्धि' की
- 'मनो नाम सङ्कल्पविकल्पात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' यह परिभाषा है—'मन' की
- चित्त का अन्तर्भाव होता है— बुद्धि में
- 'अनुसंधानात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' यह परिभाषा है—चित्त की
- 'अभिमानात्मिकान्तःकरणवृत्तिः' यह परिभाषा है— अहंकार की
- अहंकार का अन्तर्भाव होता है—मन में
- वेदान्तदर्शन के अनुसार जीव के शरीर होते हैं—तीन
  1. कारणशरीर 2. सूक्ष्मशरीर 3. स्थूलशरीर [1]
- आकाशादि अपञ्चीकृत सूक्ष्मभूतों के सात्त्विक गुणों से उत्पत्ति होती है—पञ्चज्ञानेन्द्रियों की [2]
- आकाश के सात्त्विक अंश से उत्पन्न होता है— श्रोत्र
- श्रोत्र का कार्य है—श्रवण करना
- वायु के सात्त्विक अंश से उत्पत्ति होती है—त्वक् की
- अग्नि के सात्त्विक अंश से उत्पत्ति होती है—चक्षु की
- जल के सात्त्विक अंश से उत्पत्ति होती है—रसना (जिह्वा) की
- पृथ्वी के सात्त्विक अंश से उत्पत्ति होती है—घ्राण की
- आकाशादि अपञ्चीकृत रजोगुण से उत्पत्ति होती है—पञ्चकर्मेन्द्रियों की [3]
- आकाश के रजोगुण के अंश से उत्पत्ति मानी जाती है—वाक् (वाणी) की
- वायु के रजोगुण के अंश से उत्पत्ति मानी जाती है— पाणि (हाथ) की

1. वेदान्तसार— राकेश शास्त्री पृ. सं. 60
2. वेदान्तसार— राकेश शास्त्री पृ. सं. 109-110
3. सं.सा.इति.—उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' पृ. सं.

- अग्नि के रजोगुण के अंश से उत्पत्ति मानी जाती है— पाद (पैर) की
- जल के रजोगुण के अंश से उत्पत्ति मानी जाती है— पायु (गुदा) की
- पृथ्वी के रजोगुण के अंश से उत्पत्ति मानी जाती है—उपस्थ (जननेन्द्रिय) की
- नासिका के अग्रभाग पर रहने वाली वायु का नाम है—प्राण
- सामने की ओर गमन करने वाली वायु का नाम है— प्राण
- 'प्राग्गमनवान्नासाग्रस्थानवर्ती' यह है—प्राण नामक वायु
- गुदा आदि स्थान पर रहने वाली वायु का नाम है—अपान
- नीचे की ओर गमन करने वाली वायु का नाम है—अपान
- 'अवाग्गमनवान्पाय्वादिस्थानवर्ती' यह है—अपान नामक वायु
- सम्पूर्ण शरीर में निवास करने वाली वायु का नाम है— व्यान
- सब ओर गमन करने वाली वायु का नाम है— व्यान
- 'विष्वग्गमनवानखिलशरीरवर्ती' यह है—व्यान नामक वायु
- ऊपर की ओर गमन एवं कण्ठ स्थान में रहने वाली वायु का नाम है— उदान
- 'कण्ठस्थानीय ऊर्ध्वगमनवानुत्क्रमणवायुः' यह है—उदान
- शरीर के मध्य भाग में स्थित वायु का नाम है— समान
- खाये-पीये अन्न एवं जल आदि को पचाने वाली वायु का नाम है—समान
- 'शरीरमध्यगताशितपीतान्नादिसमीकरणकरः' यह है—समान
- कारणशरीर के निर्माण में किन कोशत्रय की भूमिका होती है?—
  1. विज्ञानमय कोश 2. मनोमय कोश 3. प्राणमय कोश
- पञ्चज्ञानेन्द्रियों सहित बुद्धि से युक्त कोश को कहते हैं—विज्ञानम कोश
- ज्ञानशक्ति सम्पन्न विज्ञानमय कोश है—कर्त्ता
- मन से युक्त पञ्चज्ञानेन्द्रियों सहित कोश को कहते हैं—मनोमय क
- इच्छाशक्ति सम्पन्न मनोमय कोश है—करण

- पञ्चवायु और पञ्चकर्मेन्द्रिय से युक्त कोश होता है— प्राणमय कोश
- गमनादिक्रिया युक्त प्राणमय कोश है— कार्य
- विज्ञानमय, मनोमय एवं प्राणमय, ये तीनों कोश मिलकर कहलाते हैं— सूक्ष्मशरीर[4]
- स्थूल प्रपञ्च की स्थिति के कारण हैं— पञ्चीकृत महाभूत
- पञ्चीकृत महाभूतों से उत्पन्न होता है— भ्वादि लोक
- 'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः' यह उक्ति है— पञ्चीकरण की
- पञ्चीकृत महाभूतों को ही कहा जाता है— स्थूलभूत
- पञ्चीकृत महाभूतों से निर्माण होता है— स्थूलसृष्टि का
- पञ्चीकृत महाभूतों से निर्माण होता है— चौदह भुवनों का
- चौदह भुवनों में निवास करने वाले चार प्रकार के स्थूलशरीरों का निर्माण होता है— पञ्चीकृत महाभूतों से
- स्थूल शरीर होते हैं— चार
  1. जरायुज 2. अण्डज 3. स्वेदज 4. उद्भिज्ज
- मनुष्य, पशु आदि हैं— जरायुज
- पक्षी एवं सर्प आदि हैं— अण्डज
- घास एवं वृक्ष आदि हैं— उद्भिज्ज
- जूँ एवं मच्छर आदि हैं— स्वेदज
- जरायु-गर्भ से उत्पन्न होने वाले हैं— जरायुज
- अण्डों से उत्पन्न होने वाले हैं— अण्डज
- पृथ्वी को भेदकर उत्पन्न होने वाले हैं— उद्भिज्ज
- पसीने से उत्पन्न होने वाले हैं— स्वेदज
- आकाशादि पञ्चीकृत स्थूल महाभूतों द्वारा निर्माण होता है— चौदह भुवन एवं चतुर्विध स्थूल शरीर का
- 'भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्' ये सात हैं— ऊपर के भुवन

4. वेदान्तसार— राकेश शास्त्री पृ. सं. 114-115

- 'अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल', ये सात हैं— नीचे के भुवन
- आकाश में अभिव्यक्ति होती है— शब्द की
- वायु में अभिव्यक्ति होती है— शब्द एवं स्पर्श की
- अग्नि में अभिव्यक्ति होती है— शब्द, स्पर्श एवं रूप की
- जल में अभिव्यक्ति होती है— शब्द, स्पर्श, रूप एवं रस की
- पृथ्वी में अभिव्यक्ति होती है— शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध की
- वेदान्तसार में प्रमाणों की संख्या है— 6
- 'सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इति' यह है— विकार (परिणामवाद)
- 'अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इति' यह है— विवर्त
- रज्जु का विवर्त सर्प है— रज्जुमात्र
- असत्य का सत्यमात्र उद्भासित होना क्या है?— विवर्त
- 'अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तुविवर्तस्याव-स्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्' यह परिभाषा है— अपवाद की
- दूध का दही के रूप में परिवर्तित होना है— विकार (परिणाम)
- जब किसी वस्तु में अन्य वस्तु की मिथ्या प्रतीति होती है, तो वह है— विवर्त
- रस्सी में सर्प की प्रतीति होना है— विवर्त
- 'अखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः' यह है— जीवनमुक्त
- 'क्षीयन्ते चाऽस्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे' यह सम्बद्ध है— जीवनमुक्त से
- 'सचक्षुरचक्षुरिव सकर्णोऽकर्ण इव' इसका सम्बन्ध है— जीवनमुक्त से
- 'सुषुप्तवज्जाग्रति यो न पश्यति' यह कौन है?— जीवनमुक्त
- सभी कर्मबन्धनों से रहित जिसकी ब्रह्ममात्र में निष्ठा रह जाती है, उसे वेदान्त में कहा गया है— जीवनमुक्त
- वेदान्त मुक्ति का साधन मानता है— ज्ञान को
- फल की दृष्टि से कर्म के प्रकार हैं— तीन
  1. सञ्चितकर्म 2. क्रियमाणकर्म 3. प्रारब्धकर्म

- वेदान्त कितने प्रकार की सत्ता मानता है?— तीन
  1. प्रातिभासिक सत्ता 2. व्यावहारिक सत्ता 3. पारमार्थिक सत्ता
- प्रारब्ध कर्म कितने प्रकार के हैं?— तीन
  1. स्वेच्छा-प्रारब्ध 2. अनिच्छा— प्रारब्ध 3. परेच्छा— प्रारब्ध
- वेदान्त कितने प्रकार की समाधि मानता है?— दो
  1. सविकल्पक 2. निर्विकल्पक
- 'ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारिताऽयाश्चित्तवृत्तेरतितरामेकीभावेनावस्थानम्' यह परिभाषा है— निर्विकल्पक की
- 'ज्ञातृज्ञानादिविकल्पलयापेक्षयाद्वितीयवस्तुनि तदाकाराकारितायाश्चित्तवृत्तेरवस्थानम्' यह लक्षण है— सविकल्पक का
- निर्विकल्पक समाधि के अंग हैं— आठ
  1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम,
  5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान और 8. समाधि
- 'अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह' यह है— यम
- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर की आराधना है— नियम
- हाथ, पैर आदि स्थितिविशेष के बोधक पद्म एवं स्वस्तिक आदि हैं— आसन
- रेचक, पूरक और कुम्भक लक्षणों से युक्त प्राण को नियन्त्रित करने का उपाय है— प्राणायाम
- अपने-2 विषयों से इन्द्रियों को निवृत्त कर लेना है— प्रत्याहार
- अद्वितीय वस्तु (ब्रह्म) में अन्तरिन्द्रियों (मन, बुद्धि एवं चित्त) को प्रवृत्त करना है— धारणा
- अन्तरिन्द्रियों को रोक-रोककर उस अद्वितीय वस्तु (ब्रह्म) में प्रवृत्त करना ही है— ध्यान
- समाधि तो है— सविकल्पक
- निर्विकल्पक समाधि के विघ्न हैं— चार
  1. लय 2. विक्षेप 3. कषाय 4. रसास्वाद

- 'अखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा' यह है— लय
- 'अखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेरन्यावलम्बनम्' यह है— विक्षेप
- 'लयविक्षेपाभावेऽपि चित्तवृत्तेः रागादिवासनया स्तब्धीभावादखण्ड-वस्त्वनवलम्बनम्' यह है— कषाय
- 'अखण्डवस्त्वनवलम्बनेनापि चित्तवृत्तेः सविकल्पकानन्दास्वादनम्' यह है— रसास्वाद
- गौडपाद ने जीव की कितनी अवस्थाओं को कहा है?— चार
  1. जाग्रत 2. स्वप्न 3. सुषुप्ति 4. तुरीय
- वेदान्तसार में सत्ता है— दो 1. व्यावहारिक 2. प्रातिभासिक
- अनुमान प्रमाण में वेदान्ती मानते हैं— तीन अवयवों को
- लक्षणा के प्रकार हैं— तीन
  1. जहत्-लक्षणा या लक्षणलक्षणा 2. अजहत्-लक्षणा
  3. जहत् अजहत् लक्षणा या भागलक्षणा
- जहत्-लक्षणा का उदाहरण है— गंगायां घोषः
- अजहत्-लक्षणा का उदाहरण है— शोणो धावति
- जहत्-अजहत् का उदाहरण है— सोऽयं देवदत्तः
- लक्ष्यलक्षणभाव— सम्बन्ध को कहा जाता है— भागलक्षणा
- आचार्य सदानन्द तीन प्रकार के सम्बन्धों का उल्लेख किए हैं—
  1. समानाधिकरण्य सम्बन्ध 2. विशेषविशेष्यभाव सम्बन्ध
  3. लक्ष्यलक्षणभाव सम्बन्ध
- वेदान्त मत में आकाश से उत्पन्न हुआ— वायु
- वेदान्त मत में वायु से उत्पन्न हुआ— अग्नि
- वेदान्त मत में अग्नि से उत्पन्न हुआ— जल
- वेदान्त मत में जल से उत्पन्न हुई— पृथ्वी



अर्थसंग्रह

- 'मीमांसा' शब्द का अर्थ है— विचार
- 'मीमांसासूत्र' कृति है— जैमिनि की
- दर्शनशास्त्र की प्रथम सूत्र रचना है— मीमांसासूत्र
- मीमांसासूत्र में अध्याय हैं— 12
- मीमांसासूत्र को कहा जाता है— द्वादशलक्षणी
- आचार्य रामानुज ने मीमांसा दर्शन को कहा है— षोडशाध्यायी
- मीमांसासूत्र पर प्राप्त सर्वप्रथम व्याख्या का नाम है— शाबरभाष्य
- कुमारिल के शिष्य थे— प्रभाकर
- वृहती एवं लघ्वी वृत्तियाँ लिखी गयीं— प्रभाकर द्वारा
- कुमारिल का समय है— 700ई.
- कुमारिल के तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं—

  1. श्लोकवार्तिक 2. तन्त्रवार्तिक 3. टुप्टीका
- मीमांसा दर्शन में भाट्टमत के अनुयायी थे—मण्डन मिश्र
- 'विधिविवेक, भावनाविवेक, विभ्रमविवेक, मीमांसानुक्रमणिका' ये रचनाएँ हैं— मण्डन मिश्र की
- प्रभाकर मत के समर्थक थे— शालिकनाथ मिश्र
- 'ऋजु विमलापञ्चिका' के रचनाकार हैं—शालिकनाथ मिश्र
- 'दीपशिखा' के रचनाकार हैं—शालिकनाथ मिश्र
- 'प्रकरण' के रचनाकार हैं—शालिकनाथ मिश्र
- वाचस्पति मिश्र की रचनाएँ हैं—न्यायकणिका, तत्वबिन्दु, सांख्यतत्वकौमुदी, योगवैशारदी, न्यायवार्तिक, तात्पर्यटीका
- पार्थसारथि मिश्र की रचनाएँ हैं —न्यायरत्नमाला, तन्त्ररत्न, शास्त्रदीपिका, न्यायरत्नाकर

- वाचस्पति मिश्र के गुरु का नाम था— त्रिलोचन
- वाचस्पति मिश्र की पत्नी का नाम था— भामती
- पत्नी भामती की स्मृति में शांकरभाष्य के ऊपर लिखी गयी टीका है— भामती
- भाट्टमत के अनुयायी थे—पार्थसारथि मिश्र
- लौगाक्षिभाष्कर के वंश का नाम था—लौगाक्षि
- लौगाक्षिभाष्कर के पिता का नाम था—मुद्गल
- लौगाक्षिभाष्कर उपासक थे—वासुदेव एवं रमा के
- लौगाक्षिभाष्कर के दो ग्रन्थ थे—अर्थसंग्रह और तर्ककौमुदी
- 'तर्ककौमुदी' लघुकाय ग्रन्थ है--न्यायवैशेषिक का
- 'अर्थसंग्रह' ग्रन्थ है—प्रकरण ग्रन्थ
- पूर्वमीमांसा का ग्रन्थ है—अर्थसंग्रह
- 'अर्थसंग्रह' ग्रन्थ है—कर्मकाण्डपरक
- रामेश्वरशिवयोगिभिक्षुरचित अर्थसंग्रह पर महत्त्वपूर्ण संस्कृत व्याख्या है— कौमुदी
- 'अर्थसंग्रह' का अंग्रेजी अनुवाद किया है—डी.वी. गोखले ने
- मीमांसा नहीं मानता है—ईश्वर को
- मीमांसक पदार्थ मानते हैं—10
- 'अथ' शब्द यहाँ है—मंगलसूचक
- धर्मविचार शास्त्र का क्या नाम है?— मीमांसा
- वेद के अध्ययन का दृष्ट प्रयोजन है—अर्थज्ञान[1]
- प्रभाकर मतानुसार वेदाध्ययन है—अदृष्टार्थक
- याग आदि क्रिया ही है—धर्म (यागादिरेव धर्मः)
- 'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो', यह लक्षण है— धर्म का
- मीमांसा दर्शन से 'धर्म' शब्द है—पारिभाषिक
- यागादि पदार्थों को माना गया है—धर्म

---

1. अर्थसंग्रह

- अव्याप्ति, अतिव्याप्ति एवं असम्भव दोषों से रहित होता है— लक्षण
- जैमिनिसूत्र में धर्म का लक्षण है— 'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः'
- 'भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' यह लक्षण है— भावना का
- भावना के प्रकार हैं— दो 1. शाब्दीभावना 2. आर्थीभावना
- भावना का उदाहरण है— 'ओदनं पच'
- व्यापार विशेष अर्थात् क्रिया विशेष होती है— भावना
- मानसिक क्रिया है— भावना
- 'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः' यह है— वेद
- 'पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः' यह लक्षण है— शाब्दी भावना का
- 'प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार' यह लक्षण है— आर्थीभावना का
- वेद के विभाग हैं— पाँच
  1. विधि 2. मन्त्र 3. नामधेय 4. निषेध 5. अर्थवाद
- 'अज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः' यह है— विधि
- 'अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः' यह उदाहरण है— विधि का
- मीमांसा शास्त्रों में विधि का विभाजन प्राप्त होता है— त्रिविध
- प्रथम विभाजन के प्रकार हैं— तीन
  1. सामान्यविधि 2. गुणविधि 3. विशिष्टविधि
- 'यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुणमात्रं विधत्ते' यह है— गुणविधि
- 'यत्र तूभयमप्राप्तं तत्र विशिष्टं विधत्ते' यह है— विशिष्टविधि
- विशिष्टविधि का उदाहरण है— सोमेन यजेत्
- विधि का द्वितीय विभाजन है— चार
  1. उत्पत्तिविधि 2. विनियोगविधि 3. अधिकारविधि 4. प्रयोगविधि
- 'कर्मस्वरूपमात्रबोधकोविधिः' यह है— उत्पत्तिविधि

- उत्पत्तिविधि का उदाहरण है— 'अग्निहोत्रं जुहोति'
- 'प्रधानविधि' कहा जाता है— उत्पत्तिविधि को
- 'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिः' यह लक्षण है— विनियोगविधि का
- 'विनियोगविधि' का उदाहरण है— दध्ना जुहोति
- अङ्गाङ्गिभाव का बोध कराती है— विनियोगविधि
- विनियोगविधि के सहायक प्रमाण हैं— छः
  1. श्रुति 2. लिङ्ग 3. वाक्य 4. प्रकरण 5. स्थान 6. समाख्या
- 'निरपेक्षो रवः श्रुतिः' यह लक्षण है— श्रुति का
- श्रुति के भेद हैं— तीन
  1. विधात्री 2. अभिधात्री 3. विनियोक्त्री
- विनियोक्त्री के भेद हैं— तीन
  1. विभक्तिरूपा 2. एकाभिधानरूपा 3. एकपदरूपा
- 'लिङ्गाद्यात्मिका' यह है— विधात्री
- 'व्रीह्यादिश्रुतिः' यह है— अभिधात्री
- 'यस्य च शब्दस्य श्रवणादेव सम्बन्धः प्रतीयते' यह है— विनियोक्त्री
- 'व्रीहिभिर्यजेत' यह उदाहरण है— विभक्तिरूपा का
- 'व्रीहीणं यागाङ्गत्वम्' यह उदाहरण है— एकाभिधानरूपा का
- श्रुति आदि प्रमाणों में सबसे बलवती है— श्रुति
- 'शब्दसामार्थ्यं लिङ्गम्' यह लक्षण है— लिङ्ग का
- शब्द की अभिधाशक्ति को कहा जाता है— लिङ्ग
- 'समभिव्याहारो' यह है— वाक्य
- 'यत्र समग्राङ्गोपदेशः' यह है— प्रकृति
- दर्शपूर्णमासादि उदाहरण है— प्रकृति का
- 'यत्र न सर्वाङ्गोपदेशः' यह है— विकृति
- विकृति का उदाहरण है— 'सौर्यादिः'
- 'उभयाकांक्षा' यह है— प्रकरण
- 'प्रयाजादिषु समिधो यजति' यह उदाहरण है— प्रकरण का

- प्रकरण के प्रकार हैं—दो
  1. महाप्रकरण 2. अवान्तरप्रकरण
- 'मुख्यभावनासम्बन्धिप्रकरणम्' यह लक्षण है—महाप्रकरण का
- 'अङ्गभावनासम्बन्धिप्रकरणम्' यह लक्षण है—अवान्तरणप्रकरण का
- 'देशसामान्यम्' यह लक्षण है— स्थान का
- स्थान के भेद हैं—दो 1. पाठसादेश्य 2. अनुष्ठानसादेश्य
- 'समाख्या यौगिकः शब्दः' यह है—समाख्या
- समाख्या के भेद हैं—दो 1. वैदिकी 2. लौकिकी
- पाठसादेश्य के भेद हैं—दो
  1. यथासंख्यपाठ 2. सन्निधिपाठ
- 'कर्माङ्गद्रव्याद्युद्देशेन विधीयमानं कर्म' यह लक्षण है— सन्निपत्योपकारक का
- सन्निपत्योपकारक का उदाहरण है—'अवघातप्रोक्षणादि'
- 'द्रव्याद्यनुद्दिश्य केवलं विधीयमानं कर्म' यह लक्षण है— आरादुपकारक का
- 'प्रयाजादि' यह उदाहरण है— आरादुपकारक का
- 'कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिः' यह लक्षण है—अधिकारविधि का
- 'यजेत स्वर्गकामः' यह उदाहरण है—अधिकारविधि का
- कर्म सामान्यतः हैं—तीन 1. काम्य 2. नित्य 3. नैमित्तिक
- 'प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः' यह लक्षण है—प्रयोगविधि का
- 'अङ्गानां क्रमबोधकोविधिः' यह लक्षण है—प्रयोगविधि का
- प्रमाणो की संख्या है—छः
  1. श्रुति 2. अर्थ 3. पाठ 4. स्थान 5. मुख्य 6. प्रवृत्ति
- 'क्रमपरवचनम्' यह लक्षण है— श्रुति का

- श्रुति के भेद हैं—दो 1. केवल क्रमपरक 2. क्रमविशिष्ट परक
- 'वेदं कृत्वा वेदि करोति' उदाहरण है— केवल क्रमपरक का
- 'वषट्कर्तुः प्रथमभक्ष' यह उदाहरण है— क्रमविशिष्टपरक का
- 'यत्र प्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयः' यह लक्षण है— अर्थ का
- 'पदार्थबोधवाक्यानां यः क्रमः' यह लक्षण है— पाठ का
- पाठ के भेद हैं—दो 1. मन्त्रपाठ 2. ब्राह्मणपाठ
- 'नामोपस्थितिः' यह लक्षण है— 'स्थान' का
- 'प्रधानक्रमेण योऽङ्गानां क्रमः' यह लक्षण है—'मुख्य' का
- विधि के तीसरे विभाजन के भेद हैं—तीन
  1. अपूर्वविधि 2. नियमविधि 3. परिसंख्याविधि
- 'विधिरत्यन्तमप्राप्तौ प्रापयति' यह लक्षण है— अपूर्वविधि का
- कुमारिल के अनुसार 'प्रमाणान्तरेण अप्राप्तस्य प्रापको विधिः' यह लक्षण है— अपूर्वविधि का
- 'नानासाधनसाध्यक्रियायामेकसाधनप्राप्तावप्राप्तस्यापरसाधनस्य प्रापको विधिः' यह लक्षण है— नियमविधि का
- 'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिः' यह लक्षण है— नियमविधि का
- 'व्रीहीनवहन्ति' यह उदाहरण है— नियमविधि का
- 'उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः' यह लक्षण है—परिसंख्याविधि का
- 'पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या' यह उदाहरण है— परिसंख्याविधि का
- परिसंख्याविधि के भेद हैं—दो 1. श्रौती, 2. लाक्षणिकी
- श्रौती परिसंख्या का उदाहरण है—'अत्र हि एव अवपन्ति'
- लाक्षणिकी परिसंख्या का उदाहरण है—'पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या'
- लाक्षणिकी परिसंख्या के दोष हैं—तीन
  1. श्रुतहानि 2. अश्रुतकल्पना 3. प्राप्तबाध
- लाक्षणिकी परिसंख्या के पहले दो दोष हैं—शब्दनिष्ठ

- 'प्रयोगसमवेतार्थस्मारका' यह लक्षण है— मन्त्र का
- 'नामधेयानां च विधेयार्थपरिच्छेदकतयार्थवत्त्वम्' यह लक्षण है— नामधेय का
- 'उद्भिदा यजेत पशुकाम' यह उदाहरण है— नामधेय का
- 'पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यम्' यह लक्षण है— निषेध का
- 'न कलञ्जं भक्षयेत्' यह उदाहरण है— निषेध का
- 'प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यम्' यह लक्षण है— अर्थवाद का
- अर्थवाद के भेद हैं— दो 1. विधिशेष 2. निषेधशेष
- 'वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः' यह है— विधिशेष
- 'वर्हिषु रजतं न देयम्' यह है— निषेधशेष
- अर्थवाद प्रकारन्तर से भेद होता है— तीन प्रकार का
  1. गुणवाद 2. अनुवाद 3. भूतार्थवाद
- 'प्रामाणान्तरविरोधे सत्यर्थवादो' यह लक्षण है— गुणवाद का
- 'आदित्यो यूपः' यह उदाहरण है— गुणवाद का
- 'प्रमाणान्तरावगतार्थबोधकोऽर्थवादः' यह लक्षण है— अनुवाद का
- 'अग्निर्हिमस्य भेषजम्' यह उदाहरण है— अनुवाद का
- 'प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थ-बोधकोऽर्थवादः' यह लक्षण है— भूतार्थवाद का
- 'इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्' यह उदाहरण है— भूतार्थवाद का
  भूतार्थवाद हैं— सात



तर्कसंग्रह

- 'तर्कसंग्रह' ग्रन्थ के ग्रन्थकार हैं— अन्नं भट्ट
- तैलङ्गवंशीय ब्राह्मण हैं— अन्नं भट्ट
- अन्नं भट्ट का काल है— 17वीं शताब्दी
- तर्कसंग्रह ग्रन्थ है— प्रकरण ग्रन्थ
- दो समान तन्त्रों का आश्रय लेकर लिखा जाता है— प्रकरण ग्रन्थ
- एक की प्रधानता तथा दूसरे की गौणता होती है— प्रकरण ग्रन्थ में
- तर्कसंग्रह में समावेश है— वैशेषिक तथा न्याय दर्शन का
- तर्कसंग्रह में प्रधानता है— वैशेषिक दर्शन की
- तर्कसंग्रह में पदार्थों का निरुपण किया गया है— वैशेषिक दर्शन के अनुसार
- तर्कसंग्रह में प्रमाणों का निरुपण किसके अनुसार है?— न्याय दर्शन के अनुसार
- तर्कसंग्रह पर टीकाएँ हैं— 24
- अन्नं भट्ट के वंश का नाम है— तैलङ्गवंश
- अन्नं भट्ट द्वारा तर्कसंग्रह पर लिखी गयी टीका का नाम है— दीपिका टीका
- तर्कसंग्रह के मङ्गलाचरण में किस देवता का उल्लेख है?— विश्वनाथ का
- तर्कसंग्रह के अनुसार पदार्थ हैं— सात
  1. द्रव्य 2. गुण 3. कर्म 4. सामान्य 5. विशेष
  6. समवाय 7. अभाव
- 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः' ये हैं— सप्त पदार्थ
- द्रव्य का सामान्य लक्षण है— जातिमत्त्वं द्रव्यत्त्वं समवायिकारणत्वम्
- द्रव्य पदार्थ की कुल संख्या है— 9
- 'पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि' ये नौ हैं— द्रव्य

➢ द्रव्य हैं— नौ
1. पृथ्वी 2. जल 3. तेज 4. वायु 5. आकाश
6. काल 7. दिक् 8. आत्मा 9. मन
➢ तीसरे द्रव्य का नाम है— तेज
➢ आठवें द्रव्य का नाम है— आत्मा
➢ पाँचवे द्रव्य का नाम है— आकाश
➢ दूसरे द्रव्य का नाम है— जल
➢ नवम द्रव्य का नाम है— मन
➢ चतुर्थ द्रव्य का नाम है— वायु
➢ छठे द्रव्य का नाम है— काल
➢ प्रथम द्रव्य का नाम है— पृथ्वी
➢ सातवें द्रव्य का नाम है— दिक्
➢ पञ्चम पदार्थ का नाम है— विशेष
➢ विशेष होते हैं— अनन्त
➢ प्रथम पदार्थ का नाम है— द्रव्य
➢ द्रव्य की कुल संख्या है— 9
➢ सप्तम पदार्थ का नाम है— अभाव
➢ अभावों की संख्या है— 4
➢ द्वितीय पदार्थ का नाम है— गुण
➢ गुण हैं— 24
➢ छठे पदार्थ का नाम है— समवाय
➢ समवाय है— एक
➢ चतुर्थ पदार्थ का नाम है— सामान्य
➢ सामान्य हैं— 2
➢ तीसरे पदार्थ का नाम है— कर्म
➢ कर्म हैं— 5
➢ गन्धवती होती है - पृथ्वी

➢ पृथ्वी का विशेष गुण है— गन्ध
➢ 'तत्र गन्धवती'— पृथिवी
➢ वह पृथिवी होती है—दो प्रकार की 1. नित्य 2. अनित्य
➢ नित्य होती है—परमाणुरूप
➢ अनित्य होती है— कार्यरूप
➢ 'शीतस्पर्शवत्य' यह है— आप
➢ जल का विशेष गुण है— शीतलता
➢ जल के विषय हैं— सरित्समुद्रादि
➢ 'ऊष्णस्पर्शवत्' यह है— तेज
➢ ऊष्ण स्पर्शवान् होता है— तेज
➢ तेज का विशेषगुण है— ऊष्णत्व
➢ तेज के विषय हैं—चार 1. भौम, 2. दिव्य, 3. उदर्य, 4. आकरज
➢ 'वह्नयादिकम्' यह है— भौम
➢ 'अबिन्धनं दिव्यम्' यह है— विद्युदादि
➢ 'भुक्तस्य परिणामहेतुः' यह है— उदर्य
➢ 'सुवर्णादि' यह है— आकरज
➢ 'रुपरहितस्पर्शवान्' यह है— वायु
➢ वायु का विशेष गुण है— स्पर्श
➢ वायु होती है— 5
➢ प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये हैं— पञ्चवायु
➢ प्राण वायु होती है— हृदय में
➢ अपान वायु होती है— गुदा में
➢ समान वायु होती है— नाभि में
➢ उदान वायु होती है— कण्ठ में
➢ व्यान वायु होती है— पूरे शरीर में
➢ आकाश का विशेष गुण है— शब्द
➢ 'शब्दगुणकमाकाशम्' यह लक्षण है—आकाश का

- विभु और नित्य होता है— आकाश
- आकाश में शब्द होता है— समवायिकारण से
- सभी मूर्त द्रव्यों के संयोगी को कहते हैं—विभु
- विभु हैं—चार
  1. आकाश 2. काल 3. दिक् 4. आत्मा
- 'सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वम्' यह है—विभु
- अतीतादिव्यवहारहेतुः यह है—काल
- काल का विशेष गुण है—अतीतादिव्यवहारहेतु
- काल हैं—तीन 1. अतीत (भूत) 2. भविष्य 3. वर्तमान
- विभु और नित्य है—काल
- काल हैं—निमित्तकारण
- 'प्राच्यादिव्यवहारहेतुः' यह है—दिक्
- दिक् का विशेष गुण है—प्राच्यादिव्यवहारहेतु
- नित्य और विभु है—दिक्
- 'ज्ञानाधिकरणमात्मा' यह है—आत्मा
- आत्मा का विशेष गुण है—ज्ञानाधिकरणत्व
- आत्मा के भेद होते हैं—दो 1. जीवात्मा 2. परमात्मा
- प्रत्येक शरीर में भिन्न-2 सर्वव्यापक और नित्य है—जीवात्मा
- ईश्वर और सर्वज्ञ एक ही हैं—परमात्मा
- 'सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियम्' यह है—मन
- मन का विशेष गुण है—सुखादि उपलब्धि
- गुण का सामान्य लक्षण है—'द्रव्यकर्मभिन्नत्वे सति सामान्यवान्'
- गुण कैसा होता है?—जातिमान
- गुणों की संख्या है—24
- 24 गुण हैं— रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।
- 'चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपः' यह परिभाषा है— रूप की
- चक्षु मात्र से ग्राह्य गुण है— रूप
- रूप के प्रकार हैं— 7
- 'शुक्ल-नील-पीत-रक्त-हरित-कपिश-चित्र' ये भेद हैं— रूप के
- पृथ्वी में होता है—सप्तविध रूप
- 'रसनाग्राह्यो गुणो रसः' यह परिभाषा है—रस की
- जीभ से ग्राह्य गुण है—रस
- प्रथम गुण है—रूप
- द्वितीय गुण का नाम है—रस
- रस के भेद हैं—छः
  1. मधुर 2. अम्ल 3. लवण 4. कटु 5. कषाय 6. तिक्त
- षड्विध रस पाये जाते हैं—पृथिवी में
- घ्राणेन्द्रिय से ग्रहणीय गुण है—गन्ध
- 'घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः' यह परिभाषा है—गन्ध की
- गन्ध के भेद हैं—दो 1. सुगन्ध 2. दुर्गन्ध
- 'सुरभिरसुरभिश्च' भेद है—गन्ध का
- द्विविध गन्ध प्राप्त होता है—पृथ्वी में
- 'त्वगिन्द्रियग्राह्यो गुणः स्पर्शः' यह परिभाषा है—स्पर्श की
- त्वक् इन्द्रिय से ग्रहणीय गुण है—स्पर्श
- स्पर्श कितने हैं?—तीन 1. शीत 2. उष्ण 3. अनुष्णाशीत
- गंध उत्पन्न होता है—पृथिवी में
- 'एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या' यह है—संख्या
- एकत्वादि व्यवहार का कारण है—संख्या
- नव द्रव्यों में होती है—संख्या
- संख्या के प्रकार हैं—दो 1. नित्यगत नित्य 2. अनित्यगत अनित्य
- संख्या के कितने द्रव्य वृत्ति हैं?—नवद्रव्यवृत्ति

- 'मानवव्यवहारासाधारणकारणम्' यह है—परिमाण
- नवों द्रव्यों में होता है—परिमाण
- परिमाण के भेद हैं—चार
- परिमाण कितने हैं?—चार
  1. अणु, 2. महत्, 3. दीर्घ, 4. ह्रस्व
- मानव-व्यवहार का असाधारण कारण है— परिमाण
- 'पृथग्व्यवहारासाधारणकारणम्' यह है— पृथक्त्व
- पृथक् व्यवहार का कारण कहलाता है— पृथक्त्व
- सर्वद्रव्यवृत्ति है— पृथक्त्व
- 'संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः' यह परिभाषा है—संयोग की
- संयुक्त व्यवहार का कारण है—संयोग
- संयोग का नाशक गुण है—विभाग
- 'संयोगनाशको गुणो विभागः' यह परिभाषा है—विभाग की
- सर्वद्रव्यवृत्ति है—विभाग
- 'परापरव्यवहारासाधारणकारणे परत्वापरत्वे' यह परिभाषा है—परत्वापरत्व की
- परत्व-अपरत्व कितने प्रकार के हैं—दो 1. दिशाकृत 2. कालकृत
- दूरस्थ में दिशा है— परत्व
- समीपस्थ में दिशा है— अपरत्व
- ज्येष्ठ में कालकृत है— परत्व
- कनिष्ठ में कालकृत है— अपरत्व
- आदि पतन का असमवायिकारण है— गुरुत्व
- 'आद्यपतनाऽसमवायिकारणं गुरुत्वम्' यह परिभाषा है— गुरुत्व की
- गुरुत्व रहता है— पृथिवी और जलमात्र में
- 'आद्यस्यन्दनाऽसमवायिकारणं द्रवत्वम्' यह परिभाषा है— द्रवत्व
- द्रवत्व हैं—दो 1. सांसिद्धिक 2. नैमित्तिक

- 'चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः' यह परिभाषा है—स्नेह की
- चूर्णादि के पिण्डत्व का कारण है—स्नेह
- स्नेह रहता है—केवल जल में
- 'श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः' यह परिभाषा है—शब्द की
- श्रोत्रेन्द्रिय से ग्राह्य गुण कहलाता है—शब्द
- 'शब्द' विशिष्ट गुण है—आकाश का (शब्दगुणकमाकाशम्)
- शब्द रहता है— आकाश में
- शब्द के भेद हैं— दो 1. ध्वन्यात्मक 2. वर्णात्मक
- संस्कृतभाषादिरूप है— वर्णात्मक
- 'सर्वव्यवहारहेतुर्बुद्धिर्ज्ञानम्' यह परिभाषा है—बुद्धि की
- सब प्रकार के व्यवहारों का कारणभूत है— बुद्धि
- बुद्धि के प्रकार हैं—दो 1. स्मृति 2. अनुभव
- 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः' यह परिभाषा है—स्मृति की
- 'स्मृतिः भिन्नं ज्ञानम्-अनुभवः' यह परिभाषा है—अनुभव की
- अनुभव हैं—दो 1. यथार्थ, 2. अयथार्थ
- यथार्थ अनुभव है— चतुर्विध
- चतुर्विध यथार्थ अनुभव हैं—
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमिति 3. उपमिति 4. शब्द
- 'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवो यथार्थः' यह है—यथार्थ
- 'रजते इदं रजतं इति ज्ञानम्' यह उदाहरण है—यथार्थ अनुभव का
- यथार्थानुभवः—प्रमा
- यथार्थ अनुभव का नाम है—प्रमा
- 'तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवोऽयथार्थः' यह परिभाषा है—अयथार्थ की
- अयथार्थ का नाम है— अप्रमा
- 'शुक्ताविदं रजतम् इति ज्ञानम्' यह उदाहरण है—अयथार्थ अनुभव का

- अयथार्थ अनुभव हैं—तीन 1. संशय 2. विपर्यय 3. तर्क
- 'एकस्मिन्धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानम्' यह परिभाषा है—संशय की
- 'स्थाणुर्वा पुरुषो वेति' यह उदाहरण है— संशय का
- 'मिथ्याज्ञानं विपर्ययः' यह परिभाषा है— विपर्यय की
- 'शुक्तौ रजतम् इति' यह उदाहरण है— विपर्यय का
- 'व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः' यह परिभाषा है— तर्क की
- 'यदि वह्नर्न स्यात्तर्हि धूमोऽपि न स्यादिति' यह उदाहरण है—तर्क का
- सभी के अनुकूल ज्ञान का विषय है— सुख
- 'सर्वेषामनुकूलतया वेदनीयं सुखम्' यह परिभाषा है—सुख की
- 'सर्वेषांप्रतिकूलतया वेदनीयं दुःखम्' यह परिभाषा है—दुःख की
- सभी के प्रतिकूल ज्ञान का विषय है— दुःख
- इच्छा के सम्बन्ध में कहा गया है— इच्छा कामः
- द्वेष के सम्बन्ध में कहा गया है— क्रोधो द्वेषः
- प्रयत्न के सम्बन्ध में कहा गया है— कृति प्रयत्नः
- 'विहितकर्मजन्यो' यह कथन है— धर्म का
- 'निषिद्धकर्मजन्यस्त्वधर्मः' यह परिभाषा है— अधर्म की
- संस्कार के सम्बन्ध में 'दीपिकोक्ति' है—'संस्कारत्व-जातिमान संस्कारः'
- संस्कार के प्रकार हैं—तीन 1. वेग 2. भावना 3. स्थिति स्थापक
- 'वेगः पृथिव्यादिचतुष्टयमनोवृत्तिः' यह है— वेग
- 'अनुभवजन्या स्मृतिहेतुः भावना' यह है—भावना
- आत्मा में रहने वाला संस्कार है— भावना
- 'अन्यथा कृतस्य पुनस्तदवस्थापादकः' यह है—स्थितिस्थापक
- चटाई वस्तु आदि स्वरूप पृथ्वी में रहता है— स्थितिस्थापक (कटादि-पृथिवीवृत्तिः)
- चलनस्वरूप वाली क्रिया कहलाती है— कर्म (चलनात्मकं कर्म)

- कर्म के प्रकार हैं—पाँच 1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन 4. प्रसारण 5. गमन
- 'ऊर्ध्वदेशसंयोगहेतुः उत्क्षेपणम्' यह है—उत्क्षेपण
- 'अधोदेशसंयोगहेतुः अपक्षेपणम्' यह है—अपक्षेपण
- शरीरस्य सन्निकृष्टसंयोगहेतुराकुञ्चनम्' यह है—आकुञ्चन
- शरीर के निकट संयोग का कारण है—आकुञ्चन
- 'विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम्' यह है—प्रसारण
- 'अन्यत्सर्वं गमनम्' यह है—गमन
- 'नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्' यह परिभाषा है— सामान्य की
- सामान्य हैं—दो 1. परसामान्य 2. अपरसामान्य
- द्रव्य, गुण, कर्मवृत्ति होती है— सामान्य में
- 'नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः' यह परिभाषा है— विशेष की
- विशेष होते हैं— अनन्त
- 'नित्यसम्बन्धः समवायः' यह परिभाषा है—समवाय की
- 'पृथिव्यादिचतुष्टयस्य परमाणवः आकाशादिपञ्चकं च'—यह कथन किसके सम्बन्ध में है?—नित्य द्रव्य के
- समवाय जिसमें होता है, वह है—अयुतसिद्ध
- अयुतसिद्ध पदार्थों में रहता है—समवाय
- समवाय है—एक
- 'ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ' यह परिभाषा है—अयुतसिद्ध की
- 'भावभिन्नः अभावः' यह है— अभाव
- अभाव हैं—चार
  1. प्रागभाव 2. प्रध्वंसाभाव 3. अत्यन्ताभाव 4. अन्योऽन्याभाव
- 'अनादिः सान्तः प्रागभावः' यह परिभाषा है—प्रागभाव की
- कार्य की उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान रहता है—प्रागभाव (उत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य)

- 'सादिरनन्तः प्रध्वंसः' यह परिभाषा है— प्रध्वंसाभाव की
- कार्य की उत्पत्ति के अनन्तर उत्पन्न होता है— प्रध्वंसाभाव (उत्पत्त्यनन्तरं कार्यस्य)
- प्रागभाव की स्थिति कब होती है?— कार्योत्पत्ति पूर्व
- प्रध्वंसाभाव की स्थिति कब होती है?— कार्योत्पत्ति अनन्तर
- 'त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽत्यन्ताभावः' यह परिभाषा है— अत्यन्ताभाव की
- 'भूतले घटो नास्तीति' यह उदाहरण है— अत्यन्ताभाव का
- 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकोऽन्योन्याभावः' यह परिभाषा है— अन्योऽन्याभाव की
- 'घटो पटो नेति' यह उदाहरण है— अन्योऽन्याभाव का
- न्यायदर्शनकार गौतम के अनुसार पदार्थों की संख्या है— 16
- 'कार्यनियतपूर्ववृत्ति कारणम्' यह परिभाषा है— कारण की
- 'असाधारणं कारणं करणम्' यह परिभाषा है— करण की
- 'कार्यप्रागभावप्रतियोगि' यह परिभाषा है— कार्य की
- कारण के कितने भेद हैं?— तीन

  1. समवायिकारण 2. असमवायिकारण 3. निमित्तकारण
- 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्' यह परिभाषा है— समवायिकारण की
- 'तन्तवः पटस्य' यह उदाहरण है— समवायिकारण का
- 'पटश्च स्वगतरूपादेः' यह उदाहरण है— सामवायिकारण का
- 'कार्येन कारणेन वा सहैकस्मिन्नर्थे समवेतं सत् कारणमसमवायिकारणम्' यह परिभाषा है— असमवायिकारण की
- 'तन्तुसंयोगः पटस्य' यह उदाहरण है— असमवायिकारण का
- 'तन्तुरूपं पटरूपस्य' यह उदाहरण है— असमवायिकारण का
- 'तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणम्' यह परिभाषा है— निमित्तकारण की

- 'तुरीवेमादिकं पटस्य' यह उदाहरण है— निमित्तकारण का
- प्रमाण की परिभाषा है— 'प्रमायाः करणं प्रमाणम्'
- प्रमाण के भेद हैं— चार

  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द
- प्रत्यक्ष प्रमाण की परिभाषा है— 'प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्'
- 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्' यह परिभाषा है— प्रत्यक्ष की
- प्रत्यक्ष प्रमाण कौन हैं?— इन्द्रियाँ
- इन्द्रिय तथा पदार्थ का सन्निकर्ष है— प्रत्यक्ष प्रमाण
- प्रत्यक्ष ज्ञान या प्रत्यक्ष प्रमा के कितने भेद हैं?— दो

  1. लौकिक 2. अलौकिक
- प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद हैं— दो 1. निर्विकल्पक 2. सविकल्पक
- 'निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्' यह परिभाषा है— निर्विकल्पक की
- 'इदं किञ्चित्' यह उदाहरण है— निर्विकल्पक का
- 'सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्' यह परिभाषा है— सविकल्पक की
- 'डित्थोऽयं, ब्राह्मणोऽयं, श्यामोऽयमिति' ये उदाहरण हैं— सविकल्पक के
- 'प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः'— षड्विधः
- प्रत्यक्षज्ञान के कारण हैं— 6 सन्निकर्ष
- 6 सन्निकर्ष को कहते हैं— षोढ़ासन्निकर्ष
- लौकिक सन्निकर्ष के भेद हैं— 6
- विशेषणविशेष्य सम्बन्ध-ज्ञान रहित है— निष्प्रकारक
- विशेषणविशेष्य सम्बन्ध-ज्ञान सहित है— सप्रकारक
- सन्निकर्ष हैं— छः

  1. संयोग सन्निकर्ष 2. संयुक्तसमवाय सन्निकर्ष
  3. संयुक्तसमवेत-समवाय सन्निकर्ष 4. समवाय सन्निकर्ष,
  5. समवेतसमवाय सन्निकर्ष 6. विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष
- 'चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है— संयोग सन्निकर्ष की

- ➢ दो द्रव्यों का संपर्क सम्बन्ध है—संयोग
- ➢ द्रव्य के प्रत्यक्ष ज्ञान में सन्निकर्ष होता है—संयोग सन्निकर्ष
- ➢ 'घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है—संयुक्तसमवायसन्निकर्ष की
- ➢ 'रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है—संयुक्तसमवेतसमवायसन्निकर्ष की
- ➢ रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में सन्निकर्ष होता है—संयुक्तसमवेत-समवायसन्निकर्ष
- ➢ 'श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है—समवाय सन्निकर्ष की
- ➢ कान के छिद्र में आकाश है—श्रोत्र
- ➢ आकाश का गुण है—शब्द
- ➢ गुण और गुणी का सम्बन्ध होता है— समवाय
- ➢ 'शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है—समवेतसमवायसन्निकर्ष की
- ➢ शब्दत्व के साक्षात्कार में सन्निकर्ष है—समवेतसमवायसन्निकर्ष
- ➢ श्रोत्र में 'समवेत' और शब्द में शब्दत्व रहता है—समवाय सम्बन्ध से
- ➢ 'अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः सन्निकर्षः' यह परिभाषा है—विशेषणविशेष्यभाव की
- ➢ 'घटाभाववद्भूतलम्' यह उदाहरण है—विशेषणविशेष्यभाव का
- ➢ छः सन्निकर्षों से उत्पन्न ज्ञान के साधन हैं—इन्द्रियाँ
- ➢ अनुमान की परिभाषा है—'अनुमितिकरणमनुमानम्'
- ➢ 'परामर्शजन्यं ज्ञानं अनुमितिः' यह परिभाषा है—अनुमिति की
- ➢ 'व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः' यह परिभाषा है—परामर्श की
- ➢ 'वह्नि-व्याप्य धूम' का आधार है—पर्वत (वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः)
- ➢ पर्वत वह्निव्याप्य धूमवाला है, यह ज्ञान है— परामर्श
- ➢ परामर्शोत्पन्न 'पर्वतो वह्निमान्' ज्ञान कहलाता है— अनुमिति

- ➢ 'यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः इति साहचर्यनियमः व्याप्तिः' यह है—व्याप्ति
- ➢ व्याप्य का पर्वतादि में रहना है—पक्षधर्मता
- ➢ 'व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तित्वं पक्षधर्मता' यह है—पक्षधर्मता
- ➢ अनुमान से अनुमिति तक पहुंचने की प्रक्रिया है—परामर्श
- ➢ साहचर्यनियम है—व्याप्ति
- ➢ अनुमान के भेद हैं—दो 1. स्वार्थानुमान 2. परार्थानुमान
- ➢ जिसमें स्वयं की अनुमति हो, वह है—स्वार्थानुमान
- ➢ 'स्वानुमिति हेतुः' यह परिभाषा है—स्वार्थानुमान की
- ➢ पञ्चावयव युक्त वाक्यों के प्रयोग से संबन्धित अनुमान है—परार्थानुमान
- ➢ 'प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः' यह है—पञ्चवायव
- ➢ पञ्चवायव हैं—1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन
- ➢ प्रतिज्ञा वाक्य है— 'पर्वतो वह्निमान्'
- ➢ हेतु वाक्य है— 'धूमवत्त्वात्'
- ➢ उदाहरण वाक्य है—' यो यो धूमवान्, स स वह्निमान्'
- ➢ उपनय वाक्य है— 'तथा चाऽयम्'
- ➢ निगमन वाक्य है— 'तस्मात् तथा'
- ➢ स्वार्थ तथा परार्थ अनुमतियों का करण है— लिङ्ग-परामर्श
- ➢ लिङ्ग के भेद हैं—तीन
- ➢ 'लिङ्गपरामर्शः' यह है—अनुमान
- ➢ 'अन्वयेन व्यतिकेरेण च व्याप्तिमदन्वयव्यतिरेकि' यह परिभाषा है—अन्वयव्यतिरेकि की
- ➢ अन्वय और व्यतिरेक दोनों से व्याप्तिमान होता है—अन्वयव्यक्तिरेकि
- ➢ 'अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि' यह परिभाषा है—केवलान्वयि की
- ➢ 'घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्पटवत्' यह उदाहरण है—केवलान्वयि का
- ➢ 'व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि' यह परिभाषा है—केवलव्यतिरेकि की

- 'संदिग्धसाध्यवान् पक्षः' यह परिभाषा है—पक्ष का
- 'धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः' यह उदाहरण है—पक्ष का
- 'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः' यह परिभाषा है— सपक्ष की
- 'निश्चिसाध्याभाववान् विपक्षः' यह परिभाषा है— विपक्ष की
- 'महाह्रदः' उदाहरण है— विपक्ष का
- 'हेतुवदाभासते' यह है—हेत्वाभास
- जो हेतु जैसा लगे परन्तु हेतु न हो, वह है—हेत्वाभास
- हेत्वाभास हैं—पाँच
  1. सव्यभिचार हेत्वाभास 2. विरुद्ध हेत्वाभास,
  3. सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास 4. असिद्ध हेत्वाभास 5. बाधित हेत्वाभास
- 'अनैकान्तिक का पर्यायभूत' है—सव्यभिचार हेत्वाभास (सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः)
- सव्यभिचार के प्रकार हैं—तीन
  1. साधारण, 2. असाधारण, 3. अनुपसंहारी
- 'साध्याभाववद्वृत्तिः साधरणोऽनैकान्तिकः' यह परिभाषा है—साधारण सव्यभिचार की
- अन्नं भट्ट ने केवल साध्याभाव के साथ ही व्याप्त माना है—साधारण को
- 'पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्' यह उदाहरण है—साधारण सव्यभिचार का
- 'सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः' यह परिभाषा है—असाधारण सव्यभिचार की
- 'शब्दो नित्यः शब्दत्वात्' यह उदाहरण है— असाधारण सव्यभिचार का
- 'अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी' यह परिभाषा है—अनुपसंहारी सव्यभिचार की
- 'सर्वमनित्यं प्रमेयत्वात् इति' यह उदाहरण है— अनुपसंहारी सव्यभिचार का

- 'साध्याभावव्याप्तो हेतुः विरुद्धः' यह परिभाषा है—विरुद्ध हेत्वाभास की
- 'शब्दो नित्यः कृतकत्वात् इति' यह उदाहरण है—विरुद्ध हेत्वाभास का
- 'यस्य साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः' यह परिभाषा है—सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास की
- 'शब्दा नित्यः श्रावणत्वात् शब्दत्ववत् इति' यह उदाहरण है—सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का
- असिद्ध हेत्वाभास हैं—तीन
  1. आश्रयासिद्ध 2. स्वरूपासिद्ध 3. व्याप्यत्वासिद्ध
- 'गगनारविन्दं सुरभि' यह उदाहरण है—आश्रयासिद्ध का
- यहाँ आश्रय है— गगनारविन्द
- 'शब्दो गुणश्चाक्षुषत्वात्' यह उदाहरण है— स्वरूपासिद्ध का
- 'सोपाधिको हेतुः व्याप्यत्वासिद्धः' यह परिभाषा है—व्याप्यत्वासिद्ध की
- 'यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः स बाधितः' यह परिभाषा है— बाधित हेत्वाभाव की
- 'वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात्' यह उदाहरण है— बाधित हेत्वाभास का
- उपमान की परिभाषा है— 'उपमितिकरणमुपमानम्'
- 'उपमितिकरणम्' यह है— उपमान
- 'संज्ञासंज्ञिसंबन्धज्ञानमुपमितिः' यह परिभाषा है—उपमिति की
- उपमिति का करण है— सादृश्य ज्ञान
- सादृश्य कहलाता है— उपमान प्रमाण
- सादृश्य ज्ञान के प्रकार हैं—तीन
  1. सादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञान 2. वैधर्म्यविशिष्ट पिण्डज्ञान
  3. असाधारण पिण्डज्ञान
- 'आप्तवाक्यं शब्दः' यह परिभाषा है—शब्द प्रमाण की
- आप्त व्यक्ति का वाक्य है— शब्द प्रमाण

- यथार्थवक्ता को कहा जाता है— आप्त
- पद समूह को कहा जाता है— वाक्य (वाक्यं पदसमूहः यथा—'गामनाय' इति)
- वैशेषिक कितने प्रकार के वाक्य मानते हैं? —2
- शक्ति युक्त कहलाते हैं— पद (शक्तं पदम्)
- जो ईश्वर का संकेत है, वह है—शक्ति (ईश्वरसङ्केतः शक्तिः)
- 'अस्मात्पदादयमर्थो बोद्धव्य इतीश्वरसङ्केतः शक्तिः' यह है— शक्ति
- वाक्य के अर्थज्ञान में कितने कारण हैं?—तीन
  1. आकांक्षा 2. योग्यता 3. सन्निधि
- 'पदस्य पदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्ताऽन्वयाऽननुभावकत्वमाकाङ्क्षा' यह परिभाषा है—आकांक्षा की
- योग्यता की परिभाषा है—'अर्थाबाधो योग्यता'
- 'पदानामविलम्बेनोच्चरणं सन्निधिः' यह परिभाषा है—सन्निधि की
- पदों का बिना विलम्ब के उच्चारण है—सन्निधि
- अर्थ में बाधा का अभाव है— योग्यता
- वाक्य कितने प्रकार के हैं—दो
  1. वैदिक 2. लौकिक
- ईश्वरोक्त होने से सभी प्रमाण हैं— वैदिक वाक्य
- आप्त व्यक्ति का प्रमाण है— लौकिक वाक्य
- वाक्य के अर्थ का ज्ञान ही है—शाब्दज्ञान
- वाक्यार्थ ज्ञान का करण है— शब्द
- 'निधाय हृदि विश्वेशं विधाय गुरुवन्दनम्।
- बालानां सुखबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः।।' यह तर्कसंग्रह का है—मङ्गलाचरण

+++

तर्कभाषा

- 'बालोऽपि यो न्यायनये प्रवेशम्' यह सम्बद्ध है— तर्कभाषा से
- न्यायदर्शन के रचनाकार हैं— आचार्य गौतम
- न्यायशास्त्र की प्रवृत्ति है— तीन 1. उद्देश्य 2. लक्षण 3. परीक्षा
- नाममात्र से पदार्थ का कथन है— उद्देश्य
- असाधारण धर्म का कथन है— लक्षण
- किया गया लक्षण ठीक है या नहीं यह विचार करना है— परीक्षा
- 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' यह है— प्रमाण
- 'यथार्थानुभवः प्रमा' यह है— प्रमा
- अनुभव के प्रकार हैं— दो 1. यथार्थ 2. अयथार्थ
- 'ज्ञातविषयं ज्ञानम्', यह लक्षण है— स्मृति का
- 'स्मृतिव्यतिरिक्तं ज्ञानम्' यह लक्षण है— अनुभव का
- अयथार्थ के प्रकार हैं—तीन 1. संशय 2. विपर्यय 3. तर्क
- 'एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थावमर्शः' यह लक्षण है— संशय का
- संशय के प्रकार हैं—तीन
- 'अर्थव्यभिचारी अप्राणजः' यह है— अयथार्थ
- 'अतस्मिस्तद्ग्रहः' यह लक्षण है— विपर्यय का
- 'साधकतमम्' यह लक्षण है— करण का
- 'अतिशयितं साधकम्' यह लक्षण है— साधकतम का
- 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च' यह लक्षण है— कारण का
- तन्तु तथा वेमादि पट के हैं— कारण
- 'अन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वं कारणत्वम्' यह लक्षण है—कारण का
- 'अनन्यथासिद्धनियतपश्चात् भावित्वम्' यह लक्षण है—कार्य का
- 'तत्सत्त्वे तत्सत्त्वम्' यह लक्षण है— अन्वय का
- 'तदभावे तदभावो' यह लक्षण है—व्यतिरेक का

- घट तथा मिट्टी हैं— व्यतिरेक
- वस्तु का अभाव कितने तरह से होता है?—दो
  1. कालिक 2. दैशिक
- कारण के प्रकार हैं—तीन
  1. समवायिकारण 2. असमवायिकारण 3. निमित्तकारण
- सांख्य और वेदान्त मानते हैं—दो कारण
  1. उपादान कारण 2. निमित्त कारण
- सम्बन्ध के प्रकार हैं—दो 1. संयोगसम्बन्ध 2. समवायसम्बन्ध
- 'यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते' यह लक्षण है—समवायिकारण का
- 'तन्तवः पटस्य कारणम्'— समवायिकारण
- 'ययार्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते वावयुतसिद्धौ' यह लक्षण है—अयुत सिद्ध का
- 'यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यम्' यह लक्षण है—असमवायिकारण का
- 'तन्तुसंयोगः पटस्यकारणम्' यह उदाहरण है—असमवायिकारण का
- 'यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणम्' यह है—निमित्तकारण
- 'वेमादिकम् पटस्य' यह उदाहरण है— निमित्तकारण का
- न्यायशास्त्र प्रमाण मानता है—चार
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द
- 'साक्षात्कारिप्रमाकरणम्' यह है— प्रत्यक्ष
- प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद हैं—दो 1. सविकल्पक, 2. निर्विकल्पक
- 'लिङ्गपरामर्शः' यह लक्षण है— अनुमान का
- 'अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानम्' यह लक्षण है— उपमान का
- 'आप्तवाक्यं शब्दः' यह है— शब्द

- प्रमेय कितने हैं— 12, 1. आत्मा, 2. शरीर, 3. इन्द्रिय, 4. अर्थ, 5. बुद्धि, 6. मन, 7. प्रवृत्ति, 8. दोष, 9. प्रेत्यभाव, 10. फल, 11. दुःख, 12. अपवर्ग
- 'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमनः प्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदुःखापवर्गाः' यह है— प्रमेय
- 'आत्मत्वसामान्यवान' यह लक्षण है— आत्मा का
- 'तस्य भोगायतनमन्त्यावयवि' यह लक्षण है— शरीर का
- 'सुखदुःखान्यतरसाक्षात्कारः' यह लक्षण है— भोग का
- न्याय के अनुसार इन्द्रियाँ हैं—छः
- 1. घ्राण 2. रसना 3. चक्षु 4. त्वक् 5. श्रोत्र 6. मन
- 'शरीरसंयुक्तं ज्ञानकरणमतीन्द्रियम्' यह लक्षण है— इन्द्रिय का
- प्रत्यक्ष का विषय नहीं हैं— इन्द्रियाँ
- अर्थ के भेद हैं—छः
- 1. द्रव्य, 2. गुण, 3. कर्म, 4. सामान्य, 5. विशेष, 6. समवाय
- 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाः' यह हैं— अर्थ
- 'बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानं प्रत्यय इत्यादिभिः पर्यायशब्दैर्याऽभिधीयते' यह लक्षण है— बुद्धि का
- बुद्धि के भेद हैं—दो, 1. अनुभव, 2. स्मरण
- 'अन्तरिन्द्रियम्' यह है— मन
- 'धर्माधर्ममयी यागादिक्रिया' यह लक्षण है— प्रवृत्ति का
- 'रागद्वेषमोहाः' यह लक्षण है— दोष का
- राग है— इच्छा
- द्वेष है— क्रोध
- मिथ्याज्ञान या विपर्यय है— मोह
- 'पुनर्भोगः सुखदुःखान्यतरसाक्षात्कारः' यह लक्षण है— फल का
- 'पुनरुत्पत्तिः' यह लक्षण है— प्रेत्यभाव का
- मृत्यु के पश्चात् पुनः उत्पन्न होना ही है— प्रेत्यभाव

- पीड़ा है— दुःख
- 'मोक्ष' यह है— अपवर्ग (मोक्षोऽपवर्गः)
- 21 भेदों वाले दुःख की आत्यान्तिक निवृत्ति ही है—मोक्ष
- न्यायशास्त्र के अनुसार दुःखों की आत्यान्तिक निवृत्ति से होता है—अपवर्ग
- 21 भेदों से युक्त दुःख का नाश है— मोक्ष
- 'येन प्रयुक्तः प्रवर्तते' यह लक्षण है— प्रयोजन का
- जिसको उद्देश्य करके व्यक्ति प्रवृत्त होता है, वह है—प्रयोजन
- 'वादिप्रतिवादिनो संप्रतिपत्तिविषयोऽर्थः' यह लक्षण है—दृष्टान्त का
- दृष्टान्त के भेद हैं—दो 1. साधर्म्यदृष्टान्त, 2. वैधर्म्यदृष्टान्त
- 'प्रामाणिकत्वेनाभ्युपगतोऽर्थः' यह लक्षण है— सिद्धान्त का
- सिद्धान्त के प्रकार हैं—चार

  1. सर्वतन्त्र-सिद्धान्त 2. प्रतितन्त्र- सिद्धान्त
  3. अधिकरण-सिद्धान्त 4. अभ्युपगम-सिद्धान्त
- प्रामाणिक रूप से माना गया अर्थ है—सिद्धान्त
- 'धर्मिमात्रसद्भावः' यह उदाहरण है—सर्वतन्त्र सिद्धान्त का
- 'मनस इन्द्रियत्वं' यह उदाहरण है—प्रतितन्त्र सिद्धान्त का
- 'क्षित्यादिकर्तुत्वसिद्धौ कर्तुः' सर्वज्ञत्वम्' यह उदाहरण है—अधिकरण सिद्धान्त का
- 'भवतु, अस्तु तावच्छब्दो गुण' यह उदाहरण है—अभ्युपगम सिद्धान्त का
- 'अनुमानवाक्यस्यैकदेशा' यह लक्षण है—अवयव का
- अवयव के भेद हैं—पाँच

  1. प्रतिज्ञा 2. हेतु 3. उदाहरण 4. उपनय 5. निगमन
- 'साध्यधर्मविशिष्टपक्षप्रतिपादकं वचनम्' यह लक्षण है—प्रतिज्ञा का
- 'पर्वतोऽयं वह्निमान्' यह उदाहरण है— प्रतिज्ञा का

- 'तृतीयान्तं पञ्चम्यन्तं वा लिङ्गप्रतिपादकं वचनम्' यह लक्षण है— हेतु का
- 'धूमत्त्वेन धूमवत्त्वादिति वा' यह उदाहरण है— हेतु का
- 'सव्याप्तिकं दृष्टान्तवचनम्' यह लक्षण है— उदाहरण का
- 'यो यो धूमवान् सोऽग्निमान्' यह है— उदाहरण
- 'पक्षे लिङ्गोपसंहारवचनम्' यह लक्षण है— उपनय का
- 'तथा चायमिति' यह है— उपनय
- 'पक्षे साध्योपसंहारवचनम्' यह लक्षण है— निगमन का
- 'तस्मात्तथेति' यह है— निगमन
- 'तर्कोऽनिष्टप्रसंगः' यह लक्षण है— तर्क का
- निश्चित ज्ञान है— निर्णय
- 'तत्त्वबुभुत्सोः कथा वादः' यह लक्षण है— वाद का
- 'उभयसाधनवती विजिगीषुकथा जल्पः' यह लक्षण है— जल्प का
- 'स एव स्वपक्षस्थापनाहीनो वितण्डा' यह लक्षण है— वितण्डा का
- 'अभिप्रायान्तरेण प्रयुक्तस्य शब्दस्यार्थान्तरं परिकल्प्य दूषणाभिधानं छलम्' यह लक्षण है—छल का
- 'असदुत्तरं जातिः' यह लक्षण है— जाति का
- अनुचित्त उत्तर कहलाता है— जाति
- 'पराजयहेतुः निग्रहस्थानम्' यह लक्षण है— निग्रहस्थान का
- हेत्वाभास के प्रकार हैं— 5
- न्यायशास्त्र पदार्थ मानता है—16

  1. प्रमाण, 2. प्रमेय, 3. संशय, 4. प्रयोजन, 5. दृष्टान्त, 6. सिद्धान्त, 7. अवयव, 8. तर्क, 9. निर्णय, 10. वाद, 11. जल्प, 12. वितण्डा, 13. हेत्वाभास, 14. छल, 15. जाति, 16, निग्रहस्थान



भारतीय दर्शन का संक्षिप्त-विवरण

दर्शन	प्रमाणों की संख्या	पदार्थों की संख्या	प्रमाणों के नाम
चार्वाक	1	4	प्रत्यक्ष
जैन	2	7	प्रत्यक्ष, अनुमान
बौद्ध	2	1	प्रत्यक्ष, अनुमान
न्याय	4	16	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
वैशेषिक	2	7	प्रत्यक्ष, अनुमान
सांख्य	3	25	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
योग	3	26	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
मीमांसा (प्रभाकर)	5	8	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति
कुमारिलभट्ट	6	5	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव
अद्वैतवेदान्त	6	2	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव
माध्व	3	10	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
रामानुजादि	3	3	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

खण्ड-6

रामायण, महाभारत और पुराण

रामायण

- रामायण के प्रणेता हैं— महर्षि वाल्मीकि
- आदिकवि कहे जाते हैं— महर्षि वाल्मीकि
- आदिकाव्य है— रामायण
- संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है— रामायण
- पञ्चाशत् सर्गात्मक काव्य है— रामायण
- रामायण में कुल श्लोकों की संख्या है— चौबीस हजार
- 'चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता' के नाम से प्रसिद्ध है— रामायण
- 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समा' यह है— लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम श्लोक (अनुष्टुप् छन्द में)
- रामायण का देवनागरी संस्करण प्रचलित है— उत्तरभारत में
- रामायण का काश्मीरी संस्करण प्रचलित है— पश्चिम भारत में
- रामायण में कुल काण्ड हैं— 7

  1. बालकाण्ड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड
  5. सुन्दरकाण्ड 6. युद्धकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड
- रामायण का प्रत्येक काण्ड विभक्त है— सर्गों में
- रामायण की कथा वाल्मीकि को सुनायी थी— नारद ने[1]
- नारद ने वाल्मीकि को रामायण की कथा सुनायी थी— बालकाण्ड में
- बालकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 77[2]
- कौञ्च का प्रकरण है— बालकाण्ड में
- अयोध्या में दशरथ द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है— बालकाण्ड में

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

- रामावतार का वर्णन है— बालकाण्ड में
- विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण को ले जाने का वर्णन है— बालकाण्ड में
- राम को 'बला तथा अतिबला' विद्याओं की प्राप्ति होती है— बालकाण्ड में
- विश्वामित्र के वंश का नाम है— कौशिक
- विश्वामित्र के जन्म की कथा का वर्णन है— बालकाण्ड में
- 'राजा सगर' की कथा का वर्णन है— बालकाण्ड में
- गंगा की कथा वर्णित है— बालकाण्ड में
- अहिल्या उद्धार का वर्णन किया गया है— बालकाण्ड में
- ताड़कावध का वर्णन किया गया है— बालकाण्ड में
- विश्वामित्र के इतिवृत्त का वर्णन किया था— शतानन्द ने
- शिव धनुष वृत्तान्त है— बालकाण्ड में
- राम-सीता के विवाह का वर्णन है— बालकाण्ड में
- शृंग ऋषि का वर्णन है— बालकाण्ड में
- शृंग ऋषि थे— दशरथ के जामाता
- शृंग ऋषि की पत्नी का नाम था— शान्ता
- रामायण का मुख्य रस है— करुण
- अयोध्याकाण्ड में कुल सर्ग हैं—119
- राम के राज्याभिषेक की तैयारी का वर्णन है— अयोध्याकाण्ड में
- राम, सीता और लक्ष्मण के वन गमन का वर्णन है—अयोध्याकाण्ड में
- कैकेयी ने दशरथ से कितने वर मांगे थे?— दो
  1. राम को 14 वर्ष का वनवास 2. भरत को राजगद्दी
- दशरथ की मृत्यु हुई थी— अयोध्याकाण्ड में
- भरत द्वारा पादुका लेकर अयोध्या लौटने का वर्णन है— अयोध्याकाण्ड में
- अरण्यकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 75

- राम, लक्ष्मण और सीता ने निवास किया था— दण्डकारण्य, पञ्चवटी में
- सूपर्णखा का वर्णन है— अरण्यकाण्ड में
- खर-दूषण वध का वर्णन है— अरण्यकाण्ड में
- सीता-हरण का वर्णन है— अरण्यकाण्ड में
- जटायु वध का वर्णन है— अरण्यकाण्ड में
- राम के करुण विलाप का वर्णन है—अरण्यकाण्ड में
- राम की कबन्ध से भेंट हुई थी— अरण्यकाण्ड में
- शबरी वृत्तान्त है— अरण्यकाण्ड में
- राम और सुग्रीव की मैत्री करवायी थी— हनुमान ने
- राम और सुग्रीव की मैत्री का वर्णन है— किष्किन्धाकाण्ड में
- बालि वध का वर्णन है— किष्किन्धाकाण्ड में
- तारा विलाप का वर्णन है— किष्किन्धाकाण्ड में
- किष्किन्धाकाण्ड में राम किस पर्वत पर निवास किए थे?— 'प्रश्रवण गिरि' पर
- राम ने कितने महीने निवास किया था? — चार मास
- सीता की खोज का वर्णन है— किष्किन्धाकाण्ड में
- हनुमान सीता को खोजने किस दिशा में जाते हैं? दक्षिण में
- हनुमान को शक्तियों का ज्ञान किसने करवाया था?—जामवन्त ने
- हनुमान को शक्तियों का ज्ञान किस काण्ड में हुआ था?— किष्किन्धाकाण्ड में
- सुन्दरकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 68
- सीता ने राम के लिए दिया था— चूड़ामणि
- सुन्दरकाण्ड के नायक हैं— हनुमान
- हनुमान का नाम था— सुन्दर
- लंका दहन वर्णित है— सुन्दरकाण्ड में
- नाग माता थी— सुरसा
- विभीषण और हनुमान की सर्वप्रथम मुलाकात हुई थी— सुन्दरकाण्ड में
- लंका विध्वंस का स्वप्न किसने देखा था?— त्रिजटा ने

- युद्धकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 128
- राम और रावण के युद्ध का वर्णन है— युद्धकाण्ड में
- सेतुबन्ध किया गया था—नल-नील द्वारा
- लक्ष्मण को शक्ति लगी थी— युद्धकाण्ड में
- संजीवनी बूटी लायी गयी थी— हनुमान द्वारा
- सीता की अग्नि परीक्षा का वर्णन है— युद्धकाण्ड में
- दशरथ और इन्द्र के उपदेश का वर्णन है— युद्धकाण्ड में
- राम का राजतिलक हुआ था— युद्धकाण्ड में
- राम के अयोध्या लौटने का वर्णन है— युद्धकाण्ड में
- राम और भरत मिलाप का वर्णन है— युद्धकाण्ड में
- किष्किन्धाकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 67
- उत्तरकाण्ड में कुल सर्ग हैं— 111
- इतिहास-पुराणात्मक आख्यान है— उत्तरकाण्ड में
- रावण के वंश की कथा का वर्णन किया था— अगस्त ऋषि ने
- रावण के वंश की कथा का वर्णन किया गया है— उत्तरकाण्ड में
- लवणासुर वध वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- 'राजा नृग आख्यान' वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- 'उर्वशी आख्यान' वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- 'ययाति आख्यान' वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- रामचरित की रचना और गान हुआ था— उत्तरकाण्ड में
- शंबूक वध का वर्णन है— उत्तरकाण्ड में
- राजा नृग की शाप कथा वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- सीता का पाताल गमन वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- लव-कुश का जन्म और राज्याभिषेक वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- राम का महाप्रस्थान वर्णित है— उत्तरकाण्ड में
- राम द्वारा अश्वमेधयज्ञ का वर्णन है— उत्तरकाण्ड में
- समुद्रमन्थन और 14 रत्नों की उत्पत्ति का वर्णन है— रामायण में
- त्रिशंकु द्वारा यज्ञ का आरम्भ और उसका शापित होने वाला आख्यान है— रामायण में
- मेनका और विश्वामित्र आख्यान है— रामायण में

- राजा सगर के पुत्रों की उत्पत्ति एवं अश्वमेध यज्ञ की कथा है—रामायण में
- रामायण की रचना को माना गया है—500 ई.पू.
- 'अप्रियस्य च पश्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः' यह सूक्ति है—रामायण की
- 'स्त्रिया भर्ता हि दैवतम्' यह सूक्ति है— रामायण में
- गंगावतरणाख्यान कहाँ मिलता है?— रामायण में
- 'प्रतिमानाटक' का उपजीव्य है— रामायण
- प्रतिमानाटक के रचनाकार हैं— भास
- कुन्दमाला नाटक का उपजीव्य है— रामायण
- कुन्दमाला नाटक के रचनाकार हैं— दिङ्नाग
- 'आश्चर्यचूड़ामणि' रचना का उपजीव्य है— रामायण
- भवभूतिकृत महावीरचरितम् और उत्तररामचरितम् का उपजीव्य है— रामायण
- अनुष्टुप् छन्द को कहते हैं—श्लोक
- राम नवमी होती है—चैत्रशुक्लपक्ष नवमी को
- रामायण का छन्द है—अनुष्टुप्
- इक्ष्वाकुवंश के राजगुरु थे—वशिष्ठ
- लंका का राजवैद्य था—सुषेण
- सीता का अपहरण करके ले जाते समय रावण से प्रथम युद्ध किया था—जटायु ने
- रावण की माता का नाम था— कैकशी
- वाल्मीकि का पूर्व नाम था— रत्नाकर
- वशिष्ठ की पत्नी थी— अरुन्धती
- बालि राजा था— पंपापुर का
- सुग्रीव की राजधानी थी— किष्किन्धा

+++

महाभारत

- विश्व-साहित्य का सबसे बड़ा ग्रन्थ है— महाभारत
- महाभारत के रचनाकार हैं— वेदव्यास
- वेदव्यास को कहा जाता है— कृष्ण-द्वैपायन
- वेदव्यास के पिता का नाम था— पराशर
- वेदव्यास की माता का नाम था— सत्यवती
- यमुनाद्वीप में जन्म के कारण वेदव्यास को कहा गया— द्वैपायन
- वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक प्रयोग के लिए वेदव्यास ने बांटा था— चार वेदों में
- इसी कारण व्यास को कहा गया— वेदव्यास
- महाभारत में श्लोकों की संख्या है— 1 लाख
- 'शतसाहस्री संहिता' कहा जाता है— महाभारत को
- आर्षकाव्य कहा जाता है— महाभारत को
- महाभारत के नायकों का दादा कहा जाता है— वेदव्यास को
- वेदव्यास के शिष्य थे— वैशम्पायन
- वेदव्यास ने सर्वप्रथम महाभारत की कथा सुनायी थी— वैशम्पायन को
- वैशम्पायन ने यह कथा सुनायी थी— जन्मेजय को
- नागयज्ञ किया था— जन्मेजय ने
- जन्मेजय के पिता का नाम था— परीक्षित
- मूर्ति पूजा का प्रारम्भ हुआ था— उत्तर वैदिक काल में
- तीसरी बार महाभारत की कथा सूत उग्रश्रवा ने सुनाया था- शौनकादि ऋषियों को
- महाभारत के परिशिष्ट रूप में है— हरिवंश पुराण
- महाभारत का क्रम है— जय, भारत तथा महाभारत
- महाभारत का मूलरूप किसके नाम से प्रसिद्ध है?— जय के
- 'जयाख्यान' को कहते हैं— महाभारत

- 'जय' में कुल श्लोक है— 8800
- 'जय' को कहा गया है— इतिहास
- 'भारत' में कुल श्लोक हैं— 24000
- भारत का प्रवचन किया था— वैशम्पायन ने
- महाभारत विभक्त है— पर्वों में
- महाभारत में कुल पर्व हैं—अठारह (18)
  1. आदिपर्व, 2. सभापर्व, 3. वनपर्व, 4. विराटपर्व, 5. उद्योगपर्व, 6. भीष्मपर्व, 7. द्रोणपर्व, 8. कर्णपर्व, 9. शल्यपर्व, 10. सौप्तिकपर्व, 11. स्त्रीपर्व, 12. शान्तिपर्व, 13. अनुशासनपर्व, 14. आश्वमेधिकपर्व, 15. आश्रमवासिकपर्व, 16. मौसलपर्व, 17. महाप्रस्थानिकपर्व, 18. स्वर्गारोहणपर्व
- महाभारत का सबसे बड़ा पर्व है— शान्तिपर्व
- महाभारत का सबसे छोटा पर्व है— महाप्रस्थानिक पर्व
- 'शकुन्तलोपाख्यान' महाभारत के किस पर्व में है?— आदिपर्व में
- कौरव और पाण्डवों का जन्म हुआ था— आदिपर्व में
- पाण्डु की पत्नियों का नाम था— कुन्ती और माद्री
- धृतराष्ट्र की पत्नी का नाम था— गांधारी
- जरासंध वध का वर्णन है— सभापर्व में
- शिशुपाल वध का वर्णन है— सभापर्व में
- जुए में पाण्डवों की हार की कथा का वर्णन है— सभापर्व में
- जुए में हार के कारण पाण्डवों को वनवास दिया गया था—12 वर्ष का
- जुए में हार के कारण पाण्डवों को अज्ञातवास दिया गया था—1 वर्ष का
- वनवास काल में पाण्डवों द्वारा की गई थी— तीर्थयात्रा
- 'नलोपाख्यान' महाभारत के किस पर्व में वर्णित है?— वनपर्व में
- राम का आख्यान किस पर्व में वर्णित है? — वनपर्व में

- सावित्री और सत्यवान का आख्यान वर्णित है— वनपर्व में
- पाण्डव किस वन में रुके थे?— द्वैतवन में
- जयद्रथ द्वारा द्रौपदी हरण किया गया था— वनपर्व में
- इन्द्र द्वारा कर्ण का कवच कुण्डल माँगा गया था— वनपर्व में
- पाण्डवों के अज्ञातवास की घटना वर्णित है— विराटपर्व में
- मत्स्य वंशीय राजा था— विराट
- विराट की पुत्री का नाम था— उत्तरा
- उत्तरा का विवाह हुआ था— अभिमन्यु से
- अभिमन्यु के माता-पिता थे— अर्जुन और सुभद्रा
- कीचक वध का वर्णन है— विराटपर्व में
- विराट का सेनापति था— कीचक
- कीचक का वध किया था— भीम ने
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में युधिष्ठिर का नाम था— वैयाघ्रपद्म
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में भीम का नाम था— वल्लव
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में अर्जुन का नाम था— वृहन्नला
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में नकुल का नाम था— ग्रन्थिक
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में सहदेव का नाम था— अरिष्टनेमि
- विराट के यहाँ अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम था— सैरन्ध्री
- युद्ध की पूर्व पीठिका की प्रस्तुति है—उद्योगपर्व में
- दुर्योधन को कृष्ण की पूरी सेना मिलती है—उद्योगपर्व में
- अर्जुन को मिलते हैं— कृष्ण
- कृष्ण पाण्डवों का दूत बनकर जाते हैं— उद्योगपर्व में
- कृष्ण पाण्डवों के लिए माँगते हैं— 5 गाँव
- कृष्ण द्वारा कर्ण वृत्तान्त सुनाया गया था—उद्योगपर्व में
- भीष्म के सेनापतित्त्व में महाभारत का युद्ध हुआ था—10 दिनों तक
- महाभारत के आदिपर्व का प्रतिपाद्य विषय है—चन्द्रवंशोत्पत्ति
- महाभारत के भीष्मपर्व का प्रतिपाद्य विषय है—गीतोपदेश
- महाभारत के शान्तिपर्व का प्रतिपाद्य विषय है—मोक्षोपयोगी उपदेश

- श्रीमद्भगवद्गीता का वर्णन है—भीष्मपर्व में
- श्रीमद्भगवद्गीता में कुल अध्याय हैं—18
- युद्ध के तीसरे दिन भीष्म वध के लिए अस्त्र उठाया था—कृष्ण ने
- किस पर्व में भीष्म सरशय्या पर जाते हैं—भीष्मपर्व में
- भीष्म के पिता का नाम था— शान्तनु
- भीष्म की माता का नाम था— गंगा
- देवव्रत नाम था— भीष्म का
- भीष्म के गुरु का नाम था— परशुराम
- द्रोणाचार्य के सेनापतित्त्व में महाभारत का युद्ध हुआ था—5 दिनों तक
- अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच, तथा द्रोणाचार्य का वध हुआ था—द्रोणपर्व में
- द्रोणाचार्य के सेनापति बनने पर युद्ध करता है— कर्ण
- अभिमन्यु के मारे जाने पर युधिष्ठिर को 16 राजाओं का चरित सुनाया था— व्यास ने
- द्रोणवध किया था— धृष्टद्युम्न ने
- द्रोणवध के उपरान्त उनके पुत्र अश्वत्थामा ने प्रयोग किया था—नारायणास्त्र का
- नारायणास्त्र से पाण्डवों की रक्षा करते हैं— कृष्ण
- महाभारत में कर्ण अपने सेनापत्तित्व में युद्ध करता है—दो दिनों तक
- कर्ण का सारथि था— मद्र नरेश शल्य
- हस्तिनापुर बसा था— गंगा नदी के किनारे
- महाभारत के युद्ध के अन्तिम दिन का वर्णन है— शल्यपर्व में
- शल्य कौरवों का सेनापति बना था— शल्यपर्व में
- शल्य का वध हुआ था— शल्यपर्व में
- दुर्योधन और भीम के गदा युद्ध का वर्णन है— शल्यपर्व में
- दुर्योधन के उरुभङ्ग का वर्णन है— शल्यपर्व में

- द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के मारे जाने की कथा वर्णित है— सौप्तिकपर्व में
- द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को मारा था— कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ने
- दुर्योधन प्राण त्यागता है— सौप्तिकपर्व में
- कुन्ती पाण्डवों को कर्ण का वृत्तान्त सुनाती हैं— स्त्रीपर्व में
- युधिष्ठिर स्त्री जाति को शाप देते हैं— स्त्रीपर्व में
- स्त्रियों के मन में रहस्य की कोई बात छिपेगी नहीं, यह शाप दिया था— युधिष्ठिर ने
- 'कृष्णवंश' के विनाश का शाप दिया था— गान्धारी ने
- धार्मिक एवं दार्शनिक सामग्री सर्वाधिक है— शान्तिपर्व में
- भीष्म द्वारा युधिष्ठिर आदि को उपदेश दिया गया— शान्तिपर्व में
- 'शिवसहस्रनामस्तोत्र' है— अनुशासनपर्व में
- विष्णुसहस्रस्तोत्र है— अनुशासनपर्व में
- भीष्म का स्वर्गारोहण होता है— अनुशासनपर्व में
- किसके आदेश से युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करते हैं? व्यास के
- यज्ञाश्व की एक वर्ष तक रक्षा की थी— अर्जुन ने
- युधिष्ठिर राज्य संभालते हैं— आश्वमेधिकपर्व में
- धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती और विदुर वन में गये थे— आश्रमवासिक पर्व में
- युधिष्ठिर के परामर्शदाता थे— धृतराष्ट्र (15 वर्ष तक)
- यादववंश का नाश हुआ— मौसलपर्व में
- कृष्ण की मृत्यु होती है— एक व्याघ्र द्वारा
- यदुवंश के विनाशक 'मुसल' के कारण ही नाम पड़ा था— मौसलपर्व
- पाण्डव की हिमालय यात्रा का वर्णन है— महाप्रस्थानिक पर्व में
- सशरीर स्वर्ग गए थे— युधिष्ठिर
- 'मत्स्योपाख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- 'परीक्षितोपाख्यान' वर्णित है— महाभारत में

- 'दुर्वासोपाख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- 'तिलोत्तमोपाख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- 'शार्ङ्गकोपाख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- 'पृथु आख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- 'पुरुरवा आख्यान' वर्णित है— महाभारत में
- नागाख्यान वर्णित है— महाभारत में
- महाभारत का प्रधान रस है— शान्तरस।
- श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया गया था— कुरुक्षेत्र में
- पाण्डवों के पुरोहित का नाम था— धौम्य
- गंगा और शान्तनु द्वारा कितने पुत्र हुए थे?— 8
- गंगा और शान्तुन द्वारा कौन से पुत्र भीष्म थे?— 8वें
- पाण्डु, धृतराष्ट्र एवं विदुर के जनक थे— व्यास
- गान्धार नरेश की पुत्री थी— गान्धारी
- कौरवों की भगिनी थी— दुःशला
- 'उत्तर कुमार' पुत्र था— राजा विराट का
- 'उत्तर कुमार' के रथ का सारथी था— अर्जुन
- महाभारत युद्ध में भीष्म किस दिन शरसैय्या पर जाते हैं? —10वें दिन
- महाभारत के युद्ध में कुल सेनापति बने थे— चार
- महाप्रस्थान के समय पाण्डव कौन सा जानवर ले गये थे?— कुत्ता
- अर्जुन को नपुंसक बनने का शाप दिया था— उर्वशी ने
- परीक्षित के पिता का नाम था— अभिमन्यु
- महाभारत ग्रन्थ है— ऐतिहासिक
- श्रीकृष्ण के शंख का नाम है— पाञ्चजन्य
- दुःशला का पति था— जयद्रथ
- महाभारत में किस वंश के इतिहास का वर्णन है?— चन्द्रवंश का
- कुन्ती पुत्री थी— शूरसेन की।



पुराण

- पुराण शब्द का अर्थ है— 'पुरा भवं पुराणम्'
- पुराणों के रचनाकार हैं— व्यास
- 'पुराऽपि नव पुराणम्' यह कथन है— निरुक्तकार यास्क का
- 'पुराणमाख्यानं पुराणम्' यह कथन है— निरुक्तकार यास्क का
- इतिहास और पुराण को कहा गया है— पञ्चमवेद
- इतिहास और पुराण को पञ्चमवेद कहा है— नारद ने [1]
- 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत' यह कहा गया है— महाभारत में
- 'पदार्थेषु आनयतीति पुराणम्' यह है— पद्मपुराण में
- 'यस्मात् पुरा ह्यनति' यह है— वायुपुराण में
- पुराणों की कुल संख्या है— 18

  1. ब्रह्मपुराण, 2. पद्मपुराण, 3. विष्णुपुराण, 4. वायुपुराण, 5. श्रीमद्भागवतपुराण, 6. नारदपुराण, 7. मार्कण्डेयपुराण, 8. अग्निपुराण, 9. भविष्यपुराण, 10. ब्रह्मवैवर्तपुराण, 11. लिङ्गपुराण, 12. वाराहपुराण,13. स्कन्दपुराण, 14. वामनपुराण, 15. कूर्मपुराण, 16. मत्स्यपुराण, 17. गरुड़पुराण, 18. ब्रह्माण्डपुराण।
- उपपुराणों की संख्या है— 18
- पुराण के लक्षण हैं—पाँच

  1. सर्ग, 2. प्रतिसर्ग, 3. वंश, 4. मन्वन्तर, 5. वंशानुचरित
- विश्व सृष्टि की प्रक्रिया है— सर्ग
- प्रलय तथा पुनः सृष्टि की प्रक्रिया है— प्रतिसर्ग
- देवताओं तथा ऋषियों के वंशों का वर्णन है— वंश में
- प्रत्येक मनु का काल तथा उस काल की प्रमुख घटनाएँ वर्णित हैं—मनवन्तर में

---

1. सं. सा. इति. — उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'

- सूर्य और चन्द्रवंश में उत्पन्न राजाओं का वर्णन है— वंशानुचरित
- पुराण के पाँचों लक्षण घटित होते हैं— विष्णुपुराण में
- पुराण के 10 लक्षण प्राप्त होते हैं— श्रीमद्भागवतपुराण में
- मौर्य वंश का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- आन्ध्रवंश का वर्णन है— मत्स्यपुराण में
- चन्द्रगुप्त प्रथम का वर्णन है— वायुपुराण में
- पुराणों को कितने प्रकार से विभाजित किया गया है?—ती
  1. वैष्णवपुराण (सात्त्विक) 2. शैवपुराण (तामस)
  3. ब्रह्मपुराण (राजस्)
- विष्णु, नारदीय, भागवत, गरुड़, पद्म, तथा वराह ये हैं— वैष्णव पुराण (सूत्र—विनाभागपव)
- मत्स्य, कूर्म, लिङ्ग, शिव (वायुपुराण), अग्नि तथा स्कन्द ये हैं—शैव पुराण (सूत्र—कूस्म अशिलि)
- ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन तथा भविष्य ये हैं—ब्रह्मपुराण
- ब्रह्मपुराण को कहा जाता है— आदिपुराण
- सूत ने नैमिषारण्य में ऋषियों के सामने प्रवचन किया था— ब्रह्मपुराण का
- ब्रह्मपुराण में कुल श्लोक हैं— 10000
- पद्मपुराण विभक्त है—पाँच खण्डों में

  1. सृष्टिखण्ड 2. भूमिखण्ड 3. स्वर्गखण्ड, 4. पातालखण्ड 5. उत्तरखण्ड
- कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति का वर्णन है— पद्मपुराण में
- रामायण की कथा का वर्णन है— पद्मपुराण में
- प्रह्लाद के पुनर्जन्म की कथा वर्णित है— पद्मपुराण में
- च्यवन ऋषि की कथा वर्णित है— पद्मपुराण में
- शकुन्तला का आख्यान वर्णित है— पद्मपुराण में
- उर्वशी आख्यान वर्णित है— पद्मपुराण में

- राधा को लक्ष्मी कहा गया है— पद्मपुराण में
- पद्मपुराण में कुल श्लोकों की संख्या है— 55000
- विष्णुपुराण में कुल श्लोकों की संख्या है— 16000
- विष्णुपुराण विभक्त है— 6 खण्डों में
- विष्णुपुराण के वक्ता हैं— पाराशर
- विष्णुपुराण के श्रोता हैं— मैत्रेय
- ध्रुव और प्रह्लाद के चरित का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- भारतवर्ष के राजा भरत का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- व्यास द्वारा वेदों के विभाजन का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- विवाह संस्कारों का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- महाभारत की कथाओं का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- मगध, शिशुनाग तथा मौर्यवंशीय राजाओं का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- चारों युगों का वर्णन है— विष्णुपुराण में
- वायुपुराण को कहा जाता है— शिवपुराण
- वायुपुराण में हैं—चार पाद

  1. प्रक्रिया, 2. अनुसंग, 3. उपोद्घात, 4. उपसंहार
- जम्बूद्वीप का वर्णन है— वायुपुराण में
- गुप्तवंश का वर्णन है— वायुपुराण में
- वायुपुराण में कुल श्लोक हैं— 24000
- सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध पुराण है— श्रीमद्भागवतपुराण
- श्रीमद्भागवतपुराण निबद्ध है— 12 स्कन्धों में
- अष्टादश पुराणों में सबसे प्राचीन पुराण है—ब्रह्मपुराण
- परीक्षित को शुकदेव जी ने श्रीमद्भागवतपुराण सुनाया था—प्रथम स्कन्ध में
- नैमिषारण्य में ऋषियों को श्रीमद्भागवतपुराण सुनाया था—सूत जी ने
- भागवत के दस लक्षणों का वर्णन है—द्वितीय स्कन्ध में

- उद्धव, विदुर से कृष्ण लीलाओं का वर्णन करते हैं—तृतीय स्कन्ध में
- मैत्रेयी का विदुर को सृष्टिक्रम सुनाना वर्णित है—तृतीय स्कन्ध में
- वाराहावतार की कथा वर्णित है—तृतीय स्कन्ध में
- सांख्य दर्शनकार कपिल का जन्म वर्णित है—तृतीय स्कन्ध में
- दक्ष और शिव की कथा वर्णित है—चतुर्थ स्कन्ध में
- प्रियव्रत आदि राजाओं का वर्णन है—पञ्चम स्कन्ध में
- अजामिल की कथा वर्णित है—षष्ठ स्कन्ध में
- वृत्रासुर वध का वर्णन है—षष्ठ स्कन्ध में
- प्रह्लाद की कथा का वर्णन है—सप्तम स्कन्ध में
- प्रह्लाद की कथा विभक्त है—10 अध्यायों में
- गजेन्द्रमोक्ष का वर्णन है—अष्टम स्कन्ध में
- समुद्रमन्थन का वर्णन है—अष्टम स्कन्ध में
- मत्स्यावतार का वर्णन है—अष्टम स्कन्ध में
- अम्बरीश की कथा वर्णित है—नवम स्कन्ध में
- विष्णु भगवान ने अवतार लिया था—दसम स्कन्ध में
- राजा हरिश्चन्द्र की कथा वर्णित है—नवम स्कन्ध में
- राम, परशुराम और दुष्यन्त की कथाएँ वर्णित हैं—नवम स्कन्ध में
- सबसे लोकप्रिय और बड़ा स्कन्ध है—दसम स्कन्ध
- कृष्ण जन्म से लेकर पूरी कथा वर्णित है—दसम स्कन्ध में
- यादवों का विनाश हुआ था—11वें स्कन्ध में
- कृष्ण उद्धव संवाद वर्णित है—11वें स्कन्ध में
- कलियुग के राजाओं तथा धर्म का वर्णन है—12वें स्कन्ध में
- 12 स्कन्ध किस पुराण में है?—श्रीमद्भागवत में
- श्रीमद्भागवतपुराण में कुल श्लोक हैं—18000
- नारदपुराण में कुल श्लोक हैं—25000
- वैष्णव धर्म के उत्सवों और व्रतों का वर्णन है—नारदपुराण में

नारदपुराण के खण्ड हैं—दो

➢ मार्कण्डेय पुराण में कुल श्लोक हैं—9000

➢ मार्कण्डेय पुराण के प्रश्नकर्त्ता हैं—जैमिनि

➢ इन्द्र, अग्नि, एवं सूर्य की महत्ता का वर्णन है—मार्कण्डेय पुराण में

➢ अनुसूया की कथा वर्णित है—मार्कण्डेय पुराण में

➢ 'दुर्गसप्तशती' का वर्णन है—मार्कण्डेय पुराण में

➢ समस्त भारतीय विद्याओं का विश्वकोश कहा जाता है—अग्निपुराण को

➢ देव प्रतिमाओं का निर्माण एवं उनकी प्राणप्रतिष्ठा की विधियाँ वर्णित हैं— अग्निपुराण में

➢ गणित, ज्योतिष, शकुनविद्या आदि का वर्णन है— अग्निपुराण में

➢ अग्निपुराण में श्लोक हैं— 15000

➢ 'आदित्यसहस्रस्तोत्र' वर्णित है— भविष्यपुराण में

➢ पाँच पर्व हैं— भविष्य पुराण में

➢ नागपञ्चमी की कथा वर्णित है— भविष्यपुराण में

➢ सूर्य पूजा का विशेष वर्णन है— भविष्यपुराण में

➢ शाम्ब का कुष्ठरोग किसकी उपासना से ठीक होता है?—सूर्य की

➢ ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्लोकों की संख्या है—18000

➢ राधा-कृष्ण की लीला का वर्णन है—ब्रह्मवैवर्तपुराण में

➢ राधा को सृष्टि की आधारभूत शक्ति कहा गया है—ब्रह्मवैवर्तपुराण में

➢ कृष्ण को सृष्टि का बीज कहा गया है—ब्रह्मवैवर्त पुराण में

➢ ब्रह्मवैवर्तपुराण में खण्ड हैं— चार

1. ब्रह्म 2. प्रकृति 3. गणेश 4. श्रीकृष्ण जन्म

➢ शिव के 28 अवतारों की कथा वर्णित है— लिङ्गपुराण में

---

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

➢ लिङ्ग पूजा का वर्णन है—लिङ्गपुराण में

➢ योग एवं शैव तन्त्रों का प्रतिपादन है— लिङ्गपुराण में

➢ लिङ्गपुराण में श्लोकों की संख्या है— 11000

➢ नचिकेता की कथा वर्णित है— वाराहपुराण में

➢ गणेश की कथा वर्णित है— वाराहपुराण में

➢ गणेशस्तोत्र है— वाराहपुराण में

➢ मथुरा माहात्म्य एवं द्वादशी व्रत का माहात्म्य वर्णित है—वाराहपुराण में

➢ वाराहपुराण की प्रश्न कर्त्ता हैं— पृथ्वी

➢ वाराहपुराण में श्लोक हैं— 15000

➢ सबसे बड़ा पुराण है— स्कन्दपुराण

➢ शिवपुत्र स्कन्द पर आश्रित पुराण का नाम है—स्कन्दपुराण

➢ सनत्कुमार, सूत, शंकर, वैष्णव, ब्रह्म और सौर संहिताएँ हैं—स्कन्दपुराण में

➢ शिव की वैदिक एवं तांत्रिक विधियों से पूजा का वर्णन है—स्कन्दपुराण में

➢ स्कन्दपुराण में दो गीता हैं— 1. ब्रह्मगीता 2. सूत गीता

➢ 'गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' का वर्णन है— स्कन्दपुराण में

➢ स्कन्दपुराण में कुल श्लोक हैं—81000

➢ सबसे अधिक श्लोक हैं—स्कन्दपुराण में

➢ वामनपुराण का विभाजन हुआ है—चार संहिताओं में

➢ माहेश्वरी, भागवती, सौरी तथा गाणेश्वरी संहिताएँ हैं— वामनपुराण में

➢ वामनपुराण में श्लोकों की संख्या है— 10000

➢ ब्राह्मी, भागवती, सौरी, वैष्णवी संहिताएँ हैं— कूर्मपुराण में

➢ राजा इन्द्रदुम्न की कथा वर्णित हैं— कूर्मपुराण में

- शिव की शक्ति की 8 सहस्रनामों से स्तुति की गयी है—कूर्मपुराण में
- कूर्मपुराण में श्लोक हैं— 6000
- आंध्र नरेशों का वर्णन है— मत्स्यपुराण में
- प्रयाग महात्म्य वर्णित है— मत्स्यपुराण में
- मत्स्यपुराण में श्लोक हैं—14000
- गरुड़पुराण के वक्ता हैं— विष्णु
- गरुड़पुराण के श्रोता हैं— गरुड़
- गरुड़ ने इस पुराण का प्रवचन किया था— कश्यप को
- गरुड़पुराण विभक्त है—दो खण्डों में
  1. पूर्व खण्ड 2. उत्तर खण्ड
- गरुड़पुराण का विश्वकोश है—पूर्व खण्ड
- 'उत्तर खण्ड' कहलाता है—प्रेतकल्प
- मरने के बाद की गतियों को बताया गया है—गरुड़पुराण में
- वैष्णव व्रत, विष्णु पूजा, प्रायश्चित्त एवं पञ्चदेवों की पूजा वर्णित है—गरुड़पुराण में
- गरुड़पुराण में श्लोक हैं—18000
- ब्रह्मा ने उपदेश दिया था—ब्रह्माण्डपुराण का
- क्षत्रियों के वंशों का वर्णन है—ब्रह्माण्डपुराण में
- वायु ने व्यास को उपदेश दिया था—ब्रह्माण्डपुराण का
- ब्रह्माण्डपुराण में श्लोक हैं—12000
- स्वयं देखी गयी घटनाओं का कथन करना है—आख्यान
- मात्र सुने गए कथानकों का प्रकाशन करना है—उपाख्यान
- जो वक्ता द्वारा श्रुत एवं दृष्ट नहीं होता है, वह है—उपाख्यान
- 'पञ्चाङ्गानि पुराणस्य चाख्यानमितरत स्मृतम्' यह सम्बद्ध है—स्कन्दपुराण से

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

- सुकन्या-च्यवन चरित आख्यान है—श्रीमद्भागवत के 9वें स्कन्द में
- शर्याति की कन्या थी—सुकन्या
- अम्बरीष पुत्र थे—नाभाग के
- च्यवन ऋषि को सुन्दर रूप प्रदान किया था—अश्विनी कुमारों ने
- किस याग के द्वारा च्यवन ऋषि को सुन्दर बनाया गया था?—सोमयाग
- त्रिशंकु के पुत्र थे—राजा हरिश्चन्द्र
- नहुष का वंश था—चन्द्रवंश
- नहुष का पुत्र था—ययाति
- ययाति के 5वें पुत्र थे—पुरु
- पुरु से प्रारम्भ हुआ था—पौरव वंश
- ललित कलाओं का वर्णन है—पुराण में
- भारतीय कलाओं का वर्णन है—पुराणों में
- निवास स्थान को कहते हैं—वास्तु
- शिल्प कला के आचार्य हैं—विश्वकर्मा
- 'प्रभास' नामक अष्टवसु के पुत्र हैं—विश्वकर्मा
- पुराणों में चित्रकला का आचार्य कहा गया है—नारायण को
- सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है—चित्रकला
- संगीत कला को कहते हैं—गन्धर्ववेद
- संगीत कला का अंग है—नृत्यकला
- नृत्यकला के आचार्य हैं—श्रीकृष्ण
- कलाओं की संख्या है—64
- सृष्टि का निर्माणकर्त्ता कहा गया है—ब्रह्मा को
- सृष्टि निर्माण की प्रेरणा ब्रह्मा को प्राप्त हुई थी—विष्णु से
- विष्णु की नाभि से निकले कमल के ऊपर निवास होता है—ब्रह्मा का
- 'मद्वयम्' पुराण है—मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण
- 'भद्वयम्' पुराण है—भविष्य और भागवत
- 'ब्रत्रयम्' पुराण हैं—ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त

- 'वचतुष्टयम्' पुराण हैं— वामन, वाराह, वायु, विष्णु
- 'अ' से पुराण है— अग्नि
- 'ना' से पुराण है— नारद
- 12 स्कन्ध वाला पुराण है— श्रीमद्भागवत्पुराण
- भक्ति कितनी होती है?— नवधा
- ऋषियों के भेद हैं— सात
- अमरकोश का अन्य नाम है— नामलिङ्गानुशासन
- व्यास के पितामह का नाम है— शक्ति
- 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्' यह किसका वचनद्वय है— व्यास का
- समुद्र-मन्थन से निकलने वाली मणि का नाम था— कौस्तुभमणि
- समुद्र-मन्थन से निकलने वाले घोड़े का नाम था— उचैःश्रवा
- जल में डूबी पृथ्वी को निकालने के लिए विष्णु ने अवतार लिया था— वाराहावतार
- वाराहावतार में विष्णु ने वध किया था— हिरण्याक्ष का
- परशुराम की माँ का नाम था— रेणुका
- परशुराम के पिता का नाम था— जमदग्नि
- देवों के सेनापति का नाम है— स्कन्द (कार्तिकेय)
- स्कन्दपुराण के उपदेष्टा हैं— स्कन्द (कार्तिकेय)
- किस पुराण में सभी पुराणों की विषय सूची मिलती है— नारदपुराण में



खण्ड-7

अर्थशास्त्र

- अर्थशास्त्र के प्रणेता हैं— आचार्य कौटिल्य
- कौटिल्य का अन्य नाम है— विष्णुगुप्त
- अर्थशास्त्र में कुल अधिकरण हैं— 15
- अर्थशास्त्र के 15 अधिकरणों के नाम हैं—
  1. विनयाधिकारिक, 2. अध्यक्षप्रचार, 3. धर्मस्थीय, 4. कण्टकशोधन, 5. योगवृत्त, 6. मण्डलयोनि, 7. षाड्गुण्य, 8. व्यसनाधिकारिक, 9. अभियास्यत्कर्म 10. साङ्ग्रामिक, 11. वृत्तसंघ, 12. आबलीयस, 13. दुर्गलम्भोपाय, 14. औपनिषदिक, 15. तन्त्रयुक्ति
- अर्थशास्त्र में कुल अध्याय हैं— 150
- अर्थशास्त्र में कुल विषय हैं— 180
- अर्थशास्त्र में कुल श्लोक हैं— 6000
- कौटिल्यानुसार विद्याएँ हैं— चार
  1. आन्वीक्षकी 2. त्रयी 3. वार्ता 4. दण्डनीति
- 'आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति' यह सम्बद्ध है— अर्थशास्त्र से
- मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य मानते हैं— तीन विद्या
  1. त्रयी 2. वार्ता 3. दण्डनीति
- मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य नहीं मानते हैं— आन्वीक्षकी विद्या को
- मनु सम्प्रदाय के अनुयायी आचार्य आन्वीक्षकी को मानते हैं— त्रयी में समावेशित
- बृहस्पति के अनुयायी विद्याएँ मानते हैं— दो
  1. वार्ता 2. दण्डनीति

- शुक्राचार्य के अनुयायी विद्याएँ मानते हैं— एक, (दण्डनीति को)
- सांख्य, योग और लोकायत दर्शन आते हैं— आन्वीक्षकी में
- 'सामर्ग्यजुर्वेदा:' यह है— त्रयी
- 'कृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता' यह सम्बद्ध है— वार्ता से
- 'आन्वीक्षकीत्रयीवार्तानां योगक्षेमसाधनो दण्ड:' यह सम्बद्ध है— दण्ड से
- तीनों विद्याओं की समृद्धि निर्भर है— दण्ड पर
- मुण्डन संस्कार के बाद अभ्यास करना चाहिए— वर्णमाला और अङ्कमाला का
- उपनयन के बाद सदाचारशील विद्वान् आचार्य से ग्रहण करना चाहिए— त्रयी तथा आन्वीक्षकी विद्या
- विभागीय अध्यक्षों से ग्रहण करना चाहिए— वार्ता विद्या
- वक्ता-प्रयोक्ता विशेषज्ञों से ग्रहण करना चाहिए— दण्डनीति
- कौटिल्य के अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए— 16 वर्ष तक
- हाथी, घोड़ा, रथ, अस्त्र-शस्त्र आदि विद्याओं में राजा को बिताना चाहिए— दिन का 1 भाग
- राजा को इतिहास सुनने में लगाना चाहिए— दिन का 2 भाग
- विद्या और विनय का हेतु है— इन्द्रियजय
- राजनीति विषयक अर्थशास्त्र के रचनाकार हैं— आचार्य कौटिल्य
- आचार्य कौटिल्य का समय माना गया है— 322 बी.सी. (ई.पू.)
- 'सर्वविद्यानां प्रदीप:' यह है— आन्वीक्षकी
- 'अध्ययनम्-अध्यापनं यजनमयाजनं, दानं प्रतिग्रहश्च' ये धर्म हैं— ब्राह्मण के
- 'यजनम् अध्ययनं दानं शास्त्राजीव: भूतरक्षणम्' यह धर्म है— क्षत्रिय के
- 'यजनम् दानं कृषि: पशुपालनं च' यह धर्म है— वैश्य का
- 'द्विजाति शुश्रूषा वार्ता च' यह धर्म है— शूद्र का

- कौटिल्य के अनुसार शत्रु हैं— काम, क्रोध, लोभ, मान, मद और हर्ष
- सारे शास्त्रों का मूलकारण है— इन्द्रिजय
- आचार्य कौटिल्य के अनुसार पुरुषार्थ हैं— तीन
  1. धर्म 2. अर्थ 3. काम
- कौटिल्यानुसार धर्म, अर्थ और काम में सबसे प्रधान है— अर्थ
- धर्म और काम निर्भर हैं— अर्थ पर
- आचार्य भारद्वाज के मत में राजा को अमात्य बनाना चाहिए— अपने सहपाठियों को
- राजा को स्वयं परीक्षा लेनी चाहिए— मंत्री की
- राजा के व्यवहार की विधियाँ हैं— तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. परोक्ष 3. अनुमेय
- स्वदेशोत्पन्न, कुलीन, निपुण आदि गुणों से युक्त होना चाहिए— प्रधानमंत्री को
- वेद-वेदाङ्गो का ज्ञाता, शील, उच्चकुलोत्पन्न होता है— पुरोहित
- राजा को अनुगामी होना चाहिए— पुरोहित का
- राजा, मन्त्री, पुरोहित को परीक्षा लेनी चाहिए— अमात्य की
- गुप्त धार्मिक उपायों द्वारा अमात्य की परीक्षा को कहते हैं— धर्मोपधा
- आर्थिक उपायों द्वारा अमात्य की परीक्षा को कहते हैं— अर्थोपधा
- काम सम्बन्धी उपायों द्वारा अमात्य की परीक्षा को कहते हैं— कामोपधा
- धर्म परीक्षा में उत्तीर्ण अमात्यों को बनाना चाहिए— धर्मस्थानीय तथा कण्टकशोधन
- अर्थोपधा में उत्तीर्ण अमात्यों को बनाना चाहिए— समाहर्ता तथा सन्निधाता
- कामोपधा में उत्तीर्ण अमात्यों को कार्य देना चाहिए— बाहरी विलास स्थानों का
- गुप्त भय उपायों द्वारा अमात्य की परीक्षा को कहते हैं— भयोपधा
- भय परीक्षा में उत्तीर्ण को बनाना चाहिए— अङ्गरक्षक

- सभी परीक्षा में उत्तीर्ण अमात्य को नियुक्त करना चाहिए— मंत्रिपरिषद में
- सभी परीक्षा में अनुत्तीर्ण अमात्य को नियुक्त करना चाहिए— खदानों, जंगलों आदि में
- राजा द्वारा अमात्यों के चरित्र की परीक्षा करनी चाहिए— गुप्तचरों द्वारा
- अमात्यों के बाद राजा को नियुक्त करना चाहिए— गुप्तचरों को
- गुप्तचरों के विभाग हैं— दो, 1. स्थायी गुप्तचर, 2. भ्रमणशील
- स्थायी गुप्तचर हैं— पाँच
  1. कापटिक, 2. उदास्थित, 3. गृहपतिक, 4. वैदेहक, 5. तापस
- विद्यार्थी की वेशभूषा में रहने वाला गुप्तचर है— कापटिक
- संन्यासी की वेशभूषा में रहने वाला गुप्तचर है— उदास्थित
- गरीब किसान के वेश में रहने वाला गुप्तचर है— गृहपतिक
- गरीब व्यापारी के वेश में रहने वाला गुप्तचर है— वैदेहिक
- सिर मुँडाये या जटाधारण करने वाला गुप्तचर है— तापस
- द्रव्य के लिए प्राणों की परवाह न करने वाला गुप्तचर है— तीक्ष्ण
- हाथी, बाघ और साँप से भी धन के लिए भिड़ जाने वाला गुप्तचर है— तीक्ष्ण
- भाई-बन्धुओं से स्नेह न करने वाला तथा क्रूर, आलसी गुप्तचर है— रसद
- सन्यासिनी के वेश में खुफिया काम करने वाली है— परिव्राजिका
- परस्पर कितने अपरचित गुप्तचरों द्वारा लाये गए समाचार को सच समझना चाहिए?— तीन
- जिसके साथ गलत किया गया, वह कहलाता है?— क्रुद्धवर्ग
- भय दिखाकर किया गया, कार्य है— भीतवर्ग
- मन्त्र के अंग हैं— पाँच
- मनु मन्त्रिपरिषद् में अमात्यों की नियुक्ति मानते हैं— 12

- बृहस्पति मन्त्रिपरिषद् में कितने मन्त्रियों की नियुक्ति मानते हैं?— 16
- शुक्राचार्य मन्त्रिपरिषद् में कितने मन्त्रियों की नियुक्ति मानते हैं?— 20
- कौटिल्य मन्त्रिपरिषद् में कितने अमात्यों की नियुक्ति मानते हैं?— चार
  1. मंत्री 2. पुरोहित 3. सेनापति 4. युवराज
- कौटिल्य के अनुसार दूत की श्रेणियाँ हैं— तीन
  1. निसृष्टार्थ 2. परिमितार्थ 3. शासनहर
- अमात्य के गुणों से सम्पन्न दूत हैं— निसृष्टार्थ
- राजपुत्रों की श्रेणियाँ होती है— तीन
  1. बुद्धिमान, 2. आहार्यबुद्धि, 3. दुर्बुद्धि
- त्रिवर्ग का आचरण करने वाला है— बुद्धिमान
- समय का विभाजन किया जा सकता है— पुरुष की छाया से
- दिन का पहला आठवाँ हिस्सा है— तीन पुरुष की छाया
- तीन पुरुष की छाया को कहते हैं— त्रिपौरुषी छाया
- दिन के भाग हैं— आठ
- पूर्वार्द्ध के प्रथम भाग में राजा कार्य करे— रक्षा सम्बन्धी एवं आय-व्यय
- दूसरे भाग में राजा को कार्य करना चाहिए— पुरवासियों से मिलने का
- तीसरे भाग में राजा को कार्य करना चाहिए— स्थान, भोजन, स्वाध्याय का
- दिन के अन्त में राजा को कार्य करना चाहिए— संध्योपासना का
- रात्रि के प्रथम भाग में राजा को कार्य करना चाहिए— गुप्तचरों को देखने का
- रात्रि के द्वितीय भाग में राजा को कार्य करना चाहिए— स्नान, भोजन, स्वाध्याय का
- रात्रि के तीसरे भाग में राजा को कार्य करना चाहिए— संगीत सुनना तथा शयन का

- गाय और बैल की प्रदक्षिणा करके राजा को प्रवेश करना चाहिए— दरबार में
- राजा को अपना महल बनवाना चाहिए— अन्तःपुर के बीच में
- आठ सौ गाँवों के बीच में होता है— एक स्थानीय
- चार सौ गाँवों का समूह कहा जाता है— एक द्रोणमुख
- दो सौ गाँवों के बीच में होता है— एक कार्पटिक
- दस गाँवों के बीच में होता है— संग्रहण
- आचार्य कौटिल्य के अनुसार दुर्ग के प्रकार हैं— चार
  1. औदक 2. पार्वत 3. धान्वन 4. वनदुर्ग
- चारों ओर पानी से घिरा हुआ टापू के समान गहरे तालाबों से आवृत्तस्थल है— औदक दुर्ग
- बड़ी-बड़ी चट्टानों अथवा पर्वत की कन्दराओं के रूप वाला दुर्ग है— पार्वत
- सर्वथा ऊसर भूमि में निर्मित्त दुर्ग है— धान्वन
- चारों ओर दलदल से घिरा अथवा कांटेदार सघन झाड़ियों से घिरा दुर्ग है— वनदुर्ग
- आपत्तिकाल में जनपद की रक्षा के उपयोग में लाये जाते हैं— औदक तथा पार्वत दुर्ग
- वनपालों की रक्षा के लिए उपयोगी होते हैं— धान्वन तथा वनदुर्ग
- आपत्ति के समय राजा भागकर अपनी रक्षा कर सकता है— धान्वन तथा वनदुर्ग में
- जिस स्थान को कोई न देख सके वह है— प्रधावितिका
- निशाना मारने के लिए बनाया जाने वाला छिद्र है— निष्कुहद्वार
- नगर में गलियों की चौड़ाई होनी चाहिए— चार दण्ड (24 फीट)
- अन्तःपुर का द्वार होना चाहिए— पूर्व या पश्चिम की ओर
- अन्तःपुर के पूर्वोत्तर में भवन बनवाना चाहिए— पुरोहित, आचार्य, यज्ञशाला आदि का

- अन्तःपुर के पूर्व दक्षिण में होना चाहिए— रसोईघर, हस्तशिला कोष्ठागार
- भण्डारगार, सोने-चाँदी की दुकाने होती हैं— दक्षिण पूरब में
- नगराध्यक्ष, सेनाध्यक्ष, भोजनालय, वेश्या, नट, वैश्य तथा देवताओं की स्थापना होनी चाहिए— नगर के बीच में
- बीस हलों से जोती जाने वाली भूमि को कहते हैं— शकुलीबाट
- दुर्गकर, राष्ट्रकर, खनिजकर, सेतुकर, वनकर, व्यापार कर लेना चाहिए— समाहर्ता को
- राजवर्ष के विभाग हैं— तीन 1. वर्षा, 2. हेमन्त, 3. ग्रीष्म
- 15 दिन का होता है— एक पक्ष
- करणीय के प्रकार हैं— 6
- सिद्ध के प्रकार हैं— 6
- शेष के प्रकार हैं— 6
- आय के प्रकार हैं— तीन 1. वर्तमान, 2. पर्युषित, 3. अन्यजात
- व्यय के प्रकार हैं— चार
  1. नित्य, 2. नित्योत्पादिक, 3. लाभ, 4. लाभोत्पादिक
- सभी प्रकार के हिसाब से बचा धन है— नीवी
- नीवी के प्रकार हैं— दो, 1. प्राप्त, 2. अनुवृत्त
- कोषक्षय के कारण हैं— आठ
  1. प्रतिबन्ध, 2. प्रयोग, 3. व्यवहार, 4. अवस्तार,
  5. परिहायण, 6. उपभोग, 7. परिवर्तन, 8. अपहार
- लेखक की योग्यता के प्रकार हैं— छः
- कौटिल्य पद के प्रकार मानते हैं— चार
  1. नाम, 2. आख्यात, 3. उपसर्ग, 4. निपात
- कौटिल्य के अनुसार वर्ण अकारादि हैं— 63
- अनुनय के प्रकार हैं— तीन

- लेख के भेद हैं—8
- उपाय के प्रकार हैं—4
- साम के प्रकार हैं—5
- पत्र लेख के दोष हैं— 5
- मोतियों के उत्पत्ति स्थान हैं— 10
- मोतियों के कारण हैं—तीन 1. शुक्ति 2. शंख 3. प्रकीर्णक
- दूषित मोतियों के प्रकार हैं— 13
- मणियों के उत्पत्ति स्थान हैं— तीन
- मणियों के प्रकार हैं— 5
- वैदूर्यमणि के प्रकार हैं— 8
- इन्द्रनील मणि के प्रकार हैं— 8
- स्फटिक मणि के प्रकार हैं— 4
- मणियों के गुण हैं— 11
- मणियों के दोष हैं— 7
- मणियों की उपजातियाँ हैं— 18
- हीरा के उत्पत्ति स्थान हैं— 6
- चन्द्र के उत्पत्ति स्थान हैं— 16
- रङ्ग के प्रकार हैं— 9
- गंध के प्रकार हैं— 6
- गुण के प्रकार हैं— 11
- ऊनी वस्त्रों के भेद होते हैं— 10
- मृग के बालों से कितने प्रकार का कपड़ा बनाया जाता है? —6
- पत्थर के प्रकार हैं—तीन
  1. पाषाण धातु 2. भूमि धातु 3. ताम्र धातु
- ताँबे के प्रकार हैं— चार
- सोने के प्रकार हैं— 5
- चाँदी के प्रकार हैं— 4
- सुनारों के कार्य हैं— 6

- सुनारों के चोरी के प्रकार हैं— 5
- सोने के अपहरण के प्रकार हैं— 4
- लवण के प्रकार हैं— 6
- शहद के प्रकार हैं—दो 1. क्षौद्र 2. मार्द्वीक
- पात्र के प्रकार हैं—दो 1. विदलमय 2. मृतिकामय
- कर वसूली के नियम कितने प्रकार के हैं?—तीन
  1. बाह्य 2. आभ्यान्तर 3. आतिथ्य
- आतिथ्य के प्रकार हैं—दो 1. निष्क्राम्य 2. प्रवेश्य
- राजा को कर दिया जाता है— राजस्व का 6वाँ हिस्सा
- घोड़े की चाल के भेद हैं—पाँच
  1. वल्गन 2. नीचैर्गत 3. लंघन 4. धोरण 5. नारोष्ट्र
- वल्गन के भेद हैं—6
- नीचैर्गत के भेद हैं—16
- लङ्घन के भेद हैं—7
- धोरण के भेद हैं—8
- उत्तम घोड़े को चलाना चाहिए— 12 योजन
- मध्यम घोड़े को चलाना चाहिए— 9 योजन
- अधम घोड़े को चलाना चाहिए— 6 योजन
- उत्तम घोड़े को कितने योजन चलाने पर विश्राम देना चाहिए?—10 योजन
- मध्यम घोड़े को कितने योजन चलाने पर विश्राम देना चाहिए?—साढे सात
- अधम घोड़े को कितने योजन चलाने पर विश्राम देना चाहिए?—पाँच
- तीनों कोटि के घोड़ों की गति है—तीन प्रकार की
  1. मन्दगति, 2. मध्यगति, 3. तीव्रगति
- उत्तम कोटि के घोड़े की गति होती है— तीव्र गति
- मध्यम कोटि के घोड़े की गति होती है— मध्यम गति

➤ अधम कोटि के घोड़े की गति होती है— मन्दगति
➤ घोड़ों को निरोग रखने के लिए संस्कार करना चाहिए— 'नीराजना'
➤ नीराजना संस्कार किया जाता है— अश्विन मास की नवमी को
➤ हाथियों को किस मौसम में पकड़ना चाहिए?— गर्मी के
➤ हाथियों को पकड़ने की आयु है—20 वर्ष या अधिक
➤ 7 हाँथ ऊँचा, 9 हाथ लम्बा, 10 हाथ मोटा एवं 40 वर्ष वाला हाथी होता है— सर्वोत्तम
➤ 30 वर्ष की आयु वाला हाथी होता है—मध्यम
➤ 25 वर्ष की आयु वाला हाथी होता है—अधम
➤ अवस्थानुसार हाथियों की शोभा कितने प्रकार की मानी गयी है?—सात
➤ कार्य भेद से हाथियों की श्रेणियाँ हैं—चार
1. दम्य (शिक्षा देने योग्य) 2. सान्नाह्य (युद्ध के योग्य),
3. औपवाह्य (सवारी योग्य) 4. व्याल (घातक वृत्तिमाला)
➤ शिक्षा देने योग्य हाथी है— दम्य
➤ युद्ध के योग्य हाथी होता है— सान्नाह्य
➤ सवारी योग्य हाथी होता है— औपवाह्य
➤ घातक वृत्तिवाला हाथी होता है— व्याल
➤ दम्य के प्रकार हैं— 5
➤ सान्नाह्य के प्रकार हैं— 7
➤ औपवाह्य के प्रकार हैं— 8
➤ व्याल के प्रकार हैं— 4
➤ पाँच-पाँच या दस-दस गावों का बनाना चाहिए— 1 केन्द्र
➤ केन्द्र का प्रबन्ध करता है— गोप
➤ राजा धर्म का माना जाता है— प्रवर्तक
➤ धर्म, व्यवहार, चरित्र और राजाज्ञा ये राष्ट्र के माने जाते हैं—चार पैर
➤ कौटिल्य के अनुसार सभी सांसारिक व्यवहार आरम्भ होते हैं— विवाहोपरान्त

कौटिल्य के अनुसार विवाह के प्रकार हैं— 8
➤ 'कन्यादानं कन्यामलङ्कृत्य ब्राह्मो विवाहः' यह है— ब्राह्मविवाह
➤ 'सहधर्मचर्या प्राजापत्यः' यह है—प्राजापत्य विवाह
➤ 'गोमिथुनादानादार्षः' यह है—आर्षविवाह
➤ 'अन्तर्वेद्यामृत्विजे दानाद् दैवः' यह है—दैवविवाह
➤ 'मिथस्समवायाद् गान्धर्वः' यह है—गान्धर्वविवाह
➤ 'शुल्कादानादासुरः' यह है—आसुरविवाह
➤ 'प्रसह्यादानाद् राक्षसः' यह है—राक्षसविवाह
➤ 'सुप्तादानाद् पैशाचः' यह है—पैशाचविवाह
➤ वस्त्राभूषण आदि से सजाकर विधिपूर्वक कन्यादान करना है—ब्राह्मविवाह
➤ कन्या और वर द्वारा सहधर्म पालन करने की प्रतिज्ञा स्वीकार करने वाला विवाह है—प्राजापत्य
➤ वर से गाय का जोड़ा लेकर किया जाने वाला विवाह है— आर्षविवाह
➤ कन्या और वर का आपसी सलाह से किया गया विवाह है—गान्धर्वविवाह
➤ वर द्वारा कन्या के पिता को धन देकर किया गया विवाह है—आसुरविवाह
➤ किसी कन्या से बलात्कार करके विवाह करना कहलाता है— राक्षसविवाह
➤ सोई हुई कन्या का हरण करके किया जाने वाला विवाह है— पैशाचविवाह
➤ प्रथम चार प्रकार का विवाह पिता की मर्जी से होने के कारण है—धर्मानुकूल
➤ बाकी चार प्रकार का विवाह होता है—माता-पिता दोनों की मर्जी से
➤ स्त्रीधन के प्रकार हैं—दो, 1. वृत्ति, 2. आबन्ध्य
➤ 'वृत्तिराबन्ध्यं वा' यह है—स्त्री धन
➤ स्त्री के नाम से बैंक आदि में जमा होने वाला धन है—वृत्तिधन
➤ वृत्तिधन कम से कम होना चाहिए—दो हजार तक

- गहने या जेवर आदि धन हैं— आबन्ध्य धन
- किसी को सन्तान न हो रही हो, तो उसे पुनर्विवाह के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए— 8 वर्ष तक
- यदि स्त्री को मरे हुए बच्चे ही पैदा हो रहे हों, तो उसे प्रतीक्षा करनी चाहिए— 10 वर्ष तक
- यदि स्त्री को कन्याएँ ही पैदा हो रही हों, तो उसे प्रतीक्षा करनी चाहिए— 12वर्ष तक
- कौटिल्य के अनुसार कितने वर्ष की लड़की बालिग मानी जाती है?— 12 वर्ष की
- कौटिल्य के अनुसार लड़का बालिग माना जाता है— 16 वर्ष का
- बालिग नियम का उल्लंघन करने पर लड़के को दण्ड दिया जाता है— 24 पण का
- बालिग नियम का उल्लंघन करने पर लड़की को दण्ड दिया जाता है— 12 पण का
- पतित को नहीं मिलता है— दायभाग
- नपुंसक को नहीं मिलता है— दायभाग
- मूर्ख, अन्धा, उन्मत्त, कौढ़ी आदि अधिकारी नहीं है— दायभाग के
- वर्ण क्रम से ब्राह्मण पुत्र को दी जाती हैं— बकरियाँ
- वर्ण क्रम से क्षत्रिय पुत्र को दिये जाते हैं— घोड़े
- वर्ण क्रम से वैश्य पुत्र को दी जाती हैं— गायें
- वर्ण. क्रम से शूद्र पुत्र को दी जाती हैं— भेड़ें
- आचार्य कौटिल्य पुत्रों की संख्या स्वीकार करते हैं— 24
- विधिपूर्वक विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र है— औरस
- 'सगोत्रेणान्यगोत्रेण वा नियुक्तेन क्षेत्रजातः क्षेत्रजःपुत्रः' यह है— क्षेत्रजपुत्र
- 'तत्सधर्मा बन्धूनां गृहे गूढ़जातस्तु गूढजः' यह है— गूढज पुत्र
- 'बन्धुनोत्सृष्टोऽपविद्धः संस्कर्तुः पुत्रः कन्यागर्भः कानीनः' यह है— कानीनपुत्र
- अविवाहित कन्या से उत्पन्न बच्चा है— कानीन पुत्र

- 'सगर्भोढाया सहोढः' यह है— सहोढ़पुत्र
- गर्भवती स्त्री का विवाहोपरान्त जो बच्चा पैदा होता है, वह है— सहोढ़पुत्र
- 'पुनर्भूतायाः पौनर्भवः' यह है— पौनर्भव पुत्र
- 'तत्सधर्मा मातृपितृभ्यामद्भिर्दतो दत्तः' यह है— दत्तकपुत्र
- 'स्वयं बन्धुभिर्वा पुत्रभावोपगतः' यह है— उपगतपुत्र
- 'परिक्रीतःक्रीत इति' यह है— क्रीतपुत्र
- खरीद कर बनाया गया पुत्र है— क्रीतपुत्र
- 'पुत्रत्वेऽधिकृतः कृतक' यह है— कृतकपुत्र
- 'ब्राह्मणस्य वेश्यायामम्बष्ठः' यह है— अम्बष्ठपुत्र
- ब्राह्मण से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र है— निषाद या पारशव
- 'क्षत्रियस्य शूद्रायामुग्रः' यह है— उग्रपुत्र
- वैश्य से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र है— शूद्र
- 'सुवर्णासु चैषामचरितव्रतेभ्यो जाताव्रात्याः' यह है— व्रात्यपुत्र
- शूद्र द्वारा वैश्या, क्षत्रिया तथा ब्राह्मणी स्त्रियों में उत्पन्न पुत्र क्रमशः हैं— आयोगव क्षत्ता और चाण्डाल
- वैश्य द्वारा क्षत्रियों तथा ब्राह्मणी में उत्पन्न पुत्र क्रमशः हैं— मागध और वैदेहक
- क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मणी में उत्पन्न पुत्र हैं— सूतपुत्र
- उग्र पुरुष द्वारा निषाद जाति की स्त्री में उत्पन्न पुत्र है— कुक्कुट
- 'वैदेहिकायामम्बठाद् वैणः' यह है— वैणपुत्र
- वैदेहक पुरुष से अम्बष्ठा स्त्री में उत्पन्न पुत्र है— कुशीलव
- 'क्षत्तायामुग्राच्छवपाकः' यह है— श्वपाकपुत्र
- 'कर्मणा वैश्यो रथकारः' यह है— रथकारपुत्र
- सामान्यतया सौ पण पर ब्याज प्रतिमास लिया जाना चाहिए— सवापण ब्याज
- सौ पण पर व्यापारियों से ब्याज प्रतिमास लिया जाना चाहिए— 5 पण

- सौ पण पर जंगल में रहने वाले या व्यापार करने वालों से ब्याज लिया जाना चाहिए— 10 पण
- सौ पण समुद्री व्यापारियों से ब्याज प्रतिमास लिया जाना चाहिए— 20 पण
- 10 वर्ष तक कर्ज वसूल न कर पाने पर हो जाता है— अधिकार विहीन
- 'वाक्पारुष्यमुपवादः कृत्सनमभिर्भत्सनमिति' यह है— वाक्पारुषय
- गाली-गलौज, निन्दा और धमकाना आदि है— वाक्पारुष्य
- वाक्पारुष्य के भेद हैं— पाँच

  1. शरीर, 2. प्रकृति, 3. श्रुति, 4. वृत्ति, 5. देश
- 'काणखञ्जादिभिः' यह है— शरीर पारुष्य
- किसी व्यक्ति को कोढ़ी पागल या नपुंसक आदि कहकर निन्दा करने पर दण्ड है— 12 पण
- अपने बराबर के व्यक्ति की निन्दा करने पर क्रमशः दण्ड है— 12 पण, 24, 36 पण
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियाँ यदि पूर्व-पूर्व एक दूसरे की निन्दा करती हैं तो यह है— प्रकृति पारुष्य
- ब्राह्मण द्वारा निन्दा किए जाने पर दण्ड है— 2 पण
- क्षत्रिय द्वारा निन्दा किए जाने पर दण्ड है— 4 पण
- वैश्य द्वारा निन्दा किए जाने पर दण्ड है— 6 पण
- शूद्र द्वारा निन्दा किए जाने पर दण्ड है— 8 पण
- पढ़ाई, विद्वता, योग्यता आदि विषयों पर निन्दा करना है— श्रुति पारुष्य (तेन श्रुतोपवादो वाग्जीवनानाम्)
- शिल्पी, कुशीलव, (नट, नर्तक, गायक) आदि एक दूसरे की निंदा करें तो, वह है— वृत्ति पारुष्य (कारु कुशीलवानां वृत्युपवादः)
- भिन्न देश एक दूसरे की निन्दा करें तो, वह है— देश पारुष्य
- 'दण्डपारुष्यं स्पर्शनमवगूर्णं प्रहतमिति' यह है— दण्डपारुष्य

चतुर्थ अधिकरण

- दैवी महाविपत्तियाँ हैं— 8
- उपद्रव हैं— 13
- कुँवारी कन्या से संभोग करने पर दण्ड है— 400 पण
- कन्या बलात्कार से मर जाए तो दण्ड है— प्राणदण्ड

पाँचवां अधिकरण

- ऋत्विक्, आचार्य, मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज, राजमाता और पटरानी को प्रतिवर्ष वेतन दिया जाता है— 48000 पण

छठा अधिकरण

- कौटिल्य के अनुसार प्रकृतियाँ हैं— सात
- सप्ताङ्गराज्य या सप्तप्रकृतियाँ हैं— 1. स्वामी (राजा), 2. अमात्य, 3. जनपद, 4. दुर्ग, 5. कोष, 6. दण्ड (सेना), 7. मित्र
- 'स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोशदण्डमित्राणि प्रकृतयः' यह हैं— सप्त प्रकृतियाँ
- राजा के उत्साह के गुण हैं— चार

  1. शौर्य, 2. अमर्ष, 3. क्षिप्रकारिता, 4. दक्षता.
- दुर्ग के प्रकार हैं— चार

सातवाँ अधिकरण

- सात प्रकृतियाँ और बारह राजमण्डल आधार हैं— षाड्गुण्य के
- कौटिल्य गुणों की संख्या मानते हैं— 6 (षाड्गुण्य)

  1. संधि, 2. विग्रह, 3. यान, 4. आसन, 5. संशय और 6. द्वैधीभाव
- 'तत्र पणबन्ध सन्धिः' यह है— सन्धि
- 'अपकारः विग्रहः' यह है— विग्रह
- 'अभ्युच्चयो यानम्' यह है— यान
- 'उपेक्षणमासनम्' यह है— आसन
- 'परार्पणं संश्रयः' यह है— संश्रय

➢ 'सन्धिविग्रहोपादानं द्वैधीभाव इति' यह है— द्वैधीभाव
➢ सन्धि के प्रकार हैं— दो 1. परिपणित 2. अपरिपणित
➢ सन्धि के धर्म हैं—चार
1. अकृतचिकीर्षा 2. कृतश्लेषण,
3. कृषविदूषण 4. अवशीर्णक्रिया
➢ विग्रह के धर्म हैं—तीन
1. प्रकाशयुद्ध 2. कूटयुद्ध 3. तूष्णीयुद्ध
➢ मित्र के प्रकार हैं—6
1. नित्य 2. वश्य 3. लघूत्थान 4. पितृ-पैतामह 5. महत् 6. अद्वैध्य
➢ वैश्य मित्र हैं—तीन, 1. सर्वभोग, 2. चित्रभोग, 3. महाभोग

आठवाँ अधिकरण

➢ व्यसन के प्रकार हैं—दो, 1. दैव, 2. मानुष
➢ अर्थदूषण के प्रकार हैं—चार
1. अदान, 2. आदान, 3. विनाश, 4. अर्थत्याग
➢ दैवी विपत्तियाँ हैं— पाँच
1. अग्नि 2. जल 3. व्याधि 4. दुर्भिक्ष 5. महामारी

नौवाँ अधिकरण

➢ काल के प्रकार हैं—तीन
1. सर्दी 2. गर्मी 3. वर्षा
➢ शत्रुओं द्वारा आपत्तियाँ हैं—दो 1. दूष्यशुद्धा 2. शत्रुशुद्धा

दसवाँ अधिकरण

➢ व्यूह रचना के प्रकार हैं—तीन
1. सम व्यूह 2. विषम व्यूह 3. मिश्र व्यूह

मनुस्मृति

➢ वर्तमान मनुस्मृति में कुल अध्यायों की संख्या है—12
➢ मनुस्मृति में कुल श्लोक हैं—2685
➢ मनुस्मृति की टीकाओं की लगभग संख्या है—15
➢ मनुस्मृति की सर्वाधिक प्राचीन टीका मानी जाती है—मनुभाष्य
➢ मनुभाष्य के प्रणेता हैं—मेधातिथि
➢ मनुस्मृति के श्लोकों पर आचार्य कुल्लूक भट्ट द्वारा रचित रचना है—मन्वर्थमुक्तावली
➢ मेधातिथि का समय माना जाता है—900 ई. लगभग
➢ 'स्मृति' को कहा गया है—धर्मशास्त्र
➢ 'याज्ञवल्क्य' स्मृतियों की संख्या मानते हैं—20
➢ मनुस्मृति के अनुसार स्त्री को कौमार्यावस्था में अधीन रहना चाहिए—पिता के
➢ मनुस्मृति के अनुसार स्त्री को यौवनावस्था में अधीन रहना चाहिए—पति के
➢ मनुस्मृति के अनुसार स्त्री को वृद्धावस्था में अधीन रहना चाहिए—पुत्र के
➢ मनुस्मृति के मङ्गलाचरण में स्तुति की गयी है— गणेश जी की
➢ प्रथम अध्याय में कुल श्लोकों की संख्या है— 119
➢ मनुस्मृति के प्रथम अध्याय का प्रतिपाद्य विषय है— संसारोत्पत्ति
➢ मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय का प्रतिपाद्य विषय है— संस्कार
➢ मनुस्मृति के सप्तम अध्याय का प्रतिपाद्य विषय है— राजधर्म
➢ 'आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ता यदस्यायनं पूर्वः' यह है—नारायण
➢ परमात्मा (नर) की संतान है—जल
➢ परमात्मा का प्रथम आश्रय है—जल

- सभी प्राणियों का निर्माण हुआ है—6 तत्त्वों से (पञ्चतंमात्राएँ, अहंकार)
- आत्मा से उत्पन्न हुआ है—मन
- मन से उत्पन्न हुआ है—अहंकार
- अहंकार से उत्पन्न हुआ है—महत्तत्त्व, पञ्चज्ञानेन्द्रिया, 5 कर्मेन्द्रियाँ, सभी गुण
- ब्रह्मरूप मूर्ति के सूक्ष्म 6 अवयव आश्रय लेकर रहते हैं—इन्द्रियादि का
- मूर्ति को कहते हैं—शरीर
- अग्नि से उत्पत्ति हुई—ऋग्वेद की
- वायु से उत्पत्ति हुई—यजुर्वेद की
- सूर्य से उत्पत्ति हुई—सामवेद की
- परमात्मा अपने शरीर को विभाजित किया—दो भागों में
- परमात्मा का प्रथम आधा भाग है—पुरुष
- परमात्मा का दूसरा आधा भाग है—स्त्री
- प्रजाओं के स्वामी 10 महर्षियों की सृष्टि की गयी— सर्वप्रथम
- मन से उत्पन्न होता है—आकाश
- आकाश से उत्पन्न होता है—वायु
- वायु से उत्पन्न होता है—सूर्य
- सूर्य से उत्पन्न होता है—जल
- जल से उत्पन्न होता है—पृथ्वी (भूमि)
- पशु, मृग, व्याल, राक्षस, पिशाच एवं मनुष्य ये सभी हैं—जरायुज
- पक्षी, सर्प, मगरमच्छ, मछली, कछुए आदि हैं— अण्डज
- मच्छर, जूँ, मक्खी, खटमल आदि हैं— स्वेदज
- गर्मी से उत्पन्न होने वाले जीव हैं— स्वेदज
- बीज तथा डाल से उत्पन्न होने वाले सभी स्थावर प्राणी हैं— उद्भिज

- जो बिना पुष्पों के ही फल युक्त होती हैं, वे हैं— वनस्पतियाँ
- पुष्प एवं फल दोनों से युक्त कहे जाते हैं— वृक्ष
- 'अपुष्पा फलवन्तो ये' यह है— वनस्पति
- 'पुष्पिण: कलिनश्चैव' यह है— वृक्ष
- जरायुज जीव है— मृग
- अण्डज जीव हैं— मत्स्य
- उद्भिज जीव हैं— वृक्षादि
- स्वेदज जीव हैं— यूकादि
- ब्रह्मा के जागने पर संसार करता है— चेष्टा
- मनुस्मृति शास्त्र का निर्माण किया— ब्रह्मा ने
- ब्रह्मा ने सर्वप्रथम इस शास्त्र को विधिवत् ग्रहण कराया—मनु को
- मनु ने सर्वप्रथम इस शास्त्र को विधिवत् ग्रहण कराया—मरीचि आदि ऋषियों को
- मनु के वंश में उत्पन्न हुए—6 मनु
  1. स्वारोचिष, 2. उत्तम, 3. तामस, 4. रैवत,
  5. विवस्वान, 6. वैवस्वत
- प्रथम मनु का नाम है— स्वारोचिष
- अंतिम मनु का नाम है— वैवश्वत
- विवस्वान के पुत्र का नाम है—वैवश्वत
- 18 निमेष की होती है— एक काष्ठा
- तीस काष्ठा की होती है— एक कला
- तीस कला का होता है— एक मुहूर्त
- तीस मुहूर्त का होता है— एक अहोरात्र
- मनुष्यों का एक माह विभाजित होता है— दो पक्षों में
- मनुष्यों का एक माह होता है— पितरों का एक दिन और रात
- पितरों का कृष्णपक्ष होता है— कार्य करने के लिए
- पितरों का शुक्लपक्ष होता है— सोने के लिए
- पितरों का कृष्णपक्ष है—दिन

- पितरों का शुक्लपक्ष है—रात
- देवों का दिन-रात होता है—मनुष्यों का एक वर्ष
- मनुष्यों का एक वर्ष होता है—देवों का 1 दिन-रात
- वर्ष को बाँटा जाता है—दो हिस्सों में 1. उत्तरायण 2. दक्षिणायन
- देवों का दिन है—उत्तरायण
- देवों की रात है—दक्षिणायन
- मनुओं की कुल संख्या है—6
- सृष्टि कौन करता है?—मन
- देवताओं का चार सहस्र वर्ष कहा गया है—सत्युग का काल परिमाण
- चारों युगों को मिलाकर 12000 वर्षों का होता है—देवताओं का एक युग
- 1000 वर्षों का ब्रह्मा का होता है—पुष्प दिवस
- 1000 वर्षों का ब्रह्मा का होता है—पुष्परात्रि
- 12 हजार दिव्यवर्ष वाला देवताओं का युग 71 गुना अधिक होने पर कहा जाता है—मनवन्तर
- सत्य एवं धर्म पूर्ण रूप से चतुष्पाद था—सत्युग में
- सत्युग में आयु थी—400 वर्ष
- त्रेतायुग में आयु थी—300 वर्ष
- द्वापरयुग में आयु थी—200 वर्ष
- कलियुग में आयु है—100 वर्ष
- सत्युग में उत्तम कहा गया है—तप को
- त्रेतायुग में उत्तम कहा गया है—ज्ञान को
- द्वापरयुग में उत्तम कहा गया है—यज्ञ को
- कलियुग में उत्तम कहा गया है—दान को
- 'अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा दानं प्रतिग्रहं चैव' ये कार्य हैं—ब्राह्मण के
- 'प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च विषयेष्वप्रसक्तिश्च.' ये कार्य हैं—क्षत्रिय के

- 'पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च वणिक्पथं कुसीदं च.' ये कार्य हैं— वैश्य के
- 'ब्राह्मणादि वर्णत्रयस्य शुश्रुषा' यह कर्म है— शूद्र का
- ब्रह्मा ने सबसे पवित्र कहा है— पुरुष के मुख को
- किसकी उत्पत्ति ही धर्म का शाश्वत शरीर है— ब्राह्मण की
- पृथ्वी के उपर विद्यमान सब कुछ है— ब्राह्मण का धन
- मनु पुत्र के प्रकार मानते हैं— 13
- ब्रह्मा के पुत्र थे— मनु
- इस शास्त्र की परिकल्पना की थी— मनु ने
- संसार के प्रस्थान के प्रकार हैं—तीन
  1. उत्तम 2. मध्यम 3. अधम
- 'आचारः परमो धर्मः' यह मनुस्मृति के किस अध्याय में है?—प्रथम अध्याय
- 'कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता' यह है—मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में
- सर्वज्ञानमय है—वेद
- मनु धर्म के प्रमाण मानते हैं—चार
- श्रुति को कहा जाता है—वेद
- स्मृति को कहा जाता है—धर्मशास्त्र
- मनु धर्म के लक्षण मानते हैं—चार
  1. वेद, 2. स्मृति, 3. श्रेष्ठ आचरण, 4. अन्तरात्मा की प्रसन्नता
- श्रुति और स्मृति से प्रादुर्भूत हुआ है—धर्म
- सरस्वती एवं दृषद्वती इन दोनों नदियों के बीच में देवताओं द्वारा निर्मित्त प्रदेश है— ब्रह्मवर्त
- कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेन ये प्रदेश हैं— ब्रह्मर्षि देश
- हिमालय तथा विन्ध्याचल पर्वतों के मध्य विनशन नामक स्थान से

पूर्व की ओर तथा प्रयाग में पश्चिम की ओर वाला स्थान है— मध्य देश

- पूर्वी समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तक फैला भाग तथा हिमालय और विन्ध्य पर्वतों के बीच स्थित प्रदेश है— आर्यावर्त
- जहाँ कृष्णसार मृग अपनी इच्छानुसार विचरण करता है, वह है— यज्ञ योग्य प्रदेश
- व्यास संस्कारों की संख्या मानते हैं— 16
- गौतम संस्कारों की संख्या मानते हैं— 10
- वैखानस संस्कारों की संख्या मानते हैं— 18
- मनु संस्कारों की संख्या मानते हैं— 16
- संस्कार करने से समाप्त हो जाते हैं— बैजिक दोष
- सम रात्रियाँ उपयुक्त होती हैं— पुत्रसंतति के लिए
- विषम रात्रियाँ उपयुक्त होती हैं— पुत्री संतति के लिए
- पुत्रोत्पत्ति के लिए किया जाने वाला संस्कार है— पुंसवन
- पुंसवन संस्कार सम्पन्न होना चाहिए— पुरुष नक्षत्र में
- पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु और मृगशिरा–नक्षत्र हैं— पुरुष नक्षत्र
- नालोच्छेदन से पूर्व पुरुष का करना चाहिए— जातकर्म संस्कार
- शहद और घी को स्वर्ण शलाका में लगाकर मंत्रोच्चारण पूर्वक चटाया जाता है— जातकर्म संस्कार में
- बालक का नामकरण संस्कार किया जाना चाहिए— 10वें या 12वें दिन
- ब्राह्मण का नाम रखना चाहिए— मांगलिक एवं शर्मयुक्त
- क्षत्रिय का नाम रखना चाहिए— बल एवं रक्षायुक्त
- वैश्य का नाम रखना चाहिए— धन से युक्त एवं ऐश्वर्य युक्त
- शूद्र का नाम रखना चाहिए— घृणा से युक्त एवं दासता सूचक
- सुखपूर्वक उच्चारण योग्य, कोमल वर्णों से युक्त, मांगलिक भाव से युक्त होना चाहिए— स्त्रियों का नाम

- अन्त दीर्घ वर्ण से युक्त तथा आशीर्वाद की अभिव्यक्ति सम्पन्न नाम होना चाहिए— स्त्रियों का
- जन्म से किस मास में निष्क्रमण संस्कार करना चाहिए?— चतुर्थमास में
- अन्नप्राशन संस्कार करना चाहिए— छठे माह में
- सभी द्विजवर्णों का चूड़ाकर्म संस्कार करना चाहिए— 1 अथवा 3 वर्ष में
- कर्णवेध संस्कार करना चाहिए— 7वें या 8वें मास में
- कन्या का छेदा जाता है— बाँया कान
- विद्यारम्भ करना चाहिए— 5वें वर्ष या उपनयनपूर्व
- ब्राह्मण के बालक का उपनयन करना चाहिए— गर्भाधान से 8वें वर्ष में
- क्षत्रिय के बालक का उपनयन करना चाहिए— गर्भाधान से 11वें वर्ष में
- वैश्य के बालक का उपनयन करना चाहिए— गर्भाधान से 12वें वर्ष में
- उत्कृष्ट ब्रह्मतेज की कामना करने वाले ब्राह्मण का उपनयन संस्कार करना चाहिए— 5वें वर्ष में
- बल की इच्छा रखने वाले क्षत्रिय का उपनयन संस्कार करना चाहिए— छठे वर्ष में
- इस संसार में धन की अभिलाषा रखने वाले वैश्य का संस्कार करना चाहिए— 8वें वर्ष में
- ब्राह्मण का उपनयन संस्कार कर देना चाहिए— 16 वर्ष तक
- क्षत्रिय का उपनयन संस्कार कर देना चाहिए— 22 वर्ष तक
- वैश्य का उपनयन संस्कार कर देना चाहिए— 24 वर्ष तक
- इस समय तक तीनों का संस्कार नहीं होने पर ये हो जाते हैं— ब्रात्य
- ब्राह्मण वर्ण के ब्रह्मचारी को वस्त्र धारण करना चाहिए— कृष्णमृग के चर्म का

- क्षत्रिय वर्ण के ब्रह्मचारी को वस्त्र धारण करना चाहिए— रुरूमृग के चर्म का
- वैश्य वर्ण के ब्रह्मचारी को वस्त्र धारण करना चाहिए— बकरे के चर्म का
- ब्राह्मण वर्ण के ब्रह्मचारी को अधोवस्त्र धारण करना चाहिए— शण का
- क्षत्रिय वर्ण के ब्रह्मचारी को अधोवस्त्र धारण करना चाहिए— रेशम का
- वैश्य वर्ण के ब्रह्मचारी को अधोवस्त्र धारण करना चाहिए— ऊन का
- मूँज की, एक समान, तीन लड़ियों से युक्त चिकनी मेखला होनी चाहिए— ब्राह्मण की
- धनुष की प्रत्यंचा की मेखला होनी चाहिए— क्षत्रिय की
- शण के तन्तुओं की बनी मेखला होनी चाहिए— वैश्य की
- ब्राह्मण का उपनयन बना होता है— कपास का
- क्षत्रिय का उपनयन निर्मित होता है— शण का
- वैश्य का उपनयन निर्मित होता है— ऊन से
- सभी उपनयन होने चाहिए— तीन लड़ियों से युक्त
- बेल या पलाश की लकड़ी से निर्मित्त दण्ड होता है— ब्राह्मण ब्रह्मचारी का
- वट या खैर की लकड़ी से निर्मित्त दण्ड होता है— क्षत्रिय ब्रह्मचारी का
- पीलू या गूलर की लकड़ी से निर्मित्त दण्ड होता है— वैश्य ब्रह्मचारी का
- ब्राह्मण ब्रह्मचारी के दण्ड की लम्बाई होती है— केशों तक
- क्षत्रिय ब्रह्मचारी के दण्ड की लम्बाई होती है— मस्तक (ललाट) तक
- वैश्य ब्रह्मचारी के दण्ड की लम्बाई होती है— नासिका तक
- दण्ड लेकर सूर्य का उपस्थापन एवं अग्नि की प्रदक्षिणा करके विचरण करना चाहिए— भिक्षा हेतु

- तीन पाद वाली गायत्री दी जाती है— ब्राह्मण को
- चार पाद वाली त्रिष्टुप् दिया जाता है— क्षत्रिय को
- चार पाद वाली जगती दी जाती है— वैश्य को
- 'भवत्' शब्द का पहले उच्चारण करके भिक्षाटन करना चाहिए— ब्राह्मण को
- 'भिक्षां भवति देहि' यह कहना चाहिए— क्षत्रिय को
- 'भवत्' शब्द का भिक्षाटन के लिए अन्त में उच्चारण करना चाहिए— वैश्य को
- 'भिक्षां देहि भवति' यह कहना चाहिए— वैश्य को
- ब्रह्मचारी को सर्वप्रथम भिक्षा माँगनी चाहिए— अपनी माता अथवा बहन या मौसी से
- ब्रह्मचारी को भोजन करना चाहिए— पूर्व दिशा में मुख करके
- आयु चाहने वाले को किस दिशा की ओर मुख करके भोजन करना चाहिए?— पूर्व दिशा की ओर
- यश चाहने वाले को किस दिशा की ओर मुख करके भोजन करना चाहिए?— दक्षिण दिशा की ओर
- लक्ष्मी चाहने वाले को किस दिशा की ओर मुख करके भोजन करना चाहिए?— पश्चिम दिशा की ओर
- सत्य चाहने वाले को किस दिशा की ओर मुख करके भोजन करना चाहिए?— उत्तर दिशा की ओर
- ब्राह्मण को हमेशा आचमन करना चाहिए— ब्रह्मतीर्थ से
- इसके बाद ही ब्राह्मण को आचमन करना चाहिए— अन्य से (प्राजापत्य या देवतीर्थ)
- हृदय तक पहुंचे जल से शुद्ध होता है— ब्राह्मण
- कण्ठ तक पहुंचे जल से शुद्ध होता है— क्षत्रिय
- मुख तक गए जल से शुद्ध होता है— वैश्य
- अन्त तक स्पर्श किए गए जलों द्वारा शुद्ध होता है— शूद्र

- अंगूठे के जड़ के नीचे के भाग को कहते हैं— ब्रह्मतीर्थ
- अंगुलियों के मूल भाग को कहते हैं— प्रजापति तीर्थ
- अंगुलियों के अग्र भाग को कहते हैं— देवतीर्थ
- अंगूठे और तर्जनी के मध्य के भाग को कहते हैं— पितृतीर्थ
- दाहिने हाथ को उठाकर यज्ञोपवीत धारण करने वाला द्विज कहलाता है— उपवीती
- बायें हाथ को उठाकर यज्ञोपवीत धारण करने वाला द्विज कहलाता है— प्राचीन-अवीती
- कण्ठ में यज्ञोपवीत धारण करने पर द्विज कहलाता है— निवीती
- ब्राह्मण का केशान्त संस्कार किया जाता है— 16वें वर्ष में
- क्षत्रिय का केशान्त संस्कार किया जाता है— 22 वें वर्ष में
- वैश्य का केशान्त संस्कार किया जाता है— 24वें वर्ष में
- मन्त्रोच्चारण के बिना सभी संस्कार करने चाहिए— स्त्रियों के
- शिष्यों के उपनयन संस्कार करके सबसे पहले शिक्षा देनी चाहिए— गुरु को
- शिष्यों के उपनयन संस्कार करके पवित्रता, आचार, यज्ञविषयक कार्य एवं संध्योपासना की शिक्षा सबसे पहले देता है— गुरु
- अध्ययन करना चाहिए— हाथ जोड़कर
- हाथ जोड़कर अध्ययन करने को कहा गया है— ब्रह्माञ्जलि
- वेद के प्रारम्भ और अन्त में हमेशा उच्चारण करना चाहिए— 'ओ३म्' का
- अकार, उकार और मकार तथा भूः भुवः, स्वः, को प्रजापति ने लिया है— क्रमशः ऋक्, यजुः, साम से
- एक अक्षर वाला परब्रह्म है— 'ओ३म्'
- विधियज्ञ से दस गुना श्रेष्ठ होता है— जपयज्ञ
- जपयज्ञ से सौ गुना श्रेष्ठ होता है— उपांशु जप
- मानस जप श्रेष्ठ होता है— हजार गुना

सबसे श्रेष्ठ है— मानस जप

- ब्राह्मण से मिलकर समाचार पूछना चाहिए— कुशलता का
- क्षत्रिय से मिलकर समाचार पूछना चाहिए— अरोग्यता का
- वैश्य से मिलकर समाचार पूछना चाहिए— कल्याण का
- शूद्र से मिलकर समाचार पूछना चाहिए— स्वास्थ्य का
- नगर निवासियों के साथ मित्रता कही गयी है— 10 वर्ष के अनन्तर पर
- नगर कलाविदों के साथ मित्रता कही गयी है— 5 वर्ष के अनन्तर पर
- नगर श्रोत्रियों के साथ मित्रता कही गयी है— 3 वर्ष के अनन्तर पर
- 'उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः संकल्पं सरहस्यं च' यह है— आचार्य
- 'एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गन्यपि वा पुनः योऽध्यापयति........' यह है— उपाध्याय
- आजीविका के लिए वेद के एक भाग या वेदाङ्ग का अध्यापन कराने वाला है— उपाध्याय
- शास्त्रोक्त विधि से गर्भाधान आदि संस्कारों को सम्पादित कराने वाला है— गुरु
- वरण किया गया जो ब्राह्मण अग्न्याधान, पाकयज्ञ एवं अग्निष्टोम आदि यज्ञों को कराता है, वह है— ऋत्विक्
- 'निषेकादिनि कर्माणि यः करोति यथाविधि संभावयति चन्नेव' यह है— गुरु
- 'अग्न्याधेयं पाकयज्ञानग्निष्टोमादिकान्मखान' यह है— ऋत्विक्
- दस उपाध्यायों से बढ़कर होता है— आचार्य
- सौ आचार्यों से भी बड़ा होता है— पिता
- हजार पिताओं से बढ़कर होती है— माता
- पिता से श्रेष्ठ होता है— गुरु
- मनुस्मृति में ज्ञान से रहित को कहा गया है— बालक
- मनुस्मृति में मन्त्र प्रदान करने वाले को कहा गया है— पिता

- ब्राह्मणों की श्रेष्ठता सिद्ध होती है— जन्म से
- क्षत्रियों की श्रेष्ठता सिद्ध होती है— पराक्रम से
- वैश्यों की श्रेष्ठता सिद्ध होती है— धनधान्य से
- शूद्रों की श्रेष्ठता सिद्ध होती है— जन्म से
- द्विज का पहला जन्म होता है— माता की कोख से
- द्विज का दूसरा जन्म होता है— यज्ञोपवीत से
- वेदानुसार द्विज का तीसरा जन्म होता है— यज्ञ की दीक्षा में
- यज्ञोपवीत से होने वाले जन्म पर माता कहा गया है— सावित्री को
- यज्ञोपवीत से होने वाले जन्म पर पिता कहा गया है— आचार्य को
- श्राद्ध मन्त्रों का ही उच्चारण किया जाता है— उपनयन संस्कार से पूर्व
- प्रतिदिन स्नान करके, पवित्र होकर, देव, ऋषि, पितरों का तर्पण, देवताओं के अर्चन का कार्य है— ब्रह्मचारी का
- ब्रह्मचारी को भिक्षा नहीं मांगनी चाहिए— गुरु के कुल में
- ब्रह्मचारी को भिक्षा नहीं मांगनी चाहिए— ज्ञात कुल में
- ब्रह्मचारी को भिक्षा नहीं मांगनी चाहिए— बन्धुओं के कुल में
- ब्रह्मचारी को सात रात्रियों तक भिक्षा वृत्ति न कर सकने एवं अग्निहोत्र न करने पर, उसे करना चाहिए— अवकीर्ण व्रत
- गुरु का परिवाद करने से व्यक्ति अग्रिम जन्म में बनता है— गधा
- गुरु की निन्दा करने पर व्यक्ति अग्रिम जन्म में बनता है— कुत्ता
- गुरु के धन का भोग करने पर व्यक्ति अग्रिम जन्म में बनता है— कृमि
- गुरु से ईर्ष्या करने वाला व्यक्ति अग्रिम जन्म में बनता है— कीड़ा
- आचार्य मूर्ति है— ब्रह्म का
- पिता मूर्ति है— प्रजापति का
- माता मूर्ति है— पृथिवी की
- अपना भाई मूर्ति है— स्वयं की
- गुरु, पिता और माता की सेवा ही है— परमतप

- गुरु, पिता और माता की सेवा ही है— तीनो लोक
- गुरु, पिता और माता की सेवा ही है— तीन आश्रम
- गुरु, पिता और माता की सेवा ही है— तीन वेद
- गुरु, पिता और माता की सेवा ही है— तीन अग्नि
- गार्हपत्य अग्नि होता है— पिता
- दक्षिण अग्नि होती है— माता
- आहवनीय अग्नि होता है— गुरु
- ये तीनों अग्नियाँ मानी गयी हैं— श्रेष्ठ
- माता की भक्ति से प्राप्त होता है— इहलोक
- पिता की भक्ति से प्राप्त होता है— अन्तरिक्ष लोक
- गुरु की भक्ति से प्राप्त होता है— ब्रह्मलोक
- इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा एवं कुबेर के सारभूत अंशों को लेकर ईश्वर ने सृष्टि की है— राजा की
- सूर्य के समान आँखों और मनों की संतप्ति करता है— राजा
- राजा को काम से उत्पन्न होने वाले व्यसन हैं— दस
  1. शिकार करना, 2. जुआ खेलना, 3. दिन में स्वप्न देखना, 4. दूसरों की निंदा करना, 5. स्त्री-सम्पर्क, 6. नशा करना, 7. नृत्यगीत-वाद्य के प्रति आसक्ति, 8. व्यर्थ में इधर-उधर घूमना इत्यादि।
- राजा को क्रोध से उत्पन्न होने वाले व्यसन हैं— आठ
  1. चुगलखोरी, 2. दुःसाहस करना, 3. ईर्ष्या करना, 4. गुणों में दोष दृष्टि रखना, 5. पराया धन हड़पने की इच्छा रखना, 6. कर्कश वाणी का उच्चारण, 7. द्रोह करना, 8. कठोरतापूर्वक आचरण करना।
- काम से उत्पन्न व्यसनों में आसक्त राजा वियुक्त होता है— धर्म एवं अर्थ से
- क्रोध से उत्पन्न व्यसनों में आसक्त राजा वियुक्त होता है— अपने से ही

- शराब पीना, जुआ खेलना, स्त्रियों से सम्पर्क तथा शिकार करना इनको ही समझना चाहिए— अधिक कष्टदायक
- व्यसन और मृत्यु में सबसे अधिक कष्टदायक है— व्यसन
- मनुस्मृति के अनुसार कितने मंत्रियों को नियुक्त करें?— सात या आठ
- अमात्य के अधीन होता है— दण्ड
- दण्ड के अधीन होता है— विनय विषयक क्रियाएँ
- राजा के अधीन होता है— कोष
- दूत के अधीन होता है— सन्धि एवं युद्ध विषयक क्रियाएँ
- सन्धि कराता है— दूत
- गिरि दुर्ग का आश्रय लेना चाहिए— राजा को
- स्वयंभू के पुत्र मनु ने सभी दुर्गों में श्रेष्ठ कहा है— मनुष्य दुर्ग को
- बगुल के समान 'अर्थ' चिन्तन करना चाहिए— राजा को
- शेर के समान पराक्रम प्रदर्शित करना चाहिए— राजा को
- भेड़िए के समान शत्रु को नष्ट करना चाहिए— राजा को
- राजा को दो, तीन, पाँच तथा सौ गाँवों के बीच राष्ट्र रक्षा के लिए स्थापित करना चाहिए— सैन्य समूह
- किसके समान आवश्यकता पड़ने पर राजा को भाग जाना चाहिए?— खरगोश के समान
- दशाधिपति भोग सकता है— 1 कुल को
- विंशाधिपति भोग सकता है— 5 कुलों को
- शतग्रामाधिपति भोग सकता है— एक गाँव को
- सहस्रग्रामाधिपति भोग सकता है— एक पुर को
- राजा को पशु एवं सोने का ग्रहण करना चाहिए— 50वाँ भाग
- राजा को धान्य का ग्रहण करना चाहिए— 8वाँ भाग
- श्रोत्रिय ब्राह्मण से ग्रहण नहीं करना चाहिए— कर
- राजा की आयु, धन एवं राष्ट्र की वृद्धि होती है— श्रोत्रिय के धर्म करने से

- आठ प्रकार के कार्यों को करना चाहिए— राजा को
- राजा को कितने प्रकार के गुप्तचरों का चिन्तन करना चाहिए?— 5
- मनुस्मृति में राजमहल की प्रकृतियों की संख्या है— 12
- मनुस्मृति में राजमहल की भेदोपभेदपूर्वक प्रकृतियों की संख्या है— 72
- राजा को हमेशा चिन्तन करना चाहिए— षाड्गुण्य का
- राजा को आक्रमण के लिए यात्रा हेतु प्रस्थान करना चाहिए— मार्गशीष या फाल्गुन या चैत्र मास में
- मार्ग के प्रकार हैं— तीन
- सेना के प्रकार हैं— 6
- युद्ध हेतु प्रस्थान करने वाले मार्ग पर दण्डव्यूह या शकटव्यूह या वाराह एवं सूचीव्यूह या गरुड़व्यूह पर प्रस्थान करना चाहिए— राजा द्वारा
- सेनापति एवं बालाध्यक्ष दोनों को नियुक्त करना चाहिए— सभी दिशाओं में
- जहाँ भय की आशंका हो, उसे मानना चाहिए— पूर्व दिशा
- कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल एवं शूरसेन देश में उत्पन्न लोगों को नियुक्त करना चाहिए— सेना के आगे
- युद्ध विजय के बाद राजा को पूजा करनी चाहिए— देवताओं, धार्मिकों और ब्राह्मणों की
- रात्रि के चौथे प्रहर में उठ जाना चाहिए— राजा को
- मनु कितने दुर्ग बताते हैं?— 6
  1. धन्वदुर्ग 2. महीदुर्ग 3. जलदुर्ग,
  4. वार्क्षदुर्ग 5. नृदुर्ग 6. गिरिदुर्ग
- 'अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:' यह है— मनुस्मृति में
- 'मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्'— यह है— मनुस्मृति में (2 अध्याय)
- मनु व्यवहार पद मानते हैं— 18

✦✦✦

याज्ञवल्क्यस्मृति

- याज्ञवल्क्यस्मृति विभक्त है— तीन भागों में
- याज्ञवल्क्यस्मृति के भाग हैं—तीन
  1. आचाराध्याय, 2. व्यवहाराध्याय, 3. प्रायश्चित्ताध्याय
- आचाराध्याय में कुल प्रकरण हैं— 13
- व्यवहाराध्याय में कुल प्रकरण हैं— 25
- प्रायश्चित्ताध्याय में कुल प्रकरण हैं— 6
- याज्ञवल्क्यस्मृति में कुल प्रकरण हैं— 44
- याज्ञवल्क्यस्मृति का हृदय कहा गया है—व्यवहाराध्याय को
- सर्वाधिक प्रकरण है—व्यवहाराध्याय में
- याज्ञवल्क्यस्मृति में सम्पूर्ण श्लोक हैं—1009
- 'नानासन्देहहरणाद्' यह है—व्यवहार
- व्यवहार के विषय को कहते हैं—व्यवहारपद
- 'स्मृत्याचारव्यपेतेन मार्गेणाऽधर्षितः परैः' यह है—व्यवहारपद
- याज्ञवल्क्य ने व्यवहार पदों की गणना की है—20
- व्यवहार पद है—चतुष्पाद
- देवऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है—यज्ञाराधना से
- ऋषिऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है—अध्ययनाध्यापन से
- पितृऋण को चुकाने की परिकल्पना की गयी है—सन्तानोत्पत्ति से
- ऋणदान के प्रकार कहे गये हैं— 7
- इनमें प्रथम 5 का सम्बन्ध है—ऋणदाता से
- इनमें अन्तिम 2 का सम्बन्ध है—ऋणी से
- सूद के प्रकार हैं—चार
  1. कारिका 2. कालिका 3. कायिका 4. चक्रवृद्धि

- व्यवहार पद हैं— 20
  1. ऋणदान, 2. उपनिधि, 3. अस्वामिविक्रय, 4. सम्भूय-समुत्थान, 5. दत्ताप्रदानिक, 6. वेतनादान, 7. संविदव्यतिक्रम, 8. क्रीतानुशय, 9. स्वामिपाल विवाद, 10. सीमा विवाद, 11. वाक्पारुष्य, 12. दण्डपारुष्य, 13. विक्रीय- सम्प्रदान, 13. स्तेय, 15. साहस, 16. स्त्रीसंग्रहण,
  17. दायविभाग, 18. दूत समाह्वय 19. अभ्युपेत्याशुश्रुषा 20. प्रकीर्णक
- ऋणदाता द्वारा निश्चित किया जाने वाला सूद है— कारिता
- प्रतिमास दी जाने वाली वृद्धि है— कालिका
- प्रतिदिन दिया जाने वाला सूद है— कायिका
- ब्याज प्रतिमास मूलधन का लेना चाहिए— 1/80 भाग
- मूलधन दुगुना हो जाता है— 6 वर्ष 8 मास में
- धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार पितृऋण चुकाना होता है—पुत्रों एवं पौत्रों को
- 'वासनस्थमनाख्याय हस्तेऽन्यस्य यदर्प्यते'।
  द्रव्य तदौपनिधिकं प्रतिदेयं तथैव तत्।। यह है—उपनिधि
- किसी पात्र में कुछ रखकर रूप संख्या आदि न बताकर किसी को दिया जाता है, वह है—उपनिधि
- साक्षी होने चाहिए— तीन
- दायभाग के सम्प्रदाय हैं—दो 1. मिताक्षरा 2. दायभाग
- दाय के प्रकार हैं—दो 1. अप्रतिबन्ध 2. सप्रतिबन्ध
- दाय के विषय हैं—चार
- विभाजन सम्पत्ति के भाग हैं—दो
  1. संयुक्तकुलसम्पत्ति 2. पृथक्सम्पत्ति।
- ज्येष्ठ पुत्र को देना चाहिए—श्रेष्ठ भाग
- किसी ब्राह्मण के चारों वर्णों के पुत्र होने पर सम्पत्ति को बाँटा जाता है—10 भागों में

- ब्राह्मण पत्नी के पुत्र को दिया जाता है— 4 भाग
- क्षत्रिय पत्नी के पुत्र को दिया जाता है— 3 भाग
- वैश्य पत्नी के पुत्र को दिया जाता है— 2 भाग
- शूद्र पत्नी के पुत्र को दिया जाता है— 1 भाग
- स्त्रीधन के विषय हैं— तीन
- 'पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागतम्।
  आधि वेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्।। यह है— स्त्रीधन
- 'बन्धुदत्तं तथा शुल्कमन्वाधेयकमेव च' यह है— स्त्रीधन
- स्त्रीधन के प्रकार हैं— 6
- विवाह के समय अग्नि के समक्ष स्त्री को दिया जाने वाला धन है—अध्ययग्नि स्त्रीधन
- पति के घर जाते समय स्त्री द्वारा पिता के घर से प्राप्त धन है—अध्यावहनिक स्त्रीधन
- श्वसुर या सास द्वारा स्नेह से एवं श्रेष्ठ जनों के वन्दन से प्राप्त धन है—प्रीतिदत्त स्त्रीधन
- बरतनों, आभूषणों, पशुओं और दास—दासियों के रूप में प्राप्त धन है—शुल्क स्त्रीधन
- विवाहोपरान्त पतिकुल एवं पितृकुल के बन्धुजनों से प्राप्त धन है—अन्वाधेय स्त्रीधन
- पति द्वारा अन्य स्त्री के विवाह के समय प्राप्त धन है—आधिवेदनिक स्त्रीधन
- याज्ञवल्क्य पुत्र के प्रकार मानते हैं— 12
- पुत्रिका पुत्र के प्रकार हैं— 2
- याज्ञवल्क्यस्मृति में दिव्य प्रयोग में परिगणित नहीं है—वायु प्रयोग
- स्त्री-बाल-वृद्ध-अन्ध-पंगु-ब्राह्मण-रोगियों के लिए दिव्य प्रयोग है— तुला

- क्षत्रिय के लिए किये जाने वाला दिव्य प्रयोग है— जल
- विषय के दिव्य प्रयोग का विधान किसके लिए है— शूद्र के लिए
- धर्म पत्नी से उत्पन्न पुत्र है— औरस
- 'सगोत्रेण इतरेण वा उत्पन्नः' यह है— क्षेत्रजपुत्र
- 'गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नः' यह है— गूढज पुत्र
- 'कन्यकाजातो पुत्रः' यह है— कानीन पुत्र
- पुत्र हैं— 12

  1. औरस, 2. पुत्रिका, 3. क्षेत्रज, 4. गूढोत्पन्न, 5. कानीन, 6. पौनर्भव, 7. दत्तक, 8. क्रीत, 9. कृत्रिम, 10. स्वयंदत्त, 11, सहोढ़, 12. अपविद्ध
- 'दधान्माता पिता वा यम्' वह पुत्र है—दत्तक
- याज्ञवल्क्य के मत में सामान्य द्रव्य प्रसभहरण है—साहस

✦✦✦

खण्ड-8

पद्य

रघुवंशम्

- 'रघुवंशम्' के रचनाकार हैं— महाकवि कालिदास
- 'रघुवंशम्' को संज्ञा दी गयी है— लघुत्रयी की
- 'रघुवंशम्' में सर्गों की संख्या है— 19
- 'रघुवंशम्' की काव्य विधा है— महाकाव्य
- 'रघुवंशम्' पर लिखी गयी टीका का नाम है— सञ्जीवनी टीका
- सञ्जीवनी टीका लिखी थी— मल्लिनाथ ने
- 'रघुवंशम्' पर लगभग उपलब्ध टीकाएँ हैं— 40
- 'रघुवंशम्' पर सबसे प्रचलित टीका है— सञ्जीवनी टीका
- 'लक्षित काव्य' का सर्वोकृष्ट निदर्शन है— 'रघुवंशम्'
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं— 95
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य के चतुर्दश सर्ग में कुल श्लोक हैं— 87
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य में कुल श्लोक हैं— 1569
- कालिदास ने 'रघुवंशम्' के मङ्गलाचरण में स्तुति की है— शिव-पार्वती की
- सूर्य के पुत्र थे— मनु
- सूर्यवंश के प्रवर्तक थे— मनु
- राजा दिलीप का वंश था— सूर्यवंश
- राजा दिलीप की पत्नी का नाम था— सुदक्षिणा
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य में कुल कितने राजाओं का वर्णन है?— 31
- रघुवंश महाकाव्य का उपजीव्य है— रामायण
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य के प्रथम राजा थे— दिलीप
- 'रघुवंशम्' महाकाव्य के अन्तिम राजा थे— अग्निवर्ण
- दिलीप, रघु, अज तथा दशरथ का वर्णन है— प्रारम्भ से 9 सर्ग तक
- श्रीराम का वर्णन किया गया है— 10-15 सर्ग तक (कुल 6 सर्ग)
- श्रीराम के वंशजों का वर्णन किया गया है— 16 से 19 सर्ग तक
- 'रघुवंश' में रीति है— वैदर्भी
- रघुवंश में कौन सा गुण नहीं है?— ओजगुण
- रघुवंश का मुख्य रस है— शृंगार
- रघुवंश में शृंगार रस के अलावा अन्य रस हैं— वीर, करुण और शांत रस
- युद्ध के प्रसंग में प्रयुक्त रस है— वीर रस
- अज-विलाप में प्रयुक्त रस है— करुण रस
- अग्निवर्ण के विलास में वर्णित रस है— शृंगार
- वशिष्ठादि के वर्णन में प्रयुक्त रस है— शान्त
- रघुवंश महाकाव्य का आरम्भ किस राजा के वर्णन से हुआ है?— दिलीप
- रघुवंश महाकाव्य का अन्त किस राजा के वर्णन से हुआ है?— अग्निवर्ण
- अग्निवर्ण की मृत्यु का कारण था— क्षयरोग
- राजा दिलीप को कामधेनु ने शाप दिया था— प्रथम सर्ग में
- कामधेनु का अन्य नाम है— सुरभि
- राजा शाप परिहार के लिए गया था— वशिष्ठ आश्रम में
- राजा दिलीप ने वशिष्ठ की आज्ञा से किसकी सेवा का व्रत लिया था?— नन्दिनी गाय की
- राजा दिलीप द्वारा 21 दिन तक नन्दिनी की सेवा की गयी थी— द्वितीय सर्ग में
- सिंह द्वारा राजा की परीक्षा ली गयी थी— 22वें दिन
- सिंह वेषधारी का नाम था— कुम्भोदर
- राजा दिलीप नन्दिनी की रक्षा के लिए करता है— आत्मसमर्पण
- राजा दिलीप को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया था— नन्दिनी ने
- नन्दिनी पुत्री थी— कामधेनु की

- रघु का जन्म होता है— तृतीय सर्ग में
- अश्वमेध के घोड़े की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया था— रघु को
- यज्ञ अश्व का अपहरण किया था— इन्द्र ने
- इन्द्र और रघु का युद्ध हुआ था— तृतीय सर्ग में
- इन्द्र और रघु के युद्ध में पराजित होता है— इन्द्र
- पराजित इन्द्र 100 अश्वमेध यज्ञ पूर्ण होने का वरदान दिया था— रघु को
- रघु राज्यारोहण और दिग्विजय यात्रा करता है— चतुर्थ सर्ग में
- 'विश्वजित यज्ञ' करता है— रघु
- 'विश्वजित यज्ञ' रघु करता है— चतुर्थ सर्ग में
- 'विश्वजित यज्ञ' में सर्वस्वदान करता है— रघु
- अकिंचन रघु के पास 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ मांगने आते हैं— कौत्स (पञ्चम सर्ग)
- रघु को कुबेर पर चढ़ाई करने का विचार आता है— पञ्चम सर्ग में
- रात्रि में स्वर्ण की वर्षा से कोषागार भर जाता है— रघु का (5 सर्ग)
- रघु सम्पूर्ण सुवर्ण दान करता है— कौत्स को
- राजा रघु को पुत्रप्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं— कौत्स
- अज का जन्म होता है— पञ्चम सर्ग में
- रघु का पुत्र है— अज
- अज की विदर्भ यात्रा होती है— षष्ठ सर्ग में
- सम्मोहनास्त्र की प्राप्ति अज को होती है— षष्ठ सर्ग में
- इन्दुमती स्वयंवर होता है— षष्ठ सर्ग में
- इन्दुमती का विवाह होता है— अज से (षष्ठ सर्ग में)
- इन्दुमती के विवाह से खिन्न राजा अज पर आक्रमण करते हैं— 7वें सर्ग में
- अज के सुशासन का वर्णन है— 8वें सर्ग में
- दशरथ की उत्पत्ति होती है— 8वें सर्ग में
- इन्दुमती की आकस्मिक मृत्यु होती है— 8वें सर्ग में

- अज विलाप का वर्णन किया गया है— 8वें सर्ग में
- दशरथ के राज्यारोहण का वर्णन है— नवम सर्ग में
- श्रवण की मृत्यु होती है— नवम सर्ग में
- भगवान श्रीराम का पूरा चरित वर्णित है— 6 सर्गों में (10-15 सर्ग तक)
- सीता के परित्याग का सर्ग है— 14वाँ सर्ग
- श्रीराम के पुत्र कुश की कथा वर्णित है— 16वें सर्ग में
- कुश के पुत्र का नाम है— अतिथि
- कुश के पुत्र 'अतिथि' की कथा का वर्णन है— 17वें सर्ग में
- कुश ने अपनी राजधानी बनायी थी— कुशावती को
- लव ने अपनी राजधानी बनायी थी— शरावती को
- भरत का पुत्र था— पुष्कल, तक्ष
- पुष्कल ने अपनी राजधानी बनायी थी— पुष्कलावती को
- तक्ष ने अपनी राजधानी बनायी थी— तक्षशिला को
- लक्ष्मण का पुत्र था— चन्द्रकेतु और अंगद
- चन्द्रकेतु और अंगद ने अपनी राजधानी बनायी थी— कारापथ को
- शत्रुघ्न के पुत्रों ने अपनी राजधानी बनायी थी— मथुरा को
- मृगया-वर्णन है— नवें सर्ग में
- रामावतार होता है— दसवें सर्ग में
- सीता विवाह का वर्णन है— 11वें सर्ग में
- रावण वध का वर्णन है— 12वें सर्ग में
- राम के दण्डक वन से लौटने का वर्णन है— 13वें सर्ग में
- राम के स्वर्गारोहण का वर्णन है— 15वें सर्ग में
- कुमुद्वती के विवाह का वर्णन है— 16वें सर्ग में
- रघुवंशीय राजा अतिथि का वर्णन है— 17वें सर्ग में
- पाताल में वरुण देव को यज्ञ हेतु आहुति की सामग्री देने गई थी— कामधेनु

कामधेनु की पुत्री किसके यहाँ थी? वशिष्ठ के
- ‘वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये’ यह है— मङ्गलाचरण
- ‘वागर्थाविव’ में समास है— केवल समास
- रघुवंश का मङ्गलाचरण है— नमस्कारात्मक
- मङ्गलाचरण में प्रणाम किया गया है— पार्वती और परमेश्वर को
- पितरौ (माता च पिता च) इसमें समास है— एकशेष द्वन्द्व समास
- ‘पार्वतीपरमेश्वरौ’ इसमें समास है— कर्मधारय
- ‘वागर्थप्रतिपत्तये’ इसमें समास है— द्वन्द्व समास
- रघुवंश के प्रथम सर्ग के अन्तिम श्लोक को छोड़कर शेष सभी श्लोकों में छन्द है— अनुष्टुप्
- ‘रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्’ यहाँ ‘अन्वयम्’ का अर्थ है— वंश को
- विद्वानों के पूजनीय वेदों में ओंकार के समान राजाओं में प्रथम नाम था— मनु का
- विवस्वान (सूर्य) का पुत्र था— मनु
- शास्त्रों में वैवस्वत नाम के कितने मनुओं का उल्लेख मिलता है?— 10
- एक कल्प में होते हैं— 14 मनु
- क्षीर सागर से चन्द्रमा की भाँति पैदा हुआ था— दिलीप
- बैल के समान कंधे वाले थे— दिलीप
- शाल वृक्ष के समान ऊँची और लम्बी भुजाओं वाले थे— राजा दिलीप
- यज्ञ की पत्नी तथा प्रजापति की कन्या मानी गई हैं— सुदक्षिणा
- यज्ञ की पत्नी के समान राजा दिलीप की पत्नी थीं— सुदक्षिणा
- लक्ष्मण, सीता को किसके कहने पर वाल्मीकि आश्रम के पास छोड़ा था?— राम के
- लक्ष्मण द्वारा सीता को वन में छोड़ने जाते सपय सारथि था— सुमन्त
- श्रवणकुमार बध का वर्णन है— नवम सर्ग में

- अंधकमुनि द्वारा दशरथ को शाप देने का वर्णन है— नवम सर्ग में
- महाराजा दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञारम्भ किया गया था— 10वें सर्ग में
- देवताओं द्वारा भगवान् विष्णु की स्तुति और रावण अत्याचार का वर्णन है— 10वें सर्ग में
- दशरथ को पुत्र प्राप्त हुआ था— 10वें सर्ग में
- रामादि का जन्म होता है— 10वें सर्ग में
- राम द्वारा अहल्या उद्धार किया गया था— एकादश सर्ग में
- सीतास्वयंबर का वर्णन किया गया है— एकादश सर्ग में
- राम विवाह का वर्णन किया गया है— एकादश सर्ग में
- राम-वनवास एवं दशरथ के स्वर्गवास का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- हनुमान् द्वारा सीता-खोज एवं लंका दहन का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- रावणादि के वध का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- लंका विजयानन्तर पुष्पकयान द्वारा अयोध्या प्रत्यागमन होता है— द्वादश सर्ग में
- सीता-अग्नि परीक्षा का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- राम-भरतादि मिलन का वर्णन है— त्रयोदश सर्ग में
- राम के राज्याभिषेक का वर्णन है— चतुर्दश सर्ग में
- सीता परित्याग का वर्णन है— चतुर्दश सर्ग में
- सीता का पाताल लोक गमन का वर्णन है— पञ्चदश सर्ग में
- अग्निवर्ण पुत्र था— सुदर्शन का



'रघुवंशम्' की प्रमुख सूक्तियाँ (प्रथम सर्ग)

1. क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः। (1/2)
   संततिः शुद्धवंश्या: हि परत्रेह च शर्मणे। (दिलीप)
2. 'मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्'। (1/3)
3. अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः। (1/4)
4. यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्। (1/6)
5. त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्। (1/7)
6. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्। (1/8)
7. वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्। (1/8)
8. हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा। (1/10)
9. वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्। (1/11)
10. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः। (1/12)
11. व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः। (1/13)
12. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः। (1/15)
13. भीमकान्तैर्नृपगणैः स बभूवोपजीविनाम्। (1/16)
14. सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः। (1/18)
15. गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव। (1/22)
16. दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवादिवम्। (1/26)
17. तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः। (1/32)
18. विलम्बितफलैः कालं स निनाय मनोरथैः। (1/33)
19. अथाभ्यचर्य विधातारं प्रयतौ पुत्रकाम्यया। (1/35)
20. मनोभिरामाः शृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः। (1/39)
21. हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव। (1/46)
22. तौ गुरुर्गुरुपत्नी च प्रीत्या प्रतिननन्दतुः। 1/57
23. दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम्। 1/60
24. नूनं मत्तः परं वंश्याः पिण्डविच्छेददर्शिनः। 1/66
25. आसीत्कल्पतरुच्छायामाश्रिता सुरभिः पथि। 1/75 (वशिष्ठ)
26. मत्प्रसूतिमनाराध्य प्रजेति त्वां शशाप सा। 1/77 (वशिष्ठ)
27. प्रतिबध्नाति हिश्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। (वशिष्ठ 1/79)
28. निषण्णायां निषीदास्यां पीताम्भसि पिबेरपः। 1/89 (वशिष्ठ)
29. आदेशं देशकालज्ञः शिष्यः शासितुरानतः। 1/92 (दिलीप)
30. संविष्टः कुशशमने निशां निनाय। 1/95

✦✦✦

प्रमुख सूक्तियाँ (चतुर्दश सर्ग)

- 'भर्तुः प्रणाशादथ शोचनीयं दशान्तरं तत्र समं प्रपन्ने'। 14/1
- 'उभावुभाभ्यां प्रणतौ हतारी यथाक्रमं विक्रमशोभिनौ तौ'। 14/2
- 'अपीप्सितं क्षत्रकुलाङ्गनानां' 14/4
- 'क्लेशावहा भर्तुरक्षणाऽहम्' 14/5 (सीता)
- 'उत्तिष्ठ वत्से! ननु सानुजोऽसौ वृत्तेन भर्त्ता शुचिता तवैव'। 14/6
- 'संकल्पमात्रोदितिसिद्धयन्ते क्रान्ता'। 14/17
- 'धर्मार्थकामेषु समां प्रपेदे। 14/21
- 'प्राप्तानि दुःखान्यपि दण्डकेषु'। 14/25
- 'इयेष भूयः कुशवन्ति गन्तुं'। 14/28
- सर्पाधिराजोरुभुजोऽपसर्पं पप्रच्छ भद्रं विजितारिभद्रः। 14/31 (राम)
- 'कलत्रनिन्दागुरुणा किलैवमभ्याहतं'। 14/33
- 'छाया हि भूमेः शशिनो मलत्वेनारोपिता शुद्धिमतः प्रजाभिः'। 14/40(राम)
- 'निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरौक्ष्यं देवि! क्षमस्वेति बभूव नम्रः'। 14/58(लक्ष्मण)
- 'श्वश्रूजनं सर्वमनुक्रमेण विज्ञापय प्रापितमत्प्रणामः'। 14/60 (सीता)
- 'मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य'।14/61(सीता)
- 'ममैव जन्मान्तर पातकानां'। 14/62 (सीता)
- 'तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्ताऽसि वैदेहि! पितुर्निकेतम्'। 14/72 (वाल्मीकि)
- 'तवोरुकीर्तिः श्वशुरः सखा मे सतां भवोच्छेदकरः पिता ते। 14/74 (वाल्मीकि)
- 'सा दुर्वारं कथमपि परित्यागदुःखं विषेहे'। 14/87
- सुदक्षिणा ने राजा के नेत्रों की सदृशता किसके नेत्रों में देखी थी?— हिरणों के
- राजा दिलीप ने सुदक्षिणा के नेत्रों की सदृशता किसके नेत्रों में देखी थी?— हिरणियों की
- 'निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालां...यह है— रघुवंश का अंतिम श्लोक (प्रथम सर्ग)
- 'निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालां' इसमें छन्द है— प्रहर्षिणी

+++

किरातार्जुनीयम्

- 'किरातार्जुनीयम्' के रचनाकार हैं— महाकवि भारवि
- 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ है— महाकाव्य (बृहत्त्रयी)
- 'किरातार्जुनीयम्' में कुल सर्ग हैं— 18
- चालुक्यवंशीय सम्राट 'विष्णुवर्धन के राजकवि थे— भारवि
- भारवि के पिता का नाम है— नारायण स्वामी
- भारवि की माता का नाम है— सुशीला
- भारवि का जन्म स्थान माना जाता है— अचलपुरग्राम (नासिक के पास)
- भारवि का मूलनाम (वास्तविक) है— दामोदर
- भारवि की पत्नी का नाम है— रसिका
- महाकवि दण्डी के प्रपितामह थे— भारवि
- भारवि थे— शैव
- भारवि का गोत्र था— कुशिक
- भारवि का समय माना जाता है— छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध
- 'किरातार्जुनीयम्' का उपजीव्य है— महाभारत का वनपर्व
- 'किरातार्जुनीयम्' का मुख्य रस है— वीर रस
- भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' में शिव की स्तुति की है— 18वें सर्ग में
- 'किरातार्जुनीयम्' में कुल श्लोक हैं— 1040
- भारवि किस कवि से प्रभावित थे?— कालिदास से
- 'उत्फुल्लस्थल........लक्ष्मीम्' इस श्लोक के कारण भारवि को उपाधि दी गयी थी— आतपात्र भारवि की
- आतपात्र की उपाधि दी गयी थी— महाकवि भारवि को
- महाकवि भारवि की एकमात्र कृति है— 'किरातार्जुनीयम्'
- 'किरातवेशधारी' थे— शिव
- 'किरातार्जुनीयम्' में 'किरातवेशधारी' शिव हैं— प्रतिनायक

- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के नायक हैं— अर्जुन
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य की नायिका हैं— द्रौपदी
- 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के नायक की प्रकृति है— धीरोदात्त
- 'अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी शिव से 'पाशुपतास्त्र' की प्राप्ति,' यह मुख्य कथानक है— 'किरातार्जुनीयम्' का
- 'किरातार्जुनीयम्' की कथावस्तु ली गयी है— महाभारत के वनपर्व से
- किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति 'किरातार्जुनीयम्' यह व्युत्पत्ति है— 'किरातार्जुनीयम्' की
- 'किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ' इसमें समास है— द्वन्द्व समास
- 'किरातार्जुनीयम् के टीकाकार चित्रभानु' नायक मानते हैं— युधिष्ठिर को
- उत्तरकुरुप्रदेश के विजेता, वासवोपम, प्रभूत वसुप्रदाता, वीर धनञ्जय हैं— अर्जुन
- 'पाशुपत अस्त्र का लाभ यह परम प्रयोजन है— 'किरातार्जुनीयम्' का
- 'पाशुपत अस्त्र का लाभ मिलता है— अर्जुन को
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में 1 से 44 तक के श्लोकों में छन्द है— वंशस्थ
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के 45वें श्लोक में छन्द है— पुष्पिताग्रा
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के 46वें श्लोक में छन्द है— मालिनी
- पुरुषार्थ चतुष्टय का एक विशेष अङ्ग 'अर्थ' अभिमत फल है— 'किरातार्जुनीयम्' का
- 'किरातार्जुनीयम्' का सर्वश्रेष्ठ वैशिष्ट्य है— अर्थगाम्भीर्य
- 'अल्प शब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश', यह तात्पर्य है— अर्थगाम्भीर्य का
- 'किरातार्जुनीयम्' परिगणित किया जाता है— बृहत्त्रयी में
- बृहत्त्रयी में प्रथम स्थान पर परिगणित महाकाव्य है— 'किरातार्जुनीयम्'
- बृहत्त्रयी में अन्य परिगणित महाकाव्य हैं— शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्

- 'किरातार्जुनीयम्' में रीति है— पाञ्चाली रीति
- 'किरातार्जुनीयम्' में गुण है— प्रसादगुण
- 'किरातार्जुनीयम्' में सबसे अधिक प्रयुक्त अलंकार है— अर्थालंकार
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है— पाषाणत्रय
- 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं— भारवि (भारवेरर्थगौरवम्)
- भारवि की कविता को 'सत्पथदीपिका' माना है— कृष्णकवि ने
- 'किरातार्जुनीयम्' पर सर्वाधिक प्रसिद्ध टीका है— 'घण्टापथ'
- 'घण्टापथ' के कृतिकार हैं— मल्लिनाथ
- 'घण्टापथ' का शाब्दिक अर्थ है— राजमार्ग
- मल्लिनाथ का समय है— 14वीं शती उत्तरार्द्ध
- काश्यप गोत्र में उत्पन्न हुए थे— मल्लिनाथ
- तेलगू ब्राह्मण थे— मल्लिनाथ
- मल्लिनाथ के पिता का नाम था— कार्दिन
- मल्लिनाथ के पुत्र थे— पेडुभट्ट एवं कुमारस्वामी
- मल्लिनाथ की आनुवंशिक उपाधि थी— कोलाचल की
- मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि थी— महोपाध्याय की
- 'किरातार्जुनीयम्' पर सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है— शब्दार्थदीपिका
- 'शब्दार्थदीपिका' टीका के रचनाकार हैं— चित्रभानु
- चित्रभानु द्वारा 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम तीन सर्गों पर लिखी गयी टीका है— 'शब्दार्थदीपिका'
- 'किरातार्जुनीयम्' का जर्मन भाषा में अनुवाद किया है— प्रो. कार्ल कापेनर
- 'किरातार्जुनीयम्' पर टीकाओं की संख्या लगभग है— 50
- 'नारिकेलफल सम्मितं वचः' यह कहा गया है— भारवि के लिए
- 'नारिकेलफल सम्मितं वचः' यह कथन है— मल्लिनाथ का
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ हुआ है— श्री शब्द से

- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्त हुआ है—लक्ष्मी शब्द से
- रीतिकाव्य की परम्परा के जन्मदाता हैं—भारवि
- चित्रालंकारों का सर्वप्रथम प्रयोग किया था—भारवि ने
- भारवि का प्रसिद्ध है—अर्थगौरव
- महाकाव्य के विचित्रमार्ग का प्रवर्तन किया है—भारवि ने
- 'किरातार्जुनीयम्' का 15वां सर्ग प्रसिद्ध है—चित्रकाव्य के लिए
- 'किरातार्जुनीयम्' का 15वां सर्ग है—चित्रकाव्य
- 'दुर्योधन का शासन प्रबन्ध और द्रौपदी की प्रतिक्रिया' किस सर्ग का प्रतिपाद्य विषय है?—प्रथम सर्ग का
- पाण्डव और द्रौपदी वनवास के समय निवास किए थे—द्वैतवन में
- व्यास जी पाण्डवों को मिलते हैं—वन में
- कौरव और पाण्डव युद्ध की अवश्यम्भविता का ज्ञान करवाया था—व्यास जी ने
- भारवि के काव्य को कहा जाता है—'लक्ष्मीपदाङ्क'
- 'किरातार्जुनीयम्' का मंगलाचरण है—वस्तुनिर्देशात्मक
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति हेतु शिव की तपस्या किसकी प्रेरणा से करता है?—व्यास जी की
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति हेतु शिव की तपस्या करने जाता है—इन्द्रकील पर्वत पर
- ग्रन्थवाची शब्द सदा होते हैं—नपुंसकलिंग में
- अर्जुन इन्द्रकील पर्वत पर किसके मार्गदर्शन से पहुंचते हैं?—एक यक्ष के
- भारवि का प्रिय छन्द है—वंशस्थ
- भारवि द्वारा किरातार्जुनीयम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है—वंशस्थ
- भारवि द्वारा वंशस्थ के बाद सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है—उपजाति
- 'किरातार्जुनीयम्' में गौड़ रस है—शृंगार

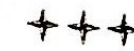
- 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन किस नाम से वर्णित किया गया है?—सुयोधन
- राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे—भारवि
- 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं—46
- शिव युद्ध से पहले अर्जुन का युद्ध होता है—स्कन्दसेना से
- व्यास का आगमन होता है—द्वितीय सर्ग
- यक्ष के साथ अर्जुन प्रस्थान करता है—तृतीय सर्ग में
- 'मूक' नामक दानव ने रूप धारण किया था—शूकर (वाराह) का
- द्रौपदी की धर्मराज युधिष्ठिर के प्रति मंगल कामना से किस सर्ग की समाप्ति होती है?—प्रथम सर्ग की
- भरतवंश की कुलवधू हैं—द्रौपदी
- पाण्डवों की राजमहिषी हैं—द्रौपदी
- 'दुरोदर' का अर्थ है—जुआ
- गज़राजों का मद-जल किसकी गन्ध वाला है?— सप्तपर्णपुष्प
- युवराज बनाया गया था—दुश्शासन को
- युधिष्ठिर किस सदन में गए थे?—कृष्णासदन में
- युधिष्ठिर के वंश का नाम है—चन्द्रवंश
- राजलक्ष्मी की तुलना की गयी है—प्रियतमा से
- रक्त चन्दन अत्यन्त प्रिय था—भीम को
- अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम था—सौरन्ध्री
- 'किरातार्जुनीयम्' के 25वें श्लोक तक वक्ता है—वनेचर
- 'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती' यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है?—'किरातार्जुनीयम्'
- स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' यह सम्बद्ध है—'किरातार्जुनीयम्' से

- सिर्फ 'नकार' को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखा था— भारवि ने
- 'न नोननुन्नो नुन्नोनो ना नानानना ननु.....' यह एकाक्षरी श्लोक है—'किरातार्जुनीयम्' 15/14 का
- युधिष्ठिर के गुप्तचर का नाम है— वनेचर
- 'चारचक्षुषः' कौन है?— गुप्तचर
- द्वैतवन में रहते हुए दुर्योधन की राजनीति एवं शासन व्यवस्था के लिए युधिष्ठिर ने दूत बनाकर हस्तिनापुर भेजा था— वनेचर को
- वनेचर ने वेष धारण किया था— ब्रह्मचारी का
- वनेचर के युधिष्ठिर से मिलने से ही किसका प्रथम सर्ग आरम्भ होता है?— किराता. महाकाव्य का
- 'श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्। यह है— मंगलाचरण
- कुरु देश का राजा था— दुर्योधन
- 'स वर्णिलिङ्गी विदितः' यहाँ वर्णिलिङ्गी पद का अर्थ है— ब्रह्मचारी का वेषधारण करने वाला
- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ये छः हैं— शत्रु



प्रमुख सूक्तियाँ

1. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं, प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क वेदितुम्' 1/1
2. 'न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।' 1/2 (वनेचर)
3. 'कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे।' 1/2 (वनेचर)
4. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरम्।' 1/1
5. 'द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो।' 1/3
6. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।' 1/4 (वनेचर)
7. 'योऽधिपं हितान्न यः संश्रृणुते स किंप्रभुः।' 1/5
8. 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगती।' 1/7 (वनेचर)
9. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।' 1/8 (वनेचर)
10. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।' 1/23 (वनेचर)
11. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।' 1/25 (वनेचर)
12. 'व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं।' 1/30 (द्रौपदी)
13. भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः। 1/30 (द्रौपदी)
14. पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्। 1/41 (द्रौपदी)
15. व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः, शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः। 1/42 (द्रौपदी)
16. अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा विदधति सोपधि। 1/45 (द्रौपदी)
17. निराश्रया हन्त! हता मनस्विता। 1/43 (द्रौपदी)
18. स्फुटा न पदैरपाकृता, न च स्वीकृतमर्थ गौरवम्।



शिशुपालवधम्

- 'शिशुपालवधम्' के रचनाकार हैं— महाकवि माघ
- 'शिशुपालवधम्' में कुल सर्ग हैं— 20
- 'शिशुपालवधम्' काव्य की विधा है— श्रव्य
- 'शिशुपालवधम्' है— महाकाव्य
- महाकवि माघ की एकमात्र रचना है—'शिशुपालवधम्'
- 'शिशुपालवधम्' किसके अन्तर्गत आता है?— बृहत्त्रयी के
- 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य के नायक हैं— श्रीकृष्ण
- 'शिशुपालवधम्' का प्रधास रस है— वीररस
- 'शिशुपालवधम्' का मंगलाचरण है— वस्तुनिर्देशात्मक
- महाभारत का कथांश है— 'शिशुपालवधम्'
- 'शिशुपालवधम्' का उपजीव्य है— महाभारत का सभापर्व
- महाभारत (सभापर्व), पद्मपुराण (25वां अध्याय) अग्निपुराण (4-12 अध्याय) और श्रीमद्भागवत (दशमस्कन्ध 74 अध्याय) में किसकी कथा वर्णित है?— 'शिशुपालवधम्' की
- महाकवि माघ के पिता का नाम था— दत्तक
- महाकवि माघ के पितामह का नाम था— सुप्रभदेव
- राजा श्री वर्मल के धर्मसचिव थे— महाकवि माघ
- महाकवि माघ का समय है— 7वीं शता. का अन्तिम भाग(675 ई.)
- 'शिशुपालवधम्' पर मल्लिनाथ द्वारा लिखी गयी टीका है— सर्वङ्कषा
- 'घण्टामाघ' की उपाधि प्राप्त है— माघ को
- माघ अनुगामी प्रतीत होते हैं— भारवि के
- माघ के ग्रन्थ का आरम्भ हुआ है—'श्री' शब्द से
- माघ के ग्रन्थ का अन्त हुआ है—'लक्ष्मी' शब्द से

- मात्र 'दकार' वर्ण युक्त श्लोक की रचना किया है— माघ ने
- 'शिशुपालवधम्' के सर्वाधिक प्रसिद्ध टीकाकार हैं— मल्लिनाथ
- 'उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य' इन तीनों के प्रयोग में निपुण माने जाते हैं— माघ
- 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' यह कथन सम्बद्ध है— शिशुपालवधम् से
- 'नवसर्गगते माघ नव शब्दो न विद्या' यह सम्बद्ध है—'शिशुपालवधम्' से
- राजसूय यज्ञ करते हैं— युधिष्ठिर
- युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ में किसके कहने पर श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की थी?— सहदेव के
- शिशुपाल द्वारा श्रीकृष्ण की निंदा करने का कारण था— श्रीकृष्ण की अग्रपूजा
- देवर्षि नारद का आगमन होता है— प्रथम सर्ग में
- देवर्षि नारद को श्रीकृष्ण के पास द्वारकापुरी कौन भेजता है?— इन्द्र
- इन्द्र का सन्देश लेकर श्रीकृष्ण के पास आते हैं— नारद
- आकाश मार्ग से द्वारकापुरी आते हैं— नारद
- नारद का द्वारकापुरी में सत्कार करते हैं— श्रीकृष्ण
- शिशुपाल के पूर्व जन्मों और उसके अत्याचारों का वर्णन करते हैं— नारद
- शिशुपाल पूर्व जन्म में था— हिरण्यकशिपु तथा रावण
- 'श्रियः पति श्रीमति शासितुम्' यह मंगलाचरण है—'शिशुपालवधम्' का
- 'हिरण्यगर्भांकभुवं' हैं— नारद
- 'तिरश्चीनगति' किसकी है?— सूर्य की
- शिशुपालवधम् के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं— 75

- 'रथाङ्गपाणि:' कौन हैं?— श्रीकृष्ण
- 'शिशुपालवधम्' के मंगलाचरण में स्तुति की गयी है— श्रीकृष्ण की
- 'सदाभिमानैकधना हि मानिन:' यह उक्ति है— नारद की
- 'मेघे माघे गतं वय:' यह कहा गया है— मल्लिनाथ द्वारा
- वसुदेव का घर है— श्रीमति
- चन्द्रमा के समान लग रहे थे— नारद
- महाकवि माघ के प्रथम सर्ग में छन्द है— वंशस्थ
- 'शिशुपालवधम्' में श्लोकों की कुल संख्या है— 1650
- श्रीकृष्ण उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणा करते हैं— द्वितीय सर्ग में
- श्रीकृष्ण द्वारकापुरी से युधिष्ठिर के यज्ञ में शामिल होने के लिए प्रस्थान करते हैं— तृतीय सर्ग में
- श्रीकृष्ण की राजधानी का नाम था— द्वारकापुरी
- रैवतक पर्वत का वर्णन किया गया है— चतुर्थसर्ग में
- द्वारकापुरी का वर्णन किया गया है— तृतीय सर्ग में
- समुद्र का वर्णन किया गया है— तृतीय सर्ग में
- रैवतक पर्वत पर विहार करने के लिए सेना के प्रस्थान तथा ठहरने का वर्णन है— पञ्चम सर्ग में
- गज एवं अश्व का वर्णन किया गया है— पञ्चम सर्ग में
- छ: ऋतुओं का वर्णन किया गया है— षष्ठ सर्ग में
- छ: ऋतुओं में प्रथम ऋतु है— वसन्त ऋतु
- श्रीकृष्ण और यादवाङ्गनाओं के वन-विहार का वर्णन है— सप्तम सर्ग में
- जल विहार का वर्णन है— अष्टम सर्ग में
- सूर्यास्त एवं संध्या के प्रादुर्भाव का वर्णन है— नवम सर्ग में

- यादव तथा यादवाङ्गनाओं के मधुपान का वर्णन है— दशम सर्ग में
- प्रभात-वर्णन है— एकादश सर्ग में
- श्रीकृष्ण का सेनासहित प्रस्थान का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- सैनिकों का यमुना तट पर पहुँचने का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- यमुना का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- सैनिकों का यमुना पार करने का वर्णन है— द्वादश सर्ग में
- श्रीकृष्ण को यमुनापार आये हुए जानकर उनकी अगवानी के लिए पाण्डवों के पहुँचने का वर्णन है— त्रयोदश सर्ग में
- हस्तिनापुर में श्रीकृष्ण के प्रवेश का वर्णन है— त्रयोदश सर्ग में
- यज्ञ सभा एवं यज्ञ सभा में कृष्ण के पहुँचने का वर्णन है— त्रयोदश सर्ग में
- यज्ञ का वर्णन किया गया है— चतुर्दश सर्ग में
- युधिष्ठिर द्वारा श्रीकृष्ण भगवान को प्रथमार्घ्य देने का वर्णन है— चतुर्दश सर्ग में
- 'श्रिय:पति: श्रीमति शासितुं जगत' इसमें 'श्रीमति' है— श्रीकृष्ण का घर
- नारदजी किसके समान शुभ्र थे?— हिमालय पर्वत के
- श्रीकृष्ण जी श्याम होने में किसके समान थे?— नीलगिरि पर्वत के
- युधिष्ठिर द्वारा श्रीकृष्ण की प्रथम पूजा करने का वर्णन है— चतुर्दश सर्ग में
- श्रीकृष्ण की प्रथम पूजा से शिशुपाल के क्रोधित होने का वर्णन है— पञ्चदश सर्ग में
- शिशुपाल द्वारा श्रीकृष्ण की निन्दा करने का वर्णन है— पञ्चदश सर्ग में
- शिशुपाल के द्वारा भेजा गया दूत श्रीकृष्ण की सभा में आता है— षोडश सर्ग में

- श्रीकृष्ण के धनुष का नाम था— शार्ङ्ग
- श्रीकृष्ण के गदा का नाम था— कौमोदकी
- श्रीकृष्ण के खड्ग का नाम था— नन्दक
- शिशुपाल से युद्ध के लिए श्रीकृष्ण एवं सेनाओं के प्रस्थान करने का वर्णन है— सप्तदश सर्ग में
- दोनों दलों (श्रीकृष्ण एवं शिशुपाल) की सेनाओं के बीच घनघोर युद्ध होता है— अष्टदश सर्ग में
- बाणासुर का पुत्र था— वेणुदारी
- बलराम जी एवं वेणुदारी के युद्ध का वर्णन है— एकोनविंश सर्ग में (21 सर्ग)
- शिशुपाल और श्रीकृष्ण के बीच युद्ध होने का वर्णन है— विंश सर्ग में (20 सर्ग)
- श्रीकृष्ण द्वारा चक्र से शिशुपाल का सिर काटने का वर्णन है— विंश सर्ग में (20 सर्ग)
- शिशुपाल के शरीर से निकलकर तेजपुँज श्रीकृष्ण में विलीन होता है— विंश सर्ग में (20 सर्ग)

✦✦✦

सूक्तियाँ

1. 'श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं'। 1/1
2. 'हिरण्यगर्भाङ्गभवुं मुनिं हरिः'। 1/1
3. 'प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः'। 1/2
4. 'क्षणं क्षणोत्क्षिप्तगजेन्द्रकृत्तिना' 1/4
5. 'रथाङ्गपाणेः पटलेन रोचिषामृषित्विषः' 1/21
6. शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्। 1/26
7. विलोकनेनैव तवामुना मुने! कृतः'। 1/29 (कृष्ण)
8. 'किमस्ति कार्यं गुरु योगिनामपि'। 1/31 (नारद)
9. उपप्लुतं पातुमदो मदोद्धतैस्त्वमेव विश्वम्भर! विश्वमीशिषे। 1/38 (नारद)
10. सदाभिमानैकधना हि मानिनः। 1/67 (नारद)
11. महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः 2/13
12. क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।
13. अथवा श्रेयसि केन तृप्यते? 1/29 (कृष्ण)
14. 'ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत'। 1/38 (नारद)
15. उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पश्यमिच्छता। 2/10

✦✦✦

नैषधीयचरितम्

- नैषधीयचरितम् के प्रणेता हैं— श्रीहर्ष
- 'खण्डनखण्डखाद्य' के रचनाकार हैं— श्रीहर्ष
- श्रीहर्ष के पिता का नाम है— श्रीहीर
- श्रीहर्ष की माता का नाम है— मामल्लदेवी
- श्रीहर्ष के माता-पिता का नाम ज्ञात होता है— नैषधीयचरित से (1/45)
- 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य है— बृहत्त्रयी
- 'नैषधीयचरितम्' का उपजीव्य है— नलोपाख्यान (महाभारत-वनपर्व)
- 'नैषधीयचरितम्' में कुल सर्ग हैं— 22
- श्रीहर्ष का समय माना जाता है— 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
- 'नैषधीयचरितम्' का नायक है— नल
- 'नैषधीयचरितम्' की नायिका है— दमयन्ती
- 'नैषधीयचरितम्' का प्रतिनायक है— इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण
- नैयायिक उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था— श्रीहीर को
- नल-दमयन्ती की कथा वर्णित है— 'नैषधीयचरितम्' में
- 'नैषधीयचरितम्' का सबसे बड़ा सर्ग है— 17वाँ
- 'नैषधीयचरितम्' का अंगीरस है— शृंगार रस
- श्रीहर्ष मुख्यतः कवि हैं— वैदर्भी रीति के
- श्रीहर्ष ने किस गुण का प्रयोग किया है?— ओज और प्रसाद गुण
- 'नैषधीयचरितम् में सबसे अधिक प्रयुक्त अलंकार है— श्लेष
- राजा नल के नायकत्व की कोटि है— धीरोदात्त
- श्रीहर्ष ने 'नैषध' में कितने छन्दों का प्रयोग किया है?— 19
- श्रीहर्ष का सर्वाधिक प्रिय छन्द है— उपजाति छन्द
- 'नैषध' में श्लेष का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मिलता है— 13वें सर्ग में (पांच नलों के वर्णन में)

- 'निषध' देश के राजा नल के चरित का वर्णन है— प्रथम सर्ग में
- 'विदर्भ' देश के राजा थे— भीम (प्रथम सर्ग में)
- भीम की सौन्दर्यशालिनी पुत्री थी— दमयन्ती
- राजा नल के रूप के बारे में सुनी थी— दमयन्ती (प्रथम सर्ग में)
- बन्दीजनों द्वारा नल का वर्णन सुनकर रोमाञ्चित हो जाया करती थी— दमयन्ती (प्रथम सर्ग में)
- दमयन्ती के रूप एवं गुणों की प्रशंसा सुनी थी— नल ने (प्रथम सर्ग में)
- उपवन में सरोवर के किनारे सुरतक्लांत एवं एक ही चरण पर स्थित विश्राम करते हुए एक स्वर्णिम हंस को देखा था— नल ने (प्रथम सर्ग में)
- स्वर्णिम हंस को पकड़ा था— नल ने (प्रथम सर्ग में)
- नल के सामने महती करुणा के साथ विलाप किया था— हंस ने (प्रथम सर्ग में)
- विलाप करते-करते मूर्च्छित हो गया था— हंस (प्रथम सर्ग में)
- नल की अश्रुधारा से चेतनता को प्राप्त करता है— हंस (प्रथम सर्ग में)
- हंस को छोड़ देता है— नल (प्रथम सर्ग में)
- दमयन्ती के सौन्दर्य का वर्णन नल के समक्ष करता है— हंस (द्वितीय सर्ग में)
- नल द्वारा आग्रह किए जाने पर दमयन्ती के समीप कुण्डिनपुर जाता है— हंस (द्वितीय सर्ग में)
- दमयन्ती के पास हंस पहुँचता है— तृतीय सर्ग में
- हंस एकान्त में अपना परिचय देता है— दमयन्ती को (तृतीय सर्ग में)
- दमयन्ती के समक्ष नल के गुण एवं अनुपम सौन्दर्य का वर्णन करता है— हंस (तृतीय सर्ग में)
- दमयन्ती नल के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करती है— हंस के समक्ष (तृतीय सर्ग में)

- दमयन्ती के पास से लौटकर हंस आता है— नल के पास (तृतीय सर्ग में)
- हंस अपनी सफलता की सूचना देता है— नल को (तृतीय सर्ग में)
- नल के विरह में दमयन्ती की विकलता का चित्रण है— चतुर्थ सर्ग में
- दमयन्ती की दशा को देखकर स्वयंवर का निर्णय लेते हैं— भीम (चतुर्थ सर्ग में)
- देवलोक में इन्द्र देवता के समक्ष दमयन्ती के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं— नारद जी (चतुर्थ सर्ग में)
- दमयन्ती के सौन्दर्य के बारे में स्वयंवर में भाग लेने पृथ्वी पर जाते हैं— इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण (पञ्चम सर्ग में)
- दमयन्ती के पास अपनी दूतियों को भेजते हैं— इन्द्र (पञ्चम सर्ग में)
- दमयन्ती के पिता के पास उपहारों को भेजते हैं— इन्द्र (पञ्चम सर्ग में)
- इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण मार्ग में कुण्डिनपुर जाते हुए देखते हैं— नल को (पञ्चम सर्ग में)
- नल के सौन्दर्य को देखकर ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है-- देवताओं में (पञ्चम सर्ग में)
- अपना परिचय देकर देवगण याचना करते हैं— नल से (पञ्चम सर्ग में)
- देवगणों की इच्छा पूर्ण करने का वचन देते हैं— नल (पञ्चम सर्ग में)
- देवगण दमयन्ती के पास जाने का आग्रह करते हैं— नल से (पञ्चम सर्ग में)
- दमयन्ती से प्रेम करने की बात नल कहता है— देवगणों से (पञ्चम सर्ग में)
- राजा नल को अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त होती है— इन्द्र से (पञ्चम सर्ग में)
- अदृश्य नल दमयन्ती के भवन में जाते हैं— षष्ठ सर्ग में

- दमयन्ती से देवों में से ही किसी को चुनने का आग्रह करती हैं— देवदूतियाँ (षष्ठ सर्ग में)
- राजा नल दमयन्ती के सौन्दर्य को देखता है— सप्तम सर्ग में
- कवि द्वारा दमयन्ती के नख-शिख का चित्रण प्रस्तुत किया गया है— सप्तम सर्ग में
- नल अपने को दमयन्ती के समक्ष प्रकट करने का निश्चय करता है— सप्तम सर्ग में
- राजा नल अपने को दमयन्ती के समक्ष प्रकट करता है— अष्टम सर्ग में
- राजा नल दमयन्ती एवं सखियों के पूछने पर परिचय देता है— देवदूत के रूप में (अष्टम सर्ग में)
- राजा नल देवों में से ही एक को चुनने का आग्रह करता है— दमयन्ती से (अष्टम सर्ग में)
- नल-दमयन्ती का वार्तालाप वर्णित है— नवम सर्ग में
- दमयन्ती अपना निश्चय बताती है— नल को (नवम सर्ग में)
- नल दमयन्ती के सामने अपने को प्रकट करता है— नवम सर्ग में
- नल से स्वयंवर में आने का अनुरोध करती है— दमयन्ती (नवम सर्ग में)
- स्वयंवर आरम्भ होता है— 10वें सर्ग में
- इन्द्र आदि चार देव राजा नल का रूप धारण करते हैं— 10वें सर्ग में
- स्वयंवर में आये हुए राजाओं आदि का परिचय दमयन्ती को देती हैं— सरस्वती (11वें, 12वें सर्ग में)
- पाँचों नलों को देखकर आश्चर्य में पड़ जाती है— दमयन्ती (11वें सर्ग में)
- पाँचों नलों का श्लेषयुक्त वर्णन करती हैं— सरस्वती(13वें सर्ग में)
- पाँचों नलों के लिए निकलते पाँच अर्थ को कहा जाता है— पंचनली (13वें सर्ग में)

- इन्द्र आदि देवताओं की मन ही मन पूजा (स्तुति) करती है— दमयन्ती (14वें सर्ग में)
- देवगण प्रसन्न होते हैं— दमयन्ती पर (14वें सर्ग में)
- सरस्वती के श्लेष को समझने की शक्ति दमयन्ती को प्रदान करते हैं— देवगण (14वें सर्ग में)
- दमयन्ती नल को पहचान कर पुष्पों की माला डालती है— 14वें सर्ग में
- सरस्वती और देवगण आशीर्वाद देते हैं— नल-दमयन्ती को (14वें सर्ग में)
- विवाह की तैयारी का वर्णन है— 15वें सर्ग में
- भीम द्वारा बारात के स्वागत-सत्कार का वर्णन है— 16वें सर्ग में
- दमयन्ती से नल का विवाह होता है— 16वें सर्ग में
- दमयन्ती के विवाह से लौटते समय देवों की भेंट होती है— कलि से (17वें सर्ग में)
- दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहा था— कलि (17वें सर्ग में)
- स्वयंवर सम्पन्न हो जाने की सूचना कलि को देते हैं— देवगण (17वें सर्ग में)
- राज्य से च्युत हो जाने का शाप नल को देता है— कलि (17वें सर्ग में)
- दमयन्ती से वियुक्त होने का शाप नल को देता है— कलि (17वें सर्ग में)
- नल-दमयन्ती के प्रथम मिलन तथा काम-क्रीडा का सांगोपांग वर्णन है— 18वें सर्ग में
- नल-दमयन्ती के विहार, वैतालिकों द्वारा नल को जगाने, सूर्योदय और चन्द्रास्त आदि का वर्णन है— 19वें-20वें सर्ग में
- नल विष्णु, शिव, वामन आदि देवों की स्तुति करता है— 21वें सर्ग में
- संध्या, रात्रि, दमयन्ती के सौन्दर्य के वर्णन के साथ समाप्त होता है— नैषध (22वें सर्ग में)

- राजा नल की कथा को किससे अधिक श्रेष्ठ कहा गया है?— अमृत से
- नैषध के प्रथमसर्ग में प्रथम पद्य से लेकर 142वें पद्य तक छन्द है— वंशस्थ
- किसकी कथा अमृत को तिरस्कृत कर देने वाली है?— नल की
- 'नलः स भूजानिरभूद् गुणाद्भुतः' इसमें 'भूजानिः' पद का अर्थ है— पृथ्वी जिसकी पत्नी थी
- विद्याओं की संख्या मानी गयी है— 14
- 14 विद्याओं में से प्रत्येक को चार-चार अवस्थाओं में परिणत् हो जाने पर उनकी संख्या हो गयी— 56
- राजा नल की जिह्वा के अग्रभाग पर सर्वदा कितनी विद्याएँ निवास करती थीं?— 18
- अठारह द्वीपों पर विजय प्राप्त कर ली थी— नल ने
- परस्पर विरोधिनी लक्ष्मी और सरस्वती दोनों के ही आश्रय थे— नल
- आठों दिशाओं के स्वामी थे— नल
- धर्म के चरण होते हैं— चार 1. तप, 2. ज्ञान, 3. यज्ञ, 4. दान
- पृथ्वी पर एक चरण से निवास करता था— अधर्म
- अतिशय दुर्बल होकर तपस्वी बन गया था— अधर्म
- **'स्फुरत्प्रतापानलधूममञ्जिम्'** इसमें समास है— बहुब्रीहि
- **'परश्शताः'** पद का अर्थ है— सौ से भी अधिक
- अतिवृष्टि आदि छः विपत्तियों को रोक दिया था— नल ने
- प्रथम अतिवृष्टि का नाम है— ईति
- शत्रुराजाओं की स्त्रियों के नेत्रों का अपना आश्रय बना लिया था— अतिवृष्टियों ने
- स्वर्ग का सर्वश्रेष्ठ वृक्ष माना जाता है— कल्पवृक्ष
- अभिलषित वस्तु को देने वाला वृक्ष है— कल्पवृक्ष
- मानव शरीर में रोम होते हैं— 350 करोड़

- अर्गल के समान दोनों भुजायें लम्बी तथा मोटी थी—नल की
- निमेषरहित दृष्टि से राजा नल को देखती थी—देवाङ्गनाएँ
- **'चक्षुःश्रवा'** कहा जाता है—सर्पजाति को
- राजा नल को पति रूप में वरण करने योग्य स्त्री थी—दमयन्ती
- बाणासुर के नगर का नाम था—शोणितपुर
- दिन छोटा होता है—हेमन्त ऋतु में
- रात्रि छोटी होती है—ग्रीष्म ऋतु में
- **'अमुष्य धीरस्य जयाय साहसी'** यहाँ 'जयाय' में विभक्ति है—चतुर्थी
- 'कमलासन' कहा जाता है—ब्रह्मा को
- विदर्भदेश की सुन्दरी थी—दमयन्ती
- राजा नल के हाथ पर किसका चिह्न विद्यमान था?—मकर रेखा का
- सिर को पंख से ढ़ककर एक पैर पर स्थित होकर क्रीड़ा सरोवर के पास सो गया था—हंस
- नैषध के 143वें पद्य में छन्द है—दोधक
- नैषध के 144वें पद्य में छन्द है—वसन्ततिलका
- नैषध के 145वें पद्य में छन्द है—शार्दूलविक्रीडित
- नैषध के प्रथम सर्ग में कुल श्लोक हैं—145
- **'रसैः कथा यस्य सुधावधीरिणी'** इसमें अलङ्कार है—व्यतिरेक
- **'काव्ये चारुणि'** इससे समाप्त होता है—प्रथम सर्ग
- **'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम्'** इसमें छन्द है—वंशस्थ



प्रमुख सूक्तियाँ

- 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथाम्'—नैषध 1/1
- 'रसैः कथा यस्य सुधावधीरिणी'—नैषध 1/2
- 'ज्वलत्प्रतापावलिकीर्तिमण्डलः'—नैषध 1/2
- 'चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयम्'—नैषध 1/4
- 'अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी'—1/5
- 'प्रदक्षिणीकृत्य जयाय सृष्टया रराज नीराजनया स राजघः'—1/10
- 'दिगङ्गनाङ्गाभरणं रणाङ्गणे यशः पटं तद्भटचातुरी तुरी'—1/12
- 'तदा विधिः कुण्डलनां विधोरपि'—1/14
- मृषा न चक्रेऽल्पितकल्पपादपः प्रणीय दारिद्र्यदरिद्रतां नृपः—1/15
- 'समं मुदैव देवः कविना बुधेन च'—1/17
- 'अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा घृणा'—1/20
- 'कृतः परं भव्यमहो महोयसी'—1/24
- 'निमीलनभ्रंशजुषा दृशा भृशं निपीय तं यस्त्रिदशीभिरर्जितः'—1/27
- 'यथोह्यमानः खलु भोगभोजिना.'—1/32
- 'प्रियं प्रियां च त्रिजगज्जपिश्रियौ'—1/38
- 'स सिन्धुजं शीतमहस्सहोदरम्'—1/64
- 'मृषा मृधं सादिबले कुतूहलान्नलस्य नासीरगते वितेनतुः'—1/68
- 'ततः प्रसूने च फले च मञ्जुले'—1/76
- 'दिने दिने त्वं तनुरेधि रेऽधिकं पुनः'—1/90
- 'वियोगभाजोऽपि नृपस्य पश्यता'—1/100
- 'प्रियासु बालासु रतिक्षमासु च द्विपत्रितं पल्लवितश्च विभ्रतम्'—1/118
- 'विधाय मूर्तिं कपटेन वामनीम्.'—1/124
- 'नृपः पतङ्गं समधत्त पाणिना'—1/124
- 'न जातरूपच्छदजातरूपता द्विजस्य' यह कथन है—हंस का 1/129

- 'धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः समीक्ष्य पक्षान्मम हेमजन्मनः' यह कथन है— हंस का 1/130
- 'विगर्हितं धर्मधनैर्निबर्हणं विशिष्य' यह कथन है— हंस का 1/131
- 'धिगीदृशन्ते नृपतेः कुविक्रमं कृपाश्रये यः कृपणे पतत्रिणि' यह कथन है— हंस का 1/132
- 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी' यह कथन है— हंस का 1/135
- 'गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दयन्नहो विधे! त्वां करुणा रुणद्धि नो' यह कथन है— हंस का 1/135
- 'मुहूर्तमात्रं भवनिन्दया दयासखाः' यह कथन है- हंस का 1/136
- 'प्रियः कियद्दूर इति त्वयोदिते' यह कथन है— हंस का 1/137
- 'ममैव शोकेन विदीर्णवक्षसा त्वयाऽपि चित्राङ्गि' यह कथन है— हंस का 1/140
- 'चिरेण लब्धा बहुभिर्मनोरथैर्गताः' यह कथन है— हंस का 1/141
- 'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति'— नैषध.
- 'मितं च सारं च वचोहि वाग्मिता'

+++

बुद्धचरितम्

- बुद्धचरितम् के प्रणेता हैं— महाकवि अश्वघोष
- महाकवि अश्वघोष मुख्यरूप से थे— बौद्धदार्शनिक
- अश्वघोष का काल माना जाता है— प्रथम शताब्दी लगभग
- बुद्धचरितम् में कुल सर्ग है— 28 (चीनी एवं तिब्बत में)
- महाकवि अश्वघोषरचित 'बुद्धचरितम्' में सर्ग उपलब्ध होते हैं— 13
- 'बुद्धचरितम्' है— महाकाव्य
- भगवान् बुद्ध के चरित का वर्णन है— बुद्धचरितम् में
- 19वीं शताब्दीं में 'बुद्धचरितम्' में चार सर्गों को जोड़ा था— अमृतानन्द ने
- 15 से 28 वें सर्ग तक के छन्दोबद्ध अनुवादक हैं— श्रीरामचन्द्र दास शास्त्री
- अश्वघोष रचित सर्ग मान्य हैं— 14
- बुद्ध का जन्म होता है— प्रथम सर्ग में
- बुद्धचरितम् के प्रथम सर्ग का नाम है— बुद्ध का जन्म
- बुद्धचरितम् के द्वितीय सर्ग का नाम है— अन्तःपुर विहार
- बुद्धचरितम् के तृतीय सर्ग का नाम है— संवेगोत्पत्ति
- बुद्धचरितम् के चतुर्थ सर्ग का नाम है— स्त्रीनिवारण
- बुद्धचरितम् के पञ्चम सर्ग का नाम है— महाभिनिष्क्रमण
- बुद्धचरितम् के षष्ठ सर्ग का नाम है— छन्दकविसर्जन
- बुद्धचरितम् के सप्तम सर्ग का नाम है— तपोवन प्रवेश
- बुद्धचरितम् के अष्टम सर्ग का नाम है— अन्तःपुर विलाप
- बुद्धचरितम् के नवम सर्ग का नाम है— कुमारान्वेषण
- बुद्धचरितम् के दशम सर्ग का नाम है— बिम्बिसारागमन

- बुद्धचरितम् के एकादश सर्ग का नाम है—कामनिन्दा
- बुद्धचरितम् के द्वादश सर्ग का नाम है—अराड्-दर्शन
- बुद्धचरितम् के त्रयोदश सर्ग का नाम है—कामविजय
- बुद्धचरितम् के चतुर्दश सर्ग का नाम है—बुद्धत्व प्राप्ति
- अश्वघोष-समकालीन थे—कनिष्क के
- अश्वघोष किस बौद्धसंगीति की अध्यक्षता किए थे—चतुर्थ बौद्धसंगीति का
- सौन्दरनन्द रचना है—अश्वघोष की
- शारिपुत्रप्रकरण के कृतिकार हैं—अश्वघोष
- सौन्दरनन्द में कुल सर्ग हैं— 18
- सौन्दरनन्द में किसकी कथा वर्णित है?—नन्द-सुन्दरी की
- सौन्दरनन्द है—महाकाव्य
- 'शारिपुत्रप्रकरण' है—प्रकरण



मेघदूतम्

- मेघदूतम् के रचनाकार हैं—महाकवि कालिदास
- संस्कृत साहित्य का प्रथम गीतिकाव्य है— मेघदूत
- खण्डकाव्य के भेद हैं—तीन
  1. स्त्रोत काव्य 2. गीतिकाव्य 3. शृङ्गारिक काव्य
- शृङ्गारिक काव्य के भेद हैं—दो 1. प्रबन्धकाव्य 2. मुक्तककाव्य
- प्रबन्धकाव्य है— मेघदूत
- मेघदूत का मंगलाचरण है— वस्तुनिर्देशात्मक
- मेघदूत में मुख्य रस है— विप्रलम्भ शृंगार
- मेघदूत में छन्द है—मन्दाक्रान्ता
- मेघदूत का कथानक लिया गया—रामायण या ब्रह्मवैवर्तपुराण से
- मेघदूत विभक्त है—दो भागों में 1. पूर्वमेघ 2. उत्तरमेघ
- मेघदूत के सर्वप्राचीन टीकाकार हैं—बल्लभदेव
- मेघदूत के 121 श्लोकों पर मल्लिनाथ द्वारा लिखी गयी टीका का नाम है—संजीवनी
- मेघदूत के 121 श्लोकों में प्रक्षिप्त श्लोकों की संख्या है—6
- मेघदूत के पूर्वमेघ में कुल श्लोक हैं—67
- मेघदूत के उत्तरमेघ में कुल श्लोक हैं—54
- मेघदूत का नायक है—यक्ष
- यक्ष का नाम है—हेममाली
- मेघदूत की नायिका है—यक्षिणी
- यक्षिणी का नाम है—विशालाक्षी
- यक्ष का शापान्त होता है—देवोत्थनी एकादशी को

- विष्णु शेष शय्या से उठते हैं—देवोत्थनी एकादशी को
- कुबेर ने यक्ष को कितने वर्ष का शाप दिया था?—1 वर्ष का
- यक्षों के स्वामी थे—कुबेर
- यक्ष शाप दिनों को बिताता है— रामगिरि (चित्रकूट) पर्वत पर
- मेघदूत पर लिखी गयी टीकाएँ हैं—50
- मल्लिनाथ के अनुसार मेघदूत में श्लोकों की कुल संख्या है—121
- मेघदूत के कितने श्लोक प्रमाणित माने जाते हें?—115 (पू. में. 63, उ. में 52)
- 'आषाणमास' के प्रथमदिन मेघ को 'वक्रक्रीड़ा' करते देखता है—यक्ष
- यक्ष कितने माह बिताकर मेघ को 'वक्रक्रीड़ा' करते देखता है?—8 माह
- 'कुटज' (गिरिमल्लिका) पुष्प से मेघ को अर्घ दिया था—यक्ष ने
- 'पुष्कर एवं आवर्तक' नामक बादलों के कुल में उत्पन्न हुआ था—मेघ
- किसका गर्जन पृथ्वी को शिलीन्ध्र पुष्पों से युक्त कर देता था?—मेघ का
- शिव के सिर पर स्थित चाँदनी से उज्जवल महलों से युक्त नगरी थी—अलका
- अलका किसकी नगरी थी?—कुबेर की
- कैलाश तक मेघ का साथी था—राजहंस
- विन्ध्य के पठार में बहती है—रेवा (नर्मदा) नदी
- दशार्ण की राजधानी थी—विदिशा
- वेतवा नदी बहती थी—विदिशा में
- अवन्तिका की राजधानी थी—उज्जयिनी
- इन्द्र ने 'नीलगिरि' नामक हाथी दिया था—प्रद्योत को
- महाकाल किस नदी के समीप थे?—गन्धवती
- सूर्य की प्रेयसी कही गयी है—कमलिनी
- कैलास के ऊर्ध्व भाग में स्थित है—अलका नगरी

- देवगिरि पर नित्य निवास करते थे—स्कन्द (कार्तिकेय)
- कुरुक्षेत्र है—ब्रह्मवर्त में
- सरस्वती नदी के जल का सेवन किया था—बलराम ने
- 'स्वर्णकमल' उत्पन्न होते हैं—मानसरोवर में
- मेघदूत का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद किया है—मैक्समूलर ने
- मेघदूत का जर्मन भाषा में गद्यानुवाद किया है—श्वेट्ज ने
- मेघदूत का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया है—आर्थर राइडर एवं एच.जी. रूक ने
- हिन्दी भाषा में मेघदूत के पद्यानुवाद हो चुके हैं— 6
- मेघदूत को शोकगीत (Elegy) कहा है— डा. कीथ ने
- महाकवि कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की है—क्षेमेन्द्र ने
- यक्ष द्वारा अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण शाप दिया था—कुबेर ने
- यक्ष द्वारा अपने कार्य में प्रमाद करने का कारण था—अपनी पत्नी में आसक्ति
- कुबेर ने एक वर्ष तक पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया था—यक्ष को
- मेघदूत के आरम्भ में यक्ष की शापावधि का कितना समय शेष है?—4 माह
- मेघदूत के नायक की कोटि है—धीरललित
- मेघदूत की नायिका की कोटि है—पद्मिनी
- मेघदूत में किस गुण की प्रधानता है?—प्रसाद एवं माधुर्य गुण
- मेघदूत में प्रयुक्त रीति है—वैदर्भी रीति
- मेघदूत पद में समास है—बहुब्रीहि
- यक्षों के अधिपति कुबेर की राजधानी थी—अलका
- मेघ को अपनी प्रिया के पास सन्देश वाहक बनाकर भेजना चाहता है—यक्ष

- धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से निर्माण हुआ है— मेघ का
- मेघ के बाँयी ओर शब्द कर रहा था— चातक
- अलकापुरी का वर्णन है— उत्तरमेघ में
- अलकापुरी का भवन है— सीतमञ्जिला
- 'पुष्पक' नामक बाजे बजाये जाते हैं— अलकापुरी में
- 'रतिफल' नामक मदिरा का सेवन करते हैं— यक्ष
- मेघ किस दिशा की ओर मुख करके अपनी यात्रा आरम्भ करता है?— उत्तर दिशा की ओर
- इन्द्रधनुष से मेघ की उपमा दी गयी है— गोपवेषधारी श्रीकृष्ण की
- मेघ की यात्रा में सर्वप्रथम पड़ता है— माल प्रदेश
- आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझायी थी— मेघ ने
- मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को धारण करेगा— सिर पर
- मेघ की यात्रा में पहला पर्वत है— आम्रकूट
- मेघ के मार्ग में मिलने वाली प्रथम नदी थी— रेवा (नर्मदा)
- किसका जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है?— नर्मदा का
- रेवा नदी को पार करके मेघ पहुँचता है— दशार्ण देश
- दशदुर्गों का प्रदेश कहा जाता है— दशार्ण
- वेत्रवती नदी के तट पर स्थित है— विदिशा
- किस नदी की उपमा भ्रूभङ्गयुक्त नायिका से की गयी है?— वेत्रवती की
- मालवा के भिलसा नामक स्थान को माना जाता है— विदिशा
- विदिशा में मेघ ठहरता है— नीचैः पर्वत पर
- वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त सुगंधित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है— नीचैः पर्वत
- मेघ का मार्ग कहाँ जाते समय टेढ़ा होगा?— उज्जयिनी में
- उज्जयिनी जाते समय मेघ मार्ग में मिलता है— निर्विन्ध्या नदी से
- निर्विन्ध्या अपनी भंवर रूपी नाभि दिखाती है— मेघ को

- 'अवन्ती' में किसकी कथा प्रचलित है?— वत्सराज उदयन की
- देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा कहा गया है— उज्जयिनी को
- 'विशाला' कहा गया है— उज्जयिनी को
- उदयन ने प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था— उज्जयिनी में
- प्रद्योत का स्वर्णमय ताड़ वृक्षों का वन था— उज्जयिनी में
- उज्जयिनी के महल की छत पर रात्रि व्यतीत करता है— मेघ
- उज्जयिनी के बाद मेघ के मार्ग में नदी आती है— गंभीरा
- यक्ष, जल को 'गंभीरा' का बताता है— वस्त्र
- यक्ष किनारों को बताता है— नितम्ब
- यक्ष बेंत की शाखाओं को गम्भीरा का बताता है— हाथ
- चर्मवती नदी पार करके मेघ कहां की स्त्रियों की उत्सुकता का विषय बनेगा?— दशपुर
- बलराम की पत्नी का नाम है— रेवती
- किसकी आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है?— रेवती की
- 'कुरुक्षेत्र' के आगे 'कनखल' पर्वत के समीप बहती है— गङ्गा नदी
- गङ्गा नदी का नाम है— जह्नुकन्या
- हिमालय पर्वत पर परशुराम के पराक्रम का प्रमाण है— क्रौञ्चरन्ध्र
- क्रौञ्चरन्ध्र से हंस जाते हैं— मानसरोवर
- क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम है— हंसद्वार
- उत्तरमेघ के प्रथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना की गयी है— मेघ से
- मेघ के बिजली की तुलना की गयी है— अलकापुरी की स्त्रियों से
- इन्द्रधनुष की तुलना की गयी है— सुन्दर चित्रों से
- मेघ के गर्जन की तुलना की गयी है— अलकापुरी में बजाए जाने वाले मृदङ्गों से
- मेघ के जलधारण की तुलना की गयी है— मणिजड़ित फर्शों से
- मेघ की ऊँचाई की तुलना की गयी है— गगनचुम्बी शिखरों से

- अलका में सदैव वर्तमान रहती हैं—6 ऋतुएँ
- अलका की स्त्रियाँ क्रीड़ा के लिए हाथों में लिए रहती हैं—कमल
- अलकापुरी की स्त्रियाँ बालों में लगाये रहती हैं—कुन्दपुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ मुख पर लगाये रहती हैं—लोध्रपुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ जूड़ों में सजाती—कुरबक
- अलकापुरी की स्त्रियाँ कानों में लगाती हैं—शिरीष पुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ माँग में सजाती हैं—कदम्ब पुष्प
- यक्ष हमेशा युवावस्था को प्राप्त रहते हैं—अलका में
- 'रतिफल' नामक मद्य प्राप्त होता है—कल्पवृक्ष से
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम है—वैभ्राज
- वैभ्राज उद्यान बनाया गया था—चित्ररथ द्वारा
- वैभ्राज उद्यान की रक्षा करता है—विभ्राज
- शिव का गण है—विभ्राज
- यक्ष का घर किसके समान है?—इन्द्रधनुष के
- अल्का में अलंकरण की समस्त सामग्री प्रदान करता है—कल्पवृक्ष
- यक्ष का घर कुबेर के घर से किस दिशा में स्थित है?—उत्तर दिशा
- यक्ष के घर के समीप वृक्ष है—मन्दारवृक्ष
- मन्दारवृक्ष पोषित किया गया था—यक्षिणी द्वारा
- रक्त, अशोक और मौलसिरी नाम के दो वृक्ष हैं—क्रीड़ाशैल पर
- माधवीलता का कुंज है—क्रीड़ाशैल पर
- यक्षिणी के बायें पैर का इच्छुक है—अशोक वृक्ष
- यक्षिणी के 'मुख की मदिरा' का अभिलाषी है—मौलसिरी (वकुल)
- यक्ष के द्वार के दोनों ओर चित्र बने हैं—शंख और पद्म के
- अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीड़ाशैल पर बैठता है—मेघ
- यक्ष के घर में पाली गयी है—मैना
- यक्षिणी विरह के दिनों की गणना करती है—पुष्पों से
- यक्षिणी विरह के दिनों में सोती है—भूमि पर



मेघदूत

पूर्व-मेघ

- यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु। 1
- आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं। 2
- कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे। 3
- प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी। 4
- धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः। 5
- कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5
- याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। 6
- आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां। 9
- वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु। 12
- प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः। 17
- सद्भावार्द्रः फलति न चिरेणोपकारो महत्सु। 17 क
- न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय। 17
- रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय। 20
- स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। 28
- अप्यन्यस्मिजलधर! महाकालमासाद्य काले। 36
- मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः। 40
- ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः। 43
- आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम्। 55
- वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः। 56
- हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः। 64



उत्तर-मेघ

- सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्। 1
- वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति। 4
- मन्दाकिन्या सलिलशिशिरैः सेव्यमाना। 6
- मङ्ग्लानिं सुरतजनितां तन्तुजालावलम्बाः 9
- जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्। 23
- आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा। 25
- प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा। 33
- वाचालं मां न खलु । 34
- कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदूनः। 40
- शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ। 50
- प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव। 54



नीतिशतकम्

- 'नीतिशतकम्' के रचनाकार हैं— भर्तृहरि
- भर्तृहरि की पत्नी का नाम है— पिङ्गला
- भर्तृहरि के गुरु माने जाते हैं— गोरखनाथ
- बौद्धमतानुसार भर्तृहरि के गुरु थे— वसुरात
- भर्तृहरि का छोटा भाई था— विक्रमादित्य
- भर्तृहरि के पिता का नाम था— गन्धर्वसेन
- मालवदेश के राजा थे— गन्धर्वसेन
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर बौद्ध कहा जाता है—भर्तृहरि को
- वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक थे— भर्तृहरि
- भर्तृहरि का समय माना जाता है— 57 ई.पू. लगभग अथवा 575-650 ई.
- भर्तृहरि की रीति थी—वैदर्भी रीति
- भर्तृहरि के गुण थे—प्रसाद और माधुर्य
- मुक्तककाव्य के प्रथमकवि थे—भर्तृहरि
- भर्तृहरि के प्रिय छन्द हैं—शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- शतकत्रय के रचयिता हैं—भर्तृहरि
- 'नीतिशतकम्' की विधा है—मुक्तककाव्य
- 'नीतिशतकम्' में कुल श्लोकों की संख्या है—121
- 'नीतिशतकम्' की मङ्गलाचरण सहित पद्धतियाँ हैं—11
- भर्तृहरि ने ब्रह्म की स्तुति के पश्चात मूर्ख निन्दा से किस ग्रन्थ का आरम्भ किया है?—'नीतिशतकम्' का
- शतकत्रय हैं—तीन

  1. नीतिशतक 2. शृंगारशतक 3. वैराग्य शतक
- भर्तृहरि की रचनाएँ हैं—चार

  1. वाक्यपदीय 2. नीतिशतक 3. शृंगारशतक 4. वैराग्यशतक

- स्वार्थसिद्धि के साथ-साथ परहित साधन के लिए उद्योगशील होते हैं— उत्तमव्यक्ति
- भर्तृहरि के अनुसार सज्जन की चारित्रिक विशेषता है— स्वाभिमानिता
- अतिनम्र स्वभाव होता है— परोपकारी का
- क्षमाशीलता और सहिष्णुता होनी चाहिए— गुरुओं में
- 'क्षीयन्ते खलु भूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम्' यह है— नीतिशतकम् में
- 'सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्' यह है— नीतिशतकम् में
- भर्तृहरि के अनुसार प्रगल्भतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए— स्त्रियों के प्रति
- भर्तृहरि के अनुसार वीरता प्रदर्शित करना किसके प्रति श्रेयस्कर है?— शत्रुओं के प्रति
- विद्वानों का सम्मान करके प्रशंसा प्राप्त करता है— राजा
- नाना प्रकार के पतन कैसे व्यक्तियों का होता है?— विवेकभ्रष्ट
- अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए मूर्खजनों का एकमात्र उपाय है— मौन रहना
- कोई व्यक्ति किसके चित्त को वश में नहीं कर सकता है?— दुराग्रही मूर्ख व्यक्ति के
- भर्तृहरि ने नीतिशतक के मङ्गलाचरण में किस देव की स्तुति की है— ब्रह्म की
- 'विभूषणं मौनमपण्डितानाम्' यह सम्बद्ध है— नीतिशतकम् से
- 'नानाफलं फलति कल्पलतेवभूमिः' यह सम्बद्ध है— नीतिशतकम् से
- 'नीतिशतक' के मङ्गलाचरण में छन्द है— अनुष्टुप्
- 'नेता यस्य बृहस्पतिः' यहाँ 'यस्य' पद से संकेत किया गया है— इन्द्र का
- 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह उक्ति है— 'नीतिशतकम्' की
- विद्याविहीन होते हैं— पशु के समान
- व्यक्ति अपने भाग्य से प्राप्त करता है— धन

- किसके चित्त को नहीं बदला जा सकता है?— मूर्ख के
- सान पर तराशी गई मणि प्राप्त होती है— शोभा को
- मनस्वियों की वृत्ति किसके समान होती है?— फूलों के
- धन की गतियाँ होती है— तीन
- भर्तृहरि के अनुसार सभी गुण आश्रय लेते हैं— धन का
- कुल का नाश होता है— कुपुत्र से
- 'कठिन असिधाराव्रत' कहा गया है— सेवा को
- 'नीतिशतकम्' का मङ्गलाचरण है— नमस्कारात्मक
- थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य किसके समान मदान्ध हो जाता है?— हाथी के
- 'येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः' यह सम्बद्ध है— नीतिशतक' से
- 'मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति' यह सम्बद्ध है— नीतिशतक से
- 'दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये' यह है— मङ्गलाचरण
- 'यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता' यह सम्बद्ध है— नीतिशतकम् से
- 'व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते' यह सम्बद्ध है— नीतिशतकम् से
- भर्तृहरि ने नीति का वर्णन किया है— नीतिशतकम् में
- भर्तृहरि ने अपने शतकत्रय में वर्णन नहीं किया है— युद्ध का
- 'ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति' यह उक्ति कही गयी है— मूर्ख के लिए
- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक माने जाते हैं— विक्रमादित्य
- 'राजन् दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनाम्' यह सूक्ति सम्बद्ध है— नीतिशतक से
- 'धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च' इसमें माम्-पद से संकेत किया गया है— भर्तृहरि का
- 'यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः' इस पंक्ति के माध्यम से कवि समझा रहा है— चातकमित्र को

- 'लभेत् सिकतासु तैलम्' यहाँ 'सिकता' पद का अर्थ है—बालू
- 'व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ' यहाँ 'व्यालम्' पद का अर्थ है—दुष्टगज
- 'हुतभुक्' पद का अर्थ है—अग्नि
- 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' यह श्लोक सम्बद्ध है—नीतिशतक से
- 'प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति' यह कथन है—भर्तृहरि का
- 'पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः' इसमें 'पिशुनता' पद का अर्थ है—चुगुलखोरी
- 'शुचौ कैतवम्' इसमें 'कैतवम्' पद का अर्थ है—कपट
- 'छायेव मैत्री खलु सज्जनानाम्' यह सम्बद्ध है—नीतिशतक से
- विधाता ने मूर्खों के लिए एकमात्र आभूषण बनाया है—मौन को
- अग्नि नियन्त्रित की जाती है—जल से
- सूर्यताप नियन्त्रित किया जाता है—छाते से
- साहित्य, संगीत एवं कला से विहीन व्यक्ति किसके समान होता है?—पशु के
- विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म से विहीन व्यक्ति पृथ्वी पर है—भार स्वरूप
- मूर्खों के साथ इन्द्र के भवन में रहने की अपेक्षा किसके साथ वन में रहना श्रेष्ठ है?—वनचरों के
- 'न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम्' यह है—'नीतिशतकम्' में
- 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' यह सम्बद्ध है—नीतिशतकम् से
- 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' इसमें छन्द है—अनुष्टुप्
- 'स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्' यह सम्बद्ध है—नीतिशतकम् से
- किसकी अवमानना से राजा की मूर्खता प्रकट होती है?—सत्कवियों की

- कभी न नष्ट होने वाला आभूषण है—वाणी (विद्या)
- सर्वश्रेष्ठ आभूषण है—विद्या
- परदेश गमन पर सर्वश्रेष्ठ धन सिद्ध होती है—विद्या
- गुरुओं की भी गुरु है—विद्या
- बुद्धि की जड़ता को हरती है—सत्संगति
- कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है—सत्संगति
- धन की गतियाँ हैं—तीन 1. दान 2. भोग 3. नाश
- किसकी भाँति राजनीति नाना रूपों वाली है?— वेश्या
- 'किसके रहने से मृत्यु की आवश्यकता नहीं होती है?—अपकीर्ति
- दिन के उत्तरार्द्ध की छाया की तरह किसकी मैत्री होती है?—सज्जनों की
- दिन के पूर्वार्द्ध की छाया की तरह किसकी मैत्री होती है?—दुर्जनों की
- अच्छे आचरण वाला पुत्र प्राप्त होता है—पुण्यवानों को
- पति का हित चाहने वाली पत्नी प्राप्त होती है—पुण्यवानों को
- दूसरे मित्र के पापकर्म को दूर करता है—सच्चा मित्र
- मनुष्य की कोटियाँ है—तीन 1. नीच 2. मध्यम 3. उत्तम
- विघ्न के भय से कार्य आरम्भ नहीं करते हैं—नीच मनुष्य
- जो मनुष्य कार्य आरम्भ करते हैं, परन्तु विघ्न आने पर छोड़ देते हैं, वे हैं—मध्यम कोटि के
- विघ्नों के आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं—उत्तम व्यक्ति
- इस सम्पूर्ण त्रिलोक को जीत लेता है—धैर्यशाली पुरुष
- सभी आभूषणों का कारण है—शील (सदाचार)
- सर्वोत्कृष्ट आभूषण है—शील (सदाचार)
- सबसे बलवान है—भाग्य
- 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते' यह है—'नीतिशतकम्' में
- 'दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्त' यह है—नीतिशतकम में

✦✦✦

दशकुमारचरितम्

- संस्कृत गद्यकाव्य के मुख्य भेद माने जाते हैं— दो
  1. कथा, 2. आख्यायिका
- दण्डी की मुख्य कृतियाँ हैं— काव्यादर्श, दशकुमारचरितम् और अवन्तिसुन्दरीकथा
- दण्डी का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है— काव्यादर्श
- दण्डी का अलंकारों से सम्बन्धित ग्रन्थ है— काव्यादर्श
- दण्डी का काल माना जाता हे— 600ई. लगभग
- 'दशकुमारचरितम्' है— आख्यायिका
- भारवि के प्रपौत्र थे— दण्डी
- दण्डी के पिता का नाम था— वीरदत्त
- दण्डी की माता का नाम था— गौरी
- आख्यायिका को विभक्त किया जाता है— उच्छवासों में
- 'दशकुमारचरितम्' विभक्त है— उच्छवासों में
- 'दशकुमारचरितम्' में कुल उच्छवास हैं— 8
- दशकुमारचरितम् में भाग हैं— तीन
- प्रथम भाग है— पूर्वपीठिका
- द्वितीय भाग है— चरित (मध्यपीठिका)
- तृतीय भाग है— उत्तरपीठिका
- पूर्वपीठिका में उच्छवासों की संख्या है— 5
- 'दशकुमारचरितम्' का आधारग्रन्थ है— बृहत्कथा
- 'दशकुमारचरितम्' के आठवें उच्छवास को कहते हैं— विश्रुतचरितम्
- कथा का प्रारम्भ होता है— पुष्पनगरी से
- पुष्पनगरी का आधुनिक नाम है— पटना
- दशकुमारचरितम् में कितने राजकुमारों का वर्णन है?— 10
- 'दशकुमारचरितम्' के राजकुमारों में प्रमुख हैं— राजवाहन

- राजवाहन के पिता का नाम है— राजहंस
- 'दशकुमारचरितम्' में रीति है— वैदर्भी
- 'दशकुमारचरितम्' में गुण है— प्रसादगुण
- दण्डी के पदों में प्रसिद्ध है— पदलालित्य
- मगध देश की राजधानी थी— पुष्पनगरी
- पुष्पनगरी पर शासन करता था— राजहंस
- धर्मपाल, पद्मोद्भव और सितवर्मा मन्त्री थे— राजहंस के
- सुमन्त्र, सुमित्र और कामपाल पुत्र थे— धर्मपाल के
- सुश्रुत और रत्नोद्भव पुत्र थे— पद्मोद्भव के
- सुमति और सत्यवर्मा पुत्र थे— सितवर्मा के
- समुद्री व्यापार में लग गया था— रत्नोद्भव
- यायावर (आवारा) था— कामपाल
- तीर्थयात्रा पर निकल गया था— सत्यवर्मा
- सुमन्त्र, सुमित्र, सुश्रुत और सुमति बड़े होकर मंत्री बने थे— राजहंस के
- मालव-नरेश था— मानसार
- मगध का राजा मानसार आक्रमण किया था— राजहंस पर
- युद्ध में राजहंस से परास्त हुआ था— मानसार
- मानसार को बन्दी बनाया था— राजहंस
- शिव की आराधना से मारक गदा प्राप्त किया था— मानसार
- राजहंस को युद्ध में हराया था— मानसार
- राजहंस को पुत्र प्राप्ति की बात बतायी थी— वामदेव ने
- 'वामदेव तपस्वी' की सेवा किया था— राजहंस
- मिथिला का राजा था— प्रहार वर्मा
- प्रहारवर्मा मित्र था— राजहंस का
- शबरसेना ने मार डाला था— प्रहार वर्मा को
- 'अवन्तिसुन्दरी' से विवाह किया था— राजवाहन
- 'दशकुमारचरितम्' का नायक है— राजवाहन
- भास्कर वर्मा की आयु थी— 8 वर्ष

- भास्कर वर्मा को पानी पिलाने के लिए पानी निकालते समय कुएँ में गिर गया था— नालीजंघा
- पुण्यवर्मा पुण्य कर्मों से कितने वर्ष की अवस्था को प्राप्त किये?— 100 वर्ष की
- प्रजा के पाप के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ था— पुण्यवर्मा
- अनन्तवर्मा को उपदेश देने वाला वृद्ध मन्त्री था— वसुरक्षित
- दुर्गुणों का आचार्य और काम शास्त्र में पारंगत था— बिहारभद्र
- कुमारावस्था से ही अनन्तवर्मा की सेवा में रहने वाला सेवक था— बिहारभद्र
- त्रयी, वार्ता, आन्वीक्षिकी और दण्डनीति चार विद्याओं का वर्णन है— 'दशकुमारचरितम्' में
- बिहारभद्र के अनुसार ज्ञान कर्म और उपासना का वैदिक ज्ञान प्राप्त होता है— त्रयी से
- गुप्तचरों अथवा अर्थशास्त्र का ज्ञान प्राप्त होता है— वार्ता से
- न्यायशास्त्र के ज्ञान की प्राप्ति होती है— आन्वीक्षिकी से
- राजनीति का ज्ञान प्राप्त होता है— दण्डनीति से
- व्यसन माने जाते हैं— सात
- अनन्त वर्मा को जुएँ की विशेषता बताता है— चन्द्रपालित
- अनन्तवर्मा से व्यसनों का वर्णन करता है— चन्द्रपालित
- कुन्तल का राजा था— आनन्द देव
- भोजवंशीय राजा था— पुण्यवर्मा
- विदर्भ देश का राजा था— पुण्यवर्मा
- पुण्यवर्मा का पुत्र था— अनन्तवर्मा
- अश्मक देश का राजा था— वसंतभानु
- अश्मक देश का मन्त्री था— चन्द्रपालित
- अनन्तवर्मा का पुत्र था— भास्कर वर्मा
- अनन्तवर्मा की हत्या की थी— वसंतभानु ने
- विदर्भ-राज्य पर अपना अधिकार कर लिया था— वसंतभानु
- अनन्तवर्मा की पत्नी का नाम था— वसुन्धरा

- भास्कर वर्मा की माता का नाम था— वसुन्धरा
- भास्कर वर्मा की बहन का नाम था— मंजुवादिनी
- विश्रुत की कथा में वर्णन है— विन्ध्यवासिनी देवी का
- रानी वसुन्धरा, भास्करवर्मा और मंजुवादिनी को लेकर कौन निकल जाता है?— वसुरक्षित
- ज्वर से रास्ते में मर जाता है— वसुरक्षित
- अनन्तवर्मा का सौतेला भाई था— मित्रवर्मा
- महिष्मती का शासक था— मित्रवर्मा
- मित्रवर्मा के यहाँ शरण ली थी— वसुन्धरा
- मित्रवर्मा द्वारा मंजुवादिनी का विवाह प्रचण्डवर्मा से करने की बात विश्रुत को ज्ञात हुई थी— वृद्ध से
- राजकुमार भास्करवर्मा की मृत्यु की अफवाह फैलाता है— विश्रुत
- प्रचण्डवर्मा का वध करता है— विश्रुत
- वसुन्धरा द्वारा विष के प्रयोग से मित्रवर्मा की हत्या करवाता है— विश्रुत
- कुशीलवेष धारण कर भरी सभा में वसन्त भानु का वध करता है— विश्रुत
- विदर्भ के सिंहासन पर भास्कर वर्मा को बैठाता है— विश्रुत
- विश्रुत का विवाह होता है— मंजुवादिनी से
- भास्कर वर्मा का मन्त्री था— आर्यकेतु
- आर्यकेतु को अपना सहायक बनाता है— विश्रुत
- वसुरक्षित मंत्री था— अनन्तवर्मा का
- वसन्त भानु का अमात्य था— इन्द्रपालित
- इन्द्रपालित का पुत्र था— चन्द्रपालित
- वसन्तभानु का सहयोगी वनवासी राजा था— भानुवर्मा
- महासामन्त कुन्तलपति का नाम था— अवन्तिदेव
- अनन्तवर्मा की पुत्री थी— मंजुवादिनी
- विश्रुतचरित में कुएँ में गिरने वाला भास्कर वर्मा का सहायक वृद्ध था— नालीजंघा
- वसुन्धरा की माता का नाम था— सागरदत्ता

- वसुन्धरा के पिता का नाम था— कुसुमधन्वा
- विश्रुत के पिता का नाम था— सुश्रुत
- विश्रुत के पितामह का नाम था— सिन्धुदत्त
- चण्डवर्मा का अनुज था— प्रचण्डवर्मा
- मित्रवर्मा का मन्त्री था— आर्यकेतु
- मुरल देश का अधिपति था— वीरसेन
- ऋचीक देश का अधिपति था— एकबीर
- काङ्कण का राजा था— कुमारगुप्त
- सासिक्य का स्वामी था— नागपाल
- सामन्तो को आपस में संघर्ष कराकर मार दिया— वसन्त भानु ने
- वन प्रदेश का राजा था— भानुवर्मा
- विश्रुत को भास्कर वर्मा की कहानी बताता है— वृद्ध नालीजंघा
- भास्कर वर्मा की बहन मंजुवादिनी की उम्र थी— 13 वर्ष
- भयंकर ज्वर से पीड़ित होकर अपना शरीर त्याग दिया था— वसुरक्षित
- नालीजंघा को भास्कर वर्मा को सुरक्षित स्थान पर ले जाने दिया था— वसुन्धरा ने
- पाटलिपुत्र के वैश्य वैश्रवण की पुत्री थी— सागरदत्ता
- कोसल देश का राजा था— कुसुमधन्वा
- भास्करवर्मा और विश्रुत ने वेषधारण किया था— अघोरी साधु का (कापालिक)
- नालीजंघा से वसुन्धरा के पास संदेश (योजना) पहुंचाता है— विश्रुत
- गायक का वेष धारण कर प्रचण्डवर्मा के समीप जाकर मनोरंजन करने लगा था— अघोरी साधु
- भास्कर वर्मा और विश्रुत घुसकर बैठे थे— छिद्र में
- भानुवर्मा को उकसाकर अनन्तवर्मा से लड़वाया था— वसन्तभानु ने



दशकुमार चरितम्

दशकुमारों का नाम एवं परिचय

1.	राजवाहन	:	मगधराज राजहंस का पुत्र
2.	सोमदत्त	:	राजहंस के मन्त्री सितवर्मा के छोटे पुत्र सत्यवर्मा का पुत्र
3.	पुष्पोद्भव	:	मन्त्री पद्मोद्भव के कनिष्ठ पुत्र रत्नोद्भव का पुत्र
4.	अपहारवर्मा	:	राजहंस के मित्र और मिथिला के सम्राट प्रहारवर्मा का पुत्र
5.	उपहारवर्मा	:	प्रहारवर्मा का दूसरा पुत्र
6.	अर्थपाल	:	राजहंस के मन्त्री धर्मपाल के छोटे पुत्र कामपाल का पुत्र
7.	प्रमति	:	सितवर्मा के ज्येष्ठ पुत्र सुमति की सन्तान
8.	मित्रगुप्त	:	धर्मपाल के ज्येष्ठ पुत्र सुमन्त्र का पुत्र
9.	मन्त्रगुप्त	:	धर्मपाल के मंझले पुत्र सुमित्र का पुत्र
10.	विश्रुत	:	पद्मोद्भव के ज्येष्ठ पुत्र



हर्षचरितम्

- बाणभट्ट की रचना है— हर्षचरितम्
- 'हर्षचरितम्' है— आख्यायिका
- बाणभट्ट की प्रारम्भिक रचना है— हर्षचरितम्
- 'हर्षचरितम्' विभक्त है— उच्छवासों में
- 'हर्षचरितम्' में कुल उच्छवास हैं— 8
- प्रारम्भिक तीन उच्छवासों में वर्णित है— बाण की आत्मकथा
- ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित है— हर्षचरितम्
- श्रीकण्ठ नामक देश का एक प्रदेश है— स्थाण्वीश्वर (थानेसर)
- स्थाण्वीश्वर का राजा था— पुष्पभूति
- शिव का बहुत बड़ा भक्त था— पुष्पभूति
- भैरवाचार्य नामक शिवभक्त से मुलाकात हुई थी— पुष्पभूति की
- भैरवाचार्य ने 'अट्टहास' नामक अद्भुत खड्ग भेट किया था— पुष्पभूति को
- भैरवाचार्य ने अपनी सिद्धि हेतु सहायता मांगी थी— पुष्पभूति से
- भैरवाचार्य का बाल सखा था— टिट्टिभ
- भैरवाचार्य का शिष्य था— कर्णताल
- राजा के अलावा भैरवाचार्य की सहायता हेतु अन्य थे— तीन
- कृष्णचतुर्दशी को अर्द्धरात्रि में राजा गया था— भैरवाचार्य की सहायता हेतु
- पृथ्वी को विदीर्ण करके निकला था— नागाधिपति
- नागाधिपति का नाम था— श्रीकण्ठ
- नागाधिपति का युद्ध हुआ था— पुष्पभूति से
- नागाधिपति का युद्ध में वध किया था— पुष्पभूति ने
- 'आचार्य' (भैरवाचार्य) के कार्य की सिद्धि का वर लक्ष्मी से मांगा था— पुष्पभूति ने

- हर्ष नाम के चक्रवर्ती राजा के जन्म का वरदान पुष्पभूति को दिया था— लक्ष्मी ने
- पुष्पभूति ने उत्पन्न किया था— हरिवंश को
- प्रभाकरवर्धन का वर्णन प्रारम्भ होता है— चतुर्थ उच्छवास में
- प्रभाकरवर्धन की पत्नी का नाम था— यशोमती
- प्रभाकरवर्धन की प्रथम सन्तान थी— राज्यवर्धन
- प्रभाकरवर्धन की द्वितीय सन्तान थी— हर्षवर्धन
- प्रभाकरवर्धन की तृतीय सन्तान थी— पुत्री राज्यश्री
- यशोमती के भाई का 8 वर्षीय पुत्र था— भंडि
- यशोमती का भाई अपने पुत्र भंडि को सौंपता है— प्रभाकरवर्धन को
- राज्यश्री के बन्दी बनाये जाने की घटना वर्णित है— षष्ठ उच्छवास में
- राज्यवर्धन द्वारा मालवनरेश पर आक्रमण की घटना वर्णित है— षष्ठ उच्छवास में
- हर्ष के दिग्विजय का विवरण प्राप्त होता है— सप्तम उच्छवास में
- राज्यश्री की पुनर्प्राप्ति होती है— अष्टम उच्छवास में
- राज्यवर्धन को हूणों पर आक्रमण का आदेश देता है— प्रभाकरवर्धन
- राज्यवर्धन द्वारा हूणों पर आक्रमण की घटना वर्णित है— पञ्चम उच्छवास में
- हर्षवर्धन का अग्रज था— राज्यवर्धन
- प्रभाकरवर्धन का लेखहारक सेवक है— कुरंगक
- प्रभाकरवर्धन का वैद्यकुमार है— सुषेण
- प्रभाकरवर्धन द्वारा पुत्रवत्पालित राजवैद्य था— रसायन
- प्रभाकरवर्धन के मृत्यु से पूर्व ही अग्निप्रवेश करता है— रसायन
- यशोमती की प्रतिहारी थी— वेला
- हर्षचरितम् के पञ्चम उच्छवास का नाम है— महाराजमरणवर्णनम्
- हर्षचरितम् के प्रथम उच्छवास का नाम है— वात्स्यायनवंशवर्णनम्
- हर्षचरितम् के द्वितीय उच्छवास का नाम है— हर्षचरितसंकेते (हर्षचरित का राजदर्शन)

- हर्षचरितम् के तृतीय उच्छवास का नाम है— हर्षचरित का राजवंश वर्णन
- हर्षचरितम् के चतुर्थ उच्छवास का नाम है— चक्रवर्तिजन्मवर्णनम्
- हर्षचरितम् के षष्ठ उच्छवास का नाम है— राजप्रतिज्ञावर्णनम्
- हर्षचरितम् के सप्तम उच्छवास का नाम है— छत्रलब्धि
- 'हर्षचरितम्' के मंगलाचरण में वर्णन किया गया है— शिव का
- 'हर्षचरितम्' का मंगलाचरण है— नमस्कारात्मक
- मौखरिवंशीय कान्यकुब्जनरेश था— अवन्तिवर्मा
- अवन्तिवर्मा का ज्येष्ठ पुत्र था— ग्रहवर्मा
- ग्रहवर्मा का विवाह हुआ था— राज्यश्री से
- राज्यश्री अपने पति के साथ विवाह के बाद गयी— कान्यकुब्ज
- राज्यवर्धन युवराज बनता है— पञ्चम उच्छवास में
- राज्यवर्धन द्वारा हूणों पर आक्रमण करते समय कुछ दूर साथ में गया था— हर्षवर्धन
- प्रभाकरवर्धन ने युवराज बनाकर हूणों पर विजय प्राप्ति के लिए भेजा था— राज्यवर्धन को
- 'नियतिर्विधाय पुंसां प्रथमं सुखमुपरि दारुणं दुःखम्' यह है— पञ्चम उच्छवास में
- राज्यवर्धन को युद्ध के लिए भेजा गया था— उत्तरापथ
- 'हर्ष' ने रात्रि के चतुर्थ प्रहर में देखा— स्वप्न
- 'हर्ष' वनाग्नि द्वारा जलाया जाता हुआ सिंह देखा था— स्वप्न में
- जलते हुए सिंह को देखकर सिंहनी को भी दावाग्नि में कूदते हुए स्वप्न में देखा था— हर्ष ने
- कुरंगनामक दूरगामी सन्देशवाहक को आते देखता है— हर्षवर्धन
- सन्देशवाहक द्वारा दिए पत्र को पढ़ता है— हर्षवर्धन
- प्रभाकरवर्धन पीड़ित थे— महान दाहज्वर से
- हर्षवर्धन के चलते समय बाईं ओर निकलते हुए मृगों ने विनाश की सूचना दी थी— सिंहो के

- कौआ सूर्याभिमुख होकर सूखे वृक्ष पर बैठकर काँव-काँव किसके निकलते समय करने लगा?— हर्षवर्धन के
- हर्षवर्धन राजधानी पहुँचता है— दूसरे दिन दोपहर को
- 'मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च' यह सूक्ति है— 'हर्षचरितम्' की
- 'मातापितृसहस्राणि पुत्रद्वारशतानि च' इसमें छन्द है— अनुष्टुप्
- प्रासाद के तीसरे आंगन में जाता है— हर्षवर्धन
- बीमार राजा प्रभाकरवर्धन शयन कर रहा था— धवलगृह में
- तीसरे आंगन में होता है— रनिवास
- प्रासाद में कक्षाएँ होती थी— तीन
- हर्ष के चारों समुद्रों का आधिपत्य हथेली पर रहने की बात कहता है— प्रभाकरवर्धन
- रसायन नामक वैद्य कुमार की आयु थी— 18 वर्ष
- रसायन अग्नि में प्रवेश करता है— पञ्चम उच्छवास में
- प्रभाकरवर्धन की मृत्यु होती है— पञ्चम उच्छवास में
- यशोमती सती होती है— पञ्चम उच्छवास में
- पैदल ही सरस्वती नदी के तट पर जाती है— यशोमती



कादम्बरी

- कादम्बरी के प्रणेता हैं— बाणभट्ट
- बाणभट्ट का वंश था— वात्स्यायन/ वत्स वंश
- बाणभट्ट का निवास स्थान था— प्रीतिकूट ग्राम
- सोन नदी के तट पर स्थित था— प्रीतिकूट ग्राम
- प्रीतिकूट ग्राम आज है— पीरू ग्राम के रूप में (औरंगाबाद जिले में, बिहार)
- सम्राट हर्ष के सभा पण्डित थे— बाणभट्ट
- बाणभट्ट के पितामह का नाम था— अर्थपति
- बाणभट्ट के पिता का नाम था— चित्रभानु
- बाणभट्ट की माता का नाम था— राजदेवी
- बाणभट्ट के पुत्र का नाम था— भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट)
- बाणभट्ट की बहन का नाम था— मालती
- बाणभट्ट उपासक थे— शिव के
- बाणभट्ट की रीति है— पाञ्चाली
- बाणभट्ट को 'महानयं भुजङ्गः' कहा है— हर्ष ने
- 'वाणी बाणो बभूव' यह कथन है— गोवर्धनाचार्य का
- 'तुरङ्गबाण' यह उपाधि है— बाणभट्ट की
- 'वश्यवाणी कविचक्रवर्ती' यह कथन है— हर्षवर्धन का
- 'पञ्चबाणस्तु बाणः' यह कथन है— जयदेव का (प्रसन्न राघव में)
- 'कविताकामिनी कौतुक' यह कथन है— जयदेव का
- 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' यह कहा गया है— बाणभट्ट को
- 'बाणस्तु पञ्चाननः' यह कथन है— चन्द्रदेव का
- संस्कृत गद्य— साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना है— कादम्बरी
- कादम्बरी है— कथा
- कादम्बरी का अर्थ है— मदिरा, सुरा

- कादम्बरी का मुख्य भाग है— शुकनासोपदेश
- बाणभट्ट की रचनाएँ— पाँच
  1. हर्षचरित 2. कादम्बरी 3. चण्डीशतक,
  4. पार्वती परिणयनाटक 5. मुकुटताडित
- कादम्बरी की कथा विभक्त है— दो भागों में
  1. पूर्वार्द्ध 2. उत्तरार्द्ध
- कादम्बरी का उपजीव्य है— बृहत्कथा का मकरन्दिकोपाख्यान
- बृहत्कथा के प्रणेता हैं— गुणाढ्य
- बृहत्कथा की भाषा है— पैशाची
- कादम्बरी के पूर्वार्द्ध भाग के रचयिता हैं— बाणभट्ट
- कादम्बरी के उत्तरार्द्ध भाग के रचयिता हैं— पुलिन्दभट्ट
- 'कादम्बरी' का नायक है— चन्द्रापीड
- कादम्बरी की नायिका है— कादम्बरी
- कादम्बरी का सहनायक था— वैशम्पायन
- कादम्बरी की सहनायिका थी— महाश्वेता
- तीन जन्मों की कथा वर्णित है— कादम्बरी में
- कादम्बरी मे किसके तीन जन्मों की कथा वर्णित है?— चन्द्रापीड एवं वैशम्पायन
- चन्द्रापीड का प्रथम जन्म था— चन्द्रमा का
- चन्द्रापीड का द्वितीय जन्म था— चन्द्रापीड का
- चन्द्रापीड का तृतीय जन्म था— शूद्रक का
- वैशम्पायन का पहला जन्म था— पुण्डरीक का
- वैशम्पायन का द्वितीय जन्म था— वैशम्पायन का
- वैशम्पायन का तृतीय जन्म था— शुक का
- 'कादम्बरी' के नायक की कोटि है— धीरोदात्त
- 'कादम्बरी' की नायिका का विवाह से पूर्व की कोटि थी— परकीया मुग्धा
- 'कादम्बरी' की नायिका का विवाह के बाद की कोटि थी— स्वकीया मध्या

- कादम्बरी का प्रधान रस है— शृंगार
- कादम्बरी में गुण हैं— माधुर्य
- कादम्बरी के मंगलाचरण में नमस्कार किया गया है— त्रिगुण स्वरूप अजन्मा परब्रह्म को
- 'रजोजुषे जन्मनि सत्ववृत्तये स्थितौ......' यह है— मंगलाचरण
- रजोगुण सम्पन्न कहा गया है— ब्रह्मा को
- सत्त्वगुण सम्पन्न कहा गया है— विष्णु को
- तमोगुण सम्पन्न कहा गया है— शिव को
- कादम्बरी का मंगलाचरण है— नमस्कारात्मक
- कादम्बरी के मंगलाचरण में छन्द हैं— वंशस्थ
- भगवान शिव के चरण रज की स्तुति की गयी है— कादम्बरी के श्लोक में
- बाण ने अपने गुरु भर्वु (भत्सु) के चरणों की वन्दना किया है— तृतीय श्लोक में
- बाण ने कादम्बरी कथा की प्रशंसा किस श्लोक में की है— 8 एवं 9 में
- राजा शूद्रक के प्रभाव गुणों और वैभव के वर्णन से आरम्भ होती है— कादम्बरी कथा
- शूद्रक की राजधानी थी— विदिशा
- विदिशा का राजा था— शूद्रक
- राजा के सभामण्डप में आती है— चाण्डाल कन्या
- वैशम्पायन नामक शुक लेकर आयी थी— चाण्डाल कन्या
- शुक के गुणों का वर्णन करता है— वृद्ध
- शुक ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया था— शूद्रक को
- राजा शूद्रक का प्रधानमंत्री था— कुमारपालित
- अपना दक्षिण चरण उठाकर राजा की प्रशंसा में आर्या छन्द पढ़ता है— शुक
- शुक अपने जन्म की कथा किसके सामने सुनाता है?— शूद्रक के
- शुक ने राजा को नमस्कार किया था— आर्या छन्द में

- 'स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः' यह कथन है— शुक का
- 'चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्' यह कथन है— शुक का
- वैशम्पायन एवं उसके माता पिता का निवास स्थान था— शाल्मली (सेमर) वृक्ष
- वैशम्पायन के जन्म के अनन्तर मृत्यु हुई थी— वैशम्पायन की माता का
- महर्षि जाबलि का पुत्र था— हारीत
- वैशम्पायन को जाबालि के आश्रम में लाया था— हारीत
- वैशम्पायन के दुष्कर्म की कथा का वर्णन किया था— जाबालि ने (रात्रि में)
- वैशम्पायन कितनी श्रुतियों का वेत्ता था?— 22
- चाण्डाल कन्या (मातङ्गिनी) आयी थी— दक्षिणापथ से
- सभा विसर्जन के बाद शूद्रक गया था— व्यायामस्थली में
- वात्स्यायन नामक वंश में पैदा हुए थे— कुबेर
- 'त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा' यह विशेषता किसके लिए प्रयुक्त है?— विदिशा के लिए
- शूद्रक ने स्नान करके पूजा किया था— पशुपति शंकर की
- अवन्ति देश की राजधानी थी— उज्जयिनी
- उज्जयिनी का राजा था— तारापीड
- तारापीड की पत्नी का नाम था— विलासवती
- शुकनास नामक प्रधानमंत्री था— तारापीड का
- चतुर्दशी का व्रत कर विलासवती दर्शन करने गई थी— महाकाल का
- विलासवती किसकी आज्ञा से व्रताचरण करने लगी?— तारापीड की
- रात में अपने स्वप्न में विलासवती के मुख में चन्द्रमा को प्रवेश करते देखा था— तारापीड ने
- शुकनास की पत्नी का नाम था— मनोरमा

- स्वप्न में ब्राह्मण को मनोरमा की गोद में खिले कमल को रखते हुए देखा था— शुकनास ने
- तारापीड ने अपने पुत्र का नाम रखा था— चन्द्रापीड
- शुकनास ने अपने पुत्र का नाम रखा था— वैशम्पायन
- 'कूलूतदेश' के राजा की पुत्री थी— पत्रलेखा
- उज्जयिनी नरेश के पुत्र तारापीड एवं शुकनास के पुत्र वैशम्पायन की कथा का वर्णन करते हैं— जाबालि
- चन्द्रापीड के घोड़े का नाम था— इन्द्रायुध
- इन्द्रायुध पूर्व जन्म में था— कपिञ्जल
- चन्द्रापीड की सेविका थी— पत्रलेखा
- पत्रलेखा पूर्व जन्म में थी— रोहिणी
- पुण्डरीक का मित्र था— कपिञ्जल
- चाण्डाल कन्या पूर्व जन्म में माता थी— पुण्डरीक की
- चाण्डाल कन्या का पूर्वजन्म में नाम था— लक्ष्मी
- पुण्डरीक के पिता का नाम था— श्वेतकेतु
- शूद्रक की राजधानी विदिशा किस नदी के किनारे थी?— वेत्रवती (वेतवा) नदी के
- शूद्रक क्या बजाने में निपुण था?— मृदंग
- 'रजनिकरगभस्तयः' में 'गभस्तयः' पद का अर्थ है— किरणें
- शाल्मली वृक्ष का वर्णन है— कादम्बरी कथामुख में
- अच्छोद सरोवर में स्नान किया था— चन्द्रापीड ने
- इन्द्रायुध अश्व का सजीव वर्णन करने के कारण बाणभट्ट को कहा गया— तुरङ्गबाण
- अप्सराओं के कितने 'कुल' कहे गए हैं— 14
- दक्षराज की कन्या थी— मुनि और अरिष्टा
- गन्धर्वों ने समागम किया था— मुनि और अरिष्टा से
- मुनि के गर्भ से जन्म हुआ था— चित्ररथ का
- अरिष्टा के गर्भ से जन्म हुआ था— हंस का
- गन्धर्वराज हंस का विवाह हुआ था— गौरी से

- 'सोममयूखोत्पन्न' कुल में जन्म हुआ था— गौरी का
- हंस और गौरी की पुत्री थी— महाश्वेता
- पुण्डरीक के कान पर लगी पारिजात की कुसुम-मञ्जरी से आकर्षित होती है— महाश्वेता
- नन्दनवन के देवता द्वारा पारिजात मञ्जरी भेंट की गयी थी— पुण्डरीक को
- महाश्वेता की सहचरी थी— तरलिका
- गन्धर्वराज चित्ररथ की पुत्री थी— कादम्बरी
- कादम्बरी का वीणावाहक अनुचर था— केयूरक
- कादम्बरी की सहचरी थी— मदलेखा
- कादम्बरी की माता का नाम था— मदिरा
- गन्धर्वराज चित्ररथ का निवास स्थान था— हेमकूट पर्वत
- अच्छोद सरोवर का निर्माण करवाया था— चित्ररथ ने
- तम्बरू भाई था— हंस का
- चन्द्रवंशोत्पन्न थी— गौरी
- प्रियंगु-मञ्जरी होती है— गौरवर्ण की
- आर्याछन्दोबद्ध प्रेम पत्र लिखने वाला था— पुण्डरीक
- कादम्बरी का उल्लेख हुआ है— कथा के मध्य में
- कादम्बरी की प्रणयकथा का आधार कहा जा सकता है— महाश्वेता की प्रणयकथा को
- कादम्बरी एवं चन्द्रापीड के पुनर्मिलन से अन्त होता है— कादम्बरी कथा का
- कादम्बरी के कथामुख के प्रारम्भ में किस राजा का वर्णन है?— शूद्रक का
- यह सारा जगत किस कवि का उच्छिष्ट माना जाता है?— बाणभट्ट का
- 'भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्' यहाँ 'भवादृशा' पद से किसका संकेत है?— चन्द्रापीड का

✦✦✦

शुकनासोपदेश

- राज्याभिषेक के अवसर पर चन्द्रापीड को उपदेश दिया था— शुकनास ने
- शुकनास चन्द्रापीड के लिए कौन सा सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं?— 'तात'
- किसके अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से नहीं भेदा जा सकता है?— शुकनास के
- लक्ष्मी से उत्पन्न मद होता है— दु:ख देने वाला
- किसकी दाहज्वर को शीतल उपचारों से ठीक नहीं किया जा सकता?— दर्प (अभिमान) की
- किसका मल, स्नान एवं शौच आदि कार्यों से भी दूर नहीं होता है?— राग का
- 'अनर्थ' की परम्पराएँ हैं— चार
- जन्म से प्राप्त ऐश्वर्य को शुकनास ने कहा है— अनर्थकारी
- नयी युवावस्था को शुकनास ने कहा है— अनर्थकारी
- अनुपम सौन्दर्य को शुकनास ने कहा है— अनर्थकारी
- अलौकिक शक्ति को शुकनास ने कहा है— अनर्थकारी
- युवावस्था के आरम्भ में किस जल के प्रक्षालन के बाद भी बुद्धि कलुषता को प्राप्त करती है?— शास्त्रजल के
- किसको त्यागे बिना भी युवकों की दृष्टि लालिमा (राग) से युक्त रहती है?— श्वेतता के
- किससे उत्पन्न भ्रान्ति पुरुष को अपनी इच्छा से घुमाती है?— रजोगुण से
- इन्द्रियहरिणो को नष्ट कर देती है— उपभोगमृगतृष्णा
- विषयों में आसक्ति, दिग्भ्रमित व्यक्ति की तरह नष्ट कर देती है— पुरुष को
- चन्द्रमा की किरणें किस मणि में सरलता से प्रविष्ट होती है?— स्फटिक मणि में
- निर्मल हृदय में सरलता से प्रवेश करता है— उपदेश

- शिष्ट व्यक्ति की शोभा को हाथी के शंखाभूषण की तरह बढ़ा देते हैं— गुरुपदेश
- प्रदोष के चन्द्रमा के समान दोषरूपी अन्धकार को दूर करता है— गुरुवचन
- शुकनास सर्वप्रथम किसके विषय में चन्द्रापीड को उपदेश देते हैं?— लक्ष्मी के
- लक्ष्मी के चरित्र का प्रमुखता से चित्रण किया गया है— शुकनासोपदेश में
- दुष्टा, पिशाची, अनार्या, दुराचारिणी आदि पदों का प्रयोग किया गया है— लक्ष्मी के लिए
- 'यथा यथा चेयं चपला दीप्यते' यहाँ 'चपला' पद का संकेत किया गया है— लक्ष्मी के लिए
- 'इषव:' पद का अर्थ है— शूर (बाण, तीर)
- 'कुलीरा: इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति' यहाँ 'कुलीर' पद का अर्थ है— केकड़ा
- 'खद्योत' पद का अर्थ है— जुगनू
- 'राहुजिह्वा धमेन्दुमण्डलस्य' यहाँ 'राहुजिह्वा' पद प्रयुक्त है— लक्ष्मी के लिए
- 'आशीविषा:' पद का अर्थ है— सर्प
- लक्ष्मी पैदा हुई थी— क्षीर सागर में
- लक्ष्मी ने पारिजात के पल्लवों से ग्रहण किया था— अनुराग
- लक्ष्मी 'कर्कशता' ग्रहण करती है— कौस्तुभमणि से
- पुरुषों में स्थित समस्तदोषों को गुणरूप में परिणत कर देते हैं— गुरुपदेश
- 'विदितवेदितव्यस्य अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति' यहाँ 'अधीतसर्वशास्त्रस्य' पद प्रयुक्त किया गया है— चन्द्रापीड के लिए
- 'निम्नगा' पद का अर्थ है— नदी
- 'अमृतसहोदरापि कटुविपाका' है— लक्ष्मी
- महाकवि मयूरभट्ट की बहन से विवाह हुआ था— बाणभट्ट का।



महाश्वेता— वृत्तान्त

- महाश्वेता के आराध्यदेव भगवान शिव की प्रतिमा थी— चतुर्मुखी
- अमृत के समान ही सभी इन्द्रियों को सुखमग्न करने में समर्थ था— सरोवर का जल
- चन्द्रापीड किस किनारे पर पहुँच कर घोड़े से उतरा था?— दक्षिणी किनारे पर
- चन्द्रापीड किसके समान सरोवर से जलपान किया?— चातक के
- चन्द्रापीड किसके समान मृणाल-खण्डों का स्वाद लिया?— चकवे के
- चन्द्रापीड किसके समान अपने करों से कुमुद पुष्पों का स्पर्श किया?— चन्द्रमा के
- चन्द्रापीड विश्राम के समय सरोवर के किस किनारे से आती हुई गीत ध्वनि सुनी थी?— उत्तरी किनारे से
- कैलाश की तलहटी के किस स्थान में स्थित शिव का सिद्ध मन्दिर चन्द्रापीड ने देखा था?— चन्द्रप्रभ में
- श्वेतमुक्ताशैल से निर्मित मन्दिर था— शिव का
- महाश्वेता कितने वर्ष की प्रतीत हो रही थी— 18 वर्ष की
- शिवालय से कितने पद की दूरी पर महाश्वेता का निवास स्थान था?— 100
- महाश्वेता का बिछौना था— बल्कट का
- चन्द्रापीड से उसका वृत्तान्त पूछा था— महाश्वेता ने
- अप्सराओं का पहला कुल उत्पन्न हुआ था— ब्रह्मा से
- अप्सराओं का दूसरा कुल उत्पन्न हुआ था— वेदों से
- अप्सराओं का तीसरा कुल उत्पन्न हुआ था— अग्नि से
- अप्सराओं का चौथा कुल उत्पन्न हुआ था— वायु से
- अप्सराओं का पाँचवां कुल उत्पन्न हुआ था— अमृत से
- अप्सराओं का छठवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— जल से

- अप्सराओं का सातवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— सूर्य से
- अप्सराओं का आठवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— चन्द्रमा की किरणों से
- अप्सराओं का नवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— पृथ्वी से
- अप्सराओं का दसवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— विद्युत से
- अप्सराओं का ग्यारहवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— मृत्यु से
- अप्सराओं का बारहवाँ कुल उत्पन्न हुआ था— कामदेव से
- प्रजापति दक्ष की कन्या थी— मुनि और अरिष्टा
- मुनि और अरिष्टा का गन्धर्वों के साथ समागम से उत्पन्न हुआ था— दो कुल
- अप्सराओं की उत्पत्ति का वर्णन किया था— महाश्वेता ने
- अप्सराओं के सब मिलाकर कुल थे— 14
- मुनि की कुल कितनी सन्तानें थीं— 16
- मुनि का सोलहवां पुत्र था— चित्रसेन
- चित्रसेन के कुल भाई थे— 15
- पराक्रम एवं गुणों में सर्वश्रेष्ठ गन्धर्व था— चित्ररथ
- इन्द्र ने अपना मित्र बनाया था— चित्ररथ को
- भारतवर्ष के उत्तर में किंपुरुषवर्ष का हेमकूट नामक हर्ष-पर्वत निवास स्थान था— चित्ररथ और हंस का
- अच्छोद सरोवर को खुदवाया था— चित्ररथ ने
- चित्ररथ नामक वन का निर्माण करवाया था— चित्ररथ ने
- भगवान शंकर के शिवलिंग को बनवाकर स्थापित किया था— चित्ररथ ने
- अरिष्टा के कुल पुत्र थे— 6
- अरिष्टा के 6 पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र था— हंस
- जगत्प्रसिद्ध गन्धर्व हुआ था— हंस
- चन्द्रमा की किरणों से उत्पन्न अप्सराओं के कुल में दो कन्याएँ उत्पन्न हुई— श्वेतांगी और गौरी

- अपनी माता के साथ महाश्वेता स्नान करने गयी थी— अच्छोद सरोवर में
- महाश्वेता सरोवर में स्नान करने किस ऋतु में गयी थी?— वसन्त
- कामदेव का मित्र है— वसन्त
- श्वेतकमल से जन्म हुआ था— पुण्डरीक का
- पुण्डरीक के पिता का नाम था— श्वेतकेतु
- पुण्डरीक के बारे में पूँछती हैं— महाश्वेता
- पुण्डरीक के बारे में महाश्वेता को बताता है— कपिञ्जल
- मञ्जरी को अपने कानों से उतार कर महाश्वेता के कानों में पहनाया था— पुण्डरीक ने
- राजमहल का वह भाग जहाँ राजकुमारियाँ रहती थी— कन्यान्तःपुर
- महाश्वेता के साथ स्नान करने गयी थी— तरलिका
- गन्धर्वों का निवास स्थान था— हेमकूट
- तमालवृक्ष के पत्तो का रस निचोड़कर वल्कल के दुपट्टे की पट्टी पर चिट्ठी लिखा था— कपिञ्जल
- कपिञ्जल चिट्ठी देता है— तरलिका को
- महाश्वेता के लिए तरलिका से पत्र भेजता है— कपिञ्जल
- कपिञ्जल द्वारा लिखा गया पत्र निबद्ध था— आर्या छन्द में
- 'दूरं मुक्तालतया बिससितया विप्रलोभ्यमानो मे।
- हंस इव दर्शिताशो मानसजन्मा त्वया नीतः।। यह कथन है— कपिञ्जल का
- महाश्वेता से पुण्डरीक की माला लेने आया था— कपिञ्जल
- पुण्डरीक की चिन्तनीय दशा का वर्णन महाश्वेता से करता है— कपिञ्जल
- कपिञ्जल माला लेने गया था— सायंकाल में
- रूप का मित्र है— यौवन
- यौवन का मित्र है— कामदेव
- वसन्त का मित्र है— दक्षिण वायु (मलयानिल)

- महाश्वेता किससे मन्त्रणा कर प्रमद-वन की ओर पुण्डरीक से मिलने गयी?— तरलिका से
- स्वर्ग से उतरा महापुरुष किसके शरीर को उठाकर ले जाता है?— पुण्डरीक के
- मृत पुण्डरीक के साथ जाता है— कपिञ्जल
- महाश्वेता को प्राण न त्यागने की बात कहता है— महापुरुष
- पुण्डरीक के साथ महाश्वेता के मिलन की बात कहता है— महापुरुष
- 'अमृतवंश' था— मदिरा का
- महाश्वेता का शोक वृत्तान्त सुनकर विवाह न करने की प्रतिज्ञा की थी— कादम्बरी
- कुन्ती के वंश का नाम था— वृष्णिवंश
- अर्जुन को युद्ध में मार देने वाले पुत्र का नाम था— वभ्रुवाहन
- अर्जुन को जीवित करने वाली उनकी पत्नी का नाम था— नागकन्या उलूपी
- 'कामपीड़ा' में दिवंगत हो गया था— पुण्डरीक
- चन्द्रापीड पिता के बुलाने पर आता है— उज्जयिनी
- 'न परिचयं रक्षति, नाभीजनमीक्षते' यहाँ वर्णन है— लक्ष्मी का



शुकनासोपदेश की प्रमुख सूक्तियाँ

1. अकारणश्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य।
2. 'अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च'।
3. कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्यम् ऐश्वर्यतिमिरान्धत्वम्
4. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।
5. सततममूलमन्त्रशम्यः विषमो विषयविषास्वादमोहः।
6. अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि।
7. अशिशिरोपचारहर्योऽतितीव्रः दर्पदाहज्वरोष्मा।
8. नित्यमस्नानशौचबाध्यः बलवान् रागमलावलेपः।
9. अहंकार-दाहज्वर-मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः।
10. आरूढप्रतापो हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति।
11. इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयम्-उपभोगमृगतृष्णिकाः।
12. कनकमयमिव सर्वं पश्यन्ति तृष्णाविषमूर्च्छिता राजानः।
13. कुसुमशर-शरप्रहारजर्जरिते हि हृदये जलमिव गलत्युपदिष्टम्।
14. गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति।
15. गुरुवचनममलमपि सलिलमिव।
16. तरलहृदयमप्रतिबुद्धश्च मदयन्ति धनानि।
17. प्रतिशब्दक इव राजव चनमनुगच्छति जनो भयात्।
18. यौवनारम्भे अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः।
19. यौवनारम्भे प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः।
20. राज्यविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।
21. लतेव लक्ष्मीः विटपकानध्यारोहति।
22. अतिगहनं तमो यौवन प्रभवम्।



कादम्बरी के पात्र

शूद्रक – विदिशा का राजा, चन्द्रापीड का अवतार
कुमारपालित – शूद्रक का प्रधानामात्य
जाबालि – कथा कहने वाले महर्षि
हारीत – जाबालि का पुत्र
चन्द्रापीड – प्रधान नायक
तारापीड – चन्द्रापीड के पिता, उज्जयिनी के राजा
शुकनास – तारापीड का मंत्री
बलाहक – तारापीड का बलाधिकृत
मेघनाद – बलाहक का पुत्र चन्द्रापीड का महाबलाधिकृत
कैलास – अन्तःपुर का प्रधान कंचुकी
मंगल – शुकनास का भृत्य
जालपाद – जाबालि का शिष्य
पुण्डरीक – महर्षि श्वेतकेतु का पुत्र और महाश्वेता का प्रेमी
कपिञ्जल – पुण्डरीक का सखा
श्वेतकेतु – पुण्डरीक के पिता
हंस ‘ महाश्वेता के पिता
चित्ररथ – कादम्बरी के पिता
केयूरक – कादम्बरी का वीणा वाहक
क्षोरोद – चित्ररथ का कञ्चुकी
मातङ्गक – शबर सेनापति
वैशम्पायन – शुकशावक, पुण्डरीक का अवतार

इन्द्रायुध	-	चन्द्रापीड का घोड़ा, कपिञ्जल का अवतार
गन्धमादन	-	चन्द्रापीड का राजकुंजर
कालिन्दी	-	कादम्बरी की सारिका
परिहास	-	कादम्बरी का शुक, कालिन्दी का पति
कादम्बरी	-	नायिका
मदिरा	-	चित्ररथ की पत्नी, कादम्बरी की माता
गौरी	-	महाश्वेता की माता, हंस की पत्नी
मदलेखा	-	कादम्बरी की प्रधान सखी
तमालिका	-	कादम्बरी की सखी
तरलिका	-	महाश्वेता की ताम्बूल-करंक वाहिनी
पत्रलेखा	-	चन्द्रापीड की प्रियसखी
विलासवती	-	तारापीड की पत्नी, चन्द्रापीड की माता
मनोरमा	-	शुकनास की पत्नी
मकरिका	-	विलासवती की तांबूलकरंक वाहिनी
कुलवर्धना	-	विलासपती के अन्तःपुर की महत्तरिका
चाण्डालकन्या	-	पुण्डरीक की माता, लक्ष्मी का अवतार।

✦✦✦

शिवराजविजय

- अम्बिकादत्तव्यास के पितामह का नाम था— पं. राजाराम
- अम्बिकादत्तव्यास के पिता का नाम था— दुर्गादत्त
- अम्बिकादत्तव्यास के चाचा का नाम था— देवीदत्त
- अम्बिकादत्तव्यास के पुत्र का नाम है— राधाकुमार
- अम्बिकादत्तव्यास का गोत्र है— पाराशर
- अम्बिकादत्तव्यास का जन्म स्थान है— राजस्थान, जिला-जयपुर ग्राम रावत जी का झूला, मुहल्ला सिलावटी
- अम्बिकादत्तव्यास का जन्म समय था— चैत्र शु. अष्टमी संवत 1915 (1858ई.)
- अम्बिकादत्तव्यास की मृत्यु हुई थी— मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार संवत 1957 (1900 ई.)
- काशी में अध्ययन अध्यापन किया था— अम्बिकादत्तव्यास ने
- अम्बिकादत्तव्यास की कुल रचनाएँ लगभग हैं— 78
- अम्बिकादत्तव्यास की हिन्दी रचना है— बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
- 'पीयूष प्रवाह' पत्रिका का सम्पादन किया था— अम्बिकादत्तव्यास ने
- 'ब्रह्मामृतवर्षिणी' सभा द्वारा अम्बिकादत्तव्यास को उपाधि दी गयी थी— घटिकाशतक की
- 24 मिनट में एक सौ पद्य की रचना करने के कारण उपाधि दी गयी थी— घटिकाशतक की
- 'शतावधान' की उपाधि दी गयी थी— अम्बिकादत्तव्यास को
- काशी की महासभा द्वारा 'भारतरत्न' की उपाधि दी गयी थी— अम्बिकादत्तव्यास को

- ‘अभिनवबाण/ आधुनिकवाण’ की उपाधि दी गयी थी— अम्बिकादत्तव्यास को
- ‘भारतभूषण’ की उपाधि दी गयी थी— अम्बिकादत्तव्यास को
- ‘महाकवि’ की उपाधि दी गयी थी— अम्बिकादत्तव्यास को
- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता थे— अम्बिकादत्तव्यास
- अम्बिकादत्तव्यास ने अपना जीवन-परिचय लिखा है— ‘बिहारी- विहार’ में
- कितने वर्ष की अवस्था में अम्बिकादत्त ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था?— 12 वर्ष की
- बिहार में ‘संस्कृत-संजीवनी समाज’ की स्थापना की थी— अम्बिकादत्त व्यास ने
- अम्बिकादत्तव्यास ने कितने वर्ष की अवस्था में काव्य रचना आरम्भ कर दिया था?— 10 वर्ष की
- ‘शिवराजविजयम्’ की रचना अम्बिकादत्त ने की थी— 1870ई. में
- ‘शिवराजविजयम्’ को अम्बिकादत्त की मृत्यु के बाद कब प्रकाशित किया गया था?— 1901 ई. में
- अम्बिकादत्तव्यास का विवाह हुआ था— 13 वर्ष में
- अम्बिकादत्तव्यास की मृत्यु हुई थी— संवत 1957 (1900 ई.) में
- ‘विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्’ यह मङ्गलाचरण है— शिवराजविजय का
- शिवराजविजय का मङ्गलाचरण लिया गया है— भागवतपुराण के दशम स्कन्ध से
- विष्णु की माया को ऐश्वर्यशालिनी बताया गया है— मङ्गलाचरण में
- ‘शिवराजविजय’ का कथानक विभक्त है— तीन विरामों में
- ‘प्रत्येक विराम में हैं— चार निःश्वास
- शिवराजविजय में कुल निःश्वास हैं— 12
- नमस्कारात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है— शिवराजविजय का

- ‘शिवराजविजयम्’ में रस है— वीर
- प्रातःकाल एवं सूर्य भगवान के वर्णन से आरम्भ होता है— शिवराजविजय
- ‘शिवराजविजयम्’ के नायक हैं— शिवाजी
- शिवाजी के काल में आश्रम बने थे— दो-2 कोस पर
- मुसलमानों की गतिविधियों पर नजर रखते थे— आश्रम
- गौरबटु की उम्र लगभग थी— 16 वर्ष
- गौरबटु का भाई (साथी) था— श्यामबटु
- बीजापुर दरबार ने शिवाजी से युद्ध के लिए भेजा था— अफजल खाँ को
- अफजल खाँ किस नदी के तट पर शिविर डाला था?— भीमा नदी
- बीजापुर के शासक ‘सन्धि’ के धोखे से पकड़ना चाहते थे— शिवाजी को
- बीजापुर दरबार का पत्र ले जाते समय यवन गुप्तचर ने अपहरण किया था— ब्राह्मण कन्या का
- भालू के आ जाने पर यवन युवक कन्या को छोड़कर चढ़ता है— शाल्मली वृक्ष पर
- ब्रह्मचारी गुरु के शिष्य थे— गौरसिंह और श्यामसिंह
- गौरसिंह और श्यामसिंह द्वारा बचायी गयी थी— ब्राह्मण कन्या
- यवन गुप्तचर मारा गया— गौरसिंह द्वारा
- बीजापुर का गुप्त सन्देश यवन के वस्त्रों से प्राप्त हुआ था— गौरसिंह को
- गुप्तसन्देश का पता चल जाता है— शिवाजी को
- अफजलखाँ को छलने की योजना बनाते हैं— शिवाजी
- बीजापुर से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गए थे— पं. गोपीनाथ
- पं. गोपीनाथ द्वारा प्रतापदुर्ग की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का प्रबन्ध किया था— शिवाजी ने

- गायक के वेष में अफजलखाँ के शिविर में जाकर भेद लिया था—गौरसिंह
- कपड़ों के अन्दर कवच और हाथों में 'बाघनख' नामक हथियार पहनकर अफजलखाँ से मिलने गए थे—शिवाजी
- आलिंगन के समय अफजल खाँ के कन्धों एवं गर्दन को फाड़कर मार डाला था—शिवाजी ने
- ब्राह्मण कन्या का संरक्षक था—एक वृद्ध ब्राह्मण
- ब्राह्मण कन्या गौरसिंह और श्यामसिंह की थी—बहन
- वृद्ध ब्राह्मण गौरसिंह और श्यामसिंह का था—पुरोहित देवशर्मा
- ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध पर अपना वृत्तान्त सुनाया था—गौरसिंह
- उदयपुर के जागीरदार खड्गसिंह की पुत्री थी—सौवर्णी
- उदयपुर के जागीरदार खड्गसिंह के पुत्र थे—गौरसिंह और श्यामसिंह
- 'पूना' पर अधिकार कर लिया था—'शाइस्ता खाँ'
- शिवाजी ने अपना संदेश रघुवीर सिंह द्वारा भेजा था—तोरण दुर्ग के अध्यक्ष के पास
- तोरणदुर्ग के अध्यक्ष की आज्ञा से हनुमान मंदिर में ठहरा था—रघुवीर सिंह
- पुरोहित 'देवशर्मा' सौवर्णी को लेकर रहता था—हनुमान मन्दिर में
- रघुवीर सिंह सौवर्णी को देखता है—वाटिका में
- रघुवीर सिंह को शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध का भविष्य पूछने को देवशर्मा के पास भेजा था—शिवाजी ने
- देवशर्मा ने यवनों के साथ युद्ध में विजय का भविष्य बताता है—रघुवीर सिंह को
- देवशर्मा ने आर्यों के साथ युद्ध में पराजय का भविष्य बताता है—रघुवीर सिंह को
- पंडित के वेश में 'माल्यश्रीक' के साथ 'शाइस्ता खाँ' के निवास पूना जाकर निरीक्षण किया था—शिवाजी ने

- शिवाजी का पीछा सन्देह के कारण करता है—चाँद खाँ
- शिवाजी ने वध किया—चाँद खाँ का
- बारात के बहाने पूना में प्रवेश करते हैं—शिवाजी
- चाँद खाँ और शाइस्ता खाँ के पुत्र मारे गए थे—रघुवीर सिंह द्वारा
- घायल उंगली के साथ भाग गया था—शाइस्ता खाँ
- औरंगजेब की पुत्री 'रोशनआरा' को गिरफ्तार किया था—रघुवीर सिंह ने
- गौरसिंह से अपने पुत्र 'वीरेन्द्र सिंह' का वृत्तान्त बताता है—ब्रह्मचारी गुरु
- सौवर्णी ने क्रूरसिंह द्वारा किए जाने वाले अपमान की बात बताती है—रघुवीर सिंह को
- शिवाजी के प्रति प्रेम प्रकट करती है—रोशनआरा
- शिवाजी ने पिता द्वारा दिए जाने पर ही स्वीकार करने की बात कही थी—रोशनआरा से
- जयसिंह से सन्धि करने पर विवश हुए थे—शिवाजी
- 'सन्धि में शिवाजी को वापस करना पड़ा था—रोशनआरा और मुअज्जम को
- 'बीजापुर' किले को रघुवीर सिंह की सहायता से जीता था—शिवाजी ने
- रहमतखाँ और क्रूरसिंह द्वारा राजद्रोही बताये जाने पर शिवाजी निष्कासित करता है—रघुवीर सिंह को
- 'राघवस्वामी' का वेशधारण कर शिवाजी का उपकार करता रहा—रघुवीर सिंह
- क्रूरसिंह का वध करता है—रघुवीर सिंह
- जयसिंह की सन्धि के अनुसार औरंगजेब के दरबार दिल्ली में उपस्थित होता है—शिवाजी
- औरंगजेब के दरबार में जाते हुए शिवाजी को रोकता है—रघुवीर सिंह
- शिवाजी को नजरबन्द करवाता है—औरंगजेब

- औरंगजेब की कैद से शिवाजी किसकी सहायता से भागने में सफल होते हैं?— रघुवीर सिंह के
- 'मण्डलेश्वर' पद प्रदान किया गया था— रघुवीर सिंह को
- सौवर्णी के साथ विवाह होता है— रघुवीर सिंह का
- 'सतारा नगर' को राजधानी बनाकर रहने लगे थे— शिवाजी
- कुटिया के चारों ओर थी— पुष्पवाटिका
- कुटिया के पूर्व दिशा में था— तालाब
- कुटिया के दक्षिण में स्थित पर्वत की कंदरा में समाधिरत थे— एक महामुनि
- ग्राम-प्रधान और ग्रामीण पूजा करते थे— महामुनि की
- महामुनि (योगिराज) को सर्वप्रथम शिखर से नीचे उतरते समय देखा था— गौर और श्यामबटु ने
- आश्रम में आकर काष्ठासन पर, उदयाचल पर सूर्य के समान आसीन हुए थे— योगिराज
- 'विक्रमराज्य में ऐसा उपद्रव' यह बात कही थी— योगिराज ने
- विक्रमादित्य के राज्य को बीते तो 'सत्रह सौ वर्ष' हो गए हैं, यह बात योगिराज को बतायी थी— ब्रह्मचारी गुरु ने
- विक्रमादित्य द्वारा शकों को जीते जाने को कल की बात बताते हैं— योगिराज
- युधिष्ठिर के समय समाधि लगायी थी— योगिराज ने
- युधिष्ठिर के समय समाधि लगाकर विक्रमादित्य के समय में उठे थे— योगिराज
- विक्रमादित्य के समय में समाधि लगाकर इस दुराचार समय में उठने की बात बताते हैं— योगिराज
- 'महमूद गजनवी' के भारत को बारह बार लूटने की बात योगिराज को बताते हैं— ब्रह्मचारी गुरु
- 'सोमनाथ' स्थित है— गुजरात में

- 'सोमनाथ' को धूल में मिलाया था— महमूद गजनबी ने
- किसकी किवाड़ें मूंगा, हीरे और मोतियों से बनी थीं?— सोमनाथ की
- 'सोमनाथ' में दो सौ मन सोने की जंजीर में लटकता था— महाघण्टा
- महादेव की मूर्ति पर गदा चलाने से रोकने के लिए महमूद गजनवी को कितने स्वर्ण मुद्राएँ देना चाहते थे?— 2 करोड़
- सिंधु नदी उतरकर 'गजिनी' वापस चला गया था— महमूद गजनबी
- 'गोर देश' निवासी शहाबुद्दीन ने आक्रमण किया था— भारत पर
- सं.1250 में दिल्ली को अश्वारोहियों से घेर लिया था— शहाबुद्दीन
- 'वाराणसी' पर राज्य किया था— शहाबुद्दीन ने
- भारत में यवन शासन का बीजारोपण मुख्यतः किया था— शहाबुद्दीन ने
- कुतुबुद्दीन नामक गुलाम को दिल्ली का प्रथम सम्राट बनाया था— शहाबुद्दीन ने
- 'आलमगीर' की उपाधि धारण किया था— औरंगजेब
- औरंगजेब ने दक्षिण के शासक के रूप में भेजा था— शाइस्ता खाँ को
- पूना नगर के सिंहदुर्ग में रह रहे थे— शिवाजी
- 'या कार्य सिद्ध होगा या शरीर नष्ट होगा' यह प्रतिज्ञा थी— शिवाजी की
- 'वीर शिवाजी' विजयी हो यह आशीर्वाद दिया था— योगिराज ने
- घुड़सवारों को मारकर 5 ब्राह्मणों को छुड़ाया था— गौरसिंह ने
- कुटीर की 'बल्ली' में तलवार छिपा रखा था— गौरसिंह
- यवन युवक की उम्र थी— 20 वर्ष
- 'कन्या' के रक्षणार्थ कुटी के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा था— श्यामबटु
- 'सुकवि' नाम से विख्यात थे— अम्बिकादत्तव्यास
- महाराष्ट्रकेशरी के रूप में वर्णन है— शिवाजी का
- संस्कृत साहित्य में 20वीं शताब्दी का एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है— शिवराजविजयम्

- 'शिवराजविजयम्' में शिवाजी के कितने वर्षों की जीवनी है?— 10 वर्षों की
- गद्य काव्य है— शिवराजविजयम्
- बीजापुर का नवाब था— शाइस्ता खाँ
- 'ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये-मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च।' यहाँ 'तम्' पद से संकेत किया गया है— योगिराज का
- 'नाहं मूर्तीः विक्रीणामि', यह कथन है— महमूद गजनबी का
- 'आः! वयमपि कुतः इति प्रष्टव्याः' यह कथन है— यवन युवक का
- 'उष्णीष' पद का अर्थ है— पगड़ी
- योगिराज के समाधि से जगने के समय शिवाजी निवास कर रहे थे— सिंहदुर्ग में
- योगिराज विक्रमादित्य के बाद जब समाधि से जगे तो दिल्ली का शासक था— औरंगजेब
- 'अनीकिनी' पद का अर्थ होगा— सेना
- 'अध्वनीनम्' पद का अर्थ होगा— पथिक
- 'नेदीयसी' पद का अर्थ होगा— समीप
- 'अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि' यह कथन है— श्याम बटु का
- 'विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः?' यह कथन है— योगिराज का
- 'पुण्डरीकपटल' पद का अर्थ है— श्वेतकमल
- मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकलकलाकलापकलनः' यह कथन है— योगिराज का
- 'सत्यं न लक्षितो मया समयवेगः।' यह कथन है— योगिराज का
- 'अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम्' यह कथन है— ब्रह्मचारी गुरु का
- विक्रमादित्य को भारतभूमि छोड़कर गए हुए कितना समय बीत गया था?— 1700 वर्ष

- 'वयमपि तु स्वाङ्गागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्य गणाः अत्रैव निवसामः' यह कथन है— गौरसिंह का
- अफजल खाँ के तीनों घोड़ों को मारा था— गौरसिंह ने
- 'विजयतां शिववीरः, सिद्ध्यन्तु भवतां मनोरथाः' यह कथन है— योगिराज का
- 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' यह प्रतिज्ञा थी— शिवाजी की
- 'धिगस्मान् येऽद्यापि जीवामः' यह कथन है— ब्रह्मचारी गुरु की
- यवन युवक द्वारा अपहृत कन्या की अवस्था थी— 7 वर्ष लगभग
- 'सुघटितं शरीर सान्द्रां जटाम्' यह कथन है— योगिराज का
- 'अकूपास्तलम्' पद का अर्थ है— सागरतल
- ब्रह्मचारी बटु किस पत्ते के दोने में फूल तोड़ता है?— केले के
- 'जटाभिर्ब्रह्मचारी' इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग किस सूत्र से है?— इत्थंभूतलक्षणे
- 'अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम् स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव.....' यह कथन है— गौरबटु का
- 'रोलम्बकदम्ब' पद का शब्दार्थ है— भ्रमरसमूह
- 'आखण्डलदिक्' पद से किस दिशा का संकेत किया गया है?— पूर्व दिशा का
- 'हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद विमुच्यते?' यह है— मङ्गलाचरण
- शिवाजी की माता का नाम है— जीजाबाई
- शिवाजी के पिता का नाम है— शाहजी भोसले
- 'निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुर्विप्रबटुः' यहाँ 'कश्चित्' से संकेत किया गया है— गौरसिंह का

+++

नलचम्पू

नलचम्पू के रचनाकार हैं— त्रिविक्रमभट्ट
- ➢ त्रिविक्रमभट्ट के पिता का नाम था— नेमादित्य या देवादित्य
- ➢ त्रिविक्रमभट्ट का समय है— 10वीं शताब्दी ई. पूर्वार्ध का
- ➢ उपलब्ध चम्पूकारों में सर्वप्रथम हैं— त्रिविक्रमभट्ट
- ➢ त्रिविक्रम-भट्ट का गोत्र था— शाण्डिल्य
- ➢ त्रिविक्रम-भट्ट थे— ब्राह्मण
- ➢ त्रिविक्रम-भट्ट के आश्रयदाता राजा थे— राष्ट्रकूटवंशी इन्द्रराज तृतीय
- ➢ 995 ई. के अभिलेख की रचना की थी— त्रिविक्रमभट्ट ने
- ➢ त्रिविक्रमभट्ट ने प्रशंसा की है— बाण की
- ➢ सर्वप्रथम त्रिविक्रमभट्ट के पद्य का उद्धरण राजा भोज ने दिया है— सरस्वती काण्ठाभरण में
- ➢ नलचम्पू विभक्त है— उच्छ्वास में
- ➢ नलचम्पू में कुल उच्छ्वास हैं— 7
- ➢ नल-दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है— नलचम्पू में
- ➢ नलचम्पू में सुन्दर प्रयोग है— सभङ्ग, श्लेष का
- ➢ उपमा के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर समीक्षकों ने 'यामुनत्रिविक्रम' की उपाधि दी थी— त्रिविक्रमभट्ट को
- ➢ अपने आपको महर्षि शाण्डिल्य के वंश में उत्पन्न बताया है— त्रिविक्रमभट्ट ने
- ➢ श्रीधर के पौत्र थे— त्रिविक्रमभट्ट
- ➢ 'निषध' नाम की नगरी किस देश में है?— आर्यावर्त
- ➢ 'निषध' नाम की नगरी की प्राकारभित्ति बनी थी— इन्द्रनीलमणि से
- ➢ 'निषध' नाम की नगरी के भवनों के प्राङ्गण किसकी शिलाओं से निबद्ध हैं? स्फटिक मणि की

- ➢ 'निषध' नाम की नगरी में रहते हैं— नल
- ➢ नल के मंत्री का नाम है— श्रुतशील
- ➢ नल का द्वितीय प्राण है— श्रुतशील
- ➢ विहार-वन में भयंकर जंगली सूकर के आने की सूचना राजा-नल को देता है— वनपालक
- ➢ राजा नल का सेनापति है— बाहुक
- ➢ राजा नल की आज्ञा से शिकार की सारी सामग्री प्रस्तुत कर देता है— बाहुक
- ➢ राजानल सूकर पर विजय के बाद थककर विश्राम करता है— सालवृक्ष के नीचे
- ➢ भगवान् शङ्कर के पवित्र चरणों से अधिष्ठित श्रीशैल नामक पर्वत है— दक्षिण दिशा में
- ➢ देवों और दानवों की गोष्ठी में समान रूप से पूजे जाने वाले देवता हैं— कार्तिकेय
- ➢ पथिक ने किस वृक्ष के नीचे विश्राम किया था?— बरगद के
- ➢ चन्द्र-वंशियों में श्रेष्ठ था— नल
- ➢ मङ्गलाचरण में नमस्कार किया गया है— शिवजी को
- ➢ 'जयति गिरिसुतायाः कामसन्ताप वाहिन्युरसि' यह मङ्गलाचरण है— नलचम्पू का
- ➢ प्रथम उच्छ्वास में श्लोकों की कुल सुख्या है— 64
- ➢ समस्त भूमण्डल में चमकते हुए तिलक सदृश था— आर्यावर्त
- ➢ भारत देश का 'अलङ्कार' कवि ने कहा है— आर्यावर्त को
- ➢ गंगा के पवित्र जल से आप्लावित है— आर्यावर्त
- ➢ किस महीने में वृक्ष की शाखाएँ पल्लवविहीन हो जाती हैं?— फाल्गुन के
- ➢ 'जयति तरुणयोषिल्लोचनानां विलासः' यह सम्बद्ध है— नलचम्पू से 1/2

* 'वन्दे रसान्तरप्रौढं स्रोत: सारस्वतं वहत्' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से 1/3
* प्रसन्ना: कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणा: यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से 1/4
* 'परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिर:' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से1/5
* 'अक्षमालापवृत्तिज्ञा कुशासनपरिग्रहा' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से 1/7
* 'नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से1/11
* 'व्यास: क्षमाभृतां श्रेष्ठो वन्द्य: स हिमवानिव' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से1/12
* 'देश: पुण्यतमोदेश: कस्यासौ न प्रियो भवेत्' यह सम्बद्ध है– नलचम्पू से 1/28

+++

पात्र–परिचय

पुरुष–पात्र

अवसर पाठक	:	भीम और नल के सेवक
इन्द्र, कुबेर	:	लोकपाल
पर्वतक	:	नल का सेवक
पथिक	:	उत्तर दिशा से आया हुआ
पथिक	:	दक्षिण दिशा से आया हुआ
पुरुष	:	दिक्पालों का अनुचर
पुरोधा	:	भीम का पुरोहित
पुष्कराक्ष	:	दमयन्ती का दूत
	:	नल का सेवक
प्रस्ताव पाठक	:	नल का सेवक
	:	नल का सेनापति
ब्रह्मर्षि	:	जो नल के अभिषेक के समय आये थे
भद्रभूति	:	नल का दौवारिक
भीम	:	दमयन्ती के पिता तथा कुण्डिनपुर के राजा
मृगयावनपालक	:	नल का सेवक
	:	पयोष्णी तट के तपस्वी
मौहूर्तिक	:	राजा वीरसेन के ज्योतिषी
यम, वरुण	:	लोकपाल
	:	निषधसम्राट् तथा नल के पिता
वैतालिक	:	नल के सेवक
श्रुतशील	:	नलमन्त्री तथा सालङ्कायन का पुत्र
सालङ्कायन	:	वीरसेन का मन्त्री
सुन्दरक	:	दमयन्ती का किन्नर
सोम शर्मा	:	स्वयंवर निमन्त्रण के लिये उत्तर दिशा की ओर जाने वाला ब्राह्मण
हंस	:	दमयन्ती को लुभानेवाला नल का दूत

+++

स्त्री-पात्र

कक्कोलिका	:	दमयन्ती की चेटी
कलिका	:	दमयन्ती की चेटी
किरात कामिनियाँ	:	नर्मदा तट की
गोपी	:	विदर्भतीरचारिणी
गौरी	:	दमयन्ती-चेटी
चकोरी,चङ्गी	:	दमयन्ती-चेटी
चन्दना, चन्द्रप्रभा	:	दमयन्ती-चेटी
चन्द्रवदना, चन्द्री	:	दमयन्ती-चेटी
चम्पा	:	दमयन्ती-चेटी
दमयन्ती	:	भीमपुत्री
दन्दिनी	:	दमयन्ती-चेटी
परिहासशीला	:	दमयन्ती-चेटी
प्रियंवदिका	:	दमयन्ती-चेटी
प्रियंगुमञ्जरी	:	भीम पत्नी तथा दमयन्ती की माता
मज्जनकामिनियाँ	:	राजा भीम की सेविकायें
मालती	:	दमयन्ती-चेटी
रूपवती	:	राजा वीरसेन की पत्नी तथा नल की माता
लवङ्गिका	:	नल की सरोवर-रक्षिका
लवङ्गी	:	दमयन्ती-चेटी
विहङ्गवागुरिका	:	दमयन्ती की किन्नरी
सारसिका	:	नलवनपालिका
सुन्दरी	:	दमयन्ती चेटी
हंसी	:	दमयन्ती-चेटी
हंसी	:	नलदूत पक्षिप्रवर हंस की पत्नी

स्त्री-पुरुष

किन्नर मिथुन	:	सुन्दरक और विहङ्गवागुरिका दमयन्ती के सेवक

★★★

काव्यशास्त्र

काव्यप्रकाश

- भारतीय अलंकार शास्त्र का अद्वितीय ग्रन्थ है—काव्यप्रकाश
- साहित्यशास्त्र का 'आकर' ग्रन्थ है—काव्यप्रकाश
- काव्यप्रकाश विभक्त है—उल्लासों में
- काव्यप्रकाश में कुल उल्लास हैं—10
- 'परिकर-अलंकार' तक लिखा था—आचार्य मम्मट ने
- काव्यप्रकाश के रचनाकार हैं—आचार्य मम्मट
- काव्यप्रकाश के शेषभाग की रचना की थी—अल्लटसूरि ने
- आचार्य मम्मट निवासी बताए जाते हैं—कश्मीर के
- आचार्य मम्मट के पिता का नाम था—जैयट
- काव्यप्रकाश में भाग हैं—तीन

  1. कारिकाभाग 2. वृत्तिभाग 3. उदाहरणभाग
- काव्यप्रकाश की सबसे प्राचीन टीका 'संकेत' के प्रणेता हैं—माणिक्यचन्द्र
- काव्यप्रकाश पर विश्वनाथकृत टीका है —दर्पणटीका
- काव्यप्रकाश की सबसे नवीन टीका है—बालबोधिनी
- 'बालबोधिनी' टीका के रचनाकार हैं—वामनाचार्य
- काव्यप्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है—142
- 142 कारिकाओं का विभाजन किया गया है—212 सूत्रों में
- 'काव्यप्रकाश' के प्रथम उल्लास का नाम है—काव्यप्रयोजनकारण-स्वरूपनिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के द्वितीय उल्लास का नाम है—शब्दार्थस्वरूपनिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के तृतीय उल्लास का नाम है—अर्थव्यञ्जकतानिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के चतुर्थ उल्लास का नाम है—ध्वनिनिर्णय

- 'काव्यप्रकाश' के पञ्चम उल्लास का नाम है— ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य-संकीर्णभेदनिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के षष्ठ उल्लास का नाम है— शब्दार्थचित्रनिरूपण
- 'काव्यप्रकाश' के सप्तम उल्लास का नाम है— दोषदर्शननिरूपण
- 'काव्यप्रकाश' के अष्टम उल्लास का नाम है— गुणालंकारभेदनिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के नवम उल्लास का नाम है— शब्दालंकारनिर्णय
- 'काव्यप्रकाश' के दशम उल्लास का नाम है— अर्थालंकारनिर्णय
- काव्यशास्त्र का आदिग्रन्थ माना जाता है— काव्यालङ्कार
- 'काव्यालङ्कार' के रचनाकार हैं— आचार्य भामह
- 'काव्यालङ्कारसंग्रह' के रचनाकार हैं— उद्भट
- 'काव्यालङ्कारसूत्र' के रचनाकार हैं— वामन
- काव्यशास्त्र के सम्प्रदाय हैं— 6
- रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — भरतमुनि
- ध्वनिसम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — आनन्दवर्धन
- अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — भामह
- रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — वामन
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — कुन्तक
- औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं — क्षेमेन्द्र
- 'वाग्देवतावतार' कहा जाता है— मम्मट को
- पाँच अवयवों से युक्त वाक्य को कहते हैं — ग्रन्थ
- 'काव्यप्रकाश' के मङ्गलाचरण में वर्णन किया गया है— सरस्वती का (कविभारती का)
- 'काव्यप्रकाश' के मङ्गलाचरण में अलंकार है— व्यतिरेक
- मङ्गलाचरण में ब्रह्मा की सृष्टि से उत्कृष्ट सृष्टि बतायी गयी है— कविभारती की
- मङ्गलाचरण में कितने प्रकार की विशेषताओं का वर्णन किया गया है?— चार
- मङ्गलाचरण में छन्द है— आर्या

- नियतिकृत नियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्। नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।। यह काव्यप्रकाश का है— मङ्गलाचरण
- आर्या छन्द को 'प्राकृत' में जाना जाता है— 'गाथा' नाम से
- 'कवेर्जयति' के 'कवि' पद में विभक्ति है— षष्ठी
- 'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये' यह काव्यप्रकाश का है— काव्यप्रयोजन
- 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' यह काव्यप्रकाश का है— काव्यप्रयोजन
- आचार्यमम्मट ने काव्य के प्रयोजन बताएँ हैं— 6
- काव्य की कौन सी शैली सबसे विलक्षण है?— उपदेशशैली
- 'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च' यह भामह का है— काव्यप्रयोजन
- प्रयोजन षट्क का निरूपण किया है— मम्मट ने
- 'धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः' यह काव्यप्रयोजन है— कुन्तक का
- 'काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्' यह काव्य प्रयोजन है— वामन का
- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि' यह काव्य-परिभाषा है— मम्मट की
- 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' यह काव्य का लक्षण है— भामह का
- 'ध्वनिरात्मा काव्यस्य' यह काव्य का लक्षण है— आनन्दवर्धन का
- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** यह काव्य का लक्षण है— वामन का
- **'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली'** यह काव्य का लक्षण है— दण्डी का
- **'ननु शब्दार्थयो काव्यम्'** यह काव्य का लक्षण है— रुद्रट का
- **'शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि'** यह काव्य का लक्षण है— कुन्तक का
- **'शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन् विद्या साहित्यविद्या'** यह काव्य का लक्षण है— राजशेखर का

- 'दृष्टार्थव्यवछिन्ना पदावली' यह काव्य का लक्षण है— अग्निपुराण का
- 'निर्दोषा लक्षणवती सरीतिगुणभूषणा' यह काव्य का लक्षण है— जयदेव का
- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह काव्य का लक्षण है— पण्डितराजजगन्नाथ का
- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' यह काव्य का लक्षण है— विश्वनाथ का
- उपदेशशैली के प्रकार हैं— तीन
  1. प्रभुसम्मित 2. सुहृत्सम्मित 3. कान्तासम्मित
- प्रभुसम्मित शैली को कहा जाता है— शब्दप्रधान
- सुहृतसम्मित शैली को कहा जाता है— अर्थप्रधान
- कान्तासम्मित शैली को कहा जाता है— रसप्रधान
- वेदशास्त्र आदि की शैली है— प्रभुसम्मित
- इतिहासपुराण आदि की शैली है— सुहृत्सम्मित
- काव्यादि की शैली है— कान्तासम्मित
- 'त्रिवर्गसाधनं नाट्यम' यह काव्यप्रयोजन है— अग्निपुराण का
- चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि' यह काव्यप्रयोजन है— विश्वनाथ का
- 'शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्' यह काव्य हेतु है— मम्मट का
- 'इति हेतुस्तदुद्भवे' यह है— काव्यहेतु
- शक्ति (प्रतिभा) निपुणता और अभ्यास को काव्य के उद्भव का कारण मानते हैं— मम्मट
- कवित्वबीजरूप संस्कार विशेष है— शक्ति
- प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य के उद्भव का हेतु मानते हैं— दण्डी
- 'नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम्' यह काव्य हेतु है— दण्डी का

- प्रतिभा मात्र को काव्य का हेतु स्वीकारते हैं— भामह, रुद्रट, जगन्नाथ, वामन आदि
- 'गुरुपदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्' यह काव्य हेतु है— भामह का
- 'मनसि सदा सुसमाधिनि विस्फुरणमनेधाभिधेयस्य' यह काव्य हेतु है— रुद्रट का
- 'कवित्वस्य बीजं प्रतिभानम्' यह काव्य हेतु है— वामन का
- 'तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा' यह काव्य हेतु है— जगन्नाथ का
- काव्य के भेद मम्मट ने माने हैं— तीन
  1. उत्तम 2. मध्यम 3. अधम
- काव्य के चार भेद मानते हैं— पण्डितराज जगन्नाथ
- जगन्नाथ के मतानुसार काव्य के भेद हैं— चार
  1. उत्तमोत्तम 2. उत्तम 3. मध्यम 4. अधम
- उत्तम काव्य को कहा जाता है— ध्वनिकाव्य
- मध्यम काव्य को कहा जाता है— गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य
- अधम काव्य को कहा जाता है— चित्रकाव्य (अवर काव्य)
- अधम काव्य के भेद हैं— दो, 1. शब्दचित्र, 2. अर्थचित्र
- 'इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः' यह है— उत्तम काव्य
- वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ के अधिक चमत्कारयुक्त होने पर होता है— उत्तम काव्य का
- 'अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु' यह है— मध्यम काव्य
- वाच्यार्थ से अधिक चमत्कारी व्यंग्यार्थ न होने पर होता है— मध्यम काव्य
- 'निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो' यह उदाहरण है— उत्तम काव्य का

- **'ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्'** यह उदाहरण है— मध्यम काव्य का
- 'शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्' यह है— अधम काव्य
- व्यङ्ग्यार्थ रहित काव्य को कहा जाता है— अधम काव्य
- 'स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा.' यह उदाहरण है— अर्थचित्र का
- काव्य में 'शब्द' के भेद होते हैं— तीन
  1. वाचक 2. लाक्षणिक 3. व्यञ्जक
- अर्थ के भेद हैं— तीन 1. वाच्य 2. लक्ष्य 3. व्यङ्ग्य
- व्यञ्जक सिर्फ पाया जाता है— साहित्यशास्त्र में
- 'वाचक' शब्द बोधक होता है— मुख्यार्थ का
- सर्वप्रथम रखा गया शब्द है— वाचक
- वाचक शब्द के ऊपर आश्रित रहता है— लाक्षणिक
- वाचक शब्द के बाद स्थान आता है— लाक्षणिक का
- तीसरे स्थान पर रखा जाता है— व्यञ्जक
- तीन प्रकार का विभाग केवल है— शब्द की उपाधियों का
- व्याकरणशास्त्र में पद-पदार्थों का विवेचन कहलाता है— पदशास्त्र
- मीमांसा को कहा जाता है— वाक्यशास्त्र
- न्याय को कहा जाता है— प्रमाणशास्त्र
- शब्दशक्तियों के प्रकार हैं— तीन
  1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना
- चार प्रकार का 'अर्थ' मानते हैं— अभिहितान्वयवादी
- अभिहितान्वयवादी आचार्य हैं— कुमारिल
- अन्विताभिधानवादी आचार्य हैं— प्रभाकर
- कुमारिल के अनुयायी हैं— पार्थसारथिमिश्र
- **'तात्पर्यार्थ'** को मानते हैं— अभिहितान्वयवादी
- **'तात्पर्यार्थ'** को कहा जाता है— वाक्यार्थ
- तात्पर्यार्थ बोधक शक्ति को कहा जाता है— तात्पर्याख्याशक्ति

- व्यञ्जना को नहीं मानते हैं— मीमांसक
- मीमांसक कितने प्रकार की शक्ति मानते हैं?— तीन,
- 1. अभिधा, 2. लक्षणा, 3. तात्पर्यार्थ
- 'अस्मात् पदात् अयमर्थो बोद्धव्य:' यह है— अभिधा
- **'आकाङ्क्षा-योग्यता-सन्निधिवशाद् वक्ष्यमाणस्वरूपाणाम्'** यह है— अभिहितान्वयवाद
- **'वाच्य एव वाक्यार्थ'** यह है— अन्विताभिधानवाद
- आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि से युक्त पदसमुदाय कहलाता है— वाक्य
- प्रभाकर के अनुयायी हैं— शालिकनाथ मिश्र
- 'येन पदेन् विना यस्य पदस्यान्वयानुभावकत्वं तेन पदेन सह' यह है— आकांक्षा
- श्रोता की जिज्ञासा-रूप है— आकांक्षा
- गौः, अश्वः, पुरुषः आदि उदाहरण हैं— आकांक्षा के
- 'पदार्थानां परस्परसम्बन्धे बाधाभावे' यह है— योग्यता
- 'वह्निना सिञ्चति' यह उदाहरण है— योग्यता का
- 'पदानामविलम्बेनोच्चरणम्' यह है— सन्निधि
- 'मातर्गृहोपकरणमद्य खलु नास्तीति साधितं त्वया।' यह उदाहरण है— वाच्य का
- 'साधयन्ती सखि सुभगं क्षणे-क्षणे दूनासि मत्कृते' यह उदाहरण है— लक्ष्य का
- 'पश्य निश्चलनिष्पन्दा बिसिनीपत्रे राजते बलाका' यह उदाहरण है— व्यङ्ग्य का
- 'साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स' यह लक्षण है— वाचक का
- साक्षात् संकेतित अर्थ को अभिधा शक्ति के लक्षण द्वारा कहने वाला शब्द है— वाचक
- संकेतित अर्थ के प्रकार हैं— चार
  1. जाति 2. गुण 3. क्रिया 4. यदृच्छा

- संकेतित अर्थ के रूप में केवल जाति को मानते हैं—मीमांसक
- 'जाति' को ही संकेतित अर्थ मानते हैं—मीमांसक
- उपाधि के भेद हैं—दो 1. सिद्ध 2. साध्य
- सिद्ध के भेद हैं—दो 1. पदार्थ का प्राणप्रद 2. विशेषाधानहेतु
- वस्तु का प्राणप्रद जीवनधायक वस्तुधर्म कहलाता है—जाति
- वस्तु का विशेषाधानहेतु होता है—गुण
- ग्रन्थकार के अनुसार संकेतग्रह नहीं होता है—व्यक्ति में
- व्यक्ति के उपाधिभूत-जाति-गुण, क्रिया और यदृच्छा धर्मों में होता है—संकेतग्रह
- शुक्ल आदि रूप के समान 'परिमाण' को भी गुण माना है—वैशेषिक दर्शन
- 'जाति' का ही दूसरा नाम है— सामान्य
- जातिविशिष्ट व्यक्ति में संकेतग्रह मानते हैं—नैयायिक
- बौद्धमतानुसार शब्द का अर्थ होता है—अपोह
- 'अपोह' को संकेतग्रह मानते हैं—बौद्ध
- 'स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते' यह लक्षण है—अभिधा का
- साक्षात् संकेतित अर्थ कहलाता है—मुख्यार्थ (वाच्यार्थ)
- मुख्यार्थ का बोधन कराने में शब्द का जो मुख्य व्यापार होता है, वह है—अभिधा व्यापार
- 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्' यह है—लक्षणा
- मुख्यार्थ की बोधिका शक्ति होती है—अभिधा
- मम्मट के अनुसार लक्षणा के कुल भेद हैं—6
- 'स्वसिद्धये पराक्षेपः' यह है—उपादान लक्षणा
- 'परार्थं स्वसमर्पणम्' यह है—लक्षण लक्षणा
- 'कुन्ताः प्रविशन्ति' यह उदाहरण है—उपादान-लक्षणा का
- 'गंगायां घोषः' यह उदाहरण है—लक्षण-लक्षणा का
- लक्षणा के भेद हैं—दो 1. शुद्धा 2. गौणी

- शुद्धा के भेद हैं—दो 1. उपादान-लक्षणा 2. लक्षण-लक्षणा
- गौणी के भेद हैं—दो
  1. सरोपा गौणी लक्षणा 2. साध्यवसाना गौणी लक्षणा
- सरोपा गौणी लक्षणा का उदाहरण है—गौर्वाहीकः
- साध्यवसाना गौणी लक्षणा का उदाहरण है—गौरयम्
- लक्षण-लक्षणा का वेदान्त में नाम है—जहत्स्वार्था लक्षणा
- मुकुलभट्ट का सिद्धान्त है—ताटस्थ्यसिद्धान्त
- 'सारोपान्या तु यत्रोक्तौ विषयी विषयस्तथा' यह है—सारोपगौणी-लक्षणा
- 'विषय्यन्तः कृतेऽन्यस्मिन् सा स्यात्' यह है— साध्यवसाना गौणी लक्षणा
- व्यञ्जना के भेद हैं—दो 1. शाब्दी 2. आर्थी
- शाब्दी व्यञ्जना के भेद हैं—दो 1. अभिधामूला 2. लक्षणामूला
- 'सशंखचक्रो हरिः' यह उदाहरण है—संयोग का
- 'अशंखचक्रो हरिः' यह उदाहरण है—वियोग का
- 'रामलक्ष्मणौ' यह उदाहरण है—साहचर्य का
- 'रामार्जुनगतिस्तयोः' यह उदाहरण है— विरोधित का
- 'स्थाणुं भज भवच्छिदे' यह उदाहरण है—अर्थ का
- 'सर्वं जानाति देवः' यह उदाहरण है—प्रकरण का
- 'कुपितो मकरध्वजः' यह उदाहरण है—लिङ्ग का
- 'देवस्य पुराराते:' यह उदाहरण है—अन्य शब्द की सान्निधि का
- 'मधुना मत्तः कोकिलः' यह उदाहरण है—सामर्थ्य का
- 'पातु वो दयितामुखम्' यह उदाहरण है—औचित्य का
- 'भात्यत्र परमेश्वरः' यह उदाहरण है—देश का
- 'चित्रभानुर्विभाति' यह उदाहरण है—काल का
- 'मित्रं भाति' यह उदाहरण है—व्यक्ति का
- 'मित्रो भाति' यह उदाहरण है—स्वर का
- शूरता इत्यादि धर्म हैं—आत्मा के
- रस के धर्म हैं—गुण

- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' यह रस सूत्र है— भरतमुनि का
- भट्टलोल्लट का रससिद्धान्त है— उत्पत्तिवाद
- शंकुक का रससिद्धान्त है— अनुमितिवाद
- भट्टनायक का रससिद्धान्त है— भुक्तिवाद
- अभिनवगुप्त का रससिद्धान्त है— अभिव्यक्तिवाद
- भट्टलोल्लट हैं— मीमांसक
- आचार्य शंकुक हैं— नैयायिक
- आचार्य भट्टनायक हैं— सांख्यमतानुयायी
- अभिनवगुप्त है— ध्वनिवादी
- चित्रतुरगादिन्याय द्वारा रससिद्धान्त की स्थापना करते हैं— शंकुक
- आचार्य मम्मट पददोष मानते हैं— 16
- काव्यप्रकाश में वाक्यगत दोष की संख्या है— 21
- काव्यप्रकाश में अर्थदोष की संख्या है— 23
- काव्यप्रकाश में रसदोष की संख्या है— 13
- काव्यप्रकाश के अनुसार दोष हैं— तीन
  1. रसदोष 2. अर्थदोष 3. शब्द दोष
- मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः।
  उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः।। यह है— रसदोष
- ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। यह है— काव्यगुण
- काव्यप्रकाशकार गुणों की संख्या मानते हैं— तीन
  1. माधुर्य, 2. ओज, 3. प्रसाद
- आचार्य वामन गुणों की संख्या मानते हैं— 10
- 'आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्' यह है— माधुर्यगुण
- 'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति' यह है— ओजगुण
- 'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
  व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।।' यह है— प्रसादगुण

- 'उपर्कुवन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्' यह है— अलंकार
- काव्य के अस्थिर धर्म होते हैं— अलंकार
- काव्य के स्थिर धर्म होते हैं— गुण
- सादृश्यमूलक अलंकार है— 29
- काव्यप्रकाश में कुल अलंकारों की संख्या है— 67
- अलंकार के भेद हैं— दो 1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार
  बीभत्स और रौद्र रसों में आधिक्य रहता है— ओजगुण का
- शब्दालंकार की कुल संख्या है— 5
- अर्थालंकार की कुल संख्या है— 61
- अनुप्रास अलंकार के भेद हैं— दो
  1. वर्णानुप्रास 2. लाटानुप्रास या पदानुप्रास
- 'वर्णसाम्यमनुप्रासः' यह है— अनुप्रास अलंकार
- वर्णानुप्रास के भेद हैं— दो 1. छेकानुप्रास 2. वृत्त्यनुप्रास
- 'सोऽनेकस्य सकृत्पूर्वः' यह है— छेकानुप्रास
- 'ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुःशशी।
  दध्रे कामपरिक्षामकामिनी-गण्डपाण्डुताम्।।' यह उदाहरण है— छेकानुप्रास का
- 'एकस्याप्यसकृत्परः' यह है— वृत्त्यनुप्रास
- वृत्त्यनुप्रास के भेद हैं— तीन
  1. उपनागरिका 2. परुषा 3. कोमला
- 'माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैरुपनागरिकोच्यते' यह है— उपनागरिका
- 'अनङ्गरङ्गप्रतिमं तदङ्ग भङ्गीभिरङ्गकृतमानसाङ्ग्याः' यह उदाहरण है— उपनागरिका का
- 'ओजःप्रकाशकैस्तैस्तु' यह है— परुषा
- माधुर्य, व्यञ्जक तथा ओज के प्रकाशक वर्णों से परे वर्णों से युक्त होती है— कोमला
- 'अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः'। यह उदाहरण है— कोमला का

- 'शब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः' यह है— लाटानुप्रास
- पदानुप्रास के भेद हैं— पाँच
- यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य' यह उदाहरण है— लाटानुप्रास का
- 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः' यह है— यमक अलंकार
- यमक के भेद हैं— 11
- श्लेष अलंकार के भेद हैं— दो 1. शब्दश्लेष 2. अर्थश्लेष
- वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
  शिलष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।। यह है— शब्दश्लेष अलंकार
- शब्दश्लेष के भेद हैं— दो 1. सभङ्गश्लेष, 2. अभङ्गश्लेष
- सभङ्गश्लेष के भेद हैं— 8
- पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिः शेषपरिजनं देव।
  विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति समभावयोः सदनम्।। यह उदाहरण है— पदश्लेष अलंकार का
- 'भेदाभावात्प्रकृत्यादेर्भेदोऽपि नवमो भवेत' यह है— अभङ्गश्लेष अलंकार
- 'योऽसकृत्परगोत्राणां पदच्छेदक्षणक्षमः' यह उदाहरण है— अभङ्गश्लेष अलंकार
- 'श्लेषः स वाक्ये एकस्मिन् यत्रानेकार्थता भवेत्' यह है— अर्थश्लेष
- **'उदयमयतेदिङ्मालिन्यं निराकुरुतेतरां, नयति निधनं निद्रामुद्रां प्रवर्तयति क्रियाः'** यह उदाहरण है— अर्थश्लेष का
- 'यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते' यह है— वक्रोक्ति अलंकार
- वक्रोक्ति अलंकार के भेद हैं— दो
  1. श्लेष वक्रोक्ति 2. काकु वक्रोक्ति
- 'नारीणामनुकूलमाचरसि चेज्जानासि कश्चेतेनो' यह उदाहरण है— पदभङ्ग श्लेष वक्रोक्ति का
- 'अहो केनेदृशी बुद्धिर्दारुणा वा निर्मिता' इसमें अलंकार है— अभङ्गश्लेष वक्रोक्ति

- 'काकुर्ध्वनेर्विकारः' यह है— काकु वक्रोक्ति
- 'गुरुजनपरतन्त्रतया दूरतरं देशमुद्यतो गन्तुम्' इसमें अलंकार है— अभङ्गश्लेष वक्रोक्ति
- 'साधर्म्यमुपमा भेदे' यह है— उपमालंकार
- उपमालंकार के प्रकार हैं— दो 1. पूर्णोपमा 2. लुप्तोपमा
- 'पूर्णोपमा' के प्रकार हैं— दो 1. श्रौती 2. आर्थी
- 'उपमानोपमेयसाधारणधर्मोपमाप्रतिपादकानामुपादाने पूर्णा' यह है— पूर्णोपमा
- उपमान, उपमेय, साधारण धर्म और उपमावाचक इन चारों का ग्रहण होने पर होती है— पूर्णोपमा
- श्रौती के भेद हैं— तीन 1. वाक्यगा 2. समास 3. तद्धित
- आर्थी के भेद हैं— तीन 1. वाक्यगा 2. समास 3. तद्धित
- काव्यप्रकाश में उपमालंकार के भेदोपभेद हैं— 29
- स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
  प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा।। इसमें अलंकार है— वाक्यगा श्रौती
- 'सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विद्यते' इसमें अलंकार है— वाक्यगा श्रौती
- 'शौरिर्भुजरिव चतुर्भिरदः सदा यो लक्ष्मीविलासभवनैर्भुवनं वभार' इसमें अलंकार हैं— समासगा श्रौती
- अवितथमनोरथपथनेषु प्रगुणगरिमगीतश्रीः।
  सरतरुसदृशः स भवानभिलषणीयः क्षितीश्वर न कस्य।। इसमें अलंकार है— समासगा आर्थी
- 'एकस्य द्वयोस्त्रयाणां वा लोपे लुप्ता' यह है— लुप्तोपमा
- लुप्तोपमा के प्रकार हैं— 19
- 19 प्रकार की लुप्तोपमा का विभाजन किया गया है— तीन प्रकार से, 1. एकलुप्ता 2. द्विलुप्ता 3. त्रिलुप्ता
- 5 धर्मलुप्ता, 2 उपमान लुप्ता और 6 वाचक लुप्ता हैं— एकलुप्ता

- 2 धर्मवाचक लुप्ता, 2 धर्मोपमान लुप्ता और वाचकोपमेयलुप्ता हैं—द्विलुप्ता
- त्रिलुप्ता है—एक
- 'तद्वद्धर्मस्य लोपे स्यान्न श्रौती तद्धिते पुनः' यह है— धर्मलुप्तोपमा
- धर्मलुप्तोपमा के भेद हैं—5
- 'उपमानानुपादाने वाक्यगाऽथ समासगा' यह है—उपमान लुप्तोपमा
- उपमान लुप्तोपमा के भेद हैं—दो 1. वाक्यगा 2. समासगा
- 'वादेर्लोपे समासे सा कर्माधारक्यचि क्यङि् कर्मकर्त्रोर्णमुलि' यह है—वाचक लुप्तोपमा
- वाचक लुप्तोपमा के भेद हैं—6
- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्' यह है—उत्प्रेक्षा अलंकार
- लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।। इसमें अलंकार है—उत्प्रेक्षा अलंकार
- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः' यह है—रूपक अलंकार
- 'उपमानोपमेययोः अभेदो' यह है—रूपक अलंकार
- उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप है—रूपक अलंकार
- रूपक के भेद हैं—तीन 1. साङ्ग 2. निरङ्ग 3. परम्परित
- साङ्गरूपक के प्रकार हैं—दो 1. समस्तवस्तुविषयक 2. एकदेशविवर्ती
- निरङ्ग के प्रकार हैं—दो 1. शुद्ध 2. मालारूप
- परम्पारित के प्रकार हैं—दो 1. श्लिष्ट 2. अश्लिष्ट
- श्लिष्ट और अश्लिष्ट के भेद हैं—दो 1. शुद्ध 2. मालारूप
- रूपक अलंकार के भेदोपभेद हैं—13
- 'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा' यह है—अपह्नुति अलंकार
- अपह्नुति अलंकार के भेद हैं—दो 1. शाब्दी 2. आर्थी
- जहाँ उपमेय का निषेध शब्दतः किया जाता है, वह है—शाब्दी अपह्नुति

- 'अवाप्तः प्रागल्भ्यं परिणतरुचः शैलतनये! कलङ्को नैवायं विलसति शशाङ्कस्य वपुषि'। इसमें अलंकार है—शाब्दी अपह्नुति
- 'बत सखि! कियदेतत् पश्य वर स्मरस्य प्रियविरहकृशेऽस्मिन रागिलोके तथा हि।' इसमें अलंकार है—आर्थी अपह्नुति
- 'परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः' यह है—समासोक्ति अलंकार
- अप्रकृत अर्थ का शोधन है—समासोक्ति अलंकार
- लब्ध्वा तव बाहुस्पर्श यस्याः स कोऽप्युल्लासः। जयलक्ष्मीस्तव विरहे न खलूज्ज्वला दुर्बला ननु सा' इसमें अलंकार है—समासोक्ति अलंकार
- 'अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः' यह है—निदर्शना अलंकार
- निदर्शना अलंकार के भेद हैं—तीन
  1. वाक्यार्थ 2. पदार्थ 3. मालारूप
- क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
  तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।। इसमें अलंकार है—निदर्शना
- 'उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्' इसमें अलंकार है—पदार्थ निदर्शना अलंकार
- दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुजङ्गभादातुमिच्छति करेहरिणाङ्कबिम्बम्' इसमें अलंकार है—मालारूप निदर्शना अलंकार
- 'पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्' यह है—दृष्टान्त अलंकार
- दृष्टान्त अलंकार के प्रकार हैं—दो 1. साधर्म्य 2. वैधर्म्य
- 'त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम् ।
  आलोके हि हिमांशोर्विकसित कुसुमं कुमुद्वत्याः।।' इसमें अलंकार है—साधर्म्य दृष्टान्त
- 'तवाहवे साहसकर्मशर्मणः करं कृपाणान्तिकमानिनीषतः।
  भटाः परेषां विशरारुतामगुः दुधत्यवाते स्थिरतां हि पांसवः।।' इसमें अलंकार है—वैधर्म्य
- 'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिः' यह है—विभावना अलंकार

➢ कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि परिवर्त्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा।। इसमें अलंकार है— विभावना

➢ 'अखण्डेषु कारणेषु फलावचः' यह है— विशेषोक्ति अलंकार

➢ विशेषोक्ति अलंकार के प्रकार हैं— तीन
1. अनुक्तनिमित्ता 2. उक्तनिमित्ता 3. अचिन्त्यनिमित्ता

➢ निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने सखीजने द्वारपदं पराप्ते।
श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे चचालनालिङ्गनतोऽङ्गना सा।। इसमें अलंकार है— अनुक्तनिमित्ता विशेषोक्ति

➢ 'कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे।। इसमें अलंकार है- उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति

➢ 'स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।
हरताऽपित नुं यस्य शम्भुना न बलं हृतम्।।' इसमें अलंकार- अचिन्त्यनिमित्ता

➢ 'सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते' यह है— अर्थान्तरन्यास अलंकार

➢ अर्थान्तरन्यास के भेद हैं— चार

➢ 'निजदोषावतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शंखमपि पीतम्।।' इसमें अलंकार है— अर्थान्तरन्यास

➢ 'सेष्टा संसृष्टिरेतेषां भेदेन यदिह स्थितिः' यह है— संसृष्टि अलंकार

➢ संसृष्टि अलंकार के प्रकार हैं— तीन
1. शब्दालंकार संसृष्टि 2. अर्थालंकार संसृष्टि
3. शब्दाअर्थालंकार संसृष्टि

➢ 'वदनसौरभलोभपरिभ्रमद्भ्रमरसंभ्रमसंभृतशोभया। इसमें अलंकार है— शब्दालंकार संसृष्टि

➢ जब काव्य में दो या दो से अधिक अलंकारों की 'नीरक्षीरन्यायेन' परस्परसापेक्ष रूप से एकत्र स्थिति होने पर होता है— सङ्कर अलंकार

➢ सङ्कर अलङ्कार के भेद हैं— तीन
1. अङ्गाङ्गिभाव 2. सन्देह 3. एकपदप्रतिपाद्यशङ्कर

➢ 'अविश्रान्तिजुषामातमन्यङ्गाङ्गित्वं तु सङ्करः' यह है— अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर

➢ 'जटाभाभिर्भाभिः करधृतकलङ्काक्षवलयो।
वियोगिव्यापत्तेरिव कलितवैराग्यविशदः।।' इसमें अलंकार है— अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर अलंकार

➢ 'एकस्य च ग्रहे न्यायदोषाभवादनिश्चयः' यह है— सन्देह सङ्कर अलंकार

➢ 'यथा गम्भीरो यथा रत्ननिर्भरो यथा च निर्मलच्छायः।
तथा किं विधिना एष सरसपानीयो जलनिधिर्न कृतः'।। इसमें अलंकार है— सन्देह सङ्कर अलंकार

➢ 'स्फुटमेकत्र विषये शब्दार्थालंकृतिद्वयम्। व्यवस्थितं च' यह है— एकपदप्रतिपाद्य

➢ 'स्पष्टोल्लसत्किरणकेसर सूर्य बिम्बविस्तीर्ण कर्णिकमथो दिवसारविन्दम्' इसमें अलंकार है— एकपदप्रतिपाद्य

➢ 'काव्यप्रकाश' के काव्यप्रयोजन में विभक्ति है— चतुर्थी

➢ 'काव्यप्रकाश' के काव्य-लक्षण में विभक्ति है— प्रथमा

➢ महिमभट्ट की रचना है— व्यक्तिविवेक

➢ 'सरस्वती कण्ठाभरण' एवं 'शृङ्गारप्रकाश' के प्रणेता हैं— भोज

➢ 'औचित्यविचारचर्चा' तथा 'कथामञ्जरी' के प्रणेता हैं— क्षेमेन्द्र

- ‘भारतमञ्जरी’ तथा ‘कविकण्ठाभरण’ के प्रणेता हैं—क्षेमेन्द्र
- काव्यप्रकाश में उल्लेख नहीं है—क्षेमेन्द्र का
- ‘अलंकार सर्वस्व’ के रचनाकार हैं—रुय्यक
- ‘काव्यानुशासन’ के रचनाकार हैं—हेमचन्द्र
- शब्दों की ‘चतुष्टयी प्रवृत्ति’ को स्वीकार किया है—आचार्य मम्मट ने
- काव्यप्रकाश पर लिखी गयी विश्वनाथकृत टीका है—काव्यप्रकाशदर्पण
- काव्यप्रकाश पर लिखी गयी गोविन्द ठाकुर कृत टीका है—काव्यप्रदीप
- काव्यप्रकाश पर लिखी गयी माणिक्यचन्द्रकृत टीका है—काव्यप्रकाश-संकेत
- काव्यप्रकाश में ‘उल्लास’ का अर्थ है—प्रकाश की एक झलक
- काव्यप्रकाश ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय है—काव्यस्वरूपविवेचन
- रीति सम्प्रदाय को कहा जाता है—गुण सम्प्रदाय भी
- रसानुभूति का आन्तरिक और मुख्यकारण है—स्थायिभाव
- रति आदि के कारण का नाम है—विभाव
- रति आदि के कारण हैं—दो

  1. आलम्बनरूप 2. उद्दीपनरूप
- काव्य में मुख्यार्थ होता है—रस
- रस का अपकर्ष कहलाता है—दोष
- ‘मुख्यार्थहतिर्दोषः’ यह है—दोष
- ‘हति’ का अर्थ है—अपकर्ष
- वामन रीति मानते हैं—तीन

  1. वैदर्भी 2. गौड़ी 3. पाञ्चाली

+++

अष्टम उल्लास

- अष्टम उल्लास का नाम है—गुणालङ्कारभेद-निर्णय
- अष्टम उल्लास में मम्मट ने खण्डन किया है—भट्टोद्भट्ट के गुणालङ्कारविवेक का
- अष्टम उल्लास में मम्मट ने खण्डन किया है —वामन के गुणालङ्कारविवेक का
- अष्टम उल्लास में मम्मट ने खण्डन किया है—वामन-सम्मत दस गुणों का
- वामन के दस गुणों का अन्तर्भाव किया है—तीन गुणों में

  1. माधुर्य 2. ओज 3. प्रसाद
- दस शब्दगुण तथा दस अर्थगुणों का विभाग किया है—वामन ने
- गुणों को शब्द या अर्थ का धर्म न मानकर रस का धर्म मानते हैं—मम्मट
- शब्दगुण अथवा अर्थगुण का विभाग नहीं बन सकता—मम्मट
- भामहविवरण के लेखक हैं—भट्टोद्भट्ट
- गुण तथा अलङ्कार के भेद को मिथ्या माना है—भट्टोद्भट्ट ने
- भेद मानने वाले को गड्डलिका-प्रवाह (भेड़चाल) कहा है—भट्टोद्भट्ट ने
- गुणालङ्कार अभेदवादीमत है—भट्टोद्भट्ट का
- गुण तथा अलङ्कार दोनों में भेद मानते हैं—वामन
- वामन के ग्रन्थ का नाम है—काव्यालङ्कारसूत्र
- गुणालङ्कार भेदवादी मत है—वामन, आनन्दवर्धन और मम्मट का
- वामन के दस गुण (शब्द+अर्थ) हैं—1. ओज, 2. प्रसाद, 3. श्लेष, 4. समता, 5. समाधि, 6. माधुर्य, 7. सौकुमार्य, 8. उदारता, 9. अर्थव्यक्ति, 10. कान्ति

- 'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः। उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः'।। गुण की यह परिभाषा किसके अनुसार है?— मम्मट के
- 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मा गुणाः; तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः'। यह सम्बद्ध है— वामन से (काव्यालंकार सूत्र से)
- उपकुर्वन्ति तं सन्तं येङ्गद्वारेण जातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।। यह परिभाषा है— अलंकार की (मम्मटानुसार)
- आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्' यह परिभाषा है— माधुर्य की
- सामान्यतः सम्भोगशृङ्गार में रहता है— माधुर्य
- करूण, विप्रलम्भ तथा शान्त में अधिक चमत्कारजनक (अतिशयान्वित) होता है— माधुर्य
- 'दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोजो वीररसस्थिति' यह परिभाषा है— ओज की
- वीभत्स तथा रौद्ररसों में आधिक्य होता है— ओज की
- 'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः। व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।। यह परिभाषा है— प्रसाद गुण की
- वामनोक्त दस शब्दगुणों तथा दस अर्थगुणों का खण्डन करके अपने 'त्रिगुणवाद' की स्थापना की है— मम्म्ट ने
- जहाँ वक्ता द्वारा किसी अभिप्राय से कथित वाक्य में श्रोता अन्य अर्थ की कल्पना करता है वहाँ होता है— श्लेष वक्रोक्ति (अर्थात् शब्द के दो अर्थवाला होने से)
- काकु का अर्थ होता है— बोलने का लहजा
- काकुरित्यभिधीयते यह परिभाषा है— काकुवक्रोक्ति की
- अनुप्रास अलङ्कार है— वर्णों की समानता

- अनुप्रास के प्रकार हैं— दो 1. छेकगत 2. वृत्तिगत
- छेक अर्थात् विदग्ध या चतुर (सहृदय) अनेक (व्यञ्जनों, वर्णों) की एक बार आवृत्तिरूप साम्य यह है— छेकगत अनुप्रास
- एक वर्ण का भी और अनेक वर्णों का भी अनेक बार आवृत्तिसाम्य यह है— वृत्त्यानुप्रास
- लाटानुप्रास को कहा जाता है— पदानुप्रास भी
- लाटानुप्रास के भेद होते हैं— पाँच
- 'अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः यमकम्' यह परिभाषा है— यमक अलङ्कार की
- यमक अलङ्कार का उदाहरण है— 'समरसमरसोऽयम्'।
- यमक के भेद हैं— ग्यारह(11)
- श्लेष के भेद हैं— आठ

  1. वर्णश्लेष, 2. पदश्लेष, 3. लिङ्गश्लेष, 4. भाषाश्लेष, 5. प्रकृतिश्लेष 6. प्रत्ययश्लेष, 7. विभक्तिश्लेष, 8. वचनश्लेष

+++

नवम उल्लास

- नवम उल्लास में केवल वर्णन किया गया है—शब्दालङ्कारों का
- अलङ्कार का आधार होता है—शब्द और अर्थ
- अलङ्कार के प्रकार माने गये हैं—तीन
  1. शब्दालङ्कार 2. अर्थालङ्कार 3. उभयालङ्कार
- मम्मट के मत में अलङ्कारों की संख्या है—67
  (पाँच शब्दालङ्कार (5) + इकसठ अर्थालङ्कार (61) + एक उभयालङ्कार (1))
- मम्मट के अनुसार शब्दालङ्कार हैं—छः
  1. वक्रोक्ति 2. अनुप्रास 3. यमक
  4. श्लेष 5. चित्र 6. पुनरूक्तवदाभास
- काव्यप्रकाश के टीकाकार सोमेश्वर ने कितने शब्दालङ्कारों को माना है—छः
- वामनादि के अनुसार शब्दालङ्कार केवल हैं—दो
  1. अनुप्रास 2. यमक
- जो शब्द का परिवर्तन हो जाने पर सहन नहीं करता है, उसको कहा जाता है—'शब्दपरिवृत्यसहत्व' शब्दालङ्कार
- जहाँ किसी शब्द के पर्यायवाची रख देने पर भी अलङ्कार बना रहता है, उसको कहा जाता है—शब्दपरिवृत्तिसहत्व।
- शब्दालङ्कार के भेद हैं—दो
  1. सभङ्ग 2. अभङ्ग

- किस न्याय से शब्दालङ्काररूपश्लेष में दो शब्दों का श्लेष होता है?—जतुकाष्ठन्याय से
- किस न्याय से अर्थ-श्लेष में एक शब्द में दो अर्थों का श्लेष होता है—एकवृन्तगतफलद्वय-न्याय से
- वक्रोक्ति अलङ्कार के भेद हैं—दो
  1. श्लेषवक्रोक्ति 2. काकुवक्रोक्ति
- विशेष प्रकार के विन्यास से लिपिबद्ध किये गए वर्ण खड्ग आदि के आकार को प्रकट करते हैं—चित्रालंकार
- चित्रालङ्कार के प्रकार हैं— खड्गबन्ध, मुरजबन्ध, पद्मबन्ध, सर्वतोभद्र
- पुनरूक्तवदाभास अलङ्कार की परिभाषा है—'पुनरूक्त वदाभासो विभिन्नाकारशब्दगा एकार्थतेव' (अर्थात् भिन्न-भिन्न आकार वाले शब्दों में एकार्थकता का आभास होना)

+++

दशम उल्लास

- दशम उल्लास में वर्णन किया गया है— अर्थालङ्कारों का
- उपमा अलङ्कार का लक्षण है—'साधर्म्यमुपमा भेदे।'
- उपमा अलङ्काकर के अङ्ग हैं— तीन
  1. उपमान 2. उपमेय 3. साधारण
- उपमा अलङ्कार के मुख्य प्रकार हैं— दो
  1. पूर्णोपमा, 2. लुप्तोपमा,
- उपमा अलङ्कार के कुल कितने प्रकार मम्मट को अभीष्ट हैं— 25 प्रकार
- रूद्रट ने अपने काव्यालङ्कार में उपमा के 25 भेदों के अतिरिक्त भेद माना है— मालोपमा (दो प्रकार का) और रशनोपमा (दो प्रकार का)
- एक ही वस्तु के एक वाक्य में उपमान तथा उपमेय रूप होने पर होता है— अनन्वय अलङ्कार
- उपमान तथा उपमेय का परिवर्तन (विपर्यास) अलङ्कार होता है— उपमेयोपमा अलङ्कार
- प्रकृत (अर्थात् वर्ण्य उपमेय) की सम (अर्थात् उपमान) के साथ सम्भावना होता है— उत्प्रेक्षा अलङ्कार
- उत्प्रेक्षा अलङ्कार का लक्षण है—'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'।
- सादृश्य के कारण उपमेय का उपमान के साथ संशयात्मक ज्ञान (संशय) होता है— ससन्देह अलङ्कार
- उपमान और उपमेय (जिनका भेद प्रसिद्ध है) का अभेद वर्णन कहलाता है— रूपक अलङ्कार
- 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः' यह लक्षण है— रूपक अलङ्कार का

- मुखचन्द्रः (मुखं चन्द्रः) में अलङ्कार है— रूपक
- जहाँ प्रकृत अर्थात् वर्णनीय (उपमेय) का निषेध करके अन्य अर्थात् उपमान की सिद्धि की जाती है वहाँ अलङ्कार होता है— अपह्नुति अलङ्कार
- अपह्नुति अलङ्कार का लक्षण है—'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा त्वपह्नुतिः'
- अपह्नुति के प्रकार हैं— दो, 1. शाब्दी, 2. आर्थी
- जहाँ एक ही वाक्य में अनेक अर्थ प्रकृत हो वहाँ होता है— श्लेष अलङ्कार
- श्लिष्ट (श्लेषयुक्त) विशेषणों द्वारा अर्थात् अपकृत अर्थ का बोधन है— समासोक्ति अलङ्कार
- समासोक्ति अलङ्कार का लक्षण है—'परोक्तिभेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः'
- जहाँ वस्तु का (अभवन्) असम्भव या अनुपद्यमान सम्बन्ध (प्रकृति की अप्रकृत के साथ) उपमा की कल्पना होता है, वहाँ अलङ्कार होता है— निदर्शना अलङ्कार
- निदर्शना अलङ्कार का लक्षण है—'निदर्शना-अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः।'
- 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
  तितीर्षुर्दुस्तरं सोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।' प्रस्तुत पद्य में अलङ्कार है— निदर्शना
- 'इदं किलात्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
  ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।। प्रस्तुत पद्य में अलङ्कार है— निदर्शना
- जहाँ प्रस्तुत अर्थ की प्रतीति कराने वाली जो अप्रस्तुत अर्थ की प्रशंसा का वर्णन है, वह कहलाता है— अप्रस्तुत प्रशंसा
- अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार का लक्षण है— अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रय।'

- अप्रस्तुतप्रशंसा के भेद हैं— पाँच
- अतिशयोक्ति का अर्थ है—'अतिशयिता प्रसिद्धिम् अतिक्रान्ता लोकातीता उक्तिः'।
- अतिशयोक्ति के वर्णन में होती है— लोकोत्तरता
- जहाँ पर उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण (अन्तर्भाव) करके काल्पनिक और अभेद का निश्चय (अध्यवसान) करना, यह है— प्रथम प्रकार की अतिशयोक्ति
- वर्णनीय प्रस्तुत का अन्य रूप में वर्णन करना, यह है— द्वितीय प्रकार की अतिशयोक्ति
- 'यदि' शब्द के पर्यायवाचक 'चेत्' यह है— चतुर्थ प्रकार की अतिशयोक्ति
- जहाँ एक ही साधारण धर्म को दो बार (भिन्न शब्दों से) कहा जाए वह है— प्रतिवस्तुपमा अलङ्कार
- प्रतिवस्तुपमा के भेद हैं— दो
  1. केवलरूप 2. मालारूप
- जहाँ पर उपमान, उपमेय, उनके विशेषण तथा साधारण धर्म का अलङ्कार का दोनों वाक्यों (उपमान तथा उपमेय) में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता है वहाँ होता है— दृष्टान्त अलङ्कार
- दृष्टान्त के भेद है— दो, (साधर्म्य एवं वैधर्म्य से)
- दृष्टान्त का लक्षण है—'दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्'
- जहाँ (क) उपमेय (प्रकृत) और उपमान (अप्रकृत) रूप वस्तुओं के (क्रियादिरूप) धर्म का एक बार (सकृद वृत्तिः) ग्रहण किया जाता है या (ख) बहुत सी क्रियाओं के होने पर किसी कारण का एक बार ग्रहण किया जाता है, वह है— दीपक अलङ्कार
- 'सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्। सैव क्रियासु बह्वीषु कारकस्येति दीपकम्।।' यह लक्षण है— दीपक
- दीपक अलङ्कार के भेद हैं— दो
  1. क्रिया दीपक 2. कारक दीपक

- तुल्ययोगिता अलङ्कार का लक्षण है—'नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता'
- व्यतिरेक अलङ्कार का लक्षण है—'उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः।'
- व्यतिरेक अलङ्कार के भेद हैं— चौबीस (24)
- 'क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना।' यह लक्षण है— विभावना अलङ्कार का
- क्रिया (कारण) का निषेध (अभाव) होने पर भी फलोत्पत्ति होना ही है— विभावना अलङ्कार
- विशेषोक्ति अलङ्कार का लक्षण है— 'विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः'
- सम्पूर्ण प्रसिद्ध कारणों के होने पर फल का न कहना है— विशेषोक्ति अलङ्कार
- **'अलङ्कारसर्वस्व' के निर्माता रुय्यक (12वीं सदी का मध्यभाग) ने कितने अलंकारों का वर्णन किया है?— 67**

सादृश्यमूलक अलङ्कार (4+6+2+17 = 29)	2. विरोधमूलक अलङ्कार— 11
अ. भेदाभेदप्रधान— 4	3. शृंखलाबन्धमूलक अलङ्कार— 3
आ. आरोपमूलक अभेदप्रधान— 6	4. तर्कन्यायमूलक अलङ्कार— 2
इ. अध्यवसायमूलक अभेदप्रधान— 2	5. वाक्यन्यायमूलक अलङ्कार— 8
	6. लोकन्यायमूलक अलङ्कार— 7
ई. गम्यऔपम्यमूलकअलङ्कार— 17	7. गूढार्थप्रतीतिमूलक अलङ्कार—7
कुल सादृश्यमूलक अलङ्कार = 29	सादृश्यमूलक अलङ्कार = 38
कुल अलङ्कार 29 + 38 = 67	

विभिन्न आचार्यों के अनुक्रम में अलङ्कारों की संख्या

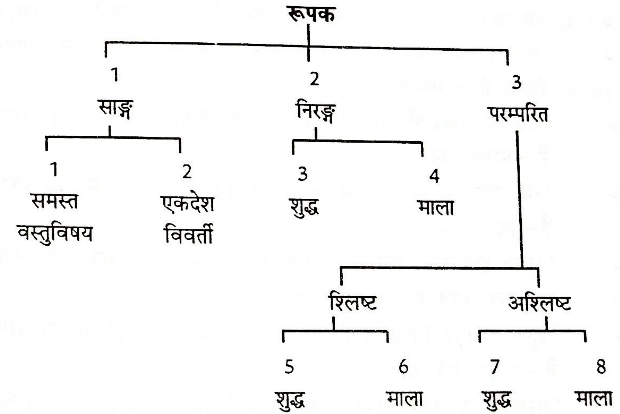
आचार्य (अलङ्कारशास्त्री)	ग्रन्थ	अलङ्कारों की संख्या
1. आचार्य भरत	नाट्यशास्त्र	4
2. भामह	काव्यालङ्कार	39
3. दण्डी	काव्यादर्श	35
4. उद्भट्ट	काव्यालङ्कारसारसंग्रह	40
5. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	33
6. रुद्रट	काव्यालङ्कार	52
7. भोज	सरस्वतीकंठाभरण	71
8. मम्मट	काव्यप्रकाश	67
9. रुय्यक	अलङ्कारसर्वस्व	75
10. वाग्भट्ट	वाग्भट्टालंकार	35
11. शोभाकर मित्र	अलङ्कार रत्नाकर	100
12. जयदेव	चन्द्रालोक	100
13. भानुदत्त	अलङ्कारतिलक	71
14. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	77
15. अप्पयदीक्षित	कुवलयानन्द	124
16. पण्डितराज जगन्नाथ	रसगंगाधर	70

+++

उपमा के 25 प्रकार निम्नलिखित हैं—

पूर्णोपमा— (1 श्रौती तथा 2 आर्थी) X (1 वाक्यगा, 2 समासगा, 3 तद्धितगा)	= 6
एकलुप्ता— (धर्मलुप्ता 5+उपमानलुप्ता 2+वाचकलुप्ता 6)	= 13
द्विलुप्ता— (धर्मवाचकलुप्ता 2 + धर्मोपमानलुप्ता 2 + वाचकोपमेयलुप्ता 1)	= 5
त्रिलुप्ता—	= 1
कुल संख्या	= 25

मम्मट के अनुसार रूपक के भेद हैं—आठ (8)



+++

साहित्यदर्पण

- 'साहित्यदर्पण' के रचनाकार हैं—आचार्य विश्वनाथ
- 'काव्य' का अर्थ है—काव्यफल
- काव्याध्ययन का प्रयोजन है—चतुर्वर्ग
- विश्वनाथ के पिता का नाम था—चन्द्रशेखर
- विश्वनाथ थे—वैष्णव
- विश्वनाथ के पितामह का नाम था—नारायणदास
- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' यह काव्य का लक्षण है—विश्वनाथ का
- रसात्मक वाक्य को काव्य कहा है—विश्वनाथ ने
- रस को काव्य का आत्मभूत तत्त्व मानते हैं—विश्वनाथ
- विश्वनाथ के अनुसार काव्य की आत्मा है—रस
- रस ही जिसकी आत्मा है, वह है—रसात्मक
- जो आस्वादित हो, उन सबको कहते हैं—रस (रस्यते इति रसः)
- आचार्य विश्वनाथ ने किस आचार्य के काव्य लक्षण का खण्डन किया है?—मम्मट का
- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' यह काव्य-लक्षण है—मम्मट का
- 'रस एवात्मा साररूपतया जीवनाधायको यस्य' इसके कथनकार हैं—विश्वनाथ
- 'रस्यते इति रसः' इस कथन द्वारा विश्वनाथ का अभिप्राय है—रस, रसाभास, भाव एवं भावभास का
- 'शून्यं वासगृहं विलोक्य शयनादुत्थाय.....चिरं चुम्बिता' यह उदाहरण है—शृंङ्गार रस का
- 'यस्यालीयत शल्कसीम्नि......पदे रोदसी' यह उदाहरण है—भाव का
- 'मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रे..........कृष्णसारः' यह उदाहरण है—रसाभास का

- 'यस्यालीयत-शल्कसीम्नि' इसमें वर्णन है—विष्णु के दशावतार का
- काव्य के अपकर्षों को कहते हैं—दोष (दोषास्तस्यापकर्षकाः)
- 'उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालंकाररीतयः' यह है—गुण
- 'योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः' यह है—वाक्य
- 'श्रोतुर्जिज्ञासारूपः' यह है—आकांक्षा
- 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' यह उदाहरण है—आकांक्षा का
- 'पदार्थानां परस्पर सम्बन्धे बाधाभावः' यह है—योग्यता
- 'वह्निना सिञ्चति' यह उदाहरण है—योग्यता का
- किसी ज्ञान की समाप्ति या पूर्ति न होना है—आकांक्षा
- साहित्यदर्पणकार के अनुसार गुण की स्थिति होती है—रसमात्र में
- 'रीतिरात्मा काव्यस्य' वामन के इस काव्य लक्षण का खण्डन किया है—विश्वनाथ ने
- 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' आनन्दवर्धन के इस काव्य लक्षण का खण्डन किया है—विश्वनाथ ने
- 'अदोषं गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम्' भोज के इस काव्य लक्षण का खण्डन किया है—विश्वनाथ ने
- विश्वनाथ के अनुसार वक्रोक्ति है—अलंकार
- वाक्य के भेद हैं—दो 1. वाक्य 2. महावाक्य
- अर्थ के प्रकार हैं—तीन 1. वाच्य 2. लक्ष्य 3. व्यंग्य
- जो अर्थ अभिधा से बोधित हो, वह है—वाच्य
- जो अर्थ लक्षणा से बोधित हो, वह है—लक्ष्य
- जो अर्थ व्यञ्जना से बोधित हो, वह है—व्यंग्य
- शब्द की शक्तियाँ हैं—तीन, 1. अभिधा, 2. लक्षणा, 3. व्यंजना
- 'संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा' यह है—अभिधा
- 'संकेतित' का अर्थ है—मुख्य
- 'लक्ष्यार्थस्य पूर्वोपस्थितः यः व्यापारः' यह है—मुख्यार्थ

- मुख्यार्थ का तात्पर्य है— अभिधा
- 'अभिधा' का अन्य नाम है— अग्रिमा
- संकेतित अर्थ की प्रतिपादक शक्ति है— अभिधा
- अभिधा वृत्ति से बोधित अर्थ का नाम है— संकेतग्रह
- 'संकेतो गृह्यते जातौ गुणद्रव्यक्रियासु च' यह है— शक्तिग्रह
- संकेत शब्द हैं— चार
  1. जाति 2. गुण 3. द्रव्य 4. क्रिया
- जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य, यह उपाधि है— पदार्थों की
- वस्तु के साध्य धर्म कहलाते हैं— क्रिया
- मीमांसक मतानुसार शब्द की अन्य शक्ति है— तात्पर्या
- 'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थ: प्रतीयते।
  रूढ़े: प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता'।। यह है— लक्षणा
- लक्षणा के प्रधान कारण हैं— चार
  1. मुख्यार्थ बाध 2. मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से सम्बन्ध
  3. रूढि 4. प्रयोजन
- 'ययान्योऽर्थ: प्रतीयते' यहाँ अन्यार्थ द्वारा अभिप्राय है— लक्ष्यार्थ का
- विश्वनाथ के अनुसार लक्षणा के कुल भेद हैं— 80
- 'रूढ़िमती लक्षणा' का उदाहरण है— कलिङ्ग: साहसिक:
- 'प्रयोजनवती लक्षणा' का उदाहरण है— गङ्गायां घोष:
- 'रूढ़िलक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— कलिङ्ग साहसिक:
- 'रूढ़िउपादान लक्षणा' का उदाहरण है— श्वेतो धावति
- 'सारोपा रूढ़ि लक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— कलिङ्ग: साहसिक:
- 'साध्यावसानरूढ़ि लक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— कलिङ्ग: साहसिक:
- 'सारोपारूढ़िउपादानलक्षणा' का उदाहरण है— अश्व: श्वेतो धावति
- 'साध्यवसाना रूढ़ि लक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— श्वेतो धावति
- 'प्रयोजनवती लक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— गङ्गायां घोष:

- 'प्रयोजनवती उपादानलक्षणा' का उदाहरण है— कुन्ता: प्रविशन्ति
- 'प्रयोजनवती सारोपालक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— आयुर्घृतम्
- 'प्रयोजनवती साध्यवसाना लक्षणलक्षणा' का उदाहरण है— गङ्गायां घोष:
- प्रयोजनवती सारोपा उपादानलक्षणा' का उदाहरण है— एते कुन्ता: प्रविशन्ति
- प्रयोजनवती साध्यवसाना उपादानलक्षणा' का उदाहरण है— कुन्ता: प्रविशन्ति
- लक्षणलक्षणा का अन्य नाम है— जहत्स्वार्था
- विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते पर:'।
  सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।। यह है— व्यञ्जना
- शब्द तथा अर्थादि में रहने वाली वृत्ति कहलाती है— व्यञ्जना
- व्यञ्जना का अन्य नाम है— ध्वनि
- 'ध्वनि' काव्य कहलाता है— उत्तमकाव्य
- व्यङ्ग्यप्रधान काव्य है— ध्वनिकाव्य
- व्यञ्जना के भेद हैं— दो
  1. शाब्दी व्यञ्जना 2. आर्थी व्यञ्जना
- शाब्दी व्यञ्जना के भेद हैं— दो
  1. अभिधामूला 2. लक्षणामूला
- 'संयोगादिना अवाच्यार्थस्य प्रतीतिरूपशब्दव्यापार:' यह है— अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना
- 'संयोग' का उदाहरण है— सशंखचक्रो हरि:
- 'विप्रयोग' का उदाहरण है— अशंखचक्रो हरि:
- 'साहचर्य' का उदाहरण है— भीमार्जुनौ
- 'विरोधित' का उदाहरण है— कर्णार्जुनौ
- 'अर्थ' का उदाहरण है— स्थाणुं वन्दे

- ‘प्रकरण’ का उदाहरण है— सर्वं जानाति देवः
- ‘लिङ्ग’ का उदाहरण है— कुपितो मकरध्वजः
- ‘अन्य शब्द की सन्निधि’ का उदाहरण है—देवः पुरारिः
- ‘सामर्थ्य’ का उदाहरण है—मधुना मत्तः पिकः
- ‘औचित्य’ का उदाहरण है—पातु वो दयितामुखम्
- ‘देश’ का उदाहरण है— विभाति गगने चन्द्रः
- ‘काल’ का उदाहरण है— निशि चित्रभानुः
- ‘व्यक्ति’ का उदाहरण है—भाति रथाङ्गम्
- ‘स्वर’ का अभिप्राय है—उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि
- शैत्य और पावनत्व आदि प्रयोजनरूप धर्मो की प्रतीति का कारण है—लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना
- ‘लक्षणोपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम्। यया प्रत्याय्यते सा स्याद्व्यञ्जना लक्षणाश्रया।।’ यह व्यञ्जना है—लक्षणामूला
- ‘निःशेषच्युतचन्दनं स्तनतटं..................न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्’ यह उदाहरण है—बोद्धव्य-वैशिष्ट्य का
- ‘गुरुपरतन्त्रतया बत् दूरतरं’.... यह उदाहरण है—काकु वैशिष्ट्य का
- आर्थीव्यञ्जना के भेद हैं—तीन

  1. वाच्य 2. लक्ष्य 3. व्यङ्ग्य
- कुमारिल के अनुसार शब्द की चतुर्थ शक्ति है—तात्पर्या
- कुमारिलभट्ट का मत है—अभिहितान्वयवाद
- प्रभाकर का मत है— अन्विताभिधानवाद
- आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त ने विवेचन किया है—शान्तरस का
- भट्टनायक और उद्भट ने समर्थन किया है—शान्तरस का
- वात्सल्य रस को मानने वाले आचार्य हैं—विश्वनाथ
- करुण रस को प्रधान रस मानते हैं— भवभूति

- शृंगाररस को प्रधान रस मानते हैं—भोजराज
- अद्भुत रस को प्रधान रस मानते हैं—विश्वनाथ
- शान्तरस को प्रधान रस मानते हैं—अभिनवगुप्त
- रस को सुखात्मक मानते हैं—विश्वनाथ
- विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा। रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम्।। यह रस का लक्षण है—विश्वनाथ का
- विश्वनाथ रस की संख्या मानते हैं—9
- विश्वनाथ के अनुसार रसों के स्थायी भाव हैं—9
- शृंगार रस का स्थायी भाव है—रति
- शृंगार रस का वर्ण है—श्याम
- शृंगार रस का देवता है—विष्णु
- शृंगार रस के भेद हैं—दो 1. सम्भोग शृंगार 2. विप्रलम्भ शृंगार
- विप्रलम्भ शृंगार के भेद हैं—पाँच
- सम्भोग के प्रकार हैं—दो

  अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः।
  आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावःस्थायीति संमतः।। यह है—स्थायी भाव
- ‘मनोऽनुकूलऽर्थे मनसः प्रवणायितम्’ यह है—रति स्थायी भाव
- हास्य रस का स्थायी भाव है— हास
- हास्य रस का वर्ण है—शुक्ल
- हास्य रस का देवता है—प्रमथ
- ‘वागादिवैकृतैश्चेतोविकासो हास इष्यते’ यह है—हास स्थायी भाव
- करुण रस का स्थायी भाव है—शोक
- करुण रस का वर्ण है—कपोत
- करुण रस का देवता है—यमराज
- ‘इष्टनाशादिभिश्चेतोवैक्लव्यं शोकशब्दभाक्’ यह है—शोक स्थायी भाव

- रौद्र रस का स्थायी भाव है— क्रोध
- रौद्र रस का वर्ण है— लाल
- रौद्र रस का देवता है— रुद्र
- 'प्रतिकूलेष तैक्ष्ण्यस्यावबोधः क्रोध इष्यते' यह है— क्रोध स्थायी भाव
- वीर रस का स्थायी भाव है— उत्साह
- वीर रस का वर्ण है— सुवर्णवत्
- वीर रस का देवता है— महेन्द्र
- 'कार्यारम्भेषु संरम्भः स्थेयानुत्साह उच्यते' यह है— उत्साह स्थायी भाव
- बीभत्स रस का स्थायी भाव है— जुगुप्सा
- बीभत्स रस का वर्ण है— नील
- बीभत्स रस का देवता है— महाकाल
- 'दोषेक्षणादिभिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोद्भवा' यह है— जुगुप्सा
- भयानक रस का स्थायी भाव है— भय
- भयानक रस का वर्ण है— कृष्ण
- भयानक रस का देवता है— काल
- 'रौद्रशक्त्या तु जनितं चित्तवैक्लव्यदं भयम्' यह है— भय स्थायी भाव
- अद्भुत रस का स्थायी भाव है— विस्मय
- अद्भुत रस का वर्ण है— पीला
- अद्भुत रस का देवता है— गन्धर्व
- 'विविधेषु पदार्थेषु लोकसीमातिवर्तिषु विस्फारश्चेतसो'.....यह है— विस्मय स्थायी भाव
- शान्त रस का स्थायी भाव है— शम
- शान्त रस का वर्ण है— कुन्दपुष्पवत् (चन्द्रवत्)
- शान्त रस का देवता है— श्रीनारायण
- 'निरीहावस्थायां स्वात्मविश्रामजं सुखम्' यह है— शम स्थायी भाव
- विभाव के भेद हैं— दो

  1. आलम्बन 2. उद्दीपन

- नायक आदि होते हैं— आलम्बन विभाव
- व्यभिचारीभावों की संख्या है— 33
- विप्रलम्भ शृंगार में काम दशाएँ होती हैं— 10
- हास्य के भेद हैं— 6
- उत्तमश्रेणी के हास्य हैं— स्मित और हसित
- मध्यमश्रेणी के हास्य हैं— विहसित और अवहसित
- निम्नश्रेणी के हास्य हैं— अपहसित और अतिहसित
- साहित्यदर्पणकार वीररस के भेद मानते हैं— चार

  1. दानवीर 2. धर्मवीर 3. युद्धवीर 4. दयावीर
- अद्भुत रस नहीं मानते हैं— पण्डितराज जगन्नाथ
- रुपक के भेद हैं— 10

  1. नाटक 2. प्रकरण 3. भाव 4. व्यायोग 5. समवकार 6. डिम 7. ईहामृग 8. अंक 9. वीथी 10. प्रहसन
- विश्वनाथ के अनुसार नाटक में न्यूनतम अंक होता है— 5
- विश्वनाथ के अनुसार नाटक में अधिकतम अंक होता है— 10
- नाटक के नायक की कोटि होती है— धीरोदात्त (अधिकांशतः)
- नाटक की कथावस्तु होती है— इतिहास प्रसिद्ध
- नाटक में सामान्यरूप से रस होता है— शृंगार और वीर
- प्रकरण में अंक होते हैं— 10
- प्रकरण की कथा वस्तु होती है— कविकल्पित/लौकिक
- प्रकरण में अंगीरस होता है— शृंगार रस
- प्रकरण का नायक होता है— वैश्य, मन्त्री या विप्र
- प्रकरण के नायक की कोटि होती है— धीरप्रशान्त
- भाण में अंक होता है— एक
- भाण की कथावस्तु होती है— कविकल्पित
- भाण का नायक होता है— विट या पण्डित
- भाण का अंगी रस होता है— शृंगार या वीर

- व्यायोग में अंक है—एक
- व्यायोग की कथावस्तु होती है—इतिहास प्रसिद्ध
- व्यायोग के नायक की कोटि होती है—धीरोद्धत
- समवकार में अंक होते हैं—3
- समवकार का नायक होता है— देवता/मानव
- समवकार की कथावस्तु होती है—इतिहास पुराणादि प्रसिद्ध
- समवकार का अंगी रस होता है—वीर
- डिम में अंक होते हैं—4
- डिम की कथावस्तु होती है—इतिहासप्रसिद्ध
- डिम में अंगीरस होता है—रौद्र
- देवता, गन्धर्व, राक्षस भूतप्रेत आदि 16 नायक होते हैं—डिम में
- ईहामृग में अंक होते हैं—4
- ईहामृग की कथावस्तु होती है— मिश्रित
- ईहामृग के नायक की कोटि होती है—धीरोद्धत
- अंक (उत्सृष्टिकांक) में अंक होता है—1
- अंक (उत्सृष्टिकांक) का अंगीरस होता है—करुण
- अंक (उत्सृष्टिकांक) की कथावस्तु होती है—इतिहास प्रसिद्ध
- अंक (उत्सृष्टिकांक) का नायक होता है—साधारण
- वीथी में अंक होता है—1
- वीथी का नायक होता है—साधारण
- वीथी की कथावस्तु होती है—कविकल्पित
- वीथी का अंगीरस होता है—शृंगार
- प्रहसन में अंक होता है—1
- प्रहसन का नायक होता है—निन्दनीय पुरुष
- प्रहसन में अंगीरस होता है—हास्य
- प्रहसन की कथावस्तु होती है—कविकल्पित
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' उदाहरण है—नाटक का

- 'मृच्छकटिकम्' उदाहरण है—प्रकरण का
- 'लीलामधुरम्' उदाहरण है—भाण का
- सौगन्धिकाहरणम् एवं मध्यमव्यायोग उदाहरण हैं—व्यायोग के
- 'समुन्द्रमन्थनम्' उदाहरण है—समवकार का
- 'त्रिपुरदाह' उदाहरण है—डिम का
- 'कुसुमशेखरविजयादि' उदाहरण है—ईहामृग का
- 'शर्मिष्ठाययाति' उदाहरण है—अंक का
- 'मालविका' उदाहरण है—वीथी का
- 'कन्दर्पकेलि' उदाहरण है—प्रहसन का
- सर्गबन्ध होता है—महाकाव्य
- शृंगार, वीर और शांत में से कोई एक प्रधान रस होता है—महाकाव्य में
- धीरोदात्तादि गुणों से युक्त एक देवता अथवा कुलीन क्षत्रिय नायक होता है—महाकाव्य का
- महाकाव्य की कथावस्तु होती है—ऐतिहासिक या लोकप्रसिद्ध
- चतुर्वर्ग में से कोई एक प्रधान प्रयोजन होता है—महाकाव्य में
- महाकाव्य का मंगलाचरण होता है—नमस्कारात्मक, आशीर्वादात्मक या वस्तुनिर्देशात्मक
- महाकाव्य में सर्गों की संख्या कम से कम होती है— आठ
- महाकाव्य का प्रत्येक सर्ग प्रायः निबद्ध होता है— एक ही छन्द में
- आने वाली कथा की सूचना प्रायः दी जाती है—सर्गान्त में
- प्रत्येक सर्ग का अन्तिम छन्द भिन्न होता है—महाकाव्य का
- महाकाव्य के नामकरण का आधार होता है—चरित्रनाम चरित्रनायक-नाम, कविनाम
- सन्ध्या, सूर्य, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, वन, समुद्र, दिन आदि वर्णनीय विषय होते हैं—महाकाव्य के

✦✦✦

ध्वन्यालोक

(प्रथम उद्योत)

- ध्वन्यालोक के रचनाकार हैं— आचार्य आनन्दवर्धन
- आनन्दवर्धन का काल है— नवम शताब्दी
- आनन्दवर्धन के पिता का नाम है— नोण (देवीशतक के अनुसार)
- आनन्दवर्धन की रचनाओं की संख्या मानी जाती है— पाँच
  1. विषमवाण लीला 2. अर्जुनचरित 3. देवीशतक,
  4. तत्त्वालोक 5. ध्वन्यालोक
- आनन्दवर्धन का सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है— ध्वन्यालोक
- आनन्दवर्धन निवासी थे— कश्मीर के
- ध्वन्यालोक विभक्त है— उद्योत में
- ध्वन्यालोक में उद्योत हैं— चार
- आनन्दवर्धन थे— शैव
- ध्वनि को काव्य की आत्मा मानते हैं— आनन्दवर्धन
- 'काव्यस्यात्माध्वनि:' यह काव्य का लक्षण है— आनन्दवर्धन का
- तीन ध्वनिविरोधी सिद्धान्त का खण्डन किया गया है— प्रथम उद्योत में
- प्रथम ध्वनिविरोधी सिद्धान्त है— अभाववादी
- द्वितीय ध्वनिविरोधी सिद्धान्त है— लक्षणावादी (भाक्तवादी)
- तृतीय ध्वनिविरोधी सिद्धान्त है— अनिर्वचनीयतावादी
- ध्वनि का स्वरूप एवं उसकी स्थापना की गयी है— प्रथम उद्योत में
- ध्वन्यालोक में भाग हैं— तीन 1. कारिका 2. वृत्ति 3. उदाहरण
- ध्वन्यालोक पर लिखी गयी प्रसिद्ध टीका है— लोचन टीका
- 'लोचन टीका' के रचनाकार थे— अभिनवगुप्त

- ध्वनिवादी आचार्य हैं— आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, मम्मट विश्वनाथ, पण्डित जगन्नाथ इत्यादि
- ध्वनिसिद्धान्त को पाश्चात्य काव्य चिंतकों एवं दार्शनिकों ने कहा है— एस्थालिंगुवा सिद्धान्त (Astholingua Theory)
- ध्वन्यालोक के मंगलाचरण में वर्णन किया गया है— नृसिंहावतार विष्णु का
- ध्वन्यालोक का मंगलाचरण है— आशीर्वादात्मक
- ध्वनिविरोधी आचार्य हैं— छ:
  1. महिम भट्ट 2. भट्टनायक 3. कुन्तक,
  4. प्रतिहारेन्दु राजशेखर 5. क्षेमेन्द्र 6. धनञ्जय इत्यादि
- 'स्वेच्छाकेसरिण: स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दव:' यह है— मंगलाचरण
- 'त्रायन्तां वो मधुरिपो: प्रपन्नार्तिच्छिदो नखा:' इसमें 'मधुरिपो:' पद का अर्थ है— विष्णु (मधु नामक दैत्य का शत्रु)
- ध्वनिसिद्धान्त की प्रेरणा आनन्दवर्धन ने ली है— वैयाकरणों के स्फोट सिद्धान्त से
- 'बुधै:' इस पद का अर्थ है— काव्यतत्त्ववेत्ता
- आनन्दवर्धन ध्वनि के भेद मानते हैं— दो, 1. वाच्य, 2. प्रतीयमान
- प्रतीयमान का अर्थ है— व्यङ्ग्यार्थ
- कहीं-2 पर वाच्य के विधिरूप होने पर प्रतीयमान होता है— निषेधरूप
- 'भ्रमधार्मिक: विश्रब्ध:'— प्रस्तुत उदाहरण में वाच्य है— विधिरूप और प्रतीयमान निषेधरूप
- कहीं-2 वाच्य के निषेधरूप होने पर प्रतीयमान होता है— विधिरूप
- बाल्मीकि रामायण से विदित शोक श्लोक की अवस्था का वर्णन किया गया है— ध्वन्यालोक में
- 'शोक: श्लोकत्वमागत:' यह वर्णित है— ध्वन्यालोक में (5वीं कारिका)

- ध्वन्यालोक की वृत्ति में करुण रस का स्थायी भाव माना गया है—शोक
- यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ। व्यक्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।। यह ध्वनि की परिभाषा है— ध्वन्यालोक की
- 'उपसर्जनीकृत' प्रस्तुत पद का अर्थ है—गौण
- ध्वन्यालोक की किस कारिका में ध्वनि की परिभाषा दी गयी है?—13वीं कारिका (प्रथम उद्योत)
- 'सहृदय' की परिभाषा दी गयी है— ध्वन्यालोक की टीका 'लोचन' में
- 'लोचन' के रचयिता हैं— अभिनवगुप्त
- भक्ति और ध्वनि क्या एक है?— नहीं
- किस कारिका में कहा गया है कि भक्ति और ध्वनि दोनों एक नहीं है?—'भक्त्या विभर्ति नैकत्वं रुपभेदादयं ध्वनिः।
- किसके कारण भक्ति ध्वनि का लक्षण नहीं है?—'अतिव्याप्तेरथाव्याप्तेर्न चासौ लक्ष्यते यया।
- वाचकत्व (अभिधा व्यापार) आश्रय है—लक्षणा (गुणवृत्ति) का
- व्यञ्जकत्त्व (व्यञ्जना व्यापार) एकमात्र मूल है—ध्वनि का
- काव्य का उत्तम रूप है—ध्वनि
- ध्वनि में भी सर्वोत्तम रूप है—रसध्वनि
- आनन्दवर्धन सर्वश्रेष्ठ रस मानते हैं—करुण रस
- क्या भक्ति ध्वनि का उपलक्षण हो सकती है?—नहीं
- भक्ति ध्वनि का उपलक्षण हो सकती है—हाँ (किसी एक भेद का) (कस्यचिद् ध्वनिभेदस्य सा तु स्थादुपलक्षणम्)
- ध्वनि के मुख्य भेद हैं—दो
  1. लक्षणामूल (अविवक्षितवाच्यध्वनि)
  2. अभिधामूल (विववक्षितान्यपरवाच्यध्वनि)

- लक्षणामूल ध्वनि के भेद हैं—दो
  1. अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यध्वनि 2. अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि
- अभिधामूल ध्वनि के भेद हैं—दो
  1. असंलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि 2. संलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि
- आनन्दवर्धन के अनुसार ध्वनि के भेद हैं— 18
- काव्य का आत्म-स्थानीय अर्थ है—प्रतीयमान
- आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य के भेद हैं—तीन
  1. उत्तम 2. मध्यम 3. अधम
- उत्तमकाव्य के भेद हैं—तीन 1. वस्तुध्वनि 2. रसध्वनि 3. अलंकारध्वनि
- सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है—रस ध्वनि
- अविवक्षितवाच्य ध्वनि को कहा जाता है—लक्षणामूला
- अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि को कहा जाता है—उपादान लक्षणामूला ध्वनि
- अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि को कहा जाता है—अजहत्स्वार्था
- अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि को कहा जाता है—लक्षणलक्षणामूला ध्वनि
- अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनि को कहा जाता है—जहत्स्वार्था
- विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनि को कहा जाता है—अभिधामूला
- असंलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि को कहा जाता है—रसादिध्वनि
- रसादि ध्वनि के प्रकार हैं—आठ
  1. रस, 2. भाव, 3. रसाभास, 4. भावाभास, 5. भावशान्ति, 6. भावोदय, 7. भावसन्धि, 8. भावशबलता
- सामान्यतया ध्वनि के भेद हैं—तीन
  वस्तु ध्वनि, अलंकार ध्वनि, रसध्वनि।
- संलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि के भेद हैं—तीन
  1. शब्दशक्तिमूलक 2. अर्थशक्तिमूलक 3. उभयशक्तिमूलक

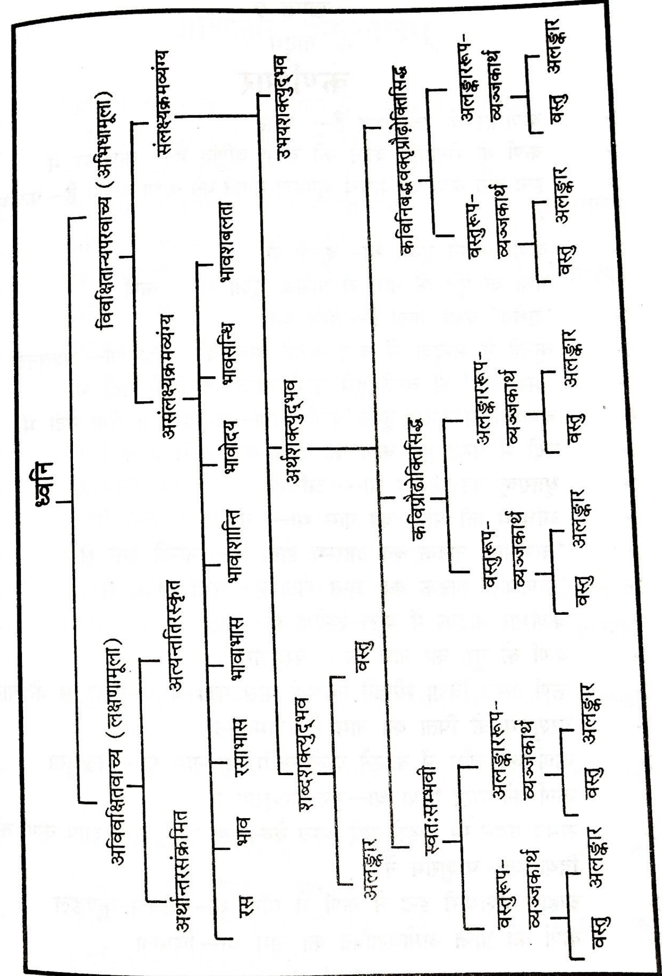
शब्दशक्त्युत्थ (शब्दशक्त्युद्भव) ध्वनि के भेद हैं—दो

- 1. अलंकारध्वनि 2. वस्तुध्वनि

अर्थशक्त्युद्भव ध्वनि के भेद हैं—बारह (12)

- प्रथमतः भेद किया जाता है—तीन
- 1. स्वतः सम्भवी (स्वतःसिद्ध), 2. कविप्रौढोक्तिमात्रसिद्ध, 3. कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्तिसिद्ध
- इन तीनों भेदों में से प्रत्येक के और भेद हैं—चार
  (क) वस्तु से वस्तु, (ख) वस्तु से अलङ्कार,
  (ग)अलङ्कार से वस्तु, (घ) अलङ्कार से अलङ्कार
- इस प्रकार अर्थशक्त्युद्भव के कुल मिलाकार भेद किये गये हैं—12 (3x4)
- उभयशक्त्युद्भव ध्वनि का भेद है—एक (1)
- इस प्रकार अठारह (18) ध्वनि भेदों की गणना निम्नलिखित है—अविवक्षितवाच्य (लक्षणामूला) ध्वनि है—2
- इस प्रकार ध्वनि भेदों की कुल संख्या है— 28

+++



खण्ड-9

नाट्य

कर्णभार

- कर्णभार के रचनाकार हैं— भास
- कर्ण के सेनापति बनने की कथा वर्णित है— कर्णभार में
- इन्द्र द्वारा कर्ण का कवच कुण्डल मांगने की कथा वर्णित है— कर्णभार में
- कर्ण उत्पन्न हुआ था— कुन्ती से
- राधा के पुत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ था— कर्ण
- 'राधेय' कहा जाता है— कर्ण को
- कुन्ती ने सन्दूक में बन्द करके कर्ण को छोड़ा था— अश्वनदी में
- 'अश्वनदी' से बहते हुये कर्ण आया— चर्मवती नदी में
- चर्मवती से बहता हुआ कर्ण आया— यमुना तथा गंगा नदी में
- नदी में बहते हुए कर्ण को देखा था— अधिरथ ने
- धृतराष्ट्र का सारथि था— अधिरथ
- अधिरथ की पत्नी का नाम था— राधा
- 'कर्णभार' नाटक का आरम्भ होता है— नान्दी पाठ से
- 'कर्णभार' नाटक का अन्त होता है— भरत वाक्य से
- कर्णभार नाटक में कुल श्लोक हैं— 25
- कर्ण के गुरु का नाम था— परशुराम
- कर्ण अस्त्र विद्या सीखने किसके पास गया था?— परशुराम के पास
- परशुराम के पिता का नाम है— जमदग्नि
- कर्ण की जाँघ में काटने वाले कृमि का नाम था— वज्रमुख
- कर्ण को शाप दिया था— गुरु परशुराम ने
- समय पड़ने पर तुम्हारे सारे अस्त्र बेकार हो जाएँ, ऐसा शाप कर्ण को दिया था— परशुराम ने
- ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र ने कर्ण से माँगा था— कवच-कुण्डल
- कर्ण को प्राप्त अमोघशक्ति का नाम था— विमला



अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रणेता हैं— महाकवि कालिदास
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की विधा है— नाटक
- कालिदास का समय माना जाता है— प्रथम शताब्दी
- महाकवि कालिदास का विश्वप्रसिद्ध नाटक है— अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- कालिदास का जन्म स्थान बताया जाता है— उज्जयिनी
- कालिदास के आश्रयदाता राजा थे— चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)
- कालिदास का समय है— ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- कालिदास की जाति थी— ब्राह्मण
- कालिदास उपासक थे— शिव के
- कालिदास का प्रिय छन्द है— अनुष्टुप्/ उपजाति
- कालिदास का अलंकार है— उपमा
- कालिदास की पत्नी का नाम था— विद्योतमा
- वैदर्भी रीति के कवि हैं— कालिदास
- प्रसादगुण का प्रयोग किया है— कालिदास ने
- काली देवी की उपासना से विद्या प्राप्त किया था— कालिदास ने
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास ने पत्नी से कहा था— 'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'
- इसके उत्तर में पत्नी विद्योतमा का कथन था— 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'
- पत्नी द्वारा कहे गये तीनों कथनों पर कालिदास ने रचना की थी— तीन ग्रन्थों की
- 'अस्ति' से कालिदास ने रचना किया था— 'कुमारसम्भवम्' की ('अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा')
- 'कश्चित्' से कालिदास ने रचना किया था— 'मेघदूतम्' की ('कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा')

- 'वाग्' से कालिदास ने रचना किया था— रघुवंशम् की ('वागर्थाविव सम्पृक्तौ')
- विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्नों में से एक थे— कालिदास
- कालक्रम की दृष्टि से कालिदास की प्रथम रचना है— ऋतुसंहार
- कालक्रम की दृष्टि से कालिदास की अन्तिम रचना है— अभिज्ञान-शाकुन्तलम्
- 'दीपशिखा' उपाधि है— कालिदास की
- 'कविकुल गुरु' कहा जाता है— कालिदास को
- 'रघुकार' यह उपाधि है— कालिदास की
- 'कविताकामिनीविलास' उपाधि है— कालिदास की
- 'उपमासम्राट' कहा जाता है— कालिदास को
- 'मालविकाग्नि की प्रस्तावना में कालिदास ने सादर स्मरण किया है— भास, सौमिल्ल आदि को
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में प्रधान रस है— शृंगार (सम्भोग शृंगार)
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कुल अंक हैं— 7
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का उपजीव्य ग्रन्थ है— महाभारत के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (88—74 अध्याय तक) एवं पद्मपुराण का स्वर्गखण्ड
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के नाटक की रीति है— वैदर्भी
- 'नाटक' को किस काव्य की विधा में रखा जाता है?— दृश्यकाव्य
- 'शाकुन्तलम्' में कौन सा रस अंगी है— शृंगार रस (सम्भोग शृंगार)
- कालिदास किस रीति के प्रतिष्ठित आचार्य है?— वैदर्भी रीति
- 'वैदर्भी रीति सन्दर्भे विशिष्यते' यह कथन किस महाकवि की तरफ संकेत करता है?— कालिदास
- कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति की प्रधानता है?— कैशिकी
- दुष्यन्त के पूर्वज थे— पुरु
- 6 ऋतुओं का वर्णन है— ऋतुसंहार में

- ऋतुसंहार में सर्ग हैं— 6
- ऋतुसंहार में श्लोक हैं— 144
- दुष्यन्त राजा था— हस्तिनापुर का
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का नायक है— दुष्यन्त
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की नायिका है— शकुन्तला
- शकुन्तला किस कोटि की नायिका है?— मुग्धा
- दुष्यन्त किस प्रकार का नायक है?— धीरोदात्त
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अंक का नाम है— आश्रम प्रवेश
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के द्वितीय अंक का नाम है— आश्रम निवेश
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के तृतीय अंक का नाम है— मिलन अंक
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का नाम है— विदा अंक
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पञ्चम अंक का नाम है— प्रत्याख्यान
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के षष्ठ अंक का नाम है— पश्चात्ताप
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के सप्तम अंक का नाम है— पुनर्मिलन अंक
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में करुण रस का प्रयोग हुआ है— चतुर्थ अंक में
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का मङ्गलाचरण है— आशीर्वादात्मक
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मङ्गलाचरण में छन्द है— स्रग्धरा
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मङ्गलाचरण में स्तुति की गयी है— अष्टमूर्ति शिव की
- 'या सृष्टिः स्रष्टुराद्या' यह श्लोक है— अभिज्ञानशाकुन्तलम के मङ्गलाचरण का
- मङ्गलाचरण में शंकर जी के कितने रूपों का उल्लेख है?— अष्टविध
- मङ्गलाचरण में शंकर जी के साथ ही किसका संकेत है?— नाटकीय घटनाओं का
- दुष्यन्त की दृष्टि में 'वनलता' से अभिप्राय है— आश्रमवासिनी कन्याएँ

- दुष्यन्त की दृष्टि में 'उद्यानलता' से अभिप्राय है— अन्तःपुर की कन्याएँ
- 'स्रष्टुराद्या सृष्टिः' यह पंक्ति किस पात्र की तरफ संकेत करती है— शकुन्तला की
- दुष्यन्त का विनोद प्रिय मित्र था— माढव्य
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का विदूषक है— माढव्य
- शकुन्तला के मूल पिता हैं— विश्वामित्र
- शकुन्तला को उत्पन्न करने वाली माँ का नाम है— मेनका
- शकुन्तला की दोनों सखियों का नाम है— 1. अनसूया 2. प्रियम्वदा
- शकुन्तला के पालक पिता हैं— महर्षि कण्व
- 'श्लोकचतुष्टयम्' किस अंक से सम्बन्धित है? चतुर्थ अंक
- महर्षि कण्व के प्रमुख शिष्य हैं— दो 1. शार्ङ्गरव 2. शारद्वत
- दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ था— गान्धर्व विवाह
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का प्रधान रस है— करुण
- चन्द्रवंश के संस्थापक थे— सोम
- सोम पुत्र थे— अत्रि के
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के तृतीय अंक का रस है— संभोग शृंगार
- महर्षि कण्व का आश्रम था— मालिनी नदी पर
- शकुन्तला को वल्कल बांधती है— प्रियंवदा
- आभूषणों के विषय में नारद से पूछँती है— गौमती
- पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद शकुन्तला को देते हैं— महर्षि कण्व
- महर्षि कण्व शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं— त्रिष्टुप् छन्द में
- शकुन्तला का पालन-पोषण हुआ था— महर्षि कण्व के आश्रम में
- महर्षि कण्व गए थे— सोम-तीर्थ
- शकुन्तला के विपरीत भाग्योपशमन के लिए कण्व गए थे— सोम तीर्थ

- दुष्यन्त किस वृक्ष के नीचे विश्राम करता है?— सप्तपर्ण
- दुष्यन्त का सारथि था— सूत
- दुष्यन्त का द्वारपालक था— रैवतक
- राजमाता का संदेश दुष्यन्त के पास लेकर आता है— करभक
- दुष्यन्त की प्रथम पत्नी का नाम था— वसुमती
- दुष्यन्त की दो रानियाँ थी— 1. वसुमती 2. हंसपदिका
- पाँचवें अंक में गीत गाती है— हंसपदिका
- शकुन्तला को शाप दिया था— दुर्वासा ऋषि ने
- शकुन्तला को शाप दिये जाने का कारण था— अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि द्वारा स्वयं को तिरस्कृत मानना
- शकुन्तला के शाप की जानकारी थी— प्रियम्वदा एवं अनसूया को
- शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा द्वारा शाप मिला था— चतुर्थ अंक में
- शाप की उद्भावना कालिदास ने की है— चतुर्थ अंक में
- प्रेम की आदर्शता के कारण की गयी— शाप की उद्भावना
- शाप का असर शुरू हुआ था— पञ्चम अङ्क से
- हस्तिनापुर लौटने के पूर्व दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दिया गया उपहार था— स्वनामांकित अंगूठी
- अंगूठी दिखाने की बात कही थी— शकुन्तला की सखी ने
- अंगूठी दिखाने की बात कही गयी थी— शापभय से
- शकुन्तला की अंगूठी गिरी थी— शचीतीर्थ में
- शकुन्तला की अंगूठी प्राप्त होती है— छठे अंक में
- शकुन्तला की अंगूठी प्राप्त होती है— धीवर मीनपालक को
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का गद्य है— शौरसेनी प्राकृत
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् का पद्य है— महाराष्ट्री प्राकृत
- राजा का साला था— श्याल
- सानुमती सखी थी— मेनका की
- दुष्यन्त का मन्त्री था— पिशुन

- कण्व प्रवास से वापस आते हैं—चतुर्थ अंक में
- कण्व 'मिश्रा' शब्द का प्रयोग करते हैं—शार्ङ्गरव के लिए
- दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं—वंशस्थ छन्द में
- वनस्पतियों का स्वामी है—चन्द्रमा
- कण्व को शकुन्तला के विवाह और गर्भ के बारे में पता चलता है—छन्दोमयी वाणी से
- शकुन्तला के साथ गए शिष्यों के नाम हैं—शार्ङ्गरव, शारद्वत
- कण्व की धर्म भगिनी थी—गौतमी
- शकुन्तला को राजा के पास से ले गयी थी—ज्योतिपुञ्ज
- दुर्जय नामक राक्षस के वध के लिए इन्द्र का सन्देश लेकर आता है—मातलि
- इन्द्र का सारथि था—मातलि
- कालनेमि के वंशज से था—दुर्जय राक्षस
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम था—मारीच का
- दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम था—सर्वदमन (भरत)
- दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है—हेमकूट पर्वत पर (मारीच आश्रम)
- भरत का रक्षासूत्र किस औषधि का था?—अपराजिता
- अपराजिता नामक रक्षासूत्र जाकर्म के समय दिया था—मारीच ने
- राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन है—षष्ठ अंक में
- राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है—सप्तम अंक में
- नाटक में भरत वाक्य बोलता है—दुष्यन्त
- भरत वाक्य में छन्द है—रुचिरा
- शकुन्तला की विदाई का वर्णन है—चतुर्थ अंक में
- राजा दुष्यन्त मृग का पीछा करते हुए किसके आश्रम में प्रवेश करता है?—महर्षि कण्व के
- तीर्थयात्रा पर गये कण्व की अनुपस्थिति में विवाह होता है—शकुन्तला और दुष्यन्त का

- शकुन्तला को महर्षि कण्व किसके साथ पतिगृह (हस्तिनापुर) भेजते हैं—शारद्वत, शार्ङ्गरव और गौतमी
- आश्रम की अध्यक्षा थी—गौतमी
- शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम के बाद निवास करती है—ऋषि मारीच के आश्रम में
- स्वर्ग से लौटते समय 'परिवह' नामक वायु मार्ग से आता है—दुष्यन्त
- हेमकूट पर्वत पर आश्रम था—ऋषि मारीच का
- किसके अनुनय-विनय से संतुष्ट दुर्वासा ऋषि शाप-निवृत्ति का उपाय बताते हैं—प्रियम्वदा को
- 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' यह उक्ति है—कण्व की
- नाटकों में भरत वाक्य का प्रयोग होता है—अन्त में
- 'प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः' यह भरत वाक्य किस नाटक में है?—अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- राजा की मनः स्थिति जानने के लिए मेनका ने भेजा था—सानुमती को
- 'अहोमधुरमासां दर्शनम्' यह उक्ति है—दुष्यन्त की
- 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' यह उक्ति है—दुष्यन्त की
- 'विधिना दर्शितं प्रभुत्वम्' यह उक्ति है—शकुन्तला की
- कण्व को कहा जाता है—काश्यप
- अभिज्ञान का सम्बन्ध है—अंगुलीयक से है
- शकुन्तला ने विदाई के समय आलिङ्गन किया था—वन ज्योत्सना लता का
- सर्वप्रथम शाप वृत्तान्त सखियों ने बताया—कण्व को
- 'अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत' यह उक्ति है—दुर्वासा की
- 'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' यह उक्ति है—कण्व की
- 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्ठमुत्कण्ठया' यह उक्ति है—कण्व की

- 'अनिवर्णनीयं परकलत्रम्' यह उक्ति है—दुष्यन्त की
- अग्निगर्भा शमी के समान है—शकुन्तला
- शकुन्तला के ऋषि विश्वामित्र एवं मेनका की पुत्री होने की बात दुष्यन्त को बताती है—अनसूया
- दुष्यन्त विदूषक माढव्य को हस्तिनापुर भेजता है—द्वितीय अंक में
- दुष्यन्त का पुरोहित था—देवरात
- मोर 'मार्कण्डेय' था—मिट्टी का
- सर्वप्रथम 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अंग्रेजी अनुवाद (1789ई.) में किया था—सर विलियम जोन्स ने
- 'शुद्ध विषकम्भक' का प्रयोग है—तृतीय अंक के प्रारम्भ में
- धीवर प्रसंग 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के किस अंक में आया है?—षष्ठ अंक में
- दुष्यन्त का मित्र था—इन्द्र
- इन्द्र के पुत्र का नाम था—जयन्त
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में छन्दो का प्रयोग हुआ है—24
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है—आर्याछन्द(39)
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में आर्याछन्द के बाद सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है—वसन्ततिलका (30)
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में सर्वाधिक अलंकारों का प्रयोग हुआ है—उपमा और अर्थान्तरन्यास
- विदूषक पहली बार मञ्च पर आता है—द्वितीय अंक में
- दुष्यन्त का सेनापति था—भद्रसेन
- ऋषि मरिचि का शिष्य जो शकुन्तला-दुष्यन्त के मिलन की सूचना कण्व को देने जाता है, वह है—गालव
- राजा दुष्यन्त का कञ्चुकी है—वातायन
- दो उद्यानपालिकाएँ परिभृतिका एवं मधुकरिका वसन्तोत्सव की तैयारी में लगी थीं—षष्ठ अंक में

- राजा दुष्यन्त की द्वारपालिका है—वेत्रवती
- 'स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु' यह है—अभिज्ञानशाकुन्तलम् (पञ्चम अंक) से
- मधुकरिका राजा दुष्यन्त की है—परिचारिका
- मारीच की पत्नी का नाम है—अदिति (दाक्षायणी)
- मारीच के आश्रम में सर्वदमन के साथ रहने वाली तापसी थी—सुव्रता
- दुष्यन्त और विदूषक की बात षष्ठ अंक में अदृश्य रूप से सुनती है—सानुमती
- इन्द्र की पत्नी थी—इन्द्राणी
- अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं—ऋषि दुर्वासा
- दुर्वासा के शाप का असर दिखाई पड़ता है—पञ्चम अंक में
- शकुन्तला ने जलवन्दना की थी—शचीतीर्थ में
- गंगा के तट पर स्थित था—शचीतीर्थ
- कमल पत्र पर नाखून से प्रेम पत्र शकुन्तला ने लिखा था—तृतीय अङ्क में
- कमल पत्र पर नाखून से प्रेम पत्र लिखने की सलाह शकुन्तला को दी थी—प्रियम्वदा ने
- प्रेम पत्र को राजा दुष्यन्त के पास पहुँचाती है—प्रियंवदा
- राजा दुष्यन्त शकुन्तला एवं उसकी सखियों का चित्र बनाता है—षष्ठ अंक में
- दुष्यन्त हंसपदिका के गीत की प्रशंसा करता है—पञ्चम अंक में
- 'धनमित्र' नामक व्यापारी की मृत्यु होती है—षष्ठ अंक में
- 'धनमित्र' नामक व्यापारी की सारी सम्पत्ति दुष्यन्त देता है—उसके गर्भस्थ पुत्र को
- इन्द्र अपना आधा सिंहासन किसके लिए छोड़ देता है?—दुष्यन्त
- राजा दुष्यन्त को माला पहनायी जाती है—मन्दार माला
- 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के नान्दी में प्रार्थना की गयी है—अष्टमूर्ति शिव की

- दुष्यन्त द्वारा तिरस्कृत शकुन्तला को प्रसव तक अपने घर में रखने को तैयार होते हैं—सोमरात
- नटी आरम्भ में गाती है—दो छन्द, 1. आर्या, 2. उद्गाथा
- प्रथम अंक के आरम्भ में सूत धनुष पर बाण चढ़ाये राजा की उपमा देता है—शिव से
- वैखानस राजा को चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देता है—प्रथम अंक में
- कण्व के सोमतीर्थ जाने की बात दुष्यन्त को बताता है—वैखानस
- राजा आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व अपने आभूषण और धनुष दे देता है—सारथि को
- तृतीय अंक का आरम्भ होता है—विषकम्भक से
- आश्रम प्रवेश के समय राजा की फड़कती है—दाहिनी भुजा
- दुष्यन्त, शकुन्तला के प्रति अपने प्रेम को कहता है—विदूषक से
- सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है—दाहिनी भुजा का फड़कना
- राजा दुष्यन्त से परिचय पूँछती है—अनसूया
- शकुन्तला के जन्म का वृत्तान्त दुष्यन्त को बताती है—अनसूया
- गौतमी नदी के किनारे तपस्या कर रहे थे—विश्वामित्र (कौशिक)
- दुष्यन्त, शकुन्तला से गान्धर्व विवाह करता है—तृतीय अंक में
- शकुन्तला का स्वास्थ्य जानने के लिए आती हैं—गौतमी
- पुष्प चुनती हुई दो सखियों के प्रवेश के साथ आरम्भ होता है—चतुर्थ अंक
- स्वस्तिवाचन के समय शकुन्तला को आशीर्वाद देती है—तीन तापसियाँ
- पहली तापसी आशीर्वाद देती हैं—'महादेवी' शब्द प्राप्ति का
- दूसरी तापसी आशीर्वाद देती है—वीरपुत्र प्राप्ति का
- तीसरी तापसी आशीर्वाद देती है—पति से अधिक सम्मान पाने का
- शकुन्तला के लिए वृक्षों द्वारा प्रदत्त वस्त्र-आभूषण आदि लाते हैं—नारद व गौतम

- महर्षि कण्व पूरे नाटक में दिखायी देते हैं—चतुर्थ अंक में
- 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति' इस श्लोक के साथ चतुर्थ अंक में मंच पर प्रविष्ट होते हैं—महर्षि कण्व
- चतुर्थ अंक में कुल श्लोक हैं—22
- श्लोक चतुष्ट्य है—चतुर्थ अंक में
- चतुर्थ अंक के प्रसिद्ध चारों श्लोक कहे हैं—कण्व ने
- ययाति की पत्नी थी—देवयानी और शर्मिष्ठा
- देवयानी पुत्री थी—शुक्राचार्य की
- दानवों के राजा 'वृषपर्वा' की पुत्री थी—शर्मिष्ठा
- शर्मिष्ठा का पुत्र था—पुरु
- वृक्षों से शकुन्तला के जाने हेतु आज्ञा मांगते हैं—कण्व
- वृक्ष आज्ञा प्रदान करते हैं—कोयल की आवाज में
- वृक्षों द्वारा शकुन्तला के जाने की आज्ञा की पुष्टि कण्व करते हैं—अपरवक्त्र छन्द में
- मातलि राजा में क्रोध या वीरता जगाने के लिए आक्रमण करता है—विदूषक पर
- मातलि विदूषक पर आक्रमण करके उस किस महल के उपरी मंजिल पर ले जाता है?—मेघप्रतिच्छन्दनामक
- राजा दुष्यन्त आक्रमण हेतु किस परिचारिका से धनुष मांगता है—यवनी से
- इन्द्र पर आक्रमण किया था—दुर्जेय राक्षस
- दुर्जेय को सिर्फ मार सकता था—दुष्यन्त
- दुष्यन्त देवासुर संग्राम में जाते समय राज्यभार सौंपता है—पिशुन को
- राज्यभार पिशुन को सौंपने की बात दुष्यन्त बताने को कहता है—विदूषक को
- किन्नरों का पर्वत है—हेमकूट
- मातलि द्वारा दुष्यन्त के आगमन की सूचना देने जाते समय दुष्यन्त बैठा था—अशोक वृक्ष के नीचे

- 'वत्स, चिरंजीव, पृथिवी पालक' यह आशीर्वाद मारीच देते हैं—दुष्यन्त को
- अंगूठी के शचीतार्थ में जल तर्पण के समय गिरने की बात का सर्वप्रथम पता चलता है—गौतमी के मुख से
- दुर्वासा-शाप वृत्तान्त दुष्यन्त को बताते हैं—मारीच
- अदृश्य तेजोमयी मूर्ति के रूप में मेनका शकुन्तला को लेकर मारीच पत्नी के पास गयी थी—'अप्सरस्तीर्थ' से
- जीवों को बलात् वश में कर लेने के कारण भरत का नाम था—सर्वदमन
- शकुन्तला का सौन्दर्य वर्णन है—द्वितीय अंक में
- राजा दुष्यन्त और शार्ङ्गरव का विवाद है—पञ्चम अंक में
- राजा दुष्यन्त के शोक का वर्णन है—षष्ठ अंक में
- भ्रम वृत्तान्त का वर्णन है—प्रथम अंक में
- शकुन्तला की सखियों से राजा का वार्तालाप है—प्रथम अंक में
- कालिदास के सभी नाटक हैं—सुखान्त
- आंग्लकवि शेक्सपीयर के सभी नाटक हैं—दुःखान्त
- प्रकृति और मानव के बीच सह सामन्जस्य उपस्थापित किया है—कालिदास ने
- 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से करण अर्थ में 'करणाधिकरणयोश्च' सूत्र से 'ल्युट्' प्रत्यय से बना है—अभिज्ञानम्
- भगवान् शिव को अष्टमूर्ति कहा गया है—पुराणों में
- जलरूप, अग्निरूप, यजमानरूप, सूर्यरूप, चन्द्ररूप, आकाशरूप, पृथ्वीरूप तथा वायुरूप ये हैं—शिव की अष्टमूर्तियाँ



प्रमुख सूक्तियाँ

1. या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री' 1/1
2. प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः। 1/1
3. आ परितोषाद् विदुषां न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
   बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।। 1/2 (सूत्रधार)
4. सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गिसुरभिवनवाताः। 1/3 (सूत्रधार)
5. अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि। 1/4
6. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः। 1/7 (दुष्यन्त)
7. जन्मयस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
   पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।। 1/11 (वैखानस)
8. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। 1/14 (दुष्यन्त)
9. इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
   ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।। 1/16 (दुष्यन्त)
10. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्। 1/17 (दुष्यन्त)
11. 'सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं'। 1/17 (दुष्यन्त)
12. अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। 1/18 (दुष्यन्त)
13. कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावोराजर्षिः। (अनसूया)
14. कामं प्रिया सुलभा मनस्तु तद्भावदर्शनाश्वासि। 2/1 (दुष्यन्त)
15. कामी स्वतां पश्यति। 2/2 (दुष्यन्त)
16. 'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं'। 2/10 (दुष्यन्त)
17. लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुरापः कथमीप्सितोभवेत्? 3/11 (दुष्यन्त)
18. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। (प्रियंवदा)
19. विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
    स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।। 4/1 (दुर्वासा)

20. 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया', 4/6 (काश्यप)
21. सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्। 4/9 (काश्यप)
22. 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने', 4/18 (काश्यप)
23. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः। 4/22 (काश्यप)
24. पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः। 4/6 (कण्व)
25. कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव। 4/11 (दुर्वासा)
26. 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' 5/2 (दुष्यन्त)
27. 'अविश्रामोऽयं लोकतन्त्राधिकारः'। कञ्चुकी (पञ्चम अंक)
28. 'औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा', 5/6 (दुष्यन्त)
29. जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव। 3/10 (शार्ङ्गरव)
30. किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्। 5/13 (दुष्यन्त)
31. प्रियाऽप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः। 5/17 (शार्ङ्गरव)
32. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु। 3/22 (दुष्यन्त)
33. अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। 5/24 (शार्ङ्गरव)
34. वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षिष्यति द्विजम्। 6/28 (दुष्यन्त)
35. पतन्ति चक्षूंषि न दारुणाः शराः। 6/29 (मातलि)
36. स्वायंभुवान्मरीचेर्यः प्रबभूव प्रजापतिः।
    सुरासुरगुरुः सोऽत्र सपत्नीकस्तपस्यति।। 7/9 (मातलि)
37. श्रेयो दुःखं हि परिवर्तते। 7/13 (दुष्यन्त)
38. पुत्रस्य ते रणशिरस्ययमग्रयायी। 7/26 (मारीच)
39. आखण्डलसमो भर्ता जयन्तप्रतिमः सुतः। 7/28 (मारीच)
40. पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रतिरथः। 7/33 (मारीच)
41. प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्। 7/34 (दुष्यन्त)
41. सर्वं कान्तमात्मीयं पश्यति (दुष्यन्त)



उत्तररामचरितम्

- 'उत्तररामचरितम्' के प्रणेता हैं— भवभूति
- भवभूति के पितामह हैं— भट्टगोपाल
- भवभूति के पिता हैं— नीलकण्ठ
- भवभूति की माता हैं— जतुकर्णी
- नीलकण्ठ या भट्ट श्रीकण्ठ नाम था— भवभूति का
- भवभूति का गोत्र है— काश्यप
- कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखाध्यायी ब्राह्मण थे— भवभूति
- दक्षिण भारत में पद्मपुर के निवासी थे— भवभूति
- भवभूति के गुरु थे— ज्ञाननिधि
- 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' उपाधि है— भवभूति की
- 'पद्वाक्यप्रमाणज्ञ, परिणतज्ञ, शिखरिणीकवि, वश्यवाक्' उपाधियाँ हैं— भवभूति की
- भवभूति का प्रसिद्ध दार्शनिक नाम था— उदुम्बर
- 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' में 'पद' का अर्थ है— व्याकरण
- 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' में 'वाक्य' का अर्थ है— मीमांसा
- 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' में 'प्रमाण' का अर्थ है— न्यायशास्त्र
- भवभूति किस राजा के राजाश्रय में थे?— कन्नौज के राजा यशोवर्मा
- भवभूति का समय है— 680ई. से 750 ई. के बीच
- भवभूति की रचनाएँ हैं— तीन
  1. मालतीमाधव (प्रकरण) 2. उत्तररामचरित (नाटक)
  3. महावीरचरित (नाटक)
- भवभूति की तीनों कृतियों में अभाव है— विदूषक का
- भवभूति द्वारा रचित रुपकों की संख्या है— तीन

- 'मालतीमाधवम्' में प्रधान रस है— शृंगार रस
- 'महावीरचरितम्' में प्रधान रस है— वीर रस
- उत्तररामचरितम्' में प्रधान रस है— करुण रस
- तीनों रूपकों का अभिनय किया गया था— कालप्रियनाथ महोत्सव में
- गौड़ी रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं— भवभूति
- 'उत्तररामचरितम्' में रीति है— वैदर्भी
- भवभूति ने करुण वर्णन किया है— वैदर्भी में
- भवभूति ने वीररस एवं प्रकृति वर्णन किया है— गौड़ी रीति में
- ओजगुण के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं— भवभूति
- भवभूति के प्रियछन्द हैं— अनुष्टुप् और शिखरिणी
- भवभूति उपासक थे— शिव के
- भवभूति के नाटकों में मुख वृत्ति है— अभिधावृत्ति
- 'उत्तररामचरितम्' की विधा है— नाटक
- 'उत्तररामचरितम्' का आरम्भ होता है— नान्दी पाठ से
- 'उत्तररामचरितम्' का अन्त होता है— भरत वाक्य से
- 'उत्तररामचरितम्' में कुल अंक हैं— सात
- 'उत्तररामचरितम्' का उपजीव्य है— वाल्मीकीय रामायण-उत्तराकाण्ड सर्ग 42-97, पद्मपुराण पातालखण्ड 1-68 तक
- गर्भाङ्क है— सप्तम अंक
- प्रथम अङ्क का नाम है— चित्रदर्शन अंक
- द्वितीय का नाम अङ्क है— पञ्चवटी प्रवेश
- तृतीय का नाम अङ्क है— छाया अङ्क
- चतुर्थ का नाम अङ्क है— कौशल्या-जनक-मिलन
- पञ्चम अङ्क है— कुमार विक्रम
- षष्ठ अङ्क है— कुमार प्रत्यभिज्ञान
- सप्तम अङ्क है— सम्मेलन

- सप्तम अङ्क को कहा जाता है— गर्भाङ्क
- करुण रस प्रधान नाटक है— उत्तररामचरितम्
- 'वाग्वश्येवानुवर्तते' यह है— उत्तररामचरितम्
- प्रकृति को आलम्बन के रूप में लिया है— भवभूति ने
- भवभूति हैं— आदर्शवादी
- राम के राज्याभिषेक से लेकर सीता के पृथ्वी में अन्तर्ध्यान होने की कथा वर्णित है— उत्तररामचरितम् में
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक का आरम्भ होता है— चित्रदर्शन से
- 'उत्तररामचरितम्' में कुल श्लोकों की संख्या है— 256
- 'उत्तररामचरितम्' में अलंकारों का प्रयोग हुआ है— 38
- भवभूति ने 'उत्तररामचरितम्' में छन्दों का प्रयोग किया है— 19
- करुण रस के वर्णन में प्रयुक्त छन्द हैं— शिखरिणी तथा वसंततिलका
- शृंगार रस के वर्णन में प्रयुक्त छन्द है— मालिनी
- शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग किया गया है— 'उत्तररामचरितम्' में
- अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है— 84 श्लोकों में
- वसंततिलका छन्द का प्रयोग किया गया है— 26 श्लोकों में
- शिखरिणी छन्द का प्रयोग किया गया है— 30 श्लोकों में
- शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग किया गया है— 25 श्लोकों में
- सातवें अङ्क में केवल प्राकृत बोलती हैं— सीता
- षष्ठ अङ्क के विषकम्भक में प्राकृत बोलती हैं— विद्याधरी
- 'उत्तररामचरितम्' में अनुपस्थिति है— भरत की
- 'उत्तररामचरितम्' में राम हैं— राजा (भगवान नहीं)
- वशिष्ठ की पत्नी का नाम था— अरुन्धती
- अरुन्धती की उपमा दी गयी है— उषा देवी से
- अरुन्धती की उपमा उषादेवी से दिया था— जनक ने
- 'उत्तररामचरितम्' के चार अंकों में प्रयोग है— विषकम्भक का

- प्रथम अंक का स्थान है—अयोध्या
- द्वितीय अंक का स्थान है—दण्डकारण्य का जनस्थान प्रदेश
- तृतीय अंक का स्थान है—दण्डकारण्य का पञ्चवटी प्रदेश
- चतुर्थ से सप्तम तक का स्थान है—वाल्मीकि के आश्रम का समीपवर्ती स्थान
- 'उत्तररामचरितम्' का मंगलाचरण है—नमस्कारात्मक
- भवभूति के अनुसार सभी रसों का मूल है—करुण रस
- 'एकोरसः करुण एव' यह है—उत्तररामचरितम में (3/47)
- 'उत्तररामचरितम्' में प्रथम एवं द्वितीय अंक के मध्य अन्तराल है—12 वर्षों का
- पञ्चवटी में प्रवेश का काम हुआ है—द्वितीय अंक में
- राम सीता संवाद छाया रूप में किस अंक में है?—तृतीय
- जृम्भक अस्त्रों को भगवान् कृशाश्व ने दिया था—विश्वामित्र को
- विश्वामित्र ने जृम्भक अस्त्र को दिया था—राम को (ताड़का वध के समय)
- सीता-लोकापवाद सम्बन्धी सूचना राम को देने वाला गुप्तचर था—दुर्मुख
- चित्रवीथी के दृश्य वर्णित हैं—प्रथम अंक में
- महाराज दशरथ की पुत्री का नाम था—शान्ता
- शान्ता का विवाह हुआ था— ऋष्यशृङ्ग से
- ऋष्यशृङ्ग ने कितने वर्षों तक चलने वाला यज्ञ प्रारम्भ किया था?—12 वर्ष
- 12 वर्ष तक चलने वाले यज्ञ का वर्णन है—प्रथम अंक में
- महर्षि वशिष्ठ का सन्देश लेकर आते हैं—अष्टावक्र
- चित्रवीथी में कहाँ तक की कथा वर्णित थी?—सीता के अग्नि शुद्धि तक
- चित्रवीथी बनाने वाले चित्रकार का नाम है—अर्जुन

- लक्ष्मण की पत्नी का नाम है—उर्मिला
- लक्ष्मण के पुत्र का नाम है—चन्द्रकेतु
- चन्द्रकेतु के सारथि थे—सुमन्त
- दण्डकारण्य की वन देवता थी—वासन्ती
- सीता और राम की पुरानी सखी थी—वासन्ती
- नदी अधिष्ठात्री देवियाँ हैं—तमसा और मुरला
- महर्षि अगस्त्य की पत्नी का नाम है—'लोपामुद्रा'
- सीता दो बच्चों को जन्म देती है—गंगा के प्रवाह में
- दोनों बच्चों को प्रवाह से बाहर लाती है—सीता और गंगा
- दूध छोड़ने के बाद बालक रहते हैं—वाल्मीकि के पास
- गंगा के संरक्षण में रहती हैं—सीता
- सीता परित्याग के कितने वर्ष बाद राम दण्डकारण्य आते हैं?—12 वर्ष बाद
- राम शम्बूक वध के लिए जाते हैं—दण्डकारण्य
- जृम्भकास्त्र का प्रयोग पञ्चम अंक में किया था—लव ने
- जनक का अतिथि रूप में वाल्मीकि आश्रम में पदार्पण होता है—चतुर्थ अंक
- चन्द्रकेतु तथा लव के बीच दीर्घकालिक संवाद होता है—पञ्चम अंक में
- वीर रस का मनोहारी निदर्शन प्राप्त होता है—पञ्चम अंक में
- लव और चन्द्रकेतु का युद्ध होता है—षष्ठ अंक में
- भयावह प्रकृति वर्णन में किस गुण का आलम्बन है?— ओजगुण
- लव और चन्द्रकेतु किसके आने पर युद्ध रोक देते हैं?—राम के
- सभी पात्र वाल्मीकि के आश्रम में उपस्थित होते हैं—सप्तम अंक में
- सीता की पूर्ण पवित्रता की घोषणा करती हैं—गंगा और पृथ्वी

- गर्भनाटक का अभिनय किया जाता है—अप्सराओं द्वारा
- सीता परित्याग से लेकर लव और कुश के जन्म तक की कथा वर्णित है—गर्भनाटक में
- किसके आदेशानुसार सीता दूध छोड़ने तक दोनों बालकों का पालन करती हैं?—पृथ्वी के
- दोनों बालकों को वाल्मीकि को सौंपती हैं—गंगा
- लव और कुश को यज्ञोपवीत से पहले वाल्मीकि ने शिक्षा दी थी—आन्वीक्षिकी, वार्ता और दण्डनीति की
- 'उत्तररामचरितम्' में सीता परित्यागजन्य शोक ही है—स्थायिभाव
- 'उत्तररामचरितम्' में रीति है—गौड़ी और वैदर्भी
- 'उत्तररामचरितम्' में सबसे अधिक प्रयुक्त अलंकार है—उपमा
- 'उत्तररामचरितम्' में सबसे कम प्रयुक्त अलंकार है—अर्थान्तरन्यास
- 'श्याम' नामक वट वृक्ष का वर्णन है—उत्तररामचरितम् में
- ऋष्यशृङ्ग के आश्रम से सीधे महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में आती हैं—कौशल्या
- मूर्च्छित राम को होश में लाती हैं—सीता
- नाटक के अन्त में मंच पर आते हैं—महर्षि वाल्मीकि
- तृतीय अंक में कुल पात्र हैं—पाँच

  1\. तमसा 2. मुरला 3. सीता 4. राम 5. वासन्ती
- मुरला द्वारा गोदावरी के पास संदेश भेजा था—लोपामुद्रा ने
- मुरला यह बात बताती है—तमसा को
- प्राचेतस कहा गया है—महर्षि वाल्मीकि को
- राम के वन में आने का समाचार गंगा सुनती है—सरयू के मुख से
- 'कुलपति' कहा गया है—महर्षि वाल्मीकि को
- अमरसिन्धु कहा गया है—गंगा को
- सीता त्याग के लिए राम की भर्त्सना करती है—वासन्ती

- राम 'अश्वमेध' यज्ञ की सूचना देते हैं—तृतीय अंक में
- तमसा-मुरला के वार्तालाप से आरम्भ होता है—तृतीय अंक
- दाण्डायन और सौधातकि के वार्तालाप से आरम्भ होता है—चतुर्थ अंक
- प्रथम अंक में श्लोकों की संख्या है—51
- द्वितीय अंक में श्लोकों की संख्या है—30
- तृतीय अंक में श्लोकों की संख्या है— 48
- चतुर्थ अंक में श्लोकों की संख्या है— 29
- पञ्चम अंक में श्लोकों की संख्या है—35
- षष्ठ अंक में श्लोकों की संख्या है—42
- सप्तम अंक में श्लोकों की संख्या है—21
- चतुर्थ अंक में किसके पूछने पर लव अपने को वाल्मीकि का पुत्र बताता है—कौशल्या के
- लव यज्ञ का घोड़ा पकड़ता है— चतुर्थ अंक में
- 'उत्तररामचरितम्' का भरत वाक्य किस छन्द में है?—शार्दूलविक्रीडित में
- सीता द्वारा पाले गए हाथी, मयूर की चर्चा की गयी है—तृतीय अंक में
- 'उत्तररामचरितम्' नाटक है—सुखान्त
- मयूर किस वृक्ष पर बैठकर मधुर स्वर करता है? कदम्ब
- राम ने लोकानुरञ्जन के लिए सीता तक को त्याग देने की बात कही है—प्रथम अंक में
- 'स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि' यह कहा है— राम ने
- 'एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्' इस श्लोक से अन्त होता है—तृतीय अंक का
- 'एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्' इसे कहा है—तमसा ने

- 'एकोरसः करुण एव निमित्तभेदाद्' इसमें छन्द है—वसन्ततिलका
- लवणासुर का वध करने जाते हैं—शत्रुघ्न
- उत्तररामचरितम् में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक है—चन्द्रकेतु
- मूल कथा में अश्वमेधीय अश्व का रक्षक है—भरत पुत्र पुष्कल
- 'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते' यह उक्ति कही गयी है—भवभूति के सम्बन्ध में
- वासन्ती कुशलक्षेम पूछती है—लक्ष्मण का
- भवभूति की काव्यशैली है—वैदर्भी और गौड़ी
- 'उत्तररामचरितम्' में शम्बूक वध है—प्रकरी
- 'उत्तररामचरितम्' में सीता विषयक जनपवाद है—बीज
- 'उत्तररामचरितम्' में नायक राम की प्रकृति है—धीरोदात्त
- 'उत्तररामचरितम्' में नाटक में कितने पद वाली नान्दी प्राप्त होती है?—द्वादश
- 'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' यह उक्ति है—राम की
- 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः' यह सूक्ति है—'उत्तररामचरितम्' की
- राम ने स्वर्णमयी सीता के साथ यज्ञ किया था—अश्वमेध यज्ञ
- करुण रस का सर्वोत्तम कवि माना जाता है—भवभूति को
- राम-सीता का मिलन किस अङ्क में होता है?— सप्तम अंक में
- 'उत्तररामचरितम्' में 'कालप्रियनाथ' का अर्थ है— शिव
- 'विष्वङ्मोहः स्थगयति कथम्' में 'विष्वक्' पद का अर्थ है—चारों ओर से
- 'आलिम्पन्नमृतामायैरिव प्रलेपैः' में अमृतमय' पद में प्रत्यय है—मयट्
- 'पत्रिणाम्' पद का अर्थ है— शराणाम्
- 'अहो! उत्खातितमिदानी में परित्यागशल्यम्' यह कथन है—सीता का
- 'कदम्बयष्टिः स्फुटकोरकेव' इसमें अलंकार हैं—उपमा

- 'द्यामाभ्युदस्थादरिः' यहाँ 'अभ्युदस्थात्' पद में लकार है—लुङ्
- 'कुड्मल' पद का शब्दार्थ है—कली
- 'काकली' पद का अर्थ है—तोतली बोली
- 'रयः' पद का अर्थ है—वेग
- 'कुरङ्ग' पद का अर्थ है—मृग
- 'प्रियाशोको जीवं कुसुममिव' इसमें अलंकार है—उपमा
- 'त्वं जीवितं त्वमसि में हृदयं द्वितीयम्' इसमें अलंकार हैं—रूपक
- सीता का ज्येष्ठ पुत्र है—कुश
- भवभूति की अन्तिम रचना मानी जाती है—उत्तररामचरितम्
- भवभूति की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है—उत्तररामचरितम्
- 'भवभूतेः शिखरिणी निर्गलतरङ्गिणी' यह कथन है—क्षेमेन्द्र का
- सीता के परित्याग रूपी वनवास को कितने दिन बीत गए हैं?—12 वर्ष
- 'स्नपयति हृदयेशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते' यहाँ 'हृदयेश' पद से निर्देश है—राम का
- 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यह तमसा ने किससे कहा था?—सीता से
- सीता के कर्णमूल से लवलीलता के पत्ते को खींचता था—करिशावक
- पञ्चवटी में राम के साथ साक्षात् वार्तालाप करती है—वासन्ती
- 'करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी' यह कहा था—तमसा ने जानकी के लिए
- सीता को अदृश्य रहने का वरदान दिया था—भागीरथी ने
- 'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' यह कथन है—मुरला का
- 'उत्तररामचरितम्' में नदी के रूप में वर्णन नहीं है—वासन्ती का
- 'उत्तररामचरितम्' में पात्रों की कुल संख्या है—26
- 'किन्तु सन्तापकारिणो बन्धुजनविप्रयोगा' यह उक्ति है—सीता की

- 'एते हि हृदयमर्मच्छिदः संसारभावाः' यह उक्ति है— राम की
- तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः'— राम की (1/13)
- 'नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा.' — राम की (1/14)
- 'दुर्जनाऽसुखमुत्पादयति' यह कथन है— सीता की
- 'अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्' यह कथन है— लक्ष्मण का (1/28)
- 'सतां केनापि लोकस्याराधनं व्रतम्' यह कथन है— राम का
- 'पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः' यह कथन है— मुरला का
- 'प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते तत्रैष निरतो जनः' यह कथन है— तमसा का
- 'प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य' यह कथन है— तमसा का
- 'अन्तः करण तत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेह संश्रयात्' यह कथन है— तमसा का
- 'आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते' यह कथन है— तमसा का
- 'हस्त तिर्यञ्चोऽपि परिचयमनुरुन्धते' यह कथन है— राम का
- 'कर्त्तव्यानि खलु दुःखितैर्दुः खनिर्वापणानि' यह कथन है— तमसा का
- 'शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते' यह कथन है— तमसा का
- 'प्रियशोको जीवं कुसुममिव धर्मो ग्लपयति' यह कथन है— तमसा का
- 'ननु लोभो हि रुदितम्' यह कथन है— तमसा का
- 'कियच्चिरं वा मेधान्तरेण पूर्वचन्द्रदर्शनम्' यह कथन है— सीता का
- 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः' यह कथन है— अरुन्धती का
- 'पुरन्ध्रीणां चित्त कुसुमसुकुमार हि भवति' यह कथन है— अरुन्धती का



उत्तररामचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ

प्रथम अङ्क

- इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे। 1/1
- यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते। 1/2 (सूत्रधार)
- राजा शान्तां नाम व्यजीजनत्। 1/4 (नट)
- धर्मासनाद् विशति वासगृहं नरेन्द्रः (नट)
- सङ्कटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता। 1/8 (राम)
- विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत। 1/9 (अष्टावक्र)
- येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च। 1/9 (अष्टावक्र)
- सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता।
- यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः।। 1/5 (सूत्रधार)
- लौकिकां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
- ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।। 1/10 (राम)
- तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः। 1/13 (राम)
- 'नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा'। 1/14 (राम)
- अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना। 1/28 (लक्ष्मण)
- अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। 1/28 (लक्ष्मण)
- म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि। 1/36 (सीता)
- 'इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिनयनयोरसावस्याः' 1/38 (सीता)
- अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद्विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः। 1/39 (राम)
- सतां केनापि कार्येण, लोकस्याराधनं व्रतम्। 1/41 (राम)
- ऋषीणामुग्रतपसां यमुनातीरवासिनाम्। 1/50 (राम)

द्वितीय अङ्क

- प्रियप्राया वृत्तिर्विनयमधुरो वाचि नियमः। 2/2 (तापसी)
- वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां तथैव तथा जडे। 2/4 (आत्रेयी)
- मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
  यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।। 2/5 (वाल्मीकि)
- वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति। 2/7(वासन्ती)
- पृथिव्यां तप्यते तपः। 1/8 (आत्रेयी)
- रे हस्त! दक्षिण मृतस्य शिशोर्द्विजस्य। 2/10 (राम)
- सत्सङ्गजानि निधनान्यपि तारयन्ति 2/11 (शम्बूक)
- चतुर्दश सहस्राणि चतुर्दश च राक्षसाः। 2/15 (शम्बूक)
- न किञ्चिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति। 1/19 (राम)
- पराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव। 1/26 (राम)

तृतीय अङ्क

- पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः। 3/1 (मुरला)
- प्रियस्पर्शो हि पाणिस्ते, तत्रैष निरतो जनः। 3/10 (तमसा)
- स्पर्शः पुरा परिचितो नियतं स एव। 3/12 (राम)
- अन्तः करणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्। 3/17 (तमसा)
- शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते। 3/29
- प्रियाशोको जीवं कुसुममिव धर्मो ग्लपयति। 3/30 (तमसा)
- एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान्। 3/47

चतुर्थ अङ्क

- सन्तानवाहीन्यपि मानुषाणां दुःखानि सम्बन्धिवियोगजानि। 4/8 (अरुन्धती)
- गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। 4/11 (अरुन्धती)
- पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति। 4/12 (अरुन्धती)
- कन्यायाः किल पूजयन्ति पितरो जामातुराप्तं जनं। 4/17 (जनक)
- आविर्भूतज्योतिषां ब्राह्मणानां, ये व्याहारास्तेषु मा संशयो भूत्। 4/18 (अरुन्धती)
- क्रोधस्य ज्वलितुं धगित्यवसरश्चापेन शापेन वा। (जनक)

पञ्चम अङ्क

- ज्वलितशरसहस्रः कौतुकं मे करोति। 5/3 (चन्द्रकेतु)
- वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाधते। 5/19 (कुमारौ)
- लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कृतः। 5/20 (सुमन्त)
- इतिहासं पुराणं च, धर्मप्रवचनानि च। 5/23 (चन्द्रकेतु)
- कामं दुग्धे, विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं, कीर्तिं सूते। 5/30 (लव)
- वृद्धास्ते न विचारणीयचरितास्तिष्ठन्तु हु वर्तते।। 5/34 (लव)

षष्ठ अङ्क

- तत्तस्य किमपि द्रव्यं, यो हि यस्य प्रियो जनः। 6/5 (विद्याधर)
- विकसति हि पतङ्गस्योदये पुण्डरीकं। 6/12 (राम)
- क्षत्रस्य शस्त्रशिखिनः शममद्य यान्तु। 6/16 (राम)
- मयूखैश्रान्तं तपति यदि देवो दिनकरः। 6/14 (राम)
- 'विना सीतादेव्या किमिव हि न दुःखं रघुपतेः।
- प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति।।' 6/30 (कुश)
- हृदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम्। 6/32 (कुश)
- जगज्जीर्णारण्यं भवति च कलत्रव्युपरमे। 6/38 (राम)

सप्तम अङ्क

- विश्वम्भरात्मजा देवी राज्ञा त्यक्ता महावने। 7/2 (सूत्रधार)
- न प्रमाणीकृत: पाणिर्बाल्ये बालेन पीडित:। 7/5 (पृथिवी)
- हिरण्मय्या: प्रतिकृते: पुण्यप्रकृतिमध्वरे।। 7/19 (अरुन्धती)
- सानुषङ्गाणि कल्याणानि। (लक्ष्मण)
- मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव गङ्गेव च। 7/20 (राम)
- शब्दब्रह्मविद: कवे: परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्। 7/20 (राम)



पात्र-परिचय

पुरुषपात्र

सूत्रधार	:	प्रधान नट
नट	:	सूत्रधार का सहायक
राम	:	अयोध्या के राजा
लक्ष्मण	:	सुमित्रा पुत्र, राम के छोटे भाई
शत्रुघ्न	:	सुमित्रा पुत्र, लक्ष्मण
जनक	:	मिथिला के राजा, सीता के पिता
अष्टावक्र	:	मुनि विशेष
वाल्मीकि	:	रामायण के रचयिता
सौधातकि	:	वाल्मीकि का शिष्य
दाण्डायन	:	वाल्मीकि का शिष्य
कुश-लव	:	राम के पुत्र
चन्द्रकेतु	:	लक्ष्मण का पुत्र
सुमन्त्र	:	चन्द्रकेतु का सारथि
विद्याधर	:	देवयोनि विशेष
कञ्चुकी	:	वृद्ध ब्राह्मण
दुर्मुख	:	राम का गुप्तचर
शम्बूक	:	शूद्र तापस
मुनि-कुमार	:	वाल्मीकि के आश्रम के ब्रह्मचारी
सैनिक	:	चन्द्रकेतु के जन



स्त्री-पात्र

सीता	:	जनक की पुत्री, राम की पत्नी
वासन्ती	:	वनदेवता, सीता की सखी
आत्रेयी	:	ब्रह्मचारिणी
तमसा	:	नदी की अधिष्ठात्री देवी
मुरला	:	नदी की अधिष्ठात्री देवी
गोदावरी	:	नदी की अधिष्ठात्री देवी
भागीरथी	:	गङ्गा
कौसल्या	:	राम की माता
पृथ्वी	:	सीता-जननी
अरुन्धती	:	वसिष्ठ की पत्नी
विद्याधरी	:	विद्याधर की पत्नी
प्रतीहारी	:	अन्तःपुर द्वार की रक्षिका



मुद्राराक्षस

- मुद्राराक्षस के रचनाकार हैं—विशाखदत्त
- विशाखदत्त का समय माना जाता है—400 ई. के आस-पास [1]
- मुद्राराक्षस में अङ्कों की संख्या है—सात
- मुद्राराक्षस का अङ्गी रस है—वीर रस
- मुद्राराक्षस में अभाव है—नायिका एवं विदूषक का
- मुद्राराक्षस नाटक है—घटनाप्रधान
- मुद्राराक्षस का नायक है—विष्णुगुप्त
- मुद्राराक्षस का प्रतिनायक है—राक्षस
- विष्णुगुप्त के अन्य नाम हैं—चाणक्य, कौटिल्य
- नन्दों के शासनकाल में राक्षस था—अमात्य
- राज्य की कितनी शक्तियाँ होती हैं?—तीन
  1. उत्साह शक्ति 2. प्रभु शक्ति 3. मन्त्र शक्ति
- मुद्राराक्षस नाटक में कुल पात्र हैं— 29
- मुद्राराक्षस नाटक आधारित है—मन्त्र शक्ति पर
- मौर्य साम्राज्य का विस्मार्क कहे गए हैं—चाणक्य
- 'वृषल' कहा जाता है—चन्द्रगुप्त को
- 'शाठ्य' नीति का पोषक है—चाणक्य
- राक्षस मंच पर उपस्थित नहीं हुआ है—प्रथम और द्वितीय अंक में
- राक्षस की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका रही है—मुद्रा की
- राक्षस का प्रिय मित्र है—चन्दनदास
- चाणक्य का सहपाठी है—इन्दुशर्मा
- मुद्राराक्षस का कथानक है—ऐतिहासिक

---

1. सं.सा.समी.इति— कपिल देव द्विवेदी, पृ.सं. 358

- सम्पूर्ण नाटक में कवि कितने प्रकार के छन्दों का प्रयोग करता है?—19
- मुद्राराक्षस में प्रयुक्त अलंकार हैं—अर्थालङ्कार
- चाणक्य के पिता का नाम है—चणक
- राजनैतिक षड्यन्त्रों से भरपूर नाटक है—मुद्राराक्षस
- पाटलिपुत्र विद्यमान था—शोण नदी के पास
- चन्द्रगुप्त का सेनापति था—सिंहबल
- भागुरायण छोटा भाई था—सिंहबल का
- चाणक्य के द्वारा चन्दन दास को नगर सेठ के पद पर प्रतिष्ठित किया गया—सप्तम अंक में
- क्षपणक का वेष धारण करता है—इन्दुशर्मा
- मुद्राराक्षस के मंगलाचरण में वन्दना की गयी है—शिव की
- मुद्राराक्षस के भरतवाक्य में वन्दना की गयी है—विष्णु के वराह-मूर्ति की
- मुद्राराक्षस का मंगलाचरण है—आशीर्वादात्मक
- राजा पर्वतक का पुत्र है—मलयकेतु
- मुद्राराक्षस नाटक का उपजीव्य है—विष्णु पुराण
- चाणक्य का गुप्तचर यमपटचर है—निपुणक
- जीवसिद्धि नामक गुप्तचर का नाम है—इन्दुशर्मा
- चाणक्य का शिष्य था—शाङ्र्गरव
- चाणक्य का विश्वसनीय गुप्तचर है—सिद्धार्थक
- राक्षस का सेवक था—प्रियंवदक
- राक्षस का गुप्तचर अहितुण्डिक है—प्रियंवदक
- कुसुमपुर को किस नाम से जाना जाता है? पाटलिपुत्र
- राक्षसचर शिल्पकार हैं—दारुवर्मा
- 'मुद्राराक्षस' के प्रथम अङ्क का नाम है—मुद्रालाभ

- 'मुद्राराक्षस' के द्वितीय अङ्क का नाम है—राक्षस विचार
- 'मुद्राराक्षस' के तृतीय अङ्क का नाम है—कृतकलह
- 'मुद्राराक्षस' के चतुर्थ अङ्क का नाम है—राक्षसोद्योग
- चन्द्रगुप्त के कञ्चुकी का नाम है—वैहीनर
- मलयकेतु के कञ्चुकी का नाम है—जाजलि
- 'वाराहीमात्मयोनेस्तनुम......' यह भरत वाक्य है—मुद्राराक्षस का (7/19)
- मलयकेतु का सेनापति था—शिखरसेन
- सपेरे का वेष धारण कर कुसुमपुर में रहने वाला राक्षस का गुप्तचर है—विराधगुप्त
- राक्षस का सेवक था—प्रियंवदक
- राक्षस का द्वारपालक था—दौवारिक
- चन्द्रगुप्त का अमात्य राक्षस को बनाने की घोषणा करता है—चाणक्य
- नंदवंशीय सर्वार्थसिद्धि को मरवा दिया था—चाणक्य ने
- चन्दगुप्त का महामात्य था—चाणक्य
- चन्द्रगुप्त का प्रतिहार-पालिका थी—शोणोत्तरा
- 'धन्या केयं स्थिता ते शिरसि?....' यह है—मङ्गलाचरण (1/1)
- 'मुद्राराक्षस' का मङ्गलाचरण है—आशीर्वादात्मक
- 'मुद्राराक्षस' के मङ्गलाचरण में छन्द है—स्रग्धरा
- 'मुद्राराक्षस' के मङ्गलाचरण में अलंकार है—वक्रोक्ति
- 'चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।' यह कथन है—सूत्रधार का (1/3)
- 'गुणवत्युपायनिलये! स्थितिहेतोः! साधिके! त्रिवर्गस्य।' यह कथन है—सूत्रधार का (1/5)
- चाणक्य ने अपनी चोटी की तुलना की है—कालसर्पिणी एवं धुएँ की रेखा से
- 'समुत्सखा नन्दा नव हृदयरागा इव भुवः।' यह कथन है—चाणक्य का (1/13)

- पृथ्वी के हृदय में चुभती हुई कीलों के समान उखाड़ दिए गए हैं—नौ नन्द
- राजा नन्द व उसके आठ पुत्रों को कहा गया है—नौ नन्द
- प्रजा के मन की थाह लेने के लिए यमचर का वेष धारण करता है—निपुणक
- राक्षस के नाम से चिह्नित अंगूठी चाणक्य के पास लाया था—निपुणक
- 'कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिः सिंहनादो नृसिंहः.......' यह कथन है—राक्षस का (1/20)
- पाँच राजा परम मित्र थे—राक्षस के
- राक्षस का मित्र एवं कुलूत देश का राजा था—चित्रवर्मा
- राक्षस का मित्र एवं मलय देश का राजा था—सिंहनाद
- राक्षस का मित्र एवं काश्मीर का राजा था—पुष्कराक्ष
- राक्षस का मित्र एवं सिन्धु देश का राजा था—सिन्धुषेण
- राक्षस का मित्र एवं परस देश का राजा था—मेघ
- सिद्धार्थक पत्र लिखवाता है—शकटदास से
- जीवसिद्धि वेष धारण किए हुए था—जैन साधु (क्षपणक) का
- राक्षस की तुलना चाणक्य करता है—जंगली हाथी से
- राक्षस अपने परिवार को छिपाता है—चन्दनदास के घर में
- पर्वतक के भाई वैरोचक को आधा राज्य देने की घोषणा की गयी थी—चाणक्य द्वारा
- राक्षस द्वारा यन्त्रतोरण गिराकर चन्दगुप्त को मारने के लिए नियुक्त किया गया था—दारुवर्मा को
- दारुवर्मा द्वारा गिराए गए यन्त्र तोरण से मारा गया था—महावत वर्वरक
- वैरोचक के आगे चलने वाले पैदल अनुचरों द्वारा पत्थर मार-2 कर मार दिया गया था—दारुवर्मा
- अभयदत्त है—वैद्य

- राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त को विष देकर मारने के लिए नियुक्त किया गया था—अभयदत्त
- राक्षस का विराधगुप्त नामक गुप्तचर है—जीर्णविष
- 'कर्णेनेव विषाङ्गनैकपुरुषव्यापादिनी रक्षिता......' यह कथन है—राक्षस का (2/15)
- राक्षस की समानता की गयी है—कर्ण से
- 'पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी।' यह कथन है—राक्षस का (2/7)
- चन्द्रगुप्त की समानता की गयी है—अर्जुन से
- राक्षस का निजी सचिव था—शकटदास
- वैतालिक के वेश में कुसुमपुर में रहता था—स्तनकलश
- चन्द्रगुप्त और चाणक्य के बीच कृतकलह का वर्णन है—तृतीय अंक में
- चन्द्रगुप्त द्वारा घोषित कौमुदीमहोत्सव का निषेध करवाता है—चाणक्य
- प्रथम वैतालिक स्तुति करता है—शिव और विष्णु की
- चन्द्रगुप्त को चाणक्य के विरुद्ध भड़काने में समर्थ श्लोक पढ़ता है—दूसरा वैतालिक
- संसार में अर्थशास्त्रकार कितने प्रकार की सिद्धि का वर्णन करते हैं?—तीन
- प्रथम वैतालिक शिव के शरीर की तुलना करता है—शरद ऋतु से
- विष्णु जी सोते हैं—आषाढ़ मास में
- कार्तिक मास में शुक्लपक्ष की एकादशी को जागते हैं—विष्णु
- गजाध्यक्ष का नाम है—भद्रभट
- अश्वाध्यक्ष का नाम है—पुरुषदत्त
- 'लब्धायां पुरि यावदिच्छमुषितं, कृत्वा पदं नो गले' यह कथन है—चन्द्रगुप्त का (3/26)
- राक्षस शिरोवेदना से पीड़ित होता है—चतुर्थ अंक में

- सूर्यास्त के वर्णन से समाप्त होता है— चतुर्थ अंक
- 'योजनशतं समधिकं को नाम.....' इससे प्रारम्भ होता है— चतुर्थ अंक (4/1)
- राक्षस को चन्दगुप्त का अमात्य पद स्वीकार करवाना चाहता है— चाणक्य
- 'शत्रुस्त्रीषु मया विधाय गुरवे.......' यह कथन है— मलयकेतु का (4/5)
- 'सत्वभङ्गभयाद्राज्ञां कथयन्त्यन्यथा पुरः।' यह कथन है— मलयकेतु का (4/8)
- राक्षस को मुहूर्त बतलाता है— क्षपणक
- 'लग्नं भवति सुलग्नं......।' यह कथन है— क्षपणक का (4/21)
- प्रथम अंक में चाणक्य द्वारा बनाई गयी सभी योजनाएँ फल प्रदान करती हैं— पञ्चम अंक में
- मलयकेतु के मन में राक्षस के प्रति फूट व सन्देह का बीज बोता है— भागुरायण
- 'बुद्धिजलनिर्झरैः सिच्यमाना देशकालकलशैः।' इससे प्रारम्भ होने वाला अंक है— पञ्चम अंक (5/1)
- 'स्मृतं स्यात्पुत्रदाराणां.......' यह कथन है— राक्षस का (5/14)
- 'जयति जलदनीलः केशवः केशिघाती' यह कथन है— सिद्धार्थक का (6/1)
- चन्दनदास की पत्नी है— कुटुम्बिनी
- प्रथम चण्डाल का रूप धारण किया हुआ सिद्धार्थक का नाम है— वज्रलोमन
- दूसरे चण्डाल का रूप धारण किया हुआ समिद्धार्थक का नाम है— बिल्वपत्रक
- मलयकेतु के प्राणों की रक्षा किए जाने की इच्छा प्रकट करता है— राक्षस

- चन्द्रगुप्त से राक्षस के प्रथम निवेदन को मानने के लिए कहता है— चाणक्य
- 'जगतः किं न विजितं मयेति प्रविचिन्त्यताम्।' यह कथन है— चन्द्रगुप्त का (7/13)
- 'द्रव्यं जिगीषुमधिगम्य जडात्मनोऽपि' यह कथन है— राक्षस का (7/14)
- 'दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति' यह कथन है— विष्णुगुप्त का
- 'दैवं हि नन्दकुलशत्रुरसौ न विप्रः' यह कथन है— विष्णुगुप्त का
- चन्द्रगुप्त की माँ का नाम था— मुरा
- राजा नन्द का मुरा नामक पत्नी से उत्पन्न पुत्र था— चन्द्रगुप्त
- मुद्राराक्षस नाटक में किसका अभाव है— विदूषक और स्त्रीपात्र का



प्रमुख पात्र-परिचय

सूत्रधार	- नाटक का प्रस्तुतकर्त्ता तथा संचालक
राजानन्द	- नन्दवंश के प्रतिष्ठापक
राक्षस	- नाटक का प्रतिनायक
चाणक्य, कौटिल्य	- नाटक का नायक
चन्द्रगुप्त	- चाणक्य का शिष्य एवं मौर्य राज्य का प्रतिष्ठापक
मलयकेतु	- पर्वतक का पुत्र
पर्वतक	- पर्वतीय प्रदेशों का राजा
वैरोचक	- पर्वतक का भाई
सिद्धार्थक अथवा वज्रलोमन	- चाणक्य का अत्यन्त विश्वसनीय गुप्तचर तथा शकटदास का कृत्रिम मित्र
भागुरायण	- चाणक्य का विश्वसनीय गुप्तचर
जीवसिद्धि अथवा क्षपणक	- वस्तुतः इन्दुशर्मा नामक ब्राह्मण
शकटदास	- राक्षस का परम मित्र
चन्दनदास	- राक्षस का अत्यन्त विश्वसनीय मित्र
शार्ङ्गरव	- चाणक्य का शिष्य
सर्वार्थसिद्धि	- नन्दों का सम्बन्धी
कालपाशिक तथा दण्डपाशिक	- चन्द्रगुप्त के दो न्यायाधीश
निपुणक	- चाणक्य का गुप्तचर
शिखरसेन	- मलयकेतु का सेनापति
विराधगुप्त	- राक्षस का गुप्तचर
जाजलि	- मलयकेतु का कञ्चुकी

+++

रत्नावली

- ➤ रत्नावली के रचनाकार हैं—श्री हर्षवर्धन
- ➤ रत्नावली है—नाटिका
- ➤ रत्नावली में कुल अंक हैं—4
- ➤ रत्नावली नाटिका का उपजीव्य ग्रन्थ माना जाता है—बृहत्कथा को
- ➤ बृहत्कथा के रचनाकार हैं—गुणाढ्य
- ➤ हर्षवर्धन के पिता का नाम है—प्रभाकरवर्धन
- ➤ हर्षवर्धन के बड़े भाई का नाम है—राज्यवर्धन
- ➤ हर्षवर्धन का राज्यकाल है—606 ई. से 648 ई. तक
- ➤ हर्षतर्धन का जन्म हुआ था—500 ई. में
- ➤ राज्यवर्धन को छल से मार दिया था—गौड़नरेश
- ➤ रत्नावली के नायक हैं—उदयन
- ➤ उदयन नायक की कोटि है—धीरललित
- ➤ रत्नावली नाटिका की नायिका है—रत्नावली
- ➤ रत्नावली नायिका की कोटि है—मुग्धा
- ➤ रत्नावली पुत्री है—सिंहलेश्वर की
- ➤ सिंहलेश्वर का नाम है—विक्रमबाहु
- ➤ रत्नावली का अन्य नाम है—सागरिका
- ➤ विक्रमबाहु का मन्त्री था—वसुभूति
- ➤ उदयन की प्रथम पत्नी थी—वासवदत्ता
- ➤ उदयन का मंत्री था—यौगन्धरायण
- ➤ रत्नावली नाटिका का हृदय माना जाता है—तृतीय अंक
- ➤ ऐन्द्रजालिक क्रिया-कलाप है—चतुर्थ अंक में

➢ रत्नावली नाटिका का प्रारम्भ हुआ है— नान्दीपाठ से
➢ रत्नावली नाटिका का अन्त हुआ है— भरतवाक्य से
➢ हर्षवर्धन द्वारा रचित रूपक हैं— तीन
1. प्रियदर्शिका 2. रत्नावली 3. नागानन्द
➢ प्रियदर्शिक एवं रत्नावली है— नाटिका
➢ नागानन्द है— नाटक
➢ रत्नावली नाटिका के प्रथम अंक का नाम है— मदनमहोत्सव
➢ रत्नावली नाटिका के प्रथम अंक में कुल श्लोक हैं— 25
➢ रत्नावली नाटिका के द्वितीय अंक का नाम है— कदलीगृह
➢ रत्नावली नाटिका के द्वितीय अंक में कुल श्लोक हैं— 21
➢ रत्नावली नाटिका के तृतीय अंक का नाम है— संकेतक
➢ रत्नावली नाटिका के तृतीय अंक में कुल श्लोक हैं— 19
➢ रत्नावली नाटिका के चतुर्थ अंक का नाम है— इन्द्रजालिक
➢ रत्नावली नाटिका के चतुर्थ अंक में कुल श्लोक हैं— 22
➢ वासवदत्ता की सेविका के रूप में रखा गया था— सागरिका को
➢ रत्नावली के पिता ने विदा होते समय दिया था— रत्नमाला
➢ रत्नावली को यौगन्धरायण के पास ले गया था— व्यापारी
➢ सागर से मिलने के कारण रत्नावली का नाम यौगन्धरायण ने रखा था— सागरिका
➢ बसन्तोत्सव मनाया जाता है— कौशाम्बी में
➢ वासवदत्ता कामदेव की पूजा सम्पन्न करती है— मकरन्द उद्यान में
➢ सागरिका की मदनावस्था का वर्णन है— द्वितीय अंक में
➢ उदयन के प्रति अनुरक्त सागरिका उदयन का चित्र बनाती है— कदलीगृह में
➢ सागरिका का चित्र बनाती है— सुसंगता

➢ सागरिका और सुसङ्गता के मध्य में वार्तालाप को दुहराती है— सारिका
➢ राजा और सागरिका का मिलन सुसङ्गता कराती है— कदलीगृह में (2 अंक)
➢ सिंहल देश की राजकुमारी है— रत्नावली
➢ सागरिका वेषधारण करती है— वासवदत्ता का
➢ सुसंगता वेष धारण करती है— काञ्चनमाला का
➢ वासवदत्ता की चेटी का नाम है— काञ्चनमाला
➢ सागरिका और उदयन को मिलाने की योजना बनाते हैं— विदूषक और सुसङ्गता
➢ विदूषक और सुसङ्गता की योजना को वासवदत्ता जान लेती है— काञ्चनमाला द्वारा
➢ सागरिका और उदयन को मिलाने की योजना थी— मकरन्द उद्यान में
➢ सागरिका, वासवदत्ता का वेष धारण करके जाती है— मकरन्द उद्यान में
➢ नाराज वासवदत्ता विदूषक को बंधवाती है— लतापाश से
➢ सागरिका को वासवदत्ता कारावास में डलवाती है— चतुर्थ अंक में
➢ सागरिका 'रत्नमाला' ब्राह्मण को दान देने के लिए सौंपती है— सुसङ्गता को
➢ सुसङ्गता रत्नमाला देती है— विदूषक को
➢ विन्ध्य-दुर्ग में स्थित कोसलाधिपति को युद्ध में मारकर कोशल देश जीतता है— रुमण्वान
➢ रुमण्वान उदयन का था— सेनापति
➢ रुमण्वान कोशल देश को जीतता है— चतुर्थ अंक में
➢ ऐन्द्रजालिक आया था— उज्जयिनी से
➢ सागरिका की रक्षा करने की प्रार्थना वासवदत्ता करती है— उदयन से
➢ आग में घुसकर सागरिका को उठाकर लाता है— उदयन

- वासवदत्ता के मामा की पुत्री थी— रत्नावली
- रत्नावली का विदूषक है— वसन्तक
- रत्नावली के हृदय में उदयन के प्रति प्रथमानुराग का आरोपण होता है— कामदेव पूजनविधि के समय
- रत्नावली नाटिका का प्रधान रस है— शृंगार
- वासवदत्ता पुत्री है— प्रद्योत की
- रत्नावली नाटिका में कुल छन्दों का प्रयोग हुआ है— 13
- रत्नावली नाटिका में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द है— शार्दूलविक्रीडित
- 'पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां.........' यह है— मङ्गलाचरण (1/1)
- रत्नावली के मङ्गलाचरण में अलंकार है— काव्यलिंग
- रत्नावली के मङ्गलाचरण में छन्द है— शार्दूलविक्रीडित
- रत्नावली के मङ्गलाचरण में वर्णन किया गया है— शिव और पार्वती का
- 'उर्वीमुद्दामसस्यां जनयतु विसृजन......' यह रत्नावली नाटिका का है— भरतवाक्य (4/22)

+++

प्रमुख सूक्तियाँ

- मद्भाग्योपचयादयं समुदितः सर्वो गुणानां गणः। 1/5
- आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।। 1/6
- कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः।
- 'अचिन्त्यो हि मणिमन्त्रौषधीनां प्रभावः'। यह कथन है— उदयन का
- 'न कमलाकरं वर्जयित्वा राजहंसस्यन्यत्राभिरमते' यह कथन है— सुसंगता का
- 'भोः किमेतैर्वक्रभणितैः' यह कथन है— विदूषक का
- 'कस्मात्परिहासशीलतयेमं जनं लघुं करोषि' यह कथन है— सागरिका का
- 'ईदृशं रूपं मनुष्यलोके न पुनर्दृश्यते' यह कथन है— विदूषक का
- 'एषा खलु त्वयाऽपूर्वा श्रीः........' यह कथन है— विदूषक का
- 'न खलु सखीजने युक्त एवं कोपानुबन्धः' यह कथन है— उदयन का
- 'आत्मा किल दुःखमालिख्यते' यह कथन है— विदूषक का
- 'मनश्चलं प्रकृत्यैव दुर्लक्ष्यं च तथापि मे।' यह कथन है— उदयन का 3/2
- 'दिष्ट्या वर्धसे त्वं समीहिताभ्याधिकया कार्यासिद्धया' यह कथन है— विदूषक का
- 'रमयतितरां संकेतस्था तथापि हि कामिनी' यह कथन है— उदयन का 3/9
- 'तपति प्रावृषि नितरामभ्यर्णजलागमो दिवसः।' यह कथन है— उदयन का 3/10
- 'किं पुनः साहसिकानां पुरुषाणां न संभाव्यते' यह कथन है— काञ्चनमाला का

- 'प्रकृष्टस्य प्रेम्णः स्खलितमविषह्यं हि भवति।' यह कथन है—उदयन का 3/15
- 'तत्कस्मादत्रारण्यरुदितं करोषि' यह कथन है—विदूषक का
- 'इयमनभ्रा वृष्टिः' यह कथन है—उदयन का
- 'ग्राम्यो यथाऽहं कृतः' यह कथन है—वसुभूति का
- 'दुरवगाहा गतदेर्वस्य' यह कथन है—उदयन का
- 'ईदृशमत्यन्तमाननीयेष्वपि निरनुरोधवृत्ति स्वामिभक्तिव्रतम्' यह कथन है—यौगंधरायण का
- निः शेषं यान्तु शान्तिं पिशुनजनगिरो दुर्जया वज्रलेपाः।' यह है—भरत वाक्य
- 'प्रारम्भेऽस्मिन्स्वामिनो वृद्धिहेतौ' यह कथन है—यौगन्धरायण का 1/7

+++

पात्र-परिचय

नायक	— उदयन वत्स देश का राजा
विदूषक	— वसन्तक
यौगन्धरायण	— उदयन का प्रधानमन्त्री
विजयवर्मा	— उदयन के प्रधान-सेनापति रुमण्वान का भानजा
वाभ्रव्य	— उदय का कञ्चुकी
वसुभूति	— सिंहल देश का मन्त्री
ऐन्द्रजालिक	— उज्जयिनी की निवासी जादूगर
नायिका	— रत्नावली (सागरिका) विक्रमबाहु की पुत्री
वासवदत्ता	— उदयन की राजमहिषी
काञ्चनमाला	— वासवदत्ता की सेविका
सुसंगता	— परिचारिका, सागरिका की सखी
चूतलतिका, मदनिका, निपुणिका	— परिचारिकाएँ
वसुन्धरा	— द्वारपालिका (प्रतिहारी)

+++

स्वप्नवासवदत्ता

- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के नाटककार हैं— भास
- भास की कुल रचनाएँ हैं— 13
- भास की 13 रचनाओं को बाँटा जाता है— चार वर्गों में
- 'उदयनकथामूलक' भास की रचना है— प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्
- 'रामायणमूलक' भास की रचनाएँ हैं— प्रतिमानाटक, अभिषेक नाटक
- 'लोककथामूलक' भास की रचनाएँ हैं— अविमारक तथा चारुदत्त
- प्रतिज्ञायौगन्धरायण में कुल अंक हैं— 4
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' में कुल अंक हैं— 6
- भास के नाटकों की खोज की है— टी. गणपति शास्त्री ने
- भास का सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक है— स्वप्नवासवदत्तम्
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' का नायक है— उदयन
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' की नायिका है— वासवदत्ता
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' की सहनायिका है— पद्मावती
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' का विदूषक है— वसन्तक
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' का मन्त्री है— यौगन्धरायण
- छद्मवेषधारी वासवदत्ता का नाम था— अवन्तिका
- वासवदत्ता की माता का नाम है— अंगारवती
- वासवदत्ता के पिता का नाम है— प्रद्योत
- मगध के राजा का नाम था— दर्शक
- दर्शक की बहन थी— पद्मावती
- पद्मावती से विवाह होता है— उदयन का
- वासवदत्ता के जलने की घटना हुई थी— लावाणक वन में
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का प्रधान रस है— श्रृंगार

- भास से सम्बन्धित उक्ति है— 'भासो हासः'
- अवन्तिनरेश का नाम था— प्रद्योत महासेन
- उदयन की प्रिय भार्या थी— वासवदत्ता
- प्रद्योत महासेन के पुत्रों का नाम था— पालक, गोपालक
- पद्मावती की माता का नाम था— महादेवी
- उदयन का राजज्योतिषी था— पुष्पकभद्र
- उदयन का राज्य छीनता है— आरुणि
- उदयन निवास करते हैं— लावाणक वन में
- 'वत्सराज्य' को आरुणि से मुक्त कराती है— मगधसेना
- नाटक में 'स्वप्नदृश्य' है— पञ्चम अंक में
- 'प्रस्तावना' को भास ने कहा है— स्थापना
- उदयन का सेनापति है— रुमण्वान
- आरुणि को पराजित करता है— रुमण्वान
- वत्सदेश की राजधानी थी— कौशाम्बी
- उदयन के नायक की कोटि है— धीरललित
- नाटक आरम्भ होता है— नान्दी से
- नाटक का अन्त होता है— भरतवाक्य से
- पद्मावती को उदयन की रानी बनने की भविष्यवाणी करता है— पुष्पकभद्र आदि दैवज्ञ
- पद्मावती को देखने उदयन जाता है— समुद्रगृह में
- वासवदत्ता की प्रिय वीणा का नाम था— घोषवती
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के मंगलाचरण में स्तुति की गयी है— बलराम जी की
- लावाणक वन के अग्निकुण्ड में वासवदत्ता और यौगन्धरायण के जल मरने की खबर राजा को मिलती है— प्रथम अंक में
- पद्मावती गेंद खेलती है— द्वितीय अंक में
- विशाल सेना के कारण प्रद्योत कहा गया— महासेन

- प्रद्योत राजा था— उज्जैन का
- वत्सराज उदयन का अमात्य है— रुमण्वान
- 'उदयनवेन्दुसवर्णा.........' यह 'स्वप्नवासवदत्तम्' का है— मङ्गलाचरण (1/1)
- मङ्गलाचरण में बलराम की तुलना की गयी है— वसन्त ऋतु से
- मङ्गलाचरण में वृत्त है— आर्या
- 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः' यह कथन है— यौगन्धरायण का (1/4)
- 'प्रद्वेषो बहुमानो वा सङ्कल्पादुपजायते' यह कथन है— यौगन्धरायण का (1/7)
- 'दुःखं न्यायस्य रक्षणम्' यह कथन है— कञ्चुकी का (1/10)
- 'दृष्टा विपत्तिरथ यैः' यह कथन है— यौगन्धरायण का (1/11)
- 'न्युत्क्राम्य गच्छति विधिः यह कथन है— यौगन्धरायण का (1/11)
- 'विश्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता' यह कथन है— ब्रह्मचारी का (1/12)
- 'धन्या सा स्त्री यां तथा वेत्तिभर्त्ता' यह कथन है— ब्रह्मचारी का (1/13)
- 'भर्तृस्नेहात् सा हि धग्धाप्यदग्धाः' यह कथन है— ब्रह्मचारी का (1/13)
- 'दृष्ट्वा स्वैरमवन्तिराजतनयां पञ्चेषवः' यह कथन है— उदयन का
- 'इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा' यह कथन है— उदयन का (4/8)
- 'गुणानां वा विशालानां' यह कथन है— उदयन का (4/9)
- 'दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः' यह कथन है— उदयन का (4/6)
- 'लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द' यह कथन है— उदयन का (5/2)
- 'न क्लिष्टं हि शिरोपधानममलम्' यह कथन है— उदयन का (5/4)
- 'चरित्रमपि रक्षन्त्या दृढं दीर्घालकं सुखम्' यह कथन है— उदयन का (5/10)

- 'स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता' यह कथन है— उदयन का (6/1)
- 'प्रायेण हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते' यह कथन है— कञ्चुकी (6/7)
- 'कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले' यह कथन है— कञ्चुकी का (6/10)
- 'परम्परागता लोके दृश्यते रुपतुल्यता' यह कथन है— उदयन का (1/14)
- 'भारतानां कुलेजातो विनीतो ज्ञानवाञ्छुचिः' यह कथन है— यौगन्धरायण का (6/16)
- 'इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्' यह है— भरतवाक्य (6/19)
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के भरतवाक्य में छन्द है— अनुष्टुप्
- 'काम्पिल्याधिपः' था— ब्रह्मदत्त
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के प्रथम अंक में कुल श्लोक हैं— 16
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के चतुर्थ अंक में कुल श्लोक हैं— 7
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के पञ्चम अंक में कुल श्लोक हैं— 13
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के षष्ठ अंक में कुल श्लोक हैं— 19
- 'स्वप्नवासवदत्तम्' के किस अंक में श्लोक नहीं हैं?— दूसरे एवं तीसरे अंक में

+++

नाटक के पात्र

पुरुष पात्र

उदयन	- वत्सदेश का राजा (नायक)
विदूषक	- वसन्तक, राजा का सखा
यौगन्धरायण	- उदयन का प्रधानमंत्री
ब्रह्मचारी	- लावाणक वन में वेदाध्यायी
सूत्रधार	- नाटक का संचालक
कञ्चुकी	- अन्तःपुर का सेवक
सम्भषक, भट	- पद्मावती के अनुचर

स्त्री पात्र

वासवदत्ता	- प्रद्योतमहासेन की पुत्री (प्रधान नायिका)
पद्मावती	- दर्शक की बहन, उदयन की दूसरी पत्नी
तापसी	- आश्रम वासिनी
चेटी	- पद्मावती की परिचारिका
पद्मनिका, मधुकरिका	- पद्मावती की सेविका
धात्री	- वसुन्धरा नामक वासवदत्ता की उपमाता
विजया	- उदयन का द्वारपालक प्रतिहारी

+++

मृच्छकटिकम्

- 'मृच्छकटिकम्' के कृतिकार हैं— शूद्रक
- 'मृच्छकटिकम्' के आधार ग्रन्थ के रूप में माना जाता है—'चारुदत्तम्' को
- 'मृच्छकटिकम्' ग्रन्थ है— प्रकरण
- 'मृच्छकटिकम्' में कुल अंक हैं—10
- 'मृच्छकटिकम्' का प्रारम्भ हुआ है— नान्दीपाठ से
- 'मृच्छकटिकम्' का अन्त हुआ है— भरतवाक्य से
- 'मृच्छकटिकम्' का प्रधान रस है— श्रृङ्गार
- 'मृच्छकटिकम्' का नायक है— चारुदत्त
- 'मृच्छकटिकम्' का प्रतिनायक है— शकार
- 'मृच्छकटिकम्' की नायिका है— वसन्तसेना
- प्रकरण में नायिका होती है—दो 1. कुलीना 2. गणिका
- 'मृच्छकटिकम्' में वसन्तसेना है— गणिका
- उज्जयिनी की गणिका है— वसन्तसेना
- चारुदत्त की पत्नी का नाम है— धूता
- चारुदत्त का सेवक था— संवाहक
- वसन्तसेना का सेवक था— कर्णपूरक
- चारुदत्त दुशाला इनाम में देता है— कर्णपूरक को
- चारुदत्त के घर में सेंध लगाकर चोरी करता है— शर्विलक
- शर्विलक की प्रेमिका है— मदनिका
- वसन्तसेना की दासी और सखी है— मदनिका
- 'मृच्छकटिकम्' का विदूषक है— मैत्रेय
- वसन्तसेना चारुदत्त से मिलने 'पुष्पकरण्डक' उद्यान में जाती है—षष्ठ अंक में

- 'मृच्छकटिकम्' का विदूषक है—मैत्रेय
- वसन्तसेना का गला दबाता है—शकार
- आर्यक को मारकर राजा बनता है—पालक
- गणिका को सामान्य भाषा में कहा जाता है—वेश्या
- चारुदत्त के नायकत्व की श्रेणी है—धीरप्रशान्त
- त्रिवर्ग में लगा हुआ था—चारुदत्त
- 'मृच्छकटिकम्' से सम्बद्ध प्रदेश है—उज्जयिनी
- चारुदत्त का बौद्ध भिक्षु सन्यासी सेवक है—संवाहक
- चारुदत्त का जुआरी सेवक था—संवाहक
- वसन्तसेना चारुदत्त के साथ अपने प्रेम के रहस्य को बताती है—मदनिका को
- शर्विलक जाति का था—ब्राह्मण
- कला का प्रेमी था—चारुदत्त
- मृच्छकटिक का कथानक है—कविकल्पित
- 'दशरूपक' मृच्छकटिक को मानता है—संकीर्ण प्रकरण
- चारुदत्त की सेविका है—रदनिका
- चारुदत्त का पुत्र है—रोहसेन
- रोहसेन को खेलने के लिए मिट्टी की गाड़ी देती है—रदनिका
- चारुदत्त पहले था—धनिक
- आर्यक को बन्धन से मुक्त करता है—चारुदत्त
- नवम अंक में चारुदत्त अपने पुत्र के पालन पोषण का भार सौंपता है—विदूषक को
- 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अंक का नाम है—अलंकारन्यास
- 'मृच्छकटिकम्' के द्वितीय अंक का नाम है—द्यूतकर-संवाहक
- 'मृच्छकटिकम्' के तृतीय अंक का नाम है— संधिच्छेद
- 'मृच्छकटिकम्' के चतुर्थ अंक का नाम है—मदनिका-शर्विलक

- 'मृच्छकटिकम्' के पञ्चम अंक का नाम है—दुर्दिन
- 'मृच्छकटिकम्' के षष्ठ अंक का नाम है—प्रवहण-विपर्यय
- 'मृच्छकटिकम्' के सप्तम अंक का नाम है—आर्यक अपहरण
- 'मृच्छकटिकम्' के अष्टम अंक का नाम है—वसन्तसेना-मोटन
- 'मृच्छकटिकम्' के नवम अंक का नाम है—व्यवहार
- 'मृच्छकटिकम्' के दशम अंक का नाम है—संहार
- 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 58
- 'मृच्छकटिकम्' के द्वितीय अङ्क में कुल श्लोक हैं— 20
- 'मृच्छकटिकम्' के तृतीय अङ्क में कुल श्लोक हैं— 30
- 'मृच्छकटिकम्' के चतुर्थ अङ्क में कुल श्लोक हैं— 33
- 'मृच्छकटिकम्' के पञ्चम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 51
- 'मृच्छकटिकम्' के षष्ठ अङ्क में कुल श्लोक हैं— 27
- 'मृच्छकटिकम्' के सप्तम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 9
- 'मृच्छकटिकम्' के अष्टम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 47
- 'मृच्छकटिकम्' के नवम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 43
- 'मृच्छकटिकम्' के दशम अङ्क में कुल श्लोक हैं— 61
- चारुदत्त अपनी दरिद्रता का मार्मिक वर्णन करता है—प्रथम अंक में
- गणिका अन्धकार का लाभ उठाकर किसके घर में घुस जाती है?—चारुदत्त के
- वसन्तसेना अपने आभूषकों को न्यास के रूप में रखती है—चारुदत्त के घर में
- संवाहक द्यूत में ऋणी होकर किसके पास जाता है?—वसन्तसेना के
- संवाहक को ऋणमुक्त करती है—वसन्तसेना
- वसन्तसेना का मत्तगज आक्रमण करता है—संवाहक पर
- शर्विलक का मित्र था—आर्यक
- वसन्तसेना चारुदत्त के घर पर रात बिताती है—पञ्चम अंक में

- वर्षाकाल का भव्य वर्णन है— पञ्चम अंक में
- खेलने के लिए स्वर्ण का खिलौना गाड़ी मांगता है— रोहसेन
- कारागार से भागा हुआ आर्यक किसकी गाड़ी में बैठता है?— चारुदत्त की
- वसन्तसेना की हत्या का अभियोग शकार लगाता है— चारुदत्त पर
- वसन्तसेना को चिकित्सा के लिए बौद्ध विहार में ले आता है— संवाहक
- मृत्युदण्ड की सजा सुनायी जाती है— चारुदत्त को
- चारुदत्त को मृत्युदण्ड से बचाता है— आर्यक
- अवन्ति प्रदेश की राजधानी थी— उज्जयिनी
- मङ्गलाचरण में स्तुति की गयी है— शिव की
- 'मृच्छकटिकम्' के भरतवाक्य में अलंकार है— निदर्शना
- 'मृच्छकटिकम्' के भरतवाक्य में छन्द है— शार्दूलविक्रीडित



प्रमुख सूक्तियाँ

1. 'शून्यमपुत्रस्य गृहं चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।' — (1/8)
2. 'बीजाञ्जलिः पतति कीटमुखावलीढः।' यह कथन है— चारुदत्त का (1/9)
3. 'दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्'— चारुदत्त (1/11)
4. अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्।'— चारुदत्त (1/11)
5. 'जुगुप्सा मित्राणां स्वजनजनविद्वेषकरणम्।'— चारुदत्त (1/15)
6. 'हृदिस्थः शोकाग्निर्न च दसति संतापयति च।'— चारुदत्त (1/15)
7. 'त्वं वापीव लतेव नौरिव जनं वेश्यासि सर्वं भज।'— विट (1/32)
8. 'वाप्यां स्नाति विचक्षणो द्विजवरो।'— विट (1/32)
9. 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।'— विट (1/34)
10. दीनानां कल्पवृक्षः स्वगुणफलनतः सज्जनानां कुटुम्बी...— विट (1/48)
11. 'उदयति हि शशाङ्कः कामिनी गण्डपाण्डुः'— चारुदत्त (1/51)
12. 'भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति' — चारुदत्त (1/13)
13. पञ्चन्द्रियसमायुक्तो नरो व्यापाद्यते त्वया — दर्दुरक (2/13)
14. 'शिक्षाबलेन च बलेन च कर्ममार्गम्' — शर्विलक (3/9)
15. 'कामं नीचामिदं वदन्तु पुरुषाः स्वप्ने चयद्वर्धते' — शर्विलक (3/11)
16. 'कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तुलयिष्यति' — चारुदत्त (3/24)
17. 'नराणां यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च।' — शर्विलक (4/11)
18. 'वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः।' — शर्विलक (4/14)

10\. 'स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः।' — शर्विलक 4/19

20\. 'आखण्डलस्य भवनोदरदीपिकेय माख्याति।' — विट 5/33

'शून्यैर्गृहैः खलु समाः पुरुषा दरिद्राः......'— चारुदत्त 5/42

21. 'शङ्कनीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा दरिद्रता।'— चारुदत्त 5/43

22. 'दैवी च सिद्धिरपि लङ्घयितुं न शक्या।'— आर्यक 6/2

23. 'चन्दनश्चन्द्रशीलाढ्यो दैवादद्य सुहृन्मम्।'— आर्यक 6/26

24. विधिनैवोपनीतस्त्वं चक्षुर्विषयमागतः।'— चारुदत्त 7/6

25. 'नृपाज्ञया रक्षिजनेन पालिता'— विट 8/7

26. 'स्त्रीभिर्विमानितानां कापुरुषाणां विवर्धते मदनः।'— विट 8/9

27. 'बालां स्त्रियं च नगरस्य विभूषणं च'— विट 8/23

28. 'यत्नेन सवितव्यः पुरुषः कुलशीलवान दरिद्रोऽपि'।

29. शोभा हि पणस्त्रीणां सदृशजनसमाश्रयः कामः।।'—वसन्तसेना 8/33

30. 'छन्नं कार्यमुपक्षिपन्ति पुरुषा न्यायेन दूरीकृतं' — अधिकरणिक 9/3

31. 'नयनसलिलसिक्तं पांशुरुक्षीकृताङ्गं' — चारुदत्त 10/3

32. 'मा पुत्र! पितृदोषेण त्वमप्येवं गमिष्यसि।' — चारुदत्त 10/32

33. 'मयि मृत्युवशं प्राप्ते विद्येव समुपागता।' — चारुदत्त 10/42

34. 'क्षीरिण्यः सन्तु गावो, भवतु वसुमती सर्वसम्पन्नसस्या' यह है- भरतवाक्य



मृच्छकटिकम् के पात्र

चारुदत्त	–	नायक, निर्धनद्विज
मैत्रेय	–	विदूषक, चारुदत्त का मित्र
संस्थानक	–	शकार-प्रतिनायक, राजा का साला
विट	–	शकार का सहचर
वर्धमानक	–	चारुदत्त का दास
चेट	–	शकार का दास
संवाहक	–	चारुदत्त का भूतपूर्व सेवक, जुआरी, बौद्ध भिक्षु
माथुर	–	सभिक, प्रधान द्यूतकर
द्यूतकर	–	जुआरी
दर्दुरक	–	जुआरी
कर्णपूरक	–	वसन्तसेना का सेवक
शर्विलक	–	मदनिका का प्रेमी
कुम्भलीक	–	वसन्तसेना का दास
वन्धुल	–	वसन्तसेना का आश्रित वेश्यापुत्र
रोहसेन	–	चारुदत्त का पुत्र
स्थावर चेट	–	शकार का दास
चेट	–	वसन्तसेना का दास
आर्यक	–	गोपालक राजा पालक का बन्दी, बाद में राजा
वीरक	–	राजा पालक का बलपति (नगर रक्षक)
चन्दनक	–	सेनापति
शोचनक	–	न्यायालय का सेवक

अधिकरणिक	-	न्यायाधीश
श्रेष्ठी	-	एक प्रतिष्ठित सेठ, न्याय में अधिकरणिक का सहायक
कायस्थ	-	न्यायालय का लेखक (पेशकर)
चाण्डालद्वय	-	फाँसी देने वाले जल्लाद

रङ्गमञ्च पर अनुपस्थित पात्र

चूर्णवृद्ध	-	चारुदत्त का मित्र
चालक	-	अवन्ती का राजा
रेभिल	-	चारुदत्त का गायक मित्र
सिद्ध	-	आर्यक की राज्य प्राप्ति का भविष्यवक्ता

स्त्री पात्र

वसन्तसेना	-	नायिका, गणिका
रदनिका	-	चारुदत्त की दासी
मदनिका	-	वसन्तसेना की दासी, शर्विलक की प्रेमिका
धूता	-	चारुदत्त की पत्नी
छत्रधारिणी	-	वसन्तसेना की दासी
चेटी	-	चारुदत्त की दासी
वृद्धा	-	वसन्तसेना की माता

+++

वेणीसंहार

- वेणीसंहार के रचनाकार हैं— भट्टनारायण
- वेणीसंहार नाटक में कुल अंक हैं— 6
- भट्टनारायण का संभावित काल है— 650ई. से 675ई. के मध्य
- वेणीसंहार की प्रस्तावना में स्तुति की गयी है— विष्णु, कृष्ण और शिव की
- वेणीसंहार का प्रधान रस है— वीर रस
- वेणीसंहार का नायक है— भीम
- वेणीसंहार के नायक की कोटि है— धीरोद्धत
- महाभारत युद्ध पर आश्रित नाटक है— वेणीसंहार
- वेणीसंहार नाटक की नायिका है— द्रौपदी
- भीम और सहदेव के संवाद से प्रारम्भ होता है— प्रथम अंक
- पाण्डवों की तरफ से सन्धि का प्रस्ताव लेकर कौरवों के पास गए थे— श्रीकृष्ण
- 'वेणी' का अर्थ है— चोटी
- 'संहार' का अर्थ है— संवारना
- दु:शासन और दुर्योधन को मारकर द्रौपदी की चोटी बांधने की प्रतिज्ञा करता है— भीम
- श्रीकृष्ण दूत बनकर कौरवों के पास जाते हैं— प्रथम अंक में
- अभिमन्यु के मारे जाने की सूचना मिलती है— द्वितीय अंक में
- अर्जुन द्वारा जयद्रथ वध की प्रतिज्ञा की जाती है— द्वितीय अंक में
- भानुमती के अशुभ स्वप्न का वर्णन है— द्वितीय अंक में
- एक नकुल (नेवला) द्वारा सौ सर्प मार डाले जाना का स्वप्न देखती है— भानुमती
- अभिमन्यु को मारा था— जयद्रथ ने
- सिन्धुराज था— जयद्रथ

जयद्रथ की पत्नी का नाम था— दुःशला

- वेणीसंहार के प्रथम अंक में कुल श्लोक हैं— 27
- वेणीसंहार के द्वितीय अंक में कुल श्लोक हैं— 29
- वेणीसंहार के तृतीय अंक में कुल श्लोक हैं— 49
- वेणीसंहार के चतुर्थ अंक में कुल श्लोक हैं— 15
- वेणीसंहार के पञ्चम अंक में कुल श्लोक हैं— 42
- वेणीसंहार के षष्ठ अंक में कुल श्लोक हैं— 47
- अश्वत्थामा के मामा थे— कृपाचार्य
- संजय के साथ गान्धारी, धृतराष्ट्र, दुर्योधन को संधि के लिए प्रेरित करती हैं— पञ्चम अंक में
- द्रोणाचार्य छल से मारे जाते हैं— तृतीय अंक में
- दुर्योधन कर्ण को सेनापति बनाते हैं— तृतीय अंक में
- दुःशासन की छाती फाड़कर भीम द्वारा उसके रक्तपान किये जाने का वर्णन है— तृतीय अंक में
- कर्ण के पुत्र वृषसेन का वध अर्जुन करते हैं— चतुर्थ अंक में
- कर्ण का वध अर्जुन करता है— पञ्चम अंक में
- भीम के भय से दुर्योधन सरोवर में छिपता है— षष्ठ अंक में
- दुर्योधन के सरोवर में छिपने का पता लगाता है— सहदेव
- भीम और दुर्योधन का गदायुद्ध होता है— षष्ठ अंक में
- दुर्योधन का मित्र था— चार्वाक
- गदायुद्ध में भीम के मारे जाने की मिथ्या खबर युधिष्ठिर को देता है— चार्वाक
- राक्षस-राक्षसी संवाद का वर्णन है— तृतीय अंक में
- चार्वाक का वध करता है— नकुल
- द्रौपदी और युधिष्ठिर प्राण त्यागने का संकल्प लेते हैं— षष्ठ अंक में
- 'निषिद्धैरप्येभिर्लुलितमकरन्दो मधुकरैः....' यह वेणीसंहार का है— मङ्गलाचरण 1/1

मङ्गलाचरण में छन्द है— शिखरिणी

- नान्दी पाठ करता है— सूत्रधार
- त्रिपुरासुर के नगर को भस्म किया था— शिव ने
- वेणीसंहार में नान्दी है— पत्रावली
- 'रक्तप्रसाधितभुवः क्षतविग्रहाश्च' यह कथन है— सूत्रधार का 1/7
- आ दुरात्मन् वृथामङ्गलपाठक शैलूषापसद' यह सम्बद्ध है— वेणीसंहार से
- 'गुरुः खेदं भिन्नं मयि भजति नाद्यापि कुरुषु' यह कथन है— भीम का 1/11

कृष्ण कौरवों से मांगते हैं— 5 गाँव

- 'मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद्' यह कथन है— भीम का 1/15
- 'सन्धिं करोतु भवतां नृपतिः पणेन।' यह कथन है— भीम का 1/15
- प्रथम गाँव का नाम था— इन्द्रप्रस्थ
- द्वितीय गाँव का नाम था— वृकप्रस्थ
- तृतीय गाँव का नाम था— जयन्त
- चतुर्थ गाँव का नाम था— वारणावत
- हस्तिनापुर से निकाले जाने पर युधिष्ठिर ने निवास किया था— इन्द्रप्रस्थ
- दुर्योधन ने भीम को विषमिश्रित भोजन दिया था— वृकप्रस्थ में
- वह स्थान जहाँ पर पाण्डव जुएं में अपना सर्वस्व हार गए थे— इन्द्रप्रस्थ
- वह स्थान जहाँ युधिष्ठिर लाक्षागृह में निवास किए थे— वारणावत
- 'न लज्जयति दाराणां सभायां....' यह कथन है— भीम का(1/17)
- 'जीवत्सु पाण्डुपुत्रेषु दूरमप्रोषितेषु च।' यह कथन है— भीम का (1/18)
- 'कृष्णा' कहा जाता है— द्रौपदी को
- 'स्त्रीणां हि साहचर्याद्........' यह कथन है— सहदेव का (1/20)
- 'मधुरापि हि मूर्च्छयते.........' यह कथन है— सहदेव का (1/20)
- 'चत्वारो वयमृत्विजः.........' यह कथन है— भीम का (1/25)

- 'अनि:शेषितकौरव्यं..........' यह कथन है— भीम का (1/26)
- 'बालस्यायमरातिलूनधनुष:' यह कथन है— विषकम्भक का (2/2)
- 'मिथ्यादूषितयानया विरहितं दिष्ट्या........' यह कथन है— दुर्योधन का (2/13)
- 'शतसंख्या पुनरियं सानुजं.......' यह कथन है— दुर्योधन का (2/14)
- 'पतितं किङ्किणी क्वाणवद्धाक्रन्दमिव........' यह कथन है— कञ्चुकी का (2/24)
- 'हतमानुषमांसभारके कुम्भसहस्रं वसाभि: संचिते......' यह कथन है— राक्षसी का (3/1)
- 'पापं पापा: कथयत कथं शौर्यराशे: पितुर्मे।' यह कथन है— अश्वत्थामा का (3/8)
- 'श्रुत्वा वधं मम मृषा सुतवत्सलेन.......' यह कथन है— अश्वत्थामा का (3/12)
- 'सिन्धुराजमुपेक्षेत नैवं.......' यह कथन है— दुर्योधन का (3/28)
- 'हृदयं दह्यतेऽत्यर्थ कुतो दु:खं कुतो व्यथा।' यह कथन है— दुर्योधन का (4/11)
- 'भवति तनय सत्यं संशय:........' यह कथन है— धृतराष्ट्र का (5/21)
- 'सर्वे जीवितसंशयं वयममी वाचा.......' यह कथन है— युधिष्ठिर का (6/1)
- 'ज्ञेया रह: शङ्कितमालपन्त:.........' यह कथन है— युधिष्ठिर का 6/3
- 'अवनिमवनिपाला: पान्तु वृष्टिं विधत्तां........' यह है— भरतवाक्य
- 'अवनिमवनिपाला: पान्तु वृष्टिं विधत्तां......' इसमें छन्द हैं— मालिनी
- वेणीसंहार नाटक का प्रतिनायक है— दुर्योधन
- मुनिवेषधारी राक्षस है— चार्वाक

✦✦✦

वेणीसंहार नाटक के पात्र

पुरुष पात्र

युधिष्ठिर	—	ज्येष्ठ पाण्डव
भीम, अर्जुन	—	कुन्ती पुत्र
नकुल, सहदेव	—	माद्री पुत्र
कृष्ण	—	अर्जुन का सारथि, सखा और विष्णु का अवतार
धृतराष्ट्र	—	कौरवों का पिता, पाण्डवों का चाचा
दुर्योधन	—	धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र
कर्ण	—	अङ्गदेश का राजा और दुर्योधन का मित्र
कृपाचार्य	—	अश्वत्थामा का मामा
संजय	—	धृतराष्ट्र का सारथि
सुन्दरक	—	अङ्गराज कर्ण का सेवक
जयन्धर	—	युधिष्ठिर का कञ्चुकी
विनयन्धर	—	दुर्योधन का कञ्चुकी
चार्वाक	—	मुनिवेषधारी राक्षस, दुर्योधन का मित्र
अश्वसेन	—	द्रोणाचार्य का सारथि
रुधिरप्रिय	—	पाण्डवों का पक्षपाती एक राक्षस
सूत	—	दुर्योधन का सारथि
बुधक पाञ्चालक	—	युधिष्ठिर का संदेशहर

✦✦✦

स्त्री पात्र

द्रौपदी	–	नायिका, पाण्डव वधू
बुद्धिमतिका	–	द्रौपदी की सखी
चेटी	–	द्रौपदी की दासी
भानुमती	–	दुर्योधन की पत्नी
सुवदना	–	भानुमती की सखी
तरलिका	–	भानुमती की दासी
गान्धारी	–	दुर्योधन की माता
माता	–	जयद्रथ की माता
दुःशला	–	जयद्रथ की पत्नी एवं दुर्योधन की बहन
वसागन्धा	–	राक्षसी
विहङ्गिका	–	कौरव पक्ष की दासी

+++

Unit - 9

नाट्यशास्त्र

(प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय)

- नाट्यशास्त्र रचना है— भरतमुनि की
- भरतमुनि ने मंगलाचरण में नमन किया है— ब्रह्मा और शिव को
- नाट्यशास्त्र निरूपित किया गया था— ब्रह्मा द्वारा
- नाट्यशास्त्र में अध्यायों की कुल संख्या है— 36
- वर्तमान में नाट्यशास्त्र में श्लोकों की कुल संख्या है— 6000
- 'षट्साहस्री' नाम से जाना जाता है— नाट्यशास्त्र
- प्रायः नाट्यशास्त्र में छन्द हैं— अनुष्टुप्
- नाट्य की उत्पत्ति का वर्णन है— प्रथम अध्याय में
- भरतमुनि के पुत्र थे— 100
- अप्सराओं की रचना की थी— ब्रह्मा ने
- ब्रह्मा ने अप्सराओं की रचना की थी— मन द्वारा
- नाट्यशास्त्र को कहा जाता है— पञ्चम वेद
- धर्म, अर्थ तथा यश की प्राप्ति कराने वाला है— नाट्य
- ब्रह्मा ने नाट्यवेद निर्माण के लिए पाठ्य लिया था— ऋग्वेद से
- ब्रह्मा ने नाट्यवेद निर्माण के लिए अभिनय लिया था— यजुर्वेद से
- ब्रह्मा ने नाट्यवेद निर्माण के लिए गीत लिया था— सामवेद से
- ब्रह्मा ने नाट्यवेद निर्माण के लिए रसों को लिया था— अथर्ववेद से

---

1. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 13
2. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 12
3. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 22
4. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 14
5. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 14
6. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र -राधा वल्लभ त्रिपाठी- श्लोक - 14

- नाट्याचार्य के प्राथमिक कर्त्तव्य का वर्णन है— द्वितीय अध्याय में
- देवताओं की पूजा एवं स्तुति का वर्णन है— द्वितीय अध्याय में
- नाट्य का प्रथम प्रयोग हुआ था— इन्द्रध्वज महोत्सव पर
- नाट्यशाला का निर्माण किया था— विश्वकर्मा ने
- नाट्य विद्या है— अपरा
- नाट्य में नायक की रक्षा करते हैं— इन्द्र
- नाट्य में नायिका की रक्षा करती हैं— सरस्वती
- नाट्य में विदूषक की रक्षा करते हैं— ओंकार
- अन्य पात्रों की रक्षा करते हैं— शिव
- भरतमुनि का समय माना जाता है— 300 ई.पू.
- नाट्यशास्त्र में जिन विषयों का उपदेश है, उनका समन्वित सूत्र है— 'भ+र+त'
- भरतवंश कहलाता है— नटवंश
- 'भरत' मन्त्र में 'भ' का विषय है— भाव
- 'र' का विषय है— रस या राग
- 'त' का विषय है— ताल
- 'ॐ' को कहा जाता है— 'प्रणव'
- नाट्य होता है— रंगपीठ पर
- नाट्यशास्त्र के मुख्य संस्करण हैं— दो, 1. काशी, 2. बड़ौदा
- प्रथम अध्याय में कारिकाएँ हैं— 124
- द्वितीय अध्याय में कारिकाएँ हैं— 99
- छठे अध्याय में कारिकाएँ हैं— 76
- पाँचवां वेद बनाने का अनुरोध ब्रह्मा से किया था— इन्द्र ने
- ब्रह्मा ने नाट्यवेद का प्रयोग करने के लिए कहा था— भरतमुनि को
- भरतमुनि ने नाट्यवेद का श्रवण सर्वप्रथम किसके मुख से किया था?— ब्रह्मदेव के
- ब्रह्मदेव के श्रीगुण से नाट्यवेद का श्रवण करके भरतमुनि ने इसे पढाया था— अपने पुत्रों को

- नाट्यवेद के प्रयोग की विधि भरतमुनि ने सिखलायी थी— अपने पुत्रों को
- भारती सात्त्वती और आरभटी वृत्तियों को अपनाया था— भरतमुनि ने
- ब्रह्मा जी ने भरमुनि को किस वृत्ति के प्रयोग की आज्ञा दी थी?— कैशिकी
- नेपथ्य बहुत ही श्लक्षण हुआ करता है— कैशिकी वृत्ति में
- कैशिकी वृत्ति में रस होता है— शृंगार
- भगवान शंकर ने भगवती पार्वती के साथ प्रयोग किया था— कैशिकी वृत्ति का
- नाट्यालंकार में चतुर थी— अप्सराएँ
- स्वाति को भरतमुनि ने नियुक्त कर दिया— वाद्यवृन्द में
- नारद आदि गन्धर्वों को भरतमुनि ने लगा दिया— गान में
- ब्रह्मा ने अप्सराओं को प्रयोग हेतु दिया था— भरतमुनि को
- ध्वजमह में भरतमुनि ने प्रयोग किया था— नान्दी का
- देवताओं का प्रिय है— नान्दी
- अभिनय प्रस्तुति में दिखलाया गया था— दैत्यो पर देवों की जीत
- भरतमुनि के पुत्रों को नाट्य प्रयोग में आवश्यक उपकरण दिए थे— ब्रह्मा आदि देवों ने
- इन्द्र ने प्रदान किया — शुभ ध्वज
- शुभ ध्वज का प्रयोग किया गया था— ध्वजमह में
- ब्रह्मा ने प्रदान किया— कमण्डलु
- वरुण ने प्रदान किया— भृङ्गारक
- सूर्य ने प्रदान किया— छत्र
- शिव ने प्रदान किया— सिद्धि
- वायु ने प्रदान किया— पंखा (व्यजन)
- विष्णु ने प्रदान किया— सिंहासन
- कुबेर ने प्रदान किया— मुकुट
- सरस्वती ने प्रदान किया— आकर्षक वाणी

- नाट्य में दैत्यों और दानवों का विनाश दिखलाने पर दैत्यों जागा— क्षोभ
- रंगपीठ पर विघ्न बने सभी तत्त्वों और असुरों के शरीरों को जर्जर किया था— इन्द्र ने
- इन्द्र के आयुध को पुकारा गया— जर्जर नाम से
- विश्वकर्मा ने नाट्यशाला का निर्माण किसके कहने पर किया था?— ब्रह्मा के
- नाट्य मण्डप की रक्षा में नियुक्त किया गया— चन्द्रमा को
- दिशाओं की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— लोकपालों को
- विदिशाओं की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— वायु को
- नेपथ्य भूमि में रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— सूर्य को
- आकाश की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— वरुण को
- वेदी की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— अग्नि को
- वाद्यों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— अन्य सभी देवों को
- स्तम्भों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— चारों वर्णों को
- स्तम्भों के बीच के भागों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— आदित्यों एवं रुद्रों को
- शालाओं की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— भूतों को
- सभी कमरों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— अप्सराओं को
- भूमि पर नियुक्त किया गया— महोदधि को
- सभी पर्वों में नियुक्त किया गया— यक्षिणियों को
- द्वार के एक पार्श्व में नियुक्त किया गया— कृतान्त को
- द्वार के दूसरे पार्श्व में नियुक्त किया गया— काल को
- दरवाजों के पल्लों की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— अनन्त एवं गुलिक नाग को
- डेहरी की रक्षा हेतु नियुक्त किया गया— यमदण्ड को
- यमदण्ड के ऊपर स्थित था— शूल

- द्वारपाल बनाए गए— नियति और मृत्यु
- रङ्गपीठ की रक्षा हेतु उसके पार्श्व में स्थित हुए— इन्द्र
- मत्तवारणी के स्तम्भों में स्थापित किए गए— भूत, पिशाच, यक्ष और गुह्यक्ष
- जर्जर में स्थापित किया गया— दैत्यनाशक वज्र
- जर्जर के पर्वों में स्थापित थे— प्रमुख देव
- जर्जर के शिरोभाग में स्थित थे— ब्रह्मा
- जर्जर के दूसरे पर्व में स्थित थे— शिव
- जर्जर के तीसरे पर्व में स्थित थे— विष्णु
- जर्जर के चतुर्थ पर्व में स्थित थे— कार्तिकेय (स्कन्द)
- जर्जर के पञ्चम पर्व में स्थित थे— शेष, वासुकि, तक्षक नाग
- रङ्गपीठ के मध्य में स्थित हुए— ब्रह्मा
- पूजा के लिए पुष्प छोड़े जाते हैं— पीठ के मध्यभाग में
- नीति के अनुसार सर्वप्रथम प्रयोग किया जाता है— साम का
- साम के बाद प्रयोग किया जाता है— दान
- साम और दान के बाद प्रयोग किया जाता है— भेद
- सबसे अन्त में प्रयोग की जाने वाली नीति है— दण्ड
- नाट्यशास्त्र में नीति के भेद हैं— चार
  1. साम 2. दान 3. भेद 4. दण्ड
- ब्रह्मा के अनुसार धर्म में प्रवृत्त जनों के लिए नाट्य बनता है— धर्मोपदेश
- ब्रह्मा के अनुसार काम में प्रवृत्त जनों के लिए नाट्य बनता है— काम
- ब्रह्मा के अनुसार उद्धत लोगों के लिए नाट्य बनता है— निग्रह
- ब्रह्मा के अनुसार मत्त के लिए नाट्य बनता है— दमन
- ब्रह्मा के अनुसार नपुंसकों के लिए नाट्य लाता है— धृष्टता
- ब्रह्मा के अनुसार शूरों में नाट्य जगाता है— उत्साह
- सातों द्वीपों का अनुकरण है— नाट्य
- नाट्यशास्त्र में मण्डप विधान का वर्णन है— द्वितीय अध्याय में
- नाट्य-प्रयोग में मूल कारण हैं— नाट्यमण्डप

विश्वकर्मा ने प्रेक्षाग्रह के सन्निवेश बतलाए हैं— तीन
- नाट्यमण्डप के भेद किए गए हैं— दो प्रकार से
- 1. आकार की दृष्टि से, 2. प्रमाण की दृष्टि से

आकार की दृष्टि से नाट्यमण्डप के प्रकार हैं— तीन
- 1. विकृष्ट, 2. चतुरस्र, 3. त्र्यस्र

प्रमाण की दृष्टि से नाट्यमण्डप के प्रकार हैं— तीन
- 1. ज्येष्ठ, 2. मध्यम, 3. अधम
- नाट्यमण्डप के आकार की दृष्टि से प्रमाण हैं— तीन
- प्रमाण तय किए जाते हैं— हस्त या दण्ड से
- 108 हस्त प्रमाण का मण्डप होगा— ज्येष्ठ
- 64 हस्त प्रमाण का मण्डप होगा— मध्यम
- 32 हस्त प्रमाण का मण्डप होगा— अधम (कनिष्ठ)
- ज्येष्ठ नाट्यमण्डप उपयोगी होता है— देवों के लिए
- मध्यम नाट्यमण्डप उपयोगी होता है— राजाओं के लिए
- अधम (कनिष्ठ) नाट्यमण्डप उपयोगी होता है— सामान्य लोगों के लिए
- आठ अणु का होगा— एक रज
- आठ रजों का होगा— एक बाल
- आठ बालो का होगा— एक लिक्षा
- आठ लिक्षा का होगा— एक यूका
- आठ यूकाओं का होगा— एक यव
- आठ यवों का होगा— एक अंगुलक
- 24 अंगुलकों का होगा— एक हस्त
- चार हस्तों का होगा— एक दण्ड
- मनुष्य जाति के प्रेक्षक के लिए मण्डप होना चाहिए— 64 हाथ लम्बा और 32 हाथ चौड़ा
- प्रेक्षागृहों में सबसे अधिक उपयोगी प्रेक्षाग्रह होता है— मध्यम प्रमाण का

- नाट्यमण्डप बनाने के लिए पहला कार्य है— शोधन
- नाट्यमण्डप बनाने के लिए दूसरा कार्य है— हल से जुताई
- नाट्यगृह का प्रमाण निश्चित करने के लिए शुभ नक्षत्र होता है— पुष्य-नक्षत्र
- सूत्र बनाया जाना चाहिए— कपास से या बगइ से या मूँज से
- सूत्र के बीच में टूट जाने पर मृत्यु होती है— स्वामी की
- सूत्र के तीसरे हिस्से में टूट जाने पर बतलाया गया है— राष्ट्रकोप
- सूत्र के चतुर्थ हिस्से में टूट जाने पर बतलाया गया है— सूत्रधार (प्रयोक्ता) की मृत्यु
- सूत्र को फैलाना चाहिए— 64 हाथ तक
- 64 हाथ को बांटना चाहिए— दो भागों में
- पीछे के (32 हस्तप्रमाण के) भाग को पुनः बाँटना चाहिए— दो भागों में
- इनमें 8 हाथों का जो प्रथम भाग है, उसे मानना चाहिए— रंगशीर्ष
- आठ हाथ के पिछले भाग को मानना चाहिए— नेपथ्यगृह
- मण्डप के पूर्व दिशा की पूजा की जाए— सफेद अन्नों से
- मण्डप के दक्षिण दिशा की पूजा की जाए— नीले अन्नों से
- मण्डप के पश्चिम दिशा की पूजा की जाए— पीले अन्नों से
- मण्डप के उत्तर दिशा की पूजा की जाए— रक्त वर्ण के अन्नों से
- स्थापना कार्य के समय ब्राह्मणों को दिया जाए— घृत से युक्त खीर
- स्थापना कार्य के समय क्षत्रियों को दिया जाए— मधुपर्क
- मण्डप बनाने वाले मजदूरों को दिया जाए— गुड़भात
- मण्डप का स्थापना कार्य किया जाना चाहिए— मूलनक्षत्र में
- स्तम्भों की स्थापना का कार्य करना चाहिए— रोहिणी या श्रावण नक्षत्र में
- मण्डप स्थापना का कार्य कराने वाले आचार्य को करना चाहिए— तीन दिनों तक उपवास
- स्तम्भों की स्थापना का कार्य करना चाहिए— सूर्योदय के समय

स्तम्भ होने चाहिए— चारों वर्णों के
- ➢ वैश्य स्तम्भ की विधि की जानी चाहिए— पश्चिमोत्तर (वायव्य) दिशा में
- ➢ शूद्र स्तम्भ की विधि की जानी चाहिए— पूर्वोत्तर(ईशान) कोण में
- ➢ ब्राह्मण स्तम्भ की जड़ में डालना चाहिए— सोना
- ➢ क्षत्रिय स्तम्भ की जड़ में डालना चाहिए— ताम्र
- ➢ वैश्य स्तम्भ की जड़ में डालना चाहिए— चाँदी
- ➢ शूद्र स्तम्भ की जड़ में डालना चाहिए— लोहा
- ➢ सभी स्तम्भों के नीचे देना चाहिए— सोना
- ➢ ब्राह्मण नामक पवित्र स्तम्भ खड़ा करने पर दक्षिणा के रूप में दान देना चाहिए— गौ
- ➢ रङ्गपीठ के पार्श्ववर्ती भागों को बनाएँ— मत्तवारणी
- ➢ रङ्गपीठ के समान प्रमाण होना चाहिए— मत्तवारणी का
- ➢ रङ्गपीठ एवं मत्तवारणी में खम्भे होने चाहिए— चार
- ➢ रङ्गपीठ एवं मत्तवारणी की ऊंचाई होनी चाहिए— डेढ़ हाथ
- ➢ रङ्गपीठ एवं मत्तवारणी की ऊँचाई का ही बनाना चाहिए— रङ्गपीठ
- ➢ मत्तवारणी बनाते समय की जानी चाहिए— भूतबलि
- ➢ मत्तवारणी में खड़े खम्भे के नीचे रखना चाहिए— लोहा
- ➢ इन दोनों के बाद बनाना चाहिए— रङ्गशीर्ष
- ➢ आयत के आकार वाला मण्डप होता है— विकृष्ट
- ➢ चतुरस्र नाट्यमण्डप में चारों ओर विन्यास करना चाहिए— 32 हस्त का
- ➢ चतुरस्र नाट्यमण्डप के निर्माण की विधि समान होती है— विकृष्ट के
- ➢ त्र्यस्र नाट्यमण्डप होता है— त्रिकोण
- ➢ चतुरस्र नाट्यमण्डप होता है— चतुर्भुजाकार
- ➢ नाट्यशास्त्र में वृत्तियाँ हैं— चार

  1. भारती 2. सात्त्वती 3. आरभटी 4. कैशिकी

- ➢ ऋग्वेद से उत्पन्न हुई— भारती वृत्ति
- ➢ यजुर्वेद से उत्पन्न हुई— सात्त्वती वृत्ति
- ➢ सामवेद से उत्पन्न हुई— कैशिकी
- ➢ अथर्ववेद से उत्पन्न हुई— आरभटी
- ➢ 'या वाक्प्रधाना पुरुषप्रयोज्या स्त्रीवर्जिता संस्कृत वाक्युक्ता' यह है— भारती वृत्ति
- ➢ भारती वृत्ति के प्रकार हैं— चार

  1. प्ररोचना 2. आमुख 3. वीथी 4. प्रहसन
- ➢ 'या सत्त्वानेह गुणेन युक्ता न्यायेन वृत्तेन समन्विता च' यह है— सात्त्वती वृत्ति
- ➢ 'हर्षोत्कटा संहतशोकभावा' यह है— सात्त्वती वृत्ति
- ➢ आङ्गिक और वाचिक चेष्टाओं की प्रधानता होती है— सात्त्वती वृत्ति में
- ➢ शोक का संहरण और हर्ष का आधिक्य होता है— सात्त्वती वृत्ति में
- ➢ सात्त्वती वृत्ति के भेद हैं— चार

  1. उत्थापक 2. परिवर्त्तक 3. संल्लापक 4. संघात्य
- ➢ उद्धत पुरुषों का बाहुल्य होता है— सात्त्वती वृत्ति में
- ➢ 'या श्लक्ष्णा नेपथ्यविशेषचित्रा स्त्रीसंयुता या बहुनृत्तगीता' यह है— कैशिकी वृत्ति
- ➢ 'कामोपभोग प्रभवोपचारा' यह सम्बद्ध है— कैशिकी वृत्ति से
- ➢ कैशिकी वृत्ति के भेद हैं— चार

  1. नर्म 2. नर्मकुञ्ज 3. नर्मस्फोट 4. नर्मगर्भ
- ➢ 'प्रस्तावप्लुतलंघितानि चान्यानि मायाकृतमिन्द्र जालम्' यह सम्बद्ध है— आरभटी वृत्ति से
- ➢ आरभटी वृत्ति के भेद हैं— चार

  1. संक्षिप्त 2. अवपात 3. वस्तुत्थापन 4. संफेट

- आशीर्वचनों से युक्त, अष्टपदात्मिका नान्दी के प्रयोग का उल्लेख है– नाट्यशास्त्र में
- रस, भाव, अभिनय, धर्मी, वृत्ति, प्रवृत्ति, सिद्धि, स्वर, आतोद्याम (वाद्ययन्त्र), गान और रङ्ग हैं– नाट्यांग
- नाट्य के अंग हैं– 11
- रसों की संख्या है–आठ
  1. शृंगार 2. हास्य 3. करुण 4. रौद्र 5. वीर
  6. भयानक 7. बीभत्स 8. अद्भुत
- ब्रह्मा जी ने रस बतलाए थे–आठ
- भावों के प्रकार हैं–तीन 1. स्थायी 2. सञ्चारी 3. सात्त्विक
- स्थायी भावों की संख्या है–आठ
  1. रति 2. हास 3. शोक 4. क्रोध 5. उत्साह 6. भय.
  7. जुगुप्सा 8. विस्मय
- व्यभिचारी भावों की संख्या है–33
- सात्त्विक भावों की संख्या है–आठ
  1. स्तम्भ 2. स्वेद 3. रोमांच 4. स्वरभङ्ग 5. कम्पन
  6. वैवर्ण्य 7. अश्रु 8. मूर्च्छा
- अभिनय के प्रकार हैं–चार
  1. आङ्गिक 2. वाचिक 3. सात्त्विक 4. आहार्य
- शृंगार रस का स्थायी भाव है– रति
- हास्य रस का स्थायी भाव है– हास
- करुण रस का स्थायी भाव है– शोक
- रौद्र रस का स्थायी भाव है– क्रोध
- वीर रस का स्थायी भाव है– उत्साह
- भयानक रस का स्थायी भाव है– भय
- बीभत्स रस का स्थायी भाव है– जुगुप्सा

- अद्भुत रस का स्थायी भाव है– विस्मय
- शृंगार रस का वर्ण होता है– श्याम
- हास्य रस का वर्ण होता है– सफेद
- करुण रस का वर्ण होता है– कपोत
- रौद्र रस का वर्ण होता है– लाल
- वीर रस का वर्ण होता है– स्वर्ण (गौर)
- भयानक रस का वर्ण होता है– काला
- बीभत्स रस का वर्ण होता है– नीला
- अद्भुत रस का वर्ण होता है– पीला
- शृंगार रस के अधिष्ठाता देव हैं– विष्णु
- हास्य रस के अधिष्ठाता देव हैं– प्रमथ (शिवगण)
- करुण रस के अधिष्ठाता देव हैं– यम
- रौद्र रस के अधिष्ठाता देव हैं– रुद्र
- वीर रस के अधिष्ठाता देव हैं– महाकाल
- भयानक रस के अधिष्ठाता देव हैं– कामदेव
- बीभत्स रस के अधिष्ठाता देव हैं– इन्द्रदेव
- अद्भुत रस के अधिष्ठाता देव हैं– ब्रह्माजी
- 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः' यह रस की परिभाषा है–भरतमुनि की
- धर्मी के प्रकार हैं–दो
  1. लौकिकी (लोकधर्मी) 2. नाट्यधर्मी
- नाट्य वृत्तियाँ हैं–चार
- सिद्धि के प्रकार हैं–दो 1. दैवी 2. मानुषी
- स्वर के प्रकार हैं–सात
- सप्त स्वर के भेद हैं–दो 1. शारीर 2. वेणुगत
- वाद्ययन्त्र (आतोद्याम) के प्रकार हैं–चार
  1. तत 2. अवनद्ध 3. घन 4. सुषिर

- वीणा आदि होगा— तत
- मृदङ्ग आदि होगा— अवनद्ध
- ताल (झाँझ) आदि होगा— घन
- बांसुरी आदि होगा— सुषिर
- गान के प्रकार हैं—पाँच
- रङ्ग (मण्डप) के प्रकार हैं—तीन
  1. चतुरस्र 2. विकृष्ट 3. त्र्यस्र
- विभाव, अनुभाव और व्याभिचारी भावों के संयोग से निष्पत्ति होती है— रस की
- सभी आठों रसों की उत्पत्ति में कारण बनते हैं—चार रस,
  1. श्रृंगार 2. रौद्र 3. वीर 4. बीभत्स
- श्रृंगार रस से उत्पन्न होता है—हास्य रस
- रौद्र रस से उत्पन्न होता है—करुण रस
- वीर रस से उत्पन्न होता है—अद्‌भुत रस
- बीभत्स रस से उत्पन्न होता है—भयानक रस
- 'उज्ज्वल वेषात्मकः यत्किञ्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्वल दर्शनीयं वा' यह है—श्रृंगार रस
- आचार से सिद्ध है—श्रृंगार रस
- श्रृंगार की अवस्थाएँ हैं—दो 1. सम्भोग 2. विप्रलम्भ
- 'स च विकृत-परवेषाऽलङ्कारधाष्ट्‌र्य-लौल्य-कुहका-सत्प्रलाप-व्यङ्गदर्शन.......' यह है—हास्य रस
- हास्य रस के भेद हैं—दो 1. आत्मस्थ 2. परस्थ
- 'यदा स्वयं हसति' यह है— आत्मस्थ
- 'यदा तु परं हासयति' यह है— परस्थ
- स्त्रियों में और निम्नवर्ग के लोगों में बहुधा देखा जाता है— हास्य रस
- हास्य रस के उत्तम, मध्यम और अधम प्रकृति से क्रमशः भेद हैं— दो

उत्तम प्रकृत्ति का होता है— 1. स्मित 2. हसित

- अधम प्रवृत्ति का होता है— 1. उपहसित 2. अतिहसित
- मध्यम प्रवृत्ति का होता है— 1. विहसित 2. उपहसित
- 'ईषद्विकसितैर्गण्डैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितैः.....'— यह है— स्मित
- 'उत्फुल्लाननेत्रं तु गण्डैर्विकसितैरथ' यह है— हसित
- 'आकुञ्चिताक्षिगण्डं यत् सस्वनं मधुरं तया' यह है— विहसित
- 'उत्फुल्लनासिकं यत् तु चिह्नदृष्टिनिरीक्षितम्' यह है— उपहसित
- 'स च शापक्लेशविनिपतन-इष्टजनवियोग-विभवनाश बन्ध-बन्ध..... ' यह है—करुण रस
  'रक्षो—दानवोद्धतमनुष्यप्रभवः' यह जनक है— रौद्र रस का
- 'स चाऽसमोहाऽध्यवसाय-नय-विनय-बल-पराक्रमशक्ति-प्रताप.....' यह है— वीर रस
- 'स च विकृतरवसत्त्वदर्शन-शिवोलूकत्रासोद्वेग......' यह है—भयानक रस
- स चाऽहद्याऽप्रियाऽचोष्याक्षाऽनिष्ट श्रवण-दर्शन.....' है—बीभत्स रस
- 'स च दिव्यजनदर्शने-नप्सितमनोरथावाप्त्युपवना....' है—अद्‌भुत रस
- श्रृंगार रस के प्रकार हैं—तीन
  1. वाचिक 2. वेशभूषाजन्य 3. क्रियाजन्य
- करुण रस के प्रकार हैं—तीन
  1. धर्म के उपघात से उत्पन्न
  2. अर्थ के अपचय से उत्पन्न 3. शोकजन्य
- वीर रस के प्रकार हैं—तीन
  1. दानवीर 2. धर्मवीर 3. युद्धवीर
- भयानक रस के प्रकार हैं—तीन
  1. छल से 2. अपराध से 3. भय से
- बीभत्स रस के प्रकार हैं— दो 1. क्षोभज 2. उद्‌वेगज
- अद्‌भुत रस के प्रकार हैं— दो 1. दिव्य 2. आनन्दज
- नाट्यशास्त्र में मुनियों ने भरत से प्रश्न पूँछे थे— पाँच

+++

दशरूपक

(प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

- दशरूपक के प्रणेता हैं— धनञ्जय
- मालवा के परमारवंश के राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज द्वितीय) के राजकवि थे— धनञ्जय
- धनञ्जय के पिता का नाम था— विष्णु
- 'नाट्यशास्त्र' को आधार बनाकर लिखा गया ग्रन्थ है— दशरूपक
- दशरूपक के कारिका भाग की रचना की है— धनञ्जय ने
- 'अवलोक' नामक वृत्ति के प्रणेता हैं— धनिक
- धनञ्जय के छोटे भाई थे— धनिक
- दशरूपक विभक्त है— चार प्रकाशों में
- अर्थोपक्षेपक, रूपक और कथावस्तु का वर्णन है— प्रथम प्रकाश में
- संधियों, पञ्च अवस्थाओं, अर्थप्रकृतियों का वर्णन है— प्रथम प्रकाश में
- प्रथम प्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है— 68
- द्वितीय प्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है— 72
- तृतीय प्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है— 76
- चतुर्थ प्रकाश में कारिकाओं की कुल संख्या है— 84
- कारिका के सात पद्यों को छोड़कर बाकी सभी कारिकाओं में छन्द है— अनुष्टुप्
- नायक और नायिका का वर्णन किया गया है— द्वितीय प्रकाश में
- दशरूपकों का वर्णन है— तृतीय प्रकाश में
- रस की विवेचना की गयी है— चतुर्थ प्रकाश में
- 'अवस्थानुकृतिः' यह है— नाट्य
- अवस्था के अनुकरण को कहते हैं— नाट्य
- नट का भाव या कर्म कहलाता है— नाट्य

- अभिनय के प्रकार हैं— चार
  1. आङ्गिक 2. वाचिक 3. आहार्य 4. सात्त्विक
- दिखाई देने योग्य होने के कारण नाटक कहलाता है— रूप
- 'नाट्य रूप' कहलाता है— रूपक
- रसों पर आश्रित रहता है— रूपक
- रूपक के भेद हैं— 10
- 'अन्यद्भावाश्रयं नृत्यम्' यह लक्षण है— नृत्य का
- भावों पर आश्रित होता है— नृत्य
- रसों पर आश्रित होता है— नाट्य
- नाट्य में अभिनय होता है— वाक्यार्थ का
- नृत्य में अभिनय होता है— पदार्थ का
- 'ताललयाश्रयम्' यह लक्षण है— नृत्त का
- ताल और लय पर आश्रित होता है— नृत्त
- अभिनय का अभाव होता है— नृत्त में
- नृत्य में पदार्थों का अभिनय होने से कहलाता है— 'मार्ग'
- रूपकों को एक दूसरे से भिन्न करने वाले तत्त्व हैं— तीन
  1. वस्तु 2. नेता 3. रस
- वस्तु अर्थात् कथावस्तु के भेद हैं— दो
  1. आधिकारिक कथावस्तु 2. प्रासङ्गिक कथावस्तु
- प्रधान(मुख्य) कथावस्तु को कहा जाता है— आधिकारिक कथावस्तु
- रामायण में राम और सीता का वृत्तान्त है— आधिकारिक कथावस्तु
- फल प्राप्ति की योग्यता कहलाता है— अधिकार
- फल का स्वामी कहलाता है— अधिकारी
- अधिकारी की फल प्राप्ति तक चलने वाली कथा को कहा जाता है— आधिकारिक कथावस्तु
- 'परार्थस्य स्वार्थो यस्य प्रसङ्गतः' यह लक्षण है— प्रासंगिक कथा का

- प्रासङ्गिक कथा के प्रकार हैं—दो 1. पताका 2. प्रकरी
- आधिकारिक कथावस्तु के प्रकार हैं—तीन
  1. प्रख्यात 2. उत्पाद्य 3. मिश्र
- इतिहास पुराणादि में आने वाली कथावस्तु को कहते हैं—प्रख्यात
- कवि की प्रतिभा (कल्पना) द्वारा निर्मित्त कथावस्तु को कहते हैं—उत्पाद्य
- प्रख्यात और उत्पाद्य दोनों के मिश्रण को कहते हैं—मिश्र
- प्रयोजन सिद्धि का कारण होती हैं—अर्थप्रकृतियाँ
- कथावस्तु की फल प्राप्ति के साधन हैं—अर्थप्रकृतियाँ
- 'प्रकृति' शब्द का अर्थ है—हेतु या कारण
- अर्थप्रकृतियाँ हैं—5
- 'बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः' ये हैं—अर्थ प्रकृतियाँ
- 'स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुर्बीजं' विस्तार्यनेकधा' यह लक्षण है—बीज का
- कार्य (मुख्यफल) का साधक हेतु विशेष को कहते हैं—बीज
- 'अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्' यह लक्षण है—बिन्दु का
- 'सानुबन्धं पताकाख्यं प्रकरी च प्रदेशभाक्' यह लक्षण है—पताका का
- प्रधानकथा के साथ अनुबन्ध सहित रूपक में दूर तक चलती रहती है, वह है—पताका
- रामायण में सुग्रीव और विभीषण का वृत्तान्त है—पताका
- पताका का नायक होता है—मिश्र
- 'प्रासङ्गिकं प्रदेशस्थं चरितं प्रकरी मता' यह लक्षण है—प्रकरी का
- केवल एक ही प्रदेश (थोड़ी दूर तक) तक चलने वाली कथा कहलाती है—प्रकरी
- रामायण में शबरी वृतान्त है—प्रकरी
- 'त्रिवर्गस्तच्छुद्धमेकानेकनुबन्धि च' यह है—कार्य
- रामायण की कथा में रावण वध है—कार्य

- कार्य की अवस्थाएँ हैं—5
- 'आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः' यह है— पञ्च अवस्थाएँ
- 'औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे' यह है—आरम्भ
- प्रचुर फल प्राप्ति के लिए उत्सुकता मात्र होना कहलाता है—आरम्भ
- 'प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः' यह है—यत्न
- 'उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः' यह है—प्राप्त्याशा
- 'अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता' यह है—नियताप्ति
- विघ्नों के हट जाने पर सफलता के निश्चित्त हो जाने की अवस्था को कहा जाता है—नियताप्ति
- 'समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः' यह है—फलागम
- समस्त फल की प्राप्ति कहलाता है—फलागम
- 'अन्तरैकार्थसम्बन्धः सन्धिरेकान्वये सति' यह है—सन्धि
- 5 अर्थप्रकृतियाँ और कार्य की पाँच अवस्थाओं के क्रमशः एक दूसरे के मिलने से उत्पत्ति होती है—संधियों की
- सन्धियों के प्रकार हैं—पाँच
  1. मुख 2. प्रतिमुख 3. गर्भ
  4. अवमर्श (विमर्श) 5. उपसंहति (निर्वहण)
- निर्वहण सन्धि का अन्य नाम है—उपसंहति
- "मुखं बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवा।
  अङ्गानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्वयात्।।" यह है—मुख सन्धि
- बीज नामक अर्थ प्रकृति और आरम्भ नामक अवस्था के संयोग से पैदा होती है— मुख सन्धि
- मुख सन्धि के अंग हैं—12
  1. उपक्षेप 2. परिकर 3. परिन्यास 4. विलोभन 5. युक्ति
  6. प्राप्ति 7. समाधान 8. विधान 9. परिभावना 10. उद्भेद
  11. भेद 12. करण
- 'बीजन्यास उपक्षेपः' यह लक्षण है— उपक्षेप का

‘तद्बाहुल्यं परिक्रिया’ यह लक्षण है— परिकर का
- बीज की वृद्धि को कहा जाता है— परिकर या परिक्रिया
- ‘तन्निपपत्तिः परिन्यासः’ यह लक्षण है—परिन्यास का
- बीज की निष्पत्ति कहलाता है—परिन्यास
- ‘गुणाख्यानं विलोभनम्’ यह लक्षण है—विलोभन का
- ‘संप्रधारणमर्थानां’ यह लक्षण है—युक्ति का
- ‘सुखागमः’ यह है—प्राप्ति
- ‘बीजागमः’ यह है—समाधान
- ‘सुख दुःखकृत्’ यह है—विधान
- सुख दुःख के कारण को कहते हैं—विधान
- ‘अद्भुतावेशः’ यह है—परिभावना
- अद्भुत् का समावेश होना है—‘परिभावना
- ‘गूढ़भेदनम्’ यह है—उद्भेद
- ‘प्रोत्साहना मता’ यह है—भेद
- ‘प्रकृतारम्भः’ यह है—करण
- प्रस्तुत कार्य का आरम्भ करना कहलाता है—करण
- ‘‘लक्ष्यालक्ष्यतयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्।
  बिन्दुप्रयत्नानुगमादङ्गान्यस्य त्रयोदश।।’’ यह है— प्रतिमुख सन्धि
- बिन्दु नामक अर्थप्रकृति और यत्ननामक अवस्था के योग से उत्पन्न होती है—मुखसन्धि
- ‘रत्यर्थेहा’ यह है—विलास
- रति की इच्छा को कहते हैं—विलास अंग
- प्रतिमुख संन्धि के अंग होते हैं—13
  1. विलास, 2. परिसर्प, 3. विधूत, 4. शम, 5. नर्म, 6. नर्मद्युति, 7. प्रगमन, 8. निरोध, 9. पर्युपासन, 10. वज्र, 11. पुष्प, 12. उपन्यास, 13. वर्णसंहार
- ‘दृष्टनष्टानुसर्पणम्’ यह है—परिसर्प

- ‘विधूतं स्यादरतिः’ यह है—विधूत
- जहाँ अरति हो, वह है—विधूत
- ‘अरति शान्तिः’ यह है—शम
- ‘परिहासवचः’ यह है—नर्म
- ‘धृतिस्तज्जाद्युतिर्मता’ यह है—नर्मद्युति
- ‘उत्तरावाक्’ यह है—प्रगमन
- ‘हितरोधो’ यह है— निरोध
- अनुनय-विनय कहलाता है— पर्युपासन
- ‘प्रत्यक्षनिष्ठुरम्’ यह है— वज्र
- ‘वाक्यं विशेषवत्’ यह है— पुष्प
- उपाययुक्त या हेतुप्रदर्शक वाक्य कहलाता है— उपन्यास
- ‘चातुर्वर्ण्योपगमनम्’ यह है— वर्ण संहार
- ‘गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजस्यान्वेषणं मुहुः।
  द्वादशाङ्गः पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्तिसंभवः।।’ यह है—गर्भ सन्धि
- गर्भ सन्धि के अंग हैं—12
  1. अभूताहरण 2. मार्ग 3. रूप 4. उपाहरण 5. क्रम 6. संग्रह 7. अनुमान 8. तोटक 9. अधिबल 10. उद्वेग 11. संभ्रम 12. आक्षेप
- पताका नामक अर्थप्रकृति और प्राप्त्याशा नामक अवस्था के संयोग से उत्पत्ति होती है—गर्भ सन्धि की
- जहाँ कपट हो, वहाँ होता है—अभूताहरण
- ‘तत्त्वार्थकीर्तनम्’ यह है—मार्ग
- जहाँ निश्चित तत्त्व का कीर्तन हो वह है—मार्ग
- ‘वितर्कवद्वाक्यम्’ यह है—रूप
- उत्कर्ष या उन्नति से युक्त वाक्य है—उदाहरण
- ‘सञ्चिन्त्यमानाप्तिः’ या भाव ज्ञानमथापरे’ यह है—क्रम
- ‘सामदानोक्तिः’ यह है—संग्रह

- 'अध्यूहो लिङ्गतो' यह है—अनुमान
- आवेग वचन कहलाता है—तोटक (सरब्धं तोटकं वचः)
- किसी के द्वारा किसी का अभिप्राय जान लेने पर वहाँ होता है—अधिबल
- 'अरिकृता भीतिः' यह है—उद्वेग
- 'शङ्कात्रासौ च' यह है— संभ्रम
- 'गर्भबीजसमुद्भेदादाक्षेपः परिकीर्तितः' यह है— आक्षेप
- ''क्रोधेनावमृशेद्यत्र व्यसनाद्वा विलोभनात्।
  गर्भनिर्भिन्नबीजार्थः सोऽवमर्श इति स्मृतः।।'' यह लक्षण है— अवमर्श सन्धि का
- प्रकरी नामक अर्थ प्रकृति और नियताप्ति नामक अवस्था के संयोग से उत्पत्ति होती है—अवमर्श सन्धि की
- अवमर्श सन्धि है— 13
  1. अपवाद, 2. संफेट, 3. विद्रव, 4. द्रव, 5. शक्ति, 6. द्युति, 7. प्रसङ्ग, 8. छलन, 9. व्यवसाय, 10. विरोधन, 11. प्ररोचना, 12. विचलन, 13. आदान
- किसी पात्र के दोषों का कथन करता है—अपवाद (दोषप्रख्यापवादःस्यात्)
- 'रोषभाषणम्' यह है-- संफेट
- 'बन्धबन्धादिः' यह है— विद्रव
- 'गुरुतिरस्कृतिः' यह है— द्रव
- 'विरोधशमनम्' यह है— शक्ति
- 'तर्जनोद्वेजने' यह है— द्युति
- 'गुरुकीर्तनम्' यह है—प्रसङ्ग
- 'अवमाननम्' यह है—छलन
- 'स्वशक्त्युक्तिः' यह है—व्यवसाय
- 'सरब्धानाम्' यह है—विरोध
- 'सिद्धमन्त्रणतो भाविदर्शिका स्यात्' यह है—प्ररोचना
- 'विकत्थना' यह है—विचलन

- आत्मश्लाघा करना तथा डींग मारना है—प्ररोचना
- 'कार्यसंग्रहः' यह है—आदान
- ''बीजवन्तो मुखाद्यर्था विप्रकीर्णा यथायथम्।
  ऐकार्थ्यमुपनीयन्ते यत्र निर्वहणं हि तत्।।'' यह है—निर्वहणसन्धि
- निर्वहण सन्धि के अंग हैं— 14
  1. सन्धि 2. विबोध 3. ग्रथन 4. निर्णय 5. परिभाषण, 6. प्रसाद 7. आनन्द 8. समय 9. कृति 10. भाषण (भाषा) 11. उपगूहन 12. पूर्वभाव 13. उपसंहार 14. प्रशस्ति
- 'बीजोपगमनम्' यह है—सन्धि
- 'कार्यमार्गणम्' यह है—विबोध
- कार्य का उपसंहार (उपक्षेप) करना कहलाता है—ग्रथन (ग्रथनं तदुपक्षेपो)
- 'अनुभूताख्या तु निर्णयः' यह है— निर्णय
- 'मिथो जल्पः' यह है— परिभाषण
- 'पर्युपासनम्' यह है— प्रसाद
- 'वाञ्छितावाप्तिः' यह है— आनन्द
- 'दुःखनिर्गमः' यह है— समय
- 'लब्धार्थशमनम्' यह है— कृति
- 'मानाद्याप्तिश्च' यह है— भाषण
- कार्य को बिना कहे समझ लेना है—पूर्वभाव (कार्यदृष्ट्यद्भुतप्राप्ती पूर्वभावोपगूहने)
- अद्भुत वस्तु की प्राप्ति है— उपगूहन (अद्भुतप्राप्ति उपगूहन)
- 'वराप्तिः' यह है— काव्यसंहार
- 'शुभशंसनम्' यह है— प्रशस्ति
- सन्ध्यांगों की संख्या है— 64
- 64 सन्ध्यांगों का प्रयोजन है— 6
- समस्त कथावस्तु को पुनः विभाजित किया जाता है—दो भाग में
- 1. सूच्य 2. दृश्य तथा श्रव्य

- 'नीरसोऽनुचितस्तत्र संसूच्यो वस्तुविस्तरः' यह लक्षण है— सूच्य का
- 'मधुरोदात्तरसभावनिरन्तरः' यह है— दृश्य तथा श्रव्य
- सूच्य कथावस्तु की सूचना, अर्थ की सूचना देता है— अर्थोपक्षेपक
- अर्थोपक्षेपक के प्रकार हैं— पाँच
  1. विष्कम्भक 2. चूलिका 3. अङ्कास्य 4. अङ्कावतार 5. प्रवेशक
- जो कथा या घटना पहले हो चुकी हो अथवा जो भविष्य में होने वाली हो उसकी सूचना देने वाले को कहा जाता है— विष्कम्भक
- मध्यमपात्र होता है— विष्कम्भक
- विष्कम्भक के भेद हैं— दो 1. शुद्ध 2. सङ्कीर्ण
- 'एकानेककृतः' यह है— शुद्ध
- 'नीचमध्यमैः' यह है— संकीर्ण
- 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
  संक्षेपार्थस्तु विष्कम्भो मध्यमपात्रप्रयोजितः॥' यह है— विष्कम्भक
- बीती हुई बात (कथांश) तथा आगे आने वाली बातों की सूचना देता है— प्रवेशक
- नीच पात्र होता है— प्रवेशक
- प्रवेशक की भाषा होती है— प्राकृत
- दो अंकों के बीच में आकर छूटे हुए कथांशों की सूचना देता है— प्रवेशक
- 'तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
  प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥' यह है— प्रवेशक
- 'अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना' यह है— चूलिका
- 'अङ्कान्तपात्रैरङ्कास्यं छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात्' यह है— अङ्कास्य
- अङ्क के अन्त में आने वाले पात्र द्वारा अगले अङ्क के आरम्भ में आने वाले पात्रों, छूटी कथा आदि की सूचना देने वाला कहलाता है— अङ्कास्य

- 'अङ्कावतारस्त्वङ्कान्ते पात्रोऽङ्कस्याविभागतः' यह है— अङ्कावतार
- जहाँ एक अङ्क की कथा का विच्छेद किये बिना दूसरे अङ्क में बराबर चलती रहने को कहते हैं— अङ्कावतार
- रूपक के भेद हैं— 10
- धनञ्जय ने रूपकों की संख्या मानी है— 10
- उपरूपकों की संख्या कही गयी है— 18
- नाटक की कथावस्तु होती है— प्रख्यात
- धीरोदात्त राजा या देवता नायक होता है— नाटक का
- नायक के प्रकार हैं— चार
  1. धीरललित 2. धीरप्रशान्त 3. धीरोदात्त 4. धीरोद्धत
- भोगविलास में लिप्त रहने वाला नायक है— धीरललित
- प्रेम उपास्य होता है— धीरललित
- धीरललित नायक का राज्य संभालता है— मन्त्री एवं सेनापति आदि
- धीरललित कोटि का नायक है— उदयन
- शान्त प्रकृति का ब्राह्मण या वैश्यकुलोत्पन्न नायक होता है— धीरप्रशान्त
- प्रकरण का नायक होता है— धीरप्रशान्त
- मृच्छकटिक है— प्रकरण
- मालतीमाधव है— प्रकरण
- मृच्छकटिक का नायक चारूदत्त है— धीरप्रशान्त नायक
- उत्तम प्रकृति का नायक होता है— धीरोदात्त
- नाटक का नायक अधिकांशतः होता है— धीरोदात्त
- घमण्डी ईर्ष्यालु, विकत्थन तथा छली नायक होता है— धीरोद्धत
- परशुराम और भीम नायक हैं— धीरोद्धतकोटि के
- प्रेम की अवस्था के अनुसार नायक के रूप होते हैं— चार
- नाटक की सम्पूर्ण कथावस्तु विभक्त होती है— चार भागों में
- वीर या श्रृंगार में से कोई एक प्रधानरस होता है— नाटक में
- नाटक के उपसंहार में मुख्य रस के अंग के रूप में अवश्य रहना चाहिए— अद्भुत रस को

- नाटक के अंकों की संख्या होती है— 5-10
- नायक में सात्त्विक गुण होने चाहिए— आठ
- नायक का शत्रु होता है— प्रतिनायक
- प्रतिनायक की प्रकृति होती है— धीरोद्धत
- विदूषक की जाति होती है— ब्राह्मण
- नाटक में विदूषक किस भाषा का आश्रय लेता है?— प्राकृत
- नट को कहा जाता है— स्थापक
- तीनों वेदों का रक्षक होता है— नाटक का नायक
- पाँच अंकों का नाटक होता है— निम्न कोटि का
- 10 अंकों का नाटक होता है— उच्च (श्रेष्ठ) कोटि का
- प्रस्तावना के नाम से पुकारा जाता है— आमुख को
- आमुख के अंग पाये जाते हैं— तीन
  1. कथोद्धत 2. प्रवृत्तक 3. प्रयोगातिशय
- कथोद्धत के भेद हैं— दो 1. वाक्यमूलक 2. वाक्यार्थमूलक
- सूचना के भेद हैं— चार
  1. वस्तुसूचना 2. बीजसूचना 3. मुखसूचना 4. पात्रसूचना
- कल्पित या उत्पाद्य तथा लोकसंश्रय कथावस्तु होती है— प्रकरण की
- मध्यमवर्ग के सामान्य व्यक्ति की कथा होती है— प्रकरण में
- मन्त्री, ब्राह्मण या वैश्य में से कोई एक नायक हो सकता है— प्रकरण का
- प्रकरण के नायक की कोटि होती है— धीरप्रशान्त
- विघ्नों से घिरा रहता है— प्रकरण का नायक
- प्रकरण का नायक तत्पर रहता है— त्रिवर्ग में
- प्रकरण में अंकों की संख्या होती है— 10
- प्रकरण में रस होते हैं— नाटक की तरह
- प्रकरण की नायिका के प्रकार हैं— दो
  1. कुलीन नारी 2. गणिका

- आभ्यन्तर नायिका होती है— कुलीन नारी
- बाह्य नायिका होती है— गणिका
- नाटिका की कथावस्तु ली जाती है— प्रकरण से
- नाटिका की कथावस्तु होती है— कविकल्पित
- नाटिका का नायक गृहीत होता है— नाटक से
- प्रख्यातवंश तथा धीरललित नायक होता है— नायिका का
- नाटिका का अङ्गी रस होता है— शृंगार
- नाटिका में अङ्क होते हैं— चार
- स्त्री पात्रों की प्रधानता होती है— नाटिका में
- नाटिका में नायिका होती है— दो 1. ज्येष्ठा 2. कनिष्ठा
- ज्येष्ठा नायिका होती है— प्रगल्भा
- गम्भीर तथा मालिनी नायिका होती है— ज्येष्ठा
- कनिष्ठा नायिका होती है— मुग्धा
- भाण में अंक होता है— एक
- 'लीलामधुरम्' है— भाण
- भाण का नायक होता है— विट
- भाण की कथावस्तु होती है— कविकल्पित
- भारती वृत्ति की प्रधानता होती है— भाण में
- जहाँ कोई अत्यधिक चतुर तथा बुद्धिमान (पण्डित), विट अपने या किसी दूसरे के द्वारा अनुभूत धूर्तचरित का वर्णन करता है, वह है— भाण रूपक
- सौभाग्य तथा शौर्य का वर्णन कर शृंगार तथा वीर रस की सूचना दी जाती है— भाण द्वारा
- किसी न किसी कला में प्रवीण होता है— विट
- वेश्याओं के व्यवहारादि का जानकार होता है— विट
- भाण में सन्धियाँ होती हैं— मुख तथा निर्वहण
- दस लास्यांगों का सन्निवेश होता है— भाण में

- भाण की तरह होता है— प्रहसन
- प्रहसन में रस होता है— हास्य
- प्रहसन में अंक होता है— एक
- प्रहसन के प्रकार हैं— तीन 1. शुद्ध 2. विकृत 3. सङ्कर
- प्रहसन का नायक होता है— निन्दनीय पुरुष
- 'कन्दर्पकेलि' है— प्रहसन
- प्रहसन की कथावस्तु होती है— कविकल्पित
- डिम की कथावस्तु होती है— इतिहास प्रसिद्ध
- कैशिकी वृत्ति नहीं होती है— डिम में
- देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, महासर्प, भूत-प्रेत, पिशाच आदि 16 उद्धतनायक होते हैं— डिम में
- हास्य और शृंगार रस को छोड़कर अन्य रस होते हैं— डिम में
- डिम का अंगीरस होता है रौद्र रस
- माया, इन्द्रजाल, युद्ध, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण का दृश्य दिखाया जाता है— डिम में
- डिम में अंकों की संख्या होती है— चार
- 'त्रिपुरदाह' है— डिम
- विमर्श सन्धि को छोड़कर बाकी सन्धियाँ होती है— डिम में
- व्यायोग की कथावस्तु होती है— इतिहास प्रसिद्ध
- व्यायोग की कथावस्तु होती है— 1 अंक की
- व्यायोग का नायक होता है— धीरोद्धत
- इतिहास पुराणादि प्रसिद्ध कथावस्तु होती है— समवकार की
- देवता व दानव 12 नायक होते हैं— समवकार में
- समवकार का अंगीरस होता है— वीररस
- समवकार में अंक होते हैं— तीन
- 'समुद्रमन्थनम्' है— समवकार
- वीथी की कथावस्तु होती है— कविकल्पित

- वीथी का नायक होता है— साधारण
- 'मालविका' है— वीथी
- वीथी में अंक होता है— एक
- अंक का अन्य नाम है— उत्सृष्टिकांक
- अंक की कथावस्तु होती है— इतिहासप्रसिद्ध
- अंक का अंगीरस होता है— करुण रस
- अंक का नायक होता है— साधारण मनुष्य
- अंक में अंक होता है— एक
- स्त्रियों के विलाप से युक्त होता है— अंक
- 'शर्मिष्ठा ययाति' है— अंक
- मिश्र (मिश्रित) कथावस्तु होती है— इहामृग की
- इहामृग में अंक होते हैं— चार
- नायक और प्रतिनायक दोनों प्रख्यात होता है— इहामृग का
- देवता तथा नर नायक होता है— इहामृग का
- इहामृग का नायक होता है— धीरोद्धत
- कुसुमशेखर विजयादि है— इहामृग



श्रीमद्भगवद्गीता

- 'श्रीमद्भगवद्गीता' महाभारत के किस पर्व में है?— भीष्म पर्व में
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के वक्ता हैं— श्रीकृष्ण
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' का उपदेश दिया गया था— कुरुक्षेत्र में
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में कुल अध्याय हैं— 18
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में कुल श्लोको की संख्या हैं— 700
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में सर्वाधिक श्लोक किस अध्याय में हैं— 18वें
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के रचनाकार हैं— वेदव्यास जी
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' का माहात्म्यवर्णित है— स्कन्दपुराण में
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के प्रथम अध्याय का नाम है— अर्जुनविषादयोग (श्लोक-47)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के द्वितीय अध्याय का नाम है— सांख्ययोग (श्लोक-72)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के तृतीय अध्याय का नाम है— कर्मयोग (श्लोक-47)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के चतुर्थ अध्याय का नाम है— ज्ञानकर्मयोग (श्लोक-42)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के पञ्चम अध्याय का नाम है— कर्मसन्यासयोग (श्लोक-29)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के षष्ठ अध्याय का नाम है— आत्मसंयमयोग (श्लोक-47)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के सप्तम अध्याय का नाम है— ज्ञानविज्ञानयोग (श्लोक-30)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के अष्टम अध्याय का नाम है— अक्षरब्रह्मयोग (श्लोक-28)

- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के नवम अध्याय का नाम है— राजविद्याराजगृह्ययोग (श्लोक-34)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता के दशम अध्याय का नाम है— विभूतियोग (श्लोक-42)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के एकादश अध्याय का नाम है— विश्वरूप योगदर्शन (श्लोक-27)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के द्वादश अध्याय का नाम है— भक्तियोग (श्लोक-20)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के त्रयोदश अध्याय का नाम है— क्षेत्रविभागयोग (श्लोक-24)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के चतुर्दश अध्याय का नाम है— गुणत्रयविभागयोग (श्लोक-28)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के पञ्चदश अध्याय का नाम है— पुरुषोत्तमयोग (श्लोक-20)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के षोडश अध्याय का नाम है— दैवासुरसम्पद्विभाग-योग (श्लोक-24)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के सप्तदश अध्याय का नाम है— श्रद्धाश्रयविभागयोग (श्लोक-28)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के अष्टादश अध्याय का नाम है— मोक्षसंन्यास योग (श्लोक-78)
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' में मार्ग बताया गया है— दो,
  1. सांख्ययोग, 2. कर्मयोग
- गीता पर लिखा गया सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध भाष्य है— शाङ्करभाष्य
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' का सबसे पहले अंग्रेजी में अनुवाद किया था— विल्किंसन ने
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' रूप मंत्र माला के ऋषि हैं— वेदव्यास
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' का छन्द है— अनुष्टुप्
- 'श्रीमद्भगवद्गीता' के देवता हैं— श्रीकृष्ण

- 'अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे' यह मंत्र है—गीता का बीज
- 'सर्वधर्म्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज' यह मंत्र हैं—गीता की शक्ति
- भगवान् का भजन करने वाले भक्त के प्रकार हैं—चार,
  1. अर्थार्थी 2. आर्त 3. जिज्ञासु 4. ज्ञानी
- 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः' यह गीता का है—प्रथममन्त्र
- कुरुक्षेत्र का विशेषण है— धर्मक्षेत्र
- गीता के प्रथम अध्याय का प्रारम्भ होता है— धृतराष्ट्र और संजय से
- श्रीकृष्ण को कितने प्रकार के पुण्यकर्मी भजते हैं?—चार
- श्रीकृष्ण ने जगत के कितने मार्ग बताए हैं—दो
  1. शुक्ल 2. कृष्ण
- जगत् के कौन से दो मार्ग सनातन माने गए हैं?—दो,
  1. शुक्ल (देवयान), 2. कृष्ण (पितृयान)
- शुक्ल मार्ग द्वारा प्राप्त होता है—मोक्ष
- श्रीकृष्ण मार्ग द्वारा प्राप्त होता है—पुनर्जन्म
- श्रीकृष्ण बारह आदित्यों में हैं—विष्णु
- श्रीकृष्ण प्रकाशकों में विश्वव्यापक रश्मियों से युक्त हैं—सूर्य
- श्रीकृष्ण वायु समूहों में हैं—मरीचि
- श्रीकृष्ण नक्षत्रों में हैं—चन्द्रमा
- श्रीकृष्ण वेदों में हैं—सामवेद
- श्रीकृष्ण देवों में है—इन्द्रदेव
- श्रीकृष्ण इन्द्रियों में हैं—मन
- श्रीकृष्ण अखिल प्राणियों में हैं—चेतनता
- श्रीकृष्ण एकादश रुद्रों में हैं—शङ्कर
- श्रीकृष्ण यक्ष तथा राक्षसों में धन के स्वामी हैं—कुबेर
- श्रीकृष्ण आठ वसुओं में हैं—पावक
- श्रीकृष्ण पर्वतों में हैं—मेरु
- श्रीकृष्ण पुराहितों में प्रधान पुरोहित हैं—बृहस्पति

- श्रीकृष्ण सेनापतियों में हैं—कार्तिकेय
- श्रीकृष्ण स्थिर जलाशयों में हैं—समुद्र
- श्रीकृष्ण महर्षियों में हैं—भृगु
- श्रीकृष्ण शब्दों में हैं—अक्षर ओंकार
- श्रीकृष्ण सब प्रकार के यज्ञों में हैं—जपयज्ञ
- श्रीकृष्ण स्थावरगण में हैं—हिमालयपर्वत
- श्रीकृष्ण वृक्षों में हैं—पीपल
- श्रीकृष्ण देवर्षियों में हैं—नारद
- श्रीकृष्ण गन्धर्वों में हैं—चित्ररथ
- श्रीकृष्ण सिद्धों में हैं—कपिलमुनि
- श्रीकृष्ण अश्वों में हैं—उच्चैःश्रवा अश्व
- श्रीकृष्ण हाथियों में हैं—ऐरावत
- श्रीकृष्ण मनुष्यों में हैं—राजा
- श्रीकृष्ण अस्त्रों में हैं—वज्र
- श्रीकृष्ण गौओं में हेतु हैं—कामधेनु
- श्रीकृष्ण उत्पत्ति हेतुओं में हैं—कामदेव
- श्रीकृष्ण सर्पों में हैं—वासुकि
- श्रीकृष्ण नागों में हैं—अनन्त
- श्रीकृष्ण जलजीवों में हैं—वरुण
- श्रीकृष्ण पितृगणों में हैं—अर्यमा
- श्रीकृष्ण नियामकों में हैं—यम
- श्रीकृष्ण दैत्यों में हैं—प्रहलाद
- श्रीकृष्ण गणना करने वालों में हैं—काल (समय)
- श्रीकृष्ण पशुओं में हैं—सिंह
- श्रीकृष्ण पक्षियों में हैं—गरुड़
- श्रीकृष्ण वेगवानों और पवित्रकारियों में हैं—वायु
- श्रीकृष्ण शस्त्रधारियों में हैं—राम
- श्रीकृष्ण मछलियों में हैं—मगरमच्छ
- श्रीकृष्ण नदियों में हैं—गङ्गा

➤ सृष्ट वस्तुओं के आदि, अन्त, और मध्य हैं—कृष्ण
➤ श्रीकृष्ण विद्याओं में हैं—आत्मविद्या
➤ श्रीकृष्ण परस्पर विवादकारियों में हैं—वाद
➤ श्रीकृष्ण अक्षरों में आदि अक्षर हैं—अकार
➤ श्रीकृष्ण समासों में हैं—द्वन्द्वसमास
➤ अक्षय-प्रवाहरूपकाल हैं—श्रीकृष्ण
➤ कर्मफलदाताओं में विश्वतोमुख-कर्मफलविधाता हैं—श्रीकृष्ण
➤ सर्वसंहारकों में मृत्यु हैं—श्रीकृष्ण
➤ भविष्य में जिनका कल्याण होना निश्चित है, उन मनुष्यों का अभ्युदय है—श्रीकृष्ण
➤ स्त्रियों में कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा ये सात देवता रूपी रमणी हैं—श्रीकृष्ण
➤ श्रीकृष्ण सामसमूह में हैं—बृहत्साम
➤ श्रीकृष्ण छन्दो में हैं—गायत्री
➤ श्रीकृष्ण मासों में हैं—मार्गशीर्ष
➤ श्रीकृष्ण ऋतुओं में हैं—बसन्त
➤ श्रीकृष्ण वृष्णिवंशियों में हैं—वासुदेव
➤ श्रीकृष्ण पाण्डवों में हैं—धनंजय
➤ श्रीकृष्ण मुनियों में हैं—वेदव्यास
➤ श्रीकृष्ण कवियों में हैं—शुक्राचार्य
➤ मरुद्गण हैं—49
➤ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान किया था—11वें अध्याय में
➤ श्रीकृष्ण ने पुरुष और प्रकृति को कहा है—अनादि
➤ 'स्थितप्रज्ञ' का वर्णन किया गया है—द्वितीय अध्याय में
➤ अर्जुन के शंख का नाम था—देवदत्त
➤ श्रीकृष्ण के शंख का नाम था—पाञ्चजन्य
➤ गीता में कितने प्रकार के तप कहे गए हैं?—तीन
➤ मानव शरीर में कितने रन्ध्र हैं?—9



प्रमुख श्लोक

1. आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् 1/2 (संजय)
2. स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः। 1/36 (अर्जुन)
3. कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। 1/37 (अर्जुन)
4. 'धर्म नष्टे कुलं'। 1/39 (अर्जुन)
5. विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः। 1/46 (संजय)
6. क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप। 2/3 (श्रीकृष्ण)
7. 'गुरुनहत्वा हि महानुभावान्' 2/5 (अजुर्न)
8. देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। 2/13 (श्रीकृष्ण)
9. 'नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'। 2/16 (श्रीकृष्ण)
10. न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा नभूयः। 2/20 (श्रीकृष्ण)
11. 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय'। 2/22 (श्रीकृष्ण)
12. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। 2/23 (श्रीकृष्ण)
13. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्ममृतस्य च। 2/27 (श्रीकृष्ण)
14. हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। 2/37 (श्रीकृष्ण)
15. सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। 2/38 (श्रीकृष्ण)
16. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्म्मणि।। 2/47 (श्रीकृष्ण)
17. 'योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा.' 2/48 (श्रीकृष्ण)

18. क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः। 2/63 (श्रीकृष्ण)
19. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्म्मो भयावहः। 3/34 (श्रीकृष्ण)
20. परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्। 4/8 (श्रीकृष्ण)
21. क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्म्मजा। 4/12 (श्रीकृष्ण)
22. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। 4/13 (श्रीकृष्ण)
23. योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। 5/7 (श्रीकृष्ण)
24. यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। 6/22 (श्रीकृष्ण)
25. ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः। 7/29 (श्रीकृष्ण)
26. अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्मुच्यते। 8/3 (श्रीकृष्ण)
27. प्रभवः प्रलयं स्थानं निधानं बीजमव्ययम्। 9/19 (श्रीकृष्ण)
28. एवमुक्त्वा ततो राजन् महायोगेश्वरो हरिः। 11/9 (श्रीकृष्ण)
29. समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः। 12/18 (श्रीकृष्ण)
30. ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते। 13/17 (श्रीकृष्ण)
31. ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणाञ्च परन्तप। 18/41 (श्रीकृष्ण)
32. तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। 18/78 (संजय)
33. योगः कर्मसु कौशलम्। 2/50 (श्रीकृष्ण)



द्वितीय भाग

ऐच्छिक / वैकल्पिक

ऐच्छिक-1

ऋग्वेद

वरुण सूक्त (ऋ.1.25)

- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 25वाँ सूक्त है—वरुण सूक्त
- वरुण सूक्त का ऋषि है—शुनःशेप
- वरुण सूक्त का देवता है—वरुण
- वरुण शब्द की व्युत्पत्ति है—'वृञ्वरुणे' (वरणीया)
- वरुण का निर्वचन है—वरुणो वृणोतीतिसतः (यास्क)
- वरुण सूक्त का छन्द है—गायत्री
- वरुण सूक्त है—द्युस्थानीय
- **'वरुण'** शब्द निष्पन्न होता है—**'वृ'** धातु से
- भौतिक नियमों का नियन्ता कहा गया है—वरुण को
- **'धृतव्रत'** कहा जाता है—वरुण को
- सूर्य, अग्नि और जल की रचना की है—वरुण ने
- 'उत्तमशासक' कहा जाता है—वरुण को
- 'वृ' धातु का अर्थ है—आच्छादित करना या आवृत्त करना
- वरुण का नेत्र कहा गया है— सूर्य को
- सूर्य की तरह किसका रथ देदीप्यमान है?—वरुण का
- 'वज्र' एवं 'पाश' प्रमुख अस्त्र हैं—वरुण के
- वरुण का प्रधान कार्य है— जल बरसाना
- संसार का नैतिक अध्यक्ष है—वरुण
- वरुण द्वारा दण्डित को रोग होता है—जलोदर
- सातवाँ आदित्य कहा जाता है—वरुण को

- 'क्षत्रश्रिय' कहा जाता है—वरुण को
- 'दूतदक्ष' कहा जाता है—वरुण को
- 'उरुचक्षसः' कहा जाता है—वरुण को
- वरुण सूक्त में कुल मंत्र हैं— 11

सूर्य सूक्त (ऋ.1.115)

- ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का 115वाँ सूक्त है—सूर्य सूक्त
- सूर्य सूक्त के ऋषि हैं— कुत्स
- सूर्य सूक्त के देवता हैं— सूर्य
- सूर्य सूक्त का छन्द है— त्रिष्टुप्
- सूर्य सूक्त है—द्युस्थानीय
- सूर्य सूक्त की स्तुति की गयी है—14 सूक्तों में
- सूर्य के पिता हैं—द्यौ
- सूर्य की माता हैं—अदिति
- दिन रात्रि के नियामक हैं—सूर्य
- जगत की आत्मा कहा जाता है—सूर्य को
- 'आप्रा धावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' यह है—सूर्य सूक्त में
- 'चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः' यह कहा गया है—सूर्य को(सूर्य सूक्त)
- सूर्य के रथ को कितने हरितवर्ण के घोड़े खींचते हैं?—सात
- सविता देवता के साथ सादृश्य सम्बन्ध है—सूर्य का
- सूर्य की प्रेयसी है—उषस्
- अवेस्ता में सूर्य का नाम प्राप्त होता है—'हवर'
- यूनान में सूर्य को कहा जाता है—'लियेसि'
- सूर्य सूक्त (1/115) में कुल मंत्र हैं—6
- सूर्य की उत्पत्ति बतलायी गयी है—विराट पुरुष के नेत्र से
- **सूर्य के घोड़े का नाम है—एतश्**

उषस् सूक्त (ऋ. 3.61)

- ऋग्वेद के तीसरे मण्डल का 61वाँ सूक्त है—उषस् सूक्त
- उषस् सूक्त के ऋषि हैं—विश्वामित्र
- उषस् सूक्त के देवता हैं— उषस्
- उषस् सूक्त का छन्द है—त्रिष्टुप्
- उषस् सूक्त की स्तुति की गयी है— 20 सूक्तों में
- उषस् देवता है—द्युस्थानीय
- गीति काव्य का मनोरम दृश्य प्राप्त होता है—उषस् सूक्त में
- सौन्दर्य की देवी है—उषस्
- प्रतिदिन उत्पन्न होने के कारण पुराणी कहा गया है—उषस् को
- **'उषा'** शब्द की व्युत्पत्ति हुई है—'वस' धातु से
- **'वस'** का अर्थ है—चमकना
- उषस् का निर्वचन है—'उच्छविवासे'
- उषस् सूक्त में कुल मंत्र हैं—7
- 'चन्द्ररथा' कहा जाता है—उषस् को
- 'युवति' कहा जाता है—उषस् को
- 'मघोनि' कहा जाता है—उषस् को
- 'सुभगा' और 'सुदंसा' है—उषा
- 'ऋतावरी' विशेषण है—उषा का
- मित्र-वरुण की माया का नाम है—उषा

पर्जन्य सूक्त (ऋ. 5.83)

- पर्जन्य का शाब्दिक अर्थ होता है—'परितः जन्यो'
- ऋग्वेद के 5वें मण्डल का 83वाँ सूक्त है—पर्जन्य सूक्त
- पर्जन्य सूक्त के ऋषि हैं—अत्रि
- पर्जन्य सूक्त के देवता हैं—पर्जन्य

- वर्षा का नियन्ता देवता है—पर्जन्य
- पर्जन्य के सहायक हैं—मरुतगण
- द्यौष् का पुत्र है—पर्जन्य
- पृथ्वी का पति कहा गया है—पर्जन्य को
- औषधियों, तृणों का जन्मदाता कहा गया है—पर्जन्य को
- गायों, घोड़ों एवं अन्य मादा जन्तुओं में गर्भाधान का सामर्थ्य उत्पन्न करता है—पर्जन्य
- पर्जन्य सूक्त में कुल मंत्र हैं—10
- किसके व्रत में पृथ्वी देवी अन्न देती है?—पर्जन्य



शुक्ल यजुर्वेद

शिवसंकल्प सूक्त

- शुक्लयजुर्वेद का 34वाँ अध्याय है—शिवसंकल्प सूक्त
- शिवसंकल्प सूक्त के ऋषि हैं—याज्ञवल्क्य
- शिवसंकल्प सूक्त के देवता हैं—मन
- शिवसंकल्प सूक्त का छन्द है—त्रिष्टुप्
- शिवसंकल्प सूक्त में इन्द्रियाँ मानी गयी हैं—11 (5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन)
- सभी इन्द्रियों का स्वामी कहा गया है—मन को
- शिवसंकल्प सूक्त के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आता है—तन्मेमन शिवसंकल्पमस्तु
- शिसंकल्प सूक्त में कुल मन्त्र हैं—6
- 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति' यह है—शिवसंकल्पसूक्त में
- 'हृतप्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्' यह है—शिवसंकल्पसूक्त में
- 'येनेदं भूतं भुवनम्' यह है—शिवसंकल्पसूक्त में
- 'दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकम्' यह है—शिवसंकल्पसूक्त में
- 'येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः' यह है—शिवसंकल्पसूक्त में

प्रजापति सूक्त

- शुक्लयजुर्वेद के 32वें अध्याय में है—प्रजापति सूक्त
- प्रजापति सूक्त की स्तुति की गयी है—16 ऋचाओं में
- सम्पूर्ण जीवों में रहने वाला एकमात्र प्राणतत्त्व है—प्रजापति
- प्रजापति सूक्त के ऋषि हैं—स्वयंभू ब्रह्म
- प्रजापति सूक्त के देवता हैं—आत्म

- प्रजापति सूक्त के प्रथम, द्वितीय मन्त्र में छन्द है— अनुष्टुप्
- प्रजापति सूक्त के तीसरे मन्त्र में छन्द है— पंक्ति
- प्रजापति सूक्त के चतुर्थ और पञ्चम मन्त्र में छन्द है— त्रिष्टुप्
- सम्पूर्ण जीवों एवं जगत् में व्याप्त है— प्रजापति
- प्रजापति सूक्त के अनुसार सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ— प्रजापति
- प्रजापति सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 5
- 'षोडषी' कहा गया है— प्रजापति को
- शुक्लयजुर्वेद में माध्यन्दिनि संहिता का प्रजापति सूक्त उपलब्ध है— 32वें अध्याय में



अथर्ववेद

राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त (अथर्व. 1.29)

- अथर्ववेद के प्रथम काण्ड का 29वाँ सूक्त है— राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त
- राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त के ऋषि हैं— वशिष्ठ
- राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त के देवता हैं— अभिवर्तमणि
- राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त के छन्द हैं— अनुष्टुप्
- राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 6
- संसार की समृद्धि के लिए रचित किया गया सूक्त है— राष्ट्राभिवर्द्धन
- 'अभीवर्तन मणिनां येनेन्द्रो अभिवावृधे' यह है— राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त में
- 'उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः' यह है— राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त में
- 'सपत्नक्षयणो बृषाभिराष्ट्रो विषसहिः' यह है— राष्ट्राभिवर्द्धन सूक्त में

कालसूक्त (अथर्व. 19.53)

- अथर्ववेद के 19वें काण्ड का 53वाँ सूक्त है— कालसूक्त
- कालसूक्त के ऋषि हैं— भृगु
- कालसूक्त के देवता है— काल
- किसके माध्यम से अथर्ववेद में समय की एक दिव्य रूप में प्रार्थना की गई है— कालसूक्त के
- तीनों कालों में स्थित है— काल देवता
- किसके कारण सम्पूर्ण चराचर जगत क्रियाशील है?— काल के
- सात चक्रों पर चढ़कर इस चराचर जगत की रचना करता है— काल
- इस चराचर जगत का संहार करता है— काल
- काल सूक्त में कुल मन्त्र हैं— 10
- 'सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरितेराः' यह है— काल सूक्त में
- 'चक्रा भुवनानि विश्वा' यह है— काल सूक्त में
- 'स इमा विश्वा भुवनानि' यह है— काल सूक्त में

- 'कामेन् सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः' यह है—काल सूक्त में
- 'तेनेषितं तेन जातं तदुतस्मिन् प्रतिष्ठितम्' यह है—काल सूक्त में
- 'स्वयम्भूः कश्यपः' यह है—काल सूक्त में
- काल के रथ में कितने चक्र हैं?—7
- 'भूते पिता, भविष्ये पुत्रश्च' यह होता है—काल
- 'कालो ह ब्रह्मभूत्वा विभर्ति' यह है—परमेष्ठि
- ब्रह्मविद्या कहाँ समाहित है?—काल में

+++

विधि एवं उसके प्रकार

- ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है—विधि
- 'तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो' यह है—विधि
- विधि का विभाजन किया गया है—त्रिविध
- प्रथम विभाजन हैं—तीन

  1. सामान्य विधि 2. गुण विधि 3. विशिष्टविधि
- द्वितीय विभाजन हैं—चार

  1. उत्पत्तिविधि 2. अधिकारविधि

  3. विनियोगविधि 4. प्रयोगविधि
- तृतीय विभाजन है—तीन

  1. अपूर्वविधि 2. नियमविधि 3. परिसंख्याविधि
- 'यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुणमात्रं विधत्ते' यह है—गुणविधि
- 'यत्र तु उभयं प्राप्तं तत्र विशिष्ट विधत्ते' यह है—विशिष्ट विधि
- 'कर्मस्वरूपमात्रबोधकोविधिः' यह है—उत्पत्तिविधि

- 'कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधकोविधिः' यह है—अधिकारविधि
- 'अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधकोविधिः' यह है—विनियोगविधि
- विनियोग विधि के प्रमाण हैं—6
- 'प्रयोगपाशुभावबोधकोविधिः' यह है—प्रयोगविधि
- प्रयोगविधि के प्रमाण हैं—6
- अत्यन्त अप्राप्त पदार्थ का विधान करने वाली विधि को कहते हैं—अपूर्वविधि
- 'नानासाधनसाध्यक्रियायामेकसाधनप्राप्तावप्राप्तस्यापरसाधनस्यप्रापको-विधिः'यह है—नियमविधि
- 'पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापको विधिः' यह है—नियमविधि
- 'व्रीहिन वहन्ति' यह उदाहरण है—नियमविधि का
- 'उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितरव्यावृत्तिपरो विधिः' यह है—परिसंख्याविधि
- ब्राह्मणों के प्रतिपाद्यविषय हैं—10
- 'पञ्च-पञ्चनखाःभक्ष्याः' यहाँ विधि है—परिसंख्याविधि
- सात प्रमुख हविर्याग में द्वितीय याग हैं—अग्निहोत्र
- 'यज्ञानाम् यदग्निहोत्रं शीर्षम्' यह उद्धृत है—शतपथब्राह्मण में

+++

ऋक् प्रातिशाख्य

- 'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः' यह है—समानाक्षर
- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ ये आठ अक्षर हैं—समानाक्षर
- वर्णमाला के प्रारम्भ (आदि) से लेकर आठ अक्षर तक कहे जाते हैं—समानाक्षर
- वे दो समानाक्षर जो समान स्थान वाले होते हैं, वे प्राप्त करते हैं—दीर्घता को
- 'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराण्युत्तराणि' यह है—सन्ध्यक्षर
- समानाक्षर के बाद आने वाले चार वर्ण कहलाते हैं—सन्ध्यक्षर
- ए, ओ, ऐ, औ, ये चार वर्ण हैं—सन्ध्यक्षर
- 'अन्त्याः सप्त तेषामघोषाः' यह है—अघोष
- श्वास का दूसरा नाम है—अघोष
- श, ष, स है— अघोषवर्ण
- 'वर्गे वर्गे च प्रथमावघोषौ' यह है—अघोष
- क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, ये हैं— अघोष वर्ण
- वर्ग के प्रथम वर्ण होते हैं—अघोषसंज्ञक
- 'युग्मौ साष्माणौ' यह है—सोष्म
- वर्गे-वर्गे च द्वितीय-चतुर्थौ' यह है—सोष्म वर्ण
- प्रत्येक वर्ग का द्वितीय तथा चतुर्थ वर्ण है—सोष्म वर्ण
- ध्वनिवादियों ने महाप्राण कहा है—सोष्म को
- 'पूर्वभागमक्षराङ्गम्' यह है—स्वरभक्ति
- 'पूर्वं रेफं लकारं वा' यह है— स्वरभक्ति
- पूर्ववर्ती रेफ या लकार से सम्बद्ध होती है—स्वरभक्ति
- स्वरभक्ति के प्रकार हैं—दो

  1. दीर्घ स्वर भक्ति 2. ह्रस्वस्वरभक्ति
- ऊष्मवर्ण परे होती है—दीर्घस्वरभक्ति

- अर्द्धमात्रा वाली होती है—दीर्घस्वरभक्ति
- द्वित्व प्राप्त ऊष्मवर्ण परे होती है—ह्रस्वस्वरभक्ति
- एक चौथाई मात्रा वाली होती है—ह्रस्वस्वरभक्ति
- समानाक्षर हैं—8
- सन्ध्यक्षर हैं—4
- अघोष हैं—7
- यम हैं—चार

  1. अघोष अल्पप्राण 2. अघोष महाप्राण

  3. सघोष अल्पप्राण 4. सघोषमहाप्राण
- 'स्पर्शा यमाननुनासिकाः स्वान्परेषु स्पर्शेष्वनुनासिकेषु' यह है—यम
- कँ, चँ, टँ, तँ, चँ वर्ण हैं--अघोषअल्पप्राण
- खँ, छँ, ठँ, थँ, फँ वर्ण हैं—अघोषमहाप्राण
- गँ, जँ, डँ, दँ, बँ वर्ण हैं— सघोष अल्पप्राण
- घँ, झँ, ढँ, धँ, भँ वर्ण हैं—सघोष महाप्राण
- अनुनासिक वर्णों की होती है—रक्तसंज्ञा
- 'रक्तसंज्ञकाः भवन्ति'—अनुनासिक
- रक्तसंज्ञक होता है—अनुनासिक
- प्रत्येक वर्ण का 5वाँ (अन्तिम) वर्ण होता है—अनुनासिक
- ङ्, ञ्, ण्, न्, म् वर्ण हैं—अनुनासिक
- 'व्यञ्जनसन्निपातः' यह है संयोग
- दो व्यञ्जनवर्णों का मिलना ही कहलाता है—संयोग
- 'ओकार आमन्त्रितजः' यह है—प्रगृह्य
- 'ईदूदेद्द्विवचनम्' यह है—प्रगृह्य
- 'ऊष्मारेफी पञ्चमो नामिपूर्वः' यह है—रिफित

✦✦✦

यास्कानुसार मन्त्रों के प्रकार, देवताओं का स्वरूप एवं संख्या

- यास्क के अनुसार मंत्र के प्रकार हैं—तीन
  1. परोक्षकृत 2. प्रत्यक्षकृत 3. आध्यत्मिक्य
- मन्त्र का तात्पर्य है—ऋचाओं से
- देवताओं का विस्तृत विवेचन करने वाले काण्ड को कहते हैं—दैवतकाण्ड
- निरुक्त में मन्त्र के प्रकार हैं—तीन
- 'सर्वाभिर्नाम-विभक्तिर्युज्यन्ते प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य' यह है—परोक्षकृत मन्त्र
- 'इन्द्रो दिवः इन्द्र ईशे पृथिव्याः' यह उदाहरण है—प्रथमाविभक्ति का
- 'इन्द्रमिदं गाथिनो बृहत्' यह उदाहरण है—द्वितीयाविभक्ति का
- 'इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणः' यह उदाहरण है—तृतीयाविभक्ति का
- 'इन्द्राय साम गायत' यह उदाहरण है—चतुर्थीविभक्ति का
- 'नेन्द्रादृते पवते धाम किञ्चन्' यह उदाहरण है—पञ्चमीविभक्ति का
- 'इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचम्'यह उदाहरण है—षष्ठीविभक्ति का
- 'इन्द्रे कामा असंयत्' यह उदाहरण है—सप्तमीविभक्ति का
- 'मध्यमपुरुषयोगाः' यह है—प्रत्यक्षकृत मन्त्र
- 'त्वम्' सर्वनाम से युक्त होता है—प्रत्यक्षकृत मन्त्र
- 'उत्तमपुरुषयोगाः' यह है—आध्यात्मिक्य मन्त्र
- 'अहम्' सर्वनाम से युक्त होता है—आध्यात्मिक्य मन्त्र
- सबसे कम मन्त्र हैं—आध्यात्मिक्य मन्त्र
- यास्क देवता-क्रम में कितने मतों का उल्लेख किये हैं?—चार

- 'चेतनवद्वद्धि स्तुतयो भवन्ति' ये हैं—पुरुषविध देवता
- देवताओं का स्वरूप हैं—चार
  1. पुरुषविध 2. अपुरुषविध 3. उभयविध 4. कर्मार्थात्मोभयविध
- 'अग्निर्वायुरादित्यः पृथ्वी चन्द्रमा इति दृश्यतेऽपुरुषविधम्' ये हैं—अपुरुषविध देवता
- देवता जड़ तथा चेतन दोनों ही प्रकार के हैं—यास्कानुसार (उभयविध)
- 'अपि वा पुरुषविधानामेव सतां कर्मात्मान एते स्युः' यह है—कर्मार्थात्मोभयविध देवता
- यास्क के अनुसार देवताओं की संख्या है—तीन
- देवताओं की संख्या को निरूपित करते हुए निरुक्तकार ने कहा है—तीन मत
- 'तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः' यह कहा है—यास्क ने
- यास्कानुसार देवता हैं—तीन
  1. अग्नि 2. वायु अथवा इन्द्र 3. सूर्य
- पृथ्वीस्थानीय देवता हैं—अग्नि
- अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं—वायु
- द्युस्थानीय देवता हैं—सूर्य
- यास्क द्वारा प्रणीत दैवतकाण्ड किस अध्याय में है?—सप्तम में



ऐच्छिक-2

वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्डम्)

- 'वाक्यपदीयम्' के रचनाकार हैं— भर्तृहरि
- व्याकरण का दार्शनिक ग्रन्थ है—'वाक्यपदीयम्'
- वाक्यपदीयम् ग्रन्थ विभक्त है—'काण्ड' में
- वाक्यपदीयम् में कुल काण्ड हैं—तीन
- वाक्यपदीयम् के प्रथम काण्ड का नाम हैं— ब्रह्मकाण्ड
- वाक्यपदीयम् के द्वितीय काण्ड का नाम हैं— वाक्यकाण्ड
- वाक्यपदीयम् के तृतीय काण्ड का नाम हैं— पदकाण्ड या प्रकीर्णक
- 'वाक्यं च पदं च वाक्यपदे-तदधिकृत्य कृतो ग्रन्थः वाक्यपदीयम्' यह विग्रह है—'वाक्यपदीय' का
- सृष्टि प्रक्रिया के विषय में भर्तृहरि द्वारा कौन सा 'वाद' स्वीकार किया गया है?— विवर्तवाद का
- व्याकरण में 'अनादिनिधनं ब्रह्म' है— शब्दतत्त्व
- शब्दतत्त्व ब्रह्म विवर्तित है—'अर्थभाव' से
- 'अतत्त्वतः अन्यथा प्रथा' है— विवर्त
- 'सतत्त्वतः' अन्यथा प्रथा है— विकार
- एक शब्द ब्रह्म किससे भिन्न है?— शक्तिव्यपाश्रय द्वारा
- 'वाक्यपदीय' ग्रन्थ की चर्चा होती है— ब्रह्म की चर्चा से
- 'वैयाकरण' के मत में शब्द है— स्फोट
- 'बुद्धिस्थ' अक्रम (क्रम रहित) है— स्फोट
- अर्थवान इकाई के रूप में गृहीत यह 'बुद्धिस्थ' शब्द ही है—स्फोट
- 'स्फुटति अर्थोऽस्मादिति स्फोटः' यह व्युत्पत्ति है— स्फोट की
- स्फोट है— अखण्ड
- अखण्ड, निरवयव और ध्वनि से भिन्न एवं कालातीत है—स्फोट
- शब्द को ब्रह्म स्वीकार करते हैं— भर्तृहरि

- शब्द, ब्रह्म की शक्ति है— कालशक्ति
- यह कालशक्ति शब्दब्रह्म की है— स्वतन्त्र शक्ति
- शब्द ब्रह्म की कालशक्ति कैसी है?— आरोपितनिमेषादिभेदवती
- कालशक्ति के आश्रय से उत्पन्न होता है— जन्मादि षड्भावविकार
- भावविकार हैं— 6
- 'जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, ह्रसति और नश्यति' ये हैं— षड्भावविकार
- समस्त जगत् का मूलकारण है— ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय है— वेद
- शब्द ब्रह्म का अनुकार है— वेद
- वेदशाखाओं में शब्द क्या दिखाई देता है?— नियतबोधजनक
- दृष्टादृष्टप्रयोजन हैं— स्मृतियाँ
- स्मृतियों का प्रमाण है— वेद
- किस तरह की विद्या को सत्य कहा गया है?— एकपदागमा
- प्रणवरूपेण सर्ववादाविरोधिनी विद्या कही गयी है— एकपदागमा
- विद्या के भेद कौन-2 हैं— व्याकरण आदि
- वेद के उपांग हैं— पुराण न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र
- ब्रह्म के निकट है— व्याकरण
- प्राप्तरूप विभाग है— वाक्
- साधुशब्दज्ञान का सरल मार्ग है— व्याकरण
- भर्तृहरि ने मोक्ष का द्वार कहा है— व्याकरण को
- सिद्धसोपान पर्वों का प्रथम पद स्थान है— व्याकरण
- भर्तृहरि शब्द के कितने स्तर स्वीकार करते हैं?— दो
  1. निमित्त 2. अर्थ में प्रयुक्त (प्रसायक)
- ध्वनि और स्फोट में सम्बन्ध है— व्यञ्जक व्यङ्ग्यभाव
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि शब्द की कितनी शक्तियाँ बताते हैं?— दो
  1. ग्राह्यत्व 2. ग्राहकत्व

- 'भर्तृहरि शब्द और अर्थ में सम्बन्ध मानते हैं—नित्य
- 'वाक्यपदीयकार' ध्वनि के भेद मानते हैं—दो
  1. प्राकृत ध्वनि, 2. वैकृत ध्वनि
- छन्दस्य का विग्रह है—'छन्दसे हित:'
- स्फोट को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि है—प्राकृत ध्वनि
- अभिव्यक्त स्फोट स्वरूप को निरन्तर लम्बे समय तक उपलब्ध कराने वाली ध्वनि है—वैकृत ध्वनि
- व्याकरण शास्त्र में कौन नित्य कहा गया है?—स्फोट
- वाक्यपदीयानुसार कितने पदार्थ हैं?—आठ
- वाक्यपदीयानुसार कितने प्रमाण हैं?—पाँच,
  1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान, 3. शब्द, 4. अभ्यास, 5. अदृष्ट
- वाक्यपदीयकार के मत में प्रधान प्रमाण है—आगम (शब्द)
- भावों की प्रसिद्धि किसके द्वारा अतिदुर्लभ है?—अनुमान द्वारा
- वृत्तियाँ कितनी हैं?—तीन
  1. द्रुता, 2. मध्या, 3. विलम्बिता
- भर्तृहरि के मत में वाक् कितने प्रकार का है?—तीन
  1. पश्यन्ती 2. मध्यमा 3. वैखरी



सिद्धान्तकौमुदी
समास

- 'समर्थ: पदविधि:' यह सूत्र है—परिभाषासूत्र
- एक पद का दूसरे पद के साथ समस्त होना है—पदविधि
- विधि उन्हीं पदों की होती है, जिनका होता है—परस्पर सामर्थ्य
- सामर्थ्य कितने प्रकार का होता है—दो, 1. व्यपेक्षा, 2. एकार्थीभाव
- 'भूतपूर्व:' का लौकिक विग्रह है—पूर्वंभूत:
- 'भूतपूर्व:' का अलौकिक विग्रह है—पूर्व अम् भूत सु
- समास की परिभाषा है—'समसनं समास:'
- 'सिद्धान्तकौमुदी' के अनुसार समास के भेद हैं—चार
  1. अव्ययी भाव 2. तत्पुरुष 3. बहुब्रीहि 4. द्वन्द्व
- तत्पुरुष समास का एक भेद है—कर्मधारय समास
- कर्मधारय समास का एक भेद है—द्विगु समास
- लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास के भेद हैं—पाँच
  1. केवलसमास 2. अव्ययीभाव 3. तत्पुरुष 4. द्वन्द्व 5. बहुब्रीहि
- 'विशेष सञ्ज्ञाविनिर्मुक्त:' यह परिभाषा है—केवल समास की
- 'केवल समास' का उदाहरण है—वागर्थाविव, जीमूतस्येव
- 'प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभाव:' यह है—अव्ययी भाव समास
- अव्ययीभाव समास में प्राय: होता है—पूर्वपद प्रधान
- 'उपकृष्णम्' में समास है—अव्ययीभाव
- उपसर्जनसंज्ञा सूत्र क्या है?—'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'
- 'प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधान:' यह है—तत्पुरुष समास
- राज्ञ: पुरुष: उदाहरण है—तत्पुरुष समास का
- तत्पुरुष शब्द का विग्रह जिन रूपों में होगा, वे उसी विभक्ति के अनुसार कहलायेंगे—तत्पुरुष समास
- 'अन्यपदप्रधानो' यह है—बहुब्रीहि समास

- 'प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो' यह है— द्वन्द्व समास
- 'परार्थाभिधानं वृत्तिः' यह है— वृत्ति
- वृत्ति है— पाँच
  1. कृत्, 2. तद्धित, 3. समास, 4. एकशेष, 5. सनाद्यन्त
- 'वृत्त्यर्थाऽवबोधकं वाक्यम्' यह है— विग्रह
- विग्रह के प्रकार हैं— दो 1. लौकिक विग्रह, 2. अलौकिक विग्रह
- 'भूतपूर्वः' में समास विधायक सूत्र है— 'सहसुपा'
- किस वार्तिक के निर्देश से 'जीमूतस्येव' में विभक्ति का लोप नहीं हुआ है— 'इवेनसमासोविभक्त्यलोपश्च' से
- समास में उपसर्जन होता है— पूर्व प्रयोग (उपसर्जनम् पूर्वम्)
- 'विभक्ति' का उदाहरण है— अधिहरि
- 'अधिहरि' का विग्रह है— हरौ इति
- 'अधिहरि' में 'अधि' है— सप्तम्यर्थ का द्योतक
- 'अपदिशम्' में समास है— अव्ययीभाव
- विशेषण विशेष्यवाची तत्पुरुष कहलाता है— कर्मधारय समास
- विशेषण विशेष्यवाची तत्पुरुष (कर्मधारय) में यदि पहला पद संख्यावाची हो, तो वह कहलाता है— द्विगु समास (संख्या पूर्वो द्विगुः)
- निषेधार्थक विशेषणवाची होने पर उसे कहते हैं— 'नञ्' तत्पुरुष
- 'अधिगोपम्' में समास है— अव्ययीभाव
- 'अधिगोपम्' का लौकिक विग्रह है— 'गोपे इति'
- 'निर्मक्षिकम्' का लौकिक विग्रह है— मक्षिकाणाम् अभावः
- 'निर्मक्षिकम्' का अलौकिक विग्रह है— मक्षिका+आम+निर्+सु
- 'सुमद्रम्' का लौकिक विग्रह है— मद्राणां समृद्धिः
- 'दुर्यवनम्' का लौकिक विग्रह है— यवनानां व्यृद्धिः
- 'व्यृद्धिः' का लौकिक विग्रह है— विगता ऋद्धिः
- 'अतिहिमम्' का लौकिक विग्रह है— हिमस्य अत्ययः
- 'अतिनिद्रम्' का लौकिक विग्रह है— निद्रा सम्प्रति न युज्यते

- 'उपकृष्णम्' में समास है— अव्ययीभाव समास
- अव्ययीभाव समास होता है— नपुंसक लिङ्ग में
- 'द्वियमुनम्' में समास होता है— अव्ययीभाव (नदीभिश्च)
- 'द्वियमुनम्' का लौकिक विग्रह है— 'द्वयो यमुनयोः समाहारः
- 'द्विमुनि' में समास होता है— अव्ययीभाव (संख्यावंश्येन)
- 'त्रिमुनि' में समास होता है— अव्ययीभाव (संख्यावंश्येन)
- 'सुमद्रम्' का अलौकिक विग्रह है— मद्र+आम्+सु
- 'दुर्यवनम्' का अलौकिक विग्रह है— यवन+आम्, दुर्+सु
- 'व्यृद्धिः' का अलौकिक विग्रह है— वि+सु, ऋद्धि+सु
- 'अतिहिमम्' का अलौकिक विग्रह है— हिम+ङस्+ अति+सु
- 'अतिनिद्रम्' का अलौकिक विग्रह है— निद्रा+सु, अति+सु
- द्वन्द्व समास में 'चकार' की होती है— बहुलता (चकार बहुलो द्वन्द्वः)
- 'च' के कितने अर्थ होते है?— चार
  1. समुच्चय, 2. अन्वाचय, 3. इतरेतरयोग, 4. समाहार
- 'परस्पर निरपेक्षस्यानेकस्यैकस्मिन् अन्वयः समुच्चयः' यह है— समुच्चय
- 'अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेऽन्वाचयः' यह है— अन्वाचय
- 'मिलितानामन्वये इतरेतरयोगः' यह है— इतरेतरयोग
- 'समूहः समाहारः' यह है— समाहार
- 'यथा' के अर्थ हैं— चार
- वंश के प्रकार होते हैं— दो, 1. विद्या, 2. जन्म
- नदी वाचक सुबन्त के साथ संख्यावाची सुबन्त में समास होता है— अव्ययीभाव
- 'सप्तगङ्गम्' में समास है— अव्ययीभाव
- 'सप्तगङ्गम्' का लौकिक विग्रह है— सप्तानां गंगानाम् समाहारः
- 'सप्तगङ्गम्' का अलौकिक विग्रह है— सप्तन्+आम्, गङ्गा+आम
- तत्पुरुष समास का भेद है— कर्मधारय
- कर्मधारय का भेद है— द्विगु

+++

शब्द	लौकिक विग्रह	अलौकिक वि.	समास
अधिहरि	हरौ इति	हरि+ङि+अधि+सु	अव्ययीभाव
अधिगोपम्	गाः पातीति गोपाः तस्मिन्	गोपा ङि,अधि+सु	अव्ययीभाव
अपदिशम्	दिशयोः मध्ये	दिशा+ओस्, अप+ङि	अव्ययीभाव
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण+ङस्,उप+सु	अव्ययीभाव
सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	मद्र+आम्, सु+सु	अव्ययीभाव
दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	यवन्+आम्,दूर्+सु	अव्ययीभाव
व्यृद्धिः	विगता ऋद्धिः	वि+सु, ऋद्धि+सु	अव्ययीभाव
निर्मक्षिमम्	मक्षिकानाम् अभावः	मक्षिका+आम,निर+सु	अव्ययीभाव
अन्तिहियम्	हिमस्य अत्ययः	हिम+ङस्, अति+सु	अव्ययीभाव
अतिनिद्रम्	निद्र सम्प्रति न युज्यते	निद्रा+सु, अति+सु	अव्ययीभाव
अनुविष्णु	विष्णोः पश्चात्	विष्णु+ङस्,अनु+सु	अव्ययीभाव
अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप+ङस्, अनु+सु	अव्ययीभाव
प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थम् प्रति	अर्थ+अम्, प्रति+सु	अव्ययीभाव
सहरि	हरेः सादृश्यम्	हरि+ङस्+सह+सु	अव्ययीभाव
सचक्रम्	चक्रेण युगपत्	चक्र+टा,सह+सु	अव्ययीभाव
सक्षत्रम्	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र+आम्,सह+सु	अव्ययीभाव
साग्नि	अग्नि ग्रन्थ पर्यन्तमधीते	अग्नि+टा,सह+सु	अव्ययीभाव
यावच्छ्लोकम्	यावन्तः श्लोकाः	यावत्+जस् श्लोक+जस्	अव्ययीभाव
शाकप्रति	शाकस्य लेशः	शक्+ङस् प्रति+सु	अव्ययीभाव
अक्षपरि	अक्षेण विपरीतम्	अक्ष+टा+रि+सु	अव्ययीभाव
आमुक्ति	आ मुक्तेः	आ+सु, मुक्ति+ङस्	अव्ययीभाव
अनुगङ्गम्	गङ्गाया: अनु	गङ्गा+ङस्,अनु+सु	अव्ययीभाव
तिष्ठद्गु	तिष्ठन्त्यः गावः	तिष्ठन्ती+जस्,गो+सस्	अव्ययीभाव
द्विमुनि	द्वौ मुनी	द्वि+औ, मुनि+औ	अव्ययीभाव
त्रिभुनि	त्रयः मुनयः	त्रि+जस्,मुनि+जस्	अव्ययीभाव
सप्तगङ्गम्	सप्तानां गङानां समाहारः	सप्तन्+आम:गङ्गा+आम्	अव्ययीभाव
द्वियमुनम्	द्वयोः यमुनयोः समाहारः	द्वि+ओस,यमुना+ओस्	अव्ययीभाव
उन्मत्तगङ्गम्	उन्मत्तागङ्गा यस्मिन्	उन्मत्ता+सु,गङ्गा+सु	अव्ययीभाव
प्रत्यक्षम्	अक्षिणी प्रति	अक्षि+औ+प्रति+सु	अव्ययीभाव

परोक्षम्	अक्षणः परम्	अक्षि+ङस्, परम+सु	अव्ययीभाव
समक्षम्	अक्ष्णोः सम्मुखम्	अक्षि+ओस्, सम्+सु	अव्ययीभाव
उपराजम्	राज्ञः समीपम्	राजन्+ङस्, उप+सु	अव्ययीभाव
अध्यात्मम्	आत्मनि इति	आत्मन्+ङि, अधि+सु	अव्ययीभाव
उपसमिधम्	समिधः समीपम्	समिध्+ङस्, उप+सु	अव्ययीभाव
उपगिरम्	गिरेः समीपम्	गिरि+ङस्, उप+सु	अव्ययीभाव
उपशरदम्	शरद् समीपम्	शरद्+ङस्+उप+सु	अव्ययीभाव
उपजरसम्	जरायाः समीपम्	जरा+ङस् +उप+सु	अव्ययीभाव

तत्पुरुष समास

पञ्चराज्ञम्	पञ्चानां राज्ञां-समाहारः	पञ्चन्+आम्,राजन्+आम	द्विगु
कृष्णश्रितः	कृष्णं श्रितः	कृष्ण+अम्,श्रित+सु	द्वि.तत्पुरुष
दुःखातीतः	दुःखं अतीतः	दुःख+अम्,अतीत्+सु	द्वि.तत्पुरुष
मुहूर्तसुखम्	मुहूर्त सुखम्	मुहूर्त+अम्,सुख+सु	द्वि.तत्पुरुष
शङ्कुला-खण्डः	शङ्कुलया-खण्डः	शङ्कुल+टा,खण्ड+सु	तृ.तत्पुरुष
मासपूर्वः	मासेनपूर्वः	मास+टा,पूर्व+सु	तृ.तत्पुरुष
वाक्कलहः	वाचा कलहः	वाच्+टा,कलह+सु	तृ.तत्पुरुष
आचारनिपुणः	आचारेणनिपुणः	आचार+टा,निपण+सु	तृ.तत्पुरुष
गुडमिश्रः	गुडेन मिश्रः	गुड+टा,मिश्र+सु	तृ.तत्पुरुष
नखनिर्भिन्नः	नखैः निर्भिन्नः	नख+भिस्, निर्भिन्न+सु	तृ.तत्पुरुष
काकपेया	काकैःपेया	काक+भिस्, पेया+सु	तृ.तत्पुरुष
दध्योदनः	दध्ना ओदनः	दधि+टा, ओदन+सु	
यूपदारु	यूपाय दारु	यूप+ङे, दारु+सु	च.तत्पुरुष
द्विजार्थः सूपः	द्विजाय अयम्	द्विज+ङे, अर्थ+सु	च.तत्पुरुष
भूतबलिः	भूतायबलिः	भूत+ङे, बलि+सु	च.तत्पुरुष
गोहितम्	गवे हितम्	गो+ङे, हित+सु	च.तत्पुरुष
वृकभीतः	वृकात् भीतः	वृक+ङसि, भीत+सु	पं.तत्पुरुष
सुखापेतः	सुखात् अपेतः	सुख+ङसि, अपेत+सु	पं.तत्पुरुष

चक्रमुक्तः	चक्रात् मुक्तः	चक्र+ङसि, मुक्त+सु	पं.तत्पुरुष
स्वर्गपतितः	स्वर्गात् पतितः	स्वर्ग+ङसि, पतित+सु	पं.तत्पुरुष
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजन्+ङस्,पुरुष+सु	ष.तत्पुरुष
देवपूजकः	देवानां पूजकः	देव+आम्, पूजक+सु	ष.तत्पुरुष
भूभर्ता	भुवः भर्ता	भूवन्+ङस्, भर्ता+सु	ष.तत्पुरुष
उद्दालकपुष्प	उद्दालकस्यपुष्प	उद्दालक+ङस्,	ष.तत्पुरुष
भञ्जिका	पुष्पभञ्जिका	पुष्पभञ्जिका + सु	ष.तत्पुरुष
पूर्वकायः	पूर्वं कायस्य	काय+ङस्, पूर्व+सु	
मध्याह्नः	अह्नः मध्यम्	अहन्+ङस्, मध्य+सु	ष.तत्पुरुष
प्राप्तजीविकः	जीविकां प्राप्तः	जीविका+अम् प्राप्त+सु	ष.तत्पुरुष
द्व्यहः	द्वयोः अह्नो समाहारः	द्वि+ओस्, अहन्+ओस्	ष.तत्पुरुष
अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	अक्ष+सुप्, शौण्ड+सु	ष.तत्पुरुष
चक्रबन्धः	चक्रेबन्धः	चक्र+ङि, बन्ध+सु	स.तत्पुरुष
जरन्नैयायिकाः	जरन्तश्च ते नैयायिकाः	जरत्+जस्, नैयायिक+जस्	स.तत्पुरुष
सप्तर्षयः	सप्त च ते ऋषयः	सप्तन्+जस्, ऋषि+जस्	कर्मधारय
पौर्वशालः	पूर्वस्यां शालायां भवः	पूर्व+ङि, शाला+ङि	कर्मधारय
पञ्चगवधनः	पञ्चगावःधनं यस्य	पञ्चन्+जस् गो+जस्, धन+सु	तत्पुरुष
			बहुव्रीहि
पञ्चगवम्	पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन्+आम्,गो+आम्	द्विगु
घनश्यामः	घनइवश्यामः	घन+सु, श्याम+सु	कर्मधारय
पुरुषव्याघ्रः	पुरुषो, व्याघ्रः इव	पुरुष+सु, व्याघ्र+सु	कर्मधारय
नीलोत्पलम्	नीलम् च तत् उत्पलम्	नील+सु, उत्पल+सु	कर्मधारय
शाकपार्थिवः	शाकप्रियः पार्थिवः	शाकप्रिय+सु, पार्थिव+सु	कर्मधारय
महावैयाकरणः	महाँश्चासौ वैयाकरणः	महत्+सुः वैयाकरण+सु	कर्मधारय
महानवमी	महती चासौ नवमी च	महती+सु, नवमी +सु	कर्मधारय
पञ्चमभार्या	पञ्चमी चासौ भार्या च	पञ्चमी+सु,भार्या+सु	कर्मधारय
गवोद्धः	उद्धश्चासौ गौश्च	उद्ध+सु,गो+सु	कर्मधारय
निश्चप्रचम्	निश्चितं च प्रचितं च	निश्चित+सु, प्रचित+सु	कर्मधारय
अब्राह्मणः	न ब्राह्मणो	नञ्, ब्राह्मण+सु	नञ् तत्पुरुष
नक्षत्रम्	न क्षरतीति	नञ्, क्षत्र+सु	नञ् तत्पुरुष
अलङ्कृत्य	अलं कृत्वा	अलम्+सु, कृत्वा	तत्पुरुष
प्राचार्यः	प्रगतः आचार्यः	प्र+सु, आचार्य+सु	तत्पुरुष
निष्कौशाम्बिः	निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः	निर्+सु,कौशाम्बि+ङसि	तत्पुरुष

अश्वक्रीती	अश्वेन क्रीता	अश्व+टा, क्रीता+सु	गांत तत्पु.
अहोरात्रः	अहश्च रात्रिश्च	अहन्+सु, रात्रि+सु	द्वन्द्व
परमराजः	परमश्च राजा च	परम+सु, राजन्+सु	कर्मधारय
महादेवः	महाँश्चासौ देवः	महत्+सु, देव+सु	कर्मधारय
द्वादश	द्वौ च दश च	द्वि+औ, दशन्+जस्	द्वन्द्व
मयूरीकुक्कुटौ	मयुरीचकुक्कुटश्च	मयूरी+सु, कुक्कुट+सु	द्वन्द्व
अर्धपिप्पली	पिप्पल्या अर्धम्	पिप्पली+ङस्, अर्ध+सु	तत्पुरुष
अर्धर्चः	ऋचः अर्धम्	ऋक्+ङस्, अर्ध+सु	तत्पुरुष
पञ्चपात्रम्	पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चन्+आम,पात्र+आम्	द्विगु
त्रिभुवनम्	त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रि+आम्,भुवन+आम	द्विगु
स्त्रीसभम्	स्त्रीणां सभा	स्त्री+आम,सभा+सु	ष.तत्पुरुष
गोशालम्	गवां शाला	गो+आम्, शाला+सु	ष.तत्पुरुष

बहुब्रीहि समास का उदाहरण

प्राप्तोदकःग्रामः	प्राप्तं उदकं यं सः	प्राप्त+सु,उदक+सु	बहुब्रीहि
पीताम्बरः	पीतम्अम्बरं यस्य सः	पीत+सु, अम्बर+सु	बहुब्रीहि
वीरपुरुषकः	वीराःपुरुषाः यस्मिन् सः	वीर+जस्,पुरुष+जस्	
बहुब्रीहि			
अपुत्रः	अविद्यमानः पुत्रःयस्य सः	अविद्यमान+सु,पुत्र+सु	बहुब्रीहि
उष्ट्रमुखः	उष्ट्र इव मुखं यस्य सः	उष्ट्र+सु,मुख+सु	बहुब्रीहि
चित्रगुः	चित्रा गावो यस्य	चित्रा+जस्, गो+जस्	बहुब्रीहि
रूपवद्भार्यः	रूपवती भार्या यस्य सः	रूपवती+सु,भार्या+सु	बहुब्रीहि
दत्ताभार्यः	दत्ता भार्या यस्य सः	दत्ता+सु,भार्या+सु	बहुब्रीहि
पटुभार्यः	पट्वी भार्या यस्य सः	पट्वी+सु,भार्या+सु	बहुब्रीहि
द्वित्राः	द्वौ वा त्रयो वा	द्वि+औ,त्रि+जस्	बहुब्रीहि
केशाकेशि	केशेषु केशेषु	केश+सुप्, केश+सुप्	बहुब्रीहि
दण्डादण्डि	दण्डैश्च दण्डैश्च	दण्ड+भिस्,दण्ड+भिस्	बहुब्रीहि
मुष्टीमुष्टि	मुष्टिभिः मुष्टिभिः	मुष्टि+भिस,मुष्टि+भिस्	बहुब्रीहि
दीर्घसक्थः	दीर्घे सक्थिनी यस्य सः	दीर्घ+औ,सक्थि+औ	बहुब्रीहि
जलजाक्षी	जलाजेइव अक्षिणी यस्य सः	जलज+औ, अक्षि+औ	बहुब्रीहि
त्रिमूर्धः	त्रयः मूर्धानः यस्य	त्रि+जस्, मूर्धन्+जस्	बहुब्रीहि

बहिर्लोमः	बहिर्गतानि लोमानि यस्य सः	बहिर्+जस्, लोम+जस्	बहुब्रीहि
सुप्रातः	शोभनं प्रातः अस्य	सु, प्रातर्+अच्+सु	बहुब्रीहि
सुदिवः	शोभनं दिवा अस्य	सु, दिवा+अच्+सु	बहुब्रीहि
सुप्रजाः	शोभना प्रजा यस्य सः	सु, प्रजा+सु	बहुब्रीहि
सुमेधाः	शोभना मेधा यस्य सः	सु, मेधा+सु	बहुब्रीहि
शाङ्‌र्गधन्वा	शाङ्‌र्गं धनुः यस्य	शाङ्‌र्ग+सु, धनुष्+सु	बहुब्रीहि
युवजानिः	युवतिः जाया अस्य	युवति+सु,जाया+सु	बहुब्रीहि
व्याघ्रपात्	व्याघ्रस्य इव पादौ अस्य	व्याघ्र+ङस्, पाद+औ	बहुब्रीहि
द्विपात्	द्वौ पादौ अस्य	द्वि+औ, पाद्+औ	बहुब्रीहि
द्विदन्	द्वौ दन्तौ यस्य सः	द्वि+औ, दन्त्+औ	बहुब्रीहि
सुहृद्	शोभनं हृदयं यस्य सः	सु,हृदय+सु	बहुब्रीहि
कण्ठेकालः	कण्ठे कालो यस्य	कण्ठ+ङि, काल+सु	बहुब्रीहि
कृतकटः	कृतः कटः येन सः	कृत+सु,कट+सु	बहुब्रीहि
पीतोदकः	पीतं उदकं येन सः	पीत+सु,उदक+सु	बहुब्रीहि
दण्डपाणि	दण्डः पाणौ यस्य सः	दण्ड+सु, पाणि+ङि	बहुब्रीहि

द्वन्द्व समास का उदाहरण

धवखदिरौ	धवश्च खदिरश्च	धव+सु, खदिर+सु	द्वन्द्व
राजदन्तः	दन्तानां राजा	दन्त+आम्, राजन्+सु	ष.तत्पुरुष
धर्मार्थौ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म+सु,अर्थ+सु	द्वन्द्व
हरि हरौ	हरिश्च हरश्च	हरि+सु, हर+ सु	द्वन्द्व
शिवकेशवौ	शिवश्च केशवश्च	शिव+सु, केशव+सु	द्वन्द्व
युधिष्ठिरार्जुनौ	युधिष्ठिरश्च अर्जुनश्च	युधिष्ठिर+सु, अर्जुन+सु	द्वन्द्व
पाणिपादम्	पाणी च पादौ च	पाणि+औ, पाद+औ	द्वन्द्व
रथिकाश्वारोहम्	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च- तेषां समाहारः	रथिकजस्, अश्वारोह+जस्	द्वन्द्व
अर्काश्वमेधम्	अर्कश्च अश्वमेधश्च- तयोः समाहारः	अर्क+सु, अश्वमेध+सु	द्वन्द्व
उद्ध्येरावति	उद्ध्यश्च इरावती च	उद्ध्य+सु, इरावती+सु	द्वन्द्व
गङ्गाशोणम्	गङ्गा च शोणश्च	गङ्गा+सु, शोण+सु	द्वन्द्व
अहिनकुलम्	अहयश्च नकुलाश्च	अहि+जस्, नकुल+जस्	द्वन्द्व

गोव्याघ्रम	गावश्च व्याघ्राश्च	गो+जस्, व्याघ्र+जस्	द्वन्द्व
ईशकृष्णौ	ईशश्च कृष्णश्च	ईश+सु, कृष्ण+सु	द्वन्द्व
गवाश्वम्	गावश्च अश्वाश्च तयोः समाहारः	गो+जस्, अश्व+जस्	
रुरुपृषतम्	रुरवश्च पृषताश्च	रूरू+जस्, पृषत्+जस्	द्वन्द्व
कुशकाशम्	कुशाः च काशाःच	कुशः+जस्,काशः+जस्	द्वन्द्व
ब्रीहियवम्	ब्रीहयश्च यवाश्च	ब्रीहि+जस्, यव+जस्	द्वन्द्व
दधिघृतम्	दधि च घृतं च	दधि+सु, घृत+सु	द्वन्द्व
पूर्वापरम्	पूर्वं च अपरं च	पूर्व+सु, अपर+सु	द्वन्द्व
शीतोष्णम्	शीतं च उष्णम् च	शीत+ सु, उष्ण+सु	द्वन्द्व
होतापोतारौ	होता च पोता च	होतृ +सु, पोतृ+सु	द्वन्द्व
मातापितरौ	माता च पिता च	मातृ+सु, पितृ+सु	द्वन्द्व
पितापुत्रौ	पिता च पुत्रश्च	पितृ+सु, पुत्र+सु	द्वन्द्व
मित्रावरुणौ	मित्रश्च वरुणश्च	मित्र+सु, वरूण+सु	द्वन्द्व
अग्नीषोमौ	अग्निश्च सोमश्च	अग्नि+सु, सोम+सु	द्वन्द्व
अग्नीवरुणौ	अग्निश्च वरूणश्च	अग्नि+सु, वरुण+सु	द्वन्द्व
द्यावापृथिव्यौ	द्यौश्च पृथिवी च	दिव+सु, पृथिवी+सु	द्वन्द्व
मातरपितरौ	माता च पिता च	मातृ+सु, पितृ+सु	द्वन्द्व
वाक्त्वमचम्	वाक्च त्वक्च	वाच्+सु, त्वच्+स	द्वन्द्व
वाक्त्विम्	वाक्च त्विट् च	वाच्+सु, त्विष्+सु	द्वन्द्व
छत्रोपानहम्	छत्रं च उपानत् च	छत्र+सु,उपानत्+सु	द्वन्द्व
प्रावृट्छरदौ	प्रावृट् च शरद् च	प्रावृट्+सु, शरद्+सु	द्वन्द्व

✦✦✦

परस्मैपद विधान

- 'अनुपराभ्यां कृञः' सूत्र से होने वाले परस्मैपद का उदाहरण है— अनुकरोति, पराकरोति
- 'अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः' सूत्र से होने वाले परस्मैपद का उदाहरण है— अभिक्षिपति
- 'प्राद्वहः' सूत्र से होने वाले परस्मैपद का उदाहरण है— प्रवहति
- 'परेर्मृषः' सूत्र से होने वाले परस्मैपद का उदाहरण है— परिमर्षति
- 'व्याङ्परिभ्यो रमः' सूत्र से विधान होता है— परस्मैपद का (उदाहरण-विरमति)
- 'उपाच्च' सूत्र से विधान होता है— परस्मैपद का (उदाहरण-उपरमति)

आत्मनेपद

- कर्मव्यतिहार में होता है— आत्मनेपद का विधान
- कर्मव्यतिहार में आत्मनेपद का विधान करने वाला सूत्र है— 'कर्तरिकर्मव्यतिहारे'
- 'अन्यस्य योग्यं कार्यं यत्र अन्यः करोति इति' यह है— कर्मव्यतिहार
- 'अन्यस्य योग्यं कार्यं अन्यः करोति इति' इसका उदाहरण है— व्यतिलुनीते
- 'नेर्विशः' सूत्र से होता है— आत्मने पद (यथा— निविशते)
- 'परिव्ययेभ्यः क्रियः' सूत्र से होता है— आत्मनेपद
- 'परिव्ययेभ्यः क्रियः' का उदाहरण है— परिक्रीणीते, विक्रीणीते, अवक्रीणीते
- 'विपराभ्यां जेः' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— विजयते, पराजयते

- 'समवप्रविभ्यः स्थः' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते
- 'अपह्नवे ज्ञः' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— अपजानीते
- 'कर्मवाच्य' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— सर्पिषोजानीते
- 'उदश्चरः सकर्मका' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— धर्ममुच्चरते
- 'समस्तृतीयायुक्तात्' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— रथेन सञ्चरते
- 'दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— दास्या संयच्छतेकामी
- 'पूर्ववत्सनः' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— एदिधिषते
- 'भुजोऽनवने' सूत्र से होने वाले आत्मने पद का उदाहरण है— 'ओदनं भुङ्क्ते'

पाणिनीय शिक्षा

- 'पाणिनीय शिक्षा के रचनाकार हैं— पाणिनि
- 'अष्टाध्यायी' के रचनाकार हैं— पाणिनि
- 'अष्टाध्यायी' में कुल अध्याय हैं— आठ
- 'पाणिनि' का माता का नाम था— दाक्षी
- 'पाणिनि' की प्रत्येक अध्याय विभक्त है— चार पादों में
- वेदाङ्ग है— 6
- षड् वेदाङ्गों में गणना की जाती है— शिक्षा की
- वेद का घ्राण कहा गया है— शिक्षा को
- 'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य' यह है— शिक्षा
- जिसमें स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है, उसे कहते हैं?— शिक्षा

(स्वरवर्णाद्युच्चारण प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा)

- तैत्तिरीय-उपनिषद् के अनुसार शिक्षा के अङ्ग हैं—6,
  1. वर्ण, 2. स्वर, 3. मात्रा, 4. बल, 5. साम, 6. सन्तान
- ऋग्वेदीय शिक्षा ग्रन्थ है—पाणिनीय शिक्षा
- पाणिनीय शिक्षा के अनुसार वर्णों की कुल संख्या है—63 या 64
- (त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः)
- यह वर्ण संख्या किसके मत पर आधारित है—भगवान शिव के
- पाणिनीय सम्प्रदाय में भगवान शिव को पाणिनि का माना गया है—दीक्षा गुरु
- स्वर की संख्या है—21
- स्पर्श वर्ण हैं—25, ('क' से 'म' पर्यन्त)
- यकार से हकार तक वर्ण हैं—आठ (य,र,ल,व,श, ष,स,ह)
- यम हैं—चार
- अनुस्वार हैं—1
- विसर्ग हैं—1
- ककार, खकारादि, जिह्वामूलीय हैं—1
- पकार, फकारादि, उपध्मानीय हैं—1
- दुस्स्पृष्ट हैं—1
- प्लुतलृकार हैं—1
- अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय हैं—पराश्रित वर्ण
- 'संस्कृत' और 'प्राकृत' की वर्ण संख्या हैं— 63 या 64
- स्वरों की दृष्टि से 'अच्' के प्रकार हैं—तीन
  1. उदात्त 2. अनुदात्त 3. स्वरित
- काल की दृष्टि से भी 'अच्' हैं—तीन 1. ह्रस्व 2. दीर्घ 3. प्लुत
- शरीर की जठराग्नि को आहत या प्रदीप्त करता है—मन
- वर्णों के उच्चारण स्थान हैं—आठ,
  1. उर (हृदय) 2. कण्ठ 3. शिरस् (मूर्धा)
  4. जिह्वामूलीय 5. दन्त 6. नासिका 7. ओष्ठ 8. तालु

- वर्णों के उच्चारण दोष हैं—6,
  1. गीती, 2. शीघ्री, 3. शिरः कम्पी, 4. लिखितपाठक,
  5. अनर्थज्ञ, 6. अल्पकण्ठ
- वर्णोच्चरण के गुण हैं—6,
  1. माधुर्य 2. अक्षरव्यक्तिः 3. पदच्छेद 4. सुस्वर
  5. धैर्य 6. लयसमर्थ (लय के साथ)
- हाथ की तर्जनी अङ्गुली को समझना चाहिए—उदात्त का सूचक
- हाथ की मध्यम अङ्गुली को समझना चाहिए—प्रचय का सूचक
- हाथ की कनिष्ठिका अङ्गुली को समझना चाहिए—अनुदात्त का सूचक
- हाथ की अनामिका अङ्गुली को समझना चाहिए— स्वरित का सूचक
- स्वर के आश्रय पद के प्रकार होते हैं—9
  1. अन्तोदात्त 2. आद्युदात्त 3. उदात्त 4. अनुदात्त 5. नीच स्वरित
  6. मध्योदात्त 7. स्वरित 8. द्व्युदात्त 9. त्र्युदात्त
- अनुदात्त स्वर का स्थान है—हृदय
- उदात्त स्वर का स्थान है—मूर्धा
- स्वरित स्वर का स्थान है—कर्णमूल
- प्रचय का स्थान है—समस्त मुख
- चाषर (नीलकण्ठ) पक्षी बोलता है—एकमात्राकालिक (ह्रस्व)
- काक पक्षी बोलता है—द्विमात्राकालिक (दीर्घ)
- मयूर पक्षी बोलता है—त्रिमात्राकालिक (प्लुत)
- नकुल (नेवला) बोलता है—अर्द्धमात्राकालिक (व्यञ्जन)
- वेदवर्ण दुष्ट होने पर यजमान को बनाता है—अल्पायु
- स्वरहीन होने पर यजमान को बनाता है—रोगी
- विधिवत् हस्तस्वर सञ्चारणपूर्वक वेदपाठ करने वाला निवास करता है—ब्रह्मलोक में

➤ ऋग्वेद के तीन स्वरों में अन्तर्भाव होता है— सप्तस्वरों का
➤ निषाद और गान्धार किस स्वर में आते हैं?— उदात्त में
➤ ऋषभ और धैवत का किस स्वर में अन्तर्भाव होता है?— अनुदात्त में
➤ षड्ज, मध्यम और पञ्चम का किस स्वर में अन्तर्भाव होता है?— स्वरित में
➤ ऊष्म या विसर्जनीय वर्णों की कितने प्रकार की गति होती है?— 8
➤ 'अ' वर्ण और 'हकार' कहे गए हैं— कण्ठस्थानीय
➤ 'इ' वर्ण 'यकार-शकार' कहे गए हैं— तालुस्थानीय
➤ 'उ' वर्ण और 'पवर्ग' कहे गए हैं— ओष्ठस्थानीय
➤ 'ऋ' वर्ण, 'टवर्ग', रेफ, षकार, मूर्धन्य, 'लृ', 'तवर्ग', लकार और सकार कहे गए हैं— दन्तस्थानीय
➤ कवर्ग को कहा गया है— जिह्वामूल
➤ वकार को कहा गया है— दन्तोष्ठ्य
➤ 'ए' तथा 'ऐ' को कहा गया है— कण्ठतालव्य
➤ 'ओ' तथा 'औ' को कहा गया है— कण्ठोष्ठ्य
➤ प्रयत्न हैं— दो, 1. आभ्यन्तर प्रयत्न, 2. बाह्य प्रयत्न
➤ संवृत वर्ण को जानना चाहिए— एकमात्रिक
➤ विवृत वर्ण को जानना चाहिए— द्विमात्रिक
➤ व्यञ्जनों में सभी सघोष वर्ण कहे गए हैं— संवृत
➤ व्यञ्जनों में सभी अघोष वर्ण कहे गए हैं— विवृत
➤ स्वरित का एक विशिष्ट रूप है— कम्प स्वर
➤ अधम पाठक के प्रकार हैं— 6
➤ वर्णोच्चारण के छः दोषों वाले पाठक कहलाते हैं— अधम पाठक
➤ लिखित पाठक हैं— अधम पाठक
➤ वर्णोच्चारण के 6 गुणों से युक्त पाठक कहे जाते हैं— उत्तमपाठक
➤ सभी स्वर हैं— अस्पृष्ट
➤ य्, र्, ल्, व्, है— ईषत्स्पृष्ट
➤ श्, ष, स, ह, हैं— अर्द्धस्पृष्ट
➤ शेष व्यञ्जन हैं— स्पृष्ट



ऐच्छिक-3
दर्शनशास्त्र
योगसूत्र

➤ योगदर्शन के प्रणेता हैं— महर्षि पतञ्जलि
➤ 'योगसूत्र' के रचनाकार हैं— महर्षि पतञ्जलि
➤ 'चित्तवृत्तिनिरोधः' यह है— योग
➤ चित्तवृत्तियों का निरोध है— योग
➤ योगसूत्र विभक्त है— चार पाद में
1. समाधिपाद 2. साधनपाद 3. विभूतिपाद 4. कैवल्यपाद
➤ योगसूत्र पर भाष्य लिखा है— व्यास जी ने
➤ योगसूत्र में कुल सूत्र हैं— 195
➤ समाधिपाद में कुल सूत्र हैं— 51
➤ साधनपाद में कुल सूत्र हैं— 55
➤ विभूतिपाद में कुल सूत्र हैं— 55
➤ कैवल्यपाद में कुल सूत्र हैं— 34
➤ योगदर्शन के अनुसार पदार्थो की संख्या है— 26
➤ 'अथ योगानुशासनम्' यह है— योगसूत्र से
➤ 'अथ योगानुशासनम्' इसमें 'अथ' शब्द है— अधिकारवाचक
➤ व्यास भाष्य में योग के भेद हैं— चार
1. वितर्कानुगत 2. विचारानुगत 3. आनन्दानुगत 4. अस्मितानुगत
➤ योगानुशासन का अर्थ है— योगप्रतिपादक शास्त्र
➤ प्रतिपाद्यविषय है— योग
➤ युज् (समाधौ) धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगाकर बना है— योग
➤ चित्त की स्वाभाविक अवस्थाओं को ही जाना जाता है— चित्तभूमि नाम से

- चित्तभूमियाँ हैं— पाँच
  1. क्षिप्त 2. मूढ 3. विक्षिप्त 4. एकाग्र 5. निरुद्ध
- 'रजसा विषयेष्वेव वृत्तिमत्' यह है— क्षिप्त
- 'तमसा निद्रादि वृत्तिमत्' यह है— मूढ
- सदैव तेषु-तेषु विषयेषु क्षिप्यमाणमत्यन्तमस्थिरम्' यह है— क्षिप्त
- क्षिप्त का अर्थ है— चञ्चल
- तमोगुण के उद्रेक के कारण मूर्च्छादिव्यापारवान् चित्त की स्थिति कही जाती है— मूढ
- 'क्षिप्ताद् विशिष्टं विक्षिप्तम्' यह है— विक्षिप्त
- 'सत्त्वाधिक्येन समादधदपि चित्तं रजोमात्रयान्तरान्तरा विषयान्तरवृत्तिमद्' यह है— विक्षिप्त
- सत्त्वगुण का आधिक्य रहता है— विक्षिप्तभूमि में
- 'यस्त्वेकाग्रे चेतसि सद्भूतमर्थं प्रद्योतयति, क्षिणोति च क्लेशान्, कर्मबन्धनानिश्लथयति निरोधमभिमुखं 'करोति' यह है, एकाग्र
- सम्प्रज्ञात-समाधि के नाम से जानी जाती है— एकाग्रचित्त भूमि
- 'निरुद्धं च निरुद्धसकलवृत्तिकं, संस्कार मात्रशेषमित्यर्थः' यह है— निरुद्धचित्तभूमि
- मनुष्य का चित्त जिन-2 परिस्थितियों में रहता है, वह है— चित्तवृत्ति
- चित्तवृत्ति को बाँटा गया है— दो वर्गों में
- प्रमाणादि भेद से चित्तवृत्तियाँ हैं— पाँच
- 1. प्रमाण 2. विपर्यय 3. विकल्प 4. निद्रा 5. स्मृति
- 'क्लेशहेतुकाः कर्माशय प्रचय क्षेत्रीभूताः' ये हैं— क्लिष्टवृत्तियाँ
- 'ख्यातिविषयागुणाधिकारविरोधिन्योऽक्लिष्टा' ये हैं— अक्लिष्टवृत्तियाँ
- पुरुष विवेकज्ञान में सहायक सिद्ध होने वाली वृत्तियाँ हैं— अक्लिष्ट
- 'इन्द्रियप्रणालिकया चित्तस्य बाह्यवस्तूपरागात्तद्विषया सामान्य-विशेषात्मनोऽर्थस्य विशेषावधारणप्रधाना वृत्तिः' यह है— प्रत्यक्ष प्रमाण

- प्रत्यक्ष प्रमाण के समान रूप वाला पौरुषेय बोध ही है— फल (प्रमा)
- प्रमाण नामक वृत्ति के भेद हैं— तीन
  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. आगम
- प्रमा का करण है— प्रमाण
- 'अनुमेयस्य तुल्यजातीयेष्वनुवृत्तो भिन्नजातीयेभ्योव्यावृत्तः, सम्बन्धो यस्तद्विषया सामान्यावधारणप्रधाना वृत्तिः' यह है— अनुमान
- 'शब्दात्तदर्थविषया वृत्तिः श्रोतुः' यह है— आगम
- 'विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठतम्' यह है— विपर्यय
- ज्ञेय वस्तु से भिन्न रूप में प्रतिष्ठित मिथ्याज्ञान कहा जाता है— विपर्यय
- 'द्विचन्द्रदर्शनं सद्विषयेणैकचन्द्रदर्शनेन बाध्यतइति' यह उदाहरण है— विपर्यय का
- विपर्यय को कहा जाता है— अविद्या
- विपर्यय के खण्ड (क्लेश) हैं— पाँच
- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये 5 क्लेश हैं— विपर्यय के
- अज्ञान या अविद्या के भेद हैं— पाँच
- 'शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो' यह है— विकल्प
- शब्दज्ञान से उत्पन्न तथा निर्वस्तुक होता है— विकल्प
- 'अभावप्रत्ययालम्बनावृत्तिः' यह है— निद्रा
- अभाव के कारणभूत तमोगुण को विषय बनाने वाली वृत्ति होती है— निद्रा
- 'अनुभूतविषयासम्प्रमोषः' यह है— स्मृति
- अनुभूत विषय की चित्त में उपस्थिति है— स्मृति
- पाँचों वृत्तियों का निरोध होता है— अभ्यास और वैराग्य से (अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः)
- चित्तवृत्तियों के निरोध के उपाय हैं— दो 1. अभ्यास 2. वैराग्य
- 'तत्र स्थितौ यत्नः' यह है— अभ्यास

- 'दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा' यह है— वैराग्य
- वैराग्य को बताया गया है— दो 1. अपरवैराग्य 2. परवैराग्य
- 'तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्' यह है— परवैराग्य
- पुरुष की ख्याति के कारण गुणों के प्रति जो उपेक्षा बुद्धि होती है, वह है— परवैराग्य
- समाधि के प्रकार हैं— दो 1. सम्प्रज्ञात 2. असम्प्रज्ञात
- वितर्कविचारानन्दाऽस्मितानुगमात्' यह है— सम्प्रज्ञात
- 'विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः' यह है— असम्प्रज्ञात
- असम्प्रज्ञातसमाधि के प्रकार हैं— दो 1. उपायप्रत्यय 2. भवप्रत्यय
- 'तत्रोपायप्रत्ययो योगिनां भवति' यह है— उपायप्रत्यय
- 'विदेहप्रकृतिलयानाम्' यह है— भवप्रत्यय
- प्रधान और पुरुष से अलग है— ईश्वर
- **'क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः'** यह है— ईश्वर
- सर्वज्ञता का बीज अपनी पराकाष्ठा को प्राप्त होता है— ईश्वर में
- **'पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्'** यह कौन है?— ईश्वर
- 'प्रणवः वाचकः' यह है— ईश्वर का
- 'प्रणव' किसका वाचक है?— ईश्वर का
- ईश्वर का अभिधायक शब्द है— ओङ्कार
- ओङ्कार जप के पश्चात् करना चाहिए— योगसाधन
- योगसाधन के पश्चात् करना चाहिए— जप
- जप और योग की सिद्धि से साक्षात्कार होता है— परमात्मा का
- व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रांतिदर्शन, अलब्धभूमिकत्व और अनवस्थितत्त्व ये हैं— चित्त के विक्षेप (विघ्न)
- चित्त के विक्षेप को कहा जाता है— विघ्न
- दुःख, दौर्मनस्य, अङ्गकम्पन, श्वास और प्रश्वास ये साथी हैं— विक्षेपों के
- 'नासिकाग्रे धारयतोऽस्य या दिव्यगन्धसंवित् सा' यह है— गन्धप्रवृत्ति

- जिह्वा के अग्रभाग में साक्षात्कार होता है— दिव्यरस का (रसप्रवृत्ति)
- तालु में दिव्यरूप का साक्षात्कार होता है, वह है— रूपप्रवृत्ति
- जिह्वा के मध्य भाग में दिव्य स्पर्श का साक्षात्कार होता है, वह है— स्पर्शप्रवृत्ति
- जिह्वा के जड़ में दिव्यशब्द का साक्षात्कार होता है— शब्दप्रवृत्ति
- पार्थिव परमाणु का सूक्ष्मविषय है— गन्धतन्मात्र
- जलीय परमाणु का सूक्ष्मविषय है— रसतन्मात्र
- वायवीय परमाणु का सूक्ष्मविषय है— स्पर्शतन्मात्र
- आकाश का सूक्ष्मविषय है— शब्दतन्मात्र
- सब तन्मात्राओं का सूक्ष्मविषय है— अहंकार
- अहंकार का सूक्ष्मविषय है— महत्तत्त्व
- महत्तत्त्व का सूक्ष्मविषय है— अव्यक्त प्रकृति
- किससे सूक्ष्म कुछ नहीं है?— अव्यक्त प्रकृति से
- सम्प्रज्ञात के भेद हैं— चार

  1. वितर्कानुगत 2. विचारानुगत 3. आनन्दानुगत 4. अस्मितानुगत
- समाधि का प्रयोग योग के पर्याय के रूप में किया है— पतञ्जलि ने
- 'वितर्कश्चित्तस्यालम्बने स्थूल आभोगः' यह है— वितर्कानुगत
- वितर्कानुगत के प्रकार हैं— दो, 1. सवितर्क, 2. निर्वितर्क
- सूक्ष्म पञ्चतन्मात्र रूप ग्राह्यविषयक विशिष्ट भावना है— विचारानुगत (सूक्ष्मो विचारः)
- 'आनन्दो ह्लादः' यह है— आनन्दानुगत
- 'एकात्मिका संविदस्मिता' यह है— अस्मितानुगत
- सबीज समाधि कहा जाता है— सम्प्रज्ञात समाधि को
- निर्बीज समाधि कहा जाता है— असम्प्रज्ञात समाधि को
- विचारानुगत समाधि है— दो 1. सविचारसमापत्ति 2. निर्विचारसमापत्ति
- सबीज समाधि, धममेध, सविल्पक ये सब हैं— सम्प्रज्ञात समाधि
- निर्बीज समाधि या निर्विकल्पक को कहा जाता है— असम्प्रज्ञात समाधि

- समाहित चित्त वाले योगी को उस वैशारद्य काल में जो विशिष्ट प्रज्ञा उत्पन्न होती है, वह है—ऋतम्भरा **(ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा)**
- 'तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः' यह है—असम्प्रज्ञात समाधि
- समाधिजन्यप्रज्ञा की विरोधी होने के साथ-2 उस प्रज्ञा से उत्पन्न होने वाले संस्कारों की भी विरोधी होती है—निर्बीजसमाधि
- 'तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि' यह है—क्रियायोग
- तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान है—क्रियायोग
- समाधि को भावित करने के लिए और क्लेशों को हल्का करने के लिए होता है—क्रियायोग
- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच हैं—क्लेश
- क्लेश हैं—पाँच
- पाँच मिथ्याज्ञान हैं—क्लेश
- प्रसुप्त, तनु, विच्छिन्न और उदार परवर्ती क्लेशों की प्रसवभूमि है—अविद्या
- 'अनित्याऽशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखाऽऽत्मख्यातिः' यह है—अविद्या
- अनित्य पदार्थ में नित्य पदार्थ का ज्ञान है—अविद्या
- 'दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेव' यह है—अस्मिता
- दृक्शक्ति (पुरुष) और दर्शनशक्ति (बुद्धि) की प्रतीयमान एकात्मता है—अस्मिता
- 'सुखानुशयीरागः' यह है—राग
- सुख का अनुवर्ती है—राग
- 'दुखानुशयी द्वेषः' यह है—द्वेष
- दुःख का अनुवर्ती (क्लेश) है—द्वेष
- 'स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढः' यह है—अभिनिवेश
- चित्त के लय के द्वारा निवर्तनीय होते हैं—सूक्ष्मक्लेश

- विवेकख्याति के द्वारा नष्ट की जाने योग्य होती है—क्लेशों की वृत्तियाँ
- 'दुःखमनागतम्' यह है—हेय
- भविष्यकालिक दुःख है—हेय
- 'द्रष्टृदृश्ययोः संयोगः' यह है—हेयहेतु
- द्रष्टा और दृश्य का संयोग है—हेय का हेतु
- द्रष्टा है—पुरुष
- प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थम् यह है—दृश्य
- 'प्रकाशशीलं सत्त्वम्' यह है—सत्त्वगुण
- प्रकाशस्वभाव वाला है—सत्त्वगुण
- 'क्रियाशीलं रज' यह है—तमोगुण
- 'स्थितिशीलंतमः' यह है—तमोगुण
- 'तदभावात् संयोगाभावो हानं, तद्दृशेः' यह है—कैवल्य
- अविद्या के मिट जाने से संयोग का नाश हो जाना है—हान
- हान पुरुष का है—कैवल्य
- मिथ्याज्ञानशून्य विवेकख्याति उपाय है—हान का
- विवेकख्यातियुक्त योगी की उत्कृष्ट स्तर वाली प्रज्ञा के प्रकार हैं—सात
- योग (निर्बीजसमाधि) के अङ्ग हैं—आठ
- 'यमनियमाऽऽसनप्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि' ये हैं—योग के अङ्ग
- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हैं—यम
- यम के प्रकार हैं—पाँच
- 'सर्वथा सर्वदा-सर्वभूतानामनभिद्रोहः' यह है—अहिंसा
- सब प्रकार से (मनसा, वाचा, कर्मणा) सदैव सब प्राणियों को पीड़ा न पहुँचाना है—अहिंसा
- 'यथार्थे वाङ्मनसे' यह है—सत्त्य

- 'गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः' यह है— ब्रह्मचर्य
- 'तत्प्रतिषेधः पुनरस्पृहारूपम्' यह है— अस्तेय
- 'विषयाणामर्जनरक्षणक्षयसङ्गहिंसादोषदर्शनादस्वीकरणम्' यह है— अपरिग्रह
- अस्पृहारूप है— अस्तेय
- ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा में होता है— वीर्यलाभ
- 'शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि' यह है— नियम
- शौच के भेद हैं— दो 1. बाह्य 2. आभ्यन्तर
- 'तत्र शौचं मृज्जलादिजनितं मेध्याभ्यवहरणादि च' यह है— बाह्य शौच
- 'चित्तमलानामाक्षालनम्' यह है— आभ्यन्तरशौच
- चित्त के दोषों का धोना है— आभ्यन्तरशौच
- 'सन्निहितसाधनादधिकस्यानुपादित्सा' यह है— सन्तोष
- 'द्वन्द्वसहनम्' यह है— तप
- 'जिघत्सापिपासे, शीतोष्णे' यह है— द्वन्द्व
- 'मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा' यह है— स्वाध्याय
- स्वाध्याय से लाभ होता है— इष्टदेवता सम्प्रयोग का
- 'तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्' यह है— ईश्वरप्रणिधान
- ईश्वर प्रणिधान से होती है— समाधिसिद्धि
- अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर उस योगी के पास छट जाता है— वैरभाव
- सत्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर किसकी आश्रयता आ जाती है?— क्रियाओं और उनके फलों की
- अस्तेय के प्रतिष्ठित हो जाने पर उपस्थिति होती है— सभी रत्नों की
- ब्रह्मचर्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर होता है— वीर्यलाभ (सामर्थ्यलाभ)
- जन्मों तथा उनके प्रकार का सम्यक् ज्ञान किसके स्थिर होने पर होता है— अपरिग्रह
- निरतिशय सुख की प्राप्ति होती है— सन्तोष से

- तप से अशुद्धि का नाश हो जाने पर होती है— कायसिद्धि और इन्द्रियसिद्धि
- इष्ट देवताओं का सम्पर्क होता है— स्वाध्याय से
- 'स्थिर सुखम्' यह है— आसन
- 'श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः' यह है— प्राणायाम
- आसनसिद्धि हो जाने पर बाह्य वायु को ग्रहण करना है— श्वास
- 'कौष्ठ्यस्य वायोर्निःसारणम्' यह है— प्रश्वास
- श्वास और प्रश्वास की गति को रोकना है— प्राणायाम
- प्राणायाम होते हैं— त्रिविध 1. रेचक 2. पूरक 3. कुम्भक
- 'यत्र प्रश्वासपूर्वको गत्यभावः स बाह्यः' यह है— रेचक (बाह्य) प्राणायाम
- यत्र श्वासपूर्वको गत्यभावः स आभ्यन्तरः यह है— आभ्यन्तर (पूरक) प्राणायाम
- 'यत्रोभयाभावः सकृत्प्रयत्नाद्भवति' यह है— स्तम्भवृत्ति (कुम्भक) प्राणायाम
- 'स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणाम्' यह है— प्रत्याहार
- इन्द्रियों की प्रबल वशवर्तिता होती है— प्रत्याहार से
- 'देशबन्धश्चित्तस्य' इसका नाम है— धारणा
- चित्त को किसी भीतरी या बाहरी प्रदेश में लगाना है— धारणा
- 'तत्र प्रत्ययैकतानता' यह है— ध्यान
- धारणा में ज्ञान की एकतानता ही है— ध्यान
- 'तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव' यह है— समाधि
- महर्षि पतञ्जलि बहिरङ्ग साधन मानते हैं— पाँच
- योग के आठ अङ्गों में से प्रारम्भिक 5 अङ्ग को पतञ्जलि सम्प्रज्ञातयोग के प्रति मानते हैं— बहिरङ्ग
- योग के शेष तीन अङ्गों (धारणा, ध्यान, समाधि) को सम्प्रज्ञात समाधि का कहा गया है— अन्तरङ्ग
- साधनरूप में प्रतिष्ठित है— सम्प्रज्ञातसमाधि
- धारणा, ध्यान और समाधि तीनों एकत्र होने पर कहे जाते हैं— संयम

- संयम को जीतने से योगी को प्रकाश होता है— प्रज्ञा का
- निर्बीजसमाधि के लिए बहिरङ्ग है— संयम
- वितर्कादिभेद से सम्प्रज्ञातसमाधि के प्रकार हैं— चार
- 'शान्तोदिताव्यपदेश्य धर्मानुपाती' यह है— धर्मी
- 'योग्यतावच्छिन्ना धर्मिणः शक्तिरेव' यह है— धर्म
- तीनों परिणामो (धर्म, लक्षण व अवस्था) में संयम करने से योगी को साक्षात्कार (ज्ञान) होता है— अतीत तथा अनागत का
- संस्कारों के साक्षात्कार से ज्ञान होता है— पूर्वजन्मों का (संस्कारसाक्षात्करणात्पूर्वजातिज्ञानम्)
- संस्कार के प्रकार हैं— दो 1. वासनारूप 2. धर्माधर्मरूप
- स्मृति और अविद्यादि क्लेशों को उत्पन्न करते हैं— वासनारूप
- कर्मफलभोग के हेतुभूत हैं— धर्माधर्मरूप
- आयुरूपी फल वाले कर्म के प्रकार होते हैं— दो
  1. सोपक्रम 2. निरुपक्रम
- 'मैत्रीकरुणामुदितेति तिस्रो' यह हैं— भावनाएँ
- प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद तथा वार्ता नामक सिद्धियाँ उत्पन्न होती हैं— पुरुषज्ञान से
- निर्माणचित्त के प्रकार हैं— पाँच
- कर्मजाति के प्रकार हैं— चार
  1. पापात्मक 2. पुण्यपापात्मक 3. पुण्यात्मक 4. पुण्यपापरहित
- दुरात्माओं की कर्मजाति होती है— पापात्मक
- बाह्यक्रियाओं से सम्पादित कर्मजाति होती है— पुण्यपापात्मक
- तपस्या, स्वाध्याय और ध्यान करने वालों की कर्मजाति होती है— पुण्यात्मक
- क्षीणक्लेश संन्यासियों की कर्म जाति होती है— पापपुण्यरहित
- 'पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः' यह है— कैवल्य
- 'स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति' यह है— कैवल्य
- योगसूत्र में कैवल्य के भेद हैं— दो

+++

ब्रह्मसूत्र

- 'ब्रह्मसूत्र' कृति है— बादरायण की
- 'ब्रह्मसूत्र' पर शारीरक भाष्य लिखा है— शंकराचार्य ने
- बादरायण विरचित ब्रह्मसूत्र के कुल अध्याय हैं— चार
- बादरायण विरचित ब्रह्मसूत्र में चार अध्याय विभक्त हैं— पाद में
- ब्रह्मसूत्र के चार अध्यायों में कुल पाद हैं— 16
- कृष्णद्वैपायन कृत 'ब्रह्मसूत्र' में कुल अधिकरण है— 191
- बादरायणकृत ब्रह्मसूत्र में कुल सूत्र हैं— 555
- 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' यह सम्बद्ध है— ब्रह्मसूत्र से
- शङ्कराचार्य अभिमत सिद्धान्त है— ब्रह्माद्वैतवाद
- माया और अविद्या में भेद नहीं मानते हैं— शङ्कराचार्य
- शङ्कराचार्य के अनुयायियों में कितने वाद प्रचलित थे?— तीन,
  1. अवच्छेदवाद, 2. प्रतिबिम्बवाद, 3. आभासवाद
- भ्रम को ही कहते हैं— अध्यास
- अध्यास के प्रकार हैं— दो, 1. सादि, 2. अनादि
- 'स्मृतिरूपः परत्र पूर्वदृष्टावभासः' यह है— अध्यास
- वेदान्तमीमांसा नामक शास्त्र का प्रथम सूत्र है— 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'
- 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' यहाँ 'अथ' का अर्थ है— आनन्तर्य
- 'ब्रह्मसूत्र' में शंकरसम्मत 'अथ' पद का अर्थ अभिप्रेत है— साधनचतुष्टयानन्तर्य
- 'ब्रह्मणः जिज्ञासा ब्रह्मजिज्ञासा' यहाँ ब्रह्मणः पद में विभक्ति है— षष्ठी
- 'ब्रह्मणः जिज्ञासा ब्रह्मजिज्ञासा' यहाँ ब्रह्मणः पद में किस सूत्र द्वारा षष्ठी विभक्ति है— कर्तृकर्मणोः कृति
- जानने की इच्छा को कहते हैं— जिज्ञासा (ज्ञातुमिच्छा जिज्ञासा)
- सब प्राणियों का सत्यात्मा सत्यस्वरूप है— ब्रह्म
- 'असाधारणधर्मवचनम्' यह है— लक्षण

- 'स्वरूपं सद्व्यावर्तकम्' यह है— स्वरूप लक्षण
- लक्ष्य से अन्य होकर जो भेदक हो, वे लक्षण होते हैं— तटस्थ
- ब्रह्मसूत्र में 'ब्रह्म' का तटस्थ लक्षण है—'जन्माद्यस्य यत:'
- जन्मादि इस सूत्र के प्रथम पद में समास है— बहुब्रीहि
- जगत् का कारण माना गया है— ब्रह्म को
- लक्षण के प्रकार हैं— दो 1. स्वरूप लक्षण 2. तटस्थ लक्षण
- 'कादाचित्कत्वे सति व्यावर्तकम्' यह है— तटस्थलक्षण
- 'यत:' पद निर्देशक है— कारण (निमित्तोपादान) का
- 'जन्माद्यस्य यत:' इस सूत्र के भाष्य में शंकराचार्य ने ब्रह्मज्ञान को माना है— सिद्धवस्तु विषयक
- अध्यास का तात्पर्य हैं— अज्ञान या अविद्या से
- 'अध्यासो नाम अतस्मिंस्तद्बुद्धि:' यह है— अध्यास
- 'पुत्रभार्यादिषु विकलेषु सकलेषु वा अहमेव विकल: सकलो वेति' यह उदाहरण है— अध्यास का
- 'अनिर्वचनीयख्याति' यह सिद्धान्त है— शङ्कराचार्य का
- 'आत्मख्याति' इसे स्वीकार करते हैं— योगाचार (विज्ञानवादीबौद्ध)
- 'असतख्याति' इसे स्वीकार करते हैं— माध्यमिक (शून्यवादी बौद्ध)
- 'अख्याति' इसे स्वीकार करते हैं— प्रभाकर मीमांसक
- अन्यथाख्याति इसे स्वीकार करते हैं— नैयायिक
- ब्रह्म के यथार्थस्वरूप के ज्ञान में प्रमाण हैं— ऋग्वेदादि शास्त्र
- 'शास्त्रयोनित्वात्' यहाँ 'योनि' शब्द की 'कारण' एवं 'प्रमाण' परक द्व्यर्थकता के आधार पर व्याख्या प्रस्तुत की है— शङ्कराचार्य ने
- 'शास्त्रप्रमाणकम्' यह है— ब्रह्म
- 'ब्रह्मभावश्च मोक्ष:' यह हैं— मोक्ष
- ब्रह्मभाव या ब्रह्मावगति को कहा गया है— मोक्ष
- नित्य-शुद्ध ब्रह्मस्वरूप वाला है— मोक्ष
- 'मोक्ष' को उत्पाद्य नहीं मानते हैं— शंकराचार्य
- अद्वैत मत में ख्याति है— अनिर्वचनीय ख्याति



न्याय-सिद्धान्तमुक्तावली

- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के रचनाकार हैं— विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली में किस न्याय ग्रन्थ की टीका है?— कारिकावली की
- कारिकावली में कुल कारिका है— 168
- संसारमहीरुहस्य बीजाय' इस मङ्गलाचरण में ईश्वर संसार का किस तरह का कारण है?— निमित्तकारण
- न्यायसिद्धान्त मुक्तावली में पदार्थ हैं— 7
- द्रव्य, गुण, कर्म सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव, ये सात हैं— पदार्थ
- द्रव्य हैं— 9
- 'क्षित्यप्तेजोमरुद्व्योमकालदिग्देहिनो मन:' यह है— द्रव्य
- पृथिवी, जल, तेजस, वायु, आकाश, काल, दिक् आत्मा और मन ये 9 हैं— द्रव्य
- गुणों की कुल संख्या है— 24
- कर्म हैं— पाँच

  1. उत्क्षेपण 2. अपक्षेपण 3. आकुञ्चन 4. प्रसारण 5. गमन
- सामान्य के भेद हैं— दो 1. पर, 2. अपर
- 'नित्यत्वे सति अनेक समवेतत्वम्' यह है— संयोग
- 'अन्त्यो नित्य द्रव्य वृत्तिविशेष: परिकीर्तित:' यह है— विशेष
- 'घटादीनां कपालादौ द्रव्येषु गुणकर्मणो:।
- तेषु जातेश्च सम्बन्ध: समवाय: प्रकीर्तित:।।' यह है— समवाय
- अभाव के प्रकार हैं— दो 1. संसर्गाभाव 2. अन्योन्याभाव
- संसर्गाभाव के प्रकार हैं— तीन

  1. प्रागभाव 2. ध्वंसाभाव 3. अत्यन्ताभाव
- अन्योन्याभाव से भिन्न अभाव को कहते हैं— संसर्गाभाव

- 'अन्यथासिद्धिशून्यस्य नियता पूर्ववर्तिता' यह है—कारण
- कारण के प्रकार हैं— तीन
  1. समवायिकारण, 2. असमवायिकारण, 3. निमित्तकारण
- 'यत्समवेतं कार्यं भवति ज्ञेयं तु समवायिजनकं तत्' यह है—समवायिकारण
- पट तन्तुओं में उत्पन्न होता है—समवाय सम्बन्ध से
- तन्तु पट कार्य के प्रति है—समवायिकारण
- समवायिकारण के प्रकार हैं—दो
  1. कार्यैकार्थप्रत्यासत्ति 2. कारणैकार्थप्रत्यासत्ति
- पटादि के प्रति तन्तुसंयोगादि किस तरह के कारण हैं?—कार्यैकार्थ-असमवायि कारण
- पटरूप के प्रति तन्तुरूप किस तरह के कारण हैं?—कारणैकार्थअसमवायि कारण
- अन्यथासिद्ध के प्रकार हैं—पाँच
- 'आभ्यां समवायि कारणासमवायिकारणाभ्यां पर भिन्नं कारणं तृतीयम्' यह है—निमित्तकारण
- पट के प्रति तुरी, वेमादिक हैं—निमित्तकारण
- 'घटं प्रति दण्डत्वमिति' यह है—अन्यथासिद्ध
- घटादि कार्य के प्रति दण्डत्व है—प्रथम अन्यथासिद्ध
- घटादि कार्य के प्रति दण्डरूप है—द्वितीय अन्यथासिद्ध
- घटादि कार्य के प्रति आकाश है—तृतीय अन्यथासिद्ध
- घटादि कार्य के प्रति कुम्हार का पिता है—चौथा अन्यथासिद्ध
- घटादि कार्य के प्रति दैवागत रासभादि है—पाँचवा अन्यथासिद्ध
- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच हैं—भूत
- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु ये चार हैं—स्पर्श वाले
- आत्मा और भूत होते हैं—विशेष गुण वाले
- 'तत्र क्षितिर्गन्धहेतुः' यह है—पृथिवी

- पृथिवी में रस कितने प्रकार का होता है?—6
- पृथिवी का गन्ध कितने प्रकार का माना गया है?—दो
- उत्पन्न पदार्थों का निमित्तकारण है—काल
- 'दूरान्तिकादिधी हेतुरेका नित्या दिगुच्यते' यह है—दिक्
- 'आत्मेन्द्रियाद्यधिष्ठाता' यह है—आत्मा
- चार्वाक के शरीरात्मवाद, इन्द्रियात्मवाद और मनसात्मवाद सिद्धान्त का खण्डन किया है—न्यायसिद्धान्त मुक्तावलीकार ने
- विज्ञानवाद का खण्डन किया है—न्यायसिद्धान्त मुक्तावलीकार ने
- सांख्यमत का खण्डन किया है—न्यायसिद्धान्त मुक्तावलीकार ने
- 'नित्यविज्ञानमेवात्मा' यह मत है—अद्वैतवादीवेदान्ती का
- 'नित्यविज्ञानमेवात्मा' इसका खण्डन किया है—न्यायसिद्धान्त मुक्तावलीकार ने
- आत्मा को ज्ञान स्वरूप नहीं मानते हैं—नैयायिक
- बुद्धि (ज्ञान) के प्रकार हैं—दो 1. अनुभूति 2. स्मृति
- अनुभूति के प्रकार हैं—चार
  1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमिति, 3. उपमिति, 4. शब्द
- चार अनुभूति के प्रमाण हैं—चार
- चार्वाक प्रमाण मानता है—प्रत्यक्ष को
- बौद्ध और वैशेषिक प्रमाण मानते हैं—दो 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
- सांख्य प्रमाण मानता है—तीन 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द
- न्याय प्रमाण मानता है—चार 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. उपमान 4. शब्द
- प्रभाकर मीमांसक प्रमाण मानते हैं—5
- कुमारिल मीमांसक प्रमाण मानते है—6
- प्रत्यक्ष के भेद हैं—6,
  1. घ्राणज 2. रासन 3. चाक्षुष 4. स्पार्शन 5. श्रौत्र 6. मानस
- निर्विकल्प हैं—ज्ञान

अतीन्द्रिय माना जाता है— ज्ञान
- ➢ इन्द्रिय छः प्रकार के प्रत्यक्ष में हैं— कारण
- ➢ प्रत्यक्ष के प्रकार हैं— दो 1. लौकिक 2. अलौकिक
- ➢ लौकिक प्रत्यक्ष के कितने प्रकार के सन्निकर्ष होते हैं?— 6
- ➢ अलौकिक सन्निकर्ष के प्रकार हैं— तीन
- ➢ 1. सामान्यलक्षण 2. ज्ञानलक्षण 3. योगज
- ➢ व्यापार का अर्थ है— सन्निकर्ष
- ➢ योगज सन्निकर्ष के भेद हैं— दो, 1. युक्त, 2. युञ्जान
- ➢ 'व्याप्ति' का अर्थ होता है— अविनाभाव या साहचर्यनियम
- ➢ 'साध्यवदन्यस्मिन्न सम्बन्ध उदाहृतः' यह है— व्याप्ति (कारिकावली)
- ➢ 'वह्निमान् धूमात्' यह उदाहरण है— व्याप्ति (कारिकावली)का
- ➢ 'अथवाहेतुमन्निष्ठविरहाप्रतियोगिना' साध्येन हेतोरैकाधि-करण्यं व्याप्तिरुच्यते' यह है— व्याप्ति (विश्वनाथ पञ्चानन मत)
- ➢ हेत्वाभास के प्रकार है— पाँच
- ➢ 'हेतोः आभासाः' यह है हेत्वाभास (नव्यनैयायिकों का मत)
- ➢ 'हेतुवदाभासन्तेइति' यह है हेत्वाभास (प्राचीन नैयायिकों का मत)
- ➢ अनैकान्तिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष, कालात्ययापदिष्ट ये पाँच हैं— हेत्वाभास के प्रकार
- ➢ असिद्ध हेत्वाभास के भेद हैं— तीन
  1. आश्रयासिद्ध 2. स्वरूपासिद्ध 3. व्याप्यत्वासिद्ध
- ➢ अनैकान्तिक हेत्वाभास के भेद हैं— तीन
  1. साधारण 2. असाधारण 3. अनुपसंहारी
- ➢ 'साधारणाद्यन्यतमत्वम्' यह है— अनैकान्तिक हेत्वाभास
- ➢ 'यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु स' यह है— साधारण
- ➢ 'सर्वसपक्षविपक्ष व्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिः' यह है— असाधारण
- ➢ 'धूमवान वह्नेः' यह उदाहरण है— साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास का

- ➢ 'शब्दो नित्यः शब्दत्वात्' यह उदाहरण है— असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास का
- ➢ 'सर्वमनित्यम् प्रमेयत्वाद्' यह उदाहरण है— अनुपसंहारी अनैकान्तिक हेत्वाभास का
- ➢ 'अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितः' यह लक्षण है— अनुपसंहारी अनैकान्तिक
- ➢ 'साध्याभावव्याप्तो हेतुः' यह है— विरुद्ध हेत्वाभास
- ➢ 'शब्दो नित्यः कृतकत्वात्' यह उदाहरण है— विरुद्ध हेत्वाभास का
- ➢ 'असिद्धिमान् हेत्वाभासः' यह है— असिद्ध हेत्वाभास
- ➢ 'पक्षे पक्षतावच्छेदकस्याभावं' यह है— आश्रयासिद्ध हेत्वाभास
- ➢ स्वरूपासिद्धिस्तु पक्षे व्याप्त्याभिमतस्याभावः' यह है— स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास
- ➢ नीलधूमादि को हेतु मानने पर होता है— व्याप्त्यासिद्ध हेत्वाभास
- ➢ 'काञ्चनमयोपर्वतो वह्निमान् धूमात्' यह उदाहरण है— आश्रयासिद्ध हेत्वाभास का
- ➢ 'ह्रदोद्रव्यं धूमात्' यह उदाहरण है— स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास का
- ➢ 'पर्वतो वह्निमान् नीलधूमात्' यह उदाहरण है— व्याप्त्यासिद्ध हेत्वाभास का
- ➢ 'विरुद्धयोः परामर्शैः हेतोः' यह है— सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास
- ➢ 'पक्षे साध्याभावादिः' यह है— कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास
- ➢ शब्दोनित्यः श्रावणत्वात्, शब्दत्ववत् यह उदाहरण है— सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का
- ➢ 'शब्दोऽनित्यः जन्यत्वात् घटवत्' यह उदाहरण है— सत्प्रतिपक्ष हेत्वाभास का
- ➢ 'वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात्' यह उदाहरण है— कालात्ययापदिष्ट हेत्वाभास का



सर्वदर्शन संग्रह

जैनमत

- जैनदर्शन के आदि प्रवर्तक थे— ऋषभदेव
- ऋषभदेव के पिता का नाम है— नाभिराय
- जैनों के कुल तीर्थंकर थे— 24
- जैनों के अन्तिम तीर्थंकर हैं— महावीर
- जैन लोग अपने धर्म के प्रचारक सिद्धों को कहते थे— तीर्थंकर
- जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर थे— पार्श्वनाथ
- काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे— पार्श्वनाथ
- पार्श्वनाथ की माता का नाम था— वामादेवी
- पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था— 517 ईसवी पूर्व
- 'ज्ञातृक' नामक क्षत्रियवंश में जन्म हुआ था— वर्धमान (महावीर) का
- महावीर का जन्म हुआ था— 540 ई.पू. (कुण्डग्राम, वैशाली)
- वर्धमान के पिता का नाम था— सिद्धार्थ
- वर्धमान की माता का नाम था— त्रिशला
- वर्धमान की पत्नी का नाम था— यशोदादेवी
- वर्धमान के ज्येष्ठ भ्राता का नाम था— नन्दिवर्धन
- 13 वर्षों के बाद कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था— वर्धमान को
- पावापुरी में 72वर्ष की आयु में मृत्यु हुई थी— वर्धमान की
- 'जिन' और 'महावीर' की उपाधि दी गयी थी— वर्धमान को
- 'जिन' शब्द का अर्थ है— जीतने वाला
- सभी प्रकार के विकारों को जीत लेने वाला कहा जाता है— 'जिन'
- जैनदर्शन प्रत्येक पदार्थ के कितने लक्षण स्वीकार करता है— तीन
  1. उत्पाद 2. व्यय 3. ध्रौव्य

- जैनदर्शन में पदार्थों की संख्या मानी गयी है— 7
- जैनदर्शन में कितने सम्प्रदाय पाये जाते हैं— दो
  1. दिगम्बर, (भद्रबाहु के शिष्य)
  2. श्वेताम्बर (स्थूलभद्र के शिष्य)
- जैनदर्शन में मोक्ष के साधन हैं— त्रिरत्न
- जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक् चरित्र ये हैं— त्रिरत्न
- 'सर्वदर्शनसंग्रह' के प्रणेता हैं— माधवाचार्य
- 'जिनदेव' के द्वारा कहे गए तत्त्वों में रुचि होना कहलाता है— सम्यक्दर्शन
- जैनदर्शन में नित्या-नित्यात्मक, सामान्य विशेषात्मक, त्रिलक्षण सम्पन्न माना गया है— द्रव्य
- गुणरूप से नित्य है— द्रव्य
- पर्यायरूप से अनित्य है— द्रव्य
- द्रव्य में गुण हैं— ध्रुव
- गुणपर्यायात्मक कहा गया है— द्रव्य को
- जैनदर्शन का विशिष्ट सिद्धान्त है— अनेकान्तवाद
- जैनदर्शन है— नास्तिकदर्शन
- सम्यक्दर्शन के अङ्ग हैं— आठ
- सम्यक् ज्ञान के भेद हैं— पाँच
  1. मति 2. श्रुत 3. अवधि 4. मनः पर्याय 5. केवल
- सम्यक्ज्ञान के 5 भेदों में से प्रथम (मति) को कहते हैं— परोक्ष
- सम्यक्ज्ञान के 5 भेदों में से द्वितीय (श्रुत) को कहते हैं— प्रत्यक्ष
- मति ज्ञान के भेद हैं— चार
  1. अवग्रह 2. ईहा 3. अवाय 4. साधारण
- 'संसरणकर्मोच्छित्तावुद्यतस्य श्रद्दधानस्य ज्ञानवतः पापगमनकारण क्रियानिवृत्तिः' यह है— सम्यक् चरित्र

➢ सम्यक् चरित्र के महाव्रत हैं—पाँच
1. अहिंसा 2. सूनृत (सत्य) 3. अस्तेय 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह
➢ 'न यत्प्रमादयोगेन जीवितव्यपरोपणम्।
चराणां स्थावराणां च तदहिंसा व्रतं मतम्'।। यह है—अहिंसाव्रत
➢ प्रियं पथ्यं वचस्तथ्यं सूनृतं व्रतमुच्यते।
तत्तथ्यमपि नो तथ्यमप्रियं चाहितं च यत्'।। यह है—सत्यव्रत
➢ 'अनादानमदत्तस्यास्तेयव्रतमुदीरितम्।
ब्रह्याः प्राणाः नृणामर्थो हरता तं हता हि ते।। यह है—अस्तेयव्रत
➢ दिव्यौदरिककामानां कृतानुमतकारितैः।
मनोवाक्कायतस्त्यागो ब्रह्माष्टादशधा मतम्।। यह है—ब्रह्मचर्यव्रत
➢ 'सर्वभावेषु मूर्च्छायास्त्यागः स्यादपरिग्रहः' यह है—अपरिग्रह
➢ प्रत्येक व्रत की भावनाएँ हैं— पाँच-पाँच
➢ ज्ञान के रूप में है—जीव
➢ अज्ञान के रूप में हैं—अजीव
➢ वाचकाचार्य के अनुसार औपशमिक, क्षायिक और दोनों का मिश्रण, औदयिक और पारिणामिक ये पाँच भाव रूप हैं—जीव के अपने
➢ 'अनुदयप्राप्तिरूपे कर्मण उपशमे सति जीवस्योत्पद्यमानोभाव' यह है—औपशमिक
➢ 'कर्मणः क्षये सति जायामानोभावः' यह है—क्षायिक
➢ 'उभयात्मा भावः' यह है—मिश्र
➢ 'जलस्यार्धस्वच्छता' यह उदाहरण है—मिश्र का
➢ 'कर्मोदये सति भवन्भावः' यह है—औदयिक
➢ 'कर्मोपशमाद्यनपेक्षः सहजो भावश्चेतनत्वादिः' यह है—पारिणामिक
➢ स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण से युक्त होते हैं—पुद्गल
➢ पुद्गल के प्रकार हैं—दो 1. अणु 2. स्कन्ध
➢ जैनदर्शन तत्त्वों की संख्या मानता है—सात
➢ जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष ये सात हैं—तत्त्व (पदार्थ)

➢ उमास्वाति ने बन्ध के कितने कारण बताए हैं?—चार
1. मिथ्यादर्शन, 2. अविरति, 3. प्रमाद, 4. कषाय
➢ मिथ्यादर्शन के भेद हैं—दो
➢ 'पृथिव्यादिषट्कोपादानं षडिन्द्रियासंयमनं च' यह है—अविरति
➢ 'पञ्चसमितित्रिगुप्तिष्वनुत्साहः' यह है—प्रमाद
➢ 'क्रोधादिः' यह है—कषाय
➢ बन्धन के भेद हैं—चार
1. प्रकृतिबन्ध 2. स्थितिबन्ध 3. अनुभवबन्ध, 4. प्रदेशबन्ध
➢ 'आस्रवनिरोधः' यह है—संवर
➢ गुप्ति के भेद हैं—तीन
➢ समिति के भेद हैं—पाँच
➢ 'अर्जितस्य कर्मणस्तपः प्रभृतिभिर्निर्जरणं निर्जराख्यं तत्त्वम्' यह है—निर्जर
➢ निर्जरा के भेद हैं—दो
1. यथाकाल, 2. औपक्रमिक
➢ 'बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षणम्' यह है—मोक्ष
➢ 'सप्तभङ्गीनय' यह है—जैनों का
➢ 'सप्तभङ्गीनय' के प्रकार हैं—7
➢ 'भङ्ग' का अर्थ है—समुच्चय
➢ जैन दार्शनिक सभी 'नय' के साथ किस शब्द का प्रयोग करते हैं?—'स्यात्' का
➢ 'स्यादस्ति' का अर्थ है—किसी प्रकार है
➢ 'स्यान्नास्ति' का अर्थ है— किसी प्रकार नहीं है
➢ स्यादस्ति च नास्ति च का अर्थ है— किसी प्रकार है और नहीं है
➢ 'स्यादवक्तव्यः' का अर्थ है—किसी प्रकार अवर्णनीय है
➢ 'स्यादस्ति चावक्तव्यः' का अर्थ है—किसी प्रकार है और अवर्णनीय है

- 'स्यान्नास्ति चावक्तव्यः' का अर्थ है—किसी प्रकार नहीं है और अवर्णनीय है
- 'स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यः' का अर्थ है—किसी प्रकार है, नहीं है, अवर्णनीय है
- सापेक्षता और अनेकान्तता का द्योतक है—'स्यात्' शब्द
- 'सरजोहरणा भैक्षभुजो लुञ्चितमूर्धजाः। श्वेताम्बराः क्षमाशीला निःसङ्गा जैनसाधवः' यह है—श्वेताम्बर
- 'लुञ्चिताः पिच्छिका हस्ताः पाणिपात्राः' यह है—दिगम्बर
- 'ऊर्ध्वाशिनो गृहे दातुर्द्वितीयाः स्युर्जिनर्षयः' यह है—दिगम्बर
- जैनदर्शन के अनुसार गुणस्थानों की संख्या है— 14
- मोक्षमार्ग के सोपानों को जैनदर्शन में कहते हैं—गुणस्थान



बौद्धमत

- बौद्धदर्शन के संस्थापक थे—गौतमबुद्ध
- गौतमबुद्ध का नाम था—सिद्धार्थ
- बौद्धदर्शन के आदि प्रवर्तक हैं—सिद्धार्थ
- सिद्धार्थ के पिता का नाम था—शुद्धोदन
- सिद्धार्थ की माता का नाम था—मायादेवी
- 19 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने किया था—महाभिनिष्क्रमण
- वैशाखी पूर्णिमा को जन्म हुआ था—सिद्धार्थ का
- वैशाखी पूर्णिमा को बुद्धत्व प्राप्त हुआ था—सिद्धार्थ को
- सिद्धार्थ ने निर्वाण प्राप्त किया था—कुशीनगर में (80 वर्ष की आयु में)
- मानव क्लेशों से उद्धार पाने के लिए 'विनय' तथा धर्म की शिक्षा सिद्धार्थ ने लोगों को दी थी—मागधी भाषा में
- व्याप्ति का ही दूसरा नाम है—अविनाभाव
- अन्वय और व्यतिरेक को नहीं मानते हैं—बौद्ध
- कार्य-कारण-सम्बन्ध के निश्चय के द्वारा निश्चय होता है—व्याप्ति का
- कार्य-कारण-सम्बन्ध का निश्चय कार्य और कारण के प्रत्यक्ष उपलम्भ और अनुपलम्भ निर्भर करता है—पाँच अवयवों पर
- बौद्धदर्शन के सम्प्रदाय हैं—चार

  1. माध्यमिक (शून्यवाद)
  2. योगाचार, (विज्ञानवाद)
  3. सौत्रान्तिक (बाह्यार्थानुमेयवाद)
  4. वैभाषिक (बाह्यार्थप्रत्यक्षवाद)

- 'सब कुछ शून्य होना है—माध्यमिक के अनुसार

- 'बाह्यपदार्थों का शून्य' होना है— योगाचार के अनुसार
- बाह्य पदार्थों का अनुमान से ज्ञान होना है— सौत्रन्तिक के अनुसार
- बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना है— वैभाषिक के अनुसार
- शून्यवाद का मत सम्बद्ध है— नागार्जुन से
- 'योगाचार' के आचार्य हैं— दिङ्नाग
- बौद्धदर्शन को विभक्त किया गया था— दो भागों में
  1. हीनयान 2. महायान
- माध्यमिक और योगाचार सम्प्रदाय हैं— महायान के
- सौत्रान्तिक और वैभाषिक सम्प्रदाय हैं— हीनयान के
- 'सौत्रान्तिक' का विशेष सम्बन्ध है— सुत्तपिटक से
- 'केवल' वर्तमान की सत्ता को मानते हैं— सौत्रान्तिक
- सभी कालों की सत्ता को मानने के कारण वैभाषिक कहलाते हैं— सर्वास्तिवादी
- योगाचार मत में एकमात्र सत्ता है— विज्ञान
- योगाचार मत में विज्ञान को स्वीकार किया गया है— अद्वैत रूप में
- 'सब कुछ दुःख है, दुःख है' यह विचार (भावना) है— बौद्ध की (सर्वं दुःखं दुःखम्)
- 'सर्वं स्वलक्षणं स्वलक्षणम्' यह बौद्धों की है— दूसरी भावना
- साधारणतया 'शून्य' शब्द का अर्थ समझा जाता है— असत् या अभाव
- माध्यमिकों के अनुसार 'शून्य' का अर्थ होता है— अनिर्वचनीय
- 'शून्य' को एक 'अनिर्वचनीय' तत्त्व कहा है— माध्यमिकों ने
- अप्राप्त ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रश्न करना कहलाता है— योग
- गुरु की बातों को स्वीकार करना कहलाता है— आचार
- 'गुरूक्तस्यार्थस्याङ्गीकरणमाचारः' यह है— आचार

- शिष्य को कितने काम करने हैं?— दो
  1. योग 2. आचार
- 'अप्राप्तस्यार्थस्य प्राप्तये पर्यनुयोगो' यह है— योग
- योगाचार का दूसरा नाम है— विज्ञानवाद
- बाहरी पदार्थों को शून्य नहीं मानते हैं— सौत्रान्तिक लोग
- बाहरी पदार्थों को अनुमेय मानते हैं— सौत्रान्तिक लोग
- सौत्रान्तिक और वैभाषिक मानते हैं— दोनों को (आन्तर एवं बाह्य पदार्थ)
- आन्तर और बाह्य पदार्थ दोनों को नहीं मानते हैं— माध्यमिक
- केवल आन्तर पदार्थ को मानते हैं— विज्ञानवादी
- 'आलय विज्ञान' और 'प्रवृत्ति विज्ञान' वस्तुतः सिद्धान्त हैं'— विज्ञानवादियों के
- प्रवृत्तिविज्ञान के भेद हैं— 7
- 'नामाहमास्पदं विज्ञानम्' यह है— आलयविज्ञान
- साकारचित्त को कहते हैं— ज्ञान
- ज्ञान के कारण हैं— चार
  1. आलम्बन 2. समनन्तर 3. सहकारी 4. अधिपति
- चित्त और चित्त के विकारों के रूप में स्कन्ध (अमूर्त्त तत्त्व) के प्रकार हैं— पाँच
- रूपस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध, वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध और संस्कारस्कन्ध ये हैं— पाँच स्कन्ध
- विषयों के साथ इन्द्रियों का नाम है— रूपस्कन्ध
- आलयविज्ञान और प्रवृत्तिविज्ञान का प्रवाह है— विज्ञानस्कन्ध
- पहले कहे गए इन दोनों स्कन्धों के सम्बन्ध से उत्पन्न सुखदुःखादि प्रतीतियों का प्रवाह है— वेदनास्कन्ध

- 'गौ' इत्यादि शब्दों को व्यक्त करने वाले ज्ञानों का प्रवाह है— संज्ञास्कन्ध
- वेदनास्कन्ध पर आधारित रागद्वेषादि क्लेश, मद-मानादि तथा धर्म-अधर्म को कहते हैं— संस्कारस्कन्ध
- विज्ञान के प्रकार हैं— दो

  1. आलयविज्ञान 2. प्रवृत्तिविज्ञान
- आर्य सत्य हैं— चार

  1. दुःख 2. समुदय 3. निरोध 4. मार्ग
- समुदय का अर्थ है— दुःख का कारण
- दुःख के कारण के प्रकार हैं— दो

  1. प्रत्यय पर आधारित 2. कारण पर आधारित
- आध्यात्मिक वस्तुओं का हेतुनिबन्धन कारण ही कहलाता है— भवचक्र
- सब की सत्ता स्वीकार करते हैं— वैभाषिक
- बाह्य पदार्थों को अनुमान का विषय मानते हैं— सौत्रान्तिक
- प्रत्यक्षतः किसी भी अर्थ की सत्ता को स्वीकारते नहीं हैं— सौत्रान्तिक
- अर्थ के प्रकार हैं— दो 1. ग्राह्य 2. अध्यवसेय
- निर्विकल्पक रूप में जो ग्रहण होता है, वह है— प्रमाण
- जिसमें कल्पना बिल्कुल नहीं रहती है, वह है— निर्विकल्पक
- सविकल्पक के रूप में जो अध्यवसाय रहता है, वह है— अप्रमाण
- जिसमें वस्तु की कल्पना का ज्ञान होता है, वह है— सविकल्पक
- एकमात्र प्रमाण है— निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
- 'कल्पानापोढमभ्रान्तं प्रत्यक्षम्' यह है— निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
- बौद्धों के सिद्धान्त में आयतनों की संख्या है— 12
- बारह आयतनों की पूजा देने वाली होती है— मोक्ष
- 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये द्वादश हैं— आयतन
- प्रमाण हैं— दो

  1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान

- वैभाषिक आदि बौद्धों के प्रस्थान प्रसिद्ध हैं— चार
- अर्थ को ज्ञान से युक्त मानते हैं— वैभाषिक
- बाह्य अर्थ को प्रत्यक्ष द्वारा ग्रहणीय नहीं लेते हैं— सौत्रान्तिक
- बाह्य अर्थ को अनुमेय मानते हैं— सौत्रान्तिक
- बुद्धि ही आकार के साथ है, यह मत है— योगाचार का
- केवल ज्ञान को ही अपने में स्थित मानते हैं— माध्यमिक
- 'विज्ञानमेवात्मा' यह सिद्धान्त है— बौद्ध का
- ईश्वर की सत्ता नहीं स्वीकार करता है— बौद्ध
- असत्कार्यवाद सिद्धान्त है— बौद्ध का
- बुद्ध द्वारा उपदिष्ट आर्य सत्यों की संख्या है— 4
- बौद्धदर्शन में कितने 'परमाणु' हैं— 4
- नास्तिक दर्शन है— बौद्धदर्शन
- नास्तिक दर्शनों की संख्या है— 3
- आस्तिक दर्शनों की संख्या है— 6
- 'आत्मख्याति' को स्वीकार करते हैं— योगाचार
- 'असतख्याति' को स्वीकार करते हैं— माध्यमिक

✦✦✦

ऐच्छिक- 4

काव्यप्रकाश

(द्वितीय उल्लास)

- ➢ काव्य-लक्षण के शब्दार्थों का निरूपण किया गया है— द्वितीय उल्लास में
- ➢ काव्यप्रकाश के द्वितीय उल्लास का नाम है— शब्दार्थस्वरूपनिर्णय
- ➢ शब्द के भेद हैं— तीन
  1. वाचक 2. लक्षक 3. व्यञ्जक
- ➢ अर्थ के भेद हैं— तीन
  1. वाच्य 2. लक्ष्य 3. व्यङ्ग्य
- ➢ साहित्यशास्त्र को छोड़कर अन्य शास्त्रों में किस शब्द का निरूपण नहीं किया गया है? व्यञ्जक का
- ➢ मुख्यार्थ का बोधक है— वाचक शब्द
- ➢ वाचक शब्द के ऊपर आश्रित रहता है— लाक्षणिक शब्द
- ➢ वाचक और लाक्षणिक शब्द की अपेक्षा रखता है— व्यञ्जक शब्द
- ➢ यह तीन प्रकार का विभाग केवल है— शब्द की उपाधियों का, शब्दों का नहीं
- ➢ तीन प्रकार के अर्थों को प्रकट करने वाली वृत्तियाँ हैं— तीन
  1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना
- ➢ आचार्य मम्मट ने शब्द की कितनी वृत्तियों (व्यापार) को स्वीकार किया है?— तीन
- ➢ व्यञ्जक सिर्फ पाया जाता है— साहित्यशास्त्र में
- ➢ शब्द शक्तियों के प्रकार हैं— तीन 1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना
- ➢ 'अभिहितान्वयवाद' के अनुयायी हैं— मीमांसक
- ➢ 'अभिहितान्वयवाद' के आचार्य हैं— कुमारिलभट्ट

- अन्विताभिधानवाद के आचार्य हैं— पार्थसारथिमिश्र
- ➢ कुमारिलभट्ट के अनुयायी हैं— प्रभाकर आदि
- ➢ अर्थ का चतुर्थ भेद माना जाता है— तात्पर्यार्थ
- ➢ 'तात्पर्यार्थ' को मानते हैं— अभिहितान्वयवादी
- ➢ 'तात्पर्यार्थ' को कहा जाता है— वाक्यार्थ
- ➢ 'तात्पर्यार्थ' बोधक शक्ति को कहा जाता है— तात्पर्याख्याशक्ति
- ➢ मीमांसक नहीं मानते हैं— व्यञ्जना को
- ➢ मीमांसक कितने प्रकार की शब्द शक्ति मानते हैं— तीन
  1. अभिधा 2. लक्षणा 3. तात्पर्यार्थ
- ➢ पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध पदों से नहीं अपितु वक्ता के तात्पर्य के अनुसार होता है, यह मत है— अभिहितान्वयवादियों का
- ➢ आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि से युक्त पदसमुदाय ही कहलाता है— वाक्य
- ➢ श्रोता की जिज्ञासा रूप है— आकांक्षा
- ➢ पदार्थों के परस्पर सम्बन्ध में बाधा का अभाव है— योग्यता
- ➢ एक ही पुरुष द्वारा अविलम्ब पदों का उच्चारण करना है— सन्निधि
- ➢ 'वाच्य एव वाक्यार्थः' यह सिद्धान्त है— अन्विताभिधानवादियों का
- ➢ प्रायः सभी अर्थों का व्यञ्जकत्व भी माना जाता है— साहित्यशास्त्र में
- ➢ 'मातर्गृहोपकरणमद्य खलु नास्तीति साधितं त्वया।
  तद्भण किं करणीयमेवमेव न वासरः स्थायी।।' यह उदाहरण है— वाच्यार्थ का
- ➢ 'साधयन्ती सखि सुभगं क्षणे-क्षणे दूनासि मत्कृते।
  सद्भावस्नेहकरणीयसदृशकं तावद् विरचितं त्वया।।' यह उदाहरण है— लक्ष्यार्थ का
- ➢ 'पश्य निश्चलनिष्पन्दा बिसिनीपत्रे राजते बलाका।
  निर्मलमरकतभाजनपरिस्थिता शङ्खशुक्तिरिव।।' यह उदाहरण है— व्यङ्ग्यार्थ का

- 'साक्षात्संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचक:' यह है— वाचक
- साक्षात् संकेतित अर्थ को अभिधा शक्ति के द्वारा कहने वाला शब्द कहलाता है— वाचक
- संकेतित अर्थ के भेद हैं— चार
  1. जाति 2. गुण 3. क्रिया 4. यदृच्छा
- संकेतित अर्थ के रूप में केवल 'जाति' को ही मानते हैं— मीमांसक
- उपाधि के मुख्य रूप से प्रकार हैं— दो
  1. वस्तुधर्म 2. वक्तृयदृच्छासन्निवेशित
- 'लक्षणा' का मुख्य कारण बतलाया गया है— मुख्यार्थ बाध
- 'लक्षणा' व्यङ्ग्य की दृष्टि से कितने प्रकार की कही गयी है?— तीन
  1. व्यङ्ग्यरहित लक्षणा 2. गूढ़व्यङ्ग्य 3. अगूढव्यङ्ग्य
- 'लक्षणा' का आश्रयभूत शब्द कहलाता है— लाक्षणिक शब्द
- व्यञ्जना के भेद हैं— दो
  1. शाब्दी व्यञ्जना 2. आर्थी व्यञ्जना
- शाब्दी व्यञ्जना के भेद हैं— दो
  1. अभिधामूला 2. लक्षणामूला
- 'अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते। संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद् व्यापृतिरञ्जनम्।।' यह है अभिधामूला व्यञ्जना
- व्यञ्जना-व्यापार से युक्त शब्द कहलाता है— व्यञ्जक
- 'गुरुमत' कहा जाता है— प्रभाकर के मत को
- प्रभाकर को 'गुरु' की उपाधि दी थी— कुमारिलभट्ट ने
- 'अत्र तु नोक्तं तत्रापि नोक्तम् इति पौनरुक्त्यम्' यह उक्ति है— कुमारिलभट्ट की
- अत्र 'तुना' उक्तं तत्र 'अपिना' उक्तम् इति पौनरुक्त्यम् यह उक्ति है— प्रभाकर की



पञ्चम उल्लास

- 'ध्वनिगुणीभूतव्यङ्ग्य सङ्कीर्ण भेदनिर्णय' नामक उल्लास है— पञ्चम उल्लास
- गुणीभूतव्यङ्ग्य रूप मध्यम काव्य के भेदों का निरूपण किया गया है— पञ्चम उल्लास में
- गुणीभूतव्यङ्ग्य के भेद हैं— आठ
- अगूढमपरस्याङ्गं वाच्यसिद्ध्यङ्गमस्फुटम्। सन्दिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्वाक्षिप्तमसुन्दरम्।। यह आठ भेद है— गुणीभूतव्यङ्ग्य के
- अत्रासीत् फणिपाशबन्धनविधि: शक्त्या भवद्देवरे गाढं वक्षसि ताडिते हनुमता द्रोणाद्रिरत्राहृत:।। यह उदाहरण है— अगूढव्यङ्ग्य का
- जहाँ असहृदयजनों को भी व्यङ्ग्यार्थ की शीघ्र प्रतीति हो जाती है, वह है— अगूढव्यङ्ग्य गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ व्यङ्ग्यार्थ वाक्य के तात्पर्यरूप किसी अन्य प्रधान अर्थ का अङ्ग (उपकारक) हो जाता है, वह है— अपरस्याङ्गव्यङ्ग्य गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ वाच्यार्थ की सिद्धि व्यङ्ग्यार्थ के अधीन होती है, वह है— वाच्यसिद्ध्यङ्ग गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ व्यङ्ग्यार्थ को सहृदयजन भी सहज में नहीं समझ पाते हैं, वह है— अस्फुट गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ वाच्यार्थ प्रधान है अथवा व्यङ्ग्यार्थ प्रधान है यह सन्देह होता है, वह है— संदिग्ध प्राधान्य गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ चमत्कारोत्पादन में वाच्यार्थ तथा व्यङ्ग्यार्थ का तुल्य सामर्थ्य होता है, वह है— तुल्यप्राधान्य गुणीभूतव्यङ्ग्य
- जहाँ काकु नामक ध्वनिविकार से आक्षिप्त व्यङ्ग्यार्थ के बिना वाच्यार्थ का स्वरूप ही निष्पन्न नहीं होता है, वह है— काक्वाक्षिप्त

➢ जहाँ व्यङ्ग्यार्थ स्वभाव से ही वाच्यार्थ की अपेक्षा कम चमत्कारपूर्ण होता है, वह है— असुन्दर गुणीभूतव्यङ्ग्य

➢ 'काञ्चीगुणग्रथनभाजनमेष सोऽस्मि जीवन्न सम्प्रति भवामि किमावहामि' यहाँ पर 'जीवन' इस अर्थान्तर संक्रमित वाच्य (पद) का व्यङ्ग्य है— अगूढ

➢ उन्निद्रकोकनदरेणुपिशङ्गिताङ्गा गायन्ति मञ्जु मधुपा गृहदीर्घिकासु। एतच्चकास्ति च रवेर्नवबन्धुजीवपुष्पच्छदाभमुदया चलचुम्बिबिम्बम्।। यहाँ चुम्बन इस अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य का व्यङ्ग्य है— अगूढ

➢ अत्रासीत् फणिपाशबन्धनविधिः शक्त्या भवद्देवरेगाढं वक्षसि ताडिते हनुमता द्रोणाद्रिरत्राहृतः।

➢ दिव्यैरिन्द्रजिदत्र लक्ष्मणशरैर्लोकान्तरं प्रापितः केनाप्यत्र मृगाक्षि! राक्षसपतेः कृत्ता च कण्ठाटवी।। यहाँ पर 'केनापि' इसमें है— अर्थशक्तिमूलक संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यअगूढ

➢ अयं स रशनोत्कर्षी पीनस्तनविमर्दनः।
नाभ्यूरुजघनस्पर्शी नीवीविस्रंसनःकरः।। यह उदाहरण है— अपराङ्गगुणीभूतव्यङ्ग्य का

➢ यहाँ 'अयं' इत्यादि में शृङ्गाररस है— व्यङ्ग्य

➢ यहाँ पर शृङ्गार (अपर), करुण का है— अङ्ग

➢ 'भ्रमिमरतिमलसहृदयतां प्रलयं मूर्च्छां तमः शरीरसादम्।
मरणञ्च जलदभुजगजं प्रसह्य कुरुते विषं वियोगिनीनाम्।।' यह उदाहरण है— वाच्यसिद्ध्यङ्ग का

➢ 'अदृष्टे दर्शनोत्कण्ठा दृष्टे विच्छेदभीरुता।
नादृष्टेन न दृष्टेन भवता लभ्यते सुखम्।।' यह उदाहरण है— अस्फुट गुणीभूतव्यङ्ग्य का

➢ 'हरस्तु किञ्चित्परिवृत्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः।
उमामुखे बिम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि।।' यह उदाहरण है— संदिग्धप्राधान्य का

➢ 'ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये।
जामदग्न्यस्तथा मित्रमन्यथा दुर्मनायते।।' यह उदाहरण है-- तुल्य-प्राधान्य का

➢ मथ्नामि कौरवशतं समरे न कोपाद् दुःशासनस्य रुधिरं न पिबाम्युरस्तः।
यह उदाहरण है— काक्वाक्षिप्त का

➢ 'वानीरकुञ्जोड्डीनशकुनिकोलाहलं शृण्वन्त्याः।
गृहकर्मव्यापृताया वध्वाः सीदन्त्यङ्गानि।।' यह उदाहरण है— असुन्दर व्यङ्ग्य का

+++

वक्रोक्तिजीवितम्

- 'वक्रोक्तिजीवितम्' के रचनाकार हैं— आचार्य कुन्तक
- वक्रोक्ति संप्रदाय के संस्थापक हैं— आचार्य कुन्तक
- कुन्तक के अनुसार साहित्य शब्द का अर्थ है— शब्दार्थ का पूर्ण सामंजस्य
- कुन्तक के अनुसार काव्य के प्रयोजन हैं— तीन
- कुन्तक के सिद्धान्त के अनुसार काव्य की आत्मा है— वक्रोक्ति
- 'प्रसिद्धाभिधानव्यतिरेकिणी विचित्रैवाभिधा' यह है— वक्रोक्ति
- प्रसिद्ध कथन से भिन्न विचित्र अभिधा अर्थात् वर्णन शैली ही है— वक्रोक्ति
- वैदग्ध्य का अर्थ है— विदग्धता
- वैदग्ध्य से अभिप्राय है— कविकर्म-कौशल का
- स्थान-स्थान पर वक्र, विचित्र, चारु आदि शब्दों का पर्याय रूप में प्रयोग किया है— कुन्तक ने
- कुन्तक के अनुसार सम्पूर्ण काव्य-विधान का केन्द्र बिन्दु है— प्रतिभा
- प्रतिभा के स्वरूप के विषय में कुन्तक का दृष्टिकोण है— समन्वयवादी
- कुन्तक के अनुसार पूर्वजन्म और इस जन्म के संस्कारों का परिपाक है— प्रतिभा
- वक्रोक्ति को काव्य के अलंकार का पर्याय माना है— कुन्तक ने
- शब्द-अर्थ के सौन्दर्य अथवा अलंकार की समष्टि का ही दूसरा नाम है— वक्रोक्ति
- कुन्तक मूलतः वक्रता (वक्रोक्ति) के भेद मानते हैं— 6
  1. वर्णविन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता 3. पदपरार्ध
  4. वाक्य 5. प्रकरण 6. प्रबन्ध
- वर्ण के बाद काव्य का दूसरा अवयव है— पद

- पदपूर्वार्द्ध वक्रता के मुख्य भेद हैं— 8
- प्रकरण वक्रता के मुख्यभेद हैं— 9
- प्रबन्ध वक्रता के मुख्यभेद हैं— 6
- श्रीमद्राजानककुन्तकविरचित 'वक्रोक्तिजीवितम्' नामक ग्रन्थ के भाग हैं— दो
  1. कारिकाभाग 2. वृत्तिभाग
- कारिकाभाग एवं वृत्तिभाग दोनों के रचयिता हैं— कुन्तक
- कुन्तक ने मूलकारिका भाग का नाम रखा है— काव्यालङ्कार
- कुन्तक ने वृत्तिभाग का नाम रखा है— वक्रोक्तिजीवितम्
- 'वक्रोक्तिजीवितम्' के मङ्गलाचरण के प्रथम श्लोक में ग्रन्थकार ने नमस्कार किया है— शिव को
- कुन्तक के इष्टदेव हैं— शिव
- कुन्तक ने जगत्त्रितय के वैचित्र्य रूप चित्रकर्म के निर्माता के रूप में स्मरण किया है— शिव को
- 'जगत्त्रितयवैचित्र्यचित्रकर्मविधायिनम्' यह वक्रोक्तिजीवितम् का है— मङ्गलाचरण
- 'शिवं शक्तिपरिस्पन्दमात्रोपकरणं नुमः' यह वक्रोक्ति जीवितम् का है— मङ्गलाचरण
- आचार्य कुन्तक माने जाते हैं— कश्मीरी
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं— आचार्य कुन्तक
- ग्रन्थ के आरम्भ में कुन्तक ने मङ्गलाचरण में नमस्कार किया है— सरस्वती देवी को
- ग्रन्थ का मङ्गलाचरण है— नमस्कारात्मक
- कवि का कर्म (रचना) है— काव्य
- कुन्तक के मत में अलङ्कार काव्य का है— स्वरूपाधायक धर्म
- 'शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
  बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।।' यह काव्य-लक्षण है— कुन्तक का

➤ शब्द और अर्थ दोनों मिलकर हैं— काव्य

➤ 'तद्विदाह्लादकारित्व' होता है— शब्द और अर्थ में

➤ काव्य-लक्षण में 'तत्' का अर्थ है— काव्य

➤ काव्य-लक्षण में 'विद्' का अर्थ है— मर्मज्ञ

➤ सहित (शब्द तथा अर्थ) का भाव है— साहित्य (सहितयोर्भावःसाहित्यम्)

➤ 'वर्णविन्यास-वक्रता' प्राचीन आलङ्कारिकों में प्रसिद्ध है— अलंकार नाम से

➤ कुन्तक ने काव्य रचना का कारणभूत स्वीकार किया है— मार्गों को

➤ कुन्तक कितने मार्ग का उल्लेख करते हैं? तीन
1. सुकुमार मार्ग 2. विचित्र मार्ग 3. मध्यम या उभयात्मक मार्ग

➤ कुन्तक ने तीनों मार्गों के गुण बताए हैं— चार
1. प्रसाद 2. माधुर्य 3. लावण्य 4. अभिजात

➤ 'अम्लानप्रतिभोद्भिन्ननवशब्दार्थबन्धुरः।
अयत्नविहितस्वल्पमनोहारिविभूषणः।।' यह है— सुकुमार मार्ग

➤ 'वक्रोक्ति जीवितम्' विभक्त है— उन्मेषों में

➤ वर्तमान में 'वक्रोक्ति' जीवितम् में कुल उन्मेष है— चार

➤ कुन्तक ने काव्य लक्षण में कितनी चीजों का समावेश किया है— पाँच
1. शब्दार्थ 2. साहित्य 3. वक्रकविव्यापार
4. बन्ध 5. तद्विदाह्लादकारित्व

➤ धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः।। यह है— काव्यप्रयोजन

➤ 'व्यवहारपरिस्पन्दसौन्दर्यं व्यवहारिभिः।
सत्काव्याधिगमादेव नूतनौचित्यमाप्यते।। यह है— काव्यप्रयोजन

➤ चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्।
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते।। यह है— काव्यप्रयोजन

➤ काव्य के त्रिविध मार्ग का वर्णन किया गया है— प्रथम उन्मेष में

➤ प्रथम तीन वक्रता के भेद का वर्णन है— द्वितीय उन्मेष में

➤ अलङ्कारों का वर्णन एवं उनका खण्डन किया गया है— तृतीय उन्मेष में

➤ अन्तिम वक्रता के दो भेदों का वर्णन है— चतुर्थ उन्मेष में

➤ पदपरार्ध वक्रता को कहा जाता है— प्रत्ययवक्रता

➤ आचार्य कुन्तक कितने अलंकार स्वीकार करते है?— 20

➤ आचार्य कुन्तक ने पूर्व आचार्यो द्वारा स्वीकृत कितने अलंकारों का खण्डन किया है?— 19



काव्यमीमांसा

- काव्यमीमांसा के प्रणेता हैं— राजशेखर
- राजशेखर निवासी प्रतीत होते हैं— महाराष्ट्र के
- राजशेखर का जन्म हुआ था— यायावरवंश में
- राजशेखर की पत्नी का नाम था— अवन्तिसुन्दरी
- चौहाणवंशीय थी— अवन्तिसुन्दरी
- काव्यमीमांसा विभक्त है— अधिकरण में
- काव्यमीमांसा में कुल अधिकरण हैं— 18
- काव्यमीमांसा का उपलब्ध अधिकरण है— प्रथम
- काव्यमीमांसा के अधिकरण विभक्त हैं— अध्याय में
- काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण में कुल अध्याय हैं— 18
- प्रथम अध्याय का नाम है— शास्त्रसंग्रह
- द्वितीय अध्याय का नाम है— शास्त्रनिर्देश
- तृतीय अध्याय का नाम है— काव्यपुरुषोत्पत्ति
- चतुर्थ अध्याय का नाम है— पदवाक्यविवेक (शिष्य प्रतिभे)
- पञ्चम अध्याय का नाम है— पाठप्रतिष्ठा (व्युत्पत्तिकविपाकाः)
- परमेष्ठी, वैकुण्ठ आदि चौसठ शिष्यों को काव्यशास्त्र का उपदेश दिया था— श्रीकण्ठ ने
- अपने शिष्य अयोनिज ऋषियों को काव्यशास्त्र का उपदेश दिया था— ब्रह्मा ने
- ब्रह्मा द्वारा उपदिशित शिष्यों में सर्वश्रेष्ठ थे— काव्यपुरुष
- वाङ्मय के प्रकार हैं— दो

  1. काव्य 2. शास्त्र
- शास्त्र के प्रकार हैं— दो

  1. पौरुषेय 2. अपौरुषेय

- उपवेद हैं— चार

  1. इतिहास वेद 2. धनुर्वेद 3. गान्धर्ववेद 4. आयुर्वेद
- राजशेखर ने वेद का सातवाँ अङ्ग कहा है— अलङ्कार को
- पौरुषेय के प्रकार हैं— चार

  1. पुराण 2. आन्वीक्षिकी 3. मीमांसा 4. स्मृतितन्त्र
- पुराण का ही भेद राजशेखर ने माना है— इतिहास को (यथा-रामायण आदि)
- 'अलङ्कार' को वेद का कहा गया है— सातवाँ अङ्ग
- चार वेद, 6 वेदाङ्ग और चार शास्त्र ये हैं— 14 विद्यास्थान
- राजशेखर के अनुसार 15वाँ विद्यास्थान है— काव्य
- साहित्य को पाँचवी विद्या मानते हैं— राजशेखर
- सरस्वती के अनुसार शब्द और अर्थ शरीर है— काव्यपुरुष का
- सरस्वती के अनुसार संस्कृत मुख है— काव्य पुरुष का
- काव्यपुरुष की भुजा है— प्राकृत
- काव्यपुरुष की जाँघ है— अपभ्रंश
- काव्यपुरुष के दोनों पैर हैं— पैशाची
- काव्यपुरुष के उरुस्थल हैं— मिश्रभाषाएँ
- काव्यपुरुष की वाणी है— उक्तिवती
- काव्यपुरुष की आत्मा है— रस
- काव्यपुरुष के रोम हैं— छन्द
- कवि के प्रकार हैं— दो

  1. बुद्धिमान 2. आहार्य बुद्धि
- बुद्धि के प्रकार हैं— तीन

  1. स्मृति 2. मति 3. प्रज्ञा
- प्रतिभा के प्रकार हैं— दो

  1. कारयित्री 2. भावयित्री
- कवि की उपकारिका है— कारयित्री

- कवि के प्रकार हैं— तीन
  1. सहजा 2. आहार्य 3. औपदेशिकी
- कवि की कविता को सफल बनाती है— भावयित्री
- मङ्गलानुसार 'आलोचक' के प्रकार हैं— दो
  1. अरोचकी 2. सतृणाभ्यवहारी
- राजशेखरानुसार 'आलोचक' के प्रकार हैं— चार
  1. अरोचकी 2. सतृणाभ्यवहारी 3. मत्सरी 4. तत्त्वाभिनिवेशी
- अनेक आचार्यो का व्युत्पत्ति के बारे में मत है—'बहुज्ञताव्युत्पत्तिः'
- 'उचितानुचितविवेकोव्युत्पत्तिः' यह किसके अनुसार है?— राजशेखर के
- 'आनन्दवर्धन' प्रतिभा और व्युत्पत्ति में श्रेष्ठ मानते हैं— प्रतिभा को
- 'मङ्गलाचार्य' प्रतिभा और व्युत्पत्ति में श्रेष्ठ मानते हैं— व्युत्पत्ति को
- प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनों को श्रेष्ठ मानते हैं— राजशेखर
- कवि के प्रकार हैं— तीन
  1. शास्त्रकवि 2. काव्यकवि 3. उभयकवि
- शास्त्र कवि के प्रकार हैं— तीन
- काव्य कवि के प्रकार हैं— आठ
  1. रचना कवि 2. शब्द कवि 3. अर्थकवि 4. अलङ्कार कवि 5. उक्तिकवि 6. रसकवि 7. मार्गकवि 8.शास्त्रार्थकवि
- शब्द कवि के प्रकार हैं— तीन
  1. नाम 2. आख्यात 3. अर्थ
- अलङ्कार कवि के प्रकार हैं— दो
  1. शब्दालङ्कार 2. अर्थालङ्कार
- तीन गुणों से युक्त कवि हैं— कनिष्ठ
- पाँच गुणों से युक्त कवि है— मध्यम कोटि का
- सभी गुणों से युक्त कवि है— उत्तम कोटि का महाकवि
- कवि की अवस्थाएँ हैं— 10

- बुद्धिमान और आहार्यबुद्धि की अवस्थाएँ हैं— 7
- औपदेशिक की अवस्थाएँ हैं— तीन
- पाक के भेद हैं— नौ
- काव्यशास्त्र का नाम साहित्यविद्या रखने वाले व्यक्ति थे— राजशेखर
- 'पञ्चमी साहित्यविद्येति यायावरीयः' यह है— काव्यमीमांसा में
- राजशेखर ने आर्यावर्त को बाँटा है— पाँच भागों में
  1. पूर्वदेश 2. दक्षिणापथ 3. पश्चाद्देश 4. उत्तरापथ 5. मध्यदेश
- काव्यपुरुष द्वारा अष्टादश अधिकरणों वाली काव्यविद्या को शिष्यों को उपदिष्ट करने का वर्णन है— प्रथम अध्याय में
- आठ अधिकरणों पर 18 शिष्यों ने लिखा था— ग्रन्थ
- सहस्राक्ष ने ग्रन्थ लिखा था— कविरहस्य पर
- उक्तिगर्भ ने ग्रन्थ लिखा था— उक्ति पर
- सुवर्णनाम ने ग्रन्थ लिखा था— रीतिनिर्णय पर
- यम ने ग्रन्थ लिखा था— यमक पर
- प्रचेता ने ग्रन्थ लिखा था— अनुप्रास पर
- चित्राङ्गद ने ग्रन्थ लिखा था— चित्रकाव्य पर
- शेष ने ग्रन्थ लिखा था— श्लेष पर
- पुलस्त्य ने ग्रन्थ लिखा था— स्वभावोक्ति पर
- औपकायन ने ग्रन्थ लिखा था— उपमा पर
- पराशर ने ग्रन्थ लिखा था— अतिशयोक्ति पर
- उतथ्य ने ग्रन्थ लिखा था— अर्थश्लेष पर
- कुबेर ने ग्रन्थ लिखा था— उभयालङ्कार पर
- कामदेव ने ग्रन्थ लिखा था— हास्य पर
- भरत ने ग्रन्थ लिखा था— रूपक पर
- नन्दिकेश्वर ने ग्रन्थ लिखा था— रस पर
- धिषण ने ग्रन्थ लिखा था— दोष पर
- उपमन्यु ने ग्रन्थ लिखा था— गुण पर

- कुचमार ने ग्रन्थ लिखा था— औपनिषदिक विषयों पर
- मंत्र ब्राह्मणमयी श्रुति है— अपौरुषेय में
- काव्यमीमांसा के 7वें अध्याय का नाम है— वाक्यविधि
- काव्यमीमांसा के 8वें अध्याय का नाम है— काकु प्रकार
- काव्यमीमांसा के 9वें अध्याय का नाम है— पाठ प्रतिष्ठा
- काव्यमीमांसा के 10वें अध्याय का नाम है— काव्यार्थयोनियाँ
- काव्यमीमांसा के 11वें अध्याय का नाम है— अर्थानुशासन
- काव्यमीमांसा के 12वें अध्याय का नाम है— कविचर्या
- काव्यमीमांसा के 13वें अध्याय का नाम है— राजचर्या
- काव्यमीमांसा के 14वें अध्याय का नाम है— शब्दार्थहरणोपाय
- काव्यमीमांसा के 15वें अध्याय का नाम है— कविविशेष
- काव्यमीमांसा के 16वें अध्याय का नाम है— कविसमय
- काव्यमीमांसा के 17वें अध्याय का नाम है— देशकालविभाग
- काव्यमीमांसा के 18वें अध्याय का नाम है— भुवनकोश
- काव्यमीमांसा के प्रथम अधिकरण का नाम है— कविरहस्य
- काव्य में आवश्यक बताया गया है— शास्त्र को
- काव्यरचना से पूर्व प्रवेश करना चाहिए— शास्त्रों में
- अपौरुषेय शास्त्र है— श्रुति (वेद)
- मंत्र और ब्राह्मणों से बनी है— श्रुति
- क्रियाप्रयोग निर्दिष्ट हैं— मन्त्रों में
- मंत्रों की स्तुति, निन्दा, व्याख्यान तथा विनियोग का वर्णन है— ब्राह्मण ग्रन्थों में
- जहाँ अर्थानुसार पदों की व्यवस्था हो, वे हैं— ऋचाएँ
- छन्दहीन तथा गीति-हीन मंत्र हैं— यजुष्
- आचार्य द्रौहिणि के अनुसार पाँचवां वेद है— नाट्य
- 'वर्णानां स्थानकरणप्रयत्नादिभिः निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा.....' यह है— शिक्षा

- 'नानाशाखाधीतानां मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं कल्पः।' यह है— कल्प
- 'शब्दानामन्वाख्यानं व्याकरणम्।' यह है— व्याकरण
- 'निर्वचनं निरुक्तम्।' यह है— निरुक्त
- 'ग्रहगणितं ज्योतिषम्।' यह है— ज्योतिष
- इतिहास के प्रकार हैं— दो, 1. परक्रिया, 2. पुराकल्प
- एक नायक वाली होती है— परक्रिया
- अनेकों नायकों का वर्णन होता है— पुराकल्प में
- परक्रिया का उदाहरण है— रामायण
- पुराकल्प का उदाहरण है— महाभारत
- 'निगमवाक्यानां न्यायैः सहस्रेण विवेक्त्री मीमांसा।' यह है— मीमांसा
- मीमांसा के प्रकार हैं— दो,
  1. विधि (कर्म की विवेचिका) 2. ब्रह्मनिदर्शिनी (वेदान्त)
- वेदार्थों का स्मरण कराती हैं— स्मृतियाँ
- बृहस्पति के अनुसार विद्याएँ हैं— दो
  1. वार्ता 2. दण्डनीति
- मनु के अनुसार विद्याएँ हैं— तीन
  1. त्रयी 2. वार्ता 3. दण्डनीति
- कौटिल्य के अनुसार विद्याएँ हैं— चार
  1. आन्वीक्षिकी 2. त्रयी 3. वार्ता 4. दण्डनीति
- राजशेखर के अनुसार विद्याएँ हैं— पाँच
  1. आन्वीक्षिकी 2. त्रयी 3. वार्ता 4. दण्डनीति 5. साहित्यविद्या
- आन्वीक्षिकी के प्रकार हैं— दो 1. पूर्वपक्ष 2. उत्तरपक्ष
- पूर्वपक्ष में दर्शन हैं— तीन
  1. जैन 2. बौद्ध 3. लोकायत (चार्वाक)
- उत्तरपक्ष में दर्शन हैं— तीन
  1. सांख्य 2. न्याय 3. वैशेषिक

- 'मध्यस्थयोस्तत्त्वावबोधाय वस्तुतत्त्वपरामर्शो वादः।' यह है— वाद
- 'विजिगीषोः स्वपक्षसिद्धये छलजातिनिग्रहादिपरिग्रहो जल्पः।' यह है— जल्प
- 'स्वपक्षस्यापरिग्रहित्री परपक्षस्य दूषयित्री वितण्डा।' यह है— वितण्डा
- 'सूत्राणां सकलसारविवरणं वृत्तिः।' यह है— वृत्ति
- 'सूत्रवृत्तिविवेचनं पद्धतिः।' यह है— पद्धति
- 'अन्तर्भाष्यम्' यह है— समीक्षा
- 'आक्षिप्य भाषणाद् भाष्यम्।' यह है— भाष्य
- 'यथासम्भवमर्थस्य टीकनं टीका।' यह है— टीका
- 'विषमपदभञ्जिका' यह है— पञ्जिका
- 'अर्थप्रदर्शनकारिका' यह है— कारिका
- 'शास्त्रैकदेशस्य प्रक्रिया प्रकरणम्।' यह है— प्रकरण
- 'शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विद्या' यह है— साहित्यविद्या
- बृहस्पति के गुरु थे— काव्यपुरुष
- सरस्वती ने पुत्र की इच्छा से तपस्या की थी— हिमालय पर
- ब्रह्मा ने किसके लिए पुत्र की रचना की थी?— सरस्वती के लिए
- काव्यपुरुष को उत्पन्न किया था— सरस्वती ने
- काव्यपुरुष ने पैदा होते ही छन्दोमयी भाषा में वंदना की थी— सरस्वती की
- पुत्र से पराजित होना द्वितीय पुत्र जन्म के समान आनन्ददायक है, यह कहा था— सरस्वती ने
- सरस्वती बालक को शिलातल पर लिटाकर गयी थी— आकाश गङ्गा में स्नान करने
- काव्यपुरुष को अपने आश्रम में उठाकर लाये थे— शुक्र (उशना)
- उशना मुनि के लिए छन्दोमयी वाणी को प्रेरित किया था— काव्यपुरुष ने
- 'कवृ वर्णने' धातु से निष्पन्न होता है— कवि शब्द
- 'कवृ वर्णने' धातु का अर्थ है— काव्यकर्म

सरस्वती को भृगु पुत्र शुक्र का आश्रम दिखाया था— वाल्मीकि ने

- सरस्वती ने किसको स्वच्छन्द छन्दोमयी पर्याप्त वाणी प्रदान की थी?— वाल्मीकि को
- काव्यपुरुष का प्रिय मित्र था— कार्तिकेय
- ब्रह्मर्षियों तथा देवताओं में वेद-विषयक विवाद की निर्णायिका ब्रह्मा ने बनाया था— सरस्वती को
- साहित्य-विद्यावधू को उत्पन्न किया था— पार्वती ने
- 'यस्यनिसर्गतः शास्त्रमनुधावति बुद्धिः स' यह है— बुद्धिमान शिष्य
- 'यस्य च शास्त्राभ्यासः संस्कुरुते बुद्धिमसाव' यह है— आहार्यबुद्धि
- 'अतिक्रान्तस्यार्थस्य स्मर्त्री स्मृतिः।' यह है— स्मृति
- 'वर्तमानस्य मन्त्री मतिः।' यह है— मति
- 'अनागतस्य प्रज्ञात्री' यह है— प्रज्ञा
- विगत अर्थ का स्मरण करने वाली बुद्धि है— स्मृति
- वर्तमान का मनन करने वाली बुद्धि है— मति
- भविष्य का प्रज्ञान करने वाली बुद्धि है— प्रज्ञा
- उपदेष्टाओं की जरूरत होती है— आहार्यबुद्धि को
- गुरु-उपासना बुद्धिविकास के लिए हैं— कामधेनु
- बुद्धिमान् शिष्य और आहार्यबुद्धि शिष्य के विपरीत शिष्य को कहते है— दुर्बुद्धि
- कविमार्ग को जानने के लिए जाना चाहिए— गुरुकुल में
- नीले रंग के रंगे वस्त्र के समान बुद्धि होती है— दुर्बुद्धि की
- काव्य-कर्म में कवि की समाधि की परम आवश्यकता पड़ती है यह कथन है— श्यामदेव का
- 'मनस एकाग्रता' यह है— समाधि
- एकाग्र मन देखता है— अर्थ को
- मङ्गल आचार्य के अनुसार काव्यतत्त्व की सिद्धि का चरम उपाय है— अभ्यास
- 'अविच्छेदेन शीलनम्' यह है— अभ्यास

- आभ्यन्तर प्रयत्न है—समाधि
- बाह्य प्रयत्न है—अभ्यास
- शक्ति को ही काव्य का हेतु मानते हैं—राजशेखर
- प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति से भिन्न राजशेखर मानते हैं—शक्ति को
- प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति उत्पन्न होती है—शक्ति द्वारा
- 'कवेरुपकुर्वाणा कारयित्री।' यह है—कारयित्री
- 'जन्मान्तर संस्कारापेक्षिणी सहजा।' यह है—सहजा
- 'जन्मसंस्कारयोनिः आहार्या।' यह है—आहार्या
- 'मन्त्रतन्त्राद्युपदेशप्रभवा औपदेशिकी।' यह है—औपदेशिकी
- 'भावकस्योपकुर्वाणा भावयित्री।' यह है—भावयित्री
- कवि के परिश्रम तथा अभिप्राय का मूल्यांकन करती है—भावयित्री



रसगङ्गाधर

- रसङ्गाधर के रचनाकार हैं—पं. राजजगन्नाथ
- पं. राजजगन्नाथ थे—तैलङ्ग ब्राह्मण
- पं. राजजगन्नाथ के पिता का नाम था—पेरुभट्ट
- पं. राजजगन्नाथ की माता का नाम था—लक्ष्मी
- पं. राजजगन्नाथ का जातीय उपनाम था—वेगिनाडु या वेल्लनाडु
- पं. राजजगन्नाथ ने सभी विषयों की शिक्षा प्राप्त की थी—अपने पिता से
- पं. राजजगन्नाथ को पण्डितराज की उपाधि दी थी—शाहजहाँ ने
- पं. राजजगन्नाथ का समय था—17वीं शताब्दी
- रसगंगाधर पर सबसे प्राचीन टीका है—नागेशभट्ट की
- रसगंगाधर विभक्त है—'आनन' में
- रसगंगाधर में कुल आनन हैं—तीन
- पं. राजजगन्नाथ ने रसगंगाधर में किस राजा का वर्णन किया है?—शाहजहाँ का
- 'भामिनीविलास' के प्रणेता हैं—जगन्नाथ
- 'मनोरमा-कुचमर्दन' के प्रणेता हैं— जगन्नाथ
- भट्टोजि दीक्षित के गुरु भाई थे—जगन्नाथ
- पं.राजजगन्नाथ ने 'प्रौढमनोरमा' पर आलोचनात्मक टीका लिखी थी—मनोरमाकुचर्मदन
- 'स्मृताऽपि तरुणातपं करुणया हरन्ती......' यह है, रसगंगाधर का है—मङ्गलाचरण
- रसगङ्गाधर के मङ्गलाचरण में स्तुति की गयी है—श्रीकृष्ण की
- सर्वप्रथम काव्य का लक्षण मिलता है—अग्निपुराण में (संभावित मत)

- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह काव्य-लक्षण है— जगन्नाथ का
- 'रमणीय' शब्द का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है, यह कहा है— पं. राजजगन्नाथ ने
- पं. राजजगन्नाथ ने सर्वप्रथम किसके काव्य-लक्षण का खण्डन किया था— मम्मट के
- पं. राजजगन्नाथ ने मम्मट के बाद किसके काव्य लक्षण का खण्डन किया था?— विश्वनाथ के
- 'तस्य च कारणं कविगता केवला प्रतिभा' यह कथन है— पं. राजजगन्नाथ का (काव्य हेतु)
- पं. राजजगन्नाथ के अनुसार काव्यभेद हैं— चार
  1. उत्तमोत्तम, 2. उत्तम, 3. मध्यम, 4. अधम।
- 'शब्दार्थौ यत्र गुणीभावितात्मानौ कमप्यर्थमभिव्यङ्क्तस्तदाद्यम्' यह है— उत्तमोत्तम काव्य
- पं. राजजगन्नाथ ने उत्तमोत्तम काव्य को कहा है— ध्वनिकाव्य
- 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा सफलीकर्तुमहो मनोरथान्।
  दयिता दयिताननाम्बुजं दरमीलन्नयना निरीक्षते।।' यह उदाहरण है— उत्तमोत्तम काव्य का
- 'यत्र व्यङ्ग्यमप्रधानमेव सच्चमत्कारकारणं तद्द्वितीयम्' यह है— उत्तमकाव्य
- जिस काव्य में व्यङ्ग्य चमत्कारजनक तो हो परन्तु प्रधान न हो, वह है— उत्तमकाव्य
- 'राघवविरहज्वालासंतापितसह्यशैलशिखरेषु।
  शिशिरे सुखं शयानाः कपयः कुप्यन्ति पवनतनयाय।।' यह उदाहरण है— उत्तमकाव्य का
- 'यत्र व्यङ्ग्यचमत्कारासमानाधिकरणो वाच्यचमत्कारस्तत्तृतीयम्' यह है— मध्यमकाव्य

- जिस काव्य में वाच्य-अर्थ का चमत्कार व्यङ्ग्य अर्थ के चमत्कार के साथ न रहता हो, वह है— मध्यमकाव्य
- 'यत्रार्थचमत्कृत्युपस्कृता शब्दचमत्कृतिः प्रधानं तदधमं चतुर्थम्' यह है— अधमकाव्य
- जिस काव्य में वाच्य अर्थ के चमत्कार से युक्त होकर शब्द का चमत्कार प्रधान हो, वह है— अधमकाव्य
- उत्तमोत्तम (ध्वनि) काव्य के भेद हैं— दो
  1. अभिधामूल ध्वनि 2. लक्षणामूल ध्वनि
- अभिधामूल ध्वनि को कहते हैं— विवक्षितान्यपरवाच्य
- लक्षणामूल ध्वनि को कहते हैं— अविवक्षितवाच्य ध्वनि
- अभिधामूल ध्वनि (विवक्षितान्यपरवाच्य) के भेद हैं— तीन
  1. रस ध्वनि 2. वस्तु ध्वनि 3. अलंकार ध्वनि
- लक्षणामूल ध्वनि (अविवक्षितवाच्यध्वनि) के भेद हैं— दो
  1. अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य 2. अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य
- सबसे अधिक रमणीय होती है— रसध्वनि
- सबसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है— रसध्वनि को
- विभाव के प्रकार हैं— दो 1. आलम्बन 2. उद्दीपन
- अनुभाव के प्रकार हैं— तीन 1. सात्त्विक 2. कायिक 3. मानसिक
- 'काव्यघटनानुकूलशब्दार्थोपस्थितिः' यह है— प्रतिभा (पं. राजजगन्नाथ के अनुसार)
- पं.राजजगन्नाथ ने रस-स्वरूप के विषय में उपस्थित किए हैं— 11 मत
- पं.राजजगन्नाथ रस के भेद मानते हैं— 9
- शृङ्गारः करुणः शान्तो रौद्रो वीरोऽद्भुतस्तथा।
  हास्यो भयानकश्चैव, बीभत्सश्चेति ते नव।। यह है— रसगङ्गाधर में
- रस की इस संख्या में भरतमुनि का वचन है— प्रमाण

- रतिः शोकश्च निर्वेद-क्रोधोत्साहाश्च विस्मयः।
  हासो भयं जुगुप्सा च स्थायिभावाः क्रमादमी।। यह है—रस का स्थायी भाव
- 'स्त्रीपुंसयोरन्योन्यालम्बनः प्रेमाख्यश्चित्तवृत्तिविशेषो रतिः स्थायिभावः।' यह है—रति स्थायी भाव
- 'पुत्रादिवियोगमरणादिजन्मा वैक्लव्याख्यश्चित्तवृत्तविशेषः शोकः।' यह है—शोक स्थायी भाव
- 'नित्यानित्यवस्तुविचारजन्मा विषयविरागाख्यो निर्वेदः।' यह है—निर्वेद स्थायी भाव
- 'गुरुबन्धुवधादिपरमापराधजन्मा प्रज्वलनाख्यः क्रोधः।' यह है—क्रोध स्थायी भाव
- 'परपराक्रमदानादिस्मृतिजन्मा औन्नत्याख्य उत्साहः' यह है—उत्साह स्थायी भाव
- 'अलौकिकवस्तुदर्शनादिजन्मा विकासाख्यो विस्मयः।' यह है—विस्मय स्थायी भाव
- 'वागङ्गादिविकारदर्शनजन्मा विकासाख्यो हासः।' यह है—हास स्थायी भाव
- 'व्याघ्रदर्शनादिजन्मा परमानर्थविषयो वैक्लव्याख्यः स भयम्।' यह है—भय स्थायी भाव
- कदर्यवस्तुविलोकनजन्मा विचिकित्साख्यश्चित्तवृत्तिविशेषो जुगुप्सः' यह है—जुगुप्सा स्थायी भाव
- रदि आदि स्थायी भावों के साथ अनियमित रूप से रहने वाली चित्तवृत्तियों को कहते हैं—व्यभिचारीभाव
- सात्त्विक भाव हैं—आठ
- शृङ्गार रस के भेद हैं—दो 1. संयोग शृङ्गार 2. विप्रलम्भ शृङ्गार
- 'रतेः संयोगकालावच्छिन्नत्वे प्रथमः।' यह है—संयोग शृङ्गार
- 'वियोगकालावच्छिन्नत्वे द्वितीयः।' यह है—विप्रलम्भ शृङ्गार

- मम्मटादि आचार्य विप्रलम्भ शृंगार के भेद मानते हैं—पाँच 1. प्रवास 2. अभिलास 3. विरह 4. ईर्ष्या 5. शाप
- इन पाँचों भेदों को महत्त्वहीन समझते हैं—पं.राजजगन्नाथ
- 'अपहाय सकलाबान्धव-चिन्तामुद्वास्य गुरुकुलप्रणयम्' इसमें रस है—करुण
- वीर रस के भेद हैं—चार 1. दानवीर 2. दयावीर 3. युद्धवीर 4. धर्मवीर
- हास्यरस के भेद हैं—दो 1. आत्मस्थ 2. परस्थ
- हास्य रस किस श्रेणी के व्यक्तियों में उत्पन्न होता है?—उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणी में
- हास्य रस की अवस्थाएँ हैं—तीन
- हास्य रस के भेदोपभेद हैं—6
- श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओज, कांति, समाधि ये गुण हैं—वामनादि के
- विरोध का प्रकार होता है—दो 1. स्थितिविरोध 2. ज्ञानविरोध
- वीर और शृङ्गार में, शृङ्गार और हास्य में, वीर और अद्भुत में परस्पर है—अविरोध
- वीर और रौद्र में, शृङ्गार और अद्भुत में परस्पर हैं—अविरोध
- शृङ्गार और बीभत्स में, शृङ्गार और करुण में परस्पर हैं—विरोध
- वीर और कथानक में, शान्त और रौद्र में, शान्त और शृङ्गार में परस्पर हैं—विरोध
- पं.राजजगन्नाथ ने भावों की संख्या मानी है—33
- 'शृङ्गाराभास' के प्रकार होते हैं—तीन
- मम्मटादि ध्वनिवादी रस के गुण मानते हैं—तीन
- मम्मटादि के अनुसार रस के ही धर्म हैं—गुण



ऐच्छिक-5
पुरालिपि

- मैक्समूलर के अनुसार लेखनकला की भारत में उत्पत्ति कब हुई थी?— 4000 ई.पू.
- प्राचीन भारतीय लिपि है— ब्राह्मी
- ब्राह्मी लिपि लिखने की शैली हैं— बाएँ से दाएँ ओर
- प्राचीन भारत में शिलालेख सम्बन्धी सामग्री के प्रकार हैं— चट्टान, प्रस्तर, स्तम्भ आदि
- शिलालेखों की विषयवस्तु है— धार्मिक शासन, राजकीय आदेश, सन्धिपत्र, दानपत्र
- लेखन हेतु सर्वाधिक प्रयुक्त धातु कौन थी?— दानपत्र
- मौर्यकाल में राजकीय आदेश खोदे गए थे— ताँबे पर
- प्राचीन भारतीय अभिलेखों में प्रयुक्त लिपि है— ब्राह्मी एवं खरोष्ठी
- ब्राह्मी की विदेशी उत्पत्ति के सिद्धान्त के समर्थक दो मत हैं— 1. यूनानी लिपि से उत्पत्ति, 2. सेमेटिक लिपि से उत्पत्ति
- जेम्स प्रिंसेप के अनुसार ब्राह्मी की उत्पत्ति हुई थी-यूनानी लिपि से
- उत्तर सामी लिपि से ब्राह्मी की उत्पत्ति मानने वाले दो विद्वान हैं— वेनर और व्यूलर
- ब्राह्मी की स्वदेशी उत्पत्ति के सिद्धान्त के समर्थक दो मत हैं— द्रविड मूल का तथा आर्य मूल का सिद्धान्त
- कनिंघम के अनुसार ब्राह्मी की उत्पत्ति हुई थी— आर्यमूल से
- ब्राह्मी की दो शैलियाँ हैं— दक्षिण एवं उत्तर भारतीय ब्राह्मी
- प्राचीन अभिलेखों की लिपि पठन का प्रथम प्रयास किया था— सर विलियम जोन्स

- रॉयल एशियाटिक सोसाएटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गयी थी— सर विलियम जोन्स द्वारा
- मध्य राजस्थान, गुजरात एवं मध्य भारत के मध्ययुगीन अभिलेखों के अध्ययन का प्रयास किया था— कर्नलजेन्स टॉड
- दक्षिण भारतीय अभिलेखों के आधार पर परवर्ती ब्राह्मी को पढ़ने का प्रयास किया था— नैविग्टन द्वारा (1828 में)
- समुद्रगुप्त के 'प्रयाग प्रशस्ति' और स्कन्दगुप्त के भिटारी स्तम्भ को पढ़ने का प्रयास किया था— कप्तान ट्रायर
- गुप्तकालीन अक्षरों की सूची तैयार की थी— जेम्स प्रिंसेप ने
- अशोक कालीन ब्राह्मी के पठन में मुख्य भूमिका थी— जेम्स प्रिंसेप की
- प्रिंसेप के अनुसार अशोक एवं गुप्तकालीन ब्राह्मी में किसकी समानता है— मात्राओं के सिद्धान्त की
- अशोक-कालीन ब्राह्मी के पठन में प्रिंसेप को सफलता मिली थी— 1837 में
- ब्राह्मी लिपि का अर्थ उद्घाटन किया था-जेम्स प्रिंसेप ने



मौर्य एवं मौर्योत्तरकालीन अभिलेख

- ➢ अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम पढ़ा था– जेम्स प्रिंसेप ने (1837 ई.)
- ➢ अशोक का व्यक्तिगत नाम कहाँ प्राप्त होता है?– मास्की, गुर्जरा अभिलेख में
- ➢ कलिङ्ग युद्ध का उल्लेख कहाँ है– 13वें शिलालेख में (अशोक के)
- ➢ अशोक के अभिलेख सम्बन्धित हैं– धर्म से
- ➢ 'राजुक' नामक अधिकारी का उल्लेख हुआ है– अशोक के अभिलेखों में
- ➢ अशोक के अभिलेखों की भाषा है– प्राकृत
- ➢ अशोके के अभिलेखों की लिपि है– ब्राह्मी
- ➢ अशोक के प्रथम शिलालेख की विषयवस्तु क्या थी?– पशु बलि की निंदा
- ➢ 'धम्म महाकाल' नामक अधिकारी का उल्लेख है– पञ्चम शिलालेख में
- ➢ अभिलेखों में अशोक का नाम है– देवानां प्रिय
- ➢ 'धम्म' शब्द सम्बन्धित है– प्राकृत भाषा से
- ➢ अशोक ने सभी सम्प्रदायों की सार वृद्धि पर बल दिया था– 12वें शिलालेख में
- ➢ चोल, पांड्य, केरल पुत्र और सतियपुत्र का उल्लेख है– द्वितीय शिलालेख में

- ➢ 'युक्त' 'राजुक' एवं 'प्रादेशिक' का उल्लेख है– तृतीय शिलालेख में
- ➢ 'धम्म महापात्र' का कार्य था– धम्म का प्रचार करना तथा जनता की समस्या सुलझाना
- ➢ अशोक के स्तम्भ लेख मिले हैं– केवल ब्राह्मी में
- ➢ अशोक का विदेशी राज्यों के साथ सम्बन्ध का उल्लेख है– 13वें शिलालेख में
- ➢ 'धम्म' प्रचार का क्या उद्देश्य था?– प्रजा का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास
- ➢ 'रुम्मिनदेई' अभिलेख सम्बन्धित है– अशोक से
- ➢ अशोक द्वारा नहर व्यवस्था करने का उल्लेख कहाँ है?– रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख में
- ➢ अशोक के अपने शासनकाल के 20वें वर्ष लुम्बिनी यात्रा का वर्णन है– रुम्मिनदेई स्तम्भलेख से
- ➢ अशोक के चौदह अभिलेख कहाँ पाए जाते हैं?– गिरनार में
- ➢ चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक, दोनों का नामोल्लेख मिलता है– रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में
- ➢ 'धम्ममहापात्र' थे– अधिकारी
- ➢ 'धम्मघोष' की नीति थी– अशोक की
- ➢ 'रुम्मिनदेई' स्तम्भ किसके शासन काल का है?– अशोक के
- ➢ किस शासक ने अपने को प्रिय कहलवाया है?– अशोक ने
- ➢ आधुनिक देवनागरी लिपि का प्राचीन रूप है– ब्राह्मी
- ➢ अशोक का उसके शिलालेखों में सामान्यतः किस नाम से उल्लेख हुआ है?– प्रियदर्शी
- ➢ किस अधिकारी को महिलाओं की देख-रेख का कार्य सौंपा गया था?– इ्रतिझक महापात्र (स्त्री-अध्यक्ष महापात्र)

- अशोक के किस शिलालेख में कराधान का विशेष उल्लेख है?— रुम्मिनदेई में
- अशोक के 'टोप्रा स्तम्भ' को कौन लाया था?— फिरोजशाह तुगलक ने
- सबसे पहले किस राजा का अभिलेख पढ़ा गया था?— अशोक का
- सबसे पहले अशोक का अभिलेख कब पढ़ा गया था?— 1837 में
- संस्कृत भाषा में लिखित प्रथम अभिलेख था— रुद्रदामन (शकशासक) का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई.)
- रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख में वर्णित झील है—सुदर्शन झील
- खारवेल के 'हाथीगुम्फा' अभिलेख में वर्णित उसका (अशोक का) धर्म है—जैनधर्म



गुप्त एवं गुप्तोत्तर अभिलेख

- मथुरा स्तम्भलेख की समकालिकता किसके साथ है?— चन्द्रगुप्त प्रथम के साथ
- मथुरा स्तम्भलेख के अनुसार उस समय मथुरा में प्रचलित सम्प्रदाय था— पाशुपत धर्म का लकुलिश सम्प्रदाय
- मथुरा स्तम्भलेख में उल्लिखित शिवलिङ्गों के नाम हैं— कपिलेश्वर एवं उदमितेश्वर
- दामोदर ताम्रपत्र अभिलेख का सम्बन्ध है— कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल से
- दामोदर ताम्रपत्र के अनुसार बंगाल का नाम था— पुण्ट्रवर्धन
- कालिदास एवं भारवि का उल्लेख है— पुलकेशिन द्वितीय की एहोल प्रशस्ति में
- दक्षिण भारत के बादामी के चालुक्यवंश से किस प्रशस्ति का सम्बन्ध है?— एहोल प्रशस्ति का
- 'प्रयाग प्रशस्ति' का रचनाकार है— हरिषेण
- 'एहोल प्रशस्ति' का रचनाकार है— रविकीर्ति
- 'मंदसौर' अभिलेख का रचनाकार है— वत्सभट्टी
- 'प्रयाग प्रशस्ति' में 'लिच्छवि दैहिल' विशेषण का प्रयोग किसके लिए किया गया है?— समुद्रगुप्त
- 'प्रयाग प्रशस्ति' का सम्बन्ध है— समुद्रगुप्त से
- 'प्रयाग प्रशस्ति' में समुद्रगुप्त की पत्नी का नाम है— दत्तदेवी
- 'प्रयाग प्रशस्ति' में 'कविराज' विशेषण का प्रयोग किसके लिए किया गया है?— समुद्रगुप्त
- मन्दसौर अभिलेख में उल्लेख है— पट्टवाय श्रेणी का

- 'श्रेणी' से आशय है— समिति का
- प्रयाग प्रशस्ति में दक्षिण भारत विजय के सम्बन्ध में समुद्रगुप्त की नीति थी— ग्रहणमोक्षानुग्रह
- 'भिटारी' अभिलेख में किस विदेशी के आक्रान्ताओं का उल्लेख है?— हूण का
- 'भिटारी' अभिलेख का सम्बन्ध है— स्कन्दगुप्त से
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार मिहिर कुल उपासक था— शिवजी का
- ग्वालियर अभिलेख में उल्लिखित राजा मिहिरकुल का वंश है— हूण
- राजा चन्द्र की विजयों का उल्लेख है— महरौली स्तम्भ लेख में
- एरण वराहमूर्ति अभिलेख संबन्धित है— तोरमाण से
- कुमारगुप्त कालीन मन्दसौर अभिलेख सम्बन्धित है— पट्टवाय श्रेणी से
- स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्रपत्र सम्बन्धि है— तैलिक श्रेणी से
- राजा चन्द्र की वाह्लीक और बंगाल विजय का उल्लेख है— महरौली स्तम्भ लेख में
- प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त द्वारा पराजित आर्यावर्त शासकों की संख्या है— 9
- प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त द्वारा पराजित दक्षिणापथ शासकों की संख्या है— 12
- स्कन्दगुप्त के गिरनार अभिलेख के अनुसार 'सुदर्शन' झील का जीर्णोद्धार किसने करवाया था? चक्रपालित ने
- स्कन्दगुप्त के इन्दौर लेख के अनुसार सूर्य पूजा हेतु धन दान दिया था— तैलिकों की श्रेणी ने
- गुप्त अभिलेखों में 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण करने वाला पहला शासक था— चन्द्रगुप्त प्रथम
- 'भिटारी' अभिलेख में स्कन्दगुप्त के युद्धों का किसके साथ वर्णन है?— पुष्यमित्र एवं हूणों के
- स्कन्दगुप्त के गिरनार अभिलेख का आरम्भ किसकी स्तुति से हुआ है?— भगवान विष्णु की
- गुप्त अभिलेखों में वर्णित 'उद्रंग' है— भूमिकर
- प्रयाग प्रशस्ति में उल्लिखित प्रथम गुप्तशासक था— श्रीगुप्त
- हर्ष द्वारा धार्मिक उद्देश्य से दिए गए भूमिदान का वर्णन करने वाला अभिलेख है— बांसखेड़ा
- हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के मध्य हुए युद्ध का वर्णन करने वाला अभिलेख है— ऐहोल
- गुजरात के मेनक राजवंश का परिचय देने वाला अभिलेख है— धरसेन द्वितीय कामालिया ताम्रपट
- यशोधर्मा (विष्णुवर्धन) कालीन मन्दसौर कूप अभिलेख में उल्लिखित उसका वंश है— औलिकर
- यशोधर्मा और मिहिरकुल के मध्य हुए युद्ध का वर्णन करने वाला अभिलेख है— यशोधर्मा का मन्दसौर स्तम्भ अभिलेख
- ईशानवर्म्मा के हड़ाहा अभिलेख में वर्णित राजवंश हैं— मौखरि
- हड़ाहा अभिलेख का रचनाकार है— रविशान्ति
- बोधगया में बौद्ध मन्दिर निर्माण की सूचना देने वाला अभिलेख है— महानामा का बोधगया अभिलेख
- चालुक्य राजवंश का परिचय देने वाला अभिलेख है— पुलकेशिन का ऐहोल अभिलेख
- गुप्तोत्तर कालीन प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन करने वाला अभिलेख है— देवनरर्णाक अभिलेख (जीवितगुप्त द्वितीय)

✦✦✦

परिशिष्ट

काव्य-शास्त्रीय ग्रन्थ

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अनुमानित समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई.लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
13. ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
14. 'काव्यकौतुकविवरण' ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
15. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
16. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
17. 1. सरस्वतीकण्ठाभरण 2. शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	एकादश शताब्दी 1050ई.लगभग
18. औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध
19. कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
20. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
21. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050ई.(11वीं शता. का उत्तरार्द्ध)
22. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादश शताब्दी
23. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
24. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
25. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र-गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
26. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
27. चन्द्रालोक	जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
28. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
29. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
30. कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडश शताब्दी
31. चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
32. वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
33. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग
34. मनोरमकुचमर्दिनी	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग
35. भामिनी विलास	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

✦✦✦

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख महाकाव्य

महाकाव्य	सर्ग	लेखक
1. कुमारसम्भवम्	17	कालिदास
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	20	भारवि
6. शिशुपालवधम्	22	माघ
7. नैषधीयचरितम्	20	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिशचन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग	कविराज (माधवभट्ट)

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ

7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. अभिराजसहस्रकम्	डॉ.अभिराज राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
18. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
19. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
20. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
21. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
22. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
23. अभिराजयशोभूषणम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास

9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. अभिषेकनाटकम्	6	भास
11. प्रतिमानाटकम	7	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव
29. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
30. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
31. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
32. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
33. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
34. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्णमिश्र
35. रघुवंश	5	जानकीदास
36. कुमारसंभव	5	जानकीदास



कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
रामाभ्युदय	यशोवर्मा
महानाटक	हनुमान्
हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
त्रिपुरदाह	वत्सराज
समुद्रमन्थन	वत्सराज
सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी (कथा)	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. मुकुटताडितक	बाणभट्ट
7. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
8. शिवराजविजयम् (उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
9. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
10. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव

11. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
13. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ.रामशरणत्रिपाठी
14. तिलकमञ्जरी	धनपाल
15. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
16. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्टबाण
17. द्वासुपर्णा	डॉ.रामजी उपाध्याय
18. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
19. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ

15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
19. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
20. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
21. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
22. नीतिसार	घटकर्पर
23. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
24. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
25. भल्लटशतकम्	भल्लट
26. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
27. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
28. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
29. बल्लालशतकम्	बल्लाल
30. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
31. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
32. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
33. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
34. दर्पपलन	क्षेमेन्द्र
35. पवनदूत	धोयी
36. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
37. शुकसन्देश	त्रिवेणी (स्त्रीकवि)
38. भृङ्गसन्देश	त्रिवेणी
39 हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
40. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

+++

संस्कृतकवियों के माता-पिता

कवि	पिता-माता	अन्य
1. पाणिनि	पणिन्-दाक्षी	
2. कात्यायन (वररुचि)	—	पितामह-याज्ञवल्क्य
3. पतञ्जलि	गोविका (माता)	
4. बाणभट्ट	चित्रभानु-राजदेवी	पितामह-अर्थपति
5. भवभूति	नीलकण्ठ-जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह-भट्टगोपाल)
6. भारवि	(नारायणस्वामी) सुशीला	
7. माघ	दत्तक (श्रीधर) (सर्वाश्रय)	(पितामह-सुप्रभदेव)
8. श्रीहर्ष	श्रीहीर-मामल्लदेवी	
9. विशाखदत्त	पृथु (भास्कर दत्त)	(पितामह-वटेश्वरदत्त)
10. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन-यशोवती	(बड़े-भाइ-राज्यवर्धन, बहन-राज्यश्री)
11. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	अकालजलद (पितामह)
12. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	
13. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव-रामादेवी (राधादेवी)	
14. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट-लक्ष्मीदेवी	
15. कल्हण	चम्पक	
16. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-श्रीधर
17. मम्मट	जैयट	भाई-कैय्यट (उव्वट)
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
21. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	
22. वरदराज	दुर्गातनय	
23. रत्नाकर	अमृतभानु	
24. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव-सुमित्रा	
25. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
26. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
27. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त-गौरी	प्रपितमाह-भारवि
28. वेदव्यास	पराशर-सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1. वाल्मीकि	आदिकवि
2. कृष्णद्वैपायन	व्यास या वेदव्यास
3. कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4. अम्बिकादत्तव्यास	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5. बाणभट्ट	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्

संस्कृतकवियों के माता-पिता

कवि	पिता-माता	अन्य
1. पाणिनि	पणिन्-दाक्षी	
2. कात्यायन (वररुचि)	—	पितामह-याज्ञवल्क्य
3. पतञ्जलि	गोविका (माता)	
4. बाणभट्ट	चित्रभानु-राजदेवी	पितामह-अर्थपति
5. भवभूति	नीलकण्ठ-जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह-भट्टगोपाल)
6. भारवि	(नारायणस्वामी) सुशीला	
7. माघ	दत्तक (श्रीधर) (सर्वाश्रय)	(पितामह-सुप्रभदेव)
8. श्रीहर्ष	श्रीहीर-मामल्लदेवी	
9. विशाखदत्त	पृथु (भास्कर दत्त)	(पितामह-वटेश्वरदत्त)
10. हर्षवर्धन	प्रभाकरवर्धन-यशोवती	(बड़े-भाइ-राज्यवर्धन, बहन-राज्यश्री)
11. राजशेखर	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	अकालजलद (पितामह)
12. अम्बिकादत्तव्यास	दुर्गादत्त	
13. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	भोजदेव-रामादेवी (राधादेवी)	
14. पण्डितराजजगन्नाथ	पेरुभट्ट-लक्ष्मीदेवी	
15. कल्हण	चम्पक	
16. त्रिविक्रमभट्ट	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-श्रीधर
17. मम्मट	जैयट	भाई-कैय्यट (उव्वट)
17. विश्वनाथ	चन्द्रशेखर	
18. भर्तृहरि	गन्धर्वसेन	
19. अश्वघोष	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. मुरारि	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
21. भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर	
22. वरदराज	दुर्गातनय	
23. रत्नाकर	अमृतभानु	
24. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव-सुमित्रा	
25. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
26. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
27. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त-गौरी	प्रपितमाह-भारवि
28. वेदव्यास	पराशर-सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं. कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1. वाल्मीकि	आदिकवि
2. कृष्णद्वैपायन	व्यास या वेदव्यास
3. कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4. अम्बिकादत्तव्यास	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5. बाणभट्ट	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्

	(xi) बाण: कवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्ग
6. जयदेव (प्रसन्नाराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7. मल्लिनाथ	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8. त्रिविक्रमभट्ट	यमुनात्रिविक्रम
9. विश्वनाथ	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज
10. जगन्नाथ	पण्डितराज
11. भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम)
12. माघ घण्टामाघ	
13. भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छन: (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14. भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (ii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15. मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16. आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य
17. कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18. महिमभट्ट	'राजानक'
19. रुय्यक	'राजानक'
20. क्षेमेन्द्र	जनकवि
21. भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हास: (iii) अग्निमित्र
22. अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23. मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि
24. बिल्हण	विद्यापति
25. हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26. अभिनवगुप्त	लोचनकार

27. कणाद	उलूक
28. कात्यायन	वररुचि
29. गौतम	अक्षपाद
30. दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31. भट्टि महाकवि	
32. मातृचेट	बौद्धकवि
33. यामुनाचार्य	आलवन्दार
34. राजशेखर	यायावर
35. वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36. वात्स्यायन	मल्लनाग
37. विद्यापति	मैथिलकोकिल
38. विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य
39. क्षमाराव	पण्डिता
40. पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्
41. प्रभाकर मिश्र	गुरु
42. माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43. हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष
44. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज



कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक-'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिका दत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का पुरा (अध्ययन-काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम-पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर



संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1.	बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन
2.	भवभूति	काश्यप
3.	भारवि	कुशिक
4.	कालिदास	ब्राह्मण जाति
5.	अम्बिकात्तव्यास	पराशरगोत्री यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश
6.	विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र
7.	मुरारि	मौद्गल्यगोत्र
8.	भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण
9.	राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश
10.	पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण
11.	विश्वामित्र	कौशिक
12.	दुष्यन्त	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
13.	राम	सूर्यवंश/इश्वाकुवंश/रघुवंश
14.	दुर्योधन	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
15.	शिवाजी	मराठा वंश
16.	कुतुबुद्दीन	गुलामवंश
17.	औरङ्गजेब	मुगलवंश
18.	सिंहविष्णु	पल्लववंश
19.	नरसिंहवर्मन्	पल्लववंश
20.	विष्णुवर्धन	चालुक्यवंश
21.	दुर्विनीत	गङ्गवंश
22.	यशोवर्मा	चन्देलवंश



कवियों का सम्प्रदाय

कवि सम्प्रदाय	
1. कालिदास	शैव
2. भवभूति	शैव
3. भारवि	शैव
4. माघ	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव,ब्रह्म के उपासक
6. बाणभट्ट	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)
8. कल्हण	शैव
9. अभिनवगुप्त	शैव
10. भट्टनारायण	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
11. रूपगोस्वामी	वैष्णव
12. विश्वनाथकविराज	वैष्णव
13. राजशेखर	शैव
14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	वैष्णव



संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र



'संस्कृतवाङ्मयम्'

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	वेदाङ्गज्योतिष	1400ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	निरुक्त	800ई.पू.
3. आचार्य पिङ्गल	छन्दःसूत्रम्	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	सांख्यसूत्र	700 ई.पू.
5. जैमिनि	मीमांसासूत्र	600 ई.पू.
6. कणाद	वैशेषिकसूत्र	500 ई.पू.
7. चरक	चरकसंहिता	500 ई.पू.
8. सुश्रुत	सुश्रुतसंहिता	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	वाल्मीकीयरामायणम्	500 ई.पू.
10. पाणिनि	अष्टाध्यायी	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	महाभारत एवं 18 पुराण	400 ई.पू.
12. कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	400 ई.पू.
13. बादरायण	ब्रह्मसूत्र	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	अष्टाध्यायी पर वार्तिक	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	महाभाष्य,योगसूत्र	185 ई.पू.
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.पू.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई.पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरनन्द	प्रथम शताब्दी
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथम शताब्दी
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीय शताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीय शताब्दी ई.
25. शबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीय शताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी के छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी-चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.

33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई.(560ई.-615ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास
48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी
52. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवीं शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	हरविजयम्	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
57. जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	तिलकमञ्जरी	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
62. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
63. क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी	ग्यारहवीं शताब्दी
64. कृष्णमित्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी
65. सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी
66. रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी



संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

1.	शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)
2.	तारापीड	उज्जयिनी
3.	दुष्यन्त	हस्तिनापुर
4.	राम	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5.	रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)
6.	नल	निषधदेश
7.	कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)
8.	शिवाजी	सतारा/रायगढ़
9.	दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर
10.	युधिष्ठिर	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11.	पुरु	हस्तिनापुर
12.	प्रद्योत	उज्जयिनी
13.	कुबेर	अलकापुरी
14.	उदयन	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15.	भर्तृहरि	धारानगरी
16.	विक्रमादित्य	उज्जयिनी
17.	दुर्विनीत	कोंकण
18.	राजाभोज	धारानगरी
19.	हर्षवर्धन	थाणेश्वर
20.	जयचन्द्र	कन्नौज
21.	पृथ्वीराज	दिल्ली
22.	महमूदगजनबी	गजनी
23.	मुहम्मद गोरी	गोरदेश
24.	औरङ्गजेब	दिल्ली



संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

1.	कण्व आश्रम	मालिनी नदी
2.	विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी
3.	वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी
4.	भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट
5.	अगस्त्य आश्रम	गोदावरी / दण्डकवन
6.	मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत
7.	यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)
8.	जाबालि आश्रम	पम्पासरोवर
9.	महाश्वेता आश्रम	अच्छोदसरोवर
10.	विदिशा	वेत्रवती (बेतवा)
11.	उज्जयिनी	क्षिप्रा नदी
12.	शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)	गङ्गा नदी
13.	अयोध्या	सरयू नदी
14.	हरिद्वार (कनखल)	गङ्गा नदी



संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्
2. शिशुपालवधम्	श्रयङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्
4. नलचम्पू	दमयन्तीकथा
5. अष्टाध्यायी	अष्टक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल=115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में- 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में- 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030(कुछ विद्वानों के अनुसार-1040) प्रथम सर्ग में-46
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गरशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग 111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकि रामाणम	लगभग 24000, (7 काण्ड 500 सर्ग)
10. महाभारतम्	लगभग- एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में-75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में-145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग 380 (दश अङ्क)
14. श्रीमद्भगवद्गीता	लगभग 700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)भट्टि	लगभग 1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग



संस्कृतवाङ्मय की त्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदास
2. कुमारसम्भवम्	कालिदास
3. मेघदूतम्	कालिदास

3. गद्यबृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. सुबन्धु	वासवदत्ता
2. बाणभट्ट	कादम्बरी
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्

4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2. महाभारतम्	वेदव्यासः
3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी	6. पाषाणत्रयी	7. गुणत्रयी
1. धर्म 2. अर्थ 3. काम	1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग 2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग 3. किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग	1. सत्त्वगुण 2. रजोगुण 3. तमोगुण

8. मुनित्रयी

मुनिः	व्याकरणग्रन्थः	साहित्यिकग्रन्थः
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्

9. प्रस्थानत्रयी	10 वेदत्रयी
1. ब्रह्मसूत्र 2. उपनिषद् 3. गीता	1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद



काव्यशास्त्रम्

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	भरत (प्रवर्तक) भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमित्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	भामह (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	वामन (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	आनन्दवर्धन (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	कुन्तक (प्रवर्तक)
6. औचित्य सम्प्रदाय	क्षेमेन्द्र (प्रवर्तक)

काव्यलक्षण-तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि (का.प्र.प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	भामह	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यलङ्कारसूत्र	वामन	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	दण्डी	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	व्यास	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गरप्रकाश	भोज	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र-भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार + 08 अर्थालङ्कार + 06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार
4. काव्यालङ्कार-भामह	38 अलङ्कार
5. काव्यादर्श-दण्डी	37 अलङ्कार
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह-उद्भट	41 अलङ्कार
7. काव्यालङ्कार-रूद्रट	68 अलङ्कार
8. सरस्वतीकण्ठाभरण-भोजराज	24 शब्दालङ्कार 24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश-मम्मट	06 शब्दालङ्कार + 61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार
10. अलङ्कारसर्वस्व-रुय्यक	78 अलङ्कार
11. साहित्यदर्पण-विश्वनाथ	78 अलङ्कार
12. चन्द्रालोक-जयदेव	100 अलङ्कार
13. कुवलयानन्द-अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार

❖❖❖



अन्य प्रमुख

कामदेव के पाँच बाण

अरविन्दम् अशोक
चूतम् नवमल्लिका नीलोत्पलम्

छः रस

मधुरः आम्लः
लवणः कटुः
कषायः तिक्तः

ब्राह्मण के छः कर्म

अध्ययनम् अध्यापनम्
यजनम् याजनम्
दानम् प्रतिग्रहः

छः शत्रु

कामः क्रोधः
लोभः मोहः
मदः मात्सर्यम्

छः ऋतुएँ

वसन्त ग्रीष्म
वर्षा शरद्
हेमन्त शिशिर

वेद के छः अंग (वेदाङ्ग)

शिक्षा कल्प
निरुक्त् छन्द
व्याकरणम ज्योतिषम

षट्चक्रम्

मूलाधारचक्रम् अधिष्ठानचक्रम्
मणिपूरचक्रम् अनाहतचक्रम्
विशुद्धचक्रम् आज्ञाचक्रम्

षड्दर्शनम्

सांख्यदर्शनम् योगदर्शनम्
न्यायदर्शनम् वैशेषिकदर्शनम्
मीमांसादर्शनम् वेदान्तदर्शनम्

सप्त-'ऊर्ध्वलोका:'

भूलोकः भुवर्लोकः
स्वर्लोकः महर्लोकः
जनलोकः तपोलोकः सत्यलोकः

सप्त-'अधोलोका:'

अतललोकः वितललोकः
सुतललोकः रसातललोकः
तलातललोकः महातललोकः पाताललोकः

सप्तपर्वताः

महेन्द्रपर्वतः मलयपर्वतः
सह्यपर्वतः हिमालयपर्वतः
रैवतकपर्वतः विध्यपर्वतः अरावलिपर्वतः

सप्त-समुद्राः

क्षारसमुद्रः क्षीरसमुद्रः
दधिसमुद्रः मधुसमुद्रः
सुरासमुद्रः इक्षुसमुद्रः शुद्धोदकसमुद्रः

सप्तर्षयः

कश्यपः अत्रिः
भारद्वाजः गौतमः
विश्वामित्रः जमदग्निः वसिष्ठ

सप्तकल्पाः

पार्थिकल्पः कौर्मकल्पः
अनन्तकल्पः नृसिंहकल्पः
प्रियाकलपः श्वेतवराहकल्पः अमरकल्पः

रामायणे-सप्तकाण्डानि

बालकाण्डः अयोध्याकाण्डः
अरण्यकाण्डः किष्किन्धाकाण्डः

सुन्दरकाण्डः युद्धकाण्डः उत्तरकाण्डः

योगाभ्यासे 'अष्टाङ्गम्'

यम	नियम
आसनम	प्राणायाम
प्रत्याहार	धारणा
ध्यान	समाधि

अष्टान्नानि

भोज्यम्	पेयम्
चोष्यम्	लेह्यम्
खाद्यम्	चर्व्यम्
निपेयम्	भक्ष्यम्

अष्टौ देहाः

स्थूलम्	सूक्ष्मम्
कारणम्	महाकारणम्
विराट्	हिरण्यम्
अव्याकृतम्	मूलप्रकृतिः

अष्टौनागाः

अनन्तः	वासुकिः
तक्षकः	कर्कोटकः
शंखः	कुलिकः
पद्मः	महापद्मः

अष्ट दिग्गजाः

ऐरावतः	पुण्डरीकः
वामनः	कुमुदः
अञ्जनः	पुष्पदत्तः
सार्वभौमः	सुप्रतीकः

अष्टमहासिद्धयः

अणिमा	महिमा
लघिमा	गरिमा
प्राप्ति	प्राकाम्य
ईशिता	वशिता

अष्ट-दिक्पालाः

इन्द्रः	वह्निः
यमः	नैऋतः
वरुणः	वायुः
कुबेरः	ईशः

साष्टाङ्गनमस्कारः

पद्भ्याम्	ज्ञानभ्याम्
पाणिभ्याम्	उरसा
धिया	शिरसा
वचसा	दृष्ट्या

अष्टमातृकाः

ब्राह्मी	माहेश्वरी
कौमारी	वैष्णवी
वाराही	इन्द्राणी
कौवेरी	चामुण्डा

नवग्रहाः

सूर्यः	चन्द्रः	
मंगलः	बुधः	
बृहस्पतिः	शुक्रः	
शनैश्चरः	राहुः	केतुः

नवरत्नानि

मुक्ता	माणिक्यम्	
वैदूर्यम्	गोमेदा	
वज्रः	विद्रुम	
पद्मरागः	मरकतं	नीलम्

विक्रमस्य 'नव' सभारत्नानि

धन्वंतरि	क्षपणकः	
अमरसिंहः	शंकुः	
वेतालभट्टः	घटकर्परः	
कालिदासः	वराहमिहिरः	वररुचिः

नवविधा-भक्तिः

श्रवणम्	कीर्तनम्	
स्मरणम्	पादसेवनम्	
अर्चनम्	वन्दनम्	
दास्यम्	सख्यम्	आत्मनिवेदनम्

नवरसाः

शृङ्गारः	हास्यः	
करुणः	रौद्रः	
वीरः	भयानकः	
बीभत्सः	अद्भुतः	शान्तः

दशावताराः

मत्स्यावतारः	कूर्मावतारः
वराहावतारः	नरसिंहावतारः
वामनावतारः	परशुरामावतारः
रामावतारः	कृष्णावतारः
बुद्धावतारः	कल्क्यवतारः

दश-दिशः

पूर्वादिक्	पश्चिमदिक्
उत्तरदिक्	दक्षिणदिक्
आग्नेयदिक्	नैर्ऋतिदिक्
वायव्यदिक्	ईशानदिक्
ऊर्ध्वम्	अधः

दशोपनिषदः

ईशोपनिषद्	केनोपनिषद्
कठोपनिषद्	प्रश्नोपनिषद्
मुण्डकोपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
तैत्तिरीयोपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्

दश-कामावस्थाः

अभिलाषावस्था	चिन्तावस्था
मृत्युवस्था	गुणकीर्तनावस्था
उद्वेगावस्था	प्रलोपावस्था

उन्मादावस्था	व्याध्यवस्था
जडतावस्था	मरणावस्था

एकादश रुद्राः

महादेवः	शिवः	
रुद्रः	शङ्करः	
नीललोहितः	ईशानः	
विजयः	भीमः	
देवदेवः	भवोद्भवः	आदित्यः

द्वादशकम्

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सोमनाथः	मल्लिकार्जुनः
महाकालः	ओंकारेश्वरः
केदारनाथः	भीमशङ्करः
विश्वनाथः	त्र्यम्बकेश्वरः
वैद्यनाथः	नागेश्वरः
रामेश्वरः	घुश्मेश्वरः

द्वादश आदित्याः

मित्रः	रविः
सूर्यः	भानुः
खगः	पूषा
हिरण्यगर्भः	मरीचिः
आदित्यः	सविता
अर्कः	भास्करः

द्वादश मासाः

चैत्रमासः	वैशाखमासः
ज्येष्ठमासः	आषाढमासः
श्रावणमासः	भाद्रमासः
आश्वयुजमासः	कार्तिकमासः
मार्गशीर्षमासः	पुष्यमासः
माघमासः	फाल्गुनमासः



संवाद-सूक्त

(Dialogue – Hymns)

पुरुरवा-उर्वशी (ऋक्. 10/95)

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन् परतरे चनाहन्।। 1।।

किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वातइवाहमस्मि।। 2।।

इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ।। 3।।

सा वसु दधती श्वसुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात्।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं श्नथिता वैतसेन ।। 4।।

त्रिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि।
पुरुरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्व स्तदासीः।। 5।।

या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिह्रदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः।
ता अञ्जयोऽरुणयो न सस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त।। 6।।

समस्मिञ्जायमान आसत ग्ना उतेमवर्धन्नद्यः स्वगूर्ताः।
महे यत्त्वा पुरुरवो रणायावर्धयन् दस्युहत्याय देवाः।। 7।।

सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः।। 8।।

यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः।। 9।।

विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्भरन्ती मे अप्या काम्यानि।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशीं तिरत दीर्घमायुः।। 10।।

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः।
आशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आश्रृणोः किमभुग्वदासि।। 11।।

कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्।। 12।।

प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्वे शिवायै।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः।। 13।।

सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ।
अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः।। 14।।

पुरुरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उक्षन्।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता।। 15।।

यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्ना तादेवेदं तातृपाणा चरामि।। 16।।

अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वशिष्ठः।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे।। 17।।

इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः।
प्रजा ते देवान् हविषा यजाति स्वर्ग उत्वमपि मादयासे।। 18।।



यम–यमी (ऋग्वेद10/10)

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यमानः।। 1।।

न ते सखा वष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद्विपुरुषा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन्।। 2।।
उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः।। 3।।

न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ।। 4।।

गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथ्वी उत द्यौः।। 5।।

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्रवोचत्।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आह्नो वीच्या नृन्।। 6।।

यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद्वृहेव रथ्येव चक्रा।। 7।।

न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा।। 8।।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्यचक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि।। 9।।

आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्।। 10।।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता वह्वेतद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि।। 11।।

न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत्।। 12।।

बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम।
अन्या किल त्वा कक्ष्येव युक्तं परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।। 13।।

अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाऽधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम्।। 14।।



सरमा-पणि (ऋग्वेद.10/108)

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड्, दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि।। 1।।

इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि, मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।
अतिष्कदो भियसा तन्न आव तथा रसाया अतरं पयांसि।। 2।।

की दृङिन्द्रः सरमे का दृशीका, यस्येदं दूतीरसरः पराकात्।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधा, माथा गवां गोपतिर्नो भवाति।। 3।।

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स, यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा, हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे।। 4।।

इमा गावः सरमे या ऐच्छः, परिदिवो अन्तान्सुभगे पतन्ती।
कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा।। 5।।

असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तनवः सन्तु पापीः।
अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था, बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्।। 6।।

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो, गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा, रेकु पदमलकमा जगन्थ।। 7।।

एह गमन्नृषयः सोमशिता, अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोना, मथैतद्वचः पणयो वमन्नित्।। 8।।

एवा च त्वं सरम आजगन्थ, प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम्।। 9।।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः।। 10।।

दूरमित पणयो वरीय उद्, गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळ्हाः, सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः।।11।।

विश्वामित्र-नदी (ऋग्वेद 3/33)

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे, विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते।। 1।।

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे, अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
सामाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने, अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे।। 2।।

अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं, विपाशमुर्वी सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे, समानं योनिमनु सञ्चरन्ती।। 3।।

एना वयं पयसा पिन्वमाना, अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः, किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति।। 4।।

रमध्वं मे वचसे सोम्याय, ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा-वस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः।। 5।।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुर-पाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः।। 6।।

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद्, इन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघाना-यन्नापोऽयनमिच्छमानाः ।। 7।।

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा, आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व, मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते।। 8।।

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत, ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा, अधो अक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः।। 9।।

आ ते कारो शृणवामा वचांसि, ययाथ दूरादनसा रथेन।
नि ते नंसै पीप्यानेव योषा, मर्यायेव कन्या शश्वचै ते।। 10।।

यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुर्गव्यन्ग्राम इषित इन्द्रजूतः।
अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त, आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्।। 11।।

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा, आ वक्षणाः पृणध्वं यात् शीभम्।।12।।

उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।
मादुष्कृतौ व्येनसाध्न्यौ शूनमारताम्।। 13।।



सूक्तों के मन्त्र

अग्नि सूक्त (ऋ.1/1)

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। 15।।

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति।। 16।।

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे।
यशसं वीरवत्तमम्।। 17।।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति।। 18।।

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवभिरा गमत्।। 19।।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेन्तत्सत्यमङ्गिरः।। 20।।

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।। 21।।

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम्।
वर्धमानं स्वे दमे।। 22।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। 9।।



इन्द्र सूक्त (ऋग्वेद-2.12)

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।। 1।।

यः पृथिवीं व्यथमानामदृहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः।। 2।।

यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धू न्यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः।। 3।।

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाद दर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः।। 4।।

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।। 5।।

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्ययो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्र।। 6।।

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावोयस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः।। 7।।

यं क्रंदसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः।। 8।।

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः।। 9।।

यः शश्वतो मह्येनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ।। 10।।

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः।। 11।।

यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास् इन्द्रः।। 12।।

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास् इन्द्रः।। 13।।

यः सुन्वतमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः।। 14।।

यः सुन्वते पचते दुध्र आ चि द्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम्।।1 5।।

✦✦✦

पुरुष सूक्त (ऋग्वेद 10.90)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।। 1।।

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। 2।।

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। 3।।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि।। 4।।

तस्माद् विराळजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। 5।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। 6।।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। 7।।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये।। 8।।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। 9।।

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः।। 10।।

यत्पुरुष व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते।। 11।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।। 12।।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत्।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।। 13।।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।। 14।।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। 15।।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। 16।।



हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋग्वेद-10.121)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।1।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 2।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 3।।

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 4।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तम्भितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 5।।

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 6।।

आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 7।।

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 8।।

मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। 9।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। 10।।



नासदीय सूक्त (ऋग्वेद- 10.129)

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्‌गहनं गभीरम्।। 1।।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।। 2।।

तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छयेनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।। 3।।

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।। 4।।

तिरश्वीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्।। 5।।

को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेना था को वेद यत आबभूव।। 6।।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद।। 7।।



वाक् सूक्त (ऋग्वेद-10.125)

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा विभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।। 1।।

अहं सोममाहनसं विभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये ३यजमानाय सुन्वते।। 2।।

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।। 3।।
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणो-त्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।। 4।।

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तन्तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।। 5।।

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश।।6।।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वअन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि।। 7।।

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाण भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव।। 8।।



पृथ्वी सूक्त (अथर्ववेद- 12.1)

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। 1।।

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः।। 2।।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।। 3।।

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्न कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।। 4।।

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां दयसश्च विष्ठ भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु।। 5।।

यार्णवेधिसलिलमग्र आसीत् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योऽमन् सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।। 6।।

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयोदुहामथो उक्षतु वर्चसा।। 7।।

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः।। 8।।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोध्यष्ठां पृथिवीमहम्।। 9।।

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वऽःसंबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।। 10।।

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास् त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवेमे पृथिवी पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य-
उद्यन्सूर्यो रश्मिभिरातनोति।।11।

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामा समितयस्तेषु चारु वदेम ते।। 12।।

+++

सूर्य सूक्त

1. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।
2. सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्यात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्।।
3. भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावा पृथिवी यन्ति सद्यः।।
4. तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सद्यस्थादाद्रात्री वासास्ततनुते सिमस्मै।।
5. तन्मित्रस्थ वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरित सं भरन्ति।।
6. आद्या देवा उदिता सूर्यस्या निरंहसः पिपृता निरवधात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धु पृथिवी उतः द्यौः।।

+++

विगत वर्षों के वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उनके उत्तर

1. धर्म का मूल स्रोत है—
(क) श्रुति (ख) पुराण
(ग) इतिहास (घ) ज्योतिष
2. 'कुमारिल भट्ट' के अनुसार धर्म है—
(क) पूजा (ख) शास्त्रविहित कर्म
(ग) यज्ञ (घ) भक्ति
3. 'प्रभाकर' के मत में प्रमाण हैं—
(क) पाँच (5) (ख) दस (10)
(ग) सात (7) (घ) छः (6)
4. कुमारिल मत में 'प्रामाण्यग्राहक प्रमाण' है—
(क) प्रत्यक्ष (ख) अनुमान
(ग) शाब्द (घ) अर्थापत्ति
5. 'न्यायसिद्धान्तदीप' के रचयिता हैं—
(क) शशधर (ख) विद्याधर
(ग) गदाधर (घ) मंथुरानाथ
6. 'दीधिति' के रचयिता हैं—
(क) रघुनाथ (ख) मथुरानाथ
(ग) गदाधर (घ) शशिधर
7. जिसका 'अभाव' हो, उसे कहते हैं—
(क) प्रतियोगि (ख) अनुयोगि
(ग) अनुपलब्ध (घ) उभयात्मक
8. 'प्रमाणवार्त्तिक' के लेखक हैं—
(क) धर्मकीर्ति (ख) दिङ्नाग
(ग) उमास्वामि (घ) जयतीर्थ

9. माधवाचार्य ने प्रचार किया—
(क) विवर्तत्व (ख) विष्णुसर्वोत्तमत्व
(ग) विष्णुमिथ्यात्व (घ) जगन्मिथ्यात्व
10. 'न्यायामृत' के रचयिता हैं—
(क) जयतीर्थ (ख) व्यासतीर्थ
(ग) वादिराज (घ) भावबोधाचार्य
11. बाल्यकाल में माधवाचार्य का नाम था—
(क) वासुदेव (ख) पूर्णप्रज्ञ
(ग) जयतीर्थ (घ) आनन्दतीर्थ
12. माध्वाचार्य के प्रमुख भाष्यकार हैं—
(क) व्यासतीर्थ (ख) जयतीर्थ
(ग) रघूत्तमतीर्थ (घ) वासुदेव
13. धर्मशास्त्र शब्द का अर्थ है—
(क) स्मृति (ख) तन्त्र
(ग) सूत्र (घ) आगम
14. 'राजन्' शब्द का अर्थ है—
(क) क्षत्रिय (ख) अभिषिक्त
(ग) उच्च (घ) धनी
15. श्राद्ध करने का प्रथम अधिकारी होता है—
(क) क्रीतपुत्र (ख) औरस पुत्र
(ग) क्षेत्रजपुत्र (घ) दत्तक पुत्र
16. 'महापातक' के प्रकार होते हैं—
(क) पाँच (ख) आठ
(ग) दस (घ) चार
17. महाभारत क्या है—
(क) पुराण (ख) इतिहास
(ग) आख्यान (घ) काव्य

18. 'शान्ता' थी—
(क) दशरथ की पुत्री (ख) राम की पुत्री
(ग) ऋषिकन्या (घ) विदुषी

19. 'मामेकं शरणं व्रज' किसमें है—
(क) मानस (ख) गीता
(ग) रामायण (घ) रघुवंशम्

20. शक्तिपूजा वर्णित है—
(क) देवीभागवत में (ख) भागवत में
(ग) रामायण में (घ) नारदपुराण में

21. 'अलंकार सामग्री' मिलती है—
(क) महाभारत में (ख) अग्निपुराण में
(ग) रामायण में (घ) आगम में

22. 'प्रत्यभिज्ञाहृदय' कृति है—
(क) क्षेमराज (ख) अभिनवगुप्त की
(ग) माहेश्वर की (घ) सोमानन्द की

23. 'अभिचारों' की संख्या है—
(क) पाँच (ख) छः
(ग) आठ (घ) चार

24. 'भाट्टों' के प्रमाण हैं—
(क) आठ (8) (ख) छः (6)
(ग) सात (7) (घ) पाँच (5)

25. 'जैमिनि दर्शन' में अध्याय हैं—
(क) दस (10) (ख) बारह (12)
(ग) पन्द्रह (15) (घ) पाँच (5)

26. 'प्रकरण-पञ्चिका' के रचयिता हैं—
(क) भवनाथ (ख) शालिकनाथ
(ग) मण्डनमिश्र (घ) पार्थसारथि मिश्र

27. 'अन्विताभिधानवाद' के प्रवर्त्तक हैं—
(क) प्रभाकर (ख) शंकर
(ग) कुमारिल (घ) नैयायिक

28. 'अभिहितान्यवाद' के प्रवर्त्तक हैं—
(क) प्रभारक (ख) भाट्ट
(ग) मीमांसक (घ) वेदान्ती

29. 'मीमांसासूत्र' के रचयिता हैं—
(क) जैमिनि (ख) व्यास
(ग) पाराशर (घ) पतञ्जलि

30. 'मीमांसादर्शन' में अध्याय हैं—
(क) बारह (12) (ख) पन्द्रह (15)
(ग) दस (10) (घ) बीस (20)

31. 'सादृश्य' को पृथक् पदार्थ मानते हैं—
(क) भाट्ट (ख) प्रभाकर
(ग) मनु (घ) माध्व

32. ज्ञान से होता है—
(क) मोक्ष (ख) अपवर्ग
(ग) बुद्धि (घ) धन

33. 'सर्व धर्मान् परित्यज्य' उक्ति है—
(क) गीता की (ख) मनुस्मृति की
(ग) रामायण की (घ) पुराण की

34. माध्व वेदान्त में प्रमाणों की संख्या है—
(क) चार (4) (ख) तीन (3)
(ग) पाँच (5) (घ) दो (2)

35. 'तत्त्वप्रकाशिका' कृति है—
(क) जयतीर्थ की (ख) व्यासतीर्थ की
(ग) शालिकनाथ की (घ) माध्व की

36. 'निर्णयसिन्धु' के रचयिता हैं—
(क) कमलाकर भट्ट (ख) प्रभाकर
(ग) नीलकण्ठ (घ) वासुदेव

37. 'गोयुग्म लेकर' विवाह होता है—
(क) दैव विवाह (ख) आर्ष विवाह
(ग) ब्रह्म विवाह (घ) गान्धर्व विवाह

38. 'नान्दीश्राद्ध' होता है—
(क) श्राद्ध में (ख) शुभ कर्म में
(ग) अशुभ में (घ) यज्ञ में

39. 'अशौच' की परमावधि है—
(क) पन्द्रह दिन (ख) दस दिन
(ग) बीस दिन (घ) एक माह

40. अनुसूया किसकी पात्र हैं—
(क) शाकुन्तलम् (ख) रघुवंश
(ग) महाभारत (घ) रामायण

41. 'योगः कर्मसु कौशलम्' उक्ति है—
(क) गीता की (ख) मनुस्मृति की
(ग) रामायण की (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् की

42. 'पाश' कितने प्रकार के हैं—
(क) चार (4) (ख) पाँच (5)
(ग) आठ (8) (घ) तीन (3)

43. तन्त्रसार के रचयिता हैं—
(क) अभिनवगुप्त (ख) क्षेमराज
(ग) माध्व (घ) क्षेमेन्द्र

44. प्रतिपुष्पम् समास है—
(क) द्वन्द्व (ख) अव्ययीभाव
(ग) तत्पुरुष (घ) कर्मधारय

45. 'दुग्धस्य पानम्' में षष्ठी विभक्ति किस अर्थ में है—
(क) कर्मणि (ख) कर्त्तरि
(ग) सम्बन्धे (घ) पाने योगे

46. 'अभाव' को प्रमाण स्वीकारते हैं—
(क) प्रभाकर (ख) भाट्ट मत
(ग) वेदान्ती (घ) नैयायिक

47. 'सादृश्य' को पदार्थ मानते हैं—
(क) वेदान्ती (ख) प्रभाकर
(ग) कुमारिल (घ) शंकर

48. 'स्वतः प्रामाण्यवाद' स्वीकारते हैं—
(क) मीमांसक (ख) पौराणिक
(ग) वेदान्ती (घ) नैयायिक

49. 'तत्त्वचिन्तामणि' के रचयिता हैं—
(क) रघुनाथ (ख) गंगेशोपाध्याय
(ग) मथुरानाथ (घ) गदाधर

50. नव्य न्यायमतानुसार निर्विकल्प ज्ञान विषय है—
(क) एक (ख) तीन
(ग) दो (घ) चार

51. नव्य न्यायमतानुसार 'समवाय' है—
(क) तीन (ख) एक
(ग) दो (घ) चार

52. सांख्यप्रवचनभाष्य के कर्त्ता हैं—
(क) विज्ञानभिक्षु (ख) शंकराचार्य
(ग) पञ्चशिख (घ) उत्पलाचार्य

53. 'प्रणव' वाचक है—
(क) प्रकृति का (ख) ईश्वर का
(ग) जगत् का (घ) धर्म का

54. जैन में अस्तिकाय की संख्या है—
(क) सात (7) (ख) पाँच (5)
(ग) चार (4) (घ) आठ (8)

55. 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के समर्थक हैं—
(क) जैन (ख) बौद्ध
(ग) चार्वाक (घ) मीमांसक

56. 'रेखागणित' मिलता है—
(क) शुल्बसूत्र में (ख) धर्मसूत्र में
(ग) गृह्यसूत्र में (घ) कहीं नहीं

57. माध्व मत में जीव ब्रह्म में सम्बन्ध है—
(क) भेद (ख) अभेद
(ग) भेदाभेद (घ) प्रगाढ़

58. किस 'प्रमाण्यवाद' को माध्व मानते हैं—
(क) स्वत: (ख) परत:
(ग) दोनों (घ) कोई नहीं

59. माध्व मतानुसार वेद है—
(क) अपौरुषेय (ख) पौरुषेय
(ग) ऋषिप्रणीत (घ) कोई नहीं

60. 'मन्वर्थमुक्तावलीकार' हैं—
(क) काशीनाथ (ख) कमलाकर
(ग) कुल्लूकभट्ट (घ) जीमूतवाहन

61. राजा कौन होता है—
(क) क्षत्रिय (ख) गुणवान्
(ग) अभिषिक्त (घ) महापुरुष

62. हरिवंश है—
(क) पुराण (ख) खिल
(ग) काव्य (घ) इतिहास

63. 'भक्ति' प्रतिपादित है—
(क) शाण्डिल्यभक्तिसूत्र में (ख) भागवत में
(ग) महाभारत में (घ) देवीभागवत में

64. 'प्रह्लाद गीता' के वक्ता हैं—
(क) व्यास (ख) प्रह्लाद (भागवत)
(ग) अंगिरा ऋषि (घ) अत्रि ऋषि

65. रामानुज सम्प्रदाय की सामग्री मिलती है—
(क) वामनपुराण में (ख) ब्रह्मपुराण में
(ग) विष्णुपुराण में (घ) वाराहपुराण में

66. 'सांख्य भाष्य' है—
(क) ईश्वरकृष्ण का (ख) उत्पलदेव का
(ग) वाचस्पति का (घ) विज्ञानभिक्षु का

67. 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' के लेखक हैं—
(क) कपिल (ख) वाचस्पति
(ग) विज्ञानभिक्षु (घ) ईश्वरकृष्ण

68. शक्ति को अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं—
(क) प्रभाकर (ख) कुमारिल
(ग) शंकर (घ) मनु

69. 'यमल' शब्द का अर्थ होता है—
(क) जोड़ा (ख) स्त्री, पुरुष
(ग) एक काल में पैदा (घ) कोई नहीं

70. 'त्रिपुटी प्रत्यक्ष' को कौन मानता है—
(क) कमलाकर (ख) प्रभाकर
(ग) माध्व (घ) जयतीर्थ

71. 'अनेकान्तवाद' कौन मानता है—
(क) बौद्ध (ख) जैन
(ग) चार्वाक (घ) नैयायिक

72. ... किसके समर्थक हैं—

(क) शंकर (ख) भाट्ट

(ग) वल्लभ (घ) माध्व

73. माध्वमतानुसार सृष्टि है—

(क) प्रकृति (ख) जगत्-परिणाम

(ग) प्रकृति-परिणाम (घ) पुरुष-परिणाम

74. ज्ञान एवं कर्म से युक्त है—

(क) भागवत (ख) रामायण

(ग) महाभारत (घ) गीता

75. भक्ति से युक्त है—

(क) रामायण (ख) महाभारत

(ग) भागवत (घ) मनुस्मृति

76. 'मिताक्षरा टीका' है—

(क) गौतमस्मृति की (ख) हारीतस्मृति की

(ग) याज्ञवल्क्यस्मृति की (घ) मनुस्मृति की

77. 'निर्णयसिन्धु' के रचयिता हैं—

(क) कमलाकर (ख) कुमारिल

(ग) प्रभाकर (घ) शंकर

78. मनुस्मृति के टीकाकार हैं—

(क) उव्वट (ख) कैयट

(ग) महिमभट्ट (घ) कुल्लुकभट्ट

79. अक्षान् दीव्यति में कर्मसंज्ञक सूत्र हैं—

(क) कर्मणि द्वितीया (ख) दिवस्तदर्थस्य

(ग) दिवः कर्म च (घ) दिवः कर्मणि

80. त्रिमुनि में समास है—

(क) तत्पुरुषः (ख) बहुब्रीहिः

(ग) कर्मधारयः (घ) अव्ययीभावः

81. प्रभाकर कौन ख्याति मानते हैं—

(क) अख्याति (ख) ख्याति

(ग) सत्यख्याति (घ) असत्ख्याति

82. 'ऋजुविमला' के रचयिता हैं—

(क) शालिकनाथ (ख) जगदीश

(ग) जयतीर्थ (घ) रघुनाथ

83. ज्ञान को अनुमेय मानते हैं—

(क) मीमांसक (ख) वेदान्ती

(ग) नैयायिक (घ) वैयाकरण

84. शक्तिवाद के प्रणेता हैं—

(क) वाचस्पति (ख) बच्चा झा

(ग) गदाधर (घ) अनन्त

85. 'पर्वतो वह्निमान्' में साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध है—

(क) असमवाय (ख) सम्बन्ध

(ग) समवाय (घ) संयोग

86. सांख्यमतानुसार प्रकृति का प्रथम विकार है—

(क) अहंकार (ख) अणु

(ग) पञ्चतन्मात्र (घ) महत्

87. 'नैरात्मवाद' मानते हैं—

(क) बौद्ध (ख) जैन

(ग) नैयायिक (घ) मीमांसक

88. योग मत में आसन का लक्षण है—

(क) स्थितप्रज्ञम् (ख) मनःशान्तिः

(ग) स्थितकरणम् (घ) स्थिरसुखम्

89. विवर्तवाद के प्रवर्तक हैं—

(क) रामानुज (ख) शंकर

(ग) माध्व (घ) वल्लभ

90. अन्धकार को द्रव्य मानते हैं—
(क) [illegible] (ख) नैयायिक
(ग) भाट्ट (घ) वेदान्ति

91. मनुस्मृति में अध्याय हैं—
(क) बीस (ख) दस
(ग) बारह (घ) सोलह

92. 'न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति' मिलता है—
(क) रामायण (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) महाभारत (घ) मनुस्मृति

93. 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' है—
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) गीता
(ग) किरातार्जुनीयम् (घ) शिशुपालवधम्

94. 'कुम्भस्य समीपं' इसका समस्त रूप है—
(क) उपरिकुम्भम् (ख) अधिकुम्भम्
(ग) परिकुम्भम् (घ) उपकुम्भम्

95. शाब्दी भावना को स्वीकारते हैं—
(क) सांख्य (ख) न्याय
(ग) मीमांसा (घ) चार्वाक

96. घटाभाव का प्रतियोगितावच्छेदक होता है—
(क) घटत्वम् (ख) द्रव्यत्वम्
(ग) पृथिवीत्वम् (घ) पदार्थत्वम्

97. सांख्य-मतानुसार इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं—
(क) अहंकारात् (ख) पुरुषात्
(ग) भूतेभ्यः (घ) प्रधानात्

98. विज्ञानवाद को स्वीकारते हैं—
(क) वैभाषिक (ख) सौत्रान्तिक
(ग) योगाचार (घ) अद्वैतवेदान्त

99. अनेकान्तवाद को मानते हैं—
(क) जैन (ख) बौद्ध
(ग) चार्वाक (घ) सांख्य

100. वेद का पौरुषेयत्व मानते हैं—
(क) वेदान्तिनः (ख) मीमांसकाः
(ग) चार्वाकः (घ) बौद्धाः

101. देहात्मवाद को मानते हैं—
(क) सांख्य (ख) नैयायिक
(ग) चार्वाक (घ) बौद्ध

102. विष्णु के सर्वोत्तमत्व के प्रतिपादक हैं—
(क) शंकर (ख) गौतम
(ग) कपिल (घ) माधव

103. 'जहदहजलक्षणा' को स्वीकार करता है—
(क) अद्वैत वेदान्त (ख) वैशेषिक
(ग) सांख्य (घ) बौद्ध

104. 'उपमान' प्रमाण को मानते हैं—
(क) वैशेषिक (ख) न्याय
(ग) योग (घ) बौद्ध

105. सांख्य मतानुसार प्रकृति का द्वितीय विकार है—
(क) महान् (ख) अहंकार
(ग) तन्मात्र (घ) इन्द्रिय

106. 'आरम्भवाद' का समर्थन करते हैं—
(क) रामानुजीय (ख) माध्व
(ग) अद्वैत (घ) नैयायिक

107. जगत् को सत्य मानता है—
(क) शून्यवाद (ख) अद्वैतवाद
(ग) विज्ञानवाद (घ) विशिष्टाद्वैतवाद

...प्रतिपादक हैं—

(क) रामानुज (ख) माध्व

(ग) शंकर (घ) श्रीपतिपण्डित

109. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' उक्ति है—

(क) मनुस्मृति (ख) रामायण

(ग) महाभारत (घ) गीता

110. 'स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड:' उक्ति है—

(क) रघुवंशम् (ख) शिशुपालवधम्

(ग) कुमारसम्भवम् (घ) किरातार्जुनीयम्

111. 'अभिषेक नाटक' की वस्तु का मूल है—

(क) भागवतम् (ख) महाभारत

(ग) रामायण (घ) पद्मपुराण

112. आगम का एक पाद होता है—

(क) कैवल्यपाद (ख) चर्यापाद

(ग) साधनपाद (घ) स्मृतिपाद

113. तम को अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं—

(क) माध्व (ख) प्रभाकर

(ग) बौद्ध (घ) भट्ट

114. अनुपलब्धि का विषय क्या है—

(क) अभाव (ख) अर्थापत्ति

(ग) सादृश्यज्ञान (घ) विभ्रम

115. न्याय मत में मन का परिमाण है—

(क) अणु (ख) अपरिमित

(ग) विभु (घ) अन्य

116. अनुमान को प्रमाण नहीं मानता है—

(क) बौद्ध (ख) चार्वाक

(ग) जैन (घ) शंकर

117. अथर्ववेद में पाया जाता है—

(क) कर्मकाण्ड (ख) ज्ञानकाण्ड

(ग) विज्ञानकाण्ड (घ) अर्घकाण्ड

118. 'चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति:' किसमें पाया जाता है—

(क) शाकुन्तलम् (ख) स्वप्नवासवदत्तम्

(ग) रघुवंशम् (घ) रामायणम्

119. 'त्रय: समुदिता हेतु:' कौन मानता है?—

(क) जगन्नाथ (ख) कुन्तक

(ग) मम्मट (घ) आनन्दवर्धन

120. मीमांसासूत्रस्य कर्ता अस्ति—

(क) गौतम: (ख) विज्ञानभिक्षु:

(ग) ईश्वरकृष्ण: (घ) जैमिनि:

121. श्रुतिप्रमाणस्य प्राथम्यं प्रतिपादितमस्ति—

(क) वैशेषिकदर्शने (ख) जैनदर्शने

(ग) मीमांसादर्शने (घ) न्यायदर्शने

122. मम्मटोक्तानि काव्यप्रयोजनानि सन्ति—

(क) पञ्च (ख) षट्

(ग) सप्त (घ) त्रीणि

123. प्राणी कर्म के द्वारा क्या सञ्चय करता है?—

(क) अपूर्वम् (ख) धर्मस्

(ग) पापम् (घ) अर्थम्

124. आत्मनिष्ठ गुण होता है—

(क) रूपम् (ख) संख्या

(ग) धर्म: (घ) शब्द:

125. जातिबाधक होता है—

(क) स्वरूपम् (ख) असम्बन्ध:

(ग) समवाय: (घ) संयोग:

126. मूर्तगुण होता है—
(क) ज्ञानम् (ख) शब्दः
(ग) कृतिः (घ) रूपम्

127. संख्याजन्य परिमाण होता है—
(क) घटपरिमाणम् (ख) त्र्यसरेणुपरिमाणम्
(ग) तूलकपरिमाणम् (घ) पटपरिमाणम्

128. सम्प्रज्ञातसमाधि होती है—
(क) सप्तधा (ख) पञ्चधा
(ग) त्रिधा (घ) चतुर्धा

129. 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या'- यह सिद्धान्त है—
(क) अद्वैतवेदान्तस्य (ख) बौद्धदर्शनस्य
(ग) जैनदर्शनस्य (घ) सांख्यदर्शनस्य

130. 'परिणामवाद' किनका सिद्धान्त है—
(क) वेदान्तीनाम् (ख) सांख्यानाम्
(ग) नैयायिकानाम् (घ) मीमांसकानाम्

131. चित्त का विस्तार और दीप्ति होती है—
(क) माधुर्ये (ख) ओजसि
(ग) प्रसादे (घ) न कस्मिन्नपि

132. अवन्तिखण्ड है—
(क) श्रीमद्भागवतपुराणे (ख) ब्रह्मवैवर्तपुराणे
(ग) स्कन्दपुराणे (घ) पद्मपुराणे

133. वेदान्त में अद्वैत शब्द इन दोनों का अभेद अभीष्ट है—
(क) जीवजगतोः (ख) जीवब्रह्मणोः
(ग) प्रकृतिपुरुषयोः (घ) भक्तभगवतोः

134. पञ्चीकरण प्रक्रिया है—
(क) न्याये (ख) सांख्ये
(ग) वेदान्ते (घ) मीमांसायां

135. मीमांसा में लिङ्ग का स्वरूप—
(क) व्याप्तिविशिष्टम् (ख) सामर्थ्यविशिष्टम्
(ग) यौगिकः शब्दः (घ) समभिव्याहारः

136. अभाव पदार्थ न स्वीकार करने वाले मीमांसक हैं—
(क) मण्डनमिश्रः (ख) सामर्थ्यविशिष्टम्
(ग) शबरः (घ) प्रभाकरः

137. पृथक्त्व अन्योन्याभाव से भिन्न है। क्योंकि—
(क) भावाभावरूपत्वात् (ख) प्रतीतिवैलक्षण्यात्
(ग) भावरूपत्वात् (घ) कारणभेदात्

138. क्षणभङ्गवाद का सिद्धान्त है—
(क) जैनदर्शने (ख) बौद्धदर्शने
(ग) न्यायदर्शने (घ) वैशेषिकदर्शने

139. आस्तिक भारतीय दर्शन का लक्ष्य है—
(क) भुक्तिः (ख) मुक्ति
(ग) व्यवहृतिः (घ) संसृतिः

140. अपुत्र का स्वर्गवास होने पर उसके दाय को कौन प्राप्त करता है?—
(क) पिता (ख) पत्नी
(ग) मित्र (घ) माता

141. छलपूर्वक कन्या का विवाह है—
(क) प्राजापत्यः (ख) गान्धर्वः
(ग) पैशाचः (घ) ब्राह्मः

142. बुद्धितत्त्व का विमर्श है—
(क) जैनदर्शने (ख) बौद्धदर्शने
(ग) चार्वाकदर्शने (घ) आगमे

143. प्रत्यय के स्वरूप का विचार किया जाता है—
(क) पूर्वमीमांसायाम् (ख) न्याये
(ग) आगमे (घ) बौद्धदर्शने

144. अद्वैतवेदान्त दर्शने में ब्रह्म स्वीकृत किया जाता है—
(क) व्यापकम् (ख) अव्यापकम्
(ग) बहुविधम् (घ) त्रिविधम्

145. न्यायदर्शन का सिद्धान्त है—
(क) प्रधानकारणवादः (ख) सत्कार्यवादः
(ग) परमाणुकारणवादः (घ) ब्रह्मकारणवादः

146. संख्यदर्शन में जगत्कारण होता है—
(क) ब्रह्म (ख) माया
(ग) प्रधानम् (घ) ईश्वरः

147. योगदर्शन में ईश्वर है—
(क) जगत्कर्ता (ख) पुरुषविशेषः
(ग) प्रकृतेःपरिणामः (घ) ब्रह्मस्वरूपः

148. 'ब्रह्मणो जिज्ञासा' इस में 'ब्रह्मणः' होता है—
(क) कर्तरि षष्ठी (ख) शेषे षष्ठी
(ग) अनादरे षष्ठी (घ) कर्मणि षष्ठी

149. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' यह सूत्र मिलता है—
(क) वैशेषिकसूत्रे (ख) योगसूत्रे
(ग) वेदान्तसूत्रे (घ) मीमांसासूत्रे

150. द्वैतमत्त में मोक्षसाधन होता है—
(क) भक्तिः (ख) कर्म
(ग) कर्मसमुच्चितं ज्ञानम् (घ) केवलं ज्ञानम्

151. द्वैतमत में जगत् होता है—
(क) मिथ्या (ख) अनिर्वचनीयम्
(ग) सत्यम् (घ) असत्यम्

152. व्यवहार के पाद होते हैं—
(क) चत्वारः (ख) त्रयः
(ग) पञ्च (घ) षट्

153. नारियों के पुनर्विवाह का प्रतिपादक है—
(क) मनुः (ख) याज्ञवल्क्यः
(ग) नारदः (घ) वशिष्ठः

154. रासपञ्चाध्यायी है—
(क) महाभारते (ख) अग्निपुराणे
(ग) श्रीमद्भागवते (घ) श्रीमद्रामायणे

155. यह मुद्रा पूजा में प्रयुक्त होती है—
(क) मृगीमुद्रा (ख) हंसीमुद्रा
(ग) सूकरीमुद्रा (घ) धेनुमुद्रा

156. विशेषपदार्थ होता है—
(क) अनित्यद्रव्येषु (ख) नित्यद्रव्येषु
(ग) गुणेषु (घ) समवाये

157. ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण है—
(क) अनुपलब्धिः (ख) प्रत्यक्षम्
(ग) अनुमानम् (घ) उपमानम्

158. विवर्त्तवाद किस दर्शन का सिद्धान्त है?—
(क) योगदर्शनस्य (ख) पूर्वमीमांसादर्शनस्य
(ग) वेदान्तदर्शनस्य (घ) साङ्ख्यदर्शनस्य

159. नागार्जुन प्रवर्तक है—
(क) शून्यवादस्य (ख) स्याद्वादस्य
(ग) अद्वैतवादस्य (घ) द्वैतवादस्य

160. परिणामवाद सिद्धान्त है—
(क) नैयायिकानाम् (ख) वेदान्तिनाम्
(ग) मीमांसकानाम् (घ) सांख्यानाम्

161. ब्राह्मणों का मरणाशौच कितने दिन का होता है—
(क) दश (ख) नव
(ग) पञ्चदश (घ) त्रिंशत्

162. रस सर्वदा होता है—
(क) शब्दरूपः (ख) वाच्यरूपः
(ग) अर्थरूपः (घ) व्यंग्यरूपः

163. इसमें शिव स्वरूप का विचार किया जाता है—
(क) मीमांसायाम् (ख) आगमे
(ग) पुराणे (घ) दर्शने

164. अद्वैत आचार्यो से प्रतिपादित किया हुआ ख्यातिवाद है—
(क) अनिर्वचनीयख्यातिः (ख) अख्यातिः
(ग) सत्ख्यातिः (घ) अन्यथाख्यातिः

165. चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः- यह किसने कहा है?—
(क) शवरेण (ख) जैमिनिना
(ग) लौगाक्षिभास्करेण (घ) कृष्णयज्वना

166. परामर्श नामक ज्ञानविशेष की प्रस्तुति है—
(क) प्रत्यक्षप्रमाणप्रसङ्गे (ख) अनुमानप्रमाणप्रसङ्गे
(ग) उपमानप्रमाणप्रसङ्गे (घ) शब्दप्रमाणप्रसङ्गे

167. विपर्यय है—
(क) पदार्थविशेषः (ख) रसविशेषः
(ग) अभावविशेषः (घ) अयथार्थविशेषः

168. 'त्रिविधमनुमानमिष्टम्' - यह किनका मत है?—
(क) मीमांसकानाम् (ख) सांख्यानाम्
(ग) नैयायिकानाम् (घ) भाट्टानाम्

169. योगदर्शन में प्रतिपादित सिद्धियाँ हैं—
(क) त्रयः (ख) चत्वारि
(ग) पञ्च (घ) षट्

170. अनुभूति ही प्रमाण है—किसका मत है?—
(क) चार्वाकमतम् (ख) बौद्धमतम्
(ग) अद्वैतमतम् (घ) द्वैतमतम्

171. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्—यह उक्ति मिलती है—
(क) शिशुपालवधे (ख) रघुवंशे
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) किरातार्जुनीये

172. मम्मट के मत में रस कितने हैं?—
(क) नव (ख) दश
(ग) पञ्च (घ) षड्

173. 'जन्मादि'—कौन-सा समास है?—
(क) तत्पुरुषः (ख) बहुव्रीहिः
(ग) कर्मधारयः (घ) अव्ययीभावः

174. सन्निकर्षषट्क प्राप्त होता है—
(क) प्रत्यक्षप्रमाणप्रसङ्गे (ख) अनुमानप्रमाणप्रसङ्गे
(ग) अनुपलब्धिप्रमाणप्रसङ्गे (घ) आगमप्रमाणप्रसङ्गे

175. अवैदिक दर्शनों में से एक है—
(क) क्षणिकवादः (ख) विवर्तवादः
(ग) परिणामवादः (घ) सत्कार्यवादः

176. शतपथब्राह्मण में कितने अध्याय हैं?—
(क) शतम् (ख) पञ्चाशत्
(ग) चत्वारिंशत् (घ) त्रिंशत्

177. भगवद्गीता किस ग्रन्थ का भाग है?—
(क) महाभारतस्य (ख) ब्रह्माण्डपुराणस्य
(ग) रामायणस्य (घ) स्कन्दपुराणस्य

178. सांख्यमत में मानुषक सर्ग हैं—
(क) मानाविधः (ख) त्रिविधः
(ग) चतुर्विधः (घ) एकविधः

179. बौद्धमत के अनुसार प्रत्यक्ष का विषय है—
(क) सामान्यलक्षणम् (ख) स्वलक्षणम्
(ग) नाम (घ) जातिः

180. 'हिरण्यबाहुः'—इसका क्या अर्थ है?—
(क) इन्द्रः (ख) शिवः
(ग) यमः (घ) दिक्पालः

181. मनु मत में सुरा कितने प्रकार की है?—
(क) पञ्चविधा (ख) त्रिविधा
(ग) नवविधा (घ) षड्विधा

182. स्मार्त्तधर्म है—
(क) पञ्चविधः (ख) षड्विधः
(ग) नवविधः (घ) चतुर्विधः

183. उपादानलक्षणा का उदाहरण है—
(क) गामानय (ख) कुन्ता प्रविशन्ति
(ग) गौर्वाहिकः (घ) गङ्गयां घोषः

184. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः-यह उक्ति मिलती है-
(क) नैषधे (ख) किरातार्जुनीये
(ग) अभिज्ञानशाकुन्तले (घ) मालविकाग्निमित्रे

185. अद्वैतवेदान्त मत में मोक्ष है—
(क) असिद्धः (ख) अनवाप्यः
(ग) सिद्धः (घ) उत्पाद्यः

186. जातकर्म कब करना चाहिये—
(क) जन्मनः प्राक् (ख) प्राङ्नाभिवर्धनात्
(ग) अशौचापगमात् प्राक् (घ) अशौचापगमात् परम्

187. स्नातक कितने प्रकार के हैं—
(क) त्रिविधः (ख) षड्विधः
(ग) नवविधः (घ) द्विविधः

188. 'जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानाम्' यह उक्ति है—
(क) नैषधे (ख) रघुवंशे
(ग) मेघदूते (घ) कुमारसम्भवे

189. अद्वैतवेदान्त मत में महावाक्य का अर्थ है—
(क) जीवब्रह्मभेदपरः (ख) जीवमात्रपरः
(ग) जीवब्रह्मैक्यपरः (घ) जगत्सत्यत्वपरः

190. अनुमिति में व्यापार होता है—
(क) व्याप्तिज्ञानम् (ख) पक्षता
(ग) परामर्शः (घ) व्याप्तिः

191. योगमत में क्लेश है—
(क) त्रिविधः (ख) चतुर्विधः
(ग) पञ्चविधः (घ) सप्तविधः

192. 'नवतत्त्वानि तन्मते'—किसका मत है?—
(क) बौद्धमते (ख) जैनमते
(ग) सांख्यमते (घ) जैमिनिमते

193. सांख्यदर्शन योग दर्शन से इस विषय में भिन्न होता है—
(क) तत्त्वविषये (ख) प्रमाणविषये
(ग) पुरुषविषये (घ) ईश्वरविषये

194. सर्वदर्शनसंग्रह का कर्ता है—
(क) हरिभद्रसूरिः (ख) सायणाचार्यः
(ग) माधवाचार्यः (घ) शङ्कराचार्यः

195. 'ज्ञानेनापवर्गः'—किस मत से है?—
(क) सांख्यमते (ख) न्यायमते
(ग) जैमिनिमते (घ) चार्वाकमते

196. द्वैतवेदान्त में जीव और ब्रह्म का है—
(क) अभेदः (ख) भेदः
(ग) भेदाभेदः (घ) अभावः

197. द्वैतवेदान्त में विश्व है—
(क) असत्यम् (ख) सत्यम्
(ग) अनिर्वचनीयम् (घ) शून्यम्

198. धर्मशास्त्र में सुवर्ण शब्द का अर्थ है—
(क) षोडशमाषपरिमितः सुवर्णः (ख) त्रसरेणुपरिमितः
(ग) माषपरिमितः (घ) भिक्षापरिमितः

199. आत्रेये-इति शब्द का अर्थ है?—
(क) पतिता (ख) व्यभिचारिणी
(ग) विवाहिता (घ) रजस्वला

200. ब्रह्मसूत्र का दूसरा नाम क्या है?—
(क) शारीरिकसूत्रम् (ख) मीमांसासूत्रम्
(ग) धर्मसूत्रम् (घ) शारीरकसूत्रम्

201. अद्वैतवादियों के अनुमान के कितने अवयव हैं?—
(क) त्रयः (ख) चत्वारः
(ग) पञ्च (घ) षट्

202. अभावपदार्थ स्वीकार नहीं करते—
(क) भाट्टाः (ख) प्राचीननैयायिकाः
(ग) नव्यनैयायिकाः (घ) प्राभाकराः

203. 'व्रीहीनवहन्ति' है—
(क) अधिकारविधिः (ख) नियमविधिः
(ग) परिसङ्ख्याविधिः (घ) विशिष्टविधिः

204. अनुमिति का करण है—
(क) व्याप्तिः (ख) उदाहरणम्
(ग) साध्यम् (घ) व्याप्तिज्ञानम्

205. घट के प्रति अन्यथासिद्धत्व है—
(क) दण्डस्य (ख) कुलालस्य
(ग) चक्रस्य (घ) दण्डरूपस्य

206. सांख्यों का अनुमान—
(क) चतुर्विधम् (ख) त्रिविधम्
(ग) पञ्चविधम् (घ) षड्विधम्

207. योगसूत्र के अनुसार नियम है—
(क) त्रयः (ख) चत्वारः
(ग) पञ्च (घ) षट्

208. योगसूत्र के अनुसार ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा में होता है—
(क) वीर्यनाशः (ख) वीर्यलाभः
(ग) निद्राजयः (घ) वैराग्यलाभः

209. धर्म का मूल-प्रमाण है—
(क) उपनिषत् (ख) भारतीय संविधानम्
(ग) मनुस्मृतिः (घ) वेदः

210. व्यङ्ग्यार्थ का नामान्तर है—
(क) वाच्यार्थः (ख) तात्पर्यार्थः
(ग) प्रतीयमानार्थः (घ) लक्ष्यार्थः

211. पुराणों का स्वरूप है—
(क) उपदेशप्रधानम् (ख) इतिहासप्रधानम्
(ग) युद्धप्रधानम् (घ) विनोदप्रधानम्

212. 'अहिंसा परमो धर्मः'—यह उक्ति है—
(क) उपनिषदि (ख) महाभारतस्य शान्तिपर्वणि
(ग) कालिकापुराणे (घ) अनुशासनपर्वणि

213. वेदान्ताध्ययन का अधिकारी है—
(क) स्नातकः (ख) यजमानः
(ग) पुरोहितः (घ) साधनषट्कसम्पन्नः प्रमाता

214. प्रयाज कितने हैं?—
(क) चत्वारः (ख) पञ्च
(ग) सप्त (घ) नव

215. विशेष और नित्य द्रव्य में सम्बन्ध होता है—
(क) स्वरूपः (ख) तादात्म्यम्
(ग) विशेषणता (घ) समवायः

216. सांख्यमत में कार्य है—
(क) शून्यम् (ख) असत्
(ग) सत् (घ) सदसत्

217. सांख्यमत में प्रधान कारण है—
(क) विवर्तः (ख) परिणामतः
(ग) साक्षित्वात् (घ) स्रष्टृत्वात्

218. 'द्वादशायतनानि' का किसने निरूपण किया है?—
(क) सांख्यैः (ख) जैमिनीयैः
(ग) पाशुपतैः (घ) बौद्धैः

219. वाजसनेय कौन है?—
(क) गौतमः (ख) नारदः
(ग) वशिष्ठः (घ) याज्ञवल्क्यः

220. ब्रह्मचारी के कितने प्रकार हैं?—
(क) चतुर्विध (ख) द्विविधः
(ग) पञ्चविधः (घ) नवविधः

221. आत्मगुण कितने हैं?—
(क) अष्टौ (ख) पञ्च
(ग) दश (घ) एकादश

222. 'इति हेतुस्तदुद्भवे'— यह किसकी उक्ति है?—
(क) महिमभट्टस्य (ख) अभिनवगुप्तस्य
(ग) मम्मटस्य (घ) भोजस्य

223. 'समत्वं योग उच्यते'—यह वाक्य है—
(क) हरिवंशे (ख) भगवद्गीतायाम्
(ग) गुरुगीतायाम् (घ) श्रीमद्भागवते

224. ब्रह्मसूत्र के अनुसार शास्त्र की योनि क्या है?—
(क) जगत् (ख) ब्रह्म
(ग) जीवः (घ) शून्यम्

225. अद्वैतवेदान्त का स्थापक कौन है?—
(क) बादरायणः (ख) शङ्कराचार्य
(ग) गौडपादः (घ) मधुसूदनसरस्वतिः

226. विवाहों में श्रेष्ठ है—
(क) प्राजापत्यः (ख) राक्षसः
(ग) आसुरः (घ) ब्राह्मः

227. श्राद्ध के लिये प्रशस्त काल है—
(क) प्रातः (ख) अपराहणः
(ग) मध्याह्न (घ) अरुणोदयः

228. सुराओं में मुख्य है—
(क) गौड़ी (ख) पैष्टी
(ग) माध्वी (घ) द्राक्षा

229. काव्यप्रकाश के अनुसार लक्षणा है—
(क) त्रिविधा (ख) चतुर्विधा
(ग) पञ्चविधा (घ) षड्विधा

230. दुर्गासप्तशती-अंशविशेष है—
(क) देवीभागवतस्य (ख) मार्कण्डेयपुराणस्य
(ग) रामायणस्य (घ) शिवपुराणस्य

231. श्मशान, भवन, काञ्चन और चन्दन में सर्वथा भेदभावशून्य होते हैं—
(क) कौलाः (ख) संन्यासिनः
(ग) गृहस्थाः (घ) चाण्डालाः

232. अद्वैतमतानुसार अविद्या है—
(क) अनादिः सान्ता च (ख) सादिः अनन्ता च
(ग) अनादिः अनन्ता च (घ) सादिः सान्ता च

233. मीमांसा में लिङ्ग होता है—
(क) चतुर्विधम् (ख) द्विविधम्
(ग) षड्विधम् (घ) पञ्चविधम्

234. ज्योतिष्टोम में.........पशुयाग होते हैं—
(क) पञ्च (ख) सप्त
(ग) चत्वारः (घ) त्रयः

235. 'स्त्रीधन' शब्द यौगिक है—
(क) जीमूतवाहनमते (ख) शूलपाणिमते
(ग) विज्ञानेश्वरमते (घ) गौतममते

236. 'जानकीहरणम्' महाकाव्य के रचयिता हैं—
(क) कालिदासेन (ख) भासेन
(ग) कुमारदासेन (घ) चण्डीदासेन

237. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इसमें 'अथ' शब्द का अर्थ होता है—
(क) मङ्गलम् (ख) अधिकारः
(ग) आनन्तर्यम् (घ) प्रश्नः

238. मनु के मतानुसार धर्म के प्रमाण होते हैं—
(क) षट् (ख) पञ्च
(ग) चत्वारि (घ) त्रीणि

239. शान्तिपर्व में बल के अंग हैं—
(क) षट् (ख) सप्त
(ग) पञ्च (घ) नव

240. अग्निपुराणानुसार राजा के दोनों पायों में भेद हैं—
(क) पञ्च (ख) नव
(ग) चत्वारः (घ) त्रयः

241. पुराण के अनुसार ब्रह्माण्ड में भुवन होते हैं—
(क) अष्टादश (ख) चतुर्दश
(ग) त्रीणि (घ) एकादश

242. अज्ञान का दूसरा नाम है—
(क) प्रधानम् (ख) प्रकृतिः
(ग) अविद्या (घ) अव्यक्तम्

243. शङ्कराचार्य का जन्मस्थान है—
(क) कालडी (ख) काञ्ची
(ग) काशी (घ) कनकशृङ्गा

244. पदजन्यपदार्थोपस्थिति है—
(क) शक्तिज्ञानम् (ख) शाब्दबोधः
(ग) व्यापारः (घ) करणम्

245. आत्यन्तिक दुःखनिवृत्ति होती है—
(क) धर्मात् (ख) तत्त्वज्ञानात्
(ग) गुरुवन्दनात् (घ) औषधपानात्

246. समाधि के विघ्न होते हैं—
(क) चत्वारः (ख) अष्टौ
(ग) त्रयोदश (घ) पञ्चदश

247. नृसिंहावतार का वर्णन ....में है—
(क) श्रीमद्भागवते (ख) अग्निपुराणे
(ग) वायुपुराणे (घ) कालिकापुराणे

248. 'कारकः' में प्रत्यय हैं—
(क) कः (ख) ण्वुल्
(ग) अण् (घ) वरच्

249. 'राजा राजसूयेन यजेत्' यह विध्युक्तयाग है—
(क) स्मार्तयाग (ख) श्रौतयाग
(ग) पाकयाग (घ) ब्रह्मयाग

250. कामासम्भव के व्यसन होते हैं—
(क) दश (ख) आठ
(ग) पञ्च (घ) एकादश

❖❖❖

उत्तरमाला

(1) क (2) ख (3) क (4) ख (5) क (6) क
(7) क (8) क (9) ख (10) ख (11) क (12) ख
(13) क (14) ख (15) ख (16) क (17) ख (18) क
(19) ख (20) क (21) ख (22) ख (23) ख (24) ख
(25) ख (26) ख (27) क (28) ख (29) क (30) क
(31) क (32) क (33) क (34) ख (35) क (36) क
(37) ख (38) ख (39) ख (40) क (41) क (42) क
(43) क (44) ख (45) क (46) ख (47) ख (48) क
(49) ख (50) क (51) ख (52) क (53) ख (54) ख
(55) ख (56) क (57) क (58) क (59) क (60) ग
(61) ग (62) ख (63) क (64) ख (65) ग (66) ग
(67) ग (68) क (69) क (70) ख (71) ख (72) घ
(73) ग (74) घ (75) ग (76) ग (77) क (78) घ
(79) ग (80) घ (81) क (82) क (83) क (84) ग
(85) ग (86) घ (87) क (88) घ (89) ख (90) क
(91) ग (92) घ (93) घ (94) घ (95) ग (96) क
(97) क (98) ग (99) क (100) ग (101) ग (102) घ
(103) क (104) ख (105) ख (106) घ (107) ग (108) ग
(109) क (110) क (111) ग (112) ख (113) घ (114) क
(115) क (116) ख (117) ग (118) ख (119) ग (120) घ
(121) ग (122) ख (123) क (124) ग (125) ख (126) घ

(127) ख (128) घ (129) क (130) ख (131) ख (132) ग
(133) ख (134) ग (135) ख (136) घ (137) ख (138) ख
(139) ख (140) ख (141) ग (142) घ (143) ग (144) क
(145) ग (146) ग (147) ख (148) घ (149) घ (150) क
(151) ग (152) क (153) ख (154) ग (155) घ (156) ख
(157) ग (158) ग (159) क (160) घ (161) क (162) घ
(163) ख (164) क (165) ख (166) ख (167) घ (168) ख
(169) क (170) घ (171) ग (172) क (173) ख (174) क
(175) क (176) क (177) क (178) घ (179) घ (180) ख
(181) ख (182) ख (183) ख (184) ग (185) ग (186) ख
(187) क (188) ग (189) ग (190) ग (191) ग (192) ख
(193) घ (194) ग (195) क (196) ख (197) घ (198) क
(199) घ (200) घ (201) क (202) ग (203) घ (204) क
(205) घ (206) ख (207) ग (208) ख (209) घ (210) ग
(211) ख (212) ख (213) घ (214) ख (215) घ (216) ग
(217) ख (218) घ (219) घ (220) ख (221) क (222) ग
(223) ख (224) ख (225) ग (226) घ (227) ग (228) ख
(229) घ (230) ख (231) क (232) क (233) ख (234) घ
(235) ग (236) ग (237) ग (238) ग (239) क (240) घ
(241) ख (242) ग (243) क (244) ग (245) ख (246) ख
(247) क (248) घ (249) ख (250) क

